जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

33वाँ
वार्षिक प्रतिवेदन

(1 अप्रैल 2002 से 31 मार्च 2003 तक)

नई दिल्ली-110067

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
आमुख	1 – 5
1. प्रस्तावना	6 – 13
2. विश्वविद्यालय	14 – 21
3. विश्वविद्यालय के निकाय	22 – 24
4. संस्थान और केन्द्र	**25 – 225**
1. कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान	25 – 28
2. कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान	29 – 31
3. पर्यावरण विज्ञान संस्थान	32 – 44
4. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान	45 – 77
5. सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान	78 – 81
6. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान	82 – 110
7. जीवन विज्ञान संस्थान	111 – 120
8. भौतिक विज्ञान संस्थान	121 – 128
9. सामाजिक विज्ञान संस्थान	129 – 202
10. जैव–प्रौद्योगिकी केन्द्र	203 – 207
11. विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र	208 – 215
12. संस्कृत अध्ययन केन्द्र	216 – 221
13. आणविक चिकित्सा–शास्त्र केन्द्र	222 – 225
5. अकादमिक स्टाफ कालेज	226 – 227
6. छात्र गतिविधियां	228 – 235
7. कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएं	236 – 237
8. विश्वविद्यालय प्रशासन	238 – 239
9. विश्वविद्यालय वित्त	240 – 244
10. परिसर विकास	245
11. यौन उत्पीड़न के विरुद्ध जेंडर संवेदनशीलन समिति	246 –247
12. केन्द्रीय सुविधाएं	**248 – 254**
1. विश्वविद्यालय पुस्तकालय	248 – 251
2. विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्रीकरण केन्द्र	252 – 253
3. विश्वविद्यालय रोजगार सूचना और मार्गदर्शन ब्यूरो	254

परिशिष्ट

I.	**विश्वविद्यालय निकायों की सदस्यता**	**255 – 261**
1.	विश्वविद्यालय कोर्ट	255 – 257
2.	कार्य परिषद	258
3.	विद्या परिषद	259 – 260
4.	वित्त समिति	261
II.	**शिक्षक**	**262 – 276**
1.	विश्वविद्यालय के शिक्षक	262 – 269
2.	मानद प्रोफेसर	270
3.	शिक्षकों की नई नियुक्तियां	271
4	सेवा निवृत्त हुए शिक्षक	271
5	त्याग–पत्र देने वाले शिक्षक	271
6	पुनर्नियुक्त शिक्षक	272
7	स्थायी हुए शिक्षक	272 – 273
8.	स्वेच्छा से सेवा निवृत्त हुए शिक्षक	273
9.	अध्ययन/आवधिक/असाधारण अवकाश पर रहे शिक्षक	273 – 276
III.	**शोध छात्र**	**277 – 307**
1.	पी–एच.डी.	277 – 288
2.	एम.फिल.	289 – 306
3.	एम.टेक	307

विश्वविद्यालय के अधिकारी
(31.3.2003 को)

डॉ. कर्ण सिंह	कुलाधिपति
प्रो. गोपाल कृष्ण चड्ढा	कुलपति
प्रो. बलवीर अरोड़ा	कुलदेशिक
प्रो. राजीव के. सक्सेना	कुलदेशिक
श्री रमेश कुमार	कुलसचिव
श्री एस. नन्दक्योलयार, आई.ए. ऐंड ए.एस.	वित्त अधिकारी
डॉ. एस. चन्द्रशेखरन	समन्वयक (मूल्यांकन)
श्री जीत सिंह	कुलपति के सचिव

अध्ययन संस्थानों के डीन

प्रो. ज्योतिन्द्र जैन	डीन, क. और सौ. शा. सं.
प्रो. के.के. भारद्वाज	डीन, कं. व प.वि.सं.
प्रो. कस्तूरी दत्ता	डीन, प.वि.सं.
प्रो. आर.आर. शर्मा	डीन, अं.अ.सं.
प्रो. आर. रामास्वामी	डीन, सू.प्रौ.सं.
प्रो. एच.सी. पांडे	डीन, भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. आलोक भट्टाचार्य	डीन, जी.वि.सं.
प्रो. ए.के. रस्तोगी	डीन, भौ.वि.सं.
प्रो. प्रभात पटनायक	डीन, सा.वि.सं.

अध्ययन केन्द्रों के अध्यक्ष

प्रो. अनुराधा एम. चिनाय	अध्यक्ष, रू. म.ए. और पू.यू.अ.के./अं.अ.सं.
प्रो. अब्दुल नफे	अध्यक्ष, अ. और प.यू.अ.के./अं.अ.सं.
प्रो. अलोकेश बरुआ	अध्यक्ष, रा.अ.वि. और अ.अ.के/अं.अ.सं.
प्रो. अजय कुमार दुबे	अध्यक्ष, प.ए. और अ.अ.के./अं.अ.सं.
प्रो. उमा सिंह	अध्यक्ष, द.म.द.पू.ए. और द.प.म.अ.के./अं.अ.सं.
डॉ. लालिमा वर्मा	अध्यक्ष, पू.ए.अ.के./अं.अ.सं.
डॉ. वरूण साहनी	अध्यक्ष, अं.रा.सं. और नि.के./अं.अ.सं.
प्रो. रामाधिकारी कुमार	अध्यक्ष, रू.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. मोहम्मद असलम इस्लाही	अध्यक्ष, अ. और अ.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. वसन्त जी. गद्रे	अध्यक्ष, इ.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. वैश्ना नारंग	अध्यक्ष, भा.वि. और अं.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. मैनेजर पाण्डेय	अध्यक्ष, भा.भा.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. एम. आलम	अध्यक्ष, फा. और म.ए.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. पी.के. मोटवानी	अध्यक्ष, जा. और उ.पू.ए.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
डा. एम.एल. भट्टाचार्य	अध्यक्ष, ची. और द.पू.ए.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. शांता रामाकृष्णन	अध्यक्ष, फ्रे.और फ्रें.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. अनिल भट्टी	अध्यक्ष, ज.अ.के./भा.सा. और सं.अ.सं.
प्रो. दीपक कुमार	अध्यक्ष, जा.हु.शै.अ.के./सा.वि.सं.
प्रो. पी.बी. मेहता	अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र केंद्र/सा.वि.सं.
प्रो. एम.एच. सिद्दीकी	अध्यक्ष, ऐ.अ.के./सा.वि.सं.
प्रो. अरूण कुमार	अध्यक्ष, आ.अ. और नि.के./सा.वि.सं.
प्रो. एहसानुल हक़	अध्यक्ष, सा.प.अ.के./सा.वि.सं.
डा. रामा वी. बारु	अध्यक्ष, सा.चि. और सा.स्वा.के./सा.वि.सं.

प्रो. असलम महमूद	अध्यक्ष, क्षे.वि.अ.के. / सा.वि.सं.
प्रो. जोया हसन	अध्यक्ष, रा.अ.के. / सा.वि.सं.
प्रो. वी.वी. कृष्णा	अध्यक्ष, वि.नी.अ.के / सा.वि.सं.
प्रो. संतोष कार	अध्यक्ष, जै.प्रौ.के.
प्रो. नीरजा गोपाल जयाल	अध्यक्ष, वि. और अ.अ.के.
प्रो. राजेन्द्र प्रसाद	अध्यक्ष, आ.वि.शा.वि.के.
प्रो. शशि प्रभा कुमार	अध्यक्ष, सं.अ.के.
प्रो. जयती घोष	निदेशक, महिला अध्ययन कार्यक्रम
प्रो. बलवीर अरोड़ा	शैक्षिक निदेशक, जे.एन.आई.ए.एस.
प्रो. आदित्य मुखर्जी	निदेशक, अकादमिक स्टाफ कॉलेज

उप कुलसचिव / उप वित्त अधिकारी

श्री फतेह सिंह	उप कुलसचिव
श्री करतार सिंह	उप वित्त अधिकारी
श्री एन. बालासुब्रामणियन	उप कुलसचिव
श्री अवैस अहमद	उप कुलसचिव
श्री ए.के. मलिक	उप वित्त अधिकारी
श्री आर. वेंकटेश्वरन	उप कुलसचिव
श्री जे.एस. बवेजा	उप कुलसचिव
श्री यशवन्त सिंह	उप कुलसचिव
श्री बनवारी लाल	उप कुलसचिव
श्री जे.पी.एस. ढाका	उप कुलसचिव

पुस्तकालयाध्यक्ष का कार्यालय

श्री एस.के. खुल्लर	कार्यकारी पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. कृष्ण गोपाल	उप पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री एच.एम.के. मुदगल	उप पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) अंजना चट्टोपाध्याय	उप पुस्तकालयाध्यक्ष

डीन (छात्र) कार्यालय

प्रो. राजेन्द्र डेंगले	डीन (छात्र)
प्रो. वी.के. जैन	सह डीन (छात्र)
श्रीमती दमयंती वी. ताम्बे	उप निदेशक (शारीरिक शिक्षा)
डा. गौतम पात्रा	मुख्य चिकित्सा अधिकारी

मुख्य कुलानुशासक कार्यालय

प्रो. आर.के. काले	मुख्य कुलानुशासक
डॉ. लालिमा वर्मा	कुलानुशासक
प्रो. एच.बी. बोहिदार	कुलानुशासक

विदेशी छात्र सलाहकार कार्यालय

प्रो. सुषमा जैन	विदेशी छात्र सलाहकार

जन–सम्पर्क कार्यालय

श्रीमती पूनम एस. कुदेसिया	जन–सम्पर्क अधिकारी

समान अवसर कार्यालय

डॉ. तुलसी राम	मुख्य सलाहकार
डॉ. एस.एन. मालाकार	सलाहकार

आमुख

पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था कि :

> "विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहनशीलता, तर्कशीलता, चिन्तन प्रक्रिया और सत्य की खोज की भावना को स्थापित करना होता है। इसका उद्देश्य मानव जाति को निरन्तर महत्तर लक्ष्य की ओर प्रेरित करना होता है। अगर विश्वविद्यालय अपना कर्तव्य ठीक से निभाएं तो यह देश और जनता के लिए अच्छा होगा।"

स्वतंत्रत भारत के प्रथम प्रधानमंत्री द्वारा 13 दिसम्बर 1947 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हीरक जयंती के अवसर पर दिए गए उपर्युक्त वक्तव्य से यह परिलक्षित होता है कि पं. नेहरू ने भारत में विश्वविद्यालीय शिक्षा को विशेष महत्व दिया है। नेहरू का दृढ़ विश्वास था कि विश्वविद्यालय युवा छात्रों में मानवता, सहनशीलता, मैत्रीभाव, तर्कशीलता के आधारभूत सदगुण और दूरदर्शिता विकसित करने में तथा छात्रों को कल्पनाशक्ति–सम्पन्न विचारों और सत्य की खोज के लिए प्रेरित करते हुए न केवल राष्ट्र के स्वरूप को बदलने बल्कि उसे शक्तिशाली बनाने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

ऐसे महान राजनेता के विचारों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना ज.ने.वि. अधिनियम 1966 (1966 का 53) के अन्तर्गत वर्ष 1966 में की गई थी। निःसन्देह यह विश्वविद्यालय पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम पर एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में था। पं. जवाहरलाल नेहरू को और अधिक सम्मान देने की दृष्टि से विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति स्व. श्री वी.वी. गिरी द्वारा पं. नेहरू के जन्म दिवस के अवसर पर 14 नवम्बर 1969 को किया गया था। संयोगवश यह वर्ष महात्मा गाँधी का जन्मशती वर्ष भी था। विश्वविद्यालय के उद्देश्य हैं –

> 'अध्ययन, अनुसंधान और अपने संगठित जीवन के उदाहरण और प्रभाव द्वारा ज्ञान, प्रज्ञान एवं समझदारी का प्रसार व अभिवृद्धि करना तथा विशिष्टतः उन सिद्धान्तों की अभिवृद्धि का प्रयास करना, जिनके लिए जवाहरलाल नेहरू ने जीवन–पर्यंत काम किया, जैसे – राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, धर्म निरपेक्षता, जीवन की लोकतांत्रिक पद्धति, अन्तर्राष्ट्रीय समझ और सामाजिक समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

इस लक्ष्य की दिशा में, विश्वविद्यालय --

- भारत की सामासिक संस्कृति के संवर्धन के लिए ऐसे विभाग और संस्थान स्थापित करेगा जो भारत की भाषाओं, कलाओं और संस्कृति के अध्ययन तथा विकास के लिए अपेक्षित हों,
- सम्पूर्ण भारत से छात्रों और अध्यापकों को विश्वविद्यालय में सम्मिलित होने और उसके शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने की सुविधा देने के लिए विशेष उपाय करेगा;
- छात्रों और अध्यापकों में देश की सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता और बोध की अभिवृद्धि करते हुए उन्हें ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार करेगा;
- अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में मानविकी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में समन्वित पाठ्यक्रमों के लिए विशेष व्यवस्था करेगा;
- अन्तर–विषयक अध्ययन के प्रोत्साहन के लिए समुचित उपाय करेगा;
- छात्रों में विश्वव्यापी दृष्टिकोण और अन्तर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने की दृष्टि से ऐसे विभाग या संस्थान स्थापित करेगा जो विदेशी भाषाओं, साहित्य और जीवन के अध्ययन के लिए आवश्यक हों; और
- विभिन्न देशों से आए छात्रों और अध्यापकों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों और गतिविधियों में भाग लेने हेतु सुविधाएं प्रदान करेगा।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की अद्वितीयता का प्रमाण इसके मूल दर्शन, नीतियों और मुख्य कार्यक्रमों से मिलता है, जिनका उल्लेख विश्वविद्यालय के अधिनियम में स्पष्ट रूप से किया गया है। तदनुसार, विश्वविद्यालय का हमेशा यही प्रयास रहा है कि ऐसी नीतियां और अध्ययन कार्यक्रम विकसित किए जाएं जो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पहले से उपलब्ध सुविधाओं में मात्र विस्तार न होकर राष्ट्रीय संसाधनों में महत्वपूर्ण वृद्धि करें। इस तरह विश्वविद्यालय ऐसे कार्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है जो राष्ट्र की उन्नति और विकास के लिए संगत हों। इस संबंध में, विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित प्रयास किए हैं –

(1) विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता, जैसे विचारों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जीवन के प्रति विश्वव्यापी और मानववादी दृष्टिकोण विकसित करने के लिए निरन्तर प्रयास किए हैं;

(2) विश्वविद्यालय ने देश के विभिन्न क्षेत्रों से छात्रों और शिक्षकों का चयन करके अपने राष्ट्रीय चरित्र को बनाए रखा है;

(3) ज्ञान की अविभाज्यता को स्वीकारते हुए अन्तर–विषयक शिक्षण तथा शोध को बढ़ावा दिया गया है और तद्नुसार अध्ययन संस्थानों और केन्द्रो की स्थापना की गई है;

(4) विश्वविद्यालय में परम्परागत क्षेत्रों में शिक्षण एवं शोध पर बल देते हुए यह सुनिश्चित किया गया है कि जहां तक संभव हो सके अन्य विश्वविद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं की पुनरावृत्ति न हो;

(5) विश्वविद्यालय में भारतीय और विदेशी भाषाओं के शिक्षण और शोध का एक मॉडल संस्थान/केंद्र स्थापित करने पर ध्यान दिया गया है। इसमें विभिन्न उपकरणों से सुसज्जित एक आधुनिक भाषा प्रयोगशाला है, जोकि सम्भवतः देश में अपने तरह की एक सर्वोत्तम प्रयोगशाला है। यह एक ऐसा केंद्र है जहाँ सम्बन्धित देशों के साहित्य, संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन काफी उपयुक्त और प्रभावी ढंग से होता है;

(6) विश्वविद्यालय में एक ऐसी पद्धति विकसित की गई है, जिसके अन्तर्गत पढ़ाए जाने वाले कोर्स, उन कोर्सों की संक्षिप्त विषय–वस्तु और मूल्यांकन पद्धति जैसे मूल शैक्षिक निर्णय स्वयं शिक्षकों द्वारा ही लिए जाते हैं। शिक्षकों ने निरन्तर आन्तरिक मूल्यांकन का एक ऐसा ग्रेडिंग सिस्टम अपनाया है जिससे आपसी समझ को बढ़ावा मिलता है,

(7) विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश देश भर में फैले 47 केंद्रों और विदेशों में स्थित 2 केंद्रों पर आयोजित अखिल भारतीय प्रवेश–परीक्षा में प्राप्त अंकों की मेरिट सूची के आधार पर दिया जाता है;

(8) भारत सरकार की नीति के अनुसार, विश्वविद्यालय में छात्रों को प्रवेश और शिक्षकों की भर्ती के स्तर पर आरक्षण दिया जाता है;

(9) विश्वविद्यालय में मेरिट–कम–मीन्स छात्रवृत्तियाँ/अध्येतावृत्तियाँ तथा छात्रों और शिक्षकों को शोध कार्य के लिए देश-विदेश का दौरा करने हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान है;

(10) विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय समझ को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से विदेशों के विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों में भाग लेता है;

(11) शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया के अनुसार अपने-अपने विशेषीकृत क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त व्यक्तियों को शिक्षकों के रूप में भर्ती किया जाता है;

(12) विश्वविद्यालय ने अपने सेवानिवृत्त हो रहे या सेवानिवृत्त हो चुके शिक्षकों के लिए 'प्रतिष्ठित विद्वान' नाम से एक योजना शुरू की है। यह योजना उन शिक्षकों के लिए है जो सेवानिवृत्ति के समय अपनी कोई पुस्तक लिख रहे थे या किसी परियोजना पर काम कर रहे थे और उसे वे पूरा करना चाहते हैं। यह योजना 65 से 70 वर्ष तक की उम्र के विद्वानों के लिए है;

(13) छात्रों और विश्वविद्यालय प्रशासन के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए एक शिकायत निवारण समिति का गठन किया गया है;

(14) एक स्वच्छ सामाजिक वातावरण और जेएनयू समुदाय में सुरक्षा की भावना विकसित करने की दृष्टि से विश्वविद्यालय ने यौन उत्पीड़न के विरूद्ध जेंडर संवेदनशीलन समिति का गठन किया है;

(15) शिक्षकों के लिए टेलीफोन, इंटरनेट, वीडियो कान्फ्रेंसिंग और डिजिटल लाइब्रेरी डाटा सिस्टम जैसी आधुनिक दूर संचार सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं;

(16) बाबा साहेब अम्बेडकर चेयर, राजीव गांधी चेयर, आर.बी.आई. चेयर, एस.बी.आई. चेयर, ग्रीक अध्ययन में चेयर जैसी कई चेयर स्थापित की गई हैं;

(17) विश्वविद्यालय के दलित छात्रों के शैक्षिक/वित्तीय सम्बन्धी मामलों की देख–रेख के लिए एक सलाहकार समिति का गठन किया गया है;

(18) विश्वविद्यालय ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों को प्रवेश परीक्षा में वेटेज देने से संबंधित महत्वपूर्ण कदम वर्ष 1995 में उठाया था।

(19) शिक्षा जगत में जैव–प्रौद्योगिकी एक बहु–विषयक क्षेत्र है। इसके पाठ्यक्रम देश में किसी भी तरह की सार्थक जैव–प्रौद्योगिकी गतिविधियों के लिए दक्ष मानवशक्ति की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इन पाठ्यक्रमों की रूपरेखा छात्रों को अनुवंशिकी इंजीनियरी और जैव–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए नवीनतम महत्वपूर्ण विकास और उद्योग, कृषि और चिकित्सा के क्षेत्र में इनके अनुप्रयोग से अवगत कराने के उद्देश्य से तैयार की गई हैं;

(20) जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पिछले कई वर्षों से 30 से अधिक प्रतिभागी विश्वविद्यालयों के एम.एस–सी. – जैव–प्रौद्योगिकी, एम.एस–सी. – कृषि जैव–प्रौद्योगिकी, एम.वी.एस–सी. (एनिमल) जैव–प्रौद्योगिकी और एम.टेक. जैव–प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए संयुक्त जैव–प्रौद्योगिकी प्रवेश–परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित कर रहा है। यह प्रवेश–परीक्षा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जाती है, और

(21) विश्वविद्यालय ने विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ 32 'एमओयू' हस्ताक्षर किए हैं।

अरावली पर्वत श्रृंखला के ऊबड़–खाबड़ 1019 एकड़ क्षेत्र में स्थित जेएनयू परिसर में अब हर तरफ हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। इसके कुछ भाग को संरक्षित वन के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना विशेष रूप से एक स्नातकोत्तर शिक्षण एवं शोध संस्थान के रूप में की गई थी। विश्वविद्यालय की विद्या सलाहकार समिति ने यह निर्णय लिया था कि विश्वविद्यालय में मूलतः 9 संस्थान होंगे :

1. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान
2. सामाजिक विज्ञान संस्थान
3. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान
4. जीवन विज्ञान संस्थान
5. पर्यावरण विज्ञान संस्थान
6. कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान
7. भौतिक विज्ञान संस्थान
8. कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान
9. सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान

इनमें से पहले चार अध्ययन संस्थानों ने वर्ष 1971 में नई दिल्ली में अपनी गतिविधियां आरम्भ कीं। वर्ष 1974 और 1975 में क्रमशः पर्यावरण विज्ञान संस्थान तथा कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान की स्थापना हुई। भौतिक विज्ञान संस्थान वर्ष 1986 में शुरू हुआ। वर्ष 2001 में कला और सौन्दर्य–शास्त्र संस्थान और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान शुरू हुए।

वर्ष 1972 में इंफाल (मणिपुर) में स्नातकोत्तर अध्ययन केंद्र की स्थापना की गई। अंततः वर्ष 1981 में यह केन्द्र मणिपुर विश्वविद्यालय का एक हिस्सा बन गया।

पिछले लगभग 35 वर्ष के दौरान निम्नलिखित अध्ययन केंद्र शुरू किए गए और इन्हें सम्बन्धित संस्थानों को सौंपा गया : –

1. सामाजिक विज्ञान संस्थान	– सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र – ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र – राजनीतिक अध्ययन केंद्र – क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र – सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र – जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र – विज्ञान नीति अध्ययन केंद्र

	– आर्थिक अध्ययन और नियोजन केंद्र – दर्शनशास्त्र केंद्र – महिला अध्ययन कार्यक्रम – प्रौढ़ शिक्षा ग्रुप – भारत के समसामयिक इतिहास पर अभिलेखागार – शैक्षिक रिकार्ड शोध यूनिट
2. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान	– फ्रेंच और फ्रेंकोफोन अध्ययन केंद्र जर्मन अध्ययन केंद्र इस्पेनी अध्ययन केंद्र – अरबी और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र – भारतीय भाषा केंद्र – भाषा–विज्ञान और अंग्रेजी केंद्र – फारसी और मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र – जापानी और उत्तर पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र – चीनी और दक्षिण पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र – दर्शनशास्त्र ग्रुप – भाषा प्रयोगशाला समूह
3. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान	– अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र – राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र – पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र – रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केंद्र – अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र – दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र – पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र – राजनीतिक सिद्धान्त और तुलनात्मक अध्ययन ग्रुप
4. कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान	–
5. जीवन विज्ञान संस्थान	–
6. पर्यावरण विज्ञान संस्थान	–
7. कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान	–
8. भौतिक विज्ञान संस्थान	–
9. सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान	– जैव–सूचना–विज्ञान केंद्र – संचार और सूचना केंद्र – कंप्यूटर केंद्र
10 जैव–प्रौद्योगिकी केंद्र	–
11. संस्कृत अध्ययन केंद्र	–
12. आणविक चिकित्सा–शास्त्र केंद्र	–
13. विधि और अभिशासन अध्ययन केंद्र	–

विभिन्न संस्थानों और केन्द्रों के अतिरिक्त, विश्वविद्यालय में निम्नलिखित शैक्षिक यूनिट हैं, जो भिन्न–भिन्न प्रकार के कार्य करती हैं। इन यूनिटों ने अपनी गतिविधियों से विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है।

1. अकादमिक स्टाफ कालेज
2. विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्रीकरण केंद्र

इनके अतिरिक्त, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने अपने राष्ट्रीय चरित्र के अनुसार देश भर के निम्नलिखित सुप्रसिद्ध संस्थानों को मान्यता प्रदान की है।

1. **रक्षा संस्थान**	– सेना कैडेड महाविद्यालय, देहरादून – सेना इंजीनियरी महाविद्यालय, पुणे – सेना इलेक्ट्रोनिक्स और मैकेनिकल इंजीनियरी महाविद्यालय, सिकंदराबाद – सेना दूर–संचार इंजीनियरी महाविद्यालय, महू – राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, पुणे – नौ सेना इंजीनियरी महाविद्यालय, लोनावाला
2. **अनुसंधान और विकास संस्थान**	– कोशिकीय और अणु जीव–विज्ञान केंद्र, हैदराबाद – विकास अध्ययन केंद्र, तिरूवनन्तपुरम – केंद्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ – सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ मेडिसिनल ऐंड ऐरोमेटिक प्लांट, लखनऊ – सूक्ष्म जैविक प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़ – अन्तर्राष्ट्रीय आनुवंशिकी इंजीनियरी तथा जैव–प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली – राष्ट्रीय प्रतिरक्षा–विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली – नाभिकीय विज्ञान केंद्र, नई दिल्ली – रमण अनुसंधान संस्थान, बंगलौर

अध्याय – 1

प्रस्तावना

1.9.2002 को विश्वविद्यालय के विभिन्न पूर्णकालिक अध्ययन पाठ्यक्रमों में पंजीकृत छात्रों की संख्या 4796 थी – पी. एच.डी. / एम.फिल. / एम.सी.एच. / एम.टेक. में 2611, बी.ए. / एम.ए. / एम.एस–सी. / एम.सी.ए. में 1396 बी.ए. (ऑनर्स) में 564 और सी.ओ.पी. / डी.ओ.पी. जैसे अंशकालिक पाठ्यक्रमों में 213 और जैव–सूक्ष्म–विज्ञान (स्नातकोत्तर डिप्लोमा) में 12 छात्र पंजीकृत थे।

शैक्षिक वर्ष 2002- 2003 में देशभर में 49 केंद्रों पर अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित प्रवेश–परीक्षा के आधार पर विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में 1229 (817 पुरुष और 412 महिला) उम्मीदवारों को प्रवेश दिया गया। इनमें से 499 उम्मीदवारों ने एम.फिल. / पी. एच.डी. / एम.सी.एच. / एम.टेक; 512 ने स्नातकोत्तर और 218 ने बी.ए. (ऑनर्स) पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया। 213 छात्रों ने भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के विभिन्न अंशकालिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया। इनमें 38 छात्र अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के और 05 छात्र शारीरिक रूप से विकलांग थे।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान 231 शोध छात्र पी–एच.डी. उपाधि, 403 छात्र एम.फिल. उपाधि, 34 छात्र एम.टेक. उपाधि, 107 छात्र एम.एस–सी. / एम.सी.ए. उपाधि, 478 छात्र एम.ए. उपाधि, 290 छात्र बी.ए. / बी.ए. (ऑनर्स) उपाधि प्रदान करने के लिए सफल घोषित किए गए।

पिछले वर्षों की तरह, इस वर्ष भी विश्वविद्यालय ने 30 प्रतिभागी विश्वविद्यालयों के एम.एस–सी. (कृषि विज्ञान) / एम.वी.एस–सी. (एनिमल) तथा एम.एस–सी. जैव–प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु संयुक्त प्रवेश–परीक्षा का आयोजन किया।

प्रवेश पाने वाले 1229 उम्मीदवारों में से 514 उम्मीदवार निम्न और मध्यम आय वर्ग के थे, जिनके माता–पिता की मासिक आय 6,000 रूपये से कम थी और 715 उम्मीदवार उच्च आय वर्ग के थे, जिनके माता–पिता की मासिक आय 6,000 रूपये से अधिक थी। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से क्रमशः 422 और 807 उम्मीदवार थे। केवल 345 उम्मीदवारों ने अपनी स्कूली शिक्षा पब्लिक स्कूलों से प्राप्त की थी और शेष 884 ने नगर–निगम और अन्य स्कूलों से।

विश्वविद्यालय ने अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के 23.27% प्रतिशत उम्मीदवारों को प्रवेश दिया। 1.9.2002 को विश्वविद्यालय में 154 विदेशी छात्र पंजीकृत थे।

विश्वविद्यालय ने विभिन्न अध्ययन–पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक अन्य पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों को प्रवेश–परीक्षा में अतिरिक्त अंक देने का महत्वपूर्ण कदम वर्ष 1995 में उठाया था। शैक्षिक–सत्र 2002–2003 के दौरान, 374 उम्मीदवारों ने अतिरिक्त अंकों का लाभ उठाया।

विश्वविद्यालय अपनी नीति के अनुसार प्रतिष्ठित विद्वानों को विश्वविद्यालय में ज्वाइन करने के लिए आकर्षित करने का प्रयास करता रहा है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विश्वविद्यालय ने इस नीति का अनुसरण करते हुए और वर्तमान शिक्षण तथा शोध कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने और संकाय विशेषज्ञता को सुदृढ़ करने की दृष्टि से चुने हुए शिक्षकों की भर्ती की है। विश्वविद्यालय ने विभिन्न विषयों / क्षेत्रों के लिए विश्वविद्यालय संविधियों की शर्तों के अनुसार गठित चयन समितियों के माध्यम से देश और विदेश के प्रसिद्ध संस्थानों के डॉक्टरल उपाधि धारकों और शिक्षण / शोध में अनुभवी प्रतिष्ठित विद्वानों को आकर्षित करने में सफलता प्राप्त की है।

अनेक चयन समितियों ने प्रोफेसरों और सह–प्रोफेसरों के पदों के लिए आन्तरिक और बाह्य उम्मीदवारों में से जे.एन.यू. के शिक्षकों को सर्वोत्तम उम्मीदवारों के रूप में पाया।

कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान एक नया संस्थान है। इसमें शोध और अध्ययन की पर्याप्त संभावनाएं हैं। यह संस्थान पारम्परिक और समसामयिक, समृद्ध कला सिद्धान्त एवं अभ्यास के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अन्तरविषयक अध्ययन और शोध को उन्नत कराने वाला पहला केंद्र है।

कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान देशभर के सर्वोत्तम छात्रों को प्रवेश के लिए आकर्षित करता है। संस्थान एम.सी.ए., एम.टेक., एम.फिल. और पी–एच.डी. पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक चलाता है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान प्रवेश के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों में से 8869 छात्रों ने प्रवेश–पात्रता की शर्तों को पूरा किया और प्रवेश परीक्षा में बैठे। अन्ततः संस्थान के विभिन्न पाठ्यक्रमों में 52 छात्रों को प्रवेश दिया गया। इस समय संस्थान में पंजीकृत छात्रों की संख्या अन्य विज्ञान संस्थानों के छात्रों से अधिक है। संस्थान के पाठ्यक्रमों की उच्च गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए अब संस्थान की सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ बनाना आवश्यक हो गया है।

संस्थान की प्रसिद्धि का मुख्य कारण यह है कि इसके पाठ्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले अधिकांश छात्रों को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त कम्पनियों में नौकरियां मिल जाती हैं। इन छात्रों को टी.सी.एस., एच.सी.एल., टाटा, आई.बी.एम., विप्रो, इन्फोटेक, 'इन्फोसिस, आई.सी.आई.सी.आई, आरेकल यू.टी.,सी.–डॉट, देवू, बी.ओ.आई. आदि जैसे सूचना प्रौद्योगिकी के प्रतिष्ठित संगठनों और कई अन्य बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में नौकरियां मिली हैं।

संस्थान अपने छात्रों के लिए विभिन्न कोर्सो के अतिरिक्त, विश्वविद्यालय के बहुविषयक दृष्टिकोण के अनुरूप भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान और जीवन विज्ञान संस्थान के छात्रों के लिए भी कोर्स चलाता है। संस्थान ने निम्नलिखित क्षेत्रों में सुविकसित प्रयोगशालाएं स्थापित की हैं – सिस्टम्स साफ्टवेयर, डाटा कम्युनिकेशन और नेटवर्क, पेरलल प्रोसेसिंग ऐंड डिस्ट्रिब्युटिड कंप्यूटिंग और नेचुरल लैंग्युवेज प्रोसेसिंग। इसके अतिरिक्त, संस्थान में मल्टीमीडिया, माडलिंग ऐंड सिम्युलेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऐंड रोबोटिक्स तथा साफ्टवेयर इंजीनियरिंग की प्रयोगशालाएं स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है। इन प्रयोगशालाओं में नेटवर्क मोड में अनेक पी.सी. लगाए जाएंगे। इससे संस्थान के शिक्षण एवं शोध कार्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

पर्यावरण विज्ञान संस्थान के शैक्षिक पाठ्यक्रमों की समय–समय पर समीक्षा की गई और आवश्यकतानुसार इनमें संशोधन किए गए। एम.एस–सी. पाठ्यक्रम वर्ष 1976 में शुरू किया गया, लेकिन इसमें कुछ मुख्य संशोधन करने के लिए कुछ समय के लिए यह पाठ्यक्रम बंद करना पड़ा। इसके बाद, वर्ष 1987 में संशोधित एम.एस–सी. (पर्यावरण विज्ञान) पाठ्यक्रम शुरू किया गया। इस संशोधित पाठ्यक्रम को चलाने से हुए अनुभव के आधार पर इसमें एक बार फिर संशोधन करके वर्ष 1993–94 में एम.एस–सी. पाठ्यक्रम दो स्ट्रीम में शुरू किया गया है। इनमें से एक भौतिक विज्ञान और दूसरा जीवविज्ञान पर आधारित है। वर्ष 1975 से चलाए जा रहे एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों की पाठ्यचर्या में भी समय–समय पर परिवर्तन किए गए। एम.एस–सी. पाठ्यक्रम में संशोधन करके इसे अद्यतन बनाने तथा इसमें फेलोशिप और लेक्चररशिप के लिए यू.जी.सी.–सी.एस.आई.आर. की नेट परीक्षा में पर्यावरण विज्ञान से सम्बन्धित विषयों को भी शामिल करने के लिए संस्थान द्वारा की गई पहल सार्थक रही और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसे एक विषय के रूप में शामिल कर लिया है। वास्तव में इस संस्थान ने देश में सबसे पहले पर्यावरण विज्ञान में एम.एस–सी./एम.फिल. पाठ्यक्रम शुरू किए।

संस्थान की शोध–रुचि विभिन्न भू–वातावरणीय और जीव–वैज्ञानिक प्रक्रियाओं में विभक्त है। पारिस्थितिक और सामाजिक प्रक्रियाओं के बीच संयोजन संस्थान की रुचि के क्षेत्रों को एक अतिरिक्त आयाम प्रदान करते हुए इसके शोध कार्य को सुसंगत बनाते हैं। इसलिए पाठ्यचर्या में भौतिक विज्ञान, भू–वातावरणीय विज्ञान, पर्यावरणीय जीवविज्ञान और पर्यावरणीय मानिटरिंग और प्रबंधन जैसे विषयक क्षेत्र शामिल हैं। शोध–रुचि के ऐसे उच्च स्तरीय क्षेत्रों में शोध करते हुए अब तक 215 से अधिक छात्रों ने पर्यावरण विज्ञान के विभिन्न पक्षों में अपने पी–एच.डी. पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

संस्थान में मुख्यतः चार क्षेत्रों में शोध किया जाता है :

क्षेत्र–I : पर्यावरण के साथ विभिन्न प्रणालियों की पारस्परिक क्रियाओं को अच्छी तरह से समझने के लिए गणितीय मॉडलिंग एक तीव्र एवं प्रभावशाली साधन है। इसलिए संस्थान की शोध रूचि – पारिस्थितिक तंत्रों; नॉन–लिनियर जैव एवं भौतिक प्रणालियां तथा खगोल–भौतिकी प्लाज्मा के सैद्धांतिक पहलुओं की मॉडलिंग के इर्द–गिर्द केंद्रित हैं। इसके अतिरिक्त, शहरी जलवायु में परिवर्तन, ध्वनि प्रदूषण और विद्युत प्रदूषण विषयक क्षेत्रों में भी अध्ययन चल रहा है।

क्षेत्र–II : इस क्षेत्र की शोध गतिविधियां निम्नलिखित दो भिन्न दृष्टिकोणों पर केंद्रित हैं : (क) स्थलीय तथा जलीय पर्यावरण में वर्तमान भू–विज्ञानी और भू–रासायनिक प्रक्रियाओं को समझना; और (ख) भू–रासायनिक और भू–कालक्रम विज्ञान सहित विभिन्न विश्लेषणात्मक उपकरणों पर आधारित दक्षिण भारत के भू–पृष्ठ का उद्गम। हिमालय ग्लेशियर के भू–रसायन विज्ञान और जल–विज्ञान के साथ साथ भू–जल खोज विषयक क्षेत्रों में रिमोट सेंसिंग प्रणालियों का प्रयोग करते हुए शोध किया जा रहा है।

क्षेत्र III : इस क्षेत्र की शोध रुचि में पर्यावरणीय प्रदूषण, जीव जात पर इसका प्रभाव और स्वच्छ जल तथा अशुष्क भूमि के परिस्थिति विज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रकार के अध्ययन क्षेत्र शामिल हैं। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर भी अध्ययन चल रहा है।

क्षेत्र IV : मानव जाति और पादप तथा मानव अस्तित्व के लिए प्रत्यक्ष रूप से महत्त्व रखने वाली पशु प्रजातियों पर अनेक प्रकार के विषीय तत्वों के प्रभावों का अध्ययन जन–समुदाय तथा जीव और कोशिकीय एवं आणविक स्तरों पर किया जाता है। पारिस्थितिक तंत्र गतिविज्ञान तथा इसके कार्य का मूल्यांकन व्यक्तिगत और जन–सामुदायिक स्तर पर अध्ययन किया जा रहा है।

अनेक अध्ययन मॉडल के रूप में एंटामोइबा हिस्टोलिटिका का इस्तेमाल करते हुए होस्ट पैरासाइट इंटरएक्शन पर केंद्रित हैं। एंटामोइबा हिस्टोलिटिका से क्लोन किए गए डी.एन.ए. फ्रेगमेंटस का विकास महामारी विज्ञानीय तथा अमीबता का निदान करने की जांच के तौर पर अध्ययन किया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान की स्थापना वर्ष 1955 में भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के नाम से हुई थी। यह विश्वविद्यालय का सबसे पुराना संस्थान है। बाद में इसका नाम बदल कर अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान कर दिया गया। अपनी स्थापना के 47 वर्षों के दौरान संस्थान ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और क्षेत्रीय अध्ययन के क्षेत्रों में पूरे देश में अपने को एक विशिष्ट संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इसने भारत में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन को एक शैक्षिक विषय के रूप में विकसित करने और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के ज्ञान और समझ को एक अन्तरविषयक परिप्रेक्ष्य में उन्नत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह संस्थान पूरे देश में "क्षेत्रीय अध्ययन" को प्रोत्साहित करने और विश्व के विभिन्न देशों और क्षेत्रों के बारे में विशेष जानकारी विकसित करने वाला भी पहला संस्थान है। संस्थान ने एक उच्च अध्ययन केंद्र के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। इसमें सात अध्ययन केंद्र और एक अध्ययन ग्रुप हैं, जो विभिन्न विषयों में शोध एवं शिक्षण पाठ्यक्रम चलाते हैं।

संस्थान राजनीति विज्ञान में एम.ए. (अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन) पाठ्यक्रम भी चलाता है। संस्थान के राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र में अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में विशेषीकरण के साथ अर्थशास्त्र में एम.ए. पाठ्यक्रम चलाया जाता है। संस्थान, पिछले तीन दशकों से अधिक समय से 'इंटरनेशनल स्टडीज' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। यह एक महत्वपूर्ण शोध पत्रिका है, जिसका वितरण और ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की है।

संस्थान प्रत्येक वर्ष समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से सम्बन्धित विषयों पर एक व्याख्यानमाला भी आयोजित करता है। ये व्याख्यान "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर पंडित हृदयनाथ कुंजरू स्मारक (विस्तार) व्याख्यान" के रूप में जाने जाते हैं। वर्ष 2002 में इस व्याख्यानमाला का विषय था 'ग्लोबलाइजेशन इम्पेक्ट ऐंड रेसिस्टेंस'।

वर्ष 2001 में शुरू हुए **सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान** में तीन केंद्र हैं – (1) जैव–सूचना विज्ञान केंद्र, (2) संचार और सूचना केंद्र, और (3) कंप्यूटर केंद्र। संस्थान का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और शोध के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर बल देने के साथ-साथ यह अध्ययन करना है कि विभिन्न क्षेत्रों में – जैसे जैविक सूचनाओं, भूवैज्ञानिक सूचनाओं, आर्थिक सूचनाओं आदि में उपलब्ध अद्यतन सूचनाओं का शैक्षिक संदर्भ में कैसे कारगर उपयोग किया जा सकता है।

जैव–सूचना **विज्ञान केंद्र** भारत सरकार के जैव–प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा जैव–प्रौद्योगिकी सूचना पद्धति कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थापित किए गए 9 मुख्य केन्द्रों में से एक है। पर्याप्त संरचनागत सुविधाओं तथा दक्ष मानव संसाधनों के साथ वर्ष 1988 से कार्य कर रहे इस केन्द्र का उद्देश्य आनुवंशिक इंजीनियरी पर विशेष बल देते हुए जैव–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध कर रहे शोधार्थियों को सूचना सेवाएं तथा कंप्यूटेशनल सहायता उपलब्ध कराना है। केन्द्र आनुवंशिकी इंजीनियरी, जैव–भौतिकी, जैव–रसायन, जैव–प्रौद्योगिकी, जैव–कंप्यूटिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में शोध और विकास गतिविधियों के मुख्य केन्द्र के रूप में कार्य करता है। जैव–सूचना विज्ञान केंद्र जैव–वैज्ञानिकों को निम्न प्रकार से सहायता उपलब्ध कराता है :

- सार सहित ग्रंथ सूची के संदर्भ उपलब्ध कराना;
- सिक्वेंस और स्ट्रक्चरल डाटाओं की पूर्ति करना;
- सिक्वेंस और स्ट्रक्चरल डाटाओं का विश्लेषण करना;
- जैव–सूचना–विज्ञान में दक्षता प्रदान करना;
- शोध उद्देश्यों के लिए कंप्यूटेशनल सुविधा प्रदान करना।

संचार और सूचना सेवाएं : विश्वविद्यालय ने अपनी अग्रणीय परम्परा को ध्यान में रखते हुए शिक्षण एवं शोध कार्यक्रम को आधुनिक इंटरनेट प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ते हुए एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। कैम्पस–वाइड–नेटवर्किंग के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के सभी भवनों को फाइबर आप्टिक्स केबल से जोड़ा गया है। अन्तर–संस्थान संचार सेवाएं मध्य में स्थित हाई स्पीड स्विच के माध्यम से उपलब्ध करायी गई हैं। यह स्विच इंटरनेट से जुड़ा हुआ है। इस तरह सभी संस्थान/केंद्र/विभाग विश्वविद्यालय के अन्दर पुस्तकालयों/सूचना डाटाबेसों तथा पूरे विश्व के साथ जुड़े हुए हैं। सभी संस्थानों को सर्वर उपलब्ध कराए गए हैं ताकि वे अपने स्वयं के ई–मेल सर्वर और पुस्तकालय सर्वरों की तरह अन्य डाटाबेस सर्वर, इन्टरनेट सर्वर विकसित कर सकें।

कंप्यूटर केंद्र की स्थापना विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, छात्रों और स्टाफ सदस्यों को आधुनिक कंप्यूटर सुविधाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से विश्वविद्यालय के एक स्वतंत्र केन्द्र के रूप में की गई। केंद्र में उपलब्ध कंप्यूटिंग सुविधाएं बहुत ही अहम पहलू हैं। यह केंद्र विश्वविद्यालय की अन्य गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कंप्यूटर केंद्र में स्थित जे.एन.यू. – इग्नू कंप्यूटर प्रयोगशाला अन्तर–विश्वविद्यालय सहयोग की एक खूबसूरत मिसाल है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत दो विश्वविद्यालयों – जे.एन.यू. और इग्नू के परस्पर सहयोग से संयुक्त कंप्यूटर सुविधाएं विकसित की गई हैं जिनका प्रयोग दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र करते हैं।

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के केन्द्रों में विभिन्न शास्त्रीय, आधुनिक भारतीय और विदेशी भाषाओं में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। शिक्षण एवं शोध के क्षेत्र में संस्थान एक विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। संस्थान के शिक्षकों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों/सम्मेलनों/परियोजनाओं में भाग लेकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्थान को गर्व है कि वह न केवल समय–समय पर अपने कोर्सों में परिवर्तन करके उन्हें अद्यतन बनाता है बल्कि यह भी सत्य है कि विभिन्न विदेशी भाषाओं में बी.ए. (ऑनर्स), एम.ए., पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों तथा विशेष रूप से तैयार किए गए डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स चलाने वाला यह देश में एकमात्र संस्थान है। संस्थान टूल/वैकल्पिक कोर्स भी चलाता है, जोकि अंतःसांस्कृतिक और अन्तर–भाषीय परिप्रेक्ष्य में अन्तर–विषयक दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं। संस्थान विशेष रूप से जरूरतमंद छात्रों के लिए विभिन्न भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी भाषा में उच्चारात्मक कोर्स चलाता है, जिनमें प्रत्येक वर्ष काफी छात्र भाग लेते हैं।

संस्थान में दस केन्द्रों के अतिरिक्त, एक दर्शनशास्त्र ग्रुप भी है। संस्थान में आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित एक भाषा प्रयोगशाला है। इसमें आडियो–वीडियो रिकार्डिंग, एज्यूकेशनल साफ्टवेयर प्रोडक्शन जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

संस्थान के कुछ केंद्रों के बाह्य संस्थानों के साथ सहयोगात्मक प्रबन्ध हैं। संस्थान ने विश्वविद्यालय के माध्यम से कोरिया, यूरोप और अमरीका के विश्वविद्यालयों के साथ 'मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टेंडिंग' पर हस्ताक्षर किए हैं।

जीवन विज्ञान संस्थान देश में एक अग्रणी बहु–विषयक शोध एवं शिक्षण विभाग रहा है। संस्थान ने आधुनिक जीवनविज्ञान के चुने हुए क्षेत्रों में नवीनतम शिक्षण एवं शोध कार्यक्रम चलाए। संस्थान पादप अणु जीव–विज्ञान, आनुवंशिकी, कोशिका और अणु जीवविज्ञान, प्रतिरक्षा विज्ञान, विकिरण, प्रकाश जैविकी तथा कैंसर जीव–विज्ञान और सूक्ष्म जीव–विज्ञान आदि में उच्च स्तरीय एवं महत्त्वपूर्ण शोध कार्यक्रम चलाता है। संस्थान की भविष्य की योजनाओं में तंत्रिका जीव–विज्ञान, अणु जैव–भौतिकी और संरचनात्मक जीव–विज्ञान के क्षेत्रों में अध्ययन के लिए केंद्रीयकृत सुविधाएं विकसित करना शामिल है। पादप जीवाणुओं और उष्णकटिबंधीय तथा आनुवंशिक रोगों की जीन प्रौद्योगिकी पर गहन शोध के लिए उपलब्ध सुविधाओं में वृद्धि की जानी है। संस्थान की शोध गतिविधियों के लिए अनिवार्य सहायता उपलब्ध करवाने वाली केंद्रीयकृत सुविधाएं अपने आप में अद्वितीय हैं।

भौतिक विज्ञान संस्थान भौतिक विज्ञान में शोध एवं शिक्षण के एक विशिष्ट केंद्र के रूप में उभरा है। पिछले वर्षों में संस्थान ने एम.एस–सी. और प्री–पी–एच.डी. स्तरों पर नये एवं गैर–परम्परागत कोर्सों के साथ शिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाए। संस्थान ने वर्ष 1987 में पी–एच.डी. पाठ्यक्रम शुरू किया। अब तक 30 छात्रों को पी–एच.डी. उपाधियां प्रदान की गई हैं। एम.एस–सी. (भौतिक विज्ञान) पाठ्यक्रम वर्ष 1992 के मानसून सत्र से शुरू हुआ। देश के विभिन्न भागों से छात्र इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने आते हैं। इस पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें सैद्धान्तिक और प्रायोगिक भौतिकविज्ञान की आधारभूत जानकारी दी जाती है। इस प्रकार शोध में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए यह पाठ्यक्रम बहुत उपयोगी है।

संस्थान की शोध गतिविधियां मुख्यतः क्लासिकल ऐंड क्वांटम केआस, कंप्यूटेशनल फिजिक्स, कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स, डिसार्डर्ड सिस्टम्स, नानलिनियर डायनेमिक्स, क्वांटम फील्ड थीअरि, क्वांटम आप्टिक्स और स्टेटिस्टिकल

मैकेनिक्स के सैद्धान्तिक क्षेत्रों तथा केमिकल फिजिक्स, कम्प्लेक्स फ्लुइड, कंडेस्ड मैटर फिजिक्स और नॉन लिनियर आप्टिक्स के प्रयोगात्मक क्षेत्रों पर केन्द्रित हैं।

सामाजिक विज्ञान संस्थान पूर्णतः एक स्नातकोत्तर संस्थान है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित महिला अध्ययन विषयक विशेष कार्यक्रम और प्रौढ़, अनुवर्ती शिक्षा और विस्तार यूनिट के अतिरिक्त, संस्थानों के 9 केन्द्रों द्वारा चलाए जा रहे एम.ए./एम.फिल./पी-एच.डी. और पी-एच.डी. पाठ्यक्रमों मे प्रत्येक वर्ष 450 से अधिक छात्रों को दाखिला दिया जाता है। संस्थान में समसामयिक इतिहास पर अभिलेखागार और एक शैक्षिक शोध रिकार्ड यूनिट भी है। संस्थान के सभी केन्द्रों में शोध पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं जबकि एम.ए. पाठ्यक्रम चार केंद्रों में ही चलाए जाते हैं। इन सभी चार केंद्रों और जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विशेष सहायता अनुदान योजना के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त हो रहा है

सामाजिक विज्ञान और मानविकी के अध्ययन में संलग्न सभी संस्थानों द्वारा निकाले जा रहे प्रकाशनों में से आधे से ज्यादा प्रकाशन इस संस्थान द्वारा निकाले जा रहे हैं। संस्थान के अनेक शोध छात्रों के आलेख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। कई शोध प्रबन्धों का भी प्रकाशन हुआ।

संस्थान के शिक्षण एवं शोध पाठ्यक्रमों में कतिपय नव प्रवर्तनकारी तत्त्व मिलते हैं। किसी एक विषय में गहन प्रशिक्षण के साथ–साथ बहु-विषयक अध्ययनों व शोध में रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए एक केंद्र के एक विषयक संस्थान वाले पाठ्यक्रमों के छात्रों को अन्य केंद्रों के विषय पढ़ने की अनुमति दी जाती है। ऐसा करते समय छात्र की अभिक्षमता के साथ–साथ मुख्य विषय के साथ उन विषयों की सम्बद्धता को भी ध्यान में रखा जाता है।

जैव **प्रौद्योगिकी केंद्र : जैव**–प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में एम.एस–सी. और पी–एच.डी. पाठ्यक्रम चलाता है। एम.एस–सी. पाठ्यक्रम के लिए जैव–प्रौद्योगिकी विभाग सहयोग करता है, जबकि पी–एच.डी. पाठ्यक्रम का वित्त पोषण शिक्षकों को प्राप्त अनुदान और विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। पी–एच.डी. पाठ्यक्रम के लिए सीटों की संख्या का निर्धारण प्रत्येक वर्ष प्रयोगशालाओं में उपलब्ध सीटों और वित्तीय स्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है। एम.एस–सी. स्तर के कोर्स सैद्धान्तिक और अनुप्रयुक्त दोनों स्तर पर जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं। इनमें शामिल है – स्ट्रक्चर ऑफ मैक्रोमोलेक्यूल्स, फर्मेंटेशन और डाउनस्ट्रीम प्रोसेसिंग टेक्नोलोजी, मोलक्यूलर डायग्नोस्टिक्स, एनिमल बायोटेक्नोलोजी, मोलक्यूलर बायोलोजी ऑफ प्रोकारियोटिस और यूकारियोटिस, जैनेटिक्स इंजीनियरिंग, इम्यूनोटेक्नालाजी आदि। पी–एच.डी. पाठ्यक्रम में छात्रों के लिए शोध निर्देशक चुनने से पहले अनिवार्य लैब रोटेशन सिस्टम है और छात्रों के लिए विशेषीकृत परिचर्या कोर्स चलाए जाते हैं। केंद्र के शिक्षक निम्नलिखित विशेषीकृत क्षेत्रों में आधुनिक जीव–विज्ञान में अन्तरविषयक शोध में संलग्न है : प्रोटीन इंजीनियरी, यूकारियोटिक जीन एक्सप्रेशन मोलक्यूलर बायोलोजी ऑफ इनफेक्शस डिसीजिस, इम्यूनोलॉजी, प्रोटीन स्टेबिलिटी, कनफर्मेशन ऐंड फोल्डिंग, ओवर एक्सप्रेशन ऑफ रिकम्बिनेंट प्रोटीस, ट्रांसक्रिप्शन ऑफ यूकारियोटिक जींस, ट्रांसजेनिक सिस्टम्स और मोलक्यूलर जैनेटिक्स ऑफ इन हेरिटिड डिसीजिस।

विधि और अभिशासन अध्ययन केंद्र एक अन्तर–विषयक केंद्र है, जिसकी स्थापना वर्ष 2000 में विश्वविद्यालय के एक विशेष केंद्र के रूप में की गई। समाजशास्त्रियों, राजनीतिक विज्ञानियों, अर्थशास्त्रियों और अन्य विभिन्न क्षेत्र के विद्वानों के महत्वपूर्ण योगदान ने परम्परागत अभिशासन–पद्धति की समझ को समृद्ध और विस्तृत बनाया है। अभिशासन मामलों में संस्थानों और संरचनाओं में सुधार; उच्च दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही की ओर अग्रसर करने वाली प्रक्रिया और नियमों का सृजन तथा स्थापना; और लोकतंत्र एवं सभ्य समाज को मजबूत बनाते हुए शासन को और अधिक समाविष्ट और सहभागी बनाने की प्रक्रिया के संदर्भ में नीति सम्बन्धी उलझनें भी होती हैं। केंद्र का उच्च स्तरीय शोध कार्य परामर्श और प्रशिक्षण के माध्यम से व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करता है। केंद्र के थ्रस्ट एरिया में शामिल हैं संगत कोर्स चलाना और इसी तरह के अन्य संस्थानों के नेटवर्क से सम्पर्क बनाना। केंद्र का उद्देश्य एक ऐसी शोध संस्था विकसित करना है जो शैक्षिक प्रकाशन जारी करे और वाद–विवाद के माध्यम से शासन–पद्धति में परिवर्तन हेतु एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करे।

आणविक चिकित्साशास्त्र केंद्र – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपनी 9वीं योजना की सिफारिशों में आणविक चिकित्साशास्त्र का एक विशेष केंद्र स्थापित करने के लिए अपनी सहमति प्रकट की है। इस केंद्र का उद्देश्य मानव रोग के अध्ययन में सीधे अनुप्रयोग के साथ आणविक और कोशिकीय जीवविज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य को प्रोत्साहन देना है। इस केंद्र की स्थापना एक नई संकल्पना पर आधारित है। अपने देश में इस तरह का प्रयास पहले कभी नहीं हुआ।

आणविक और कोशिकीय जीवविज्ञान के क्षेत्र में हो रही वर्तमान प्रगति आयुर्विज्ञान अनुसंधान और प्रैक्टिस के लिए काफी सार्थक है। अभी तक इनका सफल उपयोग आनुवंशिक रोगों के कारणों की पहचान करने और उन पर काबू पाने के लिए किया गया है। हालांकि, यह स्पष्ट है कि रिकम्बिनेंट डी.एन.ए. टेक्नालाजी का अनुप्रयोग आयुर्विज्ञान चिकित्सा के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में हो सकेगा। इससे कैंसर सम्बन्धी शोध में क्रांति आ गई है और एक ऐसा जैव–प्रौद्योगिकी उद्योग विकसित किया है जो कि पहले से ही विभिन्न क्षेत्रों के नैदानिक और चिकित्सीय ऐजेण्ट उत्पन्न कर रहा है। भावी समय में यह उद्योग हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मुख्य मानसिक रोगों, गठिया जैसे असाध्य रोगों की आधुनिक चिकित्सा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। यह विकास, वयोवृद्धि और उत्पत्ति सहित मानव जीवविज्ञान के विस्तृत पहलुओं पर गहन अध्ययन में भी हमारा सहयोग करेगा।

अकादमिक स्टाफ कालेज की स्थापना वर्ष 1989 मे हुई थी। कालेज, राजनीतिक विज्ञान, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, अर्थशास्त्र, इतिहास, कंप्यूटर विज्ञान, समाजशास्त्र, जीवन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, भौतिक विज्ञान और जैव–प्रौद्योगिकी विषयों में पुनश्चर्या कोर्स और सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों में अनुशीलन कोर्सों का आयोजन करता है।

अकादमिक स्टाफ कालेज का मुख्य उद्देश्य कालेज शिक्षकों को उनके सम्पूर्ण बौद्धिक विकास के अतिरिक्त विषयात्मक वाद–विवाद और भाषण की कला से परिचित कराना है। इससे उन्हें विषय सम्बन्धी मामलों तथा समसामयिक समस्याओं पर विचार करने तथा उनको प्रतिबिंबित करने की क्षमता अर्जित करने की प्रेरणा मिलती है।

प्रौढ़ शिक्षा ग्रुप – जेएनयू में वर्ष 1978 के दौरान भारत सरकार की राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा नीति के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की शुरूआत की गई। शुरू में जेएनयू परिसर में और इसके आस–पास के क्षेत्रों में अनेक विस्तार गतिविधियों का आयोजन किया गया। वर्ष 1983 में जेएनयू में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में उस समय विस्तार हुआ जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्रौढ़, अनुवर्ती शिक्षा और विस्तार कार्यक्रम पर एक पैकेज तैयार किया और इसके लिए शत–प्रतिशत वित्तीय अनुदान उपलब्ध कराने का वायदा किया। इसके बाद, विश्वविद्यालय ने वर्ष 1984 में प्रौढ़, अनुवर्ती शिक्षा एवं विस्तार की एक स्वतंत्र यूनिट की स्थापना की। इस यूनिट ने समाज के कमजोर वर्गों के लिए प्रौढ़ शिक्षा केंद्र, अनुवर्ती शिक्षा कार्यक्रम चलाए और छात्र स्वयंसेवकों तथा अनुदेशकों को प्रशिक्षित किया। अनेक शोध एवं मूल्यांकन अध्ययन किए गए तथा भारतीय प्रौढ़ शिक्षा पर एक नॉन–क्रेडिट कोर्स तैयार किया। इसके अतिरिक्त, कई प्रकाशन भी निकाले।

9वीं योजना के अन्त में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्रौढ़ शिक्षा यूनिट के कार्यक्रमों की समीक्षा की और यह सिफारिश की कि इस यूनिट को एक सांविधिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाए ताकि यूनिट शोध एवं विस्तार कार्यक्रमों के अतिरिक्त शिक्षण कार्यक्रम भी शुरू कर सके। केंद्र प्रौढ़ शिक्षा को अध्ययन विषय एवं अनुप्रयोग क्षेत्र के रूप में विकसित करने की योजना बना रहा है। यह प्रयास अन्तरविषयक क्रेडिट कोर्सों के विकास, सामुदायिक आधार पर अनुवर्ती शिक्षा कार्यक्रमों, संगत शोध अध्ययनों, नवीन विस्तार गतिविधियों, प्रलेखन तैयार करने और प्रकाशनों के माध्यम से किया जाएगा।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में **समसामयिक भारतीय इतिहास पर अभिलेखागार** की स्थापना वर्ष 1970 में सामाजिक विज्ञान संस्थान में हुई। यह अभिलेखागार भारत में हुए वामपंथी आन्दोलन से सम्बन्धित सामग्री का एक भण्डार है। स्वर्गीय श्री पी.सी. जोशी के व्यक्तिगत संग्रहों से शुरू किए गए इस अभिलेखागार में विभिन्न स्रोतों से अब तक पर्याप्त मात्रा में सामग्री एकत्रित की गई है। इसमें 1947 के बाद की सामग्री विशेष रूप से एकत्रित की गई है। इसके संग्रह में पत्रिकाएं, अखबार, भारत की कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रकाशन तथा विभिन्न वामपंथी ग्रुपों के प्रकाशन शामिल हैं। कम्युनिस्ट गतिविधियों से सम्बन्धित सरकारी रिकार्ड भी इसके संग्रहों में शामिल हैं। अभिलेखागार में लोकगीत, कम्युनिस्ट नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के साक्षात्कार की प्रतिलिपियाँ तथा फोटोग्राफ भी संरक्षित है। अभिलेखागार वर्तमान में कम्युनिस्ट पार्टियों तथा ग्रुपों द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित रिकार्डों, दस्तावेजों तथा पत्र–पत्रिकाओं का संग्रह कर रहा है। अभिलेखागार अपने संस्थापक निदेशक स्वर्गीय श्री पी.सी. जोशी की स्मृति में एक वार्षिक व्याख्यान आयोजित करता है।

शैक्षिक रिकार्ड और शोध यूनिट : यूनिट शिक्षा के इतिहास के क्षेत्र में शोध एवं डाक्यूमेंट्री के प्रकाशन में संलग्न है। जेएनयू में इसकी स्थापना वर्ष 1971 में एक परियोजना के रूप में हुई। वर्ष 1979 से यह सामाजिक विज्ञान संस्थान में विश्वविद्यालय का एक नियमित शोध एवं प्रकाशन कार्यक्रम है।

भाषा प्रयोगशाला और मल्टीमीडिया समूह : भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान की भाषा प्रयोगशाला पूरे एशिया में अपनी तरह की एक सर्वोत्तम ढंग से विकसित और सुसज्जित प्रयोगशाला है। यह प्रयोगशाला तकनीकी दृष्टि से विश्वविद्यालय की एक अनोखी सम्पदा है। इस प्रयोगशाला में आडियो एक्टिव कंपेरिटिव भाषा प्रयोगशालाएं, आडियो एक्टिव भाषा प्रयोगशाला, आडियो विजुअल कमरे और सभी फार्मेटों में फिल्म प्रोजेक्शन की सुविधाओं वाला एक प्रेक्षागृह है। भाषा प्रयोगशाला में उत्कृष्ट शैक्षणिक शिक्षण सामग्री प्रोडक्शन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसमें नियन्त्रण कक्ष के साथ तीन कैमरा वीडियो स्टुडियो; वीडियो एडिशन / डुप्लीकेशन सुविधाएं और फोटो लेबोरेट्री है। विदेशी भाषाओं के छात्रों को सम्बन्धित भाषा–भाषी लोगों के साथ टी.वी. समाचारों और कार्यक्रमों के माध्यम से सम्पर्क स्थापित करने हेतु कई सैटेलाइट रिसीविंग डिश एंटिना सिस्टम स्थापित किए गए हैं। विदेशी भाषा सीखने के लिए सम्बन्धित भाषा–भाषियों के साथ सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक है। सभी भाषा प्रयोगशालाएं, आडियो और वीडियो साफ्टवेयर प्रोडक्शन उपकरण आदि जापान, जर्मनी, ईरान, रूस, पुर्तगाल जैसे देशों से उपहार / अनुदान के तौर पर प्राप्त हुए हैं।

विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्रीकरण केंद्र की स्थापना वर्ष 1979 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की गई थी :

विश्वविद्यालय के शैक्षिक समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से प्रौद्योगिकीय संरचना को सुदृढ़ बनाना; उच्च शिक्षा पद्धति में यंत्रीकरण की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम चलाना; विश्वविद्यालय में महंगे उपकरणों के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण तथा उपयुक्त यन्त्र–प्रणाली को बढ़ाना।

रोजगार सूचना और मार्गदर्शन ब्यूरो का गठन विश्वविद्यालय रोजगार ब्यूरो हेतु राष्ट्रीय रोजगार सेवा के वर्किंग ग्रुप की सिफारिशों के आधार पर किया गया है। इन सिफारिशों का अनुमोदन श्रम मंत्रालय द्वारा वर्ष 1962 में किया गया था। ब्यूरो ने विश्वविद्यालय में अपना कामकाज मई 1976 में दिल्ली प्रशासन और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के बीच समन्वय के साथ शुरू किया।

विश्वविद्यालय वित्त – वित्तीय वर्ष 2002–2003 के दौरान अनुरक्षण बजट के तहत वास्तविक प्राप्तियां और खर्च क्रमशः 6535.69 लाख रूपये तथा 5987.87 लाख रूपये थे। विकास बजट (योजना) के अन्तर्गत संदर्श आंकड़े क्रमशः 975.00 लाख और 854.65 लाख रूपये थे।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान, चल रही और वर्ष के दौरान शुरू की गई शोध परियोजनाओं के कार्यों में प्रगति हुई। इनमें प्रायोजित और अप्रायोजित परियोजनाएं शामिल हैं।

विश्वविद्यालय को वर्ष 2002--2003 में परियोजनाओं के लिए रू. 12.29 करोड़ की अनुदान राशि प्राप्त हुई थी। इन परियोजनाओं के लिए 86 राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों से निधि प्राप्त हुई। इनमें शामिल हैं – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (19), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (51), जैव–प्रौद्योगिकी विभाग (33), परमाणु ऊर्जा विभाग (02), सी.एस.आई.आर. (20) और अन्य (विस्तृत विवरण अध्याय–VIII पर विश्वविद्यालय वित्त के अन्तर्गत दिया गया है।)। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से भी 3.42 करोड़ की अनुदान राशि प्राप्त हुई।

शिष्टमण्डल, विद्वान तथा संगोष्ठियां – समीक्षाधीन वर्ष के दौरान देश–विदेश के कई शिष्टमण्डल और प्रतिष्ठित विद्वान जेएनयू में आए। ये देश हैं – आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, ईरान, जापान, नीदरलैण्ड, स्विटजरलैण्ड, दक्षिण–अफ्रीका, यूके, यूएसए, रोमानिया, किरगिस्तान, स्काटलेण्ड, कोरिया, आर्मेनिया, फिलीपिंस, नेपाल, उज्जबेक, ओमान, वियतनाम आदि।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान, शिक्षकों को संगोष्ठियों / सम्मेलनों / गोष्ठियों में भाग लेने और व्याख्यान देने के लिए कई देशों के विश्वविद्यालयों / शैक्षिक संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इन देशों में शामिल हैं – आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, बंगलादेश, कनाडा, चीन, साइप्रस, फिनलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, हंगरी, ईरान, इटली, इण्डोनेशिया, जापान, कुवैत, किरगिस्तान, मलेशिया, स्पेन, स्वीडन, थाईलैण्ड, टर्की, यूके, यूएसए, नेपाल, रूस आदि।

विश्वविद्यालय बौद्धिक मुद्दों और प्रासंगिक समस्याओं पर विचारों के आदान–प्रदान को बढ़ावा देने में काफी सक्रिय रहा है। विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों और केन्द्रों ने एक दिवसीय संगोष्ठियों / व्याख्यानों के अतिरिक्त, अनेक अखिल भारतीय संगोष्ठियां / कार्यशालाएं / सम्मेलन आयोजित किए, जिनमें शोधार्थियों / शिक्षाविदों और विज्ञानियों को आमंत्रित किया गया। इनमें से कुछ संगोष्ठियों में विदेशी विद्वानों ने भी भाग लिया।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय – समीक्षाधीन वर्ष के दौरान 4545 पुस्तकें खरीदीं गईं और इस प्रकार वर्ष 2002–2003 में पुस्तकों और पत्रिकाओं का संग्रह बढ़कर 5,05,164 हो गया, जबकि वर्ष 1993–94 में यह संख्या 4,43,500 थी। पुस्तकालय में 674 पत्रिकाएं मंगाई गईं और उपहार के तौर पर तथा विनिमय के आधार पर भी 188 पत्रिकाएं प्राप्त हुईं। वर्ष के दौरान पुस्तकों और पत्रिकाओं की खरीद पर 1.38 लाख रूपये खर्च हुए। वर्ष 2002–2003 में 23569 अखबारी कतरनें एकत्रित की गई। इस तरह, अखबारी कतरनों की संख्या 11.60 लाख से अधिक हो गई है। जे.एन.यू. बुक शॉप ने पुस्तकालय के लिए खरीदी गई पुस्तकों पर अतिरिक्त छूट के रूप में 3,49 लाख रूपये की राशि की बचत की।

छात्र गतिविधियां – विश्वविद्यालय के 13 छात्रावासों (विवाहित शोध छात्रों के लिए एक छात्रावास सहित) में 3699 छात्र रह रहे हैं। छात्रावासों में रह रहे छात्रों ने छात्रावास–प्रबन्धन के विभिन्न कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान जरूरतमंद छात्रों को छात्र सहायता निधि में से 2,22,766.00 रू. की राशि बांटी गई।

छात्रों ने 9 क्लबों के माध्यम से आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक और पाठ्येतर गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इन क्लबों की स्थापना छात्र समुदाय को साहित्य जगत, ललित कलाओं के निष्पादन, प्राकृतिक और वन्य जीवन के बारे में जानकारी हासिल कराने के उद्देश्य से की गई। इन गतिविधियों में शामिल हैं – सुप्रसिद्ध कलाकारों के संगीत कार्यक्रम, वाद–विवाद प्रतियोगिताएं, परिचर्चाएं, काव्य गोष्ठियां, फिल्म शो, प्रदर्शनियां, नुक्कड़ नाटक, शैक्षिक/क्षेत्रीय यात्राएं आदि। छात्रों ने विभिन्न क्विज प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए। इन क्लबों की गतिविधियों का विस्तृत विवरण इस रिपोर्ट (अध्याय–5) में दिया गया है। विश्वविद्यालय के छात्रों ने खेलों में गहरी रुचि दिखाई।

अध्याय–2

विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश विश्वविद्यालय की विद्या परिषद द्वारा समय–समय अनुमोदित प्रवेश नीति और प्रक्रिया के अनुसार दिए जाते हैं।

प्रत्येक अध्ययन पाठ्यक्रम में सीटों (एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों सहित) की संख्या का निर्धारण संबंधित केन्द्र/संस्थानों की सिफारिश के आधार पर विद्या परिषद् द्वारा किया जाता है। सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों की सीटें केन्द्रों/संस्थानों द्वारा एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों के लिए निर्धारित की गई सीटों के अतिरिक्त होती हैं।

प्रवेश प्रक्रिया

प्रवेश में आरक्षण : विश्वविद्यालय अ.जा./अ.ज.जा. के छात्रों को आरक्षण उपलब्ध कराता है। 22.5% स्थान अ.जा./अ.ज.जा. (क्रमशः 15% और 7.5% आवश्यक होने पर सीटों के अनुपात में परिवर्तन किया जा सकता है) और 3% स्थान शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवारों के लिए आरक्षित हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम में निश्चित सीटों के अलावा 10% सीटें विदेशी छात्रों के लिए आरक्षित हैं। विदेशी छात्रों के लिए निर्धारित 10% सीटों में से 5% सीट प्रवेश–परीक्षा के माध्यम से तथा 5% सीट 'एब्सेंसिया' में भरी जाती हैं। आवश्यक होने पर सीटों के अनुपात में परिवर्तन किया जा सकता है।

प्रवेश सूचना : प्रवेश संबंधी सूचना अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय समाचार-पत्रों और देश के विभिन्न क्षेत्रों के अग्रणी समाचार–पत्रों में प्रत्येक वर्ष फरवरी माह के लगभग दूसरे सप्ताह में प्रकाशित की जाती है।

लिखित–परीक्षा : विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु देश भर में फैले विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर लिखित-परीक्षा आयोजित की जाती है। यह लिखित परीक्षा प्रत्येक वर्ष मई माह के तीसरे सप्ताह में आयोजित की जाती है। प्रत्येक पाठ्यक्रम अथवा अध्ययन पाठ्यक्रम के लिए तीन घंटे की अवधि वाला एक प्रश्न–पत्र तैयार किया जाता है। प्रवेश–परीक्षा तीन दिन चलती है। प्रत्येक दिन दो सत्रों में परीक्षा होती है, जिनमें तीन–तीन घंटे के प्रश्न–पत्र होते हैं। उम्मीदवार को विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिखित–परीक्षा में प्राप्त अंकों तथा मौखिक–परीक्षा (जहां निर्धारित हो) के आधार पर दिया जाता है।

प्रवेश–परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु अपेक्षित पात्रता : प्रवेश–परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए अपेक्षित पात्रता (सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग दोनों के लिए) विश्वविद्यालय द्वारा इस संबंध में बनाए गए मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अनुसार निर्धारित होती है। पाठ्यक्रम विशेष में प्रवेश हेतु निर्धारित अर्हक परीक्षा में बैठने वाले उम्मीदवारों को भी प्रवेश परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाती है परन्तु प्रवेश हेतु चुन लिए जाने की स्थिति में उनका प्रवेश अर्हक परीक्षा में निर्धारित अंक प्राप्त करने तथा अर्हक परीक्षा की अंतिम अंक तालिका सहित सभी प्रमाण–पत्र प्रस्तुत करने पर ही मान्य होता है। किसी भी अध्ययन पाठ्यक्रम में प्रवेश की अंतिम तिथि वर्ष की 14 अगस्त होती है। इसके बाद किसी को प्रवेश नहीं दिया जाता।

मौखिक परीक्षा : एम.फिल./पी–एच.डी./प्री–पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों और विदेशी भाषाओं (अंग्रेजी को छोड़कर) में पाँच वर्षीय एकीकृत एम.ए. पाठ्यक्रमों के चौथे वर्ष में प्रवेश लेने वाले उम्मीदवारों को एक मौखिक–परीक्षा देनी होती है। इस परीक्षा के लिए 30% अंक आबंटित है। केवल उन्हीं उम्मीदवारों को एम.फिल./पी–एच.डी./प्री–पी–एच.डी. और एम.ए. (विदेशी भाषाओं में चतुर्थ वर्ष) पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु मौखिक परीक्षा में बुलाने के लिए पात्र माना जाता है जिन्होंने लिखित परीक्षा में न्यूनतम क्रमशः 35% और 25% अंक प्राप्त किए हों। अ.जा./ अ.ज.जा. और शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवारों के लिए 10% अंकों की छूट होती है। प्रत्येक अध्ययन पाठ्यक्रम में सामान्यतः विद्या परिषद् द्वारा अनुमोदित सीटों से तीन गुना उम्मीदवारों को ही मौखिक–परीक्षा के लिए बुलाया जाता है।

उम्मीद्वारों का चयन : प्रत्येक कोर्स/अध्ययन पाठ्यक्रम के लिए सामान्य, अ.जा./अ.ज.जा., शारीरिक रूप से विकलांग और विदेशी उम्मीदवारों की अलग–अलग योग्यता–क्रम सूची तैयार की जाती है। विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में उम्मीदवारों को अंतिम रूप से प्रवेश उम्मीदवारों से संबंधित वर्गों में इंटर से–मेरिट के आधार पर दिया जाता है। यह

मेरिट उम्मीदवार की लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा (जहाँ निर्धारित हो) में प्राप्त अंकों और अतिरिक्त अंकों (जहाँ लागू हो) के आधार पर तैयार की जाती है।

पंजीकरण : जो उम्मीद्वार प्रवेश के लिए चुन लिए जाते हैं, उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे प्रत्येक वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा बनाई जाने वाली समय--सारणी के अन्दर ही अपने पंजीकरण संबंधी सभी औपचारिकताएं पूरी कर लें।

अध्ययन पाठ्यक्रम

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय ने 53 विषयों में पी–एच.डी., एम.फिल./पी–एच.डी./एम.टेक./पी–एच.डी. और एम.सी.एच/पी–एच.डी.. 5 विषयों में एम.एस–सी./एम.सी.ए., 21 विषयों में स्नातकोत्तर तथा 9 विदेशी भाषाओं में स्नातक पाठ्यक्रम चलाए। इसके अतिरिक्त, विभिन्न भाषाओं में सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स भी चलाए।

विश्वविद्यालय अपने विभिन्न संस्थानों और केन्द्रों द्वारा चलाए जा रहे शिक्षण एवं शोध पाठ्यक्रमों और इनके लिए निर्धारित पाठ्यचर्या के माध्यम से इस तरह की नीतियां तथा कार्यक्रम तैयार करने का प्रयास करता है, जोकि पहले से ही उपलब्ध सुविधाओं का प्रसार करने की बजाए उच्च शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय संसाधनों में एक विशिष्ट प्रकार की वृद्धि करते हैं। विश्वविद्यालय ने उपलब्ध वित्तीय और भौतिक संसाधनों से ही अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों द्वारा निम्नलिखित अध्ययन पाठ्यक्रम चलाए गए :

I. कंप्यूटर और पद्धति–विज्ञान संस्थान

- एम.फिल./पी–एच.डी. : यह पाठ्यक्रम कंप्यूटर विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर केन्द्रित है।
- एम.टेक./पी–एच.डी. (कंप्यूटर विज्ञान और प्रौद्योगिकी) : यह 3–सत्रीय पाठ्यक्रम कंप्यूटर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीनतम जानकारी प्रदान करने की दृष्टि से तैयार किया गया है। एम.टेक. पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद उम्मीद्वार पी–एच.डी. पाठ्यक्रम में पंजीकरण के पात्र हो जाते हैं।
- मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन (एम.सी.ए.) : इस 3–वर्षीय पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि छात्रों को विज्ञान और इंजीनियरी के क्षेत्र में कंप्यूटर अनुप्रयोग सम्बन्धी सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि एवं व्यावहारिक अनुभव की आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सके तथा डाटा प्रोसेसिंग के क्षेत्र में मानव–शक्ति की बढ़ती हुई मांग को पूरा किया जा सके।

II. पर्यावरण विज्ञान संस्थान

- एम.फिल./पी–एच.डी. : चार विस्तृत क्षेत्रों में शोध सुविधाएं उपलब्ध हैं। इन क्षेत्रों का उल्लेख इस रिपोर्ट में अलग से किया गया है।
- एम.एस–सी. – पर्यावरण विज्ञान : यह 4–सत्रीय पाठ्यक्रम वायुमंडलीय, भूमि, प्रदूषण और जीव–विज्ञानों के क्षेत्र में विशेषीकरण सहित पर्यावरण के मुख्य आयामों से सम्बद्ध है।

III. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान

- एम.फिल./पी–एच.डी. : कोर्स कार्य और शोध सुविधाएं निम्नलिखित क्षेत्रों में उपलब्ध थीं : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, राजनीतिक भूगोल, राजनयिक अध्ययन, अन्तर्राष्ट्रीय विधि अध्ययन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और विकास, निरस्त्रीकरण अध्ययन, दक्षिण एशियाई अध्ययन, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन, मध्य एशियाई अध्ययन, चीनी अध्ययन, जापानी और कोरियाई अध्ययन, पश्चिमी एशियाई और उत्तरी अफ्रीकी अध्ययन, उप–सहारीय अफ्रीकी अध्ययन, अमरीकी अध्ययन, लेटिन अमरीकी अध्ययन, पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन, कनाडियन अध्ययन तथा रूसी और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन।
- एम.ए. राजनीति (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विशेषीकरण के साथ) : यह 4–सत्रीय पाठ्यक्रम है, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय मामलों, क्षेत्रीय राजनीति, राजनीतिक सिद्धांत, तुलनात्मक राजनीति और आर्थिक विकास के क्षेत्र शामिल हैं। इनसे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन की गहन जानकारी प्राप्त होती है।
- एम.ए. अर्थशास्त्र (विश्व अर्थव्यवस्था में विशेषीकरण के साथ) : यह 4–सत्रीय पाठ्यक्रम है, जिसमें छात्रों को अर्थशास्त्र के सिद्धांतों की ठोस सैद्धांतिक पृष्ठभूमि उपलब्ध होती है और वे विश्व अर्थव्यवस्था के विकास को विश्लेषणात्मक ढंग से समझने के लिए तैयार होते हैं।

IV. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान

- पी–एच.डी. : चीनी, जापानी, फारसी और दर्शनशास्त्र (केवल आधुनिक पाश्चात्य दर्शनशास्त्र)।
- एम.फिल. / पी–एच.डी. : आधुनिक अरबी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिन्दी, भाषा विज्ञान, रूसी, इस्पानी और उर्दू।
- एम.ए. : अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिन्दी, जापानी, भाषा विज्ञान, फारसी, रूसी, इस्पानी और उर्दू।
- बी.ए. (ऑनर्स) : अरबी, चीनी, फ्रेंच, जर्मन, जापानी, कोरियाई, फारसी, रूसी और इस्पानी (प्रथम और द्वितीय वर्ष में प्रवेश सहित)। यह पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद उम्मीदवार सम्बन्धित भाषा के एम.ए. पाठ्यक्रम में पंजीकरण का पात्र हो जाता है।

अंशकालिक पाठ्यक्रम निम्नलिखित हैं –

- जन–संचार में उच्च डिप्लोमा (उर्दू)
- भाषा इंडोनेशिया, इतावली, पुर्तगाली और पश्तो में प्रवीणता डिप्लोमा।
- भाषा इंडोनेशिया, इतावली, मंगोल, पुर्तगाली, पश्तो और उर्दू में प्रवीणता प्रमाण–पत्र।

V. जीवन विज्ञान संस्थान

- एम.फिल. / पी–एच.डी. : जीवन विज्ञान के आधुनिक क्षेत्रों में।
- एम.एस–सी – जीवन विज्ञान : यह 4–सत्रीय पाठ्यक्रम है। इसमें दोनों बायोलॉजिकल और नॉन–बायोलॉजिकल विज्ञान क्षेत्रों के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

VI. भौतिक विज्ञान संस्थान

- पी–एच.डी. : संस्थान की शोध एवं शिक्षण गतिविधियां मुख्यतः नान–लिनियर डायनेमिक, क्लासिकल ऐंड क्वांटम केऑस, केमिकल फिजिक्स, कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स, डिसार्डर्ड सिस्टम्स, नान इक्वीलिब्रियम स्टेटिस्टीकल मैकेनिक्स, क्वांटम फील्ड थीअरि ऐंड पार्टिकल फिजिक्स, मैथमेटीकल फिजिक्स, क्वांटम आप्टिक्स, स्टेटिस्टीकल न्यूक्लियर फिजिक्स के सैद्धांतिक क्षेत्रों तथा कंप्लेक्स फ्लूइड्स, मैग्नेटिज्म और नॉन–लिनियर आप्टिक्स के प्रयोगात्मक क्षेत्रों पर केन्द्रित है।
- एम.एस–सी – भौतिक–विज्ञान : यह 4–सत्रीय पाठ्यक्रम है। इसमें भौतिक विज्ञान, रसायन–विज्ञान और गणित स्ट्रीम के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

VII. सामाजिक विज्ञान संस्थान

- एम.फिल. / पी–एच.डी. : निम्नलिखित विषयों में विस्तृत रूप से शोध सुविधाएं उपलब्ध हैं :

  (1) आर्थिक अध्ययन और नियोजन;
  (2) शैक्षिक अध्ययन;
  (3) ऐतिहासिक अध्ययन;
  (4) राजनीतिक अध्ययन;
  (5) क्षेत्रीय विकास (भूगोल, अर्थशास्त्र और जनसंख्या अध्ययन);
  (6) सामाजिक पद्धति;
  (7) सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य।
  (8) विज्ञान नीति और
  (9) दर्शन शास्त्र

- सामुदायिक स्वास्थ्य स्नातकोत्तर (एम.सी.एच.) / पी–एच.डी. : इस पाठ्यक्रम में तीन मुख्य क्षेत्र शामिल है – सामाजिक चिकित्सा, सामुदायिक स्वास्थ्य और सामुदायिक स्वास्थ्य नर्सिंग।
- एम.ए. – (4–सत्रीय) : अर्थशास्त्र, भूगोलशास्त्र, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान और समाजशास्त्र।

VIII. जैव–प्रौद्योगिकी केन्द्र

- पी–एच.डी. : केन्द्र के पाठ्यक्रम अन्तरविषयक प्रकृति के हैं। कोर्स कार्य और सुविधाएं निम्नलिखित क्षेत्रों में उपलब्ध हैं :

  1 प्रोटीन इंजीनियरी;
  2 प्रोकेरियोटिक / यूकेरियोटिक जीन अभिव्यक्ति;

3. संक्रामक रोग अणु जीव–विज्ञान;
4. अणु प्रतिरक्षा विज्ञान;
5. प्रोटीन स्टेबिलिटी, कन्फरमेशन्स ऐंड फोल्डिग;
6. बायोप्रोसेस स्केल अप ऐंड आप्टिमाइजेशन;
7. यूकोरियोटिक जीन का अनुलेखन।

– एम.एस–सी. – जैव प्रौद्योगिकी : इस 4–सत्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा छात्रों को आनुवंशिकी इंजीनियरी और जैव–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई नवीनतम प्रगति से अवगत कराने और इनका उपयोग उद्योग, कृषि और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में करने की दृष्टि से तैयार की गई है।

शैक्षिक सत्र 2002–2003 (प्रवेश और छात्रों की संख्या)

विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में स्थित 47 केन्द्रों पर 15–18, मई 2002 को जे.एन.यू. प्रवेश–परीक्षा आयोजित की गई। ये राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश हैं – अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, आन्ध्र प्रदेश, असम, बिहार, चंडीगढ़, दिल्ली, गुजरात, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल। इनके अतिरिक्त, दो और विदेश में स्थित केंद्रों – काठमांडू और ढाका – में भी प्रवेश–परीक्षा आयोजित की गई।

1. विश्वविद्यालय ने 48,699 आवेदन–पत्र बेचे। इनमें से प्रवेश के इच्छुक उम्मीदवारों से पूर्ण रूप से भरे हुए 40,182 आवेदन–पत्र प्राप्त हुए। उम्मीदवारों द्वारा अपने आवेदन–पत्रों में विभिन्न विषयों/अध्ययन पाठ्यक्रमों के लिए भरे गए विकल्पों के आधार पर यह संख्या बढ़कर 53,953 हो गई।

2. उम्मीदवारों द्वारा प्रवेश परीक्षा में प्राप्त अंकों और प्रवेश नीति के प्रावधानों के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई योग्यताक्रम सूची के आधार पर 1716 उम्मीदवारों को प्रवेश प्रस्ताव भेजे गए। इनमें से 1229 उम्मीदवारों ने विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया।

3. 22.5% (अ.जा. 15% और अ.ज.जा. 7.5%) आरक्षित सीटों में से 23.27% उम्मीद्वारों ने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। फिर भी, यदि हम उन विषयों/ अध्ययन पाठ्यक्रमों को निकाल दें, जिनमें किसी भी अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीद्वार ने प्रवेश–परीक्षा में भाग नहीं लिया तो अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीद्वारों का प्रतिनिधित्व 25.38% रहा।

4. विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले 1229 उम्मीद्वारों में :

   (क) 499 उम्मीद्वारों ने एम.फिल./पी–एच.डी., एम.टेक./पी–एच.डी., एम.सी.एच./पी–एच.डी. और 512 उम्मीद्वारों ने एम.ए./एम.एस–सी./एम.सी.ए. और बचे हुए 218 उम्मीद्वारों ने विदेशी भाषाओं में बी.ए. (आनर्स) के अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया;

   (ख) प्रवेश लेने वाले उम्मीद्वारों में 817 पुरुष और 412 महिला उम्मीद्वार थीं;

   (ग) अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित उम्मीद्वारों और पिछड़े हुए जिलों से अर्हक परीक्षा पास करने वाले वे उम्मीद्वार जिन्हे "डेप्रिवेशन अंकों" का लाभ मिला, की संख्या 374 थी। वर्ष 2001–2002 में इन उम्मीद्वारों की संख्या 443 थी।

5. विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले उम्मीद्वारों ने अपनी अर्हक परीक्षा 116 भारतीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों/बोर्डों से पास की थी।

6. विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले 1229 उम्मीद्वारों के अलावा 186 उम्मीद्वार निम्नलिखित वर्गों से थे :

– विदेशी छात्र (22 देशों से)	:	68
– सीधे पी–एच.डी. में प्रवेश	:	75
– गत वर्ष ज्वाइन न कर पाने वाले छात्र	:	22
– 'नेट' परीक्षा उत्तीर्ण (कनिष्ठ शोधवृत्ति धारक)	:	21

प्रवेश प्रक्रिया में और अधिक सुधार लाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश समिति की निम्नलिखित सिफारिशों/प्रस्तावों को कार्यान्वित किया गया :

अ) प्रवेश पद्धति को अधिक पारदर्शी बनाने की दृष्टि से प्रवेश–परीक्षा की डिकोडिड उत्तर पुस्तिकाओं को उन संबंधित केन्द्रों/संस्थानों के प्रतिनिधियों को दिखाया जा सकता है, जो मेरिट लिस्ट जारी होने से पहले इनको चैक करने के इच्छुक हों।

ब) विभिन्न विषयों की चयन सूची में उम्मीदवारों के नामों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए उनके विकल्प के आधार पर चयनित उम्मीदवारों की सूची को सिंक्रोनाइज्ड किया जाता है। इसके लिए एक आवेदन–पत्र में उम्मीदवार समान स्तर के एम.ए. और शोध पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु अधिकतम तीन विषयों में आवेदन कर सकता है और विदेशी भाषाओं के बी.ए. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु अधिकतम तीन भाषाओं में आवेदन कर सकता है।

संयुक्त प्रवेश परीक्षा

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी विश्वविद्यालय ने 18 मई 2002 को देश भर में 30 केन्द्रों पर एम.एस–सी. (बायोटेक्नोलॉजी), एम.एस–सी. (एग्रीकल्चर)/एम.वी.एस–सी. (एनीमल बायोटेक्नोलॉजी) और एम.टेक. (बायोटेक्नोलॉजी) पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय सहित निम्नलिखित प्रतिभागी विश्वविद्यालयों में प्रवेश हेतु एक संयुक्त प्रवेश परीक्षा आयोजित की। ये प्रतिभागी विश्वविद्यालय थे

1. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
2. बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची,
3. कालिकट विश्वविद्यालय, कालिकट;
4. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर;
5. गोवा विश्वविद्यालय, गोवा;
6. जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर;
7. गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर;
8. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला,
9. हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद;
10. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू;
11. एम.एस. बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा;
12. मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई;
13. पूना विश्वविद्यालय, पुणे;
14. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़;
15. पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी;
16. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला;
17. तेजपुर विश्वविद्यालय, असम;
18. तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर;
19. कुमांऊ विश्वविद्यालय, कुमांऊ
20. अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई;
21. उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय, सिलीगुड़ी
22. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद;
23. गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद;
24. गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा;
25. गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार;
26. थापर इंजीनियरी और प्रौद्योगिकी संस्थान, पटियाला;
27. चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर;
28. इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर;
29. मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभानी।

इन पाठ्यक्रमों के लिए पूर्ण रूप से भरे 15856 आवेदन–पत्र प्राप्त हुए। इनमें से 14529 उम्मीद्वार संयुक्त प्रवेश–परीक्षा में बैठे।

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान में अंशकालिक पाठ्यक्रम

संस्थान के डिप्लोमा/सर्टिफिकेट अंशकालिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए पूर्ण रूप से भरे हुए कुल 763 आवेदन–पत्र प्राप्त हुए। इनमें से 213 ने इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया – सी.ओ.पी. में 153, डी.ओ.पी. में 21 और ए.डी.ओ.पी. में 39।

छात्रों की संख्या

1.9.2002 को विश्वविद्यालय में 4583 पूर्णकालिक छात्र पंजीकृत थे। विभिन्न पाठ्यक्रमों में पंजीकृत छात्रों का विवरण इस प्रकार है – 2611 छात्र शोध कर रहे थे और 1408 छात्र एम.ए./एम.एस–सी./ एम.सी.ए. और 564 छात्र स्नातक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत थे।

प्रदान की गई उपाधियां/डिप्लोमा/सर्टिफिकेट

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय तथा विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त संस्थानों के 2092 छात्रों को अपने–अपने पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने पर उपाधियां/डिप्लोमा/सर्टिफिकेट प्रदान किए गए :

(1)	पी–एच.डी.	231
(2)	एम.फिल.	403
(3)	एम.टेक.	34
(4)	एम.ए.	478
(5)	एम.एस–सी./एम.सी.ए./एम.सी.एच.	107
(6)	बी.ए./बी.ए. (ऑनर्स)	290
(7)	बी.एस–सी.	304
(8)	बी.टेक.	163
(9)	डिप्लोमा/सर्टिफिकेट	82
	कुल	**2092**

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

उन थ्रस्ट एरियाओं का संक्षिप्त विवरण, जिन पर विभिन्न संस्थान/केन्द्र अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं तथा प्राप्त परिणामों और निधियों की कमी या फिर अन्य अपरिहार्य कारणों से अपेक्षित परिणाम हासिल न कर पाने का भी संक्षिप्त विवरण अध्याय–4 में संबंधित संस्थानों/केन्द्रों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है। इसमें कुछ संस्थानों/केन्द्रों की वार्षिक संदर्श योजनाओं और किस तरह से ये नवीं पंचवर्षीय योजना में उल्लिखित योजनाओं से मेल खाती हैं, का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है।

शैक्षिक गतिविधियाँ

पिछले वर्षों की तरह, समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय के शिक्षक कक्षा व्याख्यान तथा शोध छात्रों के मार्गदर्शन जैसी शैक्षिक और शोध गतिविधियों में पूर्ण रूप से संलग्न रहे। इसके अतिरिक्त, वे विश्वविद्यालय और देश–विदेश के अन्य विश्वविद्यालयों/संस्थानों द्वारा आयोजित विभिन्न सम्मेलनों/गोष्ठियों/संगोष्ठियों में भाग लेते रहे। इससे शिक्षकों को उनके विशेषीकृत क्षेत्रों में हो रहे नवीनतम विकास की जानकारी प्राप्त हुई और उन्होंने अपने ज्ञान और

शिक्षण दक्षता को अद्यतन बनाया। शिक्षकों द्वारा विश्वविद्यालय से बाहर के संस्थानों द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भाग लेने, विशेष व्याख्यान देने/आलेख प्रस्तुत करने का विवरण संबंधित संस्थानों/केन्द्रों के अन्तर्गत दिया गया है।

वर्तमान पाठ्यचर्या को अद्यतन बनाने तथा नए कोर्सों की शुरूआत करने सम्बन्धी चल रही प्रक्रिया के अन्तर्गत विश्व में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के कारण छात्रों की बढती हुई जरूरतों को पूरा करने की दृष्टि से अनेक कोर्सों को संशोधित/अद्यतन किया गया या नए कोर्स शुरू किए गए। कोर्सों की विषय–वस्तु में नवीनीकरण और नए क्षेत्रों में शोध संवर्धन का प्रमाण विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों में चलाए जा रहे विभिन्न कोर्सो तथा शोध के विषयों से मिलता है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान, शिक्षक विश्वविद्यालय के अन्य संस्थानों/केन्द्रों और अन्य कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों के साथ विभिन्न सहयोगात्मक कार्य करने में संलग्न रहे। शिक्षकों द्वारा शुरू की गई शोध परियोजनाएं बहुविषयक और अन्तर्विषयक प्रकृति की थीं।

वर्ष के दौरान संस्थानों और केन्द्रों द्वारा अनेक सम्मेलन/संगोष्ठियाँ/गोष्ठियाँ/कार्यशालाएं और देश विदेश के विशिष्ट विद्वानों/विज्ञानियों के व्याख्यान आयोजित किए गए। इनमें जनसाधारण के फायदे के लिए आयोजित विस्तार व्याख्यान माला भी शामिल थी।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा अन्य छात्रों के लिए विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों के शिक्षकों द्वारा आवश्यकतानुसार अतिरिक्त कक्षाएं चलाई गईं ताकि इन छात्रों को अपना कोर्स कार्य सुचारू रूप से करने में सहायता मिल सके।

अतिथि विद्वान और विज्ञानी

समीक्षाधीन अवधि के दौरान, देश–विदेश के अनेक प्रतिष्ठित विद्वान/विज्ञानी विश्वविद्यालय में आए। इनमें से कुछ विद्वानों ने व्याख्यान दिए या विभागों के संकाय सदस्यों और छात्रों के साथ वैज्ञानिक/शैक्षिक शोध कार्यक्रमों में सहयोग/विचार विनिमय किया। इस प्रकार, विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। इनमें शिक्षाविदों के शिष्टमण्डल और अन्य ऐसे अतिथि भी शामिल हैं, जो विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली का अध्ययन करने तथा विश्वविद्यालय के साथ सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने के उद्देश्य से आए थे। विस्तृत विवरण संबंधित संस्थानों/केन्द्रो के विवरण में उपलब्ध हैं।

शोध गतिविधियां

शिक्षकों और अन्य शोध कर्मियों के शोध प्रयासों को पुस्तकों/मोनोग्राफों (सम्पादित भाग सहित), पुस्तकों के लिए लिखे गए अध्यायों तथा शोध आलेखों/संगोष्ठियों में पढ़े गए आलेखों/प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के रूप में देखा जा सकता है। शिक्षकों द्वारा लगभग सभी विषयों में विभिन्न शोध परियोजनाओं पर भी उच्च स्तरीय शोध किया जाता है। इनमें प्रायोजित और गैर–प्रायोजित दोनों तरह की परियोजनाएं तथा शिक्षकों द्वारा अपने स्तर पर शुरू की गई परियोजनाएं भी शामिल हैं।

प्रकाशन

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय के शिक्षकों की 694 से अधिक पुस्तकें/शोध आलेख आदि प्रकाशित हुए। इनमें 93 पुस्तकें/मोनोग्राफ (सम्पादित भागों सहित) शामिल हैं। शिक्षकों ने पुस्तकों के लिए 187 अध्याय लिखे और उनके 414 से अधिक शोध आलेख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न शोध तथा शैक्षिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों के छात्रों की भी कई पुस्तकें/शोध आलेख प्रकाशित हुए। इनमें पुस्तकों के लिए लिखे अध्याय और प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध आलेख भी शामिल हैं। शोध प्रकाशनों का विवरण संबंधित संस्थानों/केन्द्रो के विवरण में दिया गया है।

शिक्षक

31 मार्च 2003 को विश्वविद्यालय में 387 शिक्षक थे। इनमें 194 प्रोफेसर, 120 सह–प्रोफेसर और 73 सहायक प्रोफेसर थे। विश्वविद्यालय में शिक्षक–छात्रों (पूर्णकालिक) का अनुपात 1:12 था। विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों में यह अनुपात भिन्न–भिन्न है। शिक्षकों की संख्या का विवरण नीचे प्रस्तुत है –

शिक्षकों की संख्या

क्र.सं.	संस्थान	प्रोफेसर	सह–प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर	कुल
1.	कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान	01	04	–	05
2.	कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान	08	02	01	11
3.	पर्यावरण विज्ञान संस्थान	13	05	01	19
4.	जीवन विज्ञान संस्थान	17	03	01	21
5.	भौतिक विज्ञान संस्थान	06	07	01	14
6.	अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान	36	24	09	69
7.	सूचना प्रौद्यागिकी संस्थान	01	–	01	02
8.	भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान	43	31	30	104
9.	सामाजिक विज्ञान संस्थान	64	33	19	116
10.	जैव–प्रौद्योगिकी केन्द्र	02	05	01	08
11.	विधि और अभिशासन अध्ययन केंद्र	01	03	03	07
12.	विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्रीकरण केंद्र	01	–	–	01
13.	आणविक चिकित्साशास्त्र केंद्र	–	02	02	04
14.	संस्कृत अध्ययन केंद्र	01	01	04	06
	कुल	**194**	**120**	**73**	**387**

अध्याय–3

विश्वविद्यालय के निकाय

विश्वविद्यालय के कार्य का सुव्यवस्थित रूप से संचालन करने के लिए कुछ निकाय हैं। ये हैं – विश्वविद्यालय कोर्ट, कार्य परिषद्, विद्या परिषद् और वित्त समिति जैसी अन्य साविधिक समितियाँ।

विश्वविद्यालय कोर्ट :

विश्वविद्यालय कोर्ट विश्वविद्यालय का सर्वोच्च निकाय है। सामान्यतः इसकी बैठक प्रत्येक वर्ष में एक बार होती है, जिसमें विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट, वार्षिक लेखें, लेखा–परीक्षा रिपोर्ट और बजट पर विचार किया जाता है। विश्वविद्यालय कोर्ट को कार्य परिषद् और विद्या परिषद् के कार्यों की समीक्षा करने का अधिकार उन परिस्थितियों में है, यदि इन परिषदों ने विश्वविद्यालय के अधिनियम, संविधियों और अध्यादेशों के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों के अनुरूप कार्य न किया हो।

विश्वविद्यालय कोर्ट की पिछली वार्षिक बैठक 5 फरवरी, 2003 को हुई। इसने विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर 1 अप्रैल 2000 से 31 मार्च 2001 तक तथा 1 अप्रैल 2001 से 31 मार्च, 2002 तक की वार्षिक रिपोर्ट और वित्तीय वर्ष 2000–2001 का लेखा परीक्षित प्राप्ति और व्यय का विवरण तथा परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का विवरण और वित्तीय वर्ष 2002–2003 का बजट प्राप्त किया। इसमें विश्वविद्यालय का योजनेतर अनुरक्षण बजट भी पेश किया गया।

क. अपने मेल सर्वर के माध्यम से विश्वविद्यालय समुदाय को 24 घंटे इंटरनेट की सेवाएं मुहैया करवाई गई। यह सेवाए विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और वरिष्ठ अधिकारियों के लिए उपलब्ध थीं।

ख. परिसर में बीमार व्यक्तियों को आपातकाल स्थिति में अस्पताल तक ले जाने के लिए छुट्टियों सहित सप्ताह के सभी दिनों में 24 घंटे एम्बुलेंस सेवा मुहैया करवाई गई। यह सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है।

ग. छात्रावासों, ट्रांजिट हाउस, पोस्ट डाक्टरल फेलो छात्रावास, संस्कृत केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र का विस्तार, विश्वविद्यालय के उत्तरी द्वार, विधि और अभिशासन केन्द्र तथा कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान के भवनों से संबंधित कई निर्माण कार्य किए गए।

घ. नए छात्रावासों और शैक्षिक भवनों का निर्माण करके वर्तमान सुविधाओं में विस्तार किया गया। ये छात्रावास/भवन थे – यमुना छात्रावास (तृतीय विंग), वरिष्ठ शिक्षकों के लिए ट्रांजिट हाउस (चरण–2), पोस्ट डाक्टरल छत्रावास (चरण–1), अ.जा. के छात्र और छात्राओं के लिए छात्रावास, पुस्तकालय भवन का वातानुकूलन, विधि और अभिशासन केन्द्र, संस्कृत अध्ययन केन्द्र, विज्ञान केन्द्र, कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान, उत्तर–पूर्वी छात्रों के लिए छात्रावास, जनजातीय छात्रों के लिए छात्रावास और अकादमिक स्टाफ कालेज।

च. एक प्लाजा बनाने की योजना तैयार की गई। इस प्लाजा में – पुस्तकों की एक बड़ी दुकान, कंप्यूटर शांप, हार्डवेयर स्टोर, विज्ञान स्टोर, हस्तशिल्प/कला शोकेस, पब्लिक थीएटर, विश्राम स्थल, काफी हाउस, खान–पान की जगह, ए.टी.एम. और अन्य जन सुविधाएं शामिल होंगी।

छ. पर्यावरण और वन मंत्री ने जेएनयू परिसर के उत्तर–पश्चिम में स्थित प्राकृतिक वानस्पतिक उद्यान के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय को वित्तीय सहायता मंजूर की है। डा. आर.ए. मशालकर, महानिदेशक, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में गठित वि.अ.आ. की समिति ने नवम्बर, 2002 में विश्वविद्यालय का दौरा किया। इस समिति ने न केवल विश्वविद्यालय द्वारा जीनोमिक्स, बायोटेकोलॉजी और मोलक्यूलर मेडिसिन के क्षेत्र में पहले से किए जा रहे विशिष्ट शोध कार्यों की प्रशंसा की बल्कि उसने संस्थानों और केन्द्रों के शैक्षिक स्टाफ सदस्यों की योग्यता को भी पहचाना। वि.अ.आ. ने हमें 'उत्कृष्ट कार्यों के लिए सक्षम विश्वविद्यालय' के रूप में मान्यता प्रदान की है।

कार्य परिषद्

कार्य परिषद् विश्वविद्यालय की एक उच्चतम और महत्वपूर्ण कार्य निकाय है, और यह विश्वविद्यालय के सामान्य प्रबन्धन और प्रशासन संबंधी कार्यों की देख–रेख करती है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान इसकी 3 बैठकें हुईं। ये बैठकें 3.6.2002, 25.7.2002 और 22.1.2003 को हुईं। इन बैठकों में परिषद् ने अनेक प्रशासनिक और शैक्षिक मामलों पर विचार–विमर्श किया और उन पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए।

कार्य परिषद् ने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इसकी सदस्यता में हुए कुछ परिवर्तनों को नोट किया और कुलपति द्वारा संविधियों/अध्यादेशों के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कुछ अत्यावश्यक प्रकृति के मामलों पर लिए गए विभिन्न निर्णयों पर विचार करके उनका अनुमोदन किया, विभिन्न चयन समितियों और स्क्रिनिंग समितियों की सिफारिशों को अपनी मंजूरी दी और कई अन्य प्रशासनिक निर्णय लिए। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान परिषद् द्वारा अनुमोदित/नोट किए गए कुछ निर्णय निम्न प्रकार से थे :

क. डीन (छात्र), मुख्य कुलानुशासक व अन्य पदाधिकारियों को शिक्षकों के रूप में अपने शिक्षण कार्य के अलावा अतिरिक्त कार्य करने के लिए मानदेय के स्थान पर विशेष वेतन का भुगतान।

ख. 62 वर्ष की उम्र के बाद शिक्षक किसी प्रकार के प्रशासनिक कार्य और दायित्व वाले सांविधिक और गैर सांविधिक पदों पर नहीं रहेंगे।

ग. बहुत अच्छा कार्य करने पर ग्रुप – ए.बी.सी. और डी. के कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने के लिए योजना।

घ. अतिथि/अंशकालिक शिक्षकों के लिए एकसमान नीति संबंधी सशोधित मार्गदर्शी सिद्धांत।

च. स्थाई निधि के सृजन के लिए फोर्ड फाउन्डेशन से 3 लाख रूपये अमरीकी डालर राशि स्वीकार करने और इस निधि पर अर्जित ब्याज की राशि का उपयोग विश्वविद्यालय के विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र में प्राध्यापकीय विजिटिंग फेलो प्रोग्राम के लिए करने।

विद्या परिषद्

विद्या परिषद् विश्वविद्यालय की मुख्य शैक्षिक निकाय है। विद्या परिषद् को अन्य के साथ–साथ कुछ महत्त्पूर्ण शक्तियाँ भी प्राप्त हैं – जैसे उच्च शिक्षा के विभागों, महाविद्यालयों, संस्थानों की स्थापना करना या उन्हें मान्यता प्रदान करना, शोध गतिविधियों का प्रसार करना, अन्य संस्थानों के डिप्लोमा और उपाधियों को मान्यता प्रदान करना और जे.एन.यू. के डिप्लोमा और उपाधियों के साथ–साथ इनकी समतुल्यता निर्धारित करना, विश्वविद्यालय में प्रवेश से संबंधित विभिन्न समितियों का गठन करना और निर्धारित नियमों के अनुसार छात्रों के लिए शिक्षण और परीक्षाओं के आयोजन संबंधी प्रबन्ध करना है। इस परिषद् की कुछ सिफारिशें अनुमोदन हेतु कार्यपरिषद् को भेजी जाती हैं।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान, विद्या परिषद् की दो बैठक 11.9.2002 और 8.1.2003 को हुईं। परिषद् ने विभिन्न संस्थानों से सदस्यों को सहयोजित किया, विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों के अध्ययन मंडलों की सिफारिशों, अध्येतावृत्तियों के सृजन, परिषद् में विभिन्न केन्द्रों के शिक्षकों के नामांकन, छात्रावास नियमावलियों की कुछ धाराओं में संशोधन और संगत अध्यादेशों की धाराओं में अनुवर्ती संशोधन तथा उपाधियां प्रदान करने से संबंधित अध्यादेशों के अनुमोदन सहित विभिन्न शैक्षिक मामलों पर विचार किया। परिषद् ने अपनी बैठकों में विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में वर्ष 2002–2003 के प्रवेश संबंधी वास्तविक आंकड़ों पर विचार किया। परिषद ने अपनी बैठकों में निम्नलिखित को अनुमोदित/संस्तुत किया :

क. आणविक चिकित्सा–शास्त्र विशेष केन्द्र में शैक्षिक सत्र 2003–2004 से प्री–पी–एच.डी. पाठ्यक्रम शुरू करने और इसकी कोर्स संरचना का अनुमोदन किया।

ख. भारतीय भाषा केन्द्र (भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान) में हिंदी अनुवाद में एम.फिल/पी–एच.डी. पाठ्यक्रम के लिए संशोधित कोर्स संरचना का अनुमोदन किया।

ग. पर्यावरणीय विधि में 'प्राध्यापकीय चेयर' शुरू करने हेतु 'पर्यावरणीय विधि एवं वन मंत्रालय वृतिदान' को 'अध्येतावृत्ति प्रदान करने के लिए महा राम–उमराव कौर वृतिदान' के साथ मिलाने का अनुमोदन किया।

घ. राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, पुणे में बी–एस.सी. (कंप्यूटर विज्ञान) कोर्स शुरू करने और इसकी पाठ्यचर्या का अनुमोदन किया।

च. 'महाले पुरस्कार वृतिदान' नाम से 10,000/– रूपये के एक वृतिदान का सृजन करने का अनुमोदन किया।

छ. 'डा. ए.एन. भट्ट स्मारक पुरस्कार' शुरू करने के लिए 50,000/– रूपये के वृत्तिदान का सृजन करने का अनुमोदन किया। इसमें से आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र/सामाजिक विज्ञान संस्थान के एम.ए. तृतीय सत्र के सर्वोत्तम छात्र को 5000/– रूपये का पुरस्कार दिया जाएगा।

ज. इण्डो–इण्डोनेनिशयन अध्ययन में 'इण्डो रामा अध्येतावृत्ति' शुरू करने के लिए एक लाख रूपये के वृत्तिदान का सृजन करने का अनुमोदन किया। यह राशि आई.आई.एफ.ए. से प्राप्त हुई है।

झ. स्व. डॉ. नूरूल हसन की स्मृति में वृत्तिदान का सृजन करने का अनुमोदन किया। इस वृत्तिदान के लिए प्राप्त 5 लाख रूपये की राशि पर अर्जित ब्याज की राशि में से दो छात्रवृत्तियां -- प्रत्येक छात्रवृत्ति 1500 रूपये प्रतिमाह एक एम.ए. और दूसरी एम.एस–सी. द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए 1500/– रू. प्रति माह की दो छात्रवृत्तियां शुरू की जाएंगी। ये छात्रवृत्तियां 5,00000/–रू. के वृत्तिदान पर अर्जित ब्याज में से दी जाएंगी।

ट. जी. पार्थसारथी वृत्तिदान निधि में से विकलांग छात्रों सहित समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग विशेषकर अ.जा./अ.ज.जा./अ.पि.व. से आने वाले छात्रों हेतु एम.ए. स्तर पर चार छात्रवृत्तियां (चन्द्रशेखर प्रसाद छात्रवृति सहित) और एम.फिल स्तर पर चार अध्येतावृत्तियां शुरू करने का अनुमोदन किया गया।

ठ. शैक्षणिक सत्र 2003–2004 से संस्कृत अध्ययन में एम.ए. पाठ्यक्रम शुरू करने का सिद्धांततः अनुमोदन किया गया।

ड. शैक्षणिक सत्र 2003–2004 से कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान में एम.ए. पाठ्यक्रम शुरू करने तथा इसकी रूपरेखा का अनुमोदन किया गया।

ढ स्थायी निधि के सृजन के लिए फोर्ड फाउंडेशन से तीन लाख अमेरिकी डालर की राशि स्वीकार करने और इस पर अर्जित ब्याज की राशि का उपयोग विश्वविद्यालय के विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र में प्राध्यापकीय विजिटिंग फेलो कार्यक्रम के लिए खर्च करने का अनुमोदन किया गया।

वित्त समिति

वित्त समिति विश्वविद्यालय की सांविधिक निकाय है। यह समिति विश्वविद्यालय के बजट तथा व्यय प्रस्तावों, नए/अतिरिक्त पदों से संबंधित सभी प्रस्तावों, लेखाओं, लेखा–परीक्षा रिपोर्ट और अन्य वित्तीय एवं लेखाओं से संबंधित मामलों पर विचार करती है। इसकी सिफारिशें कार्य परिषद् को अनुमोदन के लिए भेजी जाती हैं।

समिति ने 17 फरवरी, 2003 को हुई अपनी बैठक में विश्वविद्यालय के वर्ष 2002–2003 के लिए 'अनुरक्षण' खाते में 7018.83 लाख रूपये के संशोधित आकलनों को मंजूरी दी।

अध्याय–4
संस्थान और केन्द्र
1. कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान

कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान अपेक्षाकृत एक नया संस्थान है। इस संस्थान में कला और दृश्य संस्कृति के उन अध्ययन क्षेत्रों को शामिल किया जाएगा, जिन्हें भारत के शैक्षिक जगत में पर्याप्त पहचान नहीं मिल पाई है। वर्ष 2001 में इस संस्थान को पुनः शुरू करने की योजना पर विचार किया गया और संस्थान की अधिकारिक शुरूआत नवम्बर 2001 में संस्थान के डीन और चार सह–प्रोफेसरों की नियुक्ति के साथ हुई। एक तरह से कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान एक अद्वितीय संस्थान है। भारत में पहली बार यह संस्थान विभिन्न पारम्परिक एवं समसामयिक समृद्ध कला–सिद्धान्तों एवं व्यवहारों के अन्तरविषयक अध्ययन और शोध को उन्नत करने का एक केंद्र बन गया है। देश में चल रहे वर्तमान कला संस्थान और विभाग कलात्मक दक्षता के शिक्षण और कला के विशेष क्षेत्रों में कुछ शोध पर बल देते हैं। भारतीय कला और सिद्धान्तों की बहु–पक्षीय परम्परा आधुनिक काल में समृद्ध हुई, इसलिए परम्पराओं और आधुनिकतावाद के बीच महत्वपूर्ण पारम्परिक प्रभावों के संदर्भ में विभिन्न कलाओं और कला–सिद्धान्तों के बीच अन्तःसम्बन्धों की खोज और अध्ययन के लिए एक ऐसे संस्थान की सख्त जरूरत थी।

संस्थान के शिक्षकों के समक्ष सबसे पहला कार्य था नए और चुनौतिपूर्ण क्षेत्रों में नवीन ढंग से शिक्षण, अध्ययन और शोध शुरू करने का आधार तैयार करना। संस्थान के शिक्षकों ने विभिन्न विद्वानों के साथ विचार–विमर्श करके संस्थान में एम.ए. पाठ्यक्रम की पाठयचर्या तैयार की, जो कि कला अध्ययन के दो मुख्य क्षेत्रों – दृश्य कला एवं निष्पादन कला पर आधारित है। दो–वर्षीय एम.ए. पाठयक्रम में समसामयिक काल तक भारतीय कला का पारस्परिक प्रभावशाली काल–क्रम सम्बन्धी विकास शामिल किया गया है। एम.ए. पाठयक्रम अब जुलाई 2003 से शुरू होगा। पी–एच.डी. पाठयक्रम 2002 से शुरू हो चुका है। शिक्षकों ने उनके द्वारा पढाए जाने वाले वैकल्पिक कोर्सों में दृश्य एवं निष्पादन कला के विभिन्न अद्वितीय क्षेत्रों को शामिल करते हुए इनकी रूपरेखा तैयार कर ली है।

संस्थान के छात्रों और शोधार्थियों के लिए एक विस्तृत पुस्तकालय तथा श्रव्य–दृश्य दस्तावेजों का एक अभिलेखागार भी तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

थ्रस्ट एरिया में दृश्य और निष्पादन कलाओं के परस्पर सम्बन्ध और समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, सांस्कृतिक सिद्धान्त तथा दर्शनशास्त्र जैसे विषयों से उनकी सम्बद्धता के सिद्धांत एवं इतिहास का अध्ययन शामिल हैं। संस्थान बाद में कला के मुख्य क्षेत्रों तथा उनके संगीत, फिल्म और मीडिया अभिव्यक्ति अध्ययन और सांस्कृतिक नीति अध्ययन जैसे सम्बद्ध क्षेत्रों के अध्ययन को भी शामिल करेगा। मुख्य और वैकल्पिक कोर्स इस तरह से तैयार किए जा रहे हैं कि छात्रों और शोधार्थियों को भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भों में कलाओं के सिद्धान्त और व्यवहार में परस्पर सम्बन्धों की प्रमुख जानकारी मिल सके।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

संस्थान, फोर्ड फांउडेशन के साथ सहयोग कर रहा है। इसके अन्तर्गत संस्थान को विशेषीकृत विषयों में शोध और शिक्षण के लिए विजिटिंग फेलो तथा शिक्षक नियुक्त करने, तकनीकी उपकरण प्राप्त करने और अभिलेखागार भवन का निर्माण करने के लिए अनुदान राशि प्राप्त हुई है।

अमेरिकन इंस्टीट्यूट आफ इंडियन स्टडीज ने भारतीय दृश्य और निष्पादन कलाओं के अभिलेखागार के लिए दृश्य सामग्री मुहैया करानी शुरू कर दी है। इस संस्थान ने छात्रों और शिक्षकों को पुस्तकालय सुविधाएं उपलब्ध कराने और दृश्य कला और संगीत अभिलेखागार का प्रयोग करने के लिए अपनी सहमति प्रकट की है।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नए कोर्सों और अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

कला और सौंदर्यशास्त्र में एम.ए. पाठ्यक्रम के कोर्सों की रूपरेखा का प्रारूप तैयार किया गया और इस पर संस्थान के अध्ययन मण्डल की दो बैठकों में चर्चा हुई। इस प्रारूप को फिर विद्या परिषद में पेश किया गया, जहां इसे शिक्षण के लिए अनुमोदित कर दिया गया।

अ.जा./अ.ज.जा. और शैक्षिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए विशेष उपचारात्मक कोर्स

चूंकि अभी तक एम.ए. और एम.फिल. के कोर्सों का शिक्षण शुरू नहीं हुआ है, अतः इस तरह का कोई कोर्स तैयार नहीं किया गया।

प्रकाशन

1. एच.एस. शिव प्रकाश, अनिकटना में दिए गए कन्नड वचनों का अंग्रेजी में अनुवाद, इंग्लिश लिट्रेरी जर्नल, कन्नड साहित्य अकादमी, जनवरी–मार्च 2003
2. एच.एस. शिव प्रकाश, मलेया मन्तप, (कन्नड भाषा में पुस्तक और कविताएं), लोहिया प्रकाशन, बेलाए, जनवरी 2003
3. एच.एस. शिव प्रकाश, बत्तीसा रागा, (कन्नड भाषा में आत्मकथा) अनिगिशा प्रकाशन, होनाली, मार्च 2003
4. एच.एस. शिव प्रकाश, निबंध संग्रह – द स्टेट आफ कन्टेम्पोरेरि इण्डियन थीयटर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
5. एच.एस. शिव प्रकाश, निबंध संग्रह – इण्डियन सेक्सपियर्स, वर्ल्ड वाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली
6. एच.एस. शिव प्रकाश, द हंगरी अर्थ, भारतीय दलित लेखन का संग्रह शीर्षक पुस्तक पर कार्य कर रहे हैं, पेंगुइन इंडिया, नई दिल्ली

आलेख

1. ज्योतिंद्र जैन, "कनटेम्पोरेरि इण्डियन फोक आर्टिस्ट्स ऐट मानचेस्टर आर्ट गैलरी", आर्ट साउथ एशिया, एसे इन केटलोग एकेम्पनिंग द एग्जिविशन, अलनूर निधा, जुलाई 2002
2. ज्योतिंद्र जैन, "मार्फिंग आइडेंटिटीज : रिकनफिगरिंग द डिवाइन ऐंड द पालिटिकल", बाडी सिटी न्यू पर्सपेक्टिव्स फ्राम इण्डिया", तुलिका पब्लिशर्स द्वारा हाऊस आफ वर्ल्ड कल्चर्स, बर्लिन के सहयोग से प्रकाशित।
3. ज्योतिंद्र जैन, "द हिंदू आइकोन बिटवीन द कल्टिक ऐंड द एग्जिबिट्री स्पेस, जुलाई 2002 में मानचेस्टर में आयोजित 'साउथ एशियन आर्ट' विषयक सम्मेलन की कार्यवाही में प्रकाशित किया जाना है।
4. बिष्णुप्रिया दत्त "आडियोरिंक्रेटिक माइथोलाजीस : द केस स्टडी आफ द सिताला ओपेरा, इंटरनेशनल फेडरेशन आफ थीएटर रिसर्च, 2003, आई.एफ.टी.आर.
5. बिष्णुप्रिया दत्त, डाक्टर ऐंड द थीएटर, एपिक थीएटर, अगस्त 2002
3. कविता सिंह "पेंटिंग्स आफ लाइफ ऐट कोर्ट", पावयेयर ऐट देसिर : मिनिएचर्स इण्डिनेस, संग्रह इडविन बिने, थर्ड व्यू सेन दियागो म्यूजियम आफ अर्ट, (सं.) रोजलीन हुरेल और एमिना ओकादा, पेरिस म्यूसीस और एडिशंस फिंडाकली, पेरिस 2002
7. कविता सिंह, "म्यूजियम्स ऐंड द मैकिंग आफ द इण्डियन आर्ट हिस्टोरिकल केनन", टुवर्ड्स ए न्यू आर्ट हिस्ट्री : स्टडीज इन इण्डियन आर्ट, सं. – शिवाजी के. पाणिकर, पारुल दवे मुखर्जी और दीप्ता अकार, डी.के. प्रिंट वर्ल्ड, 2003

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. सावंत शुक्ल, हाल ही में हुए कार्य – केबिनेट्स आफ क्यूरिओसिटीज" पर सोलो शो, दिसम्बर 2002
2. सावंत शुक्ल, साक्षी गेलरी, मुम्बई द्वारा नवम्बर 2002 के दौरान इण्डिया हेबिटेट सेंटर में "क्रिएटिव स्पेस" शीर्षक ग्रुप एग्जिविशन।
3. सावंत शुक्ल, केमोल्ड गैलरी, मुम्बई में फरवरी 2002 के दौरान अर्चना हांडे द्वारा संग्रहीत "कनटेम्पोरेरि पेंटिंग की ग्रुप एग्जिविशन।
4. बिष्णु प्रिया दत्त, इंटरनेशनल थिएटर स्टडीज के लिए उत्पल दत्त फांउडेशन के तत्वावधान में जनवरी 2003 में शुरू रेस्टोरिंग ऐंड रिकार्डिंग सीनिक कर्टेंस यूज्ड इन मिनर्वा थिएटर, कलकत्ता (1905–59)। सीन के रेस्टोरेशन और रिपेयर के लिए आंशिक अनुदान राशि भारत सरकार के संस्कृति विभाग, मानव संसाधान विकास मंत्रालय से प्राप्त हुई।

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. ज्योतिंद्र जैन, क्यूरेटिंग एग्जिविशन : इण्डियन पाप्यूलर कल्चर : द कनक्वेस्ट आफ द वर्ल्ड ऐज ए पिक्चर", फार हाउस आफ वर्ल्ड कल्चर, बर्लिन, 19 सितम्बर 2003 से शुरू।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1. ज्योतिंद्र जैन ने 17–18 मई 2002 को हाउस आफ वर्ल्ड कल्चर्स में आयेजित गेटी फांउडेशन द्वारा प्रायोजित फ्रेम्स फार व्यूइंग" विषयक सम्मेलन में भाग लिया और "फ्रेमिंग द थिएट्रीकल : हिन्दू माइथोलाजीकल पिक्चर्स ऐट द टर्न आफ द नाइनटींथ सेंचुरी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. ज्योतिंद्र जैन ने 25 और 26 जून 2002 को लाइसेस्टर विश्वविद्यालय के 'प्रसादा' द्वारा आयोजित 'साउथ एशियन आर्ट' विषयक सम्मेलन में भाग लिया और "द ट्रेडिशनल आर्ट्स आफ साउथ एशिया : पास्ट प्रैक्टिस लीविंग ट्रेडिशन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
3. ज्योतिंद्र जैन ने जुलाई 2002 में मानचेस्टर में शीशा फाउंडेशन द्वारा आयोजित साउथ एशियन आर्ट विषयक सम्मेलन में भाग लिया और "द हिन्दू आईकोन बिटवीन द कल्टिक ऐंड द एग्जिबिटरी स्पेस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
4. बिष्णु प्रिया दत्त ने नवम्बर 2002 में पेरिस में 'रिसर्च मैथडालाजी इन थिएटर' विषयक आईएफ.टी.आर. सब–कमेटी मीट में भाग लिया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. ज्योतिंद्र जैन ने जनवरी 2003 में चैन्नई में दक्षिणाचित्रा फांउडेशन द्वारा आयोजित 'कनटेम्पोरेरि इण्डियन आर्ट" विषयक सम्मेलन में भाग लिया और "कलेक्टिव ट्रेडिशन ऐंड इडिविजुअल एक्सप्रेशन : कनटेम्पोरेरि इण्डियन फोक आर्ट" विषयक आलेख प्रतुत किया।
2. सावंत शुक्ल ने जनवरी 2003 में किशनगढ़ (राजस्थान) में क्रासवेज कम्युनिकेशंस द्वारा आयोजित और अमित मुखोपाध्याय द्वारा संचालित "सूनापन" शीर्षक साइट स्पेस्फिक कार्यशाला में साइट स्पेस्फिक इंस्टालेशन बनाया।
3. सावंत शुक्ल ने जनवरी 2003 में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में आयोजित "कनटेम्पोरेरि मिनिएचर्स" विषयक चर्चा में भाग लिया।
4. बिष्णु प्रिया दत्त ने जनवरी 2003 में जयपुर में आयोजित इंटरनेशनल फेडरेशन आफ थिएटर रिसर्च सम्मेलन में भाग लिया और आइडियोसिंक्रेटिक माइथोलाजिस" विषयक आलेख प्रस्तुत किया।
5. कविता सिंह ने अक्टूबर 2002 में आई.जी.एन.सी.ए., नई दिल्ली और नेशनल फोकलोर सपोर्ट सेंटर, चैन्नई द्वारा आई.जी.एन.सी.ए. नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में फोकलोर पब्लिक स्पेरा ऐंड सिविल सोसायटी" विषयक आलेख प्रस्तुत किया।
6. कविता सिंह ने नवम्बर 2002 में डी.सी., हेंडिक्राफ्ट्स, वस्त्र मन्त्रालय और भारतीय शिल्प परिषद द्वारा आयोजित "क्राफ्ट परसंस ऐंड ससटेनेबल डिवलपमेंट" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोठी के 'म्यूजियम्स ऐंड क्राफ्ट्स डिवलपमेंट इन क्राफ्ट" शीर्षक परिचर्चा में भाग लिया।
7. कविता सिंह ने जनवरी 2003 में अंग्रेजी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय और एशियाटिक सोसाएटी, कलकत्ता द्वारा आयोजित "द पालिटिक्स आफ वेल्यू : इण्डियन आर्ट ऐंड द इम्पिरियल गेज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
8. कविता सिंह ने कला इतिहास और सौंदर्यशास्त्र विभाग, ललित कला संकाय, एम.एस. बड़ौदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "थिओराइजिंग इण्डिया'ज प्री–माडर्न विजुअल कल्चर : इश्यूज आफ क्लास, कास्ट जैंडर ऐंड सेक्सुअलिटीज" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।
9. एच.एस. शिव प्रकाश ने 24 अप्रैल 2002 को कन्नड पुस्तक प्राधिकरण द्वारा नेवन आडिटोरियम, बैंगलोर में डा. के. सत्यानारायण द्वारा आयोजित कर्नाटका संगीत वाहिनी" में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।
10. एच.एस. शिव प्रकाश ने 3 से 5 अक्टूबर 2002 को आई.जी.एन.सी.ए. द्वारा रविंद्र कलाक्षेत्र, बैंगलोर में आई.जी.एन.सी.ए. द्वारा आयोजित "कंट्रीब्युशंस आफ पुंडरीक उस्थाला" विषयक संगोष्ठी में विशेष रूप से आमंत्रित प्रतिभागी के रूप में भाग लिया।

11. एच.एस. शिव प्रकाश ने जनवरी 2003 में लोहिया प्रकाशन द्वारा बेलगाँव में आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में भाग लिया।

12. एच.एस. शिव प्रकाश ने 22 फरवरी 2003 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित "फेस्टिवल आफ लेटर्स" विषयक संगोष्ठी में "सिटी मिथ्स इन माडर्न इण्डियन पोइट्री" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

13. एस.एस. शिव प्रकाश ने 21 मार्च 2003 को साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा विश्व कवि दिवस के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में भाग लिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

1. ज्योतिंद्र जैन ने अगस्त 2002 के दौरान सौंदर्यशास्त्र विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय में भारतीय कला के विभिन्न पक्षों पर चार व्याख्यान दिए।

संस्थान में आए अतिथि

1. प्रो. पार्था मित्र, ससेक्स विश्वविद्यालय (यू.के.) ने 20 नवम्बर, 2002 को संस्थान में आए और उन्होंने "कंटेस्टिड नेशनहुड्स : द म्यूरल्स आफ न्यू दिल्ली ऐंड इण्डिया हाउस, लंदन" विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठियां/सम्मेलन

1. 7 जनवरी से 31 मार्च 2003 तक दयानिता सिंह के छायाचित्रों की प्रदर्शनी आयोजित हुई।
2. सितम्बर 2002 के दौरान "डाक्यूमेंटल" विषय पर एक संगोष्ठी एवं परिचर्चा आयोजित की गई।
3. जनवरी से मार्च 2003 के दौरान "आर्किटेक्चर आफ इण्डिया" और 'एप्रिसिएशन कोर्स इन थिएटर आफ इण्डिया' विषयक दो आउटरीच प्रोग्राम आयोजित किए गए।
4. अक्टूबर 2002 में अल आरमेल वाली नृत्य प्रस्तुत किया गया और इसके बाद चर्चा हुई।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

ज्योतिंद्र जैन, न्यासी, सुरभि प्रतिष्ठान, मुम्बई; न्यासी, बाऊ दाजी लाड म्यूजियम, मुम्बई; मण्डल सदस्य, मध्य प्रदेश हस्तकला निगम, भोपाल;मण्डल सदस्य, राजीव गाँधी पर्यटन विकास योजना, जयपुर; सदस्य, संग्रहालय के केंद्रीय सलाहकार बोर्ड (पर्यटन और संस्कृति मंत्री की अध्यक्षता में) पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार, मार्च 2003 और मण्डल सदस्य, विद्या परिषद, कला इतिहास, संग्रहालय और संरक्षण का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान।

सांवत शुक्ल, परीक्षक, बी.एफ.ए., राजकीय कला महाविद्यालय, चण्डीगढ़; परीक्षक, एम.ए., पंजाब विश्वविद्यालय, 2003; परीक्षक, बी.एफ.ए., दिल्ली कला महाविद्यालय, नई दिल्ली, 2003

विष्णु प्रिया दत्त, सदस्य, शासी समिति, सत्यजीत रे फिल्म और टेलीविजन संस्थान, कोलकात्ता;, सदस्य, शासी सोसायटी, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली।

कविता सिंह, सदस्य, संग्रहालय के केंद्रीय सलाहकार मण्डल (पर्यटन और संस्कृति मन्त्री की अध्यक्षता में) पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार, मार्च 2002

2. कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान

कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान ने वर्ष 1975 में अपने शैक्षिक पाठ्यक्रम शुरू किए और अपने को देशभर में कंप्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह संस्थान एम.सी.ए., एम.टेक (एम.फिल.) और पी–एच.डी. शोध पाठ्यक्रम चलाता है। संस्थान के पाठ्यक्रमों में देशभर के सर्वोत्तम छात्र प्रवेश लेने के लिए आते हैं। इस वर्ष एम.सी.ए. और एम.टेक. पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा में लगभग 9 हजार उम्मीदवारों सहित पड़ोसी सार्क देशों के उम्मीद्वार भी बैठे। संस्थान के कोर्सों को पढ़ने के लिए विश्वविद्यालय के सभी विज्ञान संस्थानों के छात्र भी आते हैं। संस्थान के पाठ्यक्रमों की उपयोगिता इस बात से सिद्ध होती है कि संस्थान से उपाधि प्राप्त छात्रों को कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी कम्पनियों में उच्च पदों पर नौकरियां प्राप्त होती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में मंदी के बावजूद संस्थान के छात्रों को आई.बी.एम., इनफोसिस, एक्सेंचर, काडेंस, जी.ई. केप्स और डी.आर.डी.ओ. जैसे संगठनों में नौकरियां प्राप्त हुई हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और सुनचोन राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कोरिया के बीच हुए आपसी समझौते के अंतर्गत संस्थान को 18 फरवरी 2002 से 17 अगस्त 2002 तक सुनचोन राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों को कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए चुना गया है।

जेएनयू घोषणा पत्र में उल्लिखित लक्ष्यों के अनुसार संस्थान अन्तरविषयक कोर्स चलाने में अग्रणी रहा है। संस्थान ने अपने कोर्सों की रूपरेखा जीवन विज्ञान संस्थान, भाषा साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के साथ–साथ सामाजिक विज्ञान संस्थान के विभिन्न केंद्रों के छात्रों के फायदे को ध्यान में रखते हुए तैयार की हैं।

संस्थान में निम्नलिखित विशेषीकृत प्रयोगशालाएं हैं जहां एम.टेक./एम.फिल./पी–एच.डी. छात्र अपने शोध कार्य में सक्रिय रूप से संलग्न रहते हैं :

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऐंड साफ्टवेयर इंजीनियरिंग, डाटा कम्यूनिकेशन ऐंड नेटवर्क्स, माइक्रोप्रोसेसर ऐंड आपरेटिंग सिस्टम्स, मल्टीमीडिया ऐंड माडलिंग नेचूरल लैंग्यूवेज प्रोसेसिंग, पेरलल प्रोसेसिंग ऐंड डिस्ट्रीब्यूटिंग कंप्यूटिंग, सिस्टम्स साफ्टवेयर

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

कंप्यूटर ग्राफिक्स, डाटाबेसिस, डाटा माइनिंग, नालेज इंजीनियरिंग, मोबाइल नेटवर्कस, माडलिंग ऐंड सिम्युलेशन, नेचुरल लैंग्यूवेज प्रोसेसिंग, आप्टिमाइजेशन थीअरि

सहयोगात्मक प्रबन्ध

1. कर्मेषु, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कलकत्ता के प्रो. निखिल पाल के साथ बायोइनफार्मेटिक्स के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं।
2. कर्मेषु, जनरल मोटर्स, बंगलौर के डा. रविकुमार, मैनेजर (अनुसंधान एवं विकास) के साथ मोबाइल कम्युनिकेशन ऐंड स्टोकेस्टिक कंट्रोल के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं।
3. डी.के. लोबियाल, सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरी संस्थान, ओटावा विश्वविद्यालय, कनाडा के प्रो. इवान स्टोजमेनोविक के साथ मोबाइल एडहाक नेटवर्क के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं।

प्रकाशन

पुस्तकें

1. कर्मेषु, एन्ट्रोपी मेजर्स, मैक्सिमम एन्ट्रोपी प्रिंसिपल ऐंड इमर्जिंग ऐप्लिकेशंस, भाग–119, स्टडीज इन फ्युजनेस ऐंड साफ्ट कंप्यूटिंग, स्प्रिंगर, 2003

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

1. कर्मेषु (एन.आर. पाल के साथ) "अनसर्टेनिटी, ऐन्ट्रोपी ऐंड मैक्सिमम ऐन्ट्रोपी प्रिंसिपल – एन ओवरव्यू," ऐन्ट्रोपी मेजर्स, मैक्सिमम ऐन्ट्रपी प्रिंसिपल ऐंड इमर्जिंग ऐप्लिकेशंस, भाग–119 स्टडीज इन फ्युजीनेस ऐंड साफ्ट कंप्यूटिंग, स्प्रिंगर, 2003

आलेख

1. सी.पी. कट्टी, डी.के. श्रीवास्तव और एस. सिवलोगानाथन, "हाइली इफिशन्ट पैरलल एल्गोरिथम फार फाइनाइट डिफ्रेंस साल्युशन टु नेवियर–स्टोक'स इक्वेशन आन ए हाइपरक्यूब", एप्लाइड मैथ ऐंड कंप 130 (2002)
2. सी.पी. कट्टी, डी.के. श्रीवास्तव, "आन ए पैरलल मेस एल्गोरिथम फार ए क्लास आफ इनिशियल वैल्यूज प्राब्लम यूजिंग फोर्थ आर्डर एक्सप्लिसिट रूंगे कुट्टा मेथड्स", एप्लाइड मैथ ऐंड कम्प 143, 2003
3. कर्मेषु, आर.सी. प्रसाद और के.के. भारद्वाज, "स्टोकेस्टिक माडलिंग आफ हीट एक्सचेंजर रिस्पांस टु डाटा अनसर्टेनटीज", एप्लाइड मैथमेटिकल माडलिंग, 26, 2002
4. पी.सी. सक्सेना, जे. राय, "ए सर्वे आफ पर्मीशन–बेस्ड डिस्ट्रीब्युटिड म्युचुअल इक्सक्लुजन एल्गोरिथम", कंप्यूटर स्टेंडर्डस ऐंड इंटरफेस, भाग–25, 2003
5. पी.सी. सक्सेना, जी. गोबरानी, "ए ह्युरिस्टिक अप्रोच टु रिसोर्स लोकेशन आन ब्राड बैन्ड नेटवर्क", नेटवर्क ऐंड कंप्यूटर एप्लिकेशंस, भाग–25, 2002
6. पी.सी. सक्सेना, इन्दर अरोड़ा, "एक्सिस हैंडलिंग द अपडेट्स आफ ब्राडकास्ट आफ डाटा इन वायरलैस मोबाइल कंप्यूटिंग", कंप्यूटर स्टेंडर्डस ऐंड इंटरफेस, भाग–24, 2002
7. एन. परिमाला, "एक्सप्लिसिट आपरेशन स्पेसिफिकेशन फार कम्पोनेंट डाटाबेस", द कम्प. जे (ब्रिटिश कंप्यूटिंग सोसायटी), 2002
8. एन. परिमाला, टी.वी. विजयकुमार, "स्ट्रक्चर इंडिपेंडेंट क्वेरी लैंग्यूवेज, एफ क्यु ए एस – फ्लेक्जिबल क्वेरी आंसरिंग सिस्टम्स", इंटरनेशनल कांफ्रेन्स कोपेनहेगन, 2002

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. जी.वी. सिंह और डी.के. लोबियाल, रिसोर्स सेंटर फार इण्डियन लैंग्वेज टेक्नोलाजी साल्युशंस, एम आई टी द्वारा प्रायोजित
2. जी.वी. सिंह और डी.के. लोबियाल, पोजिशन बेस्ड पावर इफिशन्ट डाटा कम्यूनिकेशन इन वायरलैस नेटवर्क, ए.आई.सी.टी.ई., द्वारा प्रायोजित

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. कर्मेषु ने 24 अप्रैल, 2002 को आई.आई.टी. दिल्ली में आयोजित, ट्रान्सपोर्टेशन, विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'स्टोकेस्टिक माडल्स आफ विहिकुलर ट्रेफिक ऐंड देअर रिलेवेन्स टु टेलीट्रेफिक' विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
2. कर्मेषु ने 10 अगस्त 2002 को गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार में आयोजित 'इमर्जिंग डाइमेंशंस इन आई टी' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'बी एस डी एन ट्रेफिक ऐंड स्टोकेस्टिक आफर्ड लोड इन मोबाइल कम्यूनिकेशन : परफार्मेन्स माडलिंग इश्यूज' विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
3. कर्मेषु ने 6 मार्च, 2003 को सामाजिक विज्ञान संकाय, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा आयोजित करंट ट्रेंड्स इन एप्लीकेशन आफ इनफार्मेशन टेक्नोलाजी : बायोइनफार्मेटिक्स ऐंड एक्ट्युरिअल साइंस' विषयक आई.टी. संगोष्ठी में भाग लिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

1. कर्मेषु ने 8 अगस्त, 2002 को इंस्टीट्यूट आफ मास कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली में 'इनोवेशन डिफ्यूजन ऐंड इट्स ऐप्लिकेशंस इन आई.टी' विषयक अनुशीलन व्याख्यान दिए।
2. कर्मेषु ने 7 नवम्बर, 2002 को कंप्यूटर विज्ञान विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में 'अनसर्टेनिटी, एन्ट्रोपी ऐंड मैक्सिमम एन्ट्रोपी प्रिंसिपल', विषयक विस्तार व्याख्यान दिए।
3. कर्मेषु ने 9 दिसम्बर, 2002 को कालिन्दी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में गणित दिवस के अवसर पर 'मोन्टे कार्लो मेथड्स, कंसेप्ट्स एल्गोरिथम्स ऐंड एप्लिकेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।
4. कर्मेषु ने 16 जनवरी, 2003 को सोसायटी आफ मैथमेटिकल साइंसिस रामजस कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'एसेन्स आफ एप्लाइड मैथमेटिक्स' विषयक व्याख्यान दिया।
5. कर्मेषु ने 23 जनवरी, 2003 को सोसायटी आफ मैथमेटिक्स, हंसराज कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'माडलिंग ऐंड सिम्युलेशन आफ डिफ्युजन आफ इनोवेशन' विषयक व्याख्यान दिया।

6. कर्मेषु ने 3 फरवरी, 2003 को गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार में 'कंप्यूटर एप्लिकेशंस' विषयक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में आई.टी. ऐंड इमर्जिंग ट्रेन्ड्स' विषयक मुख्य व्याख्यान दिया।

7. कर्मेषु ने 13 अप्रैल, 2002 को दिल्ली चैप्टर आफ मैथमेटिकल एसोसिएशन आफ इण्डिया में 'ट्रेफिक करेक्ट्राइजेशन फार बिस्डन ऐंड पर्फार्मेंस इवैल्युएशन आफ मोबाइल कम्यूनिकेशन सिस्टम्स' विषयक डी.एस. कोठारी स्मारक व्याख्यान दिया।

8. डी.के. लोबियाल ने दिसम्बर, 2002 में यूनिवर्सिटी पालिटेक्नीक, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में 'टीसीपी/आईपी' विषयक व्याख्यान दिया।

9. डी.के. लोबियाल ने फरवरी, 2003 में आई.पी. कालेज फार वुमन, यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली की आई.टी. वार्षिक बैठक में 'कैरियर प्रास्पेक्ट्स इन आई.टी.' विषयक व्याख्यान दिया।

10. डी.के. लोबियाल ने मार्च 2003 में गुरु गोविन्द सिंह कालेज आफ कामर्स, नई दिल्ली में 'कंप्यूटर नेटवर्क्स' विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान में आए अतिथि

1. डा. संजीव शंकर दुबे, सीईओ, भीलवाड़ा इन्फोटेक, फरवरी, 2003 में केन्द्र में आए।
2. डा. सूर्यानील घोष, उपाध्यक्ष, कंटिनेंटल यूरो, मार्च 2003 में केन्द्र में आए।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

कर्मेषु, अध्यक्ष, डोएक समिति (संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय), 'इंट्रोडक्शन आफ बायोइन्फार्मेटिक्स कोर्सिस अंडर डोएक स्कीम' नवम्बर, 2002; सदस्य, स्थाई पाठ्यक्रम समिति, कंप्यूटर विज्ञान, डोएक सोसायटी; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, वैज्ञानिक तथा औद्योगिकी अनुसंधान परिषद की पत्रिका; सदस्य, फैकल्टी आफ इंटर–डिसिप्लिनरी ऐंड एप्लाइड साइंसिस, साउथ कैम्पस, यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली; सचिव, सोसायटी आफ मैथमेटिकल साइंसिस, दिल्ली; सदस्य, काउंसिल, इण्डियन सोसायटी आफ इन्फार्मेशन थीअरि ऐंड एप्लिकेशंस, नई दिल्ली; सदस्य, अवार्ड फार एक्सिलेन्स इन इलैक्ट्रानिक्स, डिपार्टमेंट आफ इन्फार्मेशन टेक्नोलाजी, इलैक्ट्रानिक्स निकेतन,नई दिल्ली; सदस्य, शासी निकाय, अंसल प्रौद्योगिकी संस्थान, गुड़गांव; सदस्य, शासी निकाय, सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबन्धन संस्थान, नई दिल्ली।

पी.सी. सक्सेना, सह सम्पादक, जर्नल आफ कंप्यूटर स्टेंडर्डस ऐंड इंटरफेसिस ऐल्सवियर; सदस्य, शोध अध्ययन मण्डल, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; सदस्य, शोध अध्ययन मण्डल, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

छात्रों की उपलब्धियां

1. एम.सी.ए. और एम.टेक. छात्रों को निम्नलिखित अग्रणी साफ्टवेयर कंपनियो में नौकरियां मिलीं :

कम्पनी का नाम	छात्रों की संख्या
1. आईबी.एम.	12
2. इन्फोसिस	01
3. एसेन्चर	02
4. कैडेन्स	02
5. जी.ई कैप्स	02
6. महिन्द्रा ब्रिटिश टेलीकाम	01
7. टेक्सपैन	01
8. ग्रेपिसिटी	01
9. डी.आर.डी.ओ.	01
10. क्रिस्प	01
11. नगारो साफ्टवेयर लिमिटेड	04
योग	28

अन्य सूचनाएं

1. एस. मिन्ज, सदस्य, शासी निकाय, भारतीय सामाजिक संस्थान, नई दिल्ली;
2. चयनित संकाय सदस्य, जी.एस. कैश, जेएनयू

3. पर्यावरण विज्ञान संस्थान

पर्यावरण विज्ञान संस्थान की स्थापना वर्ष 1974 में हुई थी। यह देश में अपनी तरह का सबसे पुरान संस्थान है। इस संस्थान ने पर्यावरण विज्ञान में सबसे पहले एम.एस–सी. और एम.फिल. पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। संस्थान का चरित्र बहुविषयात्मक है, इसमें पर्यावरण के भौतिक, रासायनिक और जैविक पहलुओं पर अध्ययन किया जाता है। संस्थान के शिक्षकों की शोध रूचि विभिन्न भू–वातावरणीय और जीव वैज्ञानिक प्रक्रियाओं में विभक्त है। पारिस्थितिक और सामाजिक प्रक्रियाओं के बीच संयोजन संस्थान के रूचि के क्षेत्रों को एक अतिरिक्त आयाम प्रदान करता है। तदनुसार, संस्थान के शिक्षण और शोध क्षेत्रों में – भौतिकी, रसायन, भू–गर्भ शास्त्र, जल–विज्ञान, मौसम विज्ञान, गणित, सांख्यिकी, जैव भौतिकी, जैव-रसायन, मोलक्यूलर और पर्यावरणीय जीव–विज्ञान, पारिस्थितिकी विज्ञान और पर्यावरणीय मॉनिटरिंग और प्रबंधन जैसे विषयक क्षेत्र शामिल हैं।

संस्थान में बहुविषयक क्षेत्रों के शिक्षक हैं। इस समय 13 प्रोफेसर (एक छुट्टी पर है), 5 सह–प्रोफेसर और एक सहायक प्रोफेसर हैं। संस्थान ने वर्ष 1987 में एम.एस–सी. पाठ्यक्रम शुरू किया, जिसे बाद में संशोधित किया गया। शैक्षिक वर्ष 1993–94 से शुरू एम.एस–सी. पाठ्यक्रम विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमियों के छात्रों की आवश्यकतानुसार दो स्ट्रीम में शुरू किया गया है, इनमें से एक भौतिक विज्ञान और दूसरा जीव विज्ञान पक्ष पर आधारित है।

वर्ष 1975 से चलाए जा रहे एम.फिल. / पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों की पाठ्यचर्या में भी समय–समय पर परिवर्तन किए गए। वर्तमान में इस अध्ययन पाठ्यक्रम में विस्तृत कोर्स वर्क शामिल है और छात्र को एम.फिल. डिग्री प्राप्त करने के लिए एक लघु शोध प्रबन्ध भी लिखना पड़ता है। इसके बाद छात्र को अनुमोदित विषय पर कम से कम दो वर्ष की अवधि में शोध कार्य पूरा करना होता है। इसके सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद छात्र पी–एच.डी. उपाधि के लिए पात्र हो जाता है।

1 BFku oeq : r%bK ku fo'k ksd sl ad kr pkj {ks kees'kksk fd ; k t k r k g S क्षेत्र – I (भौतिक विज्ञान) संस्थान की शोध रूचि है – (क) नॉन–लिनियर जैव एवं भौतिक प्रणालियों का अध्ययन (ख) खगोल–भौतिकी प्लाज्मा के सैद्धान्तिक पहलू, शहरी माइक्रो जलवायु, ध्वनि प्रदूषण और इलेक्ट्रो मैग्नेटिक प्रदूषण, गणितीय मॉडलिंग – पर्यावरण के साथ विभिन्न प्रणालियों की पारस्परिक क्रियाओं को अच्छी तरह से समझने के लिए एक सक्रिय साधन। क्षेत्र – II (भू–विज्ञान) शोध रूचि (क) स्थलीय तथा जलीय पर्यावरण में वर्तमान भू–विज्ञानी और भू–रसायनिक प्रक्रियाओं को समझाना (ख) भू रसायनिक और भू–कालक्रम विज्ञान सहित विभिन्न विश्लेषात्मक उपकरणों पर आधारित दक्षिण भारत के भू–पृष्ठ का उद्गम (ग) हिमालय ग्लेशियर का भू–रसायनिक और जल–वैज्ञानिक अध्ययन (घ) भू–जल खोज विषयक क्षेत्रों में दूर संवेदन प्रणालियों का प्रयोग; और (च) भूकम्प निवर्तनिकी क्षेत्र – III में निम्नलिखित के अध्ययन का विस्तृत क्षेत्र शामिल हैं – (क) पर्यावरणीय प्रदूषण और इसका जीव जात पर प्रभाव, (ख) अशुष्क भूमि सहित परिस्थिति विज्ञान और जलीय परिस्थितिकी और (ग) ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन क्षेत्र – IV (जैविक विज्ञान) में पर्यावरण – जीव जात की पारस्परिक क्रियाओं के सभी स्तरों का अध्ययन आणविक और कोशिकीय स्तरों पर किया जाता है। यह अध्ययन व्यक्तिगत और जन समुदाय तथा समुदाय और सम्पूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के माध्यम से किया जा रहा है। इस अध्ययन में पादपों तथा मानव अस्तित्व के लिए प्रत्यक्ष रूप से महत्व रखने वाली पशु प्रजातियों पर अनेक प्रकार के विषीय तत्वों के प्रभावों का अध्ययन शामिल है। अनेक अध्ययन मॉडल के रूप में एंटामॉयबा हिस्टोलिटिका का इस्तेमाल करते हुए होस्ट पैरासाइट इंटरएक्शन पर केन्द्रित है।

संस्थान के शिक्षण और शोध कार्यक्रमों को वि.अ.आ. तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से मान्यता मिली है, इन्होने क्रमशः अपने कॉसिस्ट (2000–2005) और फिस्ट (2002–2003) कार्यक्रमों के तहत अनुदान राशि उपलब्ध कराई है। संस्थान को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से भी मान्यता मिली है, इसने अपनी डी.आर.एस. चरण -I (1994–99), डी.आर.एस. चरण -II (1999–2004) की योजना के तहत संस्थान को वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी है। संस्थान के शिक्षकों की शोध गतिविधियों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मान्यता मिली है, इसीलिए संस्थान के कई शिक्षकों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियों तथा संगठनों से प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं अध्येतावृत्तियां प्राप्त हुई हैं। कई शिक्षक केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा गठित विभिन्न समितियों के सदस्य हैं।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

संस्थान की विभिन्न शोध रूचियाँ हैं, लेकिन शोध के थ्रस्ट एरिया हैं –

1. भू–वायुमंडलीय प्रक्रिया
2. पर्यावरणीय प्रदूषण
3. पर्यावरणीय जीव विज्ञान
4. पारिस्थितिकी तन्त्र प्रक्रिया
5. गणितीय प्रतिरूपण

कृषि में वृद्धि और बाजार विश्वीकरण तथा बढ़ रहे शहरीकरण के द्वारा तेजी से हो रहे आर्थिक विकास के कारण मृदा सूक्ष्म जीव विज्ञान/रसायनशास्त्र, शहरी पारिस्थितिकी, प्राकृतिक विपदा प्रबन्धन, कृषि मौसम विज्ञान जैसे पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्रों में शोध कार्य आवश्यक हो गया है। परजीवी जीव विज्ञान और टॉक्सिकोजीनोमिक्स के अध्ययन से हमें प्रदूषण से फैलने वाले विषैले प्रभावों की जानकारी मिलती है, जोकि वाइब्रेंट साइंस के रूप में तेजी से उभर रहा है। शिक्षकों की कई शोध परियोजनाओं का वित्तपोषण कई सरकारी और अन्तर–सरकारी एजेंसियों जैसे – विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, जैव–प्रौद्योगिकी विभाग, डी.ओ.डी., विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, पर्यावरण और वन मंत्रालय, जी.ई.एफ., यूनेस्को तथा कुछ अन्य संगठनों द्वारा किया जाता है। संस्थान में 'एनविस' केन्द्र भी हैं, जिसका वित्तपोषण पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा होता है। संस्थान की केन्द्रीय यंत्रीकरण सुविधा और वायु प्रदूषण मॉनिटरिंग मोबाइल प्रयोगशाला संस्थान की मुख्य सहयोग प्रदान करती है, इनके द्वारा शोध गतिविधियों के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी उपलब्ध होती है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान संस्थान ने कई शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया। शिक्षकों और छात्रों की विशेष उपलब्धियों सहित पूर्ववर्ती उपलब्धियों का विवरण नीचे दिया गया है।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

1. डी.के. बैनर्जी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – ब्रिटिश परिषद द्वारा प्रायोजित उच्च शिक्षा संपर्क कार्यक्रम के तहत स्कूल आफ एनवायरनमेंट ऐंड एप्लाइड साइंसेज, यूनिवर्सिटी आफ डर्बी, यू.के. के साथ 'बायोजियोकेमिकल स्टडीज आफ सम मेटल्स इन द एक्वाटिक ऐंड टेरेस्ट्रियल सिस्टम्स इन दिल्ली' विषयक शोध परियोजना पर सहयोग कर रहे हैं।
2. डी.के. बैनर्जी, इंस्टीट्यूट आफ एनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन इंजीनियरिंग, यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलॉजी, लुबलिन पोलैण्ड के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यक्रम में इण्डो–पोलिश कॉपरेशन के तहत 'हैवी मेटल मॉबिलाइजेशन फ्राम सॉयल्स ऐंड सेडिमेंट्स' पर सहयोग कर रहे हैं।
3. वी. सुब्रामणियन शैक्षिक विनिमय कार्यक्रम के तहत भू–विज्ञान विभाग, उप्पासला विश्वविद्यालय उप्पासला, स्वीडन के साथ सहयोग कर रहे हैं।
4. ए.एल. रामनाथन लिनेयस–पाल्मे एकेडमिक प्रोग्राम 2002–2003 के तहत स्वीडन के साथ अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय कार्यक्रम में सहयोग कर रहे हैं।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नए कोर्सो तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

वी. सुब्रामणियन, एम.एस–सी. स्तर – वाटर रिसोर्सिज ऐंड हाइड्रोलाजी

प्रकाशन

पुस्तकें

1. जे. बिहारी, माइक्रोवेव मेजरमेंट टेक्निक्स ऐंड एप्लिकेशंस, अनम्या प्रकाशक, नई दिल्ली, 2003
2. ए.एल. रामनाथन, आर. रमेश, रिसेंट ट्रेन्डस इन हाइड्रोजिओकेमेस्ट्री (केस स्टडीज फ्राम सर्फेस ऐंड सब सर्फेस वाटर्स आफ सलेक्टिड कंट्रीज) वि.प्रौ.वि, एनविस, भारत सरकार, कैपिटल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2003
3. वी. सुब्रामणियन, 'फ्रेश वाटर रिलेटिड इश्यूज' विषयक कार्यशाला और 'नेशनल रिवर लिंकिंग प्लांस' विषयक गोलमेज में प्रस्तुत सामग्री को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया।
4. वी. सुब्रामणियन, एनवायरनमेंटल साइंसेज : नरोसा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण, अल्फा साइंस इंटरनेशनल, पेंगबोर्न, यू.के.।

5. सी.के. वार्ष्णेय, एप्रिसिएशन कोर्स आन एनवायरनमेंट, ब्लाक : एनवायरमेंटल कंसर्न्स : ब्लाक 2 : एनवायरनमेंटल मेनेजमेंट : ब्लाक 3 : इंप्रूविंग द एनवायरनमेंट, इग्नू, नई दिल्ली, 2003

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

1. ए.के. अत्री, वि.अ.आ. द्वारा प्रायोजित 'एम.एस–सी. बायोटेक्नोलॉजी' विषयक पुस्तक। यह पुस्तक प्रेंटिस हाल द्वारा प्रकाशित की जाएगी। इस पुस्तक में 'एनवायरनमेंटल बायोटेक्नोलॉजी' विषयक अध्याय शामिल किया गया है।
2. बी. गोपाल, 'मैनेजमेंट इश्यूज आफ एक्वाटिक रिसॉर्सिस इनक्लुडिंग वेटलैण्ड्स', डी.के. मेहरोत्रा (सं.) इंस्टीट्यूशनलाइजिंग कामन पूल रिसार्सिज, कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, नई दिल्ली 2002
3. बी. गोपाल, 'वेटलैण्डस ऐंड एग्रिकल्चर : आर वी हीडिंग फार कनफ्रंटेशन ऑर कंजरवेशन ?', एम.एम. हालेण्ड, एम.एल वारेन, और जे.ए. स्टनटर्फ (सं.) 'सस्टेनेबिलिटी आफ वेटलैण्ड्स ऐंड वाटर रिसार्सिज : हाउ वेल कैन रिवराइन वेटलैण्डस कंटीन्यू टु सपोर्ट सोसाइटी इन टु द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी ?' (विषयक सम्मेलन की कार्यवाही) जनरल टेक्नीकल रिपोर्ट एस.आ.एस.–50, सदर्न रिसर्च स्टेशन, यू.एस.टी.ए. फोरेस्ट सर्विस, आशविले, एन.सी., यू.एस.ए., 200, 2002
4. ए.एल. रामनाथन, 'द ग्राउंड वाटर क्वालिटी ऐंड सी वाटर इंट्रूजन स्टडीज इन द कोस्टल एक्वीफर्स आफ तमिलनाडु, अर्बन हाइड्रोलॉजी' (सं.) आर. रमेश और रामचन्द्रन, अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई – कैपिटल पब्लिशर्स, नई दिल्ली
5. सी.के. वार्ष्णेय और ए.के. अत्री, 'इंप्लिकेशंस फार वेरिएशन इन कार्बन सॉर्सिज फार ग्लोबल वार्निंग पोटेंशल एफ. मिथेन', मोहम्मद युनुस, नंदिता सिंह ल्यूइट जे.डे. कॉक (सं.) एनवायरनमेंटल स्ट्रेस : इंडीकेशन, मिटिगेशन ऐंड इको कंजरवेशन, क्लूवर एकेडेमिक्स, द नीदरलैंड
6. सी.के. वार्ष्णेय, बी.एन. वेल, एफ.एम. मार्शल, एम. अग्रवाल, के. बेट्टी और एम.आर. आशमोर, 'एयर पॉल्यूशन एन अनरिकाग्नाइज्ड थ्रेट टु द न्यूट्रिशन आफ द अर्बन पुअर इन द डिवलपिंग वर्ल्ड ?' बांगलादेश एनवायरनमेंट 2000 विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, बांगलादेश पोरीबेश आंदोलन, (बापा), ढाका
7. सी.के. वार्ष्णेय, 'इकोलॉजीकल स्टडी आफ टेरिस्ट्रियल कम्युनिटी इन रिलेशंस टु एनवायरनमेंट इम्पैक्ट एनालिसिस', 'एनवायरनमेंट इंपैक्ट स्टडीज फार डिवलमेंट प्रोजेक्ट्स' विषयक कार्यशाला की कार्यवाही में, केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड, पर्यावरण और वन मंत्रालय, नई दिल्ली
8. सी.के. वार्ष्णेय, वेटलैण्ड वैल्यूज, 'वाटर क्वालिटी ऐंड वेटलैण्ड्स : सोसियो–इकोनामिक ऐंड इकोलॉजीकल इम्पोर्टेंस' विषयक गोलमेज सम्मेलन की कार्यवाही में (सं.) आर.के. खन्ना और जी.पी. माथुर, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार और जल संसाधन सोसायटी, नई दिल्ली 2003
9. के.जी. सक्सेना, के. चन्द्रशेखर, आर. गावली, के.एस. राव, आर.के. मैखुरी, 'ट्रेडिशनल मैनेजमेंट आफ बायोडाइवर्सिटी इन इंडिया'ज कोल्ड डेजर्ट', कंजर्विंग बायोडाइवर्सिटी एन एरिड रिजन्स, जे. लेमंस, आर. विक्टर, डी. शेफर, क्लुवर एकेडमिक पब्लिशर्स, बोस्टन, एम.ए., 2003
10. के.जी. सक्सेना, आर.के. मैखुरी, के.एस. राव, एस. नौटियाल, ए. पुरोहित, आर.एल. सेमवाल, 'मैनेजमेंट आप्शंस फार नंदादेवी बायोस्फेयर रिजर्व', ट्रेडिशनल इकोलॉजीकल नालेज फार मैनेजिंग बायोस्फेयर रिजर्वस इन साउथ ऐंड सेंट्रल एशिया (सं.) पी.एस. रामकृष्णन, आर.के. राय, आर.पी.एस. कटवाल और एस. मेंहदीरत्ता, आक्सफोर्ड और आई.बी.एच., नई दिल्ली, 2002
11. के.जी. सक्सेना, के.एस. राव, आर.एल. सेमवाल, आर.के. मैखुरी, एस. नौटियाल, के.के. सेन, 'ट्रेडिशनल नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट इन सेंट्रल हिमालया ऐंड इट्स रिलिवेंस टु बायोस्फेयर मैनेजमेंट', ट्रेडिशनल इकोलाजीकल नॉलेज फार मैनेजिंग बायोस्फेयर रिजर्वस इन साउथ ऐंड सेंट्रल एशिया (सं.) पी.एस. रामकृष्णन, आर.के. राय, के.पी. एस. कटवाल और एस. मेंहदीरत्ता, आक्सफोर्ड और आई.बी.एच., नई दिल्ली, 2002
12. के.जी. सक्सेना, के.के. सेन, आर.एल. सेमवाल, आर.के. मैखुरी, के.एस. राव, 'लैण्ड यूज – लैण्ड कवर चेंज इन हिमालया : प्रोसेसिज, पैटर्नस ऐंड इंप्लिकेशंस', लैण्ड यूज हिस्ट्रीकल पर्सपेक्टिव्स : फोकस आन इण्डो–गंगेटिक प्लेंस, (सं.) वाई.पी. एबरोल, एस. सांगवान और एन.के. तिवारी, एलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2002

13. के.जी. सक्सेना, 'स्टडीज आन पीपल – बायोडाइवर्सिटी–इकोसिस्टम फंक्शन रिलेशनशिप इन द प्रपोज्ड कोल्ड डेजर्ट बायोस्फेयररिजर्व', बायोस्फेयर रिजर्वस इन इंडिया ऐंड देयर मैनेजमेंट (सं.) जे.के. शर्मा, पी.एस. ईसा, सी. मोहनन, एन. शशिधरन और आर.के. राय, पर्यावरण और वन मंत्रालय/केरल वन अनुसंधान संस्थान 2002

14. के.जी. सक्सेना, आर.के. मैखुरी, एस. नौटियाल, के.एस. राव, 'मेडिसिनल प्लांटस कल्टिवेशन इन नंदा देवी बायोस्फेयर रिजर्व बफर जोन विलेज्स', रिसेंट प्रोग्रेस इन मेडिसेनल प्लांट्स भाग–I, एथनोमेडिसिन ऐंड फार्माकेग्नोसी (सं.) वी.के. सिंह, जे.एन. गोविल और गुरदीप सिंह, सां. टेक. पब्लि., यू.एस.ए., 2002

आलेख

1. डी.के. बैनर्जी और एम. स्वर्ण, 'केमिकल स्पेसिएशन आफ एल्युमिनियम इन दिल्ली सॉयल, केमिस्ट्री फार द प्रोटेक्शन आफ एनवायरनमेंट', पावलोवस्की ऐंड दुदजिनस्का (सं.) प्लेनम प्रेस, 2003

2. डी.के. बैनर्जी और अंजु, 'हैवी मेटल लेवल्स ऐंड सॉलिड फेज स्पेसिएशन इन स्ट्रीट डस्टस आफ दिल्ली, एनवायरनमेंट पाल्युशन', 2003

3. जे. बिहारी, आर. पॉलरार 'द इफेक्ट आफ लो लेवल कंटीन्युइस 2.45 गेगाहर्टज वेव्स आन एंजाइम्स आफ डिवलपिंग रेट ब्रेन', इलेक्ट्रोमेग्मेटिक बायोलॉजी ऐंड मेडिसिन, 2002

4. ए.के. भट्टाचार्य, 'वाटर क्वालिटी मैनेजमेंट, पाल्यूशन ऐंड सस्टेनबल एग्रीकल्चर' 'फ्रेश वाटर रिलेटिड इश्यूज' विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला की कार्यवाही 'नेशनल रिवर लिंकिंग प्लान' पर परिचर्चा, प.वि.सं./जेएनयू में 31.3.2003 को आयोजित

5. सुधा भट्टाचार्य, ए. बाकरे और ए. भट्टाचार्य, 'मोबाइल जेनेटिक एलिमेंट्स इन प्रोटोजोआ पैरासाइट्स', जे. जेनेटिक्स, 81, 73–86, 2002

6. सुधा भट्टाचार्य, जे. पॉल और ए. भट्टाचार्य, 'क्लोज सिक्वेंस आइडेंटिटी बिटवीन राइबोसोमल डी.एन.ए. एपिसम्स आफ द नॉनपैथोजेनिक एंटामॉयबा डिस्पर ऐंड पैथोजेनिक एंटामॉयबा हिस्टोलिटिका गेटियोग्लाइकन इन विट्रो, मोल. बायोटेक. पैरासिटो, 126, 1–8–2002

7. सुधा भट्टाचार्य, एन. साहू और ए. भट्टाचार्य 'बायोकेम द एक्सप्रेशन आफ ए कैलशियम बाईडिंग प्रोटीन आफ द प्रोटोजोआ पैरासाइट एंटामॉयबा हिस्टोलिटिका बाई टेट्रासाइक्लिन रेग्यूलेटेबल एंटीसेंस आर.एन.ए.', मोल. बायोकेम. पैरासिटोल. 2003

8. एस. भट्टाचार्य, एस. घोष, एस. सतीश, एस. त्यागी, ए. भट्टाचार्य, 'डिफरेंशियल यूज आफ मल्टिपल रेप्लिकेशन आरिजिंस इन द राइबोसोमल डी.एन.ए. एपिसम आफ द प्रोटोजोआ पैरासाइट एंटामोयबा हिस्टोलिटिका', न्यूक्लिक एसिड्स, 2002

9. एस. भट्टाचार्य, ए. भट्टाचार्य और जे.पी. एकार्स, 'नॉनट्रांसलेटिड पॉलिएडेमिलेटिड आर.एन.ए.ज फ्राम एंटामॉयबा हिस्टोलिटिका', ट्रेंड्स पैरासिटो, 19, 286–289, 2003

10. बी. गोपाल, एम. चौहान और डी.पी. जुत्शी, 'हाई अल्टिट्यूड लेक्स आफ लदाख : चेंजिज सिंस द येल नार्थ इंडिया एक्सपीडिशन', वरहाडलुंजन डेर इंटरनेशनल वरनीजुंग फ्यूर लिम्नोलॉजी 28 : 519–523, 2002

11. वी.के. जैन, 'इफेक्ट्स आफ डस्ट एयरोसोल लेयर आन बर्टिकल टेम्प्रेचर प्रोफाइल', ए.पी. डिमरी, मौसम, भाग 53, अंक–4, पृ. 539–542, 2002

12. वी.के. जैन और ए.के. श्रीवास्तव, 'रिलेशनशिप बिटवीन इनडोर ऐंड आउटडोर एयर क्वालिटी इन दिल्ली', इनडोर ऐंड बिल्ट एनवायरनमेंट, भाग–12, पृ. 159–165

13. कस्तूरी दत्ता, जे. मीनाक्षी, अनुपमा, एस.के. गोस्वामी, 'कांस्टीट्यूटिव एक्सप्रेशन आफ हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन–I (एच ए वी पी I/पी32/जीसी1 क्यू आर) इन नार्मल फाइब्रोब्लास्ट सेल्स परटर्डर्स इट्स ग्रोथ करेक्ट्राइस्टिक्स ऐंड इंड्यूसिज एपोप्टोसिस', बायोकेम, बायोफिजिक रिस. कम्यु. 300(3), 686–693, 2003

14. कस्तूरी दत्ता, आई. घोष, 'स्पर्म सर्फेस हाइएलुरोनान, बाइंडिंग प्रोटीन (एच ए वी पी 11) इंटरएक्ट्स विद जोना पेलुसिडा आफ वाटर बुफालो (बुबालस लुवालिस) थ्रू इट्स क्लसटर्ड मैनोज रेसिड्यूज', मोल. रिप.डिव. 64(2), 235–244, 2003

15. कस्तूरी दत्ता, एम. मजुमदार, ए. भारद्वाज, आई. घोष, एस. रामचन्द्रन, 'इविडेंस फोर द प्रिजेंस आफ एच.ए.बी.पी. I स्यूडोजीन इन मल्टिपल लोकेशंस आफ मैमेलियन जीनोम', डीएनए ऐंड सेल बायोलॉजी 21 (10), 727–735, 2002

16. कस्तूरी दत्ता, एम. मजुमदार, जे. मीनाक्षी, एस.के. गोस्वामी, 'हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन I (एच ए बी पी I)/सी.आई.क्यू. बी पी/पी32 इज एन इंडोजीनस सब्सट्रेट फोर एम.ए.बी. काइनेज ऐंड इज ट्रांसलोकेटिड टु द न्यूक्लस अपोन माइटोजेनिक स्टिम्यूलेशन', बायोकेमे. बायोफिजि. रिस. कम्यु. 291, 829–837, 2002

17. कस्तूरी दत्ता, बी.के. झा, डी.एन. सालुंके, 'डिसल्फाइड बोंड फार्मेशन थ्रू सिस्टीन 186 फेसिलिटेट्स फंक्शनली रिलिवेंट डिमेरोजेशन आफ ट्राइमेरिक हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन I (एच ए बी पी I)/पी32/जीसी I क्यू आर., यूरो. जर्न. बायोकेमे. 269, 298–307, 2002

18. कस्तूरी दत्ता, ए. भारद्वाज, आई. घोष, ए. सेनगुप्ता, टी.जी. कूपर, जी.एफ.वीनबायर, एम.एच. ब्रिकवर्थ, ई. नीश्चलेग, 'स्टेज स्पेसिफिक एक्सप्रेशन आफ प्रोप्रोटीन फोर्म आफ हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन I (एचएबीपी–I) ड्यूरिंग स्परमेटोजेनेसिस इन रेट', मोल. रिप्रो. डिव. 62(2) : 223–232, 2002

19. कस्तूरी दत्ता, टी.बी. देव, एम. मजुमदार, ए. भारद्वाज, बी.के. झा, 'एन इनसाइट इन टु सेलुलर सिग्नेलिंग मीडिएटिड बाइ हाइएलुरोनान बाइंडिग प्रोटीन (एच ए बी पी I)', हाइएलुरोनान 2000 कार्यवाही

20. पी.एस. खिलारे, एस. बालचन्द्रन और मीना भारद्वाज, 'स्पेटियल ऐंड टेम्पोरल वेरिएशन आफ हेवी मेटल्स इन एटमास्फेरिक एयरो सोल आफ दिल्ली' एनवायरनमेंटल मानिटरिंग ऐंड एसेसमेंट 89 : 3, 2003

21. सुमित्रा मुखर्जी, 'फोरेस्ट फायर रिस्क जोन मैपिंग फ्राम सेटेलाइट इमेजरी ऐंड एफ.आई.एस., इंटरनेशनल' जर्नल आफ एप्लाइड अर्थ आब्जरवेशन ऐंड जियोइंफार्मेशन 4, 1–10, एल्सवियर, 2002

22. सुमित्रा मुखर्जी, 'स्टडी आफ वेदरिंग ऐंड इरोसनल स्टेटस आफ वेसालटिक रोक्स यूजिंग रिमोट सेंसिंग डाटा', जर्नल आफ इंडियन सोम. रिम. सेंस. भाग–30, अंक–3, 2002

23. सुमित्रा मुखर्जी, 'चेंज इन मैग्नेटिक फील्ड : एन अर्ली वार्निंग सिस्टम टु अंडरस्टेंड सीस्मोटेक्टोनिक्स प्रोसि'. (एस्ट्रोन. नेक. में प्रकाशित) प्रथम पोट्सडेम थिंक सोप, सनस्पोट्स ऐंड स्टाररपोट्स, 6–10 मई, पोट्सडेम, जर्मनी, 2002

24. सुमित्रा मुखर्जी, 'कोरोनल मास इजेक्शन में इनक्रीज ओजोन होल प्रोसि.', प्रथम पोट्सडेम थिंकशॉप, सनस्पाट्स ऐंड स्टारस्पोट्स, 6–10 मई पोट्सडेम, जर्मनी, 2002

25. सुमित्रा मुखर्जी, 'ट्रिगरिंग आफ गुजरात अर्थक्वेक ड्यू टु चेंज इन कैपी ऐंड इलेक्ट्रान फलक्स इनड्यूस्ड बाई सन', नासा 'अर्थ सिस्टम प्रोसेसिज रिलेटिड टु गुजरात अर्थक्वेक यूजिंग स्पेस टेक्नोलाजी' विषयक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला, 27 से 29 जनवरी, 2003 तक प्रौ.सं., कानपुर, भारत में आयोजित

30. सुमित्रा मुखर्जी, 'सिकिंग लिंक्स बिटवीन सोलर एक्टिविटी ऐंड मानसून' जर्नल जियोग्राफी ऐंड यू, भाग–2, अंक–7, पृ. 18–23, 2002

31. वी. राजमणि, 'फार्मलैण्ड जियोलॉजी – एन इमर्जिंग फील्ड इन सस्टेनेबिलिटी साइंस' करंट साइंस, भाग–83, पृ. 557–559, 2002

32. वी. राजमणि और सुदेश यादव, 'एयरोसोल्स आफ नार्थ-वेस्ट इंडिया – ए पोटेंशियल क्यू सोर्स', करंट साइंस, भाग–84, पृ. 278–280, 2003

33. ए.एल. रामनाथन, 'डिफ्लोरीडेशन आफ नेचुरल वाटर्स यूजिंग नेचुरल मैटेरियल्स, साउथ अफ्रीकन वाटर', जर्नल वाटर एस.ए.

34. ए.एल. रामनाथन, 'बायोजियोकेमेस्ट्री आफ द कोस्टल इकोसिस्टम', साउथ ईस्ट कोस्ट आफ इंडिया, वर्ष 2003 में निगाम्बो श्रीलंका में आयोजित 'एसेस्मेंट आफ फलक्सेज टु कोस्टल जोन इन साउथ एशिया ऐंड देयर इम्पैक्ट्स' विषयक ए पी एन/एस टी ए आर टी/एल ओ सी आई जैड क्षेत्रीय कार्यशाला।

35. ए.एल. रामनाथन, 'इम्पैक्ट आफ लैण्डफिल्स आन द ग्राउंड वाटर क्वालिटी – केस स्टडी फ्राम द कैपिटल सिटी दिल्ली (2002)', यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय इण्डोनेसिया और एशियन सेंटर फार ट्रापिकल मेट्रोलॉजी, मलेशिया द्वारा 4 से 9 नवम्बर 2002 तक कुआलालम्पुर, मलेशिया में आयोजित 'अर्बन हाइड्रोलॉजी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का कार्यवाही भाग

36. ए.एल. रामनाथन, 'कोस्टल हाइड्रोजियोलॉजीकल स्टडीज फ्राम पुटुचेटिराम टु कुड्डुलोर आफ तमिलनाडु, 'लां लाइंग कोस्टल रिजंस' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का कार्यवाही भाग, जर्मन नेशनल कमिटी फार द इंटरनेशनल हाइड्रोलॉजीकल प्रोग्राम आफ यूनेस्को और द इंटरनेशनल हाइड्रोलाजिकल प्रोग्राम – आपरेशनल हाइड्रोलॉजी प्रोग्राम (आई.एच.पी.–ओ.एच.पी.) आफ डब्ल्यू.एम.ओ., 9 से 12 सितम्बर, 2002

37. के.जी. सक्सेना, एस. नौटियाल, के.एस. राव, आर.के. मैखुरी,'ट्रांशुमेंट पेस्टोरेलिज्म इन द नंदा देवी बायोस्फेयर रिजर्व', इंडिया, माउंटेन रिसर्च ऐंड डिवलपमेंट, 23, 255–262, 2003

38. के.जी. सक्सेना, के.एस. राव, एस. नौटियाल, आर.के. मैखुरी, 'लोकल पीपल्स नालेज, एप्टिट्यूड ऐंड पर्सेप्शंस आफ प्लानिंग ऐंड मैनेजमेंट इश्यूज इन नंदा देवी बायोस्फेयर रिजर्व', इंडिया, एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट, 31, 168–181, 2003

39. के.जी. सक्सेना, आर.एल. सेमवाल, आर.के. मैखुरी, के.एस. राव, के.के. सेन, 'लीफ लिटर डिकंपोजिशन ऐंड न्यूट्रिएंट रिलीज पैटर्नस आफ सिक्स मल्टिपरपज ट्री स्पेसीज आफ सेन्ट्रल हिमालया', इंडिया बायोमास ऐंड बायोइनर्जी, 24, 3–11, 2003

40. के.जी. सक्सेना, एस. नौटियाल, आर.के. मैखुरी., के.एस. राव, आर.एल. सेमवाल, 'एग्रोइकोसिस्टम फंक्शन एराउंड ए हिमालयन बायोस्फेयर रिजर्व', जर्नल आफ एग्रीकल्चरल सिस्टम्स, 29, 71–100, 2003

41. के.जी. सक्सेना, आर.एल. सेमवाल, आर.के. मैखुरी, के.एस. राव, के. सिंह, 'क्राप प्रोडक्टिविटी अंडर डिफरेंटली लोप्ड कैनोपीज आफ मल्टिपरपज ट्रीज इन सेन्ट्रल हिमालया, इंडिया', एग्रोफोरेस्ट्री सिस्टम्स, 56, 57–63, 2002

42. के.जी. सक्सेना, के.एस. राव आर.के. मैखुरी, एस. नौटियाल, 'क्राप डैमेज ऐंड लिव स्टॉक डेप्रेडेशन बाइ वाइल्डलाइफ : ए केस स्टडी फ्राम नंदा देवी बायोस्फेयर रिजर्व', जर्नल आफ एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट, 66, 317–327, 2002

43. के.जी. सक्सेना, के.के. सेन, यू. राणा, आर.एल. सेमवाल, एस. नौटियाल, आर.के. मैखुरी, के.एस. राव, 'पैटर्नस ऐंड इंप्लिकेशंस आफ लैण्ड यूज/कवर चेंज : ए केस स्टडी इन प्राणमति वाटर शेड (गढवाल हिमालया, इंडिया)', माउंटेन रिसर्च ऐंड डिवलपमेंट, 22, 56–62, 2002

44. जे.डी. शर्मा और ज्योतिराज 'एनवायरनमेंटल सिक्योरिटी पॉलिसीज बेस्ड आन पब्लिक हेल्थ ऐंड एनवायरनमेंटल मेडिसिन कंसर्न्स इन इंडिया', हेल्थ ऐंड पाप्यूलेशन इश्यूज, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान

45. वी. सुब्रामणियन, एन. माधवन, राजेन्द्र सक्सेना और लार्स क्रिस्टर लुंडिन, 'नेचर आफ डिस्ट्रीब्यूशन आफ मर्करी इन द सेडिमेंट्स आफ द रिवर यमुना (ट्राइब्यूटरी आफ द गंगेज), इंडिया', जर्नल आफ एनवायरनमेंटल मॉनिटरिंग 5(3) : 427–434, 2003

46. वी. सुब्रामणियन, एन. माधवन, 'फ्लोरिड इन फ्रकशनेटिड सॉइल सैम्पल्स आफ अजमेर डिस्ट्रिक्ट, राजस्थान', ज. एनवायरन : 4, 821–822, 2002

47. वी. सुब्रामणियन, ए. वर्मा, 'आर्गेनिक मैटर ऐंड अमिनो एसिड कंशनट्रेशंस इन सर्फेस सेडिमेंट्स आफ द बेम्बनाड लेक', ए ट्रापिकल एसचुअरी', रीजनल एनवायरनमेंटल चेंज 2 : 143–149, 2002

48. वी. सुब्रामणियन,आर. सजीव, 'लेण्ड यूज/लेण्ड कवर चेंजिज इन अस्थामुदी वेटलैण्ड रीजन आफ केरला', ए स्टडी यूजिंग रिमोट सेसिंग ऐंड जी आई एस, ज. जियो. सोस. इंडियन, 2002

49. वी. सुब्रामणियन,ए. वर्मा, आर. रमेश, 'मिथेन एमिशन फ्राम द बेम्बनाड वेटलैण्ड्स, केरल, इंडिया', किमोस्फेयर, 2002

50. जे. सुब्बाराव, आर.के. आजाद, वेंतियन ली और आर. रामास्वामी, 'सिम्पलीफाइंग द मोजाइक डिस्क्रिप्शन आफ डीएनए सिक्वेंसिज', फिजिकल रिव्यू ई' 66, 031913, सितम्बर, 2002

51. जे. सुब्बाराव, आर.के. आजाद, वेंतियन ली, और आर. रामास्वामी, 'सिंपली फाइंग द मोजाइक डिस्क्रिप्शन आफ डीएनए सिक्वेंसिज', वर्चुअल जर्नल आफ बायोलॉजीकल रिसर्च, भाग–4, अंक–7, अक्टूबर, 2002

52. सी.के. वार्ष्णेय और ए.पी. सिंह, 'मेजरमेंट आफ एंबियंट कंसनट्रेशन आफ एनओ2 इन दिल्ली यूजिंग पेसिव डिफ्यूजन सैम्पलर',, करंट साइंस : (83) : 713–734, 2002

53. सी.के. वार्ष्णेय और ए.पी. सिंह, 'पेसिव सेम्पलर्स फार एन ओ एक्स मॉनिटरिंग : ए क्रिटिकल रिव्यू', द एनवायरनमेंटलिस्ट, 23, 127–136, 2003

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. कस्तूरी दत्ता, द यूज आफ हाइएलुरोनिक एसिड बाइंडिंग प्रोटीन एज ए डायग्नोस्टिक प्रॉब फार मेल इनफर्टिलिटी, जै.प्रौ.वि.
2. कस्तूरी दत्ता, मोलक्यूलर अनालिसिस आफ ह्यूमन हाइएलुरोनिक एसिड बाइंडिंग प्रोटीन दैट हैज मल्टिफंक्शनल एक्टिविटी, वि.प्रौ.वि.
3. बी. गोपाल, इनहांसमेंट आफ फ्लो आफ रिवर एट दिल्ली – प्रिपेयरेशन आफ ए रिसर्च ऐंड एक्शन प्लान, राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित, 2002
4. वी. राजमणि, 'जियोकेमेस्ट्री आफ सर्फेस, सेडिमेंटरी प्रोसेसिज ऐंड फार्मेशन आफ एलुवियल फार्मलैण्ड इन द कावेरी रिवर बेसिन ऐंड क्रिएशन आफ ए नेशनल फेसिलिटी फोर जियोकेमिकल रिरार्च, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
5. वी. राजमणि, 'मेगाजियोमॉर्फिक एलिमेंट्स इन गंगा यमुना (जी वाई) एलुवियल प्लेंस ऐंड देयर स्ट्रेटीग्राफिक सिग्नीफिकेंस इंटरप्रेटिड थ्रू सेडिमेंटोलॉजी ऐंड जियोकेमेस्ट्री – विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
6. वी. सुब्रामणियन, एनविस सेंटर आन बायोकेमेस्ट्री, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित (वर्ष 1994 से जारी)
7. वी. सुब्रामणियन, सर्फेस वाटर क्वालिटी ऐंड इंटरएक्शन आफ ग्राउंडवाटर पाल्यूशन इन ऐंड अराउण्ड दिल्ली, पर्यावरण विभाग, दिल्ली सरकार द्वारा वित्तपोषित
8. वी. सुब्रामणियन, कंपेरेटिव एनवायरनमेंटल स्टेटिस्टीकल स्टडी आफ म्यूनिसिपल सॉलिड वेस्ट फ्राम सलेक्टिड सिटीज आफ इंडिया, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित
9. वी. सुब्रामणियन, बायोजियोकेमिकल स्टडीज आफ द मेजर रिवर्स आफ द वेस्टर्न घाट्स, नेशनल नेचुरल रिसार्सिज मैनेजमेंट सिस्टम, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित
10. वी. सुब्रामणियन, एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट कैपेसिटी बिल्डिंग ऐंड टेक्निकल असिस्टेंट्स प्रोग्राम आन बायोजियोकेमेस्ट्री, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. ए.के. अत्री, केमिकल करेक्ट्राइजेशन आफ लोवर ट्रोपोस्फेरिक एयरोसोल लोड इन दिल्ली ऐंड इट्स इंप्लिकेशंस टु ओजोन फार्मेशन' वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तपोषित परियोजना
2. सुधा भट्टाचार्य, जीनोम वाइड जीन एक्सप्रेशन एनालिसिस आफ पैथोजेनिक ऐंड नॉन पैथोजेनिक स्पेसीज आफ एंटामॉयबा यूजिंग माइक्रोएरेज' अवधि–5 वर्ष (मार्च 2002–2007) वि.अ.आ.
3. सुधा भट्टाचार्य, 'कंपेरेटिव जीनोमिक्स एप्रोच टु आइडेंटीफाइ पैथोजेनेसिस – रिलेटिड जीन्स इन ई–हिस्टोलिटिका' अवधि : 3 वर्ष (2002–2006) भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद रोल पी–I
4. कस्तूरी दत्ता,, द जीन इनकोडिंग ह्यूमन हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन–I (एच ए बी पी I) एज ए मोलक्यूलर प्राब फार आइडेंटीफाइंग स्परमेटोजेनिक एरेस्ट ऐंड इट्स पोटेंशियल यूज इन आइ वी एफ, भा.चि.अ.प.
5. कस्तूरी दत्ता, फंक्शनल एसे आफ ह्यूमन एच ए बी पी I जीन एक्जामाइनिंग द एक्सप्रेशन प्रोफाइल्स आफ द सेल लाइंस विद इट्स आवर एक्सप्रेशन ऐंड म्यूटेशन, विशिष्ट कार्य हेतु सक्षम विश्वविद्यालय के तहत, जेनेटिक्स जीनोमिक्स और बायोटेक्नोलॉजी में वि.अ.आ. का कार्यक्रम
6. कस्तूरी दत्ता, आलिगोमरिक ट्रांजिशन आफ हाइएलुरोनिक एसिड बाइंडिंग प्रोटीन (एच ए बी पी I) इन रिलेशन टु इट्स लिजेंड इंटरएक्शन, जै.प्रौ.वि.
7. कस्तूरी दत्ता, मोलक्यूलर क्लोनिंग ऐंड अपस्ट्रीम सिक्वेंस' अनालिसिस आफ जीनोमिक डीएनए इनकोडिंग हाइएलुरोनिक एसिड बाइंडिंग प्रोटीन, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद
8. पी.एस. खिलारे, 'स्पारियल ऐंड टेम्पोरल डिस्ट्रीब्यूशन आफ पॉली साइक्लिक एरोमेटिक हाइड्रोकॉर्बन्स (पी ए एच एस) इन रिसपाइरेबल सस्पेंडिड पर्टिकुलेट मैटर (आर एस पी एम) आफ दिल्ली' वि.अ.आ. (2 वर्ष)

9. सौमित्र मुखर्जी, सेटर्न आब्जरवेशन कम्पेन; नासा/इ एस ए परियोजना

10. सौमित्र मुखर्जी, सन अर्थ कनेक्शन, नासा/ई एस ए प्रायोजित (18.3.2003)

11. सौमित्र मुखर्जी, कोस्टल महाराष्ट्र, इसरो प्रायोजित परियोजना

12. ए.एल. रामनाथन, स्टडी आन द बायोजियोकेमेस्ट्री ऐंड सी बजट इन द पिचवारम मैंग्रोव्स इंटरनेशनल फाउंडेशन आफ साइंस, स्वीडन – युवा विज्ञानी परियोजना

13. ए.एल. रामनाथन, क्लाइमेटिक इम्पैक्ट आन द वाटर रिसॉर्सिज – केस स्टडी फ्राम द अचकोविल रिवर, पर्यावरण और वन मंत्रालय (भारत सरकार) और विनरॉक इंटरनेशनल, नई दिल्ली

14. के.जी. सक्सेना, असेस्मेंट आफ वलनरेबिलिटी आफ फारेस्ट्स, ग्रासलैण्डस ऐंड माउंटेन इकोसिस्टम्स ड्यु टु क्लाइमेट चेंज – ए कंपोनेंट आफ इनेबलिंग एक्टिविटीज फार द प्रिपेयरेशन आफ इंडिया'ज नेशनल कम्युनिकेशन विनरॉक इंटरनेशनल/पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित

15. के.जी. सक्सेना, बायोडाइवर्सिटी कंजरवेशन विद इन द कांटेक्स्ट आफ ट्रेडिशनल नालेज ऐंड इकोसिस्टम रिहेबिलिटेशन, यूनेस्को, नई दिल्ली के सहयोग से मैकआर्थर फाउंडोन द्वारा वित्तपोषित

16. के.जी. सक्सेना, ट्रापिकल साइल बायोलॉजी ऐंड फर्टिलिटी प्रोग्राम – साउथ एशियन रीजनल नेटवर्क कार्डिनेशन, ट्रापिकल साइल बायोलॉजी ऐंड फर्टिलिटी इंस्टीट्यूट आफ सी आई ए टी

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

1. ए.के. भट्टाचार्य, 'लैण्ड डिस्पोजल आफ सॉलिड वेस्ट्स जनरेटिड इन वजीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया इन दिल्ली'

2. सौमित्रा मुखर्जी, 'थर्मोस्फेरिक आयनोस्फेरिक जियोस्फेरिक रिसर्च (टी आई जी ई आर) आन लांग टर्म मेजरमेंट आफ सोलर इ यू वी/यू वी फलक्सेज फार थर्मोस्फेरिक/आयनस्फेरिक मॉडलिंग फार स्पेस वेदर'

3. ए.एल. रामनाथन, 'लैण्ड फिल इम्पैक्ट आन द ग्राउंड वाटर क्वालिटी – केस स्टडी फ्राम दिल्ली'

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1. सुधा भट्टाचार्य ने 22 से 26 सितम्बर, 2002 तक मरीन बायोलॉजीकल लैब, वूड्स होल, यू.एस.ए. में आयोजित 'वूड्स रोल मोलक्यूलर पैरासिटोलॉजी' विषयक बैठक में भाग लिया तथा 'ई एच आर एल ई – ए एन ओ एन एल. टी आर रिट्रोट्रांस्पोनसन डिस्पर्स्ड थ्रूआउट द जीनोम आफ ई.हिस्टोलिटिका' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

2. डी.के. बैनर्जी ने 9 से 12 जून, 2002 तक हवाई, यू.एस.ए. में आयोजित 'केमेस्ट्री फार प्रोटेक्शन आफ एनवायरनमेंट' विषयक XIवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा सत्र की अध्यक्षता की।

3. बी. गोपाल ने सितम्बर, 2002 में नानजिंग, चीन में सोसाइटी आफ वेटलैण्ड साइंटिस्ट्स, यू.एस.ए. और चाईनीज एकेडमी आफ साइंसेज द्वारा आयोजित 'वेटलैण्ड रेस्टोरेशन विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

4. बी. गोपाल ने 15 से 17 नवम्बर, 2002 तक वैलेंसिया, स्पेन में आयोजित 'ग्लोबल डाइवर्सिटी फोरम' (जी बी एफ–17) के वेटलैण्ड रेस्टोरेशन ऐंड मिटीगेशन और वेटलैण्ड्स ऐंड एग्रीकल्चर' विषयक सत्रों में भाग लिया।

5. बी. गोपाल ने 14 से 17 दिसम्बर, 2002 तक काहिरा, मिश्र में थर्ड वर्ल्ड नेटवर्क आफ साइंटीफिक आर्गेनाइजेशंस (टी.डब्ल्यू.एन.एस.ओ.), और डेजर्ट रिसर्च सेंटर (डी आर सी), काहिरा मिश्र द्वारा आयोजित 'प्रमोटिंग वेस्ट प्रेक्टिसेज फार कंजरवेशन ऐंड सस्टेनेबल यूज आफ बायोडाइवर्सिटी आफ ग्लोबल सिग्नीफिकेंस इन एरिड ऐंड सेमी एरिड जोन्स' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

6. बी. गोपाल ने 13 से 15 जनवरी, 2003 तक कुआलालम्पुर में रिवर बेसिन इनिशिएटिव, कुआललम्पुर द्वारा आयोजित 'रिवर रेस्टोरेशन' विषयक क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

7. बी. गोपाल ने 22 से 29 मार्च, 2003 तक ज्यूरिख में फाउंडेशन फार एनवायरनमेंटल कंजरवेशन और स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट फार एनवायरनमेंटल साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी ज्यूरिख द्वारा आयोजित 'एनवायरनमेंटल फ्यूचर आफ एक्वाटिक इकोसिस्टम्स' विषयक पाँचवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

8. सौमित्र मुखर्जी ने जापान में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की।

9. सौमित्र मुखर्जी ने 16 मार्च से 23 मार्च, 2003 तक क्योटो – ओसाका और एस.एच.जी.ए. जापान में तीसरी 'वर्ल्ड वाटर फोरम' आयोजित की। दो सत्रों के संयोजक रहे : सत्र (1) 18 मार्च 2003 को ओसाका में आयोजित 'सीस्मोटेक्टोनिक्स ग्राउंड वाटर क्वालिटी ऐंड रेनवाटर हारवेस्टिंग बाइ रिमोट सैंसिंग टेक्नीक्स' विषयक सत्र; सत्र (2) 20 मार्च 2003 को क्योटो में आयोजित 'रेनवाटर हारवेस्टिंग विद चाइना, जापान और फिलिपिंस' विषयक सत्र

10. ए.एल. रामनाथन ने 9 से 11 दिसम्बर, 2002 तक निगोम्बो, श्रीलंका में आयोजित 'असेस्टमेंट आफ फलक्सेज टु कोस्टल जोन इन साउथ एशिया ऐंड देयर इम्पैक्ट्स' विषयक एपीएन/एसटीएआरटी/एलओसीआईजैड क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

11. ए.एल. रामनाथन ने 3 से 5 नवम्बर, 2002 तक कुआलालम्पुर, मलेशिया में आयोजित 'अर्बन हाइड्रोलॉजी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

12. ए.एल. रामनाथन ने 7 से 9 सितम्बर, 2002 तक यूनाइटिड स्टेट्स यूनिवर्सिटी, नैरोबी, केन्या में आयोजित 'हेड वाटर रिसॉर्सिज मैनेजमेंट ? विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

13. जे.डी. शर्मा ने 9 से 11 सितम्बर 2002 तक मोंटपेलियर, फ्रांस में आयोजित 'आई.एस.एन.आई.एम.' की पांचवीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया।

14. जे.डी. शर्मा ने 18 अक्टूबर, 2002 को ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन हाउस, टेवस्टाक स्क्वायर : लंदन में आयोजित 'प्रमोटिंग इंटीग्रेटी इन रिसर्च ऐंड पब्लिकेशन' विषयक ए जी एम कांउसिल आन पब्लिकेशन एथिक्स (कोप) कार्यशाला में भाग लिया।

15. जे.डी. शर्मा ने 13 नवम्बर, 2002 को फ्रेंकलिन विल्किंस बिल्डिंग 150 स्टेमफोर्ड स्ट्रीट, किंग्स कॉलेज लंदन में आयोजित 'क्यू किंग्स स्क्वायर : फाइटोकेमिकल ग्रुप' बैठक में भाग लिया।

16. जे.डी. शर्मा ने 9 से 11 दिसम्बर, 2002 तक 'लंदन स्कूल आफ ट्रापिकल हाइजीन ऐंड मेडिसिन, लंदन में आयोजित 'द बिग स्मॉक : फिफ्टी इयर्स आफ्टर 1952' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

17. जे.डी. शर्मा ने 11 से 12 दिसम्बर, 2002 तक लंदन स्कूल आफ हाइजीन ट्रापिकल मेडिसिन, लंदन में आयोजित ई यू एयरनेट प्रथम वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

18 वी. सुब्रामणियन ने सितम्बर 2002 में केन्या, नैरोबी में आयोजित 'हैडवाटर्स' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा सत्र की अध्यक्षता की।

19. वी. सुब्रामणियन ने जुलाई 2002 में बैंकाक, थाइलैण्ड में आयोजित 'एनवायरनमेंट' विषयक ए आई टी बैठक में भाग लिया।

20. वी. सुब्रामणियन ने उप्पासला, स्वीडन में जून 2002 में उप्पासला विश्वविद्यालय में जनवरी, 2002 से 5 वर्ष के लिए चल रहे शिक्षण और शोध संबंधी सहयोगात्मक कार्यक्रम में पाल्मे फेलो के रूप में भाग लिया।

21. वी. सुब्रामणियन ने दिसम्बर, 2002 में कोलम्बो, श्रीलंका में श्रीलंकन एकेडमी आफ साइंस की 'बायोजियोकेमेस्ट्री' ए पी एन बैठक में भाग लिया।

22 के.जी. सक्सेना ने 26 से 31 अगस्त, 2002 तक नीदरलैण्ड में आयोजित 'कंजरवेशन ऐंड सस्टेनेबल मैनेजमेंट आफ बिलोग्राउंड बायोडाइवर्सिटी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. ए.के. भट्टाचार्य ने 29 से 30 अगस्त, 2002 तक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में इंटरनेशनल डिवलपमेंट सेंटर फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'इम्पैक्ट आफ एनवायरनमेंटल पाल्यूशन आन हैल्थ : प्राब्लम्स ऐंड साल्युशंस' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

2. ए.के भट्टाचार्य ने 16 से 18 दिसम्बर, 2002 तक अशोका होटल, नई दिल्ली में फर्टिलाइजर एसोसिएशन आफ इंडिया द्वारा आयोजित 'फर्टिलाइजर ऐंड एग्रीकल्चर – मीटिंग द चैलेंजिज' विषयक एफ ए आई संगोष्ठी – 2002 में भाग लिया।

3. ए.के भट्टाचार्य ने 31 मार्च से 2 अप्रैल, 2003 तक पर्यावरण विज्ञान संस्थान/ज.ने.वि. में ज.ने.वि., वि.अ.आ., टी.आर.एस., डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. इंटरनेशनल, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'फ्रेश वाटर रिलेटिड इश्यूज' विषयक

राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और 'नेशनल रिवर लिंकिंग प्लान' चर्चा की और 'वाटर क्वालिटी मैनेजमेंट, पाल्यूशन ऐंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. सुधा भट्टाचार्य ने 5–6 जुलाई, 2002 तक इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौर में आयोजित भारतीय विज्ञान अकादमी की 13वीं मध्य वर्षीय बैठक में भाग लिया और रिट्रोट्रांसपोशंस इन हिस्टोलिटिका : पेरासाइटिक डी.एन.ए. इन ए पेरासाइट विषयक चर्चा की।

5. सुधा भट्टाचार्य ने 22–23 अक्टूबर, 2002 को ज.ने.वि., नई दिल्ली में आयोजित 'ट्रांसक्रिप्शन एसेम्बली' की छठी संगोष्ठी में भाग लिया।

6. बी. गोपाल ने 3 से 5 मई, 2002 तक नैनीताल में आयोजित 'इकोनामिक वैल्युएशन आफ लैक नैनीताल' विषयक आर ए कार्यशाला में भाग लिया।

7. बी. गोपाल ने 3 से 4 अक्टूबर, 2002 तक नई दिल्ली में आयोजित 'प्रोटेक्शन आफ अर्बन वेटलैण्ड्स' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

8. बी. गोपाल ने 29 से 31 जनवरी, 2003 तक प्राणि–विज्ञान विभाग, नागार्जुन विश्वविद्यालय, नागार्जुन नगर (आ.प्र.) में आयोजित 'रिसेंट ट्रेंड्स इन एक्वाटिक बायोलॉजी' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा मुख्य व्याख्यान दिया।

9. बी. गोपाल ने 13 से 15 फरवरी, 2003 तक नई दिल्ली में केन्द्रीय सिंचाई और ऊर्जा मंडल द्वारा आयोजित 'वाटर क्वालिटी मैनेजमेंट' विषयक द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

10. बी. गोपाल ने 12–13 मार्च 2003 को नई दिल्ली में भारतीय जल संसाधन सोसाइटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'वाटर क्वालिटी ऐंड वेटलैण्ड्स : सोसियो–इकोनामिक ऐंड इकोलॉजीकल इम्पोर्टेंस' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

11. कस्तूरी दत्ता ने 22–23 अक्टूबर, 2002 को जी.वि.सं./आ.चि.वि.के./ज.ने.वि. में आयोजित 'ट्रांसक्रिप्शनल एसेम्बली' विषयक छठी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'ट्रांसक्रिप्शनल एक्टिवेशन आन एच ए बी पी–I प्रमोटर बाइ एस पी–I ऐंड सी ए एम पी' शीर्षक व्याखन दिया।

12. कस्तूरी दत्ता ने 7 से 12 जनवरी, 2003 तक बंगलौर में 'असाइनिंग बायोलॉजीकल फंक्शन टु हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन–I (एच ए बी पी I), ए मल्टिलिजेंड प्रोटीन लोकेटिड आन ह्यूमन क्रोमोसाम 17' विषयक व्याख्यान दिया।

13. कस्तूरी दत्ता ने पर्यावरण विज्ञान अनुभाग, इंडियन एसोसिएशन आफ साइंस कांग्रेस, बंगलौर में 'एनवायरनमेंटल स्टिम्युली ऐंड सेल–सिगनेलिंग : ए पर्सपेक्टिव आफ द ह्यूमन जीन इनकोडिंग हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन–I' विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

14. ए.एल. रामनाथन ने 31 मार्च से 2 अप्रैल, 2003 तक एनविस सेंटर – ई एम सी बी नोड, ज.ने.वि., डब्ल्यू.डब्ल्यू. एफ., वि.अ.आ. और ज.ने.वि. द्वारा आयोजित 'फ्रेशवाटर रिलेटिड इश्यूज विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला और 'नेशनल रिवर वाटर लिंकिंग प्लान' शीर्षक परिचर्चा में पेनल सदस्य के रूप में भाग लिया तथा आलेख प्रस्तुत किया।

15. ए.एल. रामनाथन ने 25 मार्च 2003 को डी.सी.ई., नई दिल्ली में आयोजित 'इनहासिंग अवेयरनेस आफ इंटलेक्चुअल प्रोपर्टी इन टेक्नीकल इंस्टीट्यूशंस, विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

16. ए.एल. रामनाथन ने 2002 में प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद में आयोजित 'मैनेजमेंट आफ रिसर्च – मिनिस्ट्री आफ एनवायरनमेंट ऐंड फारेस्ट' विषयक कार्यक्रम में भाग लिया।

17. ए.एल. रामनाथन ने 14 से 19 नवम्बर, 2002 तक फ्रेंच इंस्टीट्यूट आफ पांडिचेरी में आयोजित 'मैंग्रोव रिसाइलेंस' विषयक भारत–बेल्जियम अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

18. ए.एल. रामनाथन ने अप्रैल, 2002 में नैनीताल में आयोजित 'क्वार्टनरी क्लाइमेट चेंज' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

19. जे.डी. शर्मा ने 29–30 अगस्त, 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित 'इम्पैक्ट आफ एनवायरनमेंटल पाल्यूशन आन हैल्थ प्राब्लम्स ऐंड साल्यूशंस' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

20. जे.डी. शर्मा ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान में आयोजित 'हैल्थ फोर आल – इन द न्यू मिलेनियम' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

21. सी.के. वार्ष्णेय ने 28 जनवरी, 2003 को नई दिल्ली में द एसोसिएटिड चैम्बर आफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित 'क्लाइमेट चेंज ऐंड क्लीन डिवलपमेंट मैकेनिज्म' विषयक इंडिया इनर्जी बैठक में भाग लिया।

22. सी.के. वार्ष्णेय ने 10–11 दिसम्बर, 2002 को नई दिल्ली में शहरी परिवहन संस्थान द्वारा आयोजित 'इंडियाज अर्बन ट्रांसपोर्ट – विजन 2050' विषयक वार्षिक कांग्रेस में भाग लिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

1. कस्तूरी दत्ता ने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी में प्रो. एम.आर.एन. प्रसाद – व्याख्यान पुरस्कार के लिए 'हाइएलुरोनान बाइंडिंग प्रोटीन (एच ए बी पी ।) : ए टूल इन अंडरस्टेंडिंग स्परमेटोजेनेसिस ऐंड मेल इन फर्टीलिटी' विषय पर व्याख्यान दिया।

2. के.जी. सक्सेना ने 21 से 28 नवम्बर, 2002 तक नार्थ–ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग में यूनेस्को द्वारा प्रायोजित 'मेथोडोलॉजीज फार इंटीग्रेटिड नेचुरल रिसार्स मैनेजमेंट' विषयक क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

3. जे.डी. शर्मा ने 13 नवम्बर, 2002 को फ्रेंकलिन विलकिंस बिल्डिंग, 150 स्टेमफोर्ड स्ट्रीट, किंग्स कालेज लंदन में 'रोल आफ मेडिसिनल इकोलॉजी इन एनवायरनमेंटल मेडिसिन' विषयक व्याख्यान दिया।

4. जे.डी. शर्मा ने 27 फरवरी से 4 मार्च, 2003 तक सेंटर फार आक्यूपेशनल ऐंड एनवायरनमेंटल हैल्थ में आयोजित आक्यूपेशनल हैल्थ सेफ्टी विषयक कार्यशाला में (1) इरगोनोमिक्स; (2) मानिटरिंग फार सेफ्टी इन द वर्क प्लेस, लोकनायक हॉस्पिटल, दिल्ली विषयक व्याख्यान दिए।

5. जे.डी. शर्मा ने एकेडमिक स्टाफ कालेज, नई दिल्ली में 12 मार्च, 2003 को (1) एयर पाल्यूशन ऐंड हैल्थ और 18 मार्च 2003 को (2) 'इवाल्यूशन ऐंड लाइफ' विषयक व्याख्यान दिए।

6. वी. सुब्रामणियन ने 12 से 13 मार्च, 2003 को जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता में 'ग्लोबल वार्मिंग ऐंड वाटर रिसॉर्सिज' विषयक व्याख्यान दिया।

7. वी. सुब्रामणियन ने 15 नवम्बर, 2002 को टाटा प्रबंधन केन्द्र, पुणे में 'कावेरी वाटर डिसप्यूट' विषयक विशेष व्याख्यान दिया।

8. वी. सुब्रामणियन ने अक्टूबर, 2002 में जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता में 'वाटर रिसार्सिज : क्वांटिटी ऐंड क्वालिटी' विषयक सार्वजनिक व्याख्यान दिया।

9. सी.के. वार्ष्णेय ने 9 से 11 फरवरी, 2003 तक गांधीनगर, गुजरात में आयोजित 'वेटलैण्ड्स' विषयक क्षेत्रीय कार्यशाला में 'वेल्यूज आफ वेटलैण्ड्स' विषयक व्याख्यान दिया।

10 सी.के. वार्ष्णेय ने मार्च, 2003 में आई.टी.आर.सी. लखनऊ में विश्व बैंक की सहायता से आयोजित 'पाल्यूशन' विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'प्लांट इंडीकेटर्स ऐंड बायोमॉनिटरिंग' विषयक व्याख्यान दिया।

11. सी.के. वार्ष्णेय ने मार्च 2003 में गोलमेज सम्मेलन में 'वाटर क्वालिटी ऐंड वेटलैण्ड्स : सोरियो इकोनामिक ऐंड इकोलॉजीकल इंपोर्टेंस' विषयक मुख्य व्याख्यान दिया।

संस्थान में आए अतिथि

1. डॉ. विसेंट सी. हसकाल, अध्यक्ष, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, क्लीवलैण्ड क्लिनिक, ओहियो (यू एस ए), 8 से 11 जनवरी, 2003 के दौरान संस्थान में आए।

2. डॉ. राबर्ट स्टर्न, डिपार्टमेंट आफ पैथोलॉजी, यूनिवर्सिटी आफ केलिफोर्निया, सेन फ्रांसिस्को (यू एस ए), 9 जनवरी 2003 को संस्थान में आए।

3. डॉ. डब्ल्यू.आर. इरडेलन, सहायक महानिदेशक, प्राकृतिक विज्ञान, यूनेस्को, 21 अक्टूबर, 2002 को संस्थान में आए।

संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठियां / सम्मेलन

1. जे. बिहारी ने 4 दिसम्बर, 2002 को माइक्रोवेव एप्लिकेशन सोसाइटी आफ इंडिया द्वारा प्रायोजित 'माइक्रोवेव एप्लिकेशंस' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।

2. पी.एस. खिलारे ने 3 से 7 मार्च 2003 तक ई एम सी बी टी ए परियोजना के तहत विश्व बैंक द्वारा समर्थित केन्द्र/राज्य नियन्त्रण बोर्डों के 25 अधिकारियों हेतु 'एयर क्वालिटी लेबोरेट्री मैनेजमेंट इनक्लुडिंग क्वालिटी एश्युरेंस' विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

3. वी. राजमणि ने 18 जनवरी, 2003 को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग/वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोजित 'एस एस एस स्टडीज' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

4. ए.एल. रामनाथन ने वर्ष 2002 में पर्यावरण और वन मंत्रालय और आर.जी.एन.एन.डी.डब्ल्यू.एम., भारत सरकार द्वारा प्रायोजित 'वाटर क्वालिटी' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।

5. वी. सुब्रामणियन ने 31 मार्च से 2 अप्रैल, 2003 तक 'फ्रेश वाटर रिलेटिड इश्यूज' विषयक कार्यशाला तथा 'नेशनल रिवर लिंकिंग प्लांस' शीर्षक गोलमेज परिचर्चा आयोजित की।

6. वी. सुब्रामणियन ने 15 से 17 दिसम्बर, 2002 तक जेएनयू में 'सॉइल मोइश्चर' विषयक सह–प्रायोजित कार्यशाला आयोजित की।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान/अध्येतावृतियां

1. कस्तूरी दत्ता, फेलो, थर्ड वर्ल्ड एकेडमी आफ साइंसेज, ट्रीस्टे, इटली
2. कस्तूरी दत्ता को इंसा द्वारा वर्ष 2003 का डा. दर्शक रंगनाथन स्मारक व्याख्यान पुरस्कार दिया गया।
3. कस्तूरी दत्ता, अध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान अनुभाग, 90वां भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ, 2003

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1. ए.के. अत्री, प्रतिभा खोज अध्येतावृत्ति के लिए के वी वाई पी (एच आर डी) के साक्षात्कार के लिए गठित पैनल में विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया; गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में गठित परीक्षकों के पैनल में विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त हुए; सदस्य, डी वी टी आर.सी.जे.एम. समिति; सदस्य, डाउन टु अर्थ की वार्षिक समीक्षा के लिए गठित विशेषज्ञ पेनल; सदस्य, ग्रीन लीफ पुरस्कार के लिए गठित ज्यूरी।

2. डी.के. बैनर्जी, तीन अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के संपादकीय मण्डल के सदस्य, ये पत्रिकाएं हैं – केमिकल स्पेसिएशन ऐंड बायोएवेलेबिलिटी (यू.के.), इनडोर ऐंड बिल्ट एनवायरनमेंट (स्विटजरलैण्ड) और एनवायरनमेंटल प्रेक्टिस (यू.एस.ए.); सदस्य, विद्या परिषद, टेरी उच्च अध्ययन संस्थान; सदस्य, अध्ययन मण्डल, एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ौदा और इग्नू; सदस्य, सी.पी.सी.बी., सी.एस.ई. आदि में गठित चयन समिति/सलाहकार समिति।

3. ए.के. भट्टाचार्य, सदस्य, अध्ययन मण्डल, डिपार्टमेंट आफ एनवायरनमेंट प्लानिंग, स्कूल आफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, आई पी स्टेट, नई दिल्ली (2 वर्ष की अवधि के लिए, 2.12, 2004 तक)

4. कस्तूरी दत्ता, अध्यक्ष, कार्य बल, मानव संसाधन विकास, जै.प्रौ.वि. (2000–2003); सदस्य, जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान और उन्नयन समिति, जै.प्रौ.वि.; सदस्य, शोध परिषद सलाहकार समिति, साल्ट ऐंड मेरिन रिसर्च इंस्टीट्यूट, सी एस आई आर, भावनगर।

5. बी. गोपाल, भारतीय राष्ट्रीय प्रतिनिधि, एस.आई.एल., अन्तर्राष्ट्रीय समिति; सदस्य, वेटलैण्ड कार्य समूह, इंटकोल 1980; अध्यक्ष, विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा सोसाइटी, भारत, 1982; महासचिव, राष्ट्रीय पारिस्थितिकी संस्थान (भारत) 1978; सदस्य, सोसाइटी आफ वेटलैण्ड साइंटिस्ट्स के अन्तर्राष्ट्रीय फेलो पुरस्कार के लिए गठित चयन समिति, 2003–05; सदस्य, स्थायी समिति, कंजरवेशन ऐंड मैनेजमेंट आफ हरिके, कांजली ऐंड रोपर वेटलैण्ड्स 2000–2003, 2003–2006 (पंजाब के राज्यपाल द्वारा गठित समिति);सदस्य, पंच वार्षिक समीक्षा दल, केन्द्रीय अन्तःस्थलीय मछल उद्योग अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा गठित समिति); सदस्य, विद्या परिषद, टेरी उच्च अध्ययन संस्थान (सम विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, 2003; सदस्य, शोध सलाहकार समिति, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार, 2003–2005; सदस्य, समिति, राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना, पर्यावरण और वन मंत्रालय, 2003–05; सदस्य, उप समिति, नदी नियमन जोन, राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार, 2002; सदस्य, अध्ययन मण्डल, पर्यावरण अध्ययन संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2001–04

6. वी. सुब्रामणियन, कार्यदल, वे आफ बंगाल रिजन फार ग्लोबल इंटरनेशनल वाटर एसेस्मेंट (जीवा); सदस्य, तकनीकी समिति, इंडियन स्टेंडर्ड इंस्टीट्यूशन फार स्टेंडरडाइजिंग वेस्ट वाटर ऐंड टॉक्सिक कंपोनेंट; सदस्य, अनुसंधान समिति (ई.आई.ए.), केन्द्रीय जल आयोग।

7. सी.के. वार्ष्णेय, सदस्य, कोर्स प्रारूप समिति, 'एनवायरनमेंट' पर एप्रिसिएशन कोर्स, इग्नू, नई दिल्ली; सदस्य, मॉनिटरिंग कमिटी, सेंटर फार माइनिंग एनवायरनमेंट, इंडियन स्कूल आफ माइन्स, धनबाद, पर्यावरण और वन मंत्रालय, नई दिल्ली; सदस्य, नेशनल वेटलैण्ड कमिटी, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली; अध्यक्ष, शोध उप समिति, वेटलैण्ड कमिटी, पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

छात्रों की उपलब्धियां

1. डॉ. अनुराधा वर्मा को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

कोई अन्य सूचना

1. बी. गोपाल, संपादक, इंटरनेशनल जर्नल आफ इकोलॉजी ऐंड एनवायरनमेंटल साइंसेज (1974–)
2. बी. गोपाल, सदस्य, संपादकीय मण्डल, हाइड्रोबायोलॉजीया (क्लुवर एकेडमिक पब्लिशर्स, नीदरलैण्ड्स) (1988–) वेटलैण्ड्स इकोलॉजी ऐंड मैनेजमेंट (एस.पी.बी. एकेडमिक, नीदरलैण्ड्स) (1990–), रिवर रिसर्च ऐंड एप्लिकेशन (रिवर्स : रिसर्च ऐंड मैनेजमेंट द्वारा पूर्व में नियमन) (जॉन विले, यू.के.) (1991–), द साइंटिफिक जर्नल – फ्रेशवाटर सिस्टम्स डोमेन (इंफोट्रीव. कॉम) (2000–) – इलेक्ट्रोनिक जर्नल
3. बी. गोपाल, संपादक, राष्ट्रीय परिस्थितिकी संस्थान का बुलेटिन
4. सी.के. वार्ष्णेय को रैमसार ब्यूरो, ग्लांड, स्विटजरलैण्ड हेतु 'एशिया के लिए क्षेत्रीय समन्वयक' के पद हेतु उम्मीदवार के साक्षात्कार के लिए गठित पैनल में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा नामित किया गया।

4. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान

वर्ष 1955 में स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान विश्वविद्यालय का सबसे पुराना संस्थान है। पिछले 46 वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और क्षेत्रीय अध्ययन के शिक्षण एवं शोध में संलग्न इस संस्थान ने अपने को पूरे देश में एक अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित किया है।

संस्थान ने भारत में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन को एक शैक्षिक विषय के रूप में विकसित करने और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के ज्ञान और समझ को एक अन्तर–विषयक परिप्रेक्ष्य में उन्नत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह संस्थान पूरे देश में "क्षेत्रीय अध्ययन' को प्रोत्साहित करने और विश्व के विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों के बारे में विशेष जानकारी विकसित करने वाला भी पहला संस्थान है। संस्थान ने उच्च अध्ययन केंद्र के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

काफी लम्बे समय तक संस्थान ने केवल शोध पर ही बल दिया और पी–एच.डी. उपाधि प्रदान की। लेकिन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का हिस्सा बनने के बाद संस्थान ने वर्ष 1971–72 में एम.फिल. पाठ्यक्रम शुरू किया। इसके बाद वर्ष 1973–74 में 2 वर्षीय एम.ए. (राजनीति : अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन) पाठ्यक्रम शुरू हुआ। इसके काफी समय के बाद वर्ष 1995–96 में राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि एवं अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र के अर्थशास्त्र प्रभाग द्वारा अर्थशास्त्र में (विश्व अर्थशास्त्र के विशेषीकरण के साथ) एक नया और अद्वितीय एम.ए. पाठ्यक्रम शुरू किया गया।

संस्थान के कई एम.फिल. / पी–एच.डी. छात्रों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अध्येतावृत्ति के लिए आयोजित लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके अतिरिक्त, लगभग सभी राज्य–सरकारों ने एक–एक अध्येतावृत्ति (कुछ मामलों में एक से अधिक) सम्बन्धित राज्यों के 'निवासी' होने के नियमों को पूरा करने वाले छात्रों को प्रदान करने के लिए शुरू की है। जनवरी, 2002 के अनुसार संस्थान ने 527 शोधार्थियों को पी–एच.डी. डिग्री और 1734 को एम.फिल. डिग्री प्रदान की है।

हाल ही के वर्षों में संस्थान में कई चेयरों की स्थापना हुई है। ये चेयर हैं – अप्पादुरई चेयर, नेलसन मंडेला चेयर, भारतीय स्टेट बैंक चेयर, पर्यावरणीय विधि और अन्तरिक्ष विधि में चेयर। संस्थान के शिक्षकों के अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के क्षेत्र में ज्ञान विकसित करने और इसका प्रसार करने में महत्वपूर्ण योगदान केवल शिक्षण एवं शोध मार्गदर्शन के माध्यम से ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की उच्च स्तरीय पुस्तकों एवं शोध आलेखों के प्रकाशन द्वारा भी किया है।

संस्थान प्रत्येक वर्ष समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से जुड़े विषयों पर एक व्याख्यान माला का भी आयोजन करता है। फरवरी, 1989 में विद्या परिषद् द्वारा लिए गए एक निर्णय के अनुसार यह व्याख्यान माला 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर हृदयनाथ कुंजुरू स्मारक (विस्तार) व्याख्यान माला के रूप में जानी जाती है। एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई द्वारा वित्तपोषित वृत्तिदान के तहत महान कवयित्री और देशभक्त सरोजनी नायडु की स्मृति में एक व्याख्यान माला आयोजित की जाती है, इसमें प्रतिष्ठित विद्वान या राजनेता को स्मारक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

संस्थान ने 'तुलनात्मक क्षेत्रीय अध्ययन' विषयक नया पाठ्यक्रम शुरू करने का निर्णय लिया है। इस पाठ्यक्रम में एक समयबद्ध परियोजना के माध्यम से विशेष मामले / क्षेत्र और समस्याओं पर गहन तुलनात्मक शोध पर बल दिया जाएगा। इस शोध कार्य को विकसित करने का उद्देश्य भिन्न–2 विशेषीकृत क्षेत्रों के बीच सेतु बनाना है।

संस्थान 'इंटरनेशनल स्टडीज' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। जुलाई 1959 से प्रकाशित हो रही इस पत्रिका ने एक प्रमुख भारतीय शैक्षणिक पत्रिका के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तथा क्षेत्रीय अध्ययनों से सम्बन्धित समसामयिक समस्याओं तथा मामलों पर लिखे मौलिक शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं।

एक सन्दर्भ पत्रिका होने के नाते इसमें केवल संस्थान तथा अन्य भारतीय विश्वविद्यालयों / शोध संस्थानों के शिक्षकों के शोध आलेख ही नहीं अपितु विश्वभर के विद्वानों के आलेख भी प्रकाशित होते हैं।

संस्थान निम्नलिखित एम.फिल. / पी–एच.डी. अध्ययन पाठ्यक्रम चलाता है :

i) अमरीकी अध्ययन
ii) लेटिन अमरीकी अध्ययन
iii) पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन

iv) कनाडियन अध्ययन
v) राजनयिक अध्ययन
vi) अन्तर्राष्ट्रीय विधि अध्ययन
vii) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और विकास
viii) चीनी अध्ययन
ix) जापानी और कोरियाई अध्ययन
x) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति
xi) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
xii) निरस्त्रीकरण अध्ययन
xiii) राजनीतिक भूगोल
xiv) रूसी और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन
xv) दक्षिण एशियाई अध्ययन
xvi) दक्षिण-पूर्व एशियाई और दक्षिण-पश्चिम महासागरीय अध्ययन
xvii) मध्य एशियाई अध्ययन
xviii) पश्चिम एशियाई और उत्तर अफ्रीकी अध्ययन
xix) सब सहारीय अफ्रीकी अध्ययन

एम.ए. राजनीति (अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन)

संस्थान में एम.ए. राजनीति शास्त्र (अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन) पाठ्यक्रम शैक्षिक वर्ष 1973-74 में शुरू किया गया था। इस पाठ्यक्रम को शुरू करने की मांग काफी समय से की जा रही थी। इस पाठ्यक्रम में राजनीतिशास्त्र के मुख्य विषयों के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन से संबंधित मुख्य कोर्सों के साथ विषयपरक तथा क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित विभिन्न कोर्स भी शामिल हैं। यह विश्वविद्यालय का सर्वाधिक लोकप्रिय तथा विस्तृत स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है। इसमें 69 सीटें उपलब्ध हैं।

एम.ए. अर्थशास्त्र (विश्व अर्थव्यवस्था में विशेषिकरण के साथ)

यह पाठ्यक्रम राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि एवं अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र के अर्थशास्त्र प्रभाग द्वारा चलाया जा रहा है। इस अध्ययन पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि एवं अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र में दिया गया है।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

लेटिन अमरीकी अध्ययन कार्यक्रम के थ्रस्ट एरिया में शामिल क्षेत्र हैं – संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम सहित राजनीतिक एवं आर्थिक पुनर्संरचना की प्रक्रिया, विदेशी ऋण – इनका प्रबन्ध एवं परिणाम; नाफ्ता तथा मरकोसर पर विशेष बल देते हुए आर्थिक क्षेत्रीयवाद; व्यापार एवं राजनय के क्षेत्रों में इण्डो–लेटिन अमरीकी संबंध, और डब्ल्यू.टी.ओ. के लिए महत्वपूर्ण बहुपक्षीय सहयोग; कैरेबिया में भारतीय प्रसार – धार्मिक–सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक गत्यात्मकता; लेटिन अमरीका में निर्वाचन – लोकतंत्रीय हाल के चुनाव; सिविल समाज और 'नये' सामाजिक आन्दोलन; स्वदेशी समुदाय; क्षेत्र में शीत युद्धोत्तर सुरक्षा का प्रत्यक्ष ज्ञान तथा सिद्धान्त; लेटिन अमरीका तथा विकसित अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक स्थिति–निर्भरता और परस्पर–निर्भरता के मामले।

अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान में लेटिन अमरीकी अध्ययन कार्यक्रम, अन्य क्षेत्रीय अध्ययन कार्यक्रमों की तुलना में काफी साधारण हैं। यद्यपि, यह अध्ययन भारत और अन्य देशों में हो रहे लेटिन अमरीकी अध्ययन की गुणवत्ता के अनुरूप ही हैं।

केंद्र के संकाय सदस्यों में एक प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान की पृष्ठभूमि के साथ); एक सह–प्रोफेसर (अर्थशास्त्र) और लेटिन अमरीका के इतिहास और पुर्तगाली भाषा के शिक्षण हेतु ब्राजील सरकार द्वारा वित्तपोषित एक ब्राजीली अध्ययन चेयर।

लेटिन अमरीकी और कैरेबियन अध्ययन के शिक्षण एवं शोध के प्रसार हेतु इन विषयों पर पर्याप्त मात्रा में पुस्तकें / पत्रिकाएं / पाठ्यसामग्री उपलब्ध होना जरूरी है। लेटिन अमरीकी देशों के आर्थिक उदारीकरण के अनुभव और विदेश नीति का आचरण निस्सन्देह भारत की विद्वता एवं नीति निर्धारण स्तरों के साथ रुचिकर एवं प्रासंगिक है।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि एवं अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. वी.के.एच. जाम्भोलकर, भारत का राजनयिक इतिहास, भारतीय राजनय और विदेश नीति।
2. वी.के.एच. जाम्भोलकर, प्रकाशन के उद्देश्य से अभिलेखीय सामग्री का अध्ययन कर रहे हैं।
3. वी.के.एच. जाम्भोलकर, समसामयिक कूटनीति और विकासशील दुनिया – सुरक्षा, आसूचना और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति प्रभाग में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त एवं व्यवहार के विभिन्न पक्षों पर शिक्षण एवं शोध कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अर्न्तद्वन्द्व और सहयोग की समस्याओं से सम्बद्ध आनुभविक आदर्शक, सैद्धान्तिक तथा भविष्यवादी जैसे सभी तरह के अध्ययन किए जाते हैं। हाल के वर्षों में पर्यावरण मानव अधिकार, संजातीयता और संस्कृति, लोकतंत्र तथा सिविल समाज जैसे मामलों – क्षेत्रों पर अधिक बल दिया जा रहा है। बौद्धिक अध्ययन का एक अन्य क्षेत्र है – भूमंडलीकरण का अध्ययन और इसका राज्य पर प्रभाव, विशेषकर विकासशील विश्व में। यद्यपि, राज्य–केंद्र शक्ति राजनीति के क्षेत्र में अध्ययन कार्य बंद नहीं हुआ है, अपितु प्रभाग ने विस्तृत रणनीति, विदेश नीति विश्लेषण तथा महाशक्ति–मध्यशक्ति सम्बन्धों जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण अध्ययन कार्य जारी है। भविष्य के लिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति प्रभाग ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थशास्त्र का मात्रात्मक विश्लेषण तथा आदर्शक/उत्तर–आधुनिक सिद्धान्त जैसे दो क्षेत्रों की पहचान की है जिन पर हो रहे शोध कार्य को भविष्य में और अधिक सुदृढ़ बनाया जायेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन प्रभाग, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, क्षेत्रीय एवं विश्वव्यापक संगठन और बहुपक्षीय निकायों में भारत की भूमिका की समस्याओं पर अध्ययन करना चाहता है। पिछले कुछ वर्षो से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और भूमंडलीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में शांति बनाए रखने तथा शान्ति स्थापित करने सम्बन्धी अभियान, लोकोपकारी हस्तक्षेप, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा विकास के अधिकार और शासन निर्माण जैसे मामलों पर सारभूत शोध कार्य हो चुका है। प्रभाग आगामी वर्षों में भूमंडलीय शासन से सम्बन्धित विभिन्न संगठनात्मक मामलों पर विशेष बल के साथ अध्ययन करने का प्रस्ताव करता है।

निरस्त्रीकरण अध्ययन प्रभाग ने निरस्त्रीकरण की समस्याओं पर विकासशील देशों के परिदृश्य को विकसित करने के लिए परम्परागत ढंग से प्रयास किया है। पश्चिमी देशों में प्रकाशित साहित्य में प्रस्तुत निरस्त्रीकरण और शस्त्र नियन्त्रण सम्बन्धी धारणाओं की विश्लेषणात्मक समीक्षा करना अनिवार्य हो गया है। शस्त्र नियन्त्रण और निरस्त्रीकरण के अतिरिक्त प्रभाग राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न मुद्दों के अध्ययन पर भी विशेष बल देता है। मतभेद समाधान, विश्वास बढ़ाने सम्बन्धी उपाय और सहयोगात्मक सुरक्षा जैसे शान्ति स्थापित करने तथा युद्ध रोकने के उभरते हुए नये दृष्टिकोणों के अध्ययन पर विशेष रूप से बल दिया जाता है। प्रभाग ने सेना के इतिहास और समाजशास्त्र तथा सिविल–सेना सम्बन्धों से सम्बन्धित प्रश्नों पर शोध करने के लिए भी प्रोत्साहित कर रहा है। हाल ही के वर्षों में समुद्री सुरक्षा के अध्ययन के भी प्रयास किए गए हैं। अगले कुछ वर्षों में शान्ति और मतभेद समाधान जैसे मामले अलग से एक अध्ययन शाखा के रूप में गहन शोध का विषय भी बन सकते हैं।

राजनीतिक भूगोलशास्त्र प्रभाग, समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के कालिक तथा देशिक पक्षों के अध्ययन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर भू–राजनीतिक और भू–समरनीति सम्बन्धी परिदृश्य उपलब्ध कराने का प्रयास करता है। भविष्य में राजनीतिक भूगोलशास्त्र के सिद्धान्तों पर शोध कार्य आरम्भ किया जा सकता है।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

लेटिन अमरीकी अध्ययन प्रभाग अन्य विश्वविद्यालयों और भारतीय उद्योग संघ जैसे विशेषीकृत संगठनों के साथ सहयोग कर रहा है।

वर्ष 2002 के दौरान केन्द्र के शिक्षकों ने सहयोगात्मक अध्ययन और शोध के लिए राजनीति विज्ञान विभाग, इग्नू के शिक्षकों के साथ चर्चा की। यह सहयोग 'स्टेट ऐंड सोसाइटी इन लेटिन अमरीका विषयक 'एम.ए. स्तर का कोर्स तैयार करने के लिए किया गया। जिसे इग्नू वर्ष, 2003 से शुरू करेगा। सम्पूर्ण कोर्स की अध्ययन सामग्री तैयार की जाएगी और इसका संपादन भी किया जाएगा।

लेटिन अमरीकी अध्ययन प्रभाग सहयोगात्मक प्रबन्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत गोवा विश्वविद्यालय के लेटिन अमरीकी अध्ययन केंद्र के साथ संयुक्त संगोष्ठियां आदि आयोजित करता है।

लेटिन अमरीकी अध्ययन कार्यक्रम के सहयोग से कुछ समय पूर्व लखनऊ विश्वविद्यालय के पश्चिमी इतिहास विभाग के अन्तर्गत एक लेटिन अमरीकी अध्ययन संस्थान की स्थापना हुई। लेटिन अमरीकी अध्ययन कार्यक्रम ने इस संस्थान को अपना सहयोग देना जारी रखा है।

ब्राजीली अध्ययन चेयर के प्रो. जोस लील फरेश सामाजिक विज्ञान संस्थान के ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र और अन्य केंद्रों/संस्थानों के शोध छात्रों को पुर्तगाली भाषा पढ़ा रहे हैं।

केन्द्र के शिक्षकों ने सहयोगात्मक अध्ययन और शोध के लिए राजनीति विज्ञान विभाग, इग्नू के शिक्षकों के साथ चर्चा की। यह सहयोग 'गवर्नमेंट ऐंड पॉलिटिक्स इन कनाडा' विषयक एम.ए. स्तर का कोर्स तैयार करने के लिए किया गया, जिसे इग्नू वर्ष 2003 से शुरू करेगा।

कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम, शास्त्री इण्डो–कनाडियन इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के साथ कनाडा पर पुस्तकालय स्रोत सामग्री तैयार करने में सहयोग कर रहा है। इसके अतिरिक्त, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम में शास्त्री इण्डो–कनाडियन इंस्टीट्यूट के विद्वानों के व्याख्यान भी आयोजित किए जाते हैं।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नये कोर्सों तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

समय–समय पर कोर्सों की समीक्षा की जाती है तथा शिक्षण एवं शोध में हुए नए विकासों को ध्यान में रखकर उन्हें अद्यतन बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र में हो रहे वर्तमान विकासों पर विस्तार व्याख्यानों तथा आंतरिक संगोष्ठियों के माध्यम से चर्चा की जाती है। लेटिन अमरीकी अध्ययन कार्यक्रम लगातार साप्ताहिक संगोष्ठियों का आयोजन करता है। इसमें छात्र और शिक्षक दोनों भाग लेते हैं। इन संगोष्ठियों में कभी–कभी शैक्षिक महत्व के विभिन्न तात्कालिक विषयों पर आलेख प्रस्तुत करने के लिए बाहर से विशेषज्ञों को भी आमंत्रित किया जाता है।

वर्ष 2002–2003 के दौरान लेटिन अमरीकी अध्ययन में 5 कोर्स शुरू किए गए। मानसून सत्र (जुलाई–दिसम्बर 2002) के दौरान "गवर्नमेंट ऐंड पालिटिक्स इन लेटिन अमरीका" शीर्षक एम.फिल. कोर्स और शीतकालीन सत्र (जनवरी–मई 2002) के दौरान "फारेन पालिसी आफ मैजर लेटिन अमरीकन कंट्रीज" शीर्षक एम.ए. (वैकल्पिक) कोर्स शुरू किए।

कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम में मानसून सत्र (जुलाई–दिसम्बर 2002) के दौरान "गवर्नमेंट ऐंड पालिटिक्स इन कनाडा" शीर्षक एम.फिल. कोर्स और शीतकालीन सत्र (जनवरी–मई 2003) के दौरान "पॉलिटिकल इकानोमी आफ कनाडा" शीर्षक कोर्स की शुरूआत की। इसके अतिरिक्त, शीतकालीन सत्र (जनवरी–मई 2003) के दौरान "कनाडा इन वर्ल्ड अफेयर्स" शीर्षक एम.ए. वैकल्पिक कोर्स के संचालन में सहयोग किया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. e9 lbd lu lk DI &I एम.ए. अर्थशास्त्र (विश्व अर्थव्यवस्था में विशेषीकरण के साथ) के प्रथम सत्र में अनिवार्य कोर्स।
2. कार्पोरेट फाइनेंस – एम.ए. अर्थशास्त्र (विश्व अर्थव्यवस्था में विशेषीकरण के साथ) के चौथे सत्र में वैकल्पिक कोर्स।
3. एम.ए. और एम.फिल. पाठ्यक्रमों के लिए 'राजनय' विषयक कोर्सों में संशोधन किया। संस्थान स्तर पर कार्यशालाएं आयोजित की गई तथा वैश्विक विकास के संदर्भ में एम.ए. कोर्सों में संशोधन किया। अध्ययन मण्डल के माध्यम से संस्थान के स्तर पर कोर्सों में संशोधन करने का प्रयास किया।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. अनवार आलम, 'पॉलिटिक्स ऐंड फारेन पॉलिसी आफ इजिप्ट' विषयक एम.फिल. कोर्स।
2. अनवार आलम ने संस्थान में 'रिविजन/अपग्रेडेशन आफ एक्जिस्टिंग/टॉट एम.फिल. कोर्स ऐंड रिसर्च मेथडोलॉजी' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया।

अ.जा./अ.ज.जा. और पढ़ाई में कमजोर अन्य छात्रों के लिए विशेष उपचारात्मक कोर्स

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. अब्दुल नफे, लेटिन अमरीकी अध्ययन के सभी शिक्षक अ.जा./अ.ज.जा. और पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए नियमानुसार विशेष शिक्षण का प्रबन्ध करते हैं। इस वर्ष भी लेटिन अमरीकी अध्ययन कार्यक्रम ने इस तरह के प्रयास जारी रखे। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान अ.जा./अ.ज.जा. और शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों ने अपने अपेक्षित शोध कार्य सफलतापूर्वक पूरे किए।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. केन्द्र शैक्षिक रूप से कमजोर छात्रों की अर्थशास्त्र विषय में ज्ञान और समझ में वृद्धि के लिए मार्गदर्शन कर रहा है, यद्यपि इन छात्रों को गणित का संतोषजनक ज्ञान है।
2. वी.के.एच. जाम्भोलकर, अ.जा./अ.ज.जा. और शैक्षिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए विशेष उपचारात्मक कोर्स हेतु संस्थान स्तर की समिति के सदस्य थे।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. जेएनयू के अ.जा./अ.ज.जा. के छात्रों के लिए अंग्रेजी की उपचारात्मक कक्षाएं आयोजित करने में छात्रों को सहायता दी गई।

प्रकाशन

पुस्तकें

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. बी. विवेकानन्दन, इंडिया लुक्स अहेड : जयप्रकाश नारायण मेमोरियल लेक्चर्स, 1990–2001, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2002.
2. राजेन्द्र के जैन, द यूरोपीयन यूनियन इन ए चेंजिंग वर्ल्ड, रेडिएंट प्रकाशक, नई दिल्ली, 2002.
3. राजेन्द्र के जैन, इण्डिया ऐंड द यूरोपीयन यूनियन इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी (सं.) रेडियंट प्रकाशक, नई दिल्ली, 2002.
4. आर.एल. चावला, एंड्रेस फ्रांस (सं.), फाइनेंसिंग फार डिवलपमेंट इन लेटिन अमरीका ऐंड केरेबियन, यू.एन. यूनिवर्सिटी प्रेस टोकियो, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन हेतु समीक्षा, नई दिल्ली, भाग–40, अंक–1, 2003.

राजनय अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. पुष्पेश पंत, 'देश और दुनिया, भारतीय विदेश नीति/विकास पर एक पुस्तक।
2. अलोकेश बरुआ, 'इंडियाज नार्थईस्ट : डिवलपमेंटल इश्यूज इन ए हिस्टॉरिकल पर्सपेक्टिव', विषयक पाण्डुलिपि (संपादित) प्रकाशन के लिए प्रस्तुत की।
3. भरत देशाई, 'इंस्टीट्यूशनलाइजिंग इंटरनेशनल एनवायरनमेंटल लॉ,, ट्रांसनेशनल पब्लिशर्स, न्यूयार्क

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा चिनॉय, "मिलिटेरिज्म ऐंड वुमन इन साउथ एशिया", काली,नई दिल्ली, 2003
2. गुलशन सचदेवा, ग्रोथ थ्रू पार्टनरशिप : डुइंग बिजनेस विद सेन्ट्रल ऐंड ईस्टर्न यूरोप, फिक्की और वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली, 2003
3. निर्मला जोशी (सं.), सेन्ट्रल एशिया द ग्रेट गेम रिप्लेयड : एन इंडियन पर्सपेक्टिव, न्यू सेंचुरी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2003
4. शमसउद्दीन और भास्वती सरकार (सं.), अफगानिस्तान ऐंड सेंट्रल एशिया इन द न्यू ग्रेट गेम, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2003
5. शशिकांत झा और भास्वती सरकार (सं.) "एमिड्स टरब्युलेन्स ऐंड होप : ट्रांजिशन इन रशियन ऐंड ईस्टर्न यूरोप", लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2003

दक्षिण, मध्य, दक्षिण पूर्व एशियाई और दक्षिण पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. d sokfjd ¶n vQxkfuLrku Ø½bfl l %b';w ,M il Z{kVd ½ akfnr%ubZ fnYyh] XXX,, पृ. 523,

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. ए.के. पाशा, इजिप्ट इन चेंजिंग वर्ल्ड, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2003
2. ए.के. पाशा, इराक : सैंक्शंस ऐंड वार्स, स्टर्लिंग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
3. ए.के. दुबे, इंडियन डायसपोरा : ग्लोबल आइडेंटिटी, संवादक कलिंग प्रकाशन, नई दिल्ली,2003

4. पी.आर. कुमारस्वामी, इजराइल, हाशेमाइट्स ऐंड द पैलेस्तिनियन : द फेतफुल ट्राएंगल, इफ्राइम कार्श के साथ सह–सम्पादित, फ्रेंक कास, लंदन 2003

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. बी. विवेकानन्दन, "एडिटर्स इंट्रोडक्टशन", बी. विवेकानन्दन, (सं.) इंडिया लुक्स अहेड : जयप्रकाश नारायण मेमोरियल लेक्चर्स 1990–2001, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2002.
2. क्रिस्टोफर एस. राज, 'यूरोपियन यूनियंस कामन फारेन ऐंड सिक्योरिटी पॉलिसी' आर.के. जैन (सं.) द यूरोपियन यूनियन इन ए चेंजिंग वर्ल्ड, रेडिएंट प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.
3. आर.के. जैन, "इंडियन फॉरेन पॉलिसी आन द थ्रेशॉल्ड आफ द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी', फ्रांसिस सिंडर (सं.), रीजनल ऐंड ग्लोबल रेग्यूलेशन आफ इंटरनेशनल ट्रेड, हर्ट पब्लिशिंग, पृ. 131–164, 2002.
4. आर.के. जैन, 'ईस्ट वार्ड एनेलार्जमेंट आफ द यूरोपियन यूनियन : ईस्ट यूरोपियन पर्सेप्शंस ऐंड पर्सपेक्टिव्स' शशिकांत झा और भास्वती सरकार, (सं.) एमिडस्ट टर्ब्यूलेंस ऐंड होप : ट्रांजिशन इन रशिया ऐंड ईस्टर्न यूरोप, लांसर्स, नई दिल्ली, पृ. 207–225, 2002.
5. आर.के. जैन, "ईस्टवार्ड एनलार्जमेंट आफ यूरोपियन यूनियन', आर.के. जैन (सं.), द यूरोपियन यूनियन इन ए चेंजिंग वर्ल्ड रेडिएंट प्रकाशक, नई दिल्ली, पृ. 46–80, 2002.
6. आर.के. जैन, 'द यूरोपियन यूनियन ऐंड सार्क', आर.के. जैन (सं.) इंडिया ऐंड द यूरोपियन यूनियन इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी (सं.) रेडिएंट प्रकाशक, नई दिल्ली, पृ. 70–90, 2002.
7. आर.के. जैन, 'एडिटर्स इंट्रोडक्शन', आर.के. जैन, (सं.), द यूरोपियन यूनियन इन ए चेंजिंग वर्ल्ड, रेडिएंट प्रकाशक, नई दिल्ली, 2002.
8. आर.के. जैन, –एडिटर्स इंट्रोडक्शन', आर.के. जैन, (सं.), इंडिया ऐंड द यूरोपियन यूनियन इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी, रेडिएंट प्रकाशक, नई दिल्ली, 2002.
9. चिंतामणि महापात्रा, "यू.एस. अप्रोच टु ईस्टर्न यूरोप', शशिकांत झा और भास्वती सरकार (सं.), एमिडस्ट टर्ब्यूलेंस ऐंड होप, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2002.
10. चिंतामणि महापात्रा, "सिक्युरिटी विदाउट न्युक्लियर वेपंस", हैंस लेवेंसडर (सं.) इंस्टिड आफ न्युक्लियर वेपन्स : न्यू व्यूज आन ह्युमन, ग्लोबल ऐंड नेशनल सिक्युरिटी, नाभिकीय युद्ध को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सकों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट (स्वीडन, स्वेडिश फिजिशियंस फार द प्रिवेंशन आफ न्यूक्लियर वार, एस.एल.एम.के., 2002.
11. चिंतामणि महापात्रा, 'ई.यू.–यू.एस. रिलेशंस प्रॉबलम्स, प्रॉस्पेक्टस ऐंड इंप्लिकेशंस' आर.के. जैन (सं.) रेडिएंट प्रकाशक, नई दिल्ली, 2002.
12. आर.एल. चावला, "द यूरोपियन यूनियन ऐंड लेटिन अमरीका', आर.के. जैन (सं.), द यूरोपियन यूनियन इन ए चेंजिंग वर्ल्ड, नई दिल्ली, 2002.
13. आर.एल. चावला, "इण्डो–जेपनीज ट्रेड ऐंड इनवेस्टमेंट : सम आस्पेक्ट्स", के.वी. केसवन (सं.) बिल्डिंग ए ग्लोबल पार्टनरशिप : फिफ्टी ईयर्स आफ इण्डो–जेपनीज रिलेशंस, अध्याय–14, नई दिल्ली, 2002.

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. बी.एस. चिमनी, 'पोस्ट कंफ्लिक्ट पीस बिल्डिंग ऐंड द रिटर्न आफ रिफ्यूजीज : कंसेप्ट्स, प्रकटिसेज ऐंड इंस्टीट्यूशंस' एडवर्ड न्यूमैन और जुआन वैन सेल्म (सं.), रिफ्यूजीज ऐंड फोर्सड डिसप्लेसमेंट : इंटरनेशनल सिक्योरिटी, ह्यूमन बलनरेबिलिटी, ऐंड द स्टेट, यूनाइटिड नेशंस यूनिवर्सिटी, टोकियो।
2. बी.एस. चिमनी, 'रिफ्यूजीस ऐंड पोस्ट कंफ्लिक्ट रिकंसट्रक्शन : ए क्रिटिकल पर्सपेक्टिव' एडवर्ड न्यूमैन और एलब्रेख्त शिनेबल (सं.) रिकवरिंग फ्राम सिविल कंफ्लिक्ट : रिकंसीलेशन, पीस ऐंड डिवलपमेंट, फ्रेंक कास, लंदन, 2002)

3. अलोकेश बरुआ, अलोकेश बरुआ द्वारा संपादित 'इंडियाज नार्थ ईस्ट' विषयक पुस्तक (आगामी) में भूमिका।

4. अलोकेश बरुआ, 'स्ट्रक्चरल चेंज, इकोनामिक ग्रोथ ऐंड रीजनल डिसपेयरिटी इन द नार्थ ईस्ट : रीजनल ऐंड नेशनल पर्सपेक्टिव' अलोकेश बरुआ द्वारा संपादित 'इंडियाज नार्थ ईस्ट' विषयक पुस्तक में अरिन्दम बंदोपाध्याय के साथ मिलकर आलेख।

5. अलोकेश बरुआ, 'द राइज ऐंड डिकलाइन आफ द अहोम डाइनेस्टिक रूल : ए सजेस्टिव इंटरप्रिटेशन', अलोकेश बरुआ (सं.) 'इंडियाज नार्थ ईस्ट' (आगामी)

6. अलोकेश बरुआ, 'हिस्ट्री, ट्रेड ऐंड डिवलपमेंट : ए क्रिटीक आफ द ट्रेड ओरिएंटिड स्ट्रेटिजी आफ इंडस्ट्रियलाइजेशन फार द नार्थ ईस्ट, अलोकेश बरुआ (सं.) 'इंडियाज नार्थ ईस्ट' (आगामी)

7. ए.एस. रे, 'पॉलिटिकल इकोनामी आफ रूरल हेल्थ केयर इन इंडिया : ए माइक्रो थीअरिटिक एप्रोच' एम. चटर्जी और पी. गंगोपाध्याय (सं.) ग्लोबलाइजेशन इन द एशिया पेसिफिक रिजन, एडवर्ड एल्गर, यू.के. आगामी, 2003.

8. ए.एस. रे, 'टेक्नोलॉजीकल डिवलपमेंट इन इंडियन इंडस्ट्री : चैलेंजिंग ऐंड आप्शंस आफ्टर द ईस्ट एशियन क्राइसिस', रिचर्ड हूले और जे.एच.यू. (सं.), द पोस्ट फाइनेंशियल क्राइसिस चैलेंजिज फार एशियन इंडस्ट्रियलाइजेशन, एल्सवियर साइंस (जे.ए.आई.) : एम्सटर्डम, 2002.

9. भरत एच. देसाई, 'स्ट्रेंथनिंग इंटरनेशनल इनवायरनमेंटल गवर्नेंस : सम रिफ्लेक्शंस' कॉनराड एडेन्योर स्टिफतुंग द्वारा आयोजित कार्यशाला के लिए योगदान किया (नई दिल्ली, अप्रैल, 2002) 'द वैल्यू आफ नेचर : इकोलॉजीकल पॉलिटिक्स इन इंडिया' विषयक पुस्तक में प्रकाशित हो रहा है सेज प्रकाशन, नई दिल्ली (आगामी)

पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र

1. वी. शेखर, जिन लियु, वन्स ओन शेडो : एन एथनोग्राफिक एकाउंट आफ पोस्ट–रिफॉर्म रूरल चाइना (बर्कले : यूनिवर्सिटी आफ केलिफोर्निया प्रेस, 2000), चाइना रिपोर्ट में प्रकाशित 38:3 (2002)

2. वी. शेखर, दया किशन थुस्सु, इंटरनेशनल कम्युनिकेशन : कंटीन्युइटी एन चेंज, एडवर्ड आरनोल्ड पब्लिशर्स, लंदन, 2000

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. सी.एस.आर. मूर्ति, 'यूनाइटिड नेशंस ऐंड अफगानिस्तान सिचुएशन : द तालिबान इरा', के वारिकू (सं.) द अफगानिस्तान क्राइसिस : इश्यूज ऐंड पर्सपेक्टिव्स भावना प्रकाशक, नई दिल्ली 2002

2. सी.एस.आर. मूर्ति, 'नेहरूवियन नेशनलिज्म ऐंड यूनाइटिड नेशंस' तौफिक ए. निजामी, (सं.) नेहरू'ज वर्ल्ड व्यू : इंटरनेशनलिज्म वर्सस नेशनलिज्म, थ्री वे प्रिंटर्स, नई दिल्ली 2002

3. वरुण साहनी, 'फ्रेकचर्ड, फ्राइटन्ड ऐंड, फ्रसट्रेटिड : साउथ एशिया आफ्टर 11 सितम्बर' दीपांकर बैनर्जी और जर्ट डब्ल्यू. कुएक (सं.), साउथ एशिया ऐंड द वार आन टेरोरिज्म : एनालाइजिंग द इंप्लिकेशंस आफ 11 सितम्बर, इंडिया रिसर्च प्रेस, नई दिल्ली, 2002

4. स्वर्ण सिंह, 'यूनाइटिड स्टेट्स' वार आन टेरोरिज्म ऐंड इट्स इंपैक्ट आन इंडिया चाइना टाइज' इंडिया इन ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी : एक्सटर्नल रिलेशंस, शंघाई इंस्टीट्यूट आफ इंटरनेशनल स्टडीज, शंघाई, 2002

5. स्वर्ण सिंह, 'चाइना ऐंड साउथ एशियन सिक्योरिटी कंपलेक्स' वी.टी. पाटिल और नलिनी कांत झा (सं.), इंडिया इन ए टर्ब्यूलेंट वर्ल्ड : पर्सपेक्टिव्स इन फोरेन ऐंड सिक्योरिटी पॉलिसीज, साउथ एशियन पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2003

6. स्वर्ण सिंह, 'चाइना'ज अफगान पॉलिसी : लिमिटेशंस ऐंड लिवरेज्स' के. वारिकू (सं.) अफगानिस्तान क्राइसिस : इश्यूज ऐंड पर्सपेक्टिव्स, भावना बुक्स, नई दिल्ली, 2003

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. अमिताभ सिंह, 'इंटरनेशनल मिडिएशन : द युगोस्लाव इक्सपिरियंस' शशिकांत झा और भास्वती सरकार (सं.), एमिडस्ट टर्ब्यूलेंस ऐंड होप : ट्रांजीशन इन रशियन ऐंड ईस्टर्न यूरोप, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2003

2. अजय कुमार पटनायक, 'स्ट्रेटिजिक गेम्स ऐंड साउथ एशिया सेंट्रल एशिया रिलेशंस', महावीर सिंह और विक्टर क्रासिलचितकोव (सं.), यूरेशियन विजन, अनामिका, नई दिल्ली, 2003

3. अजय कुमार पटनायक, "वुमन ऐंड जेंडर इश्यूज इन रशिया", एस.के. झा और भास्वती सरकार, (सं.) न्यू चैलेंजिस टु रशिया ऐंड ईस्ट यूरोप इन द पोस्ट कोल्डवार पीरियड, लांसर्स, नई दिल्ली, 2002

4. अनुराधा चिनॉय, "इण्डो–रशियन रिलेशंस, एन ओवरव्यू", अरुण मोहंती (सं.), इण्डिया–रशिया : डायलॉग आफ सिविलाइजेशन, इंटरनेशनल सेंटर फार सोसियो पॉलिटिकल स्टडीज, मास्को, 2003

5. अनुराधा चिनॉय, 'रशिया, इनर्जी सिक्यूरिटी ऐंड द अफगान स्टेक्स' श्रीधर, (सं.), अफगानिस्तान इन ट्रांजिशन, इंडियन काउंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली, 2003

6. अनुराधा चिनॉय, 'फोरइवर विक्टिम्स' सुसन हाथोर्न और ब्रोनविन विंटर (सं.), 11 सितम्बर, 2001, फेमिनिस्ट पर्सपेक्टिव्स, स्पिनीफेक्स प्रेस, मेलबोर्न, 2002

7. गुलशन सचदेवा, "मैक्रोइकोनामिक पॉलिसीज ऐंड अचीवमेंट्स इन सेंट्रल ऐंड ईस्टर्न यूरोप, 1990–2000", शशिकान्त झा और भास्वती सरकार, (सं.) एमिड्स टर्ब्युलेन्स ऐंड होप : ट्रांजिशन इन रशिया ऐंड ईस्टर्न यूरोप, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2002

8. गुलशन सचदेवा, "अंडर स्टेंडिंग सेंट्रल एशियन इकोनामिक मॉडल्स", निर्मला जोशी (सं.) सेंट्रल एशिया द ग्रेट गेम रिप्लेड : एन इंडियन पर्सपेक्टिव, न्यू सेंचुरी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003

9. गुलशन सचदेवा, "सेकेन्ड जेनरेशन रिफार्म्स इन द नार्थ ईस्ट", आर.पी. खारपुरी, (सं.) विजन फार द नार्थ–ईस्ट इन द न्यू मिलेनियम, नार्थ ईस्टर्न काउन्सिल, शिलांग, 2003

10. गुलशन सचदेवा, "इण्डो–रसियन इकोनामिक रिलेशंस", प्रसन्ना पटसानी, (सं.) इण्डो–रशियन स्ट्रेटिजिक पार्टनरशिप, संस्कृति, नई दिल्ली, 2002

11. निर्मला जोशी, "इण्डिया ऐंड रशिया : जिओपालिटिकल इंट्रेस्ट ऐंड सिक्युरिटी कंसर्नस", प्रसन्ना पटसानी (एम. पी.), इण्डो–रशियन स्ट्रेटिजिक पार्टनरशिप, नई दिल्ली, 2002

12. निर्मला जोशी, "रशियन जेपनीज रिलेशंस इन द टवेन्टीफर्स्ट सेंचुरी", के.वी. केसवन (सं.), बिल्डिंग ग्लोबल पार्टनरशिप फिफ्टी इयर्स आफ इण्डो–जेपनीज रिलेशंस, 2002.

13. निर्मला जोशी, 'रशियाज सिक्युरिटी कंसर्न्स ऐंड नाटो' शशिकांत झा और भास्वती सरकार (सं.), एमिडस्ट टर्ब्यूलेंस ऐंड होप : ट्रांजिशन इन रशियन ऐंड ईस्टर्न यूरोप, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2003.

14. संजय कुमार पाण्डेय, "रशिया'ज सुपर प्रेसीडेंटिएलिज्म : नीड आफ द टाइमआर थ्रेट टु डेमोक्रेसी ?", शशिकान्त झा और भास्वती सरकार (सं.), एमिड्स्ट टर्ब्युलेन्स ऐंड होप : ट्रांजिशन इन रशिया ऐंड ईस्टर्न यूरोप, लांसर बुक्स, नई दिल्ली, 2003

15. संजय कुमार पाण्डेय, "इण्डिया ऐंड सेंट्रल ऐंड वेस्ट एशिया", इग्नू, नई दिल्ली के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए 'इण्डिया ऐंड द वर्ड' विषयक कोर्स.

16. शशिकांत झा, 'आस्पेक्ट्स आफ डेमोक्रेटिक ट्रांसफार्मेशन इन ईस्ट–सेन्ट्रल यूरोप' शशिकांत झा और भास्वती सरकार (सं.) एमिडस्ट टर्ब्यूलेंस ऐंड होप : ट्रांजिशन इन रशियन ऐंड ईस्टर्न यूरोप, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली 2003.

17. शशिकांत झा, 'इंडिया'ज रिलेशंस विद न्यू रशिया फ्राम द सोवियत डिसइंटीग्रेशन टु स्ट्रेटिजीक पार्टनरशिप' नलिनी कांत झा (सं.), साउथ एशिया इन टवेंटी फर्स्ट सेंचुरी : इंडिया, हर नेबर्स ऐंड द ग्रेट पावर्स, साउथ एशियन पब्लिशर्स प्रा.लि., नई दिल्ली 2003.

दक्षिण, मध्य, दक्षिण पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. के. वारिकू ने 'द अफगानिस्तान क्राइसिस (के. वारिकू द्वारा संपादित) विषयक पुस्तक के लिए प्रस्तावना लिखी, नई दिल्ली, 2002.

2. के. वारिकू, शेडो आफ अफगानिस्तान ओवर काश्मीर इन द अफगानिस्तान क्राइसिस (के. वारिकू द्वारा संपादित) नई दिल्ली, 2002.

3. गंगनाथ झा, "आस्ट्रेलिया ऐंड साउथईस्ट एशिया", डी. गोपाल (सं.), आस्ट्रेलिया इन द इमर्जिंग ग्लोबल आर्डर, शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.

4. गंगनाथ झा, "इंडोनेसिया'ज पॉलिटिकल सिस्टम ऐंड कम्पलेक्सिटीज", सतीश चन्द्र और बालादास घोषाल (सं.), इंडोनेसिया : ए न्यू बिगनिंग, नई दिल्ली, 2002.

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र

1. ए.के. पाशा, 'साउथ इंडिया ऐंड द गल्फ : ट्रेड ऐंड डिप्लोमेसी ड्यूरिंग द लेट एटींथ सेंचुरी' एन.एन. वोहरा (सं.), हिस्ट्री, कलचर ऐंड सोसाइटी इन इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया आई.आई.सी., शिप्रा प्रकाशन,नई दिल्ली, 2002
2. ए.के. दुबे, 'इंडियन डायसपोरा इन अफ्रीका चेंजिंग पॉलिसीज आफ इंडिया' एस.डी. सिंह और महावीर सिंह (सं.), इंडियन एब्रोड ग्रीनविच मिलेनियम, नई दिल्ली, 2003
3. पी.सी जैन, 'कल्चर ऐंड इकोनामी इन एन 'इनसिपिएंट' डायसपोरा : इंडियंस इन द पर्सियन गल्फ रीजन' भीखू पारेख और एस. वर्टोवेक (सं.), कल्चर ऐंड इकोनामी इन द इंडियन डायसपोरा रूटलिज, लंदन, 2003
4. पी.सी. जैन, 'पाप्यूलेशन डायनेमिक्स इन वेस्ट एशिया ऐंड नार्थ अफ्रीका' एन.एन. वोहरा (सं.), हिस्ट्री, कल्चर ऐंड सोसाइटी इन इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया, आई.आई.सी., शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
5. पी.सी. जैन, 'इंडियन डायसपोरा इन कनाड़ा', अजय दुबे (सं.), इंडियन डायसपोरा : ग्लोबल आइडेंटिटी कलिंग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
6. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इजराइल, जॉर्डन ऐंड द मशा'अल अफेयर्स', इफ्राइम कार्श और पी.आर. कुमारस्वामी (सं.), इजराइल, द हाशेमाइट्स ऐंड द पैलेस्टियंस : द फेटफुल ट्राएंगल, फ्रेंक कास, लंदन
7. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इंडिया ऐंड इजराइल : इमर्जिंग पार्टनरशिप' सुमित गांगुली (सं.) इंडिया एज एन इमर्जिंग पावर, फ्रेंक कास, लंदन, 2002
8. पी.आर. कुमारस्वामी, 'माइनोरिटीज इन द मिडिल ईस्ट : एन इनक्वायरी' एन.एन. वोहरा (सं.), हिस्ट्री, कल्चर ऐंड सोसाइटी इन इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया, शिप्रा, आईआई.सी, नई दिल्ली, 2002
9. अनवार आलम, "सिक्यूलरिज्म इन इण्डिया : ए क्रिटिक आफ करंट डिस्कोर्स", पॉल ब्रास और अचीन विनायक, (सं.) कंपीटिंग नेशनलिज्म इन साउथ एशिया, ओरिएन्ट लांगमैन, नई दिल्ली, 2002
10. गुलशन डायटल, यूनिटरी हिस्ट्रीज, एपिस्टीमोलॉजीकल डिवाइड्स : ए समिंग अप' एन.एन. वोहरा (सं.) हिस्ट्री, कल्चर ऐंड सोसाइटी इन इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
11. गुलशन डायटल, ' पोस्टवार अफगानिस्तान ऐंड ईरान : द चैलेंजिज अहेड' श्रीधर (सं.), अफगानिस्तान इन ट्रांजीशन, इंडियन काउंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली, 2003

आलेख

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. vkj-,y-ploy k] 'fjl k bd ls ked Ø kfl l bu vt s Vuk%, il Z s Vo*] bM ; kDoV Zy h] Hkx&LVIII, अंक--2, अप्रैल–जून 2002.

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. बी.एस. चिमनी, 'नीड कार ट्रांसनेशनल ट्रांसपरेंसी ऐंड ओपननेस : कोमेंट आन स्टिगलित्ज' मैथ्यू गिबने (सं.), द आक्सफोर्ड एमनेस्टी लेक्चर्स, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड, 2002
2. बी.एस. चिमनी, 'द वार एगेंस्ट इराक द आक्यूपेशन ऐंड इंटरनेशनल ला' थर्ड वर्ल्ड रिसर्जेंस अंक–151–152, मार्च–अप्रैल, 2003.
3. बी.एस. चिमनी, "डु वी नीड ए ह्यूमैनिटेरियन काउंसिल टु ऑथराइज ह्यूमैनिटेरियन इंटरवेंशंस' द इंटरनेशनल जर्नल आफ ह्युमन राइट्स, भाग–6.1, स्प्रिंग 2002
4. ए.एस. रे, 'द पॉलिटीकल इकोनॉमी आफ ड्रग क्वालिटी : चेंजिंग पर्सेप्शंस ऐंड इंप्लिकेशंस फार द इंडियन फार्मास्यूटीकल इंडस्ट्री' इकोनामिक ऐंड पॉलिटीकल वीकली, भाग–38, अंक–23, (एस. भादुरी के साथ)
5. प्रबल राय चौधरी, 'लिमिट प्राइसिंग एज बरट्रांड इक्विलीब्रियम, इकोनामिक थीअरि 19, 811–822 स्प्रिंगर वरलाग, 2002

6. प्रबल राय चौधरी, 'अंटरनेशनल ज्वाइंट वेंचर्स : ए वेलफेयर अनालिसिस (इंद्रानी राय चौधरी के साथ संयुक्त रूप से), पॉलिसी रिफॉर्म 5, 51–60 रूटलिज, टेलर और फ्रांसिस, 2002

7. प्रबल राय चौधरी, 'कांसिसटेंट स्टेबिलिटी इन जनरेलाइज्ड असाइनमेंट मॉडल्स, कियो इकोनामिक स्टडीज 39, 9–22, इंटरनेशनल एकेडमिक प्रिंटिंग कंपनी, 2002

8. प्रबल राय चौधरी, 'बरट्रांड इक्विलीब्रियम विद एंट्री : सम लिमिट रिजल्ट्स (विलियम नॉवसेक के साथ संयुक्त रूप से), इंटरनेशनल जर्नल आफ इंडस्ट्रियल आर्गेनाइजेशन 21, 795–808, एल्सवियर साइंस, 2003

9. प्रबल राय चौधरी, 'इनएफिसिएंसीज इन ए मॉडल आफ टीम फॉर्मेशन, ग्रुप डिरीजन ऐंड निगोशिएशंस 12, 195–215, क्लुवर एकेडमिक पब्लिशर्स, 2003

10. प्रबल राय चौधरी, 'असिमेट्रिक कैपेसिटी कोस्ट्स ऐंड ज्वाइंट वेंचर बाय आउट्स (सुगाता मार्जित के साथ संयुक्त रूप से), इकोनामिक बिहेवियर ऐंड आर्गेनाइजेशन, एल्सवियर साइंस, 2003.

11. प्रबल राय चौधरी, 'कॉलिशन प्रूफ बरट्रांड इक्विलीब्रिया (कुणाल सेनगुप्ता के साथ संयुक्त रूप से), इकोनामिक थीअरि (आगामी) स्प्रिंगर वरलाग, 2002

12. भरत एच. देशाई, 'मैपिंग द फ्यूचर आफ इंटरनेशनल एनवायरनमेंटल गवर्नेंस', इयर बुक आफ इंटरनेशनल एनवायरनमेंटल लॉ, भाग–12, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002.

13. भरत एच. देशाई, 'टुवार्डस डब्ल्यू.एस.एस.डी. : फ्यूचर आफ इंटरनेशनल एनवायरनमेंटल गवर्नेंस', ई.एस.सी.पी. रिपोर्ट, वुडरो विल्सन इंटरनेशनल सेंटर फोर स्कॉलर्स, वाशिंगटन डी.सी., यू.एस.ए., 2002

14. गुरबचन सिंह, प्राइवेटाइजेशन आफ पब्लिक सेक्टर बैंक्स, इकोनामिक ऐंड पॉलिटीकल वीकली, भाग–37, अंक–32, अगस्त 10–16, 2002.

15. वी.के.एच. जाम्भोलकर ने प्रो. पी.के. पंत के साथ मिलकर इंडियन सोसाइटी आफ इंटरनेशनल लॉ द्वारा आयोजित 'इंटरनेशनल टेरोरिज्म' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की संगोष्ठी कार्यवाही में आलेख प्रस्तुत किया।

पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र

1. लालिमा वर्मा, 'जापान–चाइना रिलेशंस : इंप्लिकेशंस फार इंडिया', के.वी. केसवन (सं.), बिल्डिंग ए ग्लोबल पार्टनरशिप : फिफ्टी इयर्स आफ इण्डो–जापानीज रिलेशंस, लांसर्स बुक, 2002

2. एच.एस. प्रभाकर, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड ऐंड पेसिफिक आइलैण्ड्स, इन साइक्लोपीडिया आफ हिस्ट्री, कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी (कर्नाटक), अगस्त, 2002.

3. एच.एस. प्रभाकर, द जेपनीज स्टेट ऐंड वेलफेयर : असेसमेंट आफ डिवलपमेंट ऐंड चैलेंजिज, जर्नल आफ जेपनीज स्टडीज, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, जनवरी–जून, 2003.

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. सी.एस.आर. मूर्ति, 'यू.एस. ऐंड द थर्ड वर्ल्ड : एन एंबीवेलेंट रिलेशनशिप' इंटरनेशनल स्टडीज, नई दिल्ली, भाग–40, अंक–1, जनवरी–मार्च 2003

2. स्वर्ण सिंह, 'द चाइना कनेक्शन', सेमिनार (सिक्योरिंग साउथ एशिया पर विशेषांक) नई दिल्ली, सितम्बर 2002.

3. स्वर्ण सिंह, 'चाइना'ज कंटीन्युड कासन ...' वर्ल्ड फोकस, नई दिल्ली, भाग–23, अंक–7 और 8, जुलाई–अगस्त, 2002

4. स्वर्ण सिंह, 'कश्मीर कार्ड' 'रिमेम्बरिंग वार : द 1962 इंडिया–चाइना कंफ्लिक्ट' विषयक श्रृंखला के भाग के रूप में, अक्टूबर–2002 के दौरान।

5. स्वर्ण सिंह, 'हू जिंताओ'स एंडुरिंग कांटेक्ट्स विद तिब्बत', इंस्टीट्यूट आफ पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज, नई दिल्ली

6. स्वर्ण सिंह, 'चाइना'ज कश्मीर पॉलिसी', वर्ल्ड फोकस, जम्मू–कश्मीर पर वार्षिक अंक, नई दिल्ली, अक्टूबर–नवम्बर–दिसम्बर, 2002.

7. स्वर्ण सिंह, 'रशिया–चाइना–इंडिया : ए स्ट्रेटिजिक ट्राएंगल ?' वर्ल्ड फोकस, नई दिल्ली भाग–24, अंक–1, जनवरी 2003

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. अजय कुमार पटनायक, रशिया–यू.एस. रिलेशंस सिंस सितम्बर 11', वर्ल्ड फोकस, भाग–23, अंक 7–8, जुलाई–अगस्त, 2002.
2. अजय कुमार पटनायक, "सेंट्रल एशिया इन ग्लोबल सेटिंग", वर्ल्ड फोकस, भाग–23, अंक–6, जून–2002.
3. अजय कुमार पटनायक, 'नेशनल माइनोरिटीज इन सेन्ट्रल एशिया', डायलाग, भाग–3, अंक–4, अप्रैल–जून 2002.
4. अनुराधा चिनाय, "ग्लोबलाइजेशन ऐंड इंटरनेशनल सिक्युरिटी", एशियन एक्सचेंज, हांगकांग, भाग 17, अंक–2, 2001/भाग–18, अंक–1, 2002.
5. अनुराधा चिनाय, "मिलिट्राइजेशन ऐंड द साउथ एशिया न्यूक्लियर क्राइसिस" एशियन एक्सचेंज, हांगकांग, भाग 17, अंक 2, 2001/भाग18, अंक–1, 2002.
6. अर्चना श्रीवास्तव, 'डायनेमिक्स आफ सेन्ट्रल एशियन–रशियन जियोपॉलिटीकल रिलेशंस', इंडिया क्वार्टरली, भाग–39, अंक–3 और 4, 2002.
7. गुलशन सचदेवा, 'रिजुवेनेटिंग इंडिया–रशिया–ट्रेड ऐंड इकोनामिक लिंकेजिज' वर्ल्ड फोकस, अंक–277, जनवरी 2003
8. गुलशन सचदेवा, (चरण वाधवा के साथ सह–लेखक) 'इंडियन पर्सपेक्टिव्स आन ईस्ट एशिया' एशिया पेसिफिक फाउंडेशन आफ कनाडा
9. गुलशन सचदेवा, 'नार्थ–ईस्टर्न इकोनॉमी : प्रिजेंट रिएलिटीज ऐंड फ्यूचर पॉसिबिलिटीज', कंटेम्पोरेरि इंडिया, भाग–1, अंक–4, 2002.
10. निर्मला जोशी, 'सेन्ट्रल एशिया ऐंड रिसेंट डिवलपमेंट्स इन अफगानिस्तान', डायलॉग, अप्रैल–जून 2002.
11. फूल बदन, 'रिसर्जेंस आफ इस्लाम इन सेन्ट्रल एशिया', इस्लाम ऐंड द माडर्न ऐज, भाग–33, अंक–2, मई 2002.
12. फूल बदन, 'एनर्जी रिसॉर्सिज ऐंड इंडस्ट्रीज इन सेन्ट्रल एशिया', द एशियन जर्नल, भाग–9, अंक–2, जून–2002.
13. शम्सउद्दीन, 'द सिल्क रूट', सेन्ट्रल एशियन स्टडीज, भाग–12, अंक–1, 2002.
14. शशिकांत झा और भास्वती सरकार, 'हंगेरियन माइनोरिटीज : इश्यूज ऐंड कंसर्न्स', इंटरनेशनल स्टडीज, भाग–39, अंक–2, 2002.

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र

1. गुलशन डायटल, 'वेस्ट एशियन रिलेशंस', आई.आई.सी. डायरी (नई दिल्ली), 16 (3), मई–जून 2002.
2. गुलशन डायटल, 'स्टेबिलिटी इन द गल्फ : इंप्लिकेशंस फार एनर्जी सिक्योरिटी', पेसिफिक ऐंड एशियन नर्जल आफ एनर्जी (नई दिल्ली), भाग–12, अंक–1, जून 2002.
3. ए.के. दुबे, 'इंडियन डासपोराज इन फ्रेंकाफोन अफ्रीका', अफ्रीका क्वार्टरली, भाग–43, अंक–1, पृ.–86–91.
4. ए.के. दुबे, 'आइडेंटिटी पॉलिटिक्स आफ इंडियन साउथ अफ्रीकंस (आई.एस.ए.ज.) : डेमोक्रेटाइजेशन ऐंड गवर्नेंस आफ साउथ अफ्रीका', इंडियन जर्नल आफ अफ्रीकन स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भाग–12, अंक–1, और 2.
5. ए.के. पाशा, "इण्डिया ऐंड द जी सी सी स्टेट्स : वर्ल्ड फोकस, भाग–24, अंक–2, फरवरी 2003, पृ. 9–15.
6. पी.सी. जैन, 'इंडियन डायसपोरा : एन ओवर व्यू', थिंक इंडिया, भाग–6, अंक–1, 2003.
7. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इजराइल, जार्डन ऐंड द माशा'अल अफेयर्स', इजराइल अफेयर्स, भाग–9, अंक–3, स्प्रिंग, 2003.
8. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इंडिया ऐंड इजराइल : इमर्जिंग पार्टनरशिप', जर्नल आफ स्ट्रेटिजिक स्टडीज, भाग–25, अंक–4, दिसम्बर, 2002.
9. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इंडिया ऐंड इजराइल : इमर्जिंग पार्टनरशिप', जर्नल आफ स्ट्रेटिजिक स्टडीज, भाग–25, अंक–4, दिसम्बर, 2002 'न्यूक्लियर पाक ऐंड इजराइल', वर्ल्ड अफेयर्स, (नई दिल्ली), भाग–6, अंक–2, अप्रैल–जून 2002.
10. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इंडिया ऐंड इजराइल : इमर्जिंग पार्टनरशिप', जर्नल आफ स्ट्रेटिजिक स्टडीज, भाग–25, अंक–4, दिसम्बर, 2002, 'इंडिया, इजराइल ऐंड द डेविस कप टाइ 1987' जर्नल आफ इण्डो–जुडैक स्टडीज, अंक–5, जून–2002.

11. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इंडिया ऐंड इजराइल : इमर्जिंग पार्टनरशिप', जर्नल आफ स्ट्रेटिजिक स्टडीज, भाग–25, अंक–4, दिसम्बर, 2002, 'हमास इमर्जज एज विनर इन कायरो टॉकस, जेन्स इंटेलीजेंस रिव्यू, भाग–15, अंक–3, मार्च 2003.

12. पी.आर. कुमारस्वामी, 'इंडिया ऐंड इजराइल : इमर्जिंग पार्टनरशिप', जर्नल आफ स्ट्रेटिजिक स्टडीज, भाग–25, अंक–4, दिसम्बर, 2002, 'द लिगेसी आफ अनडिफाइन्ड बार्डर्स' तेल अवीव नोट्स, अंक–40, मई 2002.

13. अनवार आलम, 'नेहरूवियन माडल आफ सेक्युलरीज्म : ए क्रिटिकल अनालिसिस', इण्डियन जर्नल आफ पॉलिटिक्स, भाग–37(1–2), जनवरी–जून 2003, जवाहरलाल नेहरू पर विशेषांक.

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. मनमोहन अग्रवाल, एनवायरनमेंटल रेग्युलेशंस ऐंड इंडियन एक्सपोर्ट्स परफार्मेंस, जी.के. काडेकोडी की अध्यक्षता में बनी शोध परियोजना दल के सदस्य.

2. मनमोहन अग्रवाल (प्रो. बी.के. श्रीवास्तव) 'ह्यूमैनीटेरियन इंटरवेंशन' पर अनौपचारिक शोध परियोजना।

   एक आलेख वर्ष 2003–2004 में एक संगोष्ठी में प्रस्तुत किया जाएगा तथा दूसरा आलेख वर्ष 2003–2004 में प्रकाशन हेतु तैयार है।

3. ए.एस. रे, आर. ऐंड डी. इनसेंटिव्स इन इंडिया : स्ट्रक्चरल चेंजिज ऐंड इम्पैक्ट, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. अजय कुमार पटनायक, नेशंस, माइनोरिटीज ऐंड स्टेट्स इन सेन्ट्रल एशिया विषयक मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट आफ एशियन स्टडीज, कलकत्ता द्वारा प्रायोजित परियोजना पूरी की।

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. बी. विवेकानंदन, 'यूरोपियन यूनियन इन द इमर्जिंग ग्लोबल सिस्टम' जेएनयू – ई.यू.एस.पी. द्वारा प्रायोजित, जेएनयू

2. आर.के. जैन, 'रीजनल कॉपरेशन इन यूरोप ऐंड साउथ एशिया : लेशंस ऐंड रिलिवेंस आफ यूरोपियन इक्सपिरियनसेज' (जेएनयू – ई.यू.एस.पी. द्वारा प्रायोजित)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. स्वर्ण सिंह, "चाइना–इण्डिया : म्युचुअल कंफीडेंस बिल्डिंग' विषयक परियोजना पर अंतरिम रिपोर्ट सेंटर के साइंसेज ह्यूमैन्स, नई दिल्ली को प्रस्तुत की। इस परियोजना पर अंतिम रिपोर्ट अगस्त, 2003 के अंत तक प्रस्तुत होगी।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. निर्मला जोशी, 'सेन्ट्रल एशिया'ज सिक्योरिटी कंसर्न्स : इंप्लिकेशन फार इंडिया' विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने सहयोग किया।

2. एस.के. पाण्डेय, 'असिमेट्रीकल फेडरेलिज्म इन इंडिया : ए कंपेरेटिव पर्सपेक्टिव' विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित.

3. फूल बदन, 'रिसर्जेस आफ इस्लाम इन सेन्ट्रल एशिया' भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने सहयोग किया।

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. आई.एन. मुखर्जी, "इण्डो–श्रीलंका फ्री ट्रेड एग्रीमेंट : असेसिंग पोटेंशियल ऐंड इम्पैक्ट", इंडियन काउन्सिल फार रिसर्च इन इंटरनेशनल इकोनामिक रिलेशंस, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित.

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. आर.के. जैन, "इण्डो–जर्मन रिलेशंस",
2. अब्दुल नफे, 'एथनीसिटी ऐंड पॉलिटिक्स इन द कैरेबियन' चूंकि यह शोध परियोजना पूरी हो चुकी है, अतः इसे प्रकाशित कराने के लिए प्रयास जारी है।
3. अब्दुल नफे, "इण्डो–ब्रिटिश रिलेशंस",
4. बी. विवेकानन्दन, "इंटरनेशनल पर्सपेक्टिव्स आफ विल्ली ब्रान्ड्ट, ब्रूनो क्रेयस्की ऐंड ओल्फ पाल्मे",
5. बी. विवेकानन्दन, "चेंजिंग ट्रान्सअटलांटिक रिलेशंस इन द पोस्ट–कोल्ड–वार वर्ल्ड",
6. आर.एल. चावला, "इकोनामिक क्राइसिस इन लैटिन अमेरिका : केस स्टडीज आफ अर्जेंटीना, ब्राजील ऐंड मेक्सिको

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. पुष्पेश पंत, कंफ्लिक्ट ऐंड कॉपरेशन इन शेयर्ड इकोसिस्टम्स, डिप्लोमेसी आफ द डिप्राइव्ड.
2. अमित एस.रे., 'द चेंजिंग प्रोफाइल आफ द इण्डियन ड्रग इंडस्ट्री अंडर ए न्यू ग्लोबल आर्डर : इम्पिलकेशंस फार इण्डिया'ज हैल्थ केयर'.
3. प्रबल राय चौधरी, 'रिपीटिड मोरल हेजार्ड ऐंड कनवर्टीबल डेब्ट, (सुदीप्त दास गुप्ता, हांगकांग यूनिवर्सिटी आफ साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी और कुणाल सेन गुप्ता, यूनिवर्सिटी आफ सिडनी के साथ संयुक्त रूप से).
4. प्रबल राय चौधरी, 'रिसेटिंग आफ एग्सक्यूटिव कम्पेंसेशन (सुदीप्त दास गुप्ता और रवि जगनन्नाथन, हांगकांग यूनिवर्सिटी आफ साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी के साथ संयुक्त रूप से).
5. प्रबल राय चौधरी, असिमेट्रिक टाइम प्रिफ्रेंसिज ऐंड ज्वाइंट वेंचर ब्रेक डाउन (तरुण कबिराज, इंडियन स्टेटिस्टीकल इंस्टीट्यूट के साथ संयुक्त रूप से)
6. प्रबल राय चौधरी, क्वालिटी ऐंड प्राइस कंपीटिशन : द रोल आफ डिसक्रीट कंज्यूमर टाइप्स (रजत आचार्य, जादवपुर विश्वविद्यालय के साथ संयुक्त रूप से)
7. प्रबल राय चौधरी, "ग्रुप लेंडिंग विद सिक्वेंशियल ऐंड पार्शियल फाइनेंसिंग.
8. गुरबचन सिंह, फाइनेंशियन इंटरमेडिएशन ऐंड इंप्लायमेंट (मनोज पंत और प्रबल राय चौधरी के साथ)
9. गुरबचन सिंह, लिक्विडिटी ऐंड लेमन प्रॉब्लम
10. गुरबचन सिंह, रियल क्रेडिट क्रिएशन बाई द बैंकिंग सिस्टम.
11. वी.के.एच. जाम्भोलकर, इंडियन डिप्लोमेसी : ए कलेक्शन आफ आर्काइवल मैटेरियल.
12. वी.के.एच. जाम्भोलकर, इंडिया ऐंड यूनाइटिड स्टेट्स : ए पार्टनरशिप फोर पीस.
13. वी.के.एच. जाम्भोलकर, इंडियाज फारेन पालिसी / डिप्लोमेसी : वाजपेयी इरा

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. स्वर्ण सिंह ने 'चाइना–साउथ एशिया : इश्यूज, इक्वेशंस ऐंड पॉलिसीज' विषयक पाण्डुलिपि तैयार की और प्रकाशन हेतु प्रकाशक को प्रस्तुत की।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. बी. विवेकानन्दन ने मई, 2002 में द इंस्टीट्यूट फार लेबर रिसर्च, हेलसिंकी, फिनलैण्ड में आयोजित 'इंडिया'ज आन गोइंग सोसियो–इकोनामिक ट्रांसफार्मेशन' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
2. बी. विवेकानंदन ने जून, 2002 में जीन जौरस फाउंडेशन, पेरिस, में आयोजित 'सोशल ऐंड पॉलिटीकल सिचुएशन इन इंडिया' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

3. आर.के. जैन ने 6 से 7 सितम्बर, 2002 तक हीडल बर्ग में आयोजित 17वें 'मॉडर्न साउथ एशियन स्टडीज' विषयक में भाग लिया तथा 'द यूरोपीयन यूनियन ऐंड सार्क : इज द यूरोपीयन यूनियन आर एसियान ए मॉडल फार सार्क ?' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. आर.के. जैन ने 4 दिसम्बर, 2002 को ई.सी.एस.ए. – वर्ल्ड प्रेसिडेंट्स मीटिंग में भाग लिया।

5. आर.के. जैन ने 5–6 दिसम्बर, 2002 को आयोजित 'पीस ऐंड स्टेबिलिटी : रोल आफ द ई.यू. इन द इंटरनेशनल सीन' विषयक छठे ई.सी.एस.ए.–विश्व सम्मेलन में भाग लिया।

6. चिंतामणि महापात्रा ने मई, 2002 में आयोजित द्वितीय 'इण्डो–आस्ट्रेलियन सिक्योरिटी' गोलमेज बैठक में भाग लिया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. बी.एस. चिमनी ने नवम्बर, 2002 में वियना, आस्ट्रिया में इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फार पीस द्वारा आयोजित 'इंटरनेशन लीगल आर्डर' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशंस टुडे : एन ओल्ड फैशन्ड व्यू फ्राम द 'थर्ड वर्ल्ड' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

2. बी.एस. चिमनी ने मई, 2002 में जिनेवा, स्विटजर लैण्ड में ग्रेजुएट स्कूल आफ इंटरनेशनल स्टडीज और इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन आफ माइग्रेशन द्वारा आयोजित 'इंटरनेशनल माइग्रेशन' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'डिवलपमेंट ऐंड माइग्रेशन' विषयक शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3. योगेश त्यागी ने फरवरी–मार्च 2003 में यू.जी.ए. ला स्कूल, एथेंस, जी.ए., यू.एस.ए. के छात्रों के समक्ष 'ह्यूमन राइट्स' विषयक व्याख्यान दिया।

4. योगेश त्यागी ने मार्च, 2003 में डीन, रस्क सेंटर, यू.जी.ए., एथेंस, जी.ए., यू.एस.ए. के तत्वावधान में आयोजित सम्मेलन में 'इंटरनेशनल लीगल एप्रोचिज फार कंफ्रंटिंग इंटरनेशनल टेरोरिज्म' विषयक व्याख्यान दिया।

5. अमित एस. रे ने मई, 2002 में स्कूल आफ इकोनामिक्स, पीकिंग यूनिवर्सिटी, बीजिंग में आयोजित 'एशियन इकोनामिक कॉपरेशन इन द न्यू मिलेनियम : चाइना'ज इकोनामिक प्रिजेंस' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'एफ.डी.आई. इन चाइनीज ऐंड इंडियन इकोनामिक डिवलपमेंट : ए कंपेरेटिव अनालिसिस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. अमित एस. रे ने मई, 2002 में काठमाण्डु, नेपाल में आयोजित 'पार्टनर टु मीट डिवलपमेंट चैलेंजिज इन साउथ एशिया' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया तथा 'द इमर्जिंग इंटरनेशनल इकोनामिक आर्डर : ए थर्ड वर्ल्ड पर्सपेक्टिव' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

अन्तर्राष्ट्रीय, राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र

1. वरुण साहनी ने 27 फरवरी, 2003 को यू. फोरेन ऐंड कॉमनवेल्थ आफिस, विलटन पार्क, वेस्ट ससेक्स, यू.के. द्वारा आयोजित 'इंडिया–पाकिस्तान रिलेशंस : रिशेपिंग द एजेंडा ?' विषयक एस.ओ. 3/1 विल्टन पार्क सम्मेलन में भाग लिया तथा 'वाट पर्सपेक्टिव्स फ्राम इंडिया ऐंड पाकिस्तान आन हाउ टु एडवांस पीस ? शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. वरुण साहनी ने 17 जून, 2002 को रीजनल सेंटर फार स्ट्रेटिजिक स्टडीज, कोलम्बो और द कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन द्वारा नगरकोट, नेपाल में आयोजित 'पोस्ट 9/11 डिवलपमेंट्स : इम्प्लिकेशंस फार साउथ एशिया' विषयक साउथ एशियन स्ट्रेटिजिक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'रीजनल इंप्लिकेशंस आफ सितम्बर 11 डिवलपमेंट्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3. वरुण साहनी ने 29 मई, 2002 को आस्ट्रेलियन स्ट्रेटिजिक पॉलिसी इंस्टीट्यूट, केनबरा, आस्ट्रेलिया में आयोजित 'इंडिया–पाकिस्तान मिलिट्री कनफ्रंटेशन' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

4. वरुण साहनी ने 29 मई, 2002 को आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, केनबरा, आस्ट्रेलिया में आयोजित 'इंडिया–पाकिस्तान मिलिट्री कनफ्रंटेशन' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

5. वरुण साहनी ने 27 मई, 2002 को द आस्ट्रेलिया स्ट्रेटिजिक पॉलिसी इंस्टीट्यूट आर द आस्ट्रेलिया इंडिया काउंसिल, सिडनी आस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित 'आस्ट्रेलिया–इंडिया सिक्योरिटी' गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया तथा न्यूक्लियर इश्यूज–इंडिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. वरुण साहनी ने 28 मई, 2002 को आस्ट्रेलियन स्ट्रेटिजिक पॉलिसी इंस्टीट्यूट आर द आस्ट्रेलिया–इंडिया काउंसिल, सिडनी, आस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित 'आस्ट्रेलिया–इंडिया सिक्योरिटी गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया तथा 'डिफेंस ऐंड सिक्योरिटी प्लानिंग–इंडिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. वरुण साहनी ने फ्रेडरिक एबर्ट स्टिफतुंग, बर्लिन, जर्मनी में आयोजित 'इंडियन पर्सेप्शन आफ ग्लोबल सिक्योरिटी' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

8. वरुण साहनी ने 10 अप्रैल, 2002 को सेंटर फार डिवलपमेंट रिसर्च (जी.ई.एफ.) बॉन, जर्मनी में आयोजित 'साउथ एशिया' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

9. वरुण साहनी ने 11 अप्रैल 2002 को फ्रेडरिक एबर्ट स्टिफतुंग, बॉन, जर्मनी में आयोजित 'साउथ एशिया आफ्टर–सितम्बर 11थ' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

10. वरुण साहनी ने 12 अप्रैल, 2002 को आर्मड फोर्सेज लीडरशिप एकेडमी हम्बर्ग, जर्मनी में आयोजित 'सिक्योरिटी' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

11. वरुण साहनी ने 12 अप्रैल, 2002 को इंस्टीट्यूट फार पीस रिसर्च ऐंड सिक्योरिटी पॉलिसी, हम्बर्ग, यूनिवर्सिटी, हम्बर्ग, जर्मनी में आयोजित 'साउथ एशियन सिक्योरिटी' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

12. स्वर्ण सिंह ने 21 जून, 2002 को कुनमिंग (युन्नान प्रांत, चीन) में मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट आफ एशियन स्टडीज (कोलकाता) और इंस्टीट्यूट आफ साउथ एशियन स्टडीज (कुनमिंग) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'प्रॉब्लम्स ऐंड प्रॉस्पेक्टस' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

13. स्वर्ण सिंह ने 24 से 25 जून 2002 को शंघाई में शंघाई इंस्टीट्यूट आफ इंटरनेशनल स्टडीज द्वारा आयोजित 'इंडिया इन ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' विषयक 'एस.आई.आई.एस. इंडिया चाइना डायरेक्टर्स गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया तथा 'यू.एस. ग्लोबल वार आन टेरोरिज्म ऐंड इट्स इम्पैक्ट आन इंडिया–चाइना टाइज' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

14. स्वर्ण सिंह ने 27–28 जून, 2002 को सेंटर फार एशियन स्टडीज (हांगकांग यूनिवर्सिटी), हांगकांग में आयोजित 'चाइना–इंडिया रिलेशंस' विषयक सी.ए.एस. डायरेक्टर्स गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया तथा 'चाइना–इंडिया इकोनामिक कॉपरेशन' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

15. स्वर्ण सिंह ने 13 मार्च, 2003 को जन स्मट्स हाउस, विट्सवाटर्सरेंड यूनिवर्सिटी, जोहांसबर्ग में आयोजित 'न्यू टूल्स फोर रिफॉर्म ऐंड स्टेबिलिटी ? सैंकशंस, कंडीशनलिटीज ऐंड कंफ्लिक्ट रिजोल्यूशन' विषयक साउथ अफ्रीकन इंस्टीट्यूट आफ इंटरनेशनल अफेयर्स (जोहांसबर्ग) कार्यशाला में भाग लिया तथा 'द पॉलिटिक्स आफ सैंक्शंस रेजिम्स : एक्सपिरिएंसिज फ्राम एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा चिनॉय ने 29 अगस्त से 1 सितम्बर, 2002 तक फिलिपींस में आयोजित 'एशियन पीस' संगोष्ठी में भाग लिया तथा संगोष्ठी की कार्यवाही में 'द फोर्मस ऐंड फंक्शंस आफ वायलेंस' शीर्षक आलेख प्रकाशित हुआ।

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. आई.एन. मुखर्जी ने 9 जुलाई, 2002 को इंस्टीट्यूट फार पॉलिसी स्टडीज, श्रीलंका में 'इण्डो–श्रीलंका फ्री ट्रेड एग्रीमेंट : असेसिंग पोटेंशियल ऐंड इम्पैक्ट' विषयक प्रारूप रिपोर्ट प्रस्तुत की।

2. आई.एन. मुखर्जी (तिलानी जयवर्धने के साथ) ने 28–29 अगस्त, 2002 को ढाका में आयोजित एस.ए.एन.ई.आई. सम्मेलन 'इण्डो–श्रीलंका फ्री ट्रेड एग्रीमेंट असेसिंग पोटेंशियल ऐंड इम्पैक्ट' विषयक परियोजना पर प्रारूप रिपोर्ट प्रस्तुत की।

3. आई.एन. मुखर्जी ने 20 मार्च, 2003 को एस्केप, बैंकाक द्वारा आयोजित 'बैंकाक एग्रीमेंट' विषयक स्थायी समिति के 19वें सत्र तें 'द बैंकाक एग्रीमेंट नेगेटिव लिस्ट एप्रोच टु ट्रेड लिबरलाइजेशन इन एशिया ऐंड पेसिफिक' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. आई.एन. मुखर्जी ने 28 मार्च, 2003 को कोलकाता में सार्क चैम्बर आफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित 'सार्क इकोनामिक कॉपरेशन' विषयक सम्मेलन में 'साउथ एशियन प्रिफ्रेंशियल ट्रेडिंग एरेंजमेंट' शीर्षक व्याख्यान दिया।

5. के. वारिकू ने 18 से 21 नवम्बर, 2002 तक जिआन, चीन में आयोजित 'सिल्क रोड्स, 2002' विषयक यूनेस्को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'इंडिया'ज गेटवे टु सेंट्रल एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. के. वारिकू ने 5 से 14 अगस्त 2002 तक जिनेवा में आयोजित, मानवाधिकार के उप आयोग के 54वें सत्र में भाग लिया।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. ए.के. दुबे ने 1 और 2 जून, 2002 को कुआलालम्पुर में एज्यूकेशनल ऐंड रिसर्च फाउंडेशन, मलेशियन एसोसिएटिड चैम्बर आफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री और अन्य शैक्षिक निकायों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'द इंडियन डायसपोरा इन न्यू मिलेनियम : रिबिल्डिंग द कम्युनिटी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के 'आइडेंटिटी ऐंड रिस्पॉसीबिलिटी आफ इंडियन डायसपोरा' शीर्षक सत्र में अध्यक्ष के रूप में भाग लिया।

2. ए.के. दुबे ने 3 और 4 जून, 2002 को यूनिवर्सिटी पुत्रा मलाया, कुआलालम्पुर में 'क्लेश ऐंड डायलाग आफ सिविलाइजेशन ऐंड राइज आफ इंडियन डायसपोरा' और 'रिसेंट पॉलिसी आफ गवर्नमेंट आफ इंडिया टुवर्डस इंडियन डायसपोरा' विषयक व्याख्यान दिए।

3. ए.के. दुबे ने 5 जून, 2002 को सिंगापुर इंडियन डिवलपमेंट एसोसिएशन में 'द न्यू पॉलिसी इनिशिएटिवस आफ इंडिया टुवर्डस पीपल आफ इंडियन आरिजिन' विषयक व्याख्यान दिया।

4. ए.के. पाशा ने 8 से 10 अक्टूबर, 2002 तक डिपार्टमेंट आफ पॉलिटीकल साइंस, यू.ए.ई. यूनिवर्सिटी द्वारा अल आइन में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा 'इंडिया ऐंड द जी.सी.सी. : ट्रेड, डिप्लोमेसी ऐंड फ्यूचर रिलेशंस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. ए.के. पाशा ने 4 से 5 मार्च, 2003 तक द इंस्टीट्यूट फार पॉलिटीकल ऐंड इंटरनेशनल स्टडीज, तेहरान, ईरान द्वारा तेहरान, ईरान में आयोजित 'द पर्सियन गल्फ : 'द पर्सियन गल्फ इन द लाइट आफ ग्लोबल चेंजिज ऐंड रीजनल डिवलपमेंट्स' विषयक 13वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'इराक क्राइसिस ऐंड इट्स कनसिक्वेंसिस आन पर्सियन गल्फ सिक्योरिटी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. ए.के. पाशा ने मनामा, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र, बहरीन विश्वविद्यालय का दौरा किया तथा एम.एन. गलाल, उप निदेशक और सुश्री शरा ईसा दाइज अल खलीफा से मिले। इन्होंने 14 अक्टूबर, 2002 को शिक्षकों और राष्ट्रीय सभा के चुनावों के दौरान चुनाव आयोग के सदस्यों को संबोधित किया।

7. ए.के. पाशा ने दोहा, कतर गए तथा 16 अक्टूबर, 2002 को इतिहास विभाग, कतर विश्वविद्यालय के शिक्षकों से मिले।

8. ए.के. पाशा ने 19 से 22 दिसम्बर, 2002 के दौरान आदिस, अबाबा (इथोपिया) का दौरा किया।

9. एस.एन. मालाकार ने 15 से 19 दिसम्बर, 2002 तक इंस्टीट्यूट आफ आर्गेनाइजेशन फार सोशल साइंसेज रिसर्च–1 इन ईस्टर्न ऐंड सदर्न अफ्रीका (ओ.एस.एस.आर.ई.ए.) खारतूम (सुडान) द्वारा आयोजित 'रिकंसेपचुएलाइजिंग डेमोक्रेसी टुवर्डस द रिजोल्यूशन आफ सोशल कंफ्लिक्ट इन सब सहारन अफ्रीका' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

10. अनवार आलम ने 22 अप्रैल से 8 मई, 2002 तक अमरीकी सरकार की ओर से भारत में अमरीकी दूतावास द्वारा प्रायोजित 'इस्लामिक स्कालरशिप इन यू.एस.ए.' विषयक इंटरनेशनल विजिटर प्रोग्राम के अन्तर्गत अमरीका का दौरा किया।

11. अनवार आलम ने 4 से 17 अगस्त, 2002 तक एरफर्ट विश्वविद्यालय, एरफर्ट, जर्मनी में आयोजित 'समर स्कूल' कार्यक्रम में भाग लिया तथा 'लिगेसी आफ इस्लामिक कल्चर इन स्पेन' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. अब्दुल नफे ने 25 नवम्बर, 2002 को इंडिया हेबिटेट सेंटर में आस्ट्रेलिया–इंडिया कांउसिल और इग्नू द्वारा आयोजित 'आस्ट्रेलिया इंडिया रिलेशंस : इमर्जिंग ट्रेंड्स' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा आस्ट्रेलियन सिक्योरिटी पर्सेप्शंस ऐंड पॉलिसी' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। यह आलेख प्रकाशनाधीन है।

2. क्रिस्टोफर एस. राज ने 3 जनवरी, 2003 को तिरूपति, आन्ध्र प्रदेश में साउथ इंडियन अमेरिकन स्टडीज नेटवर्क के वार्षिक सत्र में 'अमरीकन वार आन टेरेरिज्म' शीर्षक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

3. क्रिस्टोफर एस. राज ने 20 जनवरी, 2003 को थर्ड वर्ल्ड स्टडीज, जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'कनाडा ऐंड सिविल सोसाइटी' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता की।

4. आर.एल. चावला ने 10 मई, 2002 को नई दिल्ली में आयोजित 'कनाडा'ज ग्लोबल इंगेजमेंट्स इन ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'कनाडा ऐंड एशिया पेसिफिक' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. आर.एल. चावला ने 16–17 अक्तूबर 2002 को नई दिल्ली में आयोजित 'इंडिया, द ई.यू. ऐंड डब्ल्यू.टी.ओ.' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'इंडिया ऐंड ई.यू. : फ्राम गेट टु गेट्स' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

. चिंतामणि महापात्रा ने 2 से 3 सितम्बर, 2002 तक पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र, अ.अ.सं. द्वारा आयोजित 'टेरोरिज्म इन वेस्ट एशिया : पास्ट, प्रिजेंट ऐंड फ्यूचर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'टेरोरिज्म इन वेस्ट एशिया : अमेरिकन स्ट्रेटिजी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. चिंतामणि महापात्रा ने 9 अक्टूबर, 2002 को इंडिया हेबिटेट सेंटर में आयोजित 'बायोलॉजीकल वेपन्स : टेरोरिज्म, कनफ्लिक्टिंग पॉलिटीकल ऐंड इकोनामिक इंट्रेस्ट्स विषयक आई.पी.सी.एस. सम्मेलन में भाग लिया।

7. चिंतामणि महापात्रा ने 21–22 अक्टूबर, 2002 को आई.आई.सी., नई दिल्ली में इडसा और कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'इण्डो–जर्मन' वार्ता में भाग लिया।

8. चिंतामणि महापात्रा ने 25 नवम्बर, 2002 को इंडिया हेबिटेट सेंटर में आस्ट्रेलिया–इंडिया काउंसिल और इग्नू द्वारा आयोजित 'आस्ट्रेलिया–इंडिया रिलेशंस : इमर्जिंग ट्रेंड्स' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा आलेख प्रस्तुत किया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. अलोकेश बरुआ ने तिहु कालेज, असम में वि.अ.आ. द्वारा प्रायोजित संगोष्ठी में 'रूरल डिवलपमेंट इन असम' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

2. अलोकेश बरुआ ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में सेंटर डे साइंस ह्यूमैन्स द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रो. मनमोहन अग्रवाल के सहयोग से 'लिबरलाइजेशन ऐंड एक्सपोर्ट परफॉर्मेंस आफ इंडियन फर्म्स : ए थीअरिटीकल ऐंड इम्पायरीकल अनालिसिस' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

3. बी.एस. चिमनी ने 11 दिसम्बर, 2002 को नई दिल्ली में 'आईएल.ओ. वर्ल्ड कमिशन आन द सोशल डाइमेंशंस आफ ग्लोबलाइजेशन' द्वारा आयोजित राष्ट्रीय परिचर्चा में भाग लिया।

4. बी.एस. चिमनी ने 3 से 7 मार्च, 2003 तक विप्रो प्रशिक्षण केंद्र, बंगलौर में विश्व बैंक और कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित 'स्ट्रेटिजिक च्वॉइसिस फार टेरटियरी एज्यूकेशन रिफॉर्म' विषयक कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

5. अमित एस. रे ने अगस्त, 2002 में पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में आयोजित 'डिवलपमेंट आफ इंडियन इकोनॉमी द पोस्ट रिफॉर्म्स सिनेरियो' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'फेसिंग द चैलेंजिज आफ ग्लोबलाइजेशन : द इंडियन फार्मास्यूटीकल इंडस्ट्री एट क्रासरोड्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. प्रबल राय चौधरी ने जनवरी, 2003 में ताजमहल होटल, मुम्बई में आई.आई.टी. दिल्ली और आई.बी.एम. इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'इंटरनेशनल गेम थीअरि' सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में अन्य विद्वानों के साथ–साथ नोबल पुरस्कार विजेता जॉन नैश और आमर्त्य सेन ने भाग लिया।

7. गुरबचन सिंह ने 25 मार्च, 2003 को दिल्ली स्कूल आफ इकोनामिक्स में आयोजित 'फाइनेंशियल इंटरमेडिएशन ऐंड इंप्लायमेंट' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा मनोज पंत और प्रबल राय चौधरी के साथ मिलकर आलेख प्रस्तुत किया।

8. गुरबचन सिंह ने 18 फरवरी, 2003 को आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र, सा.वि.सं./जेएनयू में आयोजित 'फाइनेंशियल इंटरमेडिएशन ऐंड इंप्लायमेंट' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

9. वी.के.एच. जाम्भोलकर ने इंडियन सोसाइटी आफ इंटरनेशनल ला और इंडियन काउंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. लालिमा वर्मा ने 'इंडिया–ईस्ट एशिया रिलेशंस : लर्निंग फ्राम ईच अदर' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'मैनेजिंग रिलेशंस विद नेबर्स : जापान चाइना रिलेशंस : लेशंस फार साउथ एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. एच.एस. प्रभाकर ने 22 जून, 2002 को लाल बहादुर शास्त्री कालेज, सागर में आयोजित सोसियो–इकोनामिक आस्पेक्ट्स आफ ग्लोबलाइजेशन : ट्रेंड्स इन ज़ापान ऐंड इंडिया' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

3. एच.एस. प्रभाकर ने 25 नवम्बर, 2002 को इग्नू–आस्ट्रेलिया उच्चायोग द्वारा आयोजित रिसर्जेंस आफ ईस्ट एशियन रीजनलिज्म ऐंड आस्ट्रेलिया' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

4. डी. वाराप्रसाद शेखर ने 21 नवम्बर, 2002 को जेएनयू में प्रो. गिलबर्ट एतियाने द्वारा आयोजित 'सम रिसेंट ट्रेंड्स आफ चाइना'ज इकोनामी विद रिफ्रेंस टु इंडिया' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

5. डी. वाराप्रसाद शेखर ने 22 नवम्बर, 2002 को जेएनयू में प्रो. गिलबर्ट एतियाने द्वारा आयोजित 'एग्रिकल्चर द फोरगोटन सिस्टर इन एशिया' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

6. डी. वाराप्रसाद शेखर ने 17 जनवरी, 2003 को जेएनयू में प्रो. रिचर्ड बौम द्वारा आयोजित 'यू.एस., चाइना और एशियन सिक्योरिटी' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

7. डी. वाराप्रसाद शेखर ने 27 से 29 जनवरी, 2003 तक इंडिया हेबिटेट सेंटर में इड्सा द्वारा आयोजित 'एशियन सिक्योरिटी ऐंड चाइना 2000–2010' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

8. डी. वाराप्रसाद शेखर ने 27–28 मार्च, 2003 को दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित इंडिया ऐंड ईस्ट एशिया : लर्निंग फ्राम ईच अदर' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. वरुण साहनी ने 14 मार्च, 2003 को राजनीति विज्ञान विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'चैलेंजिज आफ ग्लोबल टेरोरिज्म : इमर्जिंग इश्यूज, पॉलिसीज/स्ट्रेटिजीज ऐंड आप्शंस' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'बिटवीन कॉज ऐंड कनसिक्वेंस : डेलिब्रेट कनफ्यूजंस इन द डेफिनिशन आफ ग्लोबल टेरोरिज्म' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. वरुण साहनी ने 29 नवम्बर, 2002 को 'वुमन इन सिक्योरिटी, कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट ऐंड पीस (विसकाम्प) द्वारा आयोजित 'द चेंजिंग कनटौर्स आफ डिप्लोमेसी' विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया तथा 'कनटेम्पोरेरि ट्रेंड्स इन डिप्लोमेसी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3. वरुण साहनी ने 22–23 अक्टूबर, 2002 को इंस्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज ऐंड अनालिसिस और कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'तीसरी भारत–जर्मन वार्ता' में भाग लिया।

4. वरुण साहनी ने 28 जुलाई, 2002 को नई दिल्ली में यूनिवर्सिटी आफ पेनसिलवानिया इंस्टीट्यूट फार द एडवांस्ड स्टडी आफ इंडिया द्वारा आयोजित 'अल्टरनेटिव इकोनामिक, पॉलिटीकल ऐंड सिक्योरिटी आर्किटेक्चर्स इन साउथ एशिया' विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा 'ब्राजील, इंडिया ऐंड साउथ अफ्रीका : द रोल आफ लार्ज स्टेट्स इन देयर रीजंस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. वरुण साहनी ने 27 अप्रैल, 2002 को 'द इंस्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज ऐंड अनालिसिस, नई दिल्ली की 'अंडर स्टेंडिंग द ग्लोबल इम्पैक्ट' विषयक साप्ताहिक फेलो संगोष्ठी में बाह्य वार्ताकार के रूप में भाग लिया।

6. वरुण साहनी ने 18–19 अप्रैल, 2002 को इंस्टीट्यूट आफ पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज और द कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'न्यूक्लियर स्टेबिलिटी इन सदर्न एशिया' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'न्यूक्लियर डाक्ट्रिन इन सदर्न एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. स्वर्ण सिंह ने 14 सितम्बर, 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में एसोसिएशन आफ पीपल्स आफ एशिया द्वारा आयोजित 'काश्मीर इम्ब्रोग्लियो : ए क्वेस्ट फार एन इक्वीटेबल साल्यूशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'चाइना कनेक्शन आफ इंडिया'ज काश्मीर प्रॉब्लम' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. स्वर्ण सिंह ने 23 से 26 अक्टूबर, 2002 तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में आयोजित 'इंडिया कांग्रेस आफ एशिया–पेसिफिक स्टडीज' के छठे सम्मेलन में भाग लिया तथा 'रिट्रोस्पेक्टिव्स आन 1962 : इंडिया–चाइना वार ऐंड इंडिया'ज यू–टर्न आन काश्मीर' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. अमिताभ सिंह ने 27–28 मार्च, 2003 को रू.म.ए. और पू.यू.अ. केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'एथनो–टेरिटोरियल कंफ्लिक्ट्स इन द सी.आई.एस. : द केस आफ नागोरनो–काराबाख' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. अर्चना श्रीवास्तव ने 17 से 19 मार्च, 2003 तक मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र, काश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर द्वारा आयोजित 'सेंट्रल एशिया : पास्ट ऐंड प्रिजेंट' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'अराल सी : सोवियत लिगेंसी आफ एनवायरनमेंटल डिसट्रक्शन इन सेंट्रल एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3. अर्चना श्रीवास्तव ने 27–28 मार्च, 2003 को रू.म.ए. और पू.यू.अ. केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'एनवायरनमेंटल प्रॉबलम्स ऐंड लाज इन सेंट्रल एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. भास्वती सरकार ने 11 सितम्बर, 2002 को आयोजित केन्द्र की 'द पॉलिटिक्स आफ टेरर : प्रागनोसिस फार रशिया ऐंड सी.आई.एस.' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

5. भास्वती सरकार ने 27–28 मार्च, 2003 को रू.म.ए. और पू.यू.अ. केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू द्वारा आयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'सी.आई.एस. वाट 'एल्स' इट ?' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. गुलशन सचदेवा ने 16 अप्रैल, 2002 को सी.आई.आई., इण्डो–जर्मन एक्सपोर्ट प्रमोशन, कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन और सी.पी.आर. द्वारा आयोजित 'यूरो ऐंड इंडिया : इंप्लिकेशंस फार इंडियन बिजनेस' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'यूरो इंप्लिकेशंस फार डिवलपिंग कंट्रीज' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. गुलशन सचदेवा ने 18 मई, 2002 को गुवाहाटी में पालिसी अल्टरनेटिव्स फार नार्थीस्ट ऐंड कंफ्लिक्ट एलिमिनेशन अवेयरनेस (पेनासिया) द्वारा आयोजित 'असम : ब्ल्यु प्रिंट फार डिवलपमेंट' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'रिजुवेनेटिंग असम इकोनामी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. गुलशन सचदेवा ने 13 नवम्बर, 2002 को फिक्की और सी.आई.आई. द्वारा आयोजित 'इंडिया–क्रोशिया बिजनेस अपरच्युनिटीज विद मि. स्टीपन मेजिक, प्रेसिडेंट आफ द रिपब्लिक आफ क्रोशिया' के पारस्परिक सत्र में भाग लिया।

9. गुलशन सचदेवा ने 18 से 22 नवम्बर, 2002 तक आई.सी.एस.एस.आर. कंपलेक्स, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में आयोजित भारतीय समुद्र अनुसंधान समूह के 'द इंडियन ओशन इन द ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड : क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स आन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' विषयक उद्घाटन सम्मेलन में 'आई.ओ.आर.ए.आर.सी. एट क्रास रोड्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

10. गुलशन सचदेवा ने 11 दिसम्बर, 2002 को फिक्की द्वारा आयोजित 'ग्रोथ थ्रू पार्टनरशिप : डुइंग बिजनेस विद सेंट्रल ऐंड ईस्टर्न यूरोप' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

11. गुलशन सचदेवा ने 19 से 21 दिसम्बर, 2003 तक तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय द्वारा आयोजित 'नार्थ–ईस्ट : चैलेंजिज ऐंड रिस्पांसिज' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'नार्थ–ईस्टर्न इकोनॉमी : पास्ट पॉलिसीज, प्रिजेंट रिएलिटिज ऐंड फ्यूचर पॉसिबिलिटीज' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

12. गुलशन सचदेवा ने 14 फरवरी, 2003 को नई दिल्ली में एशिया पेसिफिक फाउंडेशन आफ कनाडा और सेंटर फार पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'ईस्ट एशिया ऐंड रीजनल कॉपरेशन' विषयक कनाडा–भारत वार्ता में भाग लिया तथा 'इंडियन पर्सपेक्टिव्स आन ईस्ट एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

13. गुलशन सचदेवा ने 4–5 मार्च, 2003 को इंडिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में इंस्टीट्यूट आफ मैनपावर रिसर्च द्वारा आयोजित 'ह्यूमन रिसॉर्स डिवलपमेंट इन द नार्थ–ईस्ट रीजन इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'डिवलपिंग ए न्यू इकोनामिक स्ट्रेटिजी फार द नार्थ–ईस्ट' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

14. गुलशन सचदेवा ने 21 नवम्बर, 2002 को नेशनल फेडरेशन आफ एलुमनी एसोसिएशन ऑफ सोवियत/रशियन एकेडमिक इंस्टीट्यूशंस, कल्चरल डिपार्टमेंट ऑफ द एम्बेसी आफ द रशियन फेडरेशन और मौलाना अबुल

कलाम आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज, कोलकाता द्वारा आयोजित 'इण्डो–रशियन स्ट्रेटिजिक पार्टनरशिप' विषयक संगोष्ठी में 'इण्डो–रशियन ट्रेड ऐंड इकोनामिक रिलेशंस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

15. निर्मला जोशी ने 28 फरवरी से 1 मार्च, 2003 तक इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फार एशिया–पेसिफिक स्टडी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'इंडिया रशिया ऐंड चाइना : ट्राइलेटरल कॉपरेशन , विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

16. निर्मला जोशी ने 17 से 19 मार्च 2003 तक मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र, काश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में आयोजित 'सेंट्रल एशिया : पास्ट ऐंड प्रिजेंट' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'इंडिया ऐंड सेंट्रल एशिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

17. निर्मला जोशी ने 27–28 मार्च, 2003 को रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा ऑफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'ट्रांसकाकेसस ऐंड रीजनल पॉलिटिक्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

18. संजय कुमार पाण्डेय ने 27–28 मार्च, 2003 को रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'रशिया ऐंड सी.आई.एस.' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

18. संजय कुमार पाण्डेय ने 21 नवम्बर, 2002 को नेशनल फेडरेशन आफ एलुमनी एसोसिएशन ऑफ सोवियत / रशियन एकेडमिक इंस्टीट्यूशंस, कल्चरल डिपार्टमेंट आफ द एम्बेसी आफ द रशियन फेडरेशन और मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट आफ एशियन स्टडीज, कोलकाता द्वारा आयोजित 'इण्डो–रशियन स्ट्रेटिजिक पार्टनरशिप' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'इंडिया ऐंड रशिया : बियोन्ड स्ट्रेटिजिक पार्टनरशिप' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

20. संजय कुमार पाण्डेय ने 29–30 जनवरी, 2003 को स्पंदन द्वारा आयोजित 'रोल आफ बंगलादेश इन इनसर्जेंसी इन द नार्थ–ईस्ट' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'अंडरस्टेंडिंग नागा इनसर्जेंसी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

21. शशिकांत झा ने 17 से 19 मार्च, 2003 तक मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र, काश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में आयोजित 'सेंट्रल एशिया : पास्ट ऐंड प्रिजेंट' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'द प्रॉबलम्स आफ स्टेबिलिटी इन सेंट्रल एशिया ऐंड रशिया'ज सिक्योरिटी कंसनर्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

22. शशिकांत झा ने 27–28 मार्च, 2003 को रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू, नई दिल्ली में 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।

23. ताहिर असगर ने 27–28 मार्च, 2003 को रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'सेंट्रल एशिया : ए डिकेड आफ इकोनामिक ट्रांजिशन' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

24. के.बी. ऊषा ने 27–28 मार्च, 2003 को रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू, दिल्ली द्वारा ओयोजित 'सी.आई.एस. : पॉलिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'ग्लोबलाइजेशन, इकोनामिक ट्रांजिशन ऐंड वुमन इन ट्रांसकाकेसिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. आई.एन. मुखर्जी ने 8 अप्रैल, 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित 'ह्यूमन डिवलपमेंट ऐंड ह्यूमन सिक्योरिटी इन साउथ एशिया : एलिमेंट्स आफ ए पॉसिबल रीजनल स्ट्रेटिजी' विषयक क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया तथा 'फाइनेंशियल सिक्योरिटी' विषयक व्याख्यान दिया।

2. के. वारिकू ने 24 जुलाई, 2002 को आई.सी.डब्ल्यू.ए. द्वारा आयोजित 'आफ्टर लोया जिरगा : विदर अफगानिस्तान ? विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

3. के.वारिकू ने 31 जनवरी से 1 फरवरी, 2003 तक मौलाना आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान द्वारा आयोजित 'इंटरनेशनल टेरोरिज्म ऐंड रिलिजस एक्सट्रीमिज्म : चैलेंजिज टु साउथ ऐंड सेंट्रल एशिया' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'रिलिजस एक्सट्रीमिज्म ऐंड टेरोरिज्म इन काश्मीर' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. के. वारिकू ने 8 मार्च, 2003 को इड्सा में आयोजित 'चाइनीज नेशनलिज्म ऐंड युइगर मूवमेंट' विषयक इड्सा संगोष्ठी में भाग लिया।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. गुलशन डायटल ने 28–29 अगस्त, 2002 को लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित 'इंडिया'ज फोरेन पॉलिसी इन द पोस्ट कोल्डवार पीरियड' विषयक डॉ. वी.एस. राम स्मारक संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया : द इनर्जी कांटेक्स्ट' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. गुलशन डायटल ने 16 जुलाई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय में वि.अ.आ. के पुनश्चर्या कोर्स में 2 व्याख्यान दिए।
3. गुलशन डायटल ने 17 जुलाई, 2002 को राजनीति विज्ञान विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय में 'चैलेंजिज आफ ग्लोबलाइजेशन इन वेस्ट एशिया' विषयक व्याख्यान दिया।
4. ए.के. पाशा ने 17 से 19 मार्च, 2003 तक मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र, काश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में आयोजित संगोष्ठी में 'गल्फ स्टेट्स ऐंड सेन्ट्रल एशिया : म्युचुअल सिक्योरिटी पर्सेप्संस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
5. ए.के. पाशा ने 28–29 नवम्बर, 2002 को भारतीय समुद्र अध्ययन केन्द्र, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा हैदराबाद में आयोजित वि.अ.आ. क्षेत्रीय अध्ययन निदेशकों के सम्मेलन में '25 ईयर्स आफ गल्फ स्टडीज, एट एस.आई.एस. जेएनयू' विषयक रिपोर्ट प्रस्तुत की।
6. एस.एन. मालाकार ने 13–14 सितम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, म.प्र. में राजनीति विज्ञान स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसंधान विभाग द्वारा आयोजित पुनश्चर्या कोर्स (राजनीति विज्ञान) में 'इमर्जिंग टेनडेंसीज इन इंटरनेशनल पॉलिटिक्स ऐंड रिलेशंस', विषय पर पाँच व्याख्यान दिए। ये व्याख्यान थे –
   1) एथनीसिटी ऐंड नेशनलिज्म ऐंड इट्स रिलेशन विद इंटरनेशनल सिक्योरिटी – 2 व्याख्यान
   2) ग्लोबलाइजेशन ऐंड इट्स रिलेशन विद इंटरनेशनल सिक्योरिटी – 3 व्याख्यान
7. पी.सी. जैन ने 12 जनवरी को आजाद भवन, आई.सी.सी.आर., नई दिल्ली में जी.ओ.पी.आई.ओ. इंटरनेशनल पी. आई.ओ.ज. ऐंड इंडिया द्वारा आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया।
8. अनवार आलम ने 16–17 दिसम्बर, 2002 को नेहरू अध्ययन केन्द्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा आयोजित 'जवाहरलाल नेहरू ऐंड मॉडर्न इंडिया' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा रूट्स आफ नेहरूवियन सेक्युलरिज्म' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
9. टी. श्रीधर राव ने 12 मार्च, 2003 को सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर में 'टेरोरिज्म ऐंड वायलेंस : इण्डो–पाक रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. आर.के. जैन ने 13 मई, 2002 को इटालियन इंस्टीट्यूट आफ इंटरनेशनल अफेयर्स, रोम, इटली में 'द पॉलिटीकल इकोनामी आफ इंडियन इकोनामिक रिफार्म्स' विषयक व्याख्यान दिया।
2. आर.के. जैन ने जून 2002 में इंस्टीट्यूट फार पॉलिटीकल साइंस, ट्युबिंजन यूनिवर्सिटी, जर्मनी में 'द यूरोपियन यूनियन ऐंड सार्क : इज द ई.यू. ए मॉडल फार साउथ एशिया' विषयक व्याख्यान दिया।
3. चिंतामणि महापात्रा ने 20 दिसम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में "अमेरिकन ग्लोबल रोल इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी", विषयक व्याख्यान दिया।
4. चिंतामणि महापात्रा ने 20 दिसम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में "चेंजिंग यू.एस. पॉलिसी टुवार्ड्स इंडिया", विषयक व्याख्यान दिया।
5. चिंतामणि महापात्रा ने 9 दिसम्बर, 2002 को कालेज आफ नवल वारफेयर, मुम्बई के नवल हायर कमाण्ड ट्रेनिंग कोर्स में 'इण्डो–यू.एस. रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

6. चिंतामणि महापात्रा ने 31 अगस्त, 2002 को कॉलेज आफ काम्बेट्स आर्मी हायर कमाण्ड ट्रेनिंग कोर्स में 'इण्डो–यू.एस. रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

7. चिंतामणि महापात्रा ने अगस्त, 2002 में सोसाइटी फार इंटरनेशनल ला ऐंड डिप्लोमेसी में आई.ई.एस. प्रशिक्षुओं को 'इकोनामिक डिप्लोमेसी' विषयक व्याख्यान दिया।

8. चिंतामणि महापात्रा ने 16 अक्टूबर, 2002 को इण्डो–अमरीकन सेंटर फार इंटरनेशनल स्टडीज, हैदराबाद में वि.अ.आ. पुनश्चर्या कोर्स (एडवांस्ड इंटरनेशनल रिलेशंस) में 'यू.एस. रोल इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स' विषयक व्याख्यान दिया।

9. चिंतामणि महापात्रा ने 16 अक्टूबर, 2002 को इण्डो–अमरीकन सेंटर फार इंटरनेशनल स्टडीज हैदराबाद में वि.अ.आ. पुनश्चर्या कोर्स (एडवांस्ड इंटरनेशनल रिलेशंस) में 'इण्डो–यू.एस. रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

10. चिंतामणि महापात्रा ने 17 अक्टूबर, 2002 को इण्डो–अमरीकन सेंटर फार इंटरनेशनल स्टडीज, हैदराबाद में वि.अ.आ. पुनश्चर्या कोस (एडवांस्ड इंटरनेशनल रिलेशंस) में 'ग्लोबल टेरोरिज्म : काम्बेटिंग द इलुसिव एनिमी' विषयक व्याख्यान दिया।

11. आर.एल. चावला ने फरवरी, 2003 में पी.जी.डी.ए.वी. कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'इंडिया'ज टेंथ फाइव इयर प्लान' विषयक व्याख्यान दिया।

12. आर.एल. चावला ने भारती कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'प्लानिंग ऐंड इंडिया'ज टेंथ प्लान' विषयक व्याख्यान दिया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केंद्र

1. पुष्पेश पंत ने अकादमिक स्टाफ कालेज, देवी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में व्याख्यान दिया।

2. पुष्पेश पंत ने समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय में व्याख्यान दिया।

3. बी.एस. चिमनी ने 31 जनवरी 2003 को विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय में विदेशी राजनयिकों हेतु 32वें कोर्स में "इंटरनेशनल ला : कंटेम्पोरेरि आस्पेक्ट्स", विषयक व्याख्यान दिया।

4. बी.एस. चिमनी ने 13 जनवरी 2003 को विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय में भारतीय विदेशी सेवा के प्रशिक्षुओं को "इंटरनेशनल ला और ह्यूमैनीटेरियन इंटरवेंशन", विषयक व्याख्यान दिए।

5. बी.एस. चिमनी ने 23 दिसम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में 'डब्ल्यू.टी.ओ. ऐंड ग्लोबलाइजेशन' और 'रिफ्यूजीज इन इंटरनेशनल लॉ' विषयक व्याख्यान दिए।

6. बी.एस. चिमनी ने 20 नवम्बर, 2002 को विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय में विदेश राजनीतियों हेतु 31वें प्रोफेशनल कोर्स में 'नेचर ऐंड डिवलपमेंट आफ इंटरनेशनल ला' विषयक व्याख्यान दिया।

7. बी.एस. चिमनी ने 1 अक्टूबर, 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में जेएनयू और आई.सी.आर.सी. द्वारा आयोजित 'द प्रोटेक्शन आफ वुमन इन सिचुएशंस आफ वार ऐंड आर्म्ड कंफ्लिक्ट ऐंड वायलेंस' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'प्रोटेक्शन आफ वुमन अंडर इंटरनेशनल ह्यूमैनिटेरियन लॉ' विषयक व्याख्यान दिया।

8. बी.एस. चिमनी ने 11 सितम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में पाँचवे पुनश्चर्या कोर्स (अन्तर्राष्ट्रीय संबंध) मार्क्सिस्ट थीअरि आफ इंटरनेशनल लॉ ऐंड रिलेशंस विषयक व्याख्यान दिया।

9. बी.एस. चिमनी ने मई, 2002 में विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय में भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों को 'इंटरनेशनल ला ऐंड रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

10. योगेश त्यागी ने फरवरी–मार्च, 2003 में यू.जी.ए. ला स्कूल, एथेंस, जी.ए., यू.एस.ए. के छात्रों के समक्ष मानवाधिकार पर व्याख्यान दिया।

11. योगेश त्यागी ने मार्च, 2003 में द डीन रस्क सेंट, यू.जी.ए. एथेंस, जी.ए., यू.एस.ए. के तत्वावधान में आयोजित व्याख्यान माला में 'द इंटरनेशनल लीगल एप्रोचित फार कंफ्रंटिंग इंटरनेशनल टेरोरिज्म' विषयक व्याख्यान दिया।

12. भरत एच. देसाई ने अप्रैल, 2002 में स्कूल आफ लॉ, ड्यूक यूनिवर्सिटी, डरहम, यू.एस.ए. में व्याख्यान दिया।

13. भरत एच. देसाई ने अप्रैल, 2002 में लीगल डिपार्टमेंट, द वर्ल्ड बैंक, वाशिंग्टन डी.सी., यू.एस.ए. में व्याख्यान दिया।

14. भरत एच. देसाई ने फरवरी, 2003 में फैकल्टी आफ लॉ, यूनिवर्सिटी आफ हांगकांग, हांगकांग में व्याख्यान दिया।

15. भरत एच. देसाई ने फरवरी, 2003 में फैकल्टी आफ लॉ, यूनिवर्सिटी आफ टोकियो, जापान में व्याख्यान दिया।

16. भरत एच. देसाई ने दिसम्बर, 2002 में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, बंगलौर में व्याख्यान दिया।

17. भरत एच. देसाई ने मार्च, 2003 में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, बंगलौर में व्याख्यान दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. वरुण साहनी ने 28 मार्च, 2003 को सेंटर फार प्रोफेशनल डिवलपमेंट इन हायर एज्यूकेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित पुनश्चर्या कोर्स (राजनीति विज्ञान) में "कंटेम्पोरेरि थीअरिज इन इंटरनेशनल रिलेशंस", विषयक व्याख्यान दिया।

2. वरुण साहनी ने 21 मार्च, 2003 को 'इंस्टीट्यूट आफ पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज' नई दिल्ली में 'इंटरनेशनल थीअरी विषयक व्याख्यान दिया।

3. वरुण साहनी ने 22 जनवरी, 2003 को 'इंस्टीट्यूट आफ पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज' नई दिल्ली में 'रिसर्च मेथड्स', विषयक व्याख्यान दिया।

4. वरुण साहनी ने 31 मई, 2002 को डिपार्टमेंट आफ पॉलिटीकल साइंस, यूनिवर्सिटी आफ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया, पर्थ (क्रावले) में 'टेरोरिज्म, न्यूक्लियर वेपंस ऐंड मिलिट्री कंफ्रंटेशन बिटवीन इंडिया ऐंड पाकिस्तान' विषयक व्याख्यान दिया।

5. वरुण साहनी ने 30 मई, 2002 को 'द स्कूल आफ आस्ट्रेलियन ऐंड इंटरनेशनल स्टडीज, डीकिन यूनिवर्सिटी, मेलबोर्न (बरवुड कैम्पस) में 'द इंप्लिकेशंस आफ द वार आन टेरोरिज्म आन साउथ एशियन सिक्योरिटी' विषयक व्याख्यान दिया।

6. वरुण साहनी ने 22 नवम्बर, 2002 को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी भारत में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के 91वें अधिष्ठापन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'मैनेजमेंट आफ डिस्टर्ब्ड एरियाज' विषयक व्याख्यान दिया।

7. वरुण साहनी ने 29 मई, 2002 को सेंटर फार डिफेंस ऐंड स्ट्रेटिजिक स्टडीज, आस्ट्रेलियन डिफेंस कालेज, केनबरा, आस्ट्रेलिया में 'परसेप्शंस आफ द एशिया–पेसिफिक सिक्योरिटी आउट लुक' विषयक व्याख्यान दिया।

8. वरुण साहनी ने 21, 27, 28 जनवरी, 2003 और 17 फरवरी 2003 को विदेश सेवा संस्थान में विदेशी राजनयिकों हेतु आयोजित 32वें प्रोफेशनल कोर्स में 'थीअरीज आफ इंटरनेशनल रिलेशंस', 'रीजनल पावर्स ऐंड सिक्योरिटी' और 'न्यू चैलेंजिज फार डिप्लोमेसी : पॉलिटिको–स्ट्रेटिजिक इश्यूज' विषयक 5 व्याख्यान दिए।

9. वरुण साहनी ने 13 से 24 जनवरी 2003 और 10 फरवरी, 2003 को विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली में भारतीय विदेश सेवा 2002 बैच के प्रशिक्षुओं हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'थीअरिज आफ इंटरनेशनल रिलेशंस, 'ग्रेट पावर्स इन वर्ल्ड पालिटिक्स', 'रीजनल पावर्स ऐंड सिक्योरिटी', 'द अमेरिकास', 'इंडिया–लेटिन अमेरिका' और 'इंडिया, पाकिस्तान ऐंड द वर्किंग आफ डिटेरंस', विषयक 9 व्याख्यान दिए।

10. वरुण साहनी ने 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2002 तक विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली में विदेशी राजनयिकों हेतु आयोजित 31वें प्रोफेशनल कोर्स में 'थीअरीज आफ इंटरनेशनल रिलेशंस' और 'रीजनल पावर्स ऐंड सिक्योरिटी' विषयक 5 व्याख्यान दिए।

11. वरुण साहनी ने 2 से 10 सितम्बर, 2002 तक विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली में भारतीय विदेश सेवा–2001 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों को 'थीअरीज आफ इंटरनेशनल रिलेशंस' 'ग्रेट पावर्स इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स' 'रीजनल पावर्स ऐंड सिक्योरिटी' 'द अमेरिकास और 'इंडिया–लेटिन अमेरिका' विषयक 8 व्याख्यान दिए।

12. स्वर्ण सिंह ने 15 मई 2002 को इंस्टीट्येट रीजनल डे' एडमिनिस्ट्रेशन डे लियोन, लियोन, फ्रांस में 'चाइना–इंडिया–पाकिस्तान : स्ट्रेटिजिक इक्वेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

13. स्वर्ण सिंह ने 16 मई 2002 को इंस्टीट्यूट डे रिलेशंस इंटरनेशनल एट स्ट्रेटिजीज़, पेरिस, फ्रांस में 'चाइना–इंडिया : प्रास्पेक्ट्स फार रिसाल्विंग बार्डर प्रॉब्लम्स', विषयक व्याख्यान दिया।

14. स्वर्ण सिंह ने 16 मई, 2002 को सेंटर डे एतुदेज ए दे रिसर्चिज इंटरनेशनल्स, पेरिस, फ्रांस में 'चाइना–इंडिया रिलेशंस : फ्यूचर प्रास्पेक्ट्स' विषयक व्याख्यान दिया।

15. स्वर्ण सिंह ने 17 मई, 2002 को आसी–21 फ्यूचरीबल्स इंटरनेशनल्स, पेरिस, फ्रांस में 'चाइना–इंडिया रिअप्रोचमेंट – न्यू इनिशिएटिव्स' विषयक व्याख्यान दिया।

16. स्वर्ण सिंह ने 23 अगस्त, 2002 को इंदिरा गाँधी नेशनल सेंटर फार आर्ट, नई दिल्ली में 'चाइना–इंडिया : म्युचुअल इम्प्रेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

17. स्वर्ण सिंह ने 27 अगस्त, 2002 को रक्षा सेवा स्टाफ कालेज, वेलिंगटन, नीलगिरी, तमिलनाडु इंडिया में 'चाइना–इंडिया स्ट्रेटिजिक इक्वेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

18. स्वर्ण सिंह ने 30 अक्टूबर, 2002 को सेना मुख्यालय, सेना भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक दिवसीय 'डिबेटिंग चाइना विषयक ब्रेन स्टॉर्मिंग मीट में 'चाइना एज एन इमर्जिंग पावर ऐंड इट्स रोल इन ए मल्टी–पोलर वर्ल्ड विद स्पेशल रिफरेंस टु साउथ एशिया' विषयक उद्घाटन व्याख्यान दिया।

19. स्वर्ण सिंह ने 9 नवम्बर, 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में तिब्बत स्टडी ग्रुप द्वारा आयोजित 'चेंजिंग फेस आफ तिब्बत' विषयक पेनल परिचर्चा में 'चाइनीज पर्सपेक्टिव्स आन तिब्बत' विषयक व्याख्यान दिया।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. अमिताभ सिंह ने 27 फरवरी, 2003 को रूसी अध्ययन विभाग, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में 'रशिया'ज फारेन पॉलिसी टुवर्ड्स द ईस्ट यूरोपियन नेशंस', विषयक व्याख्यान दिया।

2. अनुराधा चिनॉय ने 4 अगस्त, 2002 को राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, नई दिल्ली में सेन्ट्रल एशिया' विषयक व्याख्यान दिया।

3. अनुराधा चिनॉय ने सितम्बर–अक्टूबर, 2002 को भारतीय विदेश सेवा प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली में 'रशिया ऐंड द वर्ल्ड' विषयक दो व्याख्यान दिए।

4. निर्मला जोशी नेअगस्त, 2002 में राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, नई दिल्ली में 'सेंट्रल एशिया' विषयक व्याख्यान दिया।

5. शम्सउद्दीन ने 17 दिसम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में 'अफगानिस्तान इन द न्यू ग्रेट गेम' विषयक व्याख्यान दिया।

6. शशिकांत झा ने 9 दिसम्बर, 2002 को पी.जी.डी.ए.वी. कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'कांस्टीट्यूशनल डिवलपमेंट ऐंड इंस्टीट्यूशन–बिल्डिंग इन पोस्ट सोवियत रशिया' विषयक व्याख्यान दिया।

7. शशिकांत झा ने 12 दिसम्बर, 2002 को महाराजा कालेज, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार में 'वर्ल्ड पॉलिटिक्स इन द आफ्टरमैथ आफ डिसइंटीग्रेशन आफ द यू.एस.एस.आर.' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. शशिकांत झा ने 14 दिसम्बर, 2002 को राजनीति विज्ञान विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 'द प्रेसिडेंशियल सिस्टम ऐंड पॉलिटिक्स इन रशिया' विषयक व्याख्यान दिया।

9. शशिकांत झा ने 15 फरवरी, 2003 को अकादमिक स्टाफ कालेज, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में पुनश्चर्या कोर्स में 'रशिया'ज सिक्योरिटी कंसर्न्स ऐंड फारेन पॉलिसी बिहेवियर इन द कांटेक्सट आफ नाटो एक्सपांसन ऐंड टेरोरिस्ट चैलेंज आफ्टर सितम्बर 11, 2001' विषयक व्याख्यान दिया।

10. शशिकांत झा ने 27 फरवरी, 2003 को रूसी अध्ययन विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में 'पॉलिटीकल प्रोसेस इन रशिया' विषयक व्याख्यान दिया।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1 गुलशन डायटल ने 24 जुलाई, 2002 को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, नई दिल्ली में 42वें कोर्स में 'ईरान एन असेसमेंट आफ इट्स रोल इन द रीजन ऐंड इंडिया–ईरान रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

2. गुलशन डायटल ने 5 नवम्बर, 2002 को शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली में एन.एन. वोहरा द्वारा संपादित 'हिस्ट्री, कल्चर ऐंड सोसाइटी इन इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया' विषयक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर व्याख्यान दिया।

3. गुलशन डायटल ने 22 जनरवरी, 2003 को विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली में 'रीजनल पॉलिटिक्स आफ वेस्ट एशिया' और 'इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया' विषयक दो व्याख्यान दिए।

4. गुलशन डायटल ने 20–21 फरवरी, 2003 को ऑबजर्वर रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'प्लुरलिज्म, डेमोक्रेसी ऐंड कन्फ्लिक्ट रिजोल्युशन : द सर्च फार स्टेबिलिटी इन साउथ एशिया आफ्टर 9/11' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

5. गुलशन डायटल ने 25 मार्च, 2003 को एकेडमी आफ थर्ड वर्ल्ड स्टडीज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'द वार एगेंस्ट इराक' विषयक व्याख्यान दिया।

6. गुलशन डायटल, 17 फरवरी, 2003 को इंडियन काउंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली में आयोजित 'इण्डो–ईरान रिलेशंस : रिट्रोस्पेक्ट ऐंड प्रॉस्पेक्टस' विषयक संगोष्ठी में पेनल के सदस्य थे।

7. गुलशन डायटल ने 25–26 फरवरी, 2003 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली और सेंटर फार ह्यूमन साइसेंज ऐंड फ्रेडरिक एबर्ट स्टिफतुंग द्वारा आयोजित तीसरी भारत–यूरोप वार्ता में भाग लिया।

8. गुलशन डायटल ने 22 जुलाई, 2002 को एकेडमी आफ थर्ड वर्ल्ड स्टडीज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'जियो पालिटीकल ऐंड सोसियो–इकोनामिक इंप्लिकेशंस आफ यू.एस.ए.'ज इनवाल्वमेंट इन अफगानिस्तान' विषयक संगोष्ठी में 'थर्ड ईरानियन व्यू आफ द डिवलपमेंट्स इन अफगानिस्तान' विषयक व्याख्यान दिया।

9. ए.के. दुबे ने 17 और 18 फरवरी, 2003 को विदेश सेवा संस्थान, अकबर भवन, नई दिल्ली में भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए 'डिवलपमेंट इश्यूज इन अफ्रीका' और 'इंडिया'ज रोल इन अफ्रीका' विषयक व्याख्यान दिया।

10. ए.के. दुबे ने 22 जनवरी, 2003 को विदेश सेवा संस्थान, अकबर भवन नई दिल्ली में विदेशी राजनयिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'अफ्रीका : इंडियन पर्सपेक्टिव' विषयक व्याख्यान दिया।

11. ए.के. दुबे ने 14 अगस्त, 2002 को राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, नई दिल्ली में आयोजित 'स्ट्रेटिजिक नेबर हुड–इंडिया ऐंड साउथ अफ्रीका' विषयक पेनल परिचर्या में भाग लिया तथा व्याख्यान दिया।

12. ए.के. दुबे ने 17 सितम्बर, 2002 को अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शोध पद्धति कार्यशाला में 'आइडेंटिटी इश्यूज इन अफ्रीकन डायसपोरा' विषयक व्याख्यान दिया।

13. ए.के. दुबे ने मार्च, 2003 में जामिया मिल्लिया इस्लामिया में पुनश्चर्या कोर्स में 'अफ्रीकन इश्यूज ऐंड इंटरनेशनल रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

14. ए.के. दुबे ने 9 से 11 जनवरी, 2003 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर पर शिक्षा क्षेत्र विषयक पेनल में एज्यूकेशन एज ए मीन्स फार स्ट्रेंथनिंग डायसपोरा' विषयक व्याख्यान दिया।

15. ए.के. दुबे ने 13 और 14 जून, 2002 को आई.सी.डब्ल्यू.ए., सप्रु हाउस, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'इंडिया ऐंड अफ्रीका : न्यू हॉरिजन' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'डायसपोरा'ज इन इंडिया अफ्रीका रिलेशंस' शीर्षक सत्र में परिचर्चा की।

16. ए.के. पाशा ने ने जुलाई, अगस्त 2002 और फरवरी, 2003 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में 'इंडिया ऐंड वेस्ट एशिया' विषयक 4 व्याख्यान दिए।

17. ए.के. पाशा ने 25 अक्टूबर, 2002 को हेबिटेट इंडिया, नई दिल्ली में आयोजित पेनल परिचर्या में 'द पीस प्रोसस : अरब इजरायली कंफ्लिक्ट' विषयक व्याख्यान दिया।

18. ए.के. पाशा ने 17 फरवरी, 2003 को आई.सी.डब्ल्यू.ए., नई दिल्ली में 'इण्डो–ईरानियन रिलेशंस : रिट्रोस्पेक्ट ऐंड प्रास्पेक्ट्स' विषयक पेनल परिचर्चा में 'कंफ्लिक्ट ऐंड कॉपरेशन बिटवीन इंडिया ऐंड ईरान' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

19. ए.के. पाशा ने 21 मार्च, 2003 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में इंस्टीट्यूट आफ आब्जेक्टिव स्टडीज ऐंड एसोसिएशन आफ इंडियन अफ्रीकेनिस्ट द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'रीजनल इंप्लिकेशंस आफ यू.एस. इनवेशन आफ इराक' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

20. ए.के. पाशा ने 25 मार्च, 2003 को आई.सी.एस.एस.आर. और एकेडमी आफ थर्ड वर्ल्ड स्टडीज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'द फ्यूचर आफ पैलेस्टाइन' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

21. ए.के. पाशा ने 27 फरवरी, 2003 को विदेश मंत्रालय (आर्थिक संबंध), साउथ ब्लाक, नई दिल्ली में जी.सी.सी. स्टेट्स ऐंड कॉपरेशन विद इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन फार रीजनल कॉपरेशन' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

22. एस.एन. मालाकार ने 7 मार्च, 2003 को आयोजित 'अफ्रीकन स्टडीज : इंडियन पर्सपेक्टिव्स' विषयक संगोष्ठी में आलेख प्रस्तुत किया।

23. एस.एन. मालाकार ने भारती कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'सोसियो–इकोनामिक डाइमेंशंस आफ अफ्रीकन लिट्रेचर' विषयक व्याख्यान दिया।

24. एस.एन. मालाकर ने 16 सितम्बर, 2002 को 'इमर्जिंग पैराडिग्मस आफ सोशल कंफिलक्ट्स इन सब सहारन अफ्रीका' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

25. एस.एन. मालाकार ने 9 से 19 सितम्बर, 2002 तक आयोजित शोध पद्धति सम्मेलन/कार्यशाला में व्याख्यान दिए।

26. एस.एन. मालाकार ने अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्यान दिया।

27. अनवार आलम ने 14–15 फरवरी, 2003 को इंडिया इंटर नेशनल सेंटर, नई दिल्ली में इक्वल अपरच्युनिटी ट्रस्ट द्वारा आयोजित 'हिन्दुत्व ऐंड माइनोरिटीज' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'डेमोक्रेटाइजेशन आफ इंडियन मुस्लिम्स : राम रिफ्लेक्शंस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

29. टी. श्रीधर राव ने 9 मार्च, 2003 को आई.बी. ट्रेनिंग स्कूल, नई दिल्ली में 'द इस्लामिक वर्ल्ड : फ्यूचर आफ पाकिस्तान' विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान में आए अतिथि

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. यूरोपीय संसद में पार्टी ऑफ यूरोपियन सोशलिस्ट (पी.ई.एस.) ग्रुप के सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल श्री एनरिक बैरोन के नेतृत्व में केन्द्र में आया।

2. प्रो. ओम कामरा, उपाध्यक्ष, शास्त्री इण्डो–कनाडियन इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम और शास्त्री इण्डो–कनाडियन इंस्टीट्यूट के बीच आगे सहयोग का पता लगाने के लिए केन्द्र में आए।

3. महामहीम उच्चायुक्त, कनाडा कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम, अ.अ.सं. और कनाडा में कुछ अग्रणी कनाडियन अध्ययन कार्यक्रमों के बीच सहयोग के पहलुओं का पता लगाने के लिए केन्द्र में आए।

4. श्री आलम बोकर, अध्यक्ष, एकेडमिक रिलेशन डिविजन, डिपार्टमेंट आफ फोरेन अफेयर्स ऐंड इंटरनेशनल ट्रेड, कनाडा सरकार, 16 जनवरी, 2003 को छात्रों मिलने और कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम द्वारा चलाए जा रहे शोध के कोर्स तथा थ्रस्ट एरिया की जानकारी हासिल करने के लिए कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम में आए।

5. श्री फौस्टो गोडॉय, उपाध्यक्ष, टोकियो में ब्राजील दूतावास, 7 जनवरी, 2003 को लैटिन अमरीकी अध्ययन में 'ब्राजील'स एशिया पॉलिसी' विषयक व्याख्यान देने के लिए आए।

6. श्री वू युएन पाव, उपाध्यक्ष, शोध और मुख्य अर्थशास्त्री, एशिया पेसिफिक फाउंडेशन आफ कनाडा, बैंकावुर, बी.सी. और प्रो. इलियट एल. टेपर, राजनीति विज्ञान विभाग, कार्लटन विश्वविद्यालय 20 फरवरी, 2003 को छात्रों और शिक्षकों से मिलने के लिए कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम में आए।

7. प्रो. इलियट एल. टेपर ने 24 फरवरी, 2003 को कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम अ.अ.सं. में आए और 'मल्टि कल्चरलिज्म इन कनाडा' विषयक व्याख्यान दिया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. विश्व बैंक का एक दल केन्द्र के अर्थशास्त्र प्रभाग में 'ग्लोबल डिवलपमेंट फाइनेंस 2003' विषयक व्याख्यान देने के लिए आया।

पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र

1. प्रो. योशिहारू सुबाय, प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), वासेदा विश्वविद्यालय केन्द्र में आए।

2. प्रो. एस.टी. देवारे 17 जनवरी, 2002 से दो–सत्र के लिए कोरियाई अध्ययन में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. डॉ. मनोज कुमार जोशी (राजनीतिक संपादक और ब्यूरो प्रमुख, टाइम्स आफ इंडिया) को मानसून सत्र–2002 और शीतकालीन सत्र 2003 के लिए केन्द्र में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया।
2. डॉ. बीनो टेस्चके (राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, वाल्स विश्वविद्यालय, स्वानसिया, यू.के.) को केन्द्र में विजिटिंग फेलो के रूप में तीन माह के लिए नियुक्त किया।

पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र

1. प्रो. रिचर्ड बॉम, प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), यू.सी.एल.ए., यू.एस.ए.,निदेशक, इंस्टीट्यूट आफ स्टेटिजिक स्टडीज और निदेशक, सेंटर फार चाइनीज स्टडीज केन्द्र में आए और यू.एस. चाइना ऐंड एशियन सोसायटी विषयक व्याख्यान दिया।
2. प्रो. एस.टी. देवारे, विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में केंद्र में आए और ए.आर.एफ. – एशिया पेसिफिक सिक्युरिटी विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन

1. आर.के. जैन ने 12 सितम्बर, 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान जेएनयू में श्री जे.एन. दीक्षित, पूर्व विदेश सचिव, विदेश मंत्रालय के 'इंडिया, यूरोप ऐंड इण्डो–पाक रिलेशंस : चैलेंजिज ऐंड अपरच्यूनिटीज' विषयक यूरोप फोरम व्याख्यान का आयोजन किया।
2. आर.के. जैन ने 30 सितम्बर, 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू में डॉ. सी. राजा मोहन, संपादक (सामरिक मामले) द हिंदू के 'ट्रेडिंग प्लेसिज : इंडिया ऐंड यूरोप इन द वार अगेंस्ट टेरोरिज्म' विषयक यूरोप फोरम व्याख्यान का आयोजन किया।
3. आर.के. जैन ने 6–7 अक्टूबर, 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू में सेंटर डे साइंसेज ह्यूमैन्स, द ई.सी. डिलिगेशन, फंडाकाओ ओरिएंटे और द कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन के सहयोग से 'इंडिया, द यूरोपियन यूनियन, ऐंड द डब्ल्यू.टी.ओ.' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।
4. आर.के. जैन ने 21–22 नवम्बर, 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में सेंटर डे साइंसेज ह्यूमैन्स, द ई.सी. डिलिगेशन, फंडाकाओ ओरिएंटे और इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के सहयोग से 'इंडिया, यूरोप ऐंड द चेंजिंग डाइमेंशंस आफ सिक्योरिटी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।
5. आर.के. जैन ने 10–11 फरवरी 2003 को मंगलौर विश्वविद्यालय में यूरोपीय आयोग प्रतिनिधि मंडल, फंडाकाओ ओरिएंते, कोनराड एडेन्योर फाउंडेशन और मंगलौर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'द यूरोपियन यूनियन इन ट्रांजिशन : इकोनामी, पॉलिटिक्स, सोसाइटी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।
6. आर.के. जैन ने 20 फरवरी, 2003 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू में महामहीम श्री माइकल कैलियट राजदूत/अध्यक्ष, यूरोपीय आयोग प्रतिनिधिमण्डल के 'इंडिया, द यूरोपियन यूनियन ऐंड साउथ एशिया इन पोस्ट कोल्ड वार इरा' विषयक यूरोप फोरम व्याख्यान का आयोजन किया।
7. आर.के. जैन ने 6 मार्च, 2003 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू में महामहीम राजदूत श्री डोमिनिक गिरार्ड, भारत में फ्रांसीसी राजदूत के 'इंडिया, फ्रांस ऐंड एशिया : चैलेंजिज ऐंड अपरच्यूनिटीज' विषयक यूरोप फोरम व्याख्यान का आयोजन किया।
8. आर.के. जैन ने 31 मार्च, 2003 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू में श्री सी.वी. रंगनाथन, फ्रांस और चीन के पूर्व भारतीय राजदूत के 'इंडिया, यूरोप ऐंड न्यू एप्रोचिज टु सिक्योरिटी : एक्सपेक्टेशंस ऐंड प्रास्पेक्ट्स आफ कॉपरेशन विद यूरोप' विषयक यूरोप फोरम व्याख्यान का आयोजन किया।
9. क्रिस्टोफर एस. राज ने 9–10 मई, 2002 को जेएनयू में कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम, अं.अ.सं. के तहत कनाडियन सेंटर फार फोरेन पॉलिसी डिवलपमेंट, ओटावा के साथ संयुक्त रूप से 'कनाडा'ज ग्लोबल इंगेजमेंट्स इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री श्री आई.के. गुजराल ने किया।
10. क्रिस्टोफर एस. राज ने 'कनाडियन न्यूक्लियर नान–प्रॉलिफ्रेशन पॉलिसी ऐंड पोखरन–I ऐंड–II' विषयक शोध आलेख प्रस्तुत किया।

11. अब्दुल नफे ने अ.अ.सं. के कनेडियन अध्ययन कार्यक्रम के छात्रों और कनेडियन साहित्य, ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच टेली कांफ्रेंसिंग के माध्यम से पुस्तक–पाठन और परिचर्चा के दो सप्ताह के कनेडियन अध्ययन कार्यक्रम का आयोजन किया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. पुष्पेश पंत ने इंडियन एकेडमिक आफ इंटरनेशनल ला डिप्लोमेसी के सहयोग से 'क्लाइमेट चेंज' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
2. वी.के.एच. जम्भोलकर ने संस्थान में संस्थान के राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यक्रम के तहत संगोष्ठी आयोजित की।
3. वी.के.एच. जम्भोलकर ने संस्थान में पहली बार अप्पादोराय स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया।
4. वी.के.एच. जम्भोलकर ने 4 वर्ष के बाद सिसिर गुप्ता स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया।
5. वी.के.एच. जम्भोलकर ने संस्थान स्तर की विभागीय संगोष्ठियों का आयोजन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र

1. सुश्री सिल्वी जुनोड, अध्यक्ष, आई.सी.आर.सी., दक्षिण एशिया ने 5 अप्रैल, 2002 को 'रोल आफ द इंटरनेशनल कमिटी आफ द रेड क्रास इन द वर्ल्ड टुडे' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
2. अ.रा.सं. और नि. केन्द्र तथा द.पू.ए. और द.प.म. प्रभाग, अ.अ.सं. ने संयुक्त रूप से 5 अप्रैल, 2002 को श्री आरनौड डी. एंडुरैन, डायरेक्टर फार इंटलेक्चुअल एक्सचेंज, एशिया–यूरोप फाउंडेशन (ए.एस.ई.एफ.) की 'साउथ ईस्ट एशियन पर्सेप्शंस आफ इलेवंथ सितम्बर' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
3. डॉ. सी. राजामोहन, संपादक (सामरिक मामले) द हिंदू ने 16 अप्रैल, 2002 को 'यू.एस. : इंडिया'ज न्यू नेबर' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
4. डॉ. राधा कुमार, सहायक वरिष्ठ फेलो, विदेश संबंध परिषद, न्यूयार्क, यू.एस.ए. ने 17 सितम्बर, 2002 को 'पार्टीशंस ऐंड पीस प्रोसेसिज : लेशंस लर्न्ड' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
5. डॉ. बीनो टेस्चके, व्याख्याता, राजनीति विज्ञान और अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, वाल्स विश्वविद्यालय, स्वानसिया और विजिटिंग फेलो, अ.रा.सं. और नि. केन्द्र, अ.अ.सं. ने 22 अक्टूबर, 2002 को 'इंटरनेशनल रिलेशंस थीअरि ऐंड द आरिजंस आफ द मॉडर्न सिस्टम्स आन स्टेट्स' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
6. डॉ. मनोज जोशी, राजनीतिक संपादक, द टाइम्स आफ इंडिया और विजिटिंग प्रोफेसर, अ.रा.सं. और नि. केन्द्र, अ.अ.सं. ने 12 नवम्बर, 2002 को 'वाइ कोयरसिव डिप्लोमेसी फेल्ड : द इंडिया पाकिस्तान बैलेन्स ऐंड द लिमिट्स आफ मिलिट्री पावर' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
7. डॉ. स्कॉट डी. सागन, निदेशक, सेंटर फार इंटरनेशनल सिक्योरिटी ऐंड कॉपरेशन, स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. ने 3 मार्च, 2003 को 'द मैडमैन न्यूक्लियर अलर्ट : लेशंस फ्राम द अक्टूबर 1969 क्राइसस' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र

1. गुलशन डायटल ने 27–28 मार्च, 2003 को रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान जेएनयू द्वारा आयोजित 'द सी.आई.एस. : पालिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन' विषयक संगोष्ठी में 'द कैस्पियन सी : लीगल, जियो पॉलिटीकल ऐंड इनर्जी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. ए.के. पाशा ने पश्चिमी एशियाई संगोष्ठियों के संयोजक के रूप मे निम्नलिखित संगोष्ठियां / व्याख्यान आयोजित किए और अध्यक्षता कीं।
   i) प्रो. के. मैथ्यू, संपादक, अफ्रीका त्रैमासिक, आई.सी.सी.आर. 22 अगस्त, 2002 को केन्द्र में आए और 'कंटेम्पोरेरि लीबिया इंप्रेशंस आफ रिसेंट विजिट' विषयक व्याख्यान दिया।
   ii) डॉ. एस. अब्दुल मुनीम पाशा, रीडर, राजनीति विज्ञान विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 5 सितम्बर, 2002 को 'ईरान ऐंड सेंट्रल एशिया : ए डिवलपिंग रिलेशनशिप' विषयक व्याख्यान दिया।
   iii) श्री वी. सुदर्शन, वरिष्ठ पत्रकार, आउटलुक नई दिल्ली ने 13 सितम्बर, 2002 को 'इंडिया ऐंड द इराक क्राइसिस' विषयक व्याख्यान दिया।

iv) श्री एम. हामिद अंसारी, सऊदी अरब में पूर्व भारतीय राजदूत, ने 19 सितम्बर, 2002 को –'सऊदी अरबिया ऐंड द करंट गल्फ क्राइसिस' विषयक व्याख्यान दिया।

v) इराक के राजदूत महामहीम श्री सलाह अल मुख्तार ने 26 सितम्बर, 2002 को डॉ. सी. राजामोहन, के.पी. फेबियन, पूर्व राजदूत के साथ मिलकर 'इराक, यू.एस. ऐंड करंट क्राइसिस इन द गल्फ रीजन' विषयक पेनल परिचर्चा में व्याख्यान दिया।

vi) श्री श्रीधर, वरिष्ठ शोध फेलो, इड्सा, नई दिल्ली ने 10 अक्टूबर, 2002 को 'डिवलपमेंट्स इन अफगानिस्तान : इंप्लिकेशंस फार द पर्सियन गल्फ स्टेट्स' विषयक व्याख्यान दिया।

vii) 7 नवम्बर, 2002 को केन्द्र में सीरिया के राजदूत, डॉ. मोहसिन अल खायर ने 'सीरिया ऐंड कंटेम्पोरेरि डिवलपमेंट्स' विषयक व्याख्यान तथा विजिटिंग प्रोफेसर, प्रो. हाकर विबर्ग, निदेशक, कोपेनहेगन पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट, डेनमार्क ने 'इंटरनल कंफ्लिक्ट्स इन द मिडिल ईस्ट' विषयक व्याख्यान दिए।

viii) डॉ. शाल्वा जे. वेल, हिब्रू विश्वविद्यालय, येरूसल्म ने 20 जनवरी, 2003 को 'इंडियन ज्युइस इन इजराइली सोसाइटी' विषयक व्याख्यान दिया।

ix) डॉ. मुस्तफा अल फिक्की, अध्यक्ष, फोरेन अफेयर्स कमिटी, पीपल्स एसेम्बली, इजिप्ट ने 23 जनवरी, 2003 को केन्द्र में 'कंटेम्पोरेरि इजिप्ट' विषयक व्याख्यान दिया।

x) प्रो. यित्जाक सिचर, पश्चिमी एशिया के प्रति चीन की नीति के इजराइली विशेषज्ञ, ने 30 जनवरी, 2003 को 'चाइना, सऊदी अरबिया ऐंड द गल्फ क्राइसिस' विषयक व्याख्यान दिया।

xi) श्री सिद्धार्थ वरदराजन, टाइम्स आफ इंडिया (ब्यूरो उप प्रमुख) ने 6 फरवरी, 2003 को केंद्र में 'कंटेम्पोरेरि सऊदी अरबिया', विषयक व्याख्यान दिया।

xii) डॉ. हैरोल्ड टेनर, पूर्व अध्यक्ष, कारनेल विश्वविद्यालय ने 25 फरवरी, 2003 को 'करंट डिवलपमेंट्स इन वेस्ट एशिया : यू.एस. पर्सेप्शन' विषयक व्याख्यान दिया।

xiii) श्री सी. राजामोहन, सामरिक मामले, द हिंदू, सुश्री ज्योति मल्होत्रा, इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली, डॉ. एश नारायण राय, समन्वयक, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन, सामाजिक विज्ञान संस्थान, दिल्ली ने ग्लोबलाइजेशन ऐंड पॉलिटीकल रिफार्म्स' विषयक व्याख्यान दिया।

xiv) प्रो. अश्वनी कुमार रे, रा.अ.के., सा.वि.सं. ने 13 मार्च, 2003 को 'क्राइसिस आफ वेस्टर्न रिएलिज्म इन वेस्ट एशिया' विषयक व्याख्यान दिया।

xv) कुवैत के राजदूत महामहीम श्री अब्दुला ए अल मुराद ने 20 मार्च, 2003 को 'कुवैत ऐंड गल्फ क्राइसिस' विषयक व्याख्यान दिया।

xvi) मिश्र के राजदूत महामहीम डॉ. खिरालदीन आब्देल लतीफ ने 27 मार्च, 2003 को 'कंटेम्पोरेरि इजिप्ट' विषयक व्याख्यान दिया।

3. ए.के. पाशा ने 2–3 सितम्बर, 2002 को जेएनयू, नई दिल्ली में प.ए. और अ.अ. केन्द्र द्वारा आयोजित 'टेरोरिज्म इन वेस्ट एशिया : पास्ट, प्रिजेंट ऐंड फ्यूचर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्टी में भाग लिया तथा 'टेरोरिज्म इन वेस्ट एशिया : इंप्लिकेशंस फार इंडिया'ज सिक्योरिटी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. पी.सी. जैन ने 2–3 सितम्बर, 2002 को प.ए. और अ.अ. केन्द्र, अ.अ.सं., जेएनयू द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'टेरोरिज्म इन वेस्ट एशिया – ए सोसियोलॉजीकल पर्सपेक्टिव' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. अनवार आलम ने 29 अगस्त, 2002 को केन्द्र में आयोजित साप्ताहिक संगोष्ठी में 'इस्लाम, वेस्ट ऐंड मल्टि–कल्चरलिज्म' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

6. अनवार आलम ने 2–3 सितम्बर, 2002 को केन्द्र द्वारा आयोजित 'टेरोरिज्म इन वेस्ट एशिया : पास्ट प्रिजेंट ऐंड फ्यूचर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'सोशल ऐंड रीजनल रूट्स आफ इस्लामिक टेरोरिज्म इन इजिप्ट : ए केस स्टडी आफ अल–जामा'स अल–इस्लामिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार / सम्मान / अध्येतावृत्तियां

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. आर.के. जैन को 'रीजनल कॉपरेशन इन द यूरोपियन यूनियन ऐंड साउथ एशिया : लेशंस ऐंड रिलिवेंस आफ यूरोपियन इक्सपिरियंसिज' विषय पर शोध कार्य के लिए जेएनयू यूरोपियन यूनियन अध्ययन कार्यक्रम के अंतर्गत शोध अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।
2. चिंतामणि महापात्रा जनवरी, 2003 में यूनिवर्सिटी आफ देलवारे, यू.एस.ए. के फुलब्राइट स्कॉलर के रूप में चुने गए।
3. क्रिस्टोफर एस. राज को कनाडा में क्षेत्रीय शोध के लिए शास्त्री इण्डो–कनाडियन अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई तथा सेंटर आन फारेन पॉलिसी ऐंड फेडरेलिज्म, वाटरलू यूनिवर्सिटी,, वाटरलू, कनाडा में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में रहे।
   - (क) क्षेत्रीय शोध के दौरान ये तीन विश्वविद्यालयों के कनाडा की विदेश नीति के विशेषज्ञों से मिले : वाटरलू विश्वविद्यालय – प्रो. जॉन इंग्लिश, प्रो. एन्ड्रू कूपर, प्रो. जिम वाकर और प्रो. अशोक कपूर; विलफ्रिड लोरियर विश्वविद्यालय (वाटरलू) : प्रो. फ्रेंक मिलार्ड, प्रो. बलदेव राज, प्रो. अलिस्टेयर एडगर; कार्लटन विश्वविद्यालय (ओटावा) : प्रो. मार्टिन रडनर, प्रो. इलियट टेपर और प्रो. फ्रेंकोइस रोचर।
   - (ख) जेएनयू में कनाडियन अध्ययन कार्यक्रम को उन्नत करने और शोध अनुदान बढ़ाने के लिए कनाडियन डिपार्टमेंट आफ फोरेन अफेयर्स ऐंड इंटरनेशनल ट्रेड के अधिकारियों से बात–चीत की। ये अधिकारी थे : श्री जीन लेबरियर, डायरेक्टर इंटरनेशनल एकेडमिक रिलेशन डिविजन, श्री स्टीवन ली, कार्यकारी निदेशक, कनाडियन सेंटर फार फारेन पॉलिसी डिवलपमेंट।
   - (ग) कनाडा के संसद सदस्य श्री एन्ड्रू तलेग्दी ने मुझे रेजीडेंट प्रोफेसर का दर्जा प्रदान किया तथा हाउस आफ कामंस के पुस्तकालय की सुविधाएं प्रदान की और विदेश मामलों और रक्षा पर बनी स्थायी समिति के शोध स्टाफ से भी बात–चीत का अवसर दिया।

पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. एच.एस. प्रभाकर ने 30 मार्च, 2003 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में 'इण्डो–जापान रिलेशंस : इकोनामिक डाइमेंशंस' विषयक सत्र की अध्यक्षता की।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. एस.के. झा ने मई–जून 2002 में आई.सी.एस.एस.आर. और रशियन एकेडमी आफ साइंसेज़ द्वारा प्रायोजित भारत–रूस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत मास्को का दौरा किया।
2. गुलशन सचदेवा ने मई–जून 2002 में आई.सी.एस.एस.आर. और रशियन एकेडमी आफ साइंसेज द्वारा प्रायोजित भारत–रूस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत मास्को का दौरा किया।
3. गुलशन सचदेवा, अक्टूबर 2002 में प्रथम जेएनयू यूरोपियन यूनियन स्टडीज प्रोजेक्ट,एस.आई.एस. फैकल्टी फेलोशिप के लिए चुने गए।

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. के. वारिकू को मंगोलिया के राष्ट्रपति द्वारा मंगोलियन अध्ययन और भारत–मंगोलिया संबंधों को उन्नत करने के लिए मंगोलिया के 'नैरामदल पदक' (फ्रेंडशिप) से सम्मानित किया गया।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र

1. ए.के. पाशा, अमेरिकन बायोग्राफीकल इंस्टीट्यूट बोर्ड आफ इंटरनेशनल रिसर्च, रेले, नार्थ कैरोलिना यू.एस.ए. ने मेरी 10 पुस्तकों, 10 संपादित पुस्तकों, 18 से अधिक पुस्तकों में प्रकाशित आलेख के लिए मुझे 'मैन आफ द ईयर 2003' के रूप में नामित किया।

मण्डलों / समितियों की सदस्यता

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. अब्दुल नफे, सदस्य, स्टेट ऐंड सोसाइटी इन लेटिन अमेरिका और 'गवर्नमेंट ऐंड पॉलिटिक्स इन कनाडा' पर गठित कोर्स समितियां, राजनीति विज्ञान विभाग, इग्नू; सदस्य, जेएनयू कोर्ट और जेएनयू विद्या परिषद;सदस्य, अं.अ.सं. बोर्ड और सी.ए.एस.आर.;महासचिव, इंडियन सोसाइटी फार लेटिन अमेरिका।

2. आर.के. जैन, नेटवर्क समन्वयक, जेएनयू–यूरोपीय संघ अध्ययन कार्यक्रम।

3. बी. विवेकानंदन, अध्यक्ष, जयप्रकाश फाउंडेशन, नई दिल्ली; अध्यक्ष, शासी परिषद्, अन्तर्राष्ट्रीय सामरिक और विकास अध्ययन केन्द्र, मुम्बई; सदस्य, शासी निकाय, शुमाचेर सेंटर दिल्ली, नई दिल्ली; सदस्य, कार्य समिति, इंडियन सेंटर फार डेमोक्रेटिक सोसियालिज्म, नई दिल्ली; सदस्य, अध्ययन मंडल, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू।

4. आर.एल. चावला ने नवम्बर, 2002 में सामाजिक विज्ञान संकाय, दयाल बाग (सम) विश्वविद्यालय, आगरा की बोर्ड की बैठक में भाग लिया।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. मनमोहन अग्रवाल, दिसम्बर–जनवरी, 2002–2003 में अकादमिक स्टाफ कालेज में आयोजित पुनश्चर्या कोर्स (अर्थशास्त्र) के लिए समन्वयक; सदस्य, समन्वयक समिति, अकादमिक स्टाफ कालेज; सदस्य, सा.वि.सं. और जी. वि.सं. के बोर्ड; केंद्र के कार्यकारी अध्यक्ष (जनवरी–मार्च, 2003)

2. पुष्पेश पंत, सदस्य, मतिदास विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ में कुलपति नियुक्त करने हेतु गठित सर्च समिति; अध्यक्ष, उत्तरांचल में कार्यान्वित की जा रही सहयोगात्मक इंफो–टेक परियोजना पर गठित मॉनिटरिंग समिति; सदस्य, विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तरांचल अ.जा./अ.ज.जा. आयोग पर गठित विषय निर्वाचन समिति।

3. वाई.के. त्यागी, निर्वाचित सदस्य, कार्यपरिषद्, इंडियन सोसाइटी आफ इंटरनेशनल लॉ।

4. अलोकेश बरुआ, सदस्य, संस्थान बोर्ड, अ.अ.सं.; सदस्य, विद्या परिषद्, जेएनयू।

5. ए.एस. रे, सदस्य–सचिव, इंडिया विजन–2020 पर गठित समिति, योजना आयोग, भारत सरकार।

7. वी.के.एच. जम्भोलकर, सदस्य, अध्ययन मण्डल, अ.अ.सं.; समन्वयक, राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यक्रम, अ.अ.सं., जेएनयू।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र

1. सी.एस.आर. मूर्ति, सदस्य, सामाजिक विज्ञान के लिए पाठ्यचर्या सलाहकार समिति, नेशनल इंस्टीट्यूट फार ओपन स्कूलिंग, नई दिल्ली।

2. वरुण साहनी, सदस्य, कार्य समिति, इंस्टीट्यूट फार पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज, नई दिल्ली।

रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा चिनॉय, सदस्य, सलाहकार समिति, थर्ड वर्ल्ड एकेडमी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

2. निर्मला जोशी, सदस्य, वर्ष 2002 से क्षेत्रीय अध्ययन कार्यक्रम पर गठित वि.अ.आ. की स्थायी समिति; (क) गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (25–30 अक्टूबर, 2002) और (ख) आन्ध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापटनम (7–10 जनवरी 2003) की 9वीं योजना की समीक्षा और 10वीं योजना के प्रस्तावों का मूल्यांकन करने के लिए गठित वि.अ.आ. की विशेषज्ञ समिति की सदस्य; सदस्य, विषय निर्वाचन समिति, भारत–युक्रेन मित्रता संघ; विदेशों के साथ भारतीय मैत्री संघ का एक अध्याय।

3. शशिकांत झा, सदस्य, अध्ययन मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सदस्य, सुरक्षा सलाहकार समिति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. आई.एन. मुखर्जी, सदस्य, विद्या परिषद्, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली; सदस्य, शासी मण्डल, भारतीय दक्षिण एशियाई सहयोग परिषद्; सदस्य, संपादकीय मण्डल, साउथ एशिया इकोनामिक जर्नल, इंस्टीट्यूट फार पॉलिसी स्टडीज, कोलम्बो और रिसर्च ऐंड इंफार्मेशन सिस्टम फार नॉन एलाइनड ऐंड अदर डिपलपिंग कंट्रीज, नई दिल्ली; सदस्य, विशेषज्ञ समूह, बिम्सटेक – ई.सी., वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।

2. के. वारिकू, सदस्य, कार्य परिषद्, मौलाना आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता; सदस्य, हिमालय सांस्कृतिक सम्पदा के उन्नयन के लिए गठित सलाहकार समिति, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार; सदस्य, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मण्डल, भारत।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र

1. एस.एन. मालाकार, सदस्य, अध्ययन मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू ।
2. अनवार आलम, सदस्य, एम.ए. समिति, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान।

छात्रों की उपलब्धियां

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. डी वाराप्रसाद शेखर, अरविन्द बालाजी येलेरी, द इम्पैक्ट आफ इकोनामिक रिफार्म्स इन द पोस्ट 1978 अर्बन चाइना : ए केस स्टडी आफ द रिस्ट्रक्चरिंग प्रोसेसिज आफ द स्टेट–आउन्ड एंटरप्राइजेज।
2. डी वाराप्रसाद शेखर, परिमल माया सुधाकर, चाइना'ज न्यूक्लियर पॉलिसी अंडर डेंग जियाओपिंग : 1978–1992.
3. डी वाराप्रसाद शेखर, सैलन दत्ता दास, नार्थ–ईस्ट इंडिया इन साइनो–इंडियन रिलेशंस सिंस 1978.

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केन्द्र

1. के वारिकू, पी–एच.डी. छात्र डॉ. ओइडोव न्यामावा ने अपनी पुस्तक 'मंगोलिया–इंडिया रिलेशंस' प्रकाशित की, नई दिल्ली, पृ. 236, 2003.

कोई अन्य सूचना

अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केंद्र

1. बी. विवेकानन्दन ने अक्टूबर, 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में 'नॉर्डिक वेलफेयर स्टेट्स : लेशंस फार इंडिया' विषयक व्याख्यान दिया।
2. बी. विवेकानन्दन, मई–जून 2002 में सामाजिक अध्ययन विभाग, हेलसिंकी विश्वविद्यालय, फिनलैण्ड में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में रहे।
3. बी. विवेकानन्दन ने दिसम्बर 2002 से फरवरी, 2003 तक इटली, जर्मनी, बेल्जियम, फ्रांस और ब्रिटेन का शोध हेतु दौरा किया।
4. बी. विवेकानन्दन को जून, 2002 में जीन जौरेस फाउंडेशन, पेरिस में गेस्ट आफ आनर से सम्मानित किया।
5. क्रिस्टोफर एस. राज, इलैक्ट्रोनिक मीडिया :
   - (क) 11 जून 2003, "इण्डो–कनाडियन रिलेशंस" सी.के.सी.ओ. (कनाडियन टी.वी.) द्वारा साक्षात्कार।
   - (ख) 20 जनवरी, 2003, "वार क्लाउडस ओवर इराक" दूरदर्शन : सुबह सवेरा कार्यक्रम।
   - (ग) 11 मार्च, 2003 "अमेरिका'ज वार आन टेरोरिज्म", दूरदर्शन पेनल परिचर्चा।
   - (घ) 16 मार्च, 2003, "वार क्लाउडस ओवर इराक" दूरदर्शन : इंडिया दिस वीक।
6. चितामणि महापात्रा, साक्षात्कार :
   - (क) 17 सितम्बर, 2002 को बी.बी.सी. रेडियो पर "यू.एस. पॉलिसी आन काश्मीर" विषयक।
   - (ख) 30 अक्टूबर, 2002 को बी.बी.सी. रेडियो पर "ब्लेकविल'स कॉमेंट आन काश्मीर टेरोरिज्म" विषयक।
   - (ग) 18 सितम्बर, 2002 को राष्ट्रीय सहारा के साथ "इण्डो–यू.एस. रिलेशंस : वाजपेयी'ज विजिट टु यू.एस." विषयक।
   - (घ) 16 अगस्त, 2002 को चैनल फोर टी.वी., लंदन के साथ "कोलिन पावेल'स ट्रिप टु साउथ एशिया" विषयक।

राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र

1. अलोकेश बरुआ ने अकादमिक स्टाफ कालेज में व्याख्यान दिया।
2. गुरबचन सिंह ने रा.अ.वि. और अ.अ.के., अ.अ.सं. में एम.ए. (अर्थशास्त्र) पाठ्यक्रम के निदेशक के रूप में कार्य किया।
3. गुरबचन सिंह ने कई छात्रों को ग्रीष्मकालीन परियोजना कोर्स (एम.ए. अर्थशास्त्र में ऐच्छिक कोर्स) के लिए कई शोध संस्थानों में भेजा। इन्होंने समन्वयक के रूप में कार्य किया। इन संस्थानों में शामिल थे – भारतीय सांख्यिकीय

संस्थान, कोलकाता, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, दिल्ली, राष्ट्रीय लोक वित्त और नीति संस्थान, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, आई.सी.आर.आई.ई.आर., वेस्ट बंगाल, चैम्बर आफ कॉमर्स, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, कोलकाता, द इनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट, आई.सी.आर.ए. और पी.ए. परामर्श समूह।

4. गुरवचन सिंह, एक छात्र जो ग्रीष्मकालीन परियोजना कोर्स करने के लिए बहुत इच्छुक था लेकिन उसको किसी संस्थान में नहीं भेजा जा सका। इसलिए उस छात्र को हमारे प्रभाग में मेरे साथ शोध गतिविधियों में संलग्न किया गया। औपचारिक रूप से, यह नॉन क्रेडिट आधार पर था लेकिन वह छात्र ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में कुछ नई चीजें सीखने के लिए खुश था। उसे डाटा संग्रह, संगत सामग्री पढ़ने, कुछ साहित्य का सर्वेक्षण और साधारण प्रतिगमन विश्लेषण के कार्य में संलग्न किया गया।

5. गुरवचन सिंह ने जनवरी, 2003 में कालेज व्याख्याताओं को पुनश्चर्या कोर्स पढ़ाने के लिए प्रो. एम.एल. अग्रवाल को बुलाया। इन्होंने 3 जनवरी, 2003 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में 'बैंकिंग' विषय पर 2 व्याख्यान दिए।

6. वी.के.एच. जम्भोलकर ने संस्थान की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र

1. सी.एस.आर. मूर्ति, सितम्बर–अक्टूबर, 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में 5वें पुनश्चर्या कोर्स (अन्तर्राष्ट्रीय संबंध) के समन्वयक रहे।

दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केंद्र

1. आई.एन. मुखर्जी ने 23 सितम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 'इंडिया'ज इकोनामिक डिप्लोमेसी' विषयक व्याख्यान दिया।

2. आई.एन. मुखर्जी ने 19 से 21 मार्च, 2003 तक इकोनामिक ऐंड सोशल कमिशन फार एशिया ऐंड पेसिफिक, बैंकाक द्वारा संयोजित बैंकाक एग्रीमेंट के लिए गठित स्थायी समिति के 19वें सत्र में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

3. के. वारिकू ने 'हिमालयन ऐंड सेंट्रल एशियन स्टडीज' विषयक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन जारी रखा।

पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. ए.के. दुबे, 12 जनवरी, 2003 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् में ग्लोबल आर्गेनाइजेशन आफ पीपल आफ इंडियन ऑरिजन (गोपियो इंटरनेशनल) द्वारा प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर पर आयोजित "पीपल आफ इंडियन आरिजन ऐंड इंडिया" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के शैक्षिक संयोजक थे।

2. ए.के. दुबे, 9 से 11 जनवरी, 2003 तक प्रवासी भारतीय दिवस अवसर पर आयोजित 'एज्यूकेशन ऐंड कल्चर सेक्टर' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने के लिए विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित प्रारंभिक समिति के सदस्य।

3. ए.के. पाशा ने 25 जून, 2002, 13 फरवरी, 2003 और 23 मार्च, 2003 को आल इंडिया रेडियो पर 'इराक क्राइसिस ऐंड इजराइली–पैलेस्टाइन कंफ्लिक्ट' विषयक वार्ता कीं।

4. ए.के. पाशा ने 18 मार्च 2003 से 31 मार्च, 2003 तक इराक युद्ध के दौरान जैन टी.वी., ई.टी.वी., डी.डी. सुबह सवेरा, आज तक, सहारा टी.वी., बी.बी.सी. हिंदी और उर्दू रेडियो तथा ईरान टी.वी. पर वार्ता कीं।

5. सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान

विश्वविद्यालय में वर्ष 2001 में स्थापित सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में तीन केंद्र हैं - जैव सूचनाविज्ञान केंद्र, कंप्यूटर केंद्र और संचार एवं सूचना सेवाएं। संस्थान का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और शोध के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर बल देते हुए यह पता लगाना कि विभिन्न क्षेत्रों जैसे जैविक सूचनाओं, भू–वैज्ञानिक सूचनाओं, आर्थिक सूचनाओं आदि में उपलब्ध अद्यतन सूचनाओं का शैक्षिक संदर्भों में कैसे कारगर उपयोग किया जा सकता है। सूचना और प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना से पहले ये केंद्र (जैव सूचनाविज्ञान केंद्र, कंप्यूटर केंद्र और संचार एवं सूचना सेवाएं) स्वतंत्र निकायों के रूप में विद्यमान थे।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

जैव सूचनाविज्ञान केंद्र वर्ष 2000 से एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रहा है। यह देश में चल रहे इस तरह के पांच पाठ्यक्रमों में से एक है। इसका पूरा वित्तपोषण जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा किया जाता है। इस केंद्र का शोध कार्य कंप्यूटेशनल एप्रोचिस जीनोम सिक्वेंस एनालिसिस और मोलिक्यूलर माडलिंग पर केंद्रित है। संस्थान में पी–एच.डी. पाठ्यक्रम वर्ष 2001 में शुरू हुआ और इसी वर्ष से छात्रों को जैव–सूचनाविज्ञान में सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया गया। वर्ष 2002 से सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में ऐसे कोर्स चलाए जा रहे हैं जोकि पूरे जेएनयू छात्र समुदाय के लिए उपलब्ध हैं।

कंप्यूटर केंद्र विश्वविद्यालय के सभी छात्रों को कंप्यूटर तथा इंटरनेट सुविधाएं उपलब्ध कराता है। छात्र इन सुविधाओ का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। कंप्यूटर केंद्र द्वारा समय–समय पर जेएनयू प्रशासनिक कर्मियों के लिए अल्पकालीन प्रशिक्षण कोर्स भी चलाए जाते हैं।

संचार और सूचना सेवाओं द्वारा परिसर में ई.मेल, इंटरनेट और नेटवर्क सेवाओं का 'प्रबन्धन' किया जाता है।

संस्थान अपनी स्थापना के शुरूआती दौर में है और यह विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों में अपनी भूमिका की रूपरेखा तैयार कर रहा है। वर्तमान में मुख्य शिक्षण और शोध कार्यक्रम जैव–सूचना–विज्ञान केंद्र में ही उपलब्ध है। संस्थान की अल्पकालीन योजनाओं के अन्तर्गत सूचनाविज्ञान के प्रयोग का विस्तार अन्य क्षेत्रों, विशेषकर सामाजिक विज्ञानों में किया जाना शामिल है। जैवसूचना विज्ञान केंद्र में मुख्य संकाय सदस्यों के अतिरिक्त, अन्य संस्थानों के संकाय सदस्यों का सहयोग प्राप्त किया जाता है। संस्थान की शोध एवं प्रशिक्षण गतिविधियों में धीरे–धीरे वृद्धि हो रही है। संस्थान के शिक्षकों के शोध आलेख प्रकाशित हो रहे हैं और सेमिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे हैं। जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने हाल ही में जैव सूचना–विज्ञान केंद्र को जैव सूचनाविज्ञान के क्षेत्र में देश के पांच प्रमुख केंद्रों में से एक केंद्र के रूप में वित्तपोषण किया है।

संस्थान अपने स्नातकोत्तर डिप्लोमा और पी–एच.डी. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त, एक ग्रीष्मकालीन शिविर भी चलाता है। इसमें देश के विभिन्न संस्थानों के स्नातक छात्र भाग लेते हैं। जैव सूचनाविज्ञान केंद्र के शोध क्षेत्रों में शामिल है – जीनोमिक्स, डी.एन.ए. एनालिसिस, स्ट्रक्चरल बायोलाजी और मोलिक्यूलर माडलिंग।

कंप्यूटेशनल सुविधाएं

जैव सूचनाविज्ञान केंद्र उत्तरी भारत के रीजनल मोलिक्यूलर माडलिंग केंद्र के अतिरिक्त, प्लांट जीनोम मिरर वेबसाइट का संचालन और प्रचालन भी करता है। केंद्र के पास प्रयोक्ताओं के लिए पर्याप्त स्टोरेज क्षमता, प्रोसेसिंग सामर्थ्य वाले विभिन्न हाई–ऐंड वर्क स्टेशन हैं। इसी तरह, संचार और सूचना सेवाएं केंद्र के पास अनेक सर्वर और कंप्यूटर हैं जो कि नेटवर्क और ई–मेल सुविधाओं के सुचारू रूप से संचालन के लिए आवश्यक हैं। कंप्यूटर सेंटर के पास 30 कंप्यूटर हैं जिन पर छात्र इंटरनेट सुविधाएं प्राप्त करते हैं। इनको शीघ्र ही अद्यतन बनाया जाएगा।

सहयोगात्मक प्रबंध यह संस्थान, विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय से बाहर के अन्य संस्थानों के साथ भरपूर रूप से सहयोग करता है। जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान के शिक्षण कार्यक्रमों में अन्य संस्थानों जैसे भौतिक विज्ञान संस्थान, जीवनविज्ञान संस्थान, जैव प्रौद्योगिकी केंद्र, आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केंद्र के साथ- साथ भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान और दिल्ली के अन्य संस्थानों के शिक्षकों का भी सहयोग प्राप्त किया जाता है।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नये कोर्सों तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरुआत

जैव सूचनाविज्ञान केंद्र शीतकालीन सत्र 2002 में जैव सूचनाविज्ञान में एक आन लाइन कोर्स चला रहा था। इसकी सामग्री जैव विश्वविद्यालय से प्राप्त हो रही थी। इसमें प्रत्येक सप्ताह 2 कक्षाएं लगती थीं। इसमें विश्वविद्यालय के 80 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। इसकी पाठ्य सामग्री विश्वविद्यालय इंटरनेट पर उपलब्ध थी।

संस्थान में पी–एच.डी. पाठ्यक्रम वर्ष 2001 में शुरू हुआ और इसी वर्ष से छात्रों को सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रम (जैव सूचनाविज्ञान) में प्रवेश दिया गया। मानसून सत्र 2002 से सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में ऐसे कोर्स चलाए जा रहे हैं जोकि पूरे जेएनयू छात्र समुदाय के लिए उपलब्ध हैं, तदनुसार इस सत्र से संस्थान विभिन्न संस्थानों के छात्रों के लिए सी++ प्रोग्रामिंग, आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण विषयक कोर्स चला रहा है। आगामी सत्रों में हम मशीनी अनुवाद, नेटवर्किंग और अन्य विषयों पर कोर्स चलाने पर विचार कर रहे हैं।

प्रकाशन

आलेख

1 ए. भट्टाचार्य, एस. घोष, एस. सतीश, एस. त्यागी और एस. भट्टाचार्य, 'डिफ्रेंशल यूज आफ मल्टिपल रिप्लिकेशन आरिजिन्स इन द राइबोसोमल डी.एन.ए. इपिसोम आफ द प्रोटोजोआं पैरासाइट' एन्टामोइबा हिस्टोलिटिका, न्युक्लि. एसिड्स रिस, 31, 2035–2044, 2003.

2 ए.के. लिन, सी.के. पाण्डेय, एस. सिंह, पी. पटनायक, सी.आर. पिल्लई, यू. पिल्लई, एस.के. जैन, सी.ई. चिटनिस, 'बैक्टेरिअली इक्सप्रेस्ड ऐंड रिफोल्डिड रिसेप्टर बाइंडिंग डोमेन आफ प्लाज्मोडियम फाल्सिपेरम इबीए–175 इलिसिट्स इनवेजन इनहिबिटरी एन्टीबाडीज', मोल. बायोकेम पैरासिटोल, अगस्त 7, 123 (1). 23–33, 2002.

3 आर. रामास्वामी, आर.के. आजाद, जे. सुब्बाराव और डब्ल्यू ली., 'सिंप्लिफाइंग द मोसाइक डिस्क्रिप्शन आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस" फिजिकल रिव्यू, ई–66, 031913, 2002.

4 आर. रामास्वामी, जे.एस. हंजन और एस. सरकार, 'ग्लोबल आप्टिमाइजेशन आन एन इवोल्विंग लैण्डस्केप', फिजिकल रिव्यू, ई–66, 046704, 2002.

5 आर. रामास्वामी, 'सिमेट्री–ब्रीकिंग इन लोकल लियापुनोव इक्सपोनेन्ट', यूरोपियन जर्नल आफ फिजिक्स, बी–29, 339–343, 2002.

6 आर. रामास्वामी, 'फेज आर्डरिंग ऐट क्राइसिस', (एम. श्रीमाली के साथ), फिजिक्स लेटर्स, ए–295, 273, 2002.

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1 आर. रामास्वामी, डी.एस.टी. – डाड परियोजना (प्रो. यू. फ्युडल, कार्लवान ओसिटजिकी यूनिवर्सिटी ओल्डनबर्ग के साथ), स्ट्रेन्ज नानकेआटिक अट्रेक्टर्स, आरिजिन्स, करेक्ट्राइजेशन ऐंड ऐप्लिकेशंस.

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1 आर. रामास्वामी, 'डायनेमिक्स आफ फ्रेक्टल नानकेआटिक अट्रेक्टर्स', विषयक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना, 2001–04.

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1 ए. भट्टाचार्य ने मई, 2002 में हिंकस्टन, यू.के. में आयोजित, 'एमिटोकोंड्रिएट प्रोटोजोआं जिनोम सिक्वेंसिंग प्रोजेक्ट्स (ई. हिस्टोलिटिका, टी. वैजिनालिस, ऐंड जी. लम्बलिया)', विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

2 ए. भट्टाचार्य ने मार्च 2003 में डिपार्टमेंट आफ बायोकेमिस्ट्री, विजमान इंस्टीट्यूट आफ साइंस, रिहोवोट, इजराइल में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

3 आर. रामास्वामी ने 28 से 29 नवम्बर, 2002 तक हनोई, वियतनाम में आयोजित, 'सिम्युलेशन ऐंड माडलिंग फिजिक्स', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'अनकवरिंग द मोसाइक : सेगमेंटेशन एनालिसिस आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1 ए. भट्टाचार्य ने फरवरी, 2003 में शरीर रचना विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में आयोजित जैव प्रौद्योगिकी विभाग की कार्यशाला में भाग लिया।

2 ए. लिन ने दिसम्बर, 2002 में बंगलौर में आयोजित, 'हाई पर्फार्मेन्स कंप्युटेशन', विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

3 आर. रामास्वामी ने 13 जुलाई, 2002 को बंगलौर में आयोजित, 'रिसेंट एडवांसिस इन नानलिनियर डायनेमिक्स', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'द थर्मोडायनेमिक्स आफ स्ट्रेन्ज नानकेआटिक अट्रेक्टर्स', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4 आर. रामास्वामी ने 16 अगस्त, 2002 को पुणे में आयोजित, 'जिनेटिक एल्गोरिथम्स इन बायोइन्फार्मेटिक्स, विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा 'जिओमेट्री आप्टिमाइजेशन', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5 आर. रामास्वामी ने 2 दिसम्बर, 2002 को चेन्नई में आयोजित, 'रोबस्टनेस, इमर्जेन्ट बिहेवियर ऐंड पैटर्न फार्मेशन इन बायोलाजिकल सिस्टम्स', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'एन्ट्रोपिक एनालिसिस आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस : अनकवरिंग द मोसाइक', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6 आर. रामास्वामी ने 17 से 19 जनवरी, 2003 तक आई.ए.सी.एस. कोलकाता में आयोजित, 'ट्रेन्ड्स इन थीअरेटिकल केमिस्ट्री', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'स्ट्रक्चर आप्टिमाइजेशन', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7 आर. रामास्वामी ने 20 से 21 जनवरी, 2003 तक खड़गपुर में आयोजित, 'मोलिकुलर इलेक्ट्रानिक स्ट्रक्चर ऐंड डायनेमिक्स 2003', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'फाइंडिंग जीन्स इन डी.एन.ए.' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8 आर. रामास्वामी ने 21 से 24 जनवरी, 2003 तक आई.ए.सी.एस. कोलकाता में आयोजित, 'थीअरेटिकल फिजिक्स 2003', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'क्रिटिकल लोकेलाइजेशन ऐंड क्रिटिकल स्ट्रेन्ज नानकेआटिक अट्रेक्टर्स : द हार्पर इक्वेशन', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9 आर. रामास्वामी ने 22 से 23 फरवरी, 2003 तक टी.आई.एफ.आर. मुम्बई में आयोजित, 'प्रोटीन एग्रीगेशन ऐंड एसोसिएशन', विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

10 आर. रामास्वामी ने 28 फरवरी, 2003 को आई.आई.टी., कानपुर में आयोजित, 'कंडेंस्ड मैटर डेज', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'फाइंडिंग जीन्स (ऐंड अदर थिंग्स) इन डी.एन.ए. (ऐंड अदर बायोलाजिकल) सिक्वेंसिस', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

11 आर. रामास्वामी ने 20 से 22 मार्च, 2003 तक एस.आई.एन.पी., कोलकाता में आयोजित, 'अनकनवेंशनल एप्लिकेशंस आफ स्टेटिस्टिकल मकेनिक्स', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'एन्ट्रोपिक एनालिसिस आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस : अनकवरिंग द मोसाइक', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

1 ए. कृष्णामाचारी ने जनवरी 2003 में पांडिचेरी विश्वविद्यालय में 'प्रमोटर प्रिडिक्शन इन प्रोकारयोट्स', विषयक व्याख्यान दिया।

2 ए. कृष्णामाचारी ने 2003 में बिरला इंस्टीट्यूट आफ साइंटिफिक रिसर्च, जयपुर में, 'एप्लिकेशन आफ मार्कोव चेन ऐंड हिडन मार्कोव माडल्स इन बायोइन्फार्मेटिक्स' विषयक व्याख्यान दिया।

3 ए. कृष्णामाचारी ने 23 फरवरी 2003 को गुरूनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में, 'जीन ऐंड जिनोम सिक्वेंस एनालिसिस', विषयक व्याख्यान दिया।

4 आर. रामास्वामी ने 6 से 7 मई तक आई.सी.जी.ई.बी., नई दिल्ली में, 'मार्कोव माडल्स' विषयक व्याख्यान दिया।

5 आर. रामास्वामी ने 1 से 9 अक्टूबर, 2002 तक सेंट स्टीफन्स कालेज, दिल्ली में, 'थीअरेटिकल फिजिक्स', विषयक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।

6 आर. रामास्वामी ने 25 से 27 नवम्बर, 2002 तक हनोई, वियतनाम में, 'सिम्युलेशन ऐंड माडलिंग फिजिक्स', विषयक व्याख्यान दिया।

7 आर. रामास्वामी ने 3 दिसम्बर, 2002 को मद्रास स्कूल आफ इकोनामिक्स, चेन्नई में, 'सेल्फ आर्गेनाइज्ड क्रिटिकेलिटी', विषयक व्याख्यान दिया।

8 आर. रामास्वामी ने 4 दिसम्बर, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नई दिल्ली; 5 दिसम्बर, 2002 को कमला नेहरू कालेज, नई दिल्ली; 12 दिसम्बर, 2002 को श्री वेंकटेश्वर कालेज, नई दिल्ली; 13 दिसम्बर, 2002 को लेडी श्रीराम कालेज, नई दिल्ली, 28 मार्च को साउथ कैम्पस, दिल्ली विश्वविद्यालय में, 'बायोइनफार्मेटिक्स' विषयक व्याख्यान दिए।

9 आर. रामास्वामी ने 11 दिसम्बर, 2002 को खालसा कालेज, नई दिल्ली, 17 दिसम्बर, 2002 को आचार्य नरेन्द्र देव कालेज, नई दिल्ली में 'केआस', विषयक व्याख्यान दिया।

10 एन. सुब्बाराव ने 6 से 10 जनवरी, 2003 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में एम.एस.सी. छात्रों (बायोकेमिस्ट्री) को बायोइनफार्मेटिक्स से संबंधित 8 व्याख्यान दिए।

संस्थान में आए अतिथि

1 इंस्टीट्यूट आफ साइटोलाजी ऐंड जिनेटिक्स, साइबेरियन ब्रांच आफ द रशियन अकादमी आफ साइंसिस, रूस का प्रतिनिधि मण्डल संस्थान में आया।

2 इलिनोइस विश्वविद्यालय, अमेरिका के प्रोफेसर आनन्द चक्रबर्ती संस्थान में आए।

संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला

1 संस्थान ने साउथ कैम्पस दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से, 'बायोलाजिकल डाटाबेस ऐंड डाटा माइनिंग', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

2 संस्थान ने 13 से 14 दिसम्बर, 2002 तक, 'मोलिकुलर माडलिंग ऐंड ड्रग डिजाइन', विषयक कार्यशाला आयोजित की।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1 ए. कृष्णामाचारी, सदस्य–सचिव, 'डोइआक' समिति (संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार) 'डोइआक' करिकुला के तहत, 'इंट्रोडक्शन आफ बायोइनफार्मेटिक्स कोर्सिस', के लिए गठित समिति।

6. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान उच्च स्तरीय शिक्षण और शोध के लिए अपनी विशिष्ट भूमिका निभाता रहा है। संस्थान को विदेशी भाषाओं के शिक्षण के लिए देश भर में ख्याति प्राप्त है। संस्थान के विभिन्न अध्ययन केंद्रों में विभिन्न भारतीय व विदेशी भाषाओं और साहित्यों और भाषा विज्ञान, दर्शनशास्त्र और अनुवाद में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध अध्ययन पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। संस्थान विभिन्न भाषाओं में सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाता है। संस्थान में अन्तरविषयक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य से भिन्न–भिन्न विषयों में टूल/वैकल्पिक कोर्स भी चलाए जाते हैं। संस्थान शैक्षिक उद्देश्यों के लिए भाषायी क्षमता को उन्नत करने के इच्छुक छात्रों के लिए अंग्रेजी भाषा में एक उपचारात्मक कोर्स भी चलाता है। यह कोर्स बहुत ही सफल रहा है। संस्थान भाषा विज्ञान, साहित्य और संस्कृति के अध्ययन क्षेत्रों में उच्च स्तरीय विद्वान और अन्तर्राष्ट्रीय पहचान के अनुवादक और दुभाषिये तैयार करता है। संस्थान को अपने विभिन्न पाठ्यक्रमों और शिक्षण/अर्जन एवं शोध की गुणवत्ता पर गर्व है।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

भारतीय भाषा केन्द्र

भारतीय भाषा केंद्र की स्थापना विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामाजिक रूप से संगत और बौद्धिकता की दृष्टि से उच्च शोध एवं अध्ययन करने की दृष्टि से की गई थी। केंद्र का अन्तर्निहित लक्ष्य ज.ने.वि. और भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान की सामान्य शिक्षण पद्धति के अनुरूप अन्तर्विषयक और तुलनात्मक अध्ययन विकसित करना था

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

अनुवाद और भाषान्तरण : अनुवाद की समस्याओं के प्रति अनुभवजन्य विचारधारा को समाप्त करने की दृष्टि से अनुवाद और भाषान्तरण को एक विशिष्ट विषय के रूप में माना जाता है। इंट्रोडक्शन टु ट्रांसलेशन : थीअरि ऐंड प्रेक्टिस, एडवांस्ड कोर्स इन ट्रांसलेशन : थीअरि ऐंड प्रेक्टिस, कोर्स इन टर्मिनोलाजी, हिस्ट्री आफ ट्रांसलेशन, ट्रांसलेशन इन फ्रेंच आफ इण्डियन लिट्रेरी वर्क्स, कंसिक्यूटिव इंटरप्रिटेशन, साइमल्टेनियस इंटरप्रिटेशन। फिल्मों की डबिंग और सबटाइटलिंग पर एक कोर्स तथा कंप्यूटर द्वारा अनुवाद और शब्दावली पर एक कोर्स विकसित करने का प्रस्ताव है।

यह निम्नलिखित फ्रेंकाफोन साहित्यों में विशेषीकृत कोर्स चलाने वाला देश में एक अग्रणी केंद्र है : यूरोपीयन फ्रेंकाफोन लिट्रेचर, नार्थ अमेरिकन फ्रेंकाफोन लिट्रेचर : कनाडा, फ्रेंकाफोन लिट्रेचर आफ सब–सहारन अफ्रीकन ऐंड कैरेबियन आइलैण्ड कंट्रीज, नार्थ अफ्रीकन फ्रेंकाफोन लिट्रेचर : मगरेबियन कंट्रीज, फ्रेंकाफोन लिट्रेचर आफ इण्डियन ओशन, फ्रेंकाफोन लिट्रेचर आफ एशिया पेसिफिक कंट्रीज ऐंड कन्टेम्पोरेरि इण्डियन लिट्रेचर इन फ्रेंच। केंद्र के इन थ्रस्ट एरिया को और अधिक सुदृढ़ बनाने की जरूरत है।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

केंद्र ने जर्मन अध्ययन को संस्कृति अध्ययन का अभिन्न अंग मानते हुए अपने अन्तरविषयक शिक्षण एवं शोध कार्यक्रमों को विकसित करना जारी रखा। इसमें जर्मन भाषी देशों तथा भारत के बीच संस्कृति के क्षेत्र में तुलनात्मक और सांस्कृतिक अध्ययन, अनुवाद और सामाजिक राजनीतिक प्रक्रियाओं में हो रहे नव परिवर्तनों से उभरते हुए नए क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए विदेशी भाषा के रूप में जर्मन और इससे सम्बन्धित भाषा विज्ञान की शिक्षण पद्धति शामिल है।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केंद्र दो अलग–अलग एम.ए. पाठ्यक्रम चलाता है – एक अंग्रेजी में और दूसरा भाषा विज्ञान में।

केंद्र का एम.फिल. और पी–एच.डी. पाठ्यक्रम भी अन्तर्विषयक और पारविषयक प्रकृति का है, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों में सैद्धान्तिक और तुलनात्मक शोध कार्य कराया जाता है। केंद्र के थ्रस्ट एरिया निम्न प्रकार से हैं :

1. अंग्रेजी में अफ्रीकी लेखन, अंग्रेजी में आस्ट्रेलियाई लेखन, अंग्रेजी में कनाडियन लेखन, अंग्रेजी में भारतीय लेखन और अंग्रेजी में पश्चिमी भारतीय लेखन सहित अंग्रेजी में नए साहित्य
2. भारतीय और यूरोपीय साहित्य सिद्धान्त और विभिन्न साहित्यिक कृतियों पर उनके अनुप्रयोग।

3. सांस्कृतिक अध्ययन और संकेत विज्ञान
4. साहित्यिक अनुवाद, सिद्धान्त और व्यवहार।
5. भारतीय और यूरोपीय व्याकरणिक परम्पराओं सहित विभिन्न बौद्धिक परम्पराओं का तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन
6. अब तक अवर्णित भाषाओं के वर्णन में ध्वन्यात्मक, स्वरवैज्ञानिक और व्याकरणिक विवरण सहित भाषा का आनुभविक अध्ययन
7. सामान्य और अनुप्रयुक्त वाक विज्ञान में शामिल हैं – अप्रचलित भाषाओं के स्वनिक वर्णन, एफ.एफ.टी. और सिग्नल प्रोसेसिंग, वाक विकृति विज्ञान में स्वन विज्ञान के अनुप्रयोग, विदेशी भाषा शिक्षण और लिपि तथा वर्तनी का मानकीकरण, वक्ता पहचान अध्ययन और न्यायिक विज्ञान।
8. तंत्रिका ज्ञानात्मक भाषा विज्ञान अध्ययन में शामिल हैं – प्रारम्भिक वाक और भाषा अर्जन, सामान्य और विलंबित अर्जन, शिशु भाषा पर डाटाबेस अध्ययन, वाक और भाषा विज्ञान, वाचाघात शास्त्र – गूंगापन और वाचाघात में भाषा का पुनः अर्जन।
9. अनुवाद अध्ययन और शब्दकोश विज्ञान अध्ययन सहित अनुप्रयुक्त भाषा अध्ययन
10. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त और व्यवहार, मातृभाषा, द्वितीय/विदेशी भाषा के रूप में भाषा शिक्षण से सम्बन्धित मुद्दे, व्यतिरेकी विश्लेषण, त्रुटि विश्लेषण में अध्ययन और अधिगम भाषा अध्ययन

दर्शनशास्त्र ग्रुप

आधुनिक पाश्चात्य दर्शनशास्त्र, उत्तर आधुनिक दर्शनशास्त्र और भारतीय दर्शनशास्त्र

सहयोगात्मक प्रबन्ध

चीनी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

केंद्र ने चीनी दूतावास के शिक्षा अधिकारी के सहयोग से शीतकालीन सत्र 2003 के दौरान 'चीनी ब्रिज' विषयक प्रतियोगिता का आयोजन किया।

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

केंद्र का फ्रेंच भाषी देशों के विश्वविद्यालयों के साथ कोई औपचारिक समझौता नहीं है। फिर भी, पिछले कई वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में परस्पर सहयोग के लिए कनाडा, बेल्जियम, स्विटजरलैण्ड, मारीशस आदि देशों के विश्वविद्यालयों के साथ सम्पर्क चल रहा है। भारत–फ्रेंच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष केंद्र में सुप्रसिद्ध इकोल नार्मेल, सुपिरियरे इन फ्रांस से एक फ्रेंच विशेषज्ञ भेजा जाता है।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

केंद्र का जर्मन भाषा देशों के विश्वविद्यालयों के साथ कोई औपचारिक समझौता नहीं हुआ है। फिर भी, पिछले कई वर्षों से साल्जवर्ग, ग्रेज, वियना (आस्ट्रिया), गोटिंगन, बर्लिन, डुइसबर्ग और कोनस्टांज (जर्मनी) के विश्वविद्यालयों के साथ परस्पर सहयोग के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए सम्पर्क बना हुआ है।

दर्शनशास्त्र ग्रुप

दर्शनशास्त्र ग्रुप का संस्थान के अन्य केंद्रो – जर्मन अध्ययन केंद्र, जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र, इस्पानी अध्ययन केंद्र, फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केंद्र, भाषाविज्ञान और अंग्रेजी केंद्र तथा सामाजिक विज्ञान अध्ययन संस्थान के दर्शनशास्त्र केंद्र और संस्कृत अध्ययन केंद्र के साथ निरन्तर रूप से परस्पर सहयोग चल रहा है। ग्रुप, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और सभ्यता अध्ययन केंद्र के साथ मिलकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन में परस्पर सहयोग करता रहा है।

वर्तमान कोर्सो में संशोधन और नए कोर्सो तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

भारतीय भाषा केन्द्र

केंद्र ने साहित्यिक अध्ययन के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम विकास को ध्यान में रखते हुए हिन्दी और उर्दू के एम.ए. और एम.फिल. कोर्सो में संशोधन किया है।

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

केंद्र ने मात्र दो वर्ष पहले अपने कोर्सों की पुनर्रचना की थी।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

केंद्र ने पश्चिमी यूरोपीय भाषाओं के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की प्रारूप पाठ्यचर्या को ध्यान में रखते हुए एम.ए. पाठ्यक्रम की रूपरेखा में संशोधन किया है। साहित्य और अनुवाद के कुछ कोर्सों की पहचान अनिवार्य कोर्सों के रूप में की गई है। छात्रों को अब प्रत्येक सत्र में केंद्र द्वारा चलाए जा रहे कोर्सों में से एक या दो अन्य अनिवार्य कोर्स चुनने का विकल्प होगा।

एम.फिल स्तर के चार अनिवार्य कोर्सों में से केवल 'थीअरि ऐंड रिसर्च मैथडालाजी' शीर्षक कोर्स को अनिवार्य कोर्स माना गया है। अन्य तीन कोर्सों के लिए छात्र को केंद्र द्वारा निर्धारित कोर्स सूची में से अपनी इच्छानुसार कोर्स चुनने का विकल्प उपलब्ध होगा।

केंद्र ने एम.ए. स्तर पर 'थीअरि ऐंड हिस्ट्री आफ ओरल कल्चर स्टडीज' शीर्षक एक नए कोर्स का प्रस्ताव किया है जिसे भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के अध्ययन मण्डल द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. लैंग्वेज, माइंड ऐंड ब्रेन – एम.ए. भाषा विज्ञान
2. डिवलपमेंटल साइकोलिंग्विस्टिक्स – एम.ए. भाषा विज्ञान
3. न्यूरोलिंग्स्टिक्स ऐंड लैंग्वेज डिसार्डर्स, एम.ए. भाषा विज्ञान
4. न्यूरोकागनिटिव लिंग्विस्टिक्स, एम.फिल.
5. लिट्रेचर ऐंड एलाइड आर्ट्स : सिनेमा – एम.ए. अंग्रेजी
6. क्लोनिअल डिस्कोर्स/पोस्ट क्लोनिकल स्टडीज – एम.ए. अंग्रेजी
7. क्लोनिअल डिसकोर्स/पोस्टक्लोनियल स्टडीज–II, एम.ए. अंग्रेजी
8. लिट्रेचर आफ क्लोनिअलिज्म/डीपक्लोनाइजेशन, एम.फिल. अंग्रेजी
9. रीडिंग्स इन अमेरिकन लिट्रेचर, एम.फिल. अंग्रेजी
10. अफ्रीकन अमरीकन लिट्रेचर – एम.फिल. अंग्रेजी
11. सिमिओटिक ऐंड पोस्ट स्ट्रक्चरलिज्म एम.फिल.

अ.जा./अ.ज.जा. और पढ़ाई में कमजोर अन्य छात्रों के लिए विशेष उपचारात्मक कोर्स

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केंद्र

केंद्र अ.जा./अ.ज.जा. और शैक्षिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए फ्रेंच भाषा में उपचारात्मक कोर्स चलाता है।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

केंद्र अ.जा./अ.ज.जा. और शैक्षिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए अंग्रेजी में विशेष उपचारात्मक कोर्स चलाता है। प्रत्येक सत्र में इस कोर्स में औसतन 60 छात्र भाग लेते हैं यह एक सफल कोर्स है। इस कोर्स में अंग्रेजी भाषा को पढ़ने के बाद छात्रों में काफी विश्वास उत्पन्न हो जाता है।

प्रकाशन

पुस्तकें

चीनी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. एम. भट्टाचार्य, (सह अनुवादक), प्रोटेक्शन आफ मलबेरि प्लांट्स, चीनी पाठ का अंग्रेजी अनुवाद, आक्सफोर्ड और आई.बी.एस. कं. प्रा. लि., नई दिल्ली, 2003

भारतीय भाषा केन्द्र

1. मोहम्मद शाहिद हुसैन, अबलगियात, एज्यूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, जनवरी, 2003, लाल कुआँ
2. मीर भारत तलवार, 'रस्साकशी', सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 408, 2002
3. एस.एम. अनवार आलम, 'अदबी जेहात' देशराज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, नवम्बर, 2002
4. गोविन्द प्रसाद, 'कविता के सम्मुख', वाणी प्रकाशन, दरियागंज, 2002

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. साधना नैथानी फोकटेल्स फ्राम नार्दर्न इण्डिया, बाई विलियम क्रूक ऐंड पण्डित राम गरीब चौबे, सांता बारबरा, आक्सफोर्ड, ए.बी.सी. – सी.एल.आई.ओ. 2002

जापानी और उत्तर पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. अनिता खन्ना, जापानी साहित्य, प्रकाशक बी.आर.पी.सी., दिल्ली, वर्ष 2002 (इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु सनटोरी फांउडेशन, जापान द्वारा अनुदान राशि प्रदान की गई)

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. कपिल कपूर, नालेज, इंडिविजुअल ऐंड सोसायटी इन इण्डियन ट्रेडिशन, सैनी स्मारक फांउडेशन व्याख्यान, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 2002 (मोनोग्राफ)
2. मकरंद प्रांजपे, (हर्ष दिहेजिआ), सौंदर्य : द पर्सेप्शन ऐंड प्रेक्टिस आफ ब्युटी इन इण्डिया', नई दिल्ली, सम्वाद इण्डिया फाउंडेशन, 2003
3. नवनीत सेठी, वूमन ऐज सीन बाई वूमन : ए स्टडी आफ अफ्रीकन–अमरीकन वूमन राइटर्स, रिलायंस पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2003

दर्शनशास्त्र ग्रुप

1. आर.पी. सिंह, एप्लाइड फिलास्फी, प्रस्तावना, प्रो. डी.पी. चट्टोपाध्याय द्वारा ओम पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2003

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. के.एस. धींगरा, 'ए कनसाइज इंग्लिश – रशियन नावल डिक्शनरी, कनफ्लुअंस इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2002
2. वरयाम सिंह, नियाती का निनाद, एफ त्युतचेव की कविताओं का हिन्दी अनुवाद, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली 2003
3. मीता नारायण, 'क्रिटिक' रूसी अध्ययन केंद्र द्वारा 30 वर्षों के बाद जनवरी 2003 में प्रकाशित पत्रिका की सह–सम्पादक

इस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. एस.पी. गांगुली (सं.) Mexico India : Similitudes y Encuentros a traves de la historia (अंग्रेजी रूपान्तरण) जनरल संपादक, ईवा उचमानी, एफ सी ई, आई सी सी आर,, 2003

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

भारतीय भाषा केन्द्र

1. एस.एम. अनवार आलम, अलकामा शिबली की शायरी : एक असरी दस्तावेज' (अध्याय) अलकामा शिबली : खाबों का सुरतगर, डा. राशीद अनवर राशीद द्वारा सम्पादित पुस्तक, इस्बत–ओ–नफी, पब्लिकेशन, कलकत्ता, मार्च 2003
2. देवेन्द्र कुमार चौबे, 'भारतीय समाज में स्त्री और सत्ता में भागीदारी' भारतीय महिलाएं : नई दिशाएं, रोमी शर्मा द्वारा सम्पादित, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार
3. ज्योतिसर शर्मा, रीतिमुक्त काव्यधारा के दो पाठ, पत्राचार और अनुवर्ती शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2002

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केंद्र

1. शांता रामाकृष्ण, "ट्रांसलेशन ऐंड कल्चरल आइडेंटिटी : फ्रेंकाफोन डायमेशंस आफ ट्रांसलेशन इन कनाडा, के. आर.जी. नायर और आर. बोर्जिज (सं.) डिस्कवरिंग फ्रेंच कनाडा, एलाइड पब्लिशर्स प्रा. लि., नई दिल्ली, 2002
2. अभिजीत कारकुन, "क्यूबेक ऐज ए नेशन कंस्ट्रक्ट : ए ट्वेंटीं फर्स्ट सेंचुरी रीरीडिंग्स आफ मारिया चेपडेलेन", डिस्कवरिंग फ्रेंच कनाडा, के.आर.जी. नायर और आर. बोर्जिज (सं.), एलाएड पब्लिशर्स, प्रा.लि., नई दिल्ली, 2002

जर्मन अध्ययन केंद्र

1. माइकल डुसे, मल्टीकल्चरलिज्म ऐंड लिबरल प्लुरलिज्म' (ले.) जमाल मलिक, रीलिजियस प्लुरलिज्म इन इण्डिया ऐंड यूरोप, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली

माइकल डुसे, "Ethik in der internationalen Politik - zum Recht auf nationale Souveranitat", ओसवाल्ड, उलरिख स्टचेर, जेरा (सं.) : Die Autonomie des Politischen und die Instiumentalisierung der Ethik, मेनुटियस वेरलाग, हिलबर्ग, 2002

माइकल डुसे, सिग्निफिकेशन इन ओपेक कांटेक्स्ट्स इंटरप्रेटिड लोजिकल फार्मस ऐज एटिच्युड कंटेंट्स' हरजीत सिंह गिल (सं.) सिग्निफिकेशन इन लैंग्यूवेज ऐंड कल्चर, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, 2002

साधना नैथानी, "हाऊ अबाउट राम आर्टिस्टिक रिकोग्निशन ?" साइमन चार्सले (सं.) चैंजिंग

... और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

के.ए. जार्ज, "कल्चरल डायमेंशंस इन इण्डो -जेपनीज रिलेशंस", बिल्डिंग ए ग्लोबल पार्टनरशिप : फिफ्टी ईयर्स आफ इण्डो- जेपनीज रिलेशंस, (सं.) के.वी. केसवन, लांसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 2002

... विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

कपिल कपूर, 'टीचिंग इंग्लिश लिट्रेचर, कल्चरल डिटरमिनेशन', ह्यूमेनिटीज ऐंड पेडागागी, टीचिंग आफ ह्यूमेनिटी टुडे, (सं.) के.सी. बराल, पैनक्राफ्ट इंटरनेशनल, दिल्ली, 2002

2 कपिल कपूर, 'लास, रिकवरी ऐंड रिन्यूवल आफ टेक्सट्स इन द इण्डियन ट्रेडिशन इन ए हंडरड ह्यूज', डा. मुरली मनोहर जोशी की प्रशंसा में, रूपा ऐंड कं., दिल्ली, 2003

कपिल कपूर, 'आनंद, सौंदर्य ऐंड इण्डियन पोइटिक्स, मुख्य वक्तव्य, राष्ट्रीय संगोष्ठी – विषय : फिलास्फी आफ इण्डियन पोइटिक्स ऐंड वेल्यू–ओरिएंटेड एज्यूकेशन, श्री पेरामबदूर, 24 मार्च, 2003, इंटरनेशनल फोरम फार इण्डियाज हेरिटेज द्वारा प्रकाशित, नोएडा

4 कपिल कपूर, एपिएरेंस ऐंड रियलिटी : सिग्निफिकेशन इन भर्तृहरि, (सं.) एच.एस. गिल, स्ट्रक्चर्स आफ सिग्निफिकेशन, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, 2002

5 कपिल कपूर, वुमन इन हिन्दू ट्रेडिशंस (सं.) चंद्रकला पादिया, वुमन, ट्रेडिशन ऐंड माडर्निटी, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, 2002

6 कपिल कपूर, 'प्रेक्टिकल डायमेंशंस इन इण्डियन फिलासफी', (सं.) राघवेंद्र प्रताप सिंह, एप्लाइड फिलासफी, ... पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2003

7 एम.के. रसीन, "एबओरिजनल आइडेंटिटी ऐंड रिप्रजेंटेशन : रूबी लांगफोर्ड'स 'डोंट टेक योर लव टु टाउन' रेसिस्टेंस ऐंड रिकंसाइलेशन राइटिंग इन द कामनवेल्थ", (सं.) ब्रुस बेनेट, ए.सी.एल.ए.एल.एस., 2003

8 मकरंद प्रांजपे, 'द एलिगरी आफ राजमोहन'स वाइफ (1864); नेशनल कल्चर ऐंड कोलोनिअलिज्म इन एशिया'स फर्स्ट इंग्लिश नावल' (सं.) मीनाक्षी मुखर्जी, अर्ली नावेल्स इन इण्डिया, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2002

मकरंद प्रांजपे, 'रीबल्डींग होम्स : क्लोनिआलिज्म, नेशनल कल्चर ऐंड पोस्ट नेशनल इण्डिया', (सं.) गीति सेन, इण्डिया : ए नेशनल कल्चर, इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर और रोज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2003

10 मकरंद प्रांजपे, "मिररिंग एम्बीवालेंसिस : रेसिसटेंस ऐंड रिकंसाइलेशन इन समकालीन एशियन आस्ट्रेलिया" रेसिस्टेंस ऐंड रिकंसाइलेशन : राइटिंग इन द कामनवेल्थ, केनबरा, ए.सी.एल.ए.एल.एस., 2003

11 पी.एस. पाण्डेय, 'यूनिवर्शल ग्रामर', ह्यूमन यूनिटी (सं.) आर. चौधरी, अरविंदो आश्रम, नई दिल्ली

12 जी.जे.वी. प्रसाद, "द थर्ड गेज द थिएटर आफ बादल सरकार", मफल्ड वाइसेज : वुमन इन माडर्न इण्डियन थिएटर (सं.) लक्ष्मी सुब्रामणियम, शक्ति बुक्स, नई दिल्ली, 2003

... लेख

...सी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

1 प्रियदर्शी मुखर्जी, "प्रोवर्ब्स फ्राम इवान क्राइलोव'स एनिमल फेबल्स ऐंड पेरलल्स इन अदर कल्चर्स", क्रिटिक (जर्नल आफ द सेंटर आफ रशियन स्टडीज, जेएनयू), अंक–3, पृ. 85–93, 2002

प्रियदर्शी मुखर्जी, 'वुमन आफ कल्चर इन द शेपिंग आफ 20थ सेंचुरी चाइना' हिमालयन ऐंड सेंट्रल एशियन स्टडीज (जर्नल आफ हिमालयन रिसर्च ऐंड कल्चरल फाउंडेशन) नई दिल्ली, (इकोसोक, यू.एन. के परामर्श से), भाग–6, अंक 3–4, पृ. 104–124, जुलाई–दिसम्बर 2002

3. एस. मित्रा, "दूसरी जबानों का अदब : चीनी शायरी" (लिट्रेचर आफ अदर लैंग्यूवेजिस : चाइनीज पोइट्री) उर्दू अदब, अंजुमन तरक्की उर्दू हिन्द, नई दिल्ली की त्रैमासिक पत्रिका, पृ. 115–30, अप्रैल–जून, 2002

4. डी.एस. रावत, चीनी से हिन्दी में अनुवाद – "प्रख्यात चीनी लेखक ए. चेंग से हांग हुआंग की बातचीत", शब्द, अंक–3, जनवरी–मार्च 2003

5. डी.एस. रावत, "होंग के : उगता सूर्य", अंक–3, जनवरी–मार्च, 2003

6. डी.एस. रावत, "ली यींग : जिआओ युलु की कब्र के सामने", अंक–3, जनवरी–मार्च 2003

7. हेमन्त कुमार अदलखा, "ट्रांसलेशन फ्राम चाइनीज इन हिन्दी : ए शार्ट स्टोरी डांस पार्टनर (वुबन)", शब्द, एक हिन्दी साहित्यिक पत्रिका, चीनी साहित्य पर विशेषांक, अंक–3, जनवरी–मार्च

8. हेमन्त कुमार अधलखा, प्रो. जी.पी. देशपाण्डेय के साथ एक साक्षात्कार, – 'कनटेम्पोरेरि लिट्रेरी ट्रेंड्स ऐंड फिक्शन राइटिंग इन चाइना', शब्द, हिन्दी साहित्यिक पत्रिका, अंक–3, 2003

9. हेमन्त कुमार अधलखा – 'विदर चाइना ? इंटलेक्चुअल सर्च इनटु द 21स्ट सेंचुरी', आई.आई.ए.एस. न्यूजलेटर, अंक–31, (प्रकाशनाधीन), स्वीकृति की तिथि मार्च 2003, प्रकाशन की तिथि 1 जुलाई, 2003

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. अभिजीत कारकुन, "Une Relecture gandhienne de Les Miserables par Victor Hugo" (A Gandhian Reading of Victor Hugo's Les Miserables), Rencontre avec l'Inde पत्रिका (आई.सी.सी.आर. द्वारा प्रकाशित, नई दिल्ली, टोम 31, नुमेरो 2, 2002)

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. अनिल भट्टी, "Ethik und Globalisierung. Eine Anmerkung zum unbehagen" Karl Acham (Hg.), Moral und Kunst im Zeitalter der Globalisierung. Zeitdiagnosen 2. Wien, 2002 (Passagen Verlag).

2. अनिल भट्टी, "Polyglotte Bereitwilligkeit. Eine Miszelle uber Mehrsprachigkeit und Multikulturalitat", Herbert Arlt u.a (Eds), TRANS. Dokumentation eines kulturwissenschaftlichen Polyogversuchs im WWW (1997-2002), St. Ingbert, 2002 (Rohrig-Universitasverlag)

3. माइकल डुसे, "Liberal Tolerance-Domestic and International" TRANS - Internetzeitschrift fur Kulturwissenschaften 5, July 2002

4. माइकल डुसे, "Experts or Mediators ? Philosophers in the Public Sphere" TRANS - Internetzeitschrift fur Kulturwissenschaften, July 2002

5. माइकल डुसे, "Pluralismus und uberlappender Konses. Erfahrungen aus Indien" Global Justice, Philosophy Section, Cusanuswerk.

6. एस.बी. ससालती, P.Weisinger & H.Derkits (Hrg.) : Jahrbunch fur Internationale Germanistik, Reihe A, Band 56, Akten des X Internationalen Germanistenkongresses Wien, (Peter Lang Verlag Wien, 2002)

7. एस.बी. ससालती, "Deutsch als akademische Lehr-und Forschungsgegenstnd in Indian : eine linguistische und frendstrachendidaktische Perspektive" in : Gstickel (Hrg) : Deutsch von auben, Jahrbuch vom Institut Fur Deutsche Sprache - 2002 (de Gruyter Verlag, Berlin, New York, 2003

8. साधना नैथानी, "हाऊ अबाउट सम आर्टिस्टिक रिकोग्निशन ? इन साइमन चार्ल्स : चैंजिंग आर्ट, चैंजिंग ट्रेडिशनस", ग्लासगो

9. साधना नैथानी, "टु टल ए टेल अनटोल्ड, जर्नल आफ फोकलोर रिसर्च", 39/2–3, ब्लूमिंगटन, इण्डियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002

10. साधना नैथानी, "Relativitaet der Zeit. in : Enzyklopaedie des Maerchens" गोइतिजन, 2003

11. साधना नैथानी, "पण्डित राम गरीब चौबे", (सं.) मार्गेट मिल्स, इन साइक्लोपीडिया आफ साउथ एशियन फोकलोर, न्यूयार्क, राउतलेज, 2002

12. प्रमोद तलगेरि, "आधुनिकता की एक समीक्षा : आधुनिकता", उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार (सं.) डी.एस. नवीन और शुशांत कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

13. प्रमोद तलगेरि, "उत्तर आधुनिकता : एक अधूरी बहस", उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार, (सं.) डी.एस. नवीन और शुशांत कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

भारतीय भाषा केन्द्र

1. मैनेजर पाण्डेय, "आलोचना की सामाजिकता", आलोचना, नई दिल्ली, अप्रैल--जून 2002
2. मैनेजर पाण्डेय, "आज का समय और मार्क्सवाद", वसुधा, भोपाल, दिसम्बर, 2002
3. मैनेजर पाण्डेय, "आत्मकथा के केंद्र में सच होता है", पुनर्वा, नोएडा, 2002
4. पुरूषोत्तम अग्रवाल, "मुझको डर आतिश–ए–गुल से है" अस्मिता विमर्श एक पड़ताल, 'कथादेश', (सं.) हरिनारायण, दिल्ली, फरवरी 2003
5. पुरूषोत्तम अग्रवाल, "माँ की मुट्ठी में सरयू की मिट्टी", धरा दरस (काव्य संग्रह) सं. असद जैदी, सहमत, नई दिल्ली, दिस. 2002,
6. मोहम्मद शाहिद हुसैन, "डा. जाकिर हुसैन और उर्दू तालीम", उर्दू दुनिया मासिक, एन.सी.पी.यू.एल., आर.के. पुरम, नई दिल्ली, जून 2002
7. वीर भारत तलवार, "श्रद्धा राम फुलोरी : नव जागरण का चरित्र और महत्व", कसौटी, अंक 13, 2003, पटना
8. एस.एम. अनवार आलम, "उर्दू एज्यूकेशन : सम प्वाइंट्स वर्थ रीपिटिंग", मैनस्ट्रीम, भाग 30, अंक 28, नई दिल्ली, जून 2002
9. एस.एम. अनवार आलम, "मासीर तनकीदी और आल–ए–अहमद सरूर", आजकल, उर्दू, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, जून 2002
10. एस.एम. अनवार आलम, "उर्दू तालीम : तकरार के मुतालाजी चंद निकात", उर्दू दुनिया, नेशनल काउंसिल फार प्रमोशन आफ उर्दू लैंग्वेज, नई दिल्ली, भाग–4, अंक–7, जुलाई 2002
11. एस.एम. अनवार आलम, "इक्कीसवीं सदी में अदब और कारी के बदलते रिश्ते की नौविगात", जबान–ओ–अदब, बिहार उर्दू अकादमी, पटना, जनवरी–फरवरी 2003
12. गोविन्द प्रसाद, राष्ट्रीय सहारा में दो कविताएं प्रकाशित हुई (आदतों के बारे में - 1 और 2), 30 मार्च 2003
13. देवेन्द्र कुमार चौबे, "बेसहारा लोग और समकालीन हिन्दी कहानी", विकलांग समीक्षा, नई दिल्ली, जुलाई–दिसम्बर, 2002
14. देवेन्द्र कुमार चौबे, "जापानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ", आजकल, नई दिल्ली, फरवरी, 2003
15. ओम प्रकाश सिंह, "नागार्जुन के काव्य का युगीन संदर्भ", नया मानदंड, आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी, जन- मार्च 2003

जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. पी.ए. जार्ज, "वेस्टर्न इम्पेक्ट आन जेपनीज लिट्रेचर आफ द मेइजी पीरियड इन आउटलाइन", जेपनीज लैंग्यूवेज लर्निंग इन इण्डिया टीचिंग मैथडालाजी ऐंड द इश्यूज़, 'जलतेई' 2002
2. पी.ए. जार्ज, "जेपनीज लैंग्यूवेज टीचिंग इन इण्डिया : टीचिंग मैथडालाजी ऐंड कंटेंट" जेपनीज लैंग्यूवेज लर्निंग इन इण्डिया : टीचिंग मैथडालाजी ऐंड द इश्यूज़, 'जलतेई' 2002
3. पी.ए. जार्ज, "कैंजीराकुहिन नो मीरयोकु तो वा (मीयाजावा कैंजी'स वर्कस ऐंड देयर चार्म)", मीयाजावा कैंजी किनेनकन टीसुशिन हानामाकी, इवातेह, जापान, फरवरी 2003
4. सुषमा जैन, "वर्ड आर्डर इन जेपनीज ऐंड हिंदी", संगम – जापानी दूतावास, जापान फाउंडेशन द्वारा इण्डो–जापान राजनयिक संबंधों के 50 वर्ष पूरा होने के अवसर पर प्रकाशित पत्रिका, नई दिल्ली अक्टूबर 2002
5. सुषमा जैन, "पानी में चाँद", कोआबाता यासुनारि की कहानी का अनुवाद, आजकल, लिट्रेरी (भारत सरकार के प्रकाशन प्रभाग द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका) फरवरी 2003

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. कपिल कपूर, "सौंदर्य ऐंड इण्डियन एसथेटिक्स", अवाम : फोरम आन इण्डियन रिप्रजेंटेशंस, भाग–2 : 1 व 2, 2003
2. मकरंद प्रांजपे, "ट्रिपल एम्बिवलेंस : आस्ट्रेलिया, कनाडा ऐंड साउथ एशिया इन द डायस्पेरिक इमेजिनेशन" आस्ट्रेलियन कनाडियन स्टडीज, 20.2, 2002
3. पी.के.एस. पाण्डेय, "भारतीय भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था : एक प्रारम्भिक विवरण", (हिन्दी में) गवेषणा, 77
4. फ्रांसन मंजलि, "मेटाफर ऐंड स्पेस", विजन – इंटरनेशनल जर्नल आफ विज़ुअल सिमिओटिक्स, भाग–6, अंक–2, 2002, यह आलेख एच.एस. गिल द्वारा संपादित पुस्तक – सिग्निफिकेंस इन लैंग्यूवेज ऐंड कल्चर, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में भी प्रकाशित हुआ, 2002

दर्शनशास्त्र ग्रुप

1. आर.पी. सिंह, "जेक्यूज दरिदा'स डीकनस्ट्रक्शन : ए लोजिक आफ डिफ्रेंस" जर्नल आफ इण्डियन कांउसिल आफ फिलास्फीकल रिसर्च, भाग 19, अंक–2, अप्रैल–जून 2002
2. आर.पी. सिंह, "एबसोल्यूट कांशसनेस : अद्वैत वेदान्त पर्सपेक्टिव", इंटरनेशनल जर्नल आफ मैनेजमेंट ऐंड सिस्टम्स, भाग–19, अंक–1, जनवरी–अप्रैल, 2003
3. सुदिप्तो राय दत्त, "शब्द प्रमाण इन संख्या", जर्नल आफ इण्डियन काउंसिल आफ फिलास्फीकल रिसर्च, भाग 21, अंक–3, जुलाई–सितम्बर 2002

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. एच.सी. पाण्डेय "पेड़ के पास (वोजले देरेवा)", बोरिस येकिमोव, रविवारीय, जनसत्ता (दिल्ली), 16 फरवरी 2003
2. मीता नारायण, दस्तावेजों का अनुवाद और टीका–टिप्पणी, रेवल्यूशनरी डेमोक्रेसी, भाग–8, अंक–1, मार्च–अप्रैल 2002, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित
3. मीता नारायण, "फारेन लैंग्यूवेज टीचिंग : ए चैंजिंग सिनेरिओ", 'क्रिटिक' अंक–3, जनवरी, 2003, रूसी अध्ययन केंद्र, द्वारा प्रकाशित

इस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. एस.पी. गांगुली, "कंटेम्पोरेरि लेटिन अमेरिकन नरेटिव ऐंड गैबरियल गार्सिया मार्क्यूज", अन्तरजातिक छोटो गाल्पा (इंटरनेशनल शार्ट स्टोरिज) जर्नल इन बंगाली (सं.) सुखेन्दु भट्टाचार्य, पूरबाघट, कोलकाता, 2002

शोध परियोजना (प्रायोजित)

भारतीय भाषा केन्द्र

1. नसीर अहमद खान, स्ट्रक्चर आफ उर्दू (वि.अ.आ.) पहला प्रारूप तैयार है।
2. नसीर अहमद खान, डायस्पेरिक उर्दू लिट्रेचर (वि.अ.आ.), (चल रही है)
3. ज्योतिसर शर्मा, रीतिकालीन काव्य में लोक–मानस, वि.अ.आ.

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. फ्रांसन मंजलि एथिक्स, एसथेटिक्स ऐंड लिंग्विस्टिक्स, मेंसन देस साइसिस दे आई होम द्वारा सहयोग प्राप्त शोध परियोजना, पेरिस, जून–जुलाई 2002

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

भारतीय भाषा केन्द्र

1. नसीर अहमद खान, हिंदी–उर्दू शब्दकोश, (4000 पृष्ठ)

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. किरण चौधरी, फ्रेंच–हिंदी शब्दकोश, हिन्दी निदेशालय, आर.के. पुरम नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित परियोजना

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. मीता नारायण, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की लघु शोध परियोजना –'मैटिरियल प्रोजक्शन टु टीच ओरल स्किल्स ऐट बिगनर्स लेवल', 2000–2003

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. शांता रामकृष्ण, थीमेटिक हिस्ट्री आफ ट्रांसलेशन इन इण्डिया

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. साधना नैथानी, 'डिजिटल लिट्रेचर इन जर्मन
2. साधना नैथानी, जर्मन फारेस्ट साइंस ऐंड इण्डियन फारेस्ट्स
3. प्रमोद तलगेरि, 'द बिकमिंग आफ यूरोप – द कल्चरल ऐंड हरमनन्यूटिकल फाउंडेशन आफ यूरोप ऐज ए सिविलाईजेशनल स्पेस

भारतीय भाषा केन्द्र

1. पुरूषोत्तम अग्रवाल, द क्रिटिकल इवेल्युएशन आफ कबीर'स पोइट्री, रिकंसिडरिंग द भक्ति सेंसिबिलिटी, द डिस्कोर्सिस आफ आइडेंटिटी इन नाइंटींथ सेंचुरी हिन्दी लिट्रेचर
2. वीर भारत तलवार, फर्दर स्टडी आफ नाइंटींथ सेंचुरी इण्डियन रिनेसाँ
3. देवेंद्र कुमार चौबे, दलित राइटिंग इन हिंदी
4. ज्योतिसर शर्मा, दारा शिकोह इन हिन्दी पोइट्री ऐंड हिज राइटिंग्स

जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. राजेंद्र तोमर, जापान ऐंड नार्थ–ईस्ट इण्डियन कल्चर्स

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. पी.के.एस. पाण्डेय, साउंड पैटर्नस इन इण्डियन लैंग्वेजिस

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. मीता नारायण, प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए पाठ्य पुस्तक तैयार की जा रही है जो वर्ष 2004 में पूरी हो जाएगी (2002 2004) यह डा. चरणजीत सिंह द्वारा चलायी जा रही केंद्र की एक संयुक्त परियोजना है।

हिस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. एंतालोगिया पोइतिका दे सुनिल गंगोपाध्याय, देलिगेसियान दि मालगा, स्पेन द्वारा प्रायोजित परियोजना

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

चीनी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. प्रियदर्शी मुखर्जी ने 27 जून 2002 को सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ ड्रामा, बीजिंग, चीन में "इण्डियन सिनेमा : सोशल पर्सपेक्टिव ऐंड द मिसलेनियस" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
2. हेमंत कुमार अदलखा ने 5 से 8 दिसम्बर तक इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फार एशियन स्टडीज, लीडन, नीदरलेण्ड में आयोजित "चूइंग द वेस्ट : आक्सिडेंटल नरेटिव्स ऐज नेशिओ–बिल्डिंग न्यूट्रिशन सप्लीमेंट्स ऐंड डायजेस्टिव्स नाई एशियन ऐंड अफ्रीकन लिट्रेचर्स इन इंडीजिनस लैंग्वेजिस" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और "ईस–चूइंग द वेस्ट ? हिस्ट्री, माडर्निटी ऐंड कल्चर इन 20थ सेंचुरी चाइनीज इंटेलेक्चुअल डिस्कोर्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. शांता रामकृष्णन ने 22 से 27 मई, 2002 तक बेलग्रेड, यूगोस्लाविया में आयोजित 27थ इंटरनेशनल ट्रांसलेटर्स मीटिंग में भाग लिया और "ट्रांसलेशन ऐंड लिट्रेरी इवोल्यूशन इन अर्ली 20थ सेंचुरी इण्डिया", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

जर्मन अध्ययन केंद्र

1. अनिल भट्टी ने 18 से 23 सितम्बर 2002 तक वियना विश्वविद्यालय (आस्ट्रिया) और अकादमी आफ साइंस

आस्ट्रिया द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया और "Plurikulturalitaten ? Indien und die Habsburger Monarchie aus vergleichender postcolonialer Sichht" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. अनिल भट्टी ने 18 से 24 नवम्बर 2002 तक ग्रेज विश्वविद्यालय (आस्ट्रिया) में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया और 'जर्मन एज कम्पोनेंट इन प्लुरिकल्चरल मितेल्यूरोपा द लीगेसी आफ हब्सबर्ग' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
3. अनिल भट्टी ने 21 से 27 जनवरी, 2002 तक ड्रेसदेन विश्वविद्यालय (जर्मनी) में आयोजित सम्मेलन में "आसपेक्ट्स आफ डिवलपिंग इंटरनेशनल नेटवर्क आफ जर्मन स्टडीज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
4. राजेंद्र डेंगले ने 16 से 21 अगस्त 2002 तक आस्ट्रिया में यूरोपीयाशेस फोरम अल्पबेक में आयोजित "कल्चर ग्लोबलाइजेशन" शीर्षक सम्मेलन में भाग लिया।
5. माइकल डुसे ने 5 से 8 दिसम्बर 2002 तक हाले में आयोजित "ग्लोबल जस्टिस" विषयक सम्मेलन में भाग लिया और मुख्य भाषण दिया।
6. साधना नैथानी ने 23 से 28 सितम्बर तक जर्मनी में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया और "Kommission fuer Musik, Lied-und Tanzforschung" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
7. एस.बी. ससालती ने आई.डी.एस., जर्मनी में आयोजित "Deutsch vom auben" विषयक वार्षिक सम्मेलन में 2002 में भाग लिया और "Deutsch als akademischer Lehr-und Forschungsgegenstand in Indien : eine linguistische und fremdsprachendidaktische Perspektive" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
8. एस.बी. ससालती ने जून 2002 में लिंज, आस्ट्रिया में आयोजित सोसायटी आफ जर्मन स्कालर्स आफ आस्ट्रिया के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया और "Deutsch international" विषयक चर्चा में भाग लिया।
9. एस.बी. ससालती ने सितम्बर 2002 को कोलन, जर्मनी में आयोजित जीएएल के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया और "Globalisierung vs. Lokalisierung in multilingualen Gesellschaften wie Indien und Europa" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
10. प्रमोद तलगेरि ने 1 से 6 2002 तक सेल्जबर्ग में जी.आई.जी. के सम्मेलन में भाग लिया।
11. प्रमोद तलगेरि ने 8 से 10 सितम्बर 2002 तक बर्लिन में आयोजित इण्डो जर्मन कंसल्टेटिव ग्रुप के सम्मेलन में भाग लिया।

भारतीय भाषा केन्द्र

1. पुरूषात्तम अग्रवाल ने 5 से 9 फरवरी 2003 तक इंटरनेशनल सेंटर फार एथनिक स्टडीज, कोलम्बो द्वारा दम्बुला श्रीलंका में आयोजित "डाइवर्सिटी ऐंड को–एग्जिस्टेंस इन एशिया" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "कल्चर, एथिनिसिटी ऐंड पीसफुल को–एग्जिस्टेंस इन एशिया" शीर्षक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
2. पुरूषोत्तम अग्रवाल ने 2 मई से 2 जुलाई 2002 तक एन कोलिगिओ दे मैक्सिको (सेंटर फार एशियन ऐंड अफ्रीकन स्टडीज), मैक्सिको में निम्नलिखित व्याख्यान दिए –
   - क) 15 मई 'द एनिग्मा आफ अराइवल : इण्डिया ऐंड द वेस्ट
   - ख) 22 मई 'द आईडिया आफ इण्डिया ऐंड कल्चरल नेशनलीज्म'
   - ग) 19 जून 'रिथिंकिंग नेशनलिज्म विद टैगोर
   - घ) 26 जून 'एनविजनिंग आइडेंटिटी : सोशल मोरल"

जापानी और उत्तर–पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र

1. पी.ए. जार्ज ने 30 से 31 अक्टूबर 2002 तक फुकुओका यूनेस्को एसोसिएशन, फुकुओवा, जापान में आयोजित "जापान'स चाइस इन द 21स्ट सेंचुरी ऐंड द वर्ल्ड" 9वीं क्युशु अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और 'जेपनीज लैंग्युवेज, एज्यूकेशन ऐंड जेपनीज स्टडीज इन इण्डिया : प्रेजेंट स्टेट ऐंड प्रोस्पेक्टस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. पी.ए. जार्ज ने 23 सितम्बर 2002 को आयोजित 12वीं मीयाजावा केंजी अकादमी सोसायटी, इहातोव सेंटर की संगोष्ठी में भाग लिया।

3. अनिता खन्ना को वर्ष 2002 के लिए तीन माह तक जापान फांउडेशन की अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई और उन्होंने इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ जेपनीज कल्चर, क्योटो में "अर्ली माडर्न (किन सेंट) जेपनीज लिट्रेचर" पर शोध कार्य किया।

4. अनिता खन्ना ने 8 जुलाई 2002 को नेशनल डाइट पुस्तकालय में इंटरनेशनल चिल्ड्रन लाइब्रेरी में आयोजित "द इनहिबिटेंट्स आफ स्ट्रेंज लैण्ड्स" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

6. अनिता खन्ना ने 9 जुलाई 2002 को टोक्यो में "रीडिंगस हैबिट्स आफ यंग वन'स इन इण्डिया" विषयक परिचर्चा की।

7. मंजुश्री चौहान ने 8 जुलाई 2002 को नेशनल डाइट लाइब्रेरी में इंटरनेशनल चिल्ड्रन लाइब्रेरी के "द इनहिबिटेंट्स आफ स्ट्रेंज लैण्ड्स" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और टोक्यो में 9 जुलाई 2002 को 'पंचतंत्र इन इण्डियन चिल्ड्रन्स लिट्रेचर' विषयक परिचर्चा की।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. मकरंद प्रांजपे ने 24 अप्रैल 2002 को आइओवा विश्वविद्यालय, आइओवा सिटी में आयोजित "फायर ऐंड लज्जा : द वेज आफ सीइंग इण्डिया" शीर्षक सार्वजनिक व्याख्यान दिया।

2. मकरंद प्रांजपे ने 26–28 अप्रैल 2002 तक सांता क्लारा विश्वविद्यालय में आयोजित यू.एस.ए.सी.एल.ए.एल.एस. के वार्षिक सम्मेलन में वक्ता, कवि और एक सत्र के अध्यक्ष के रूप में भाग लिया और "पोस्टक्लोनिअल प्रेपोजिशंस ऐंड द लेजिक आफ वर्नाकुलर इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

3 मकरंद प्रांजपे ने 26 से 28 अप्रैल 2002 तक सांता कलारा विश्वविद्यालय में आयोजित यू.एस.ए.सी.एल.ए.एस. के वार्षिक सम्मेलन में काव्य पाठ किया और एक सत्र की अध्यक्षता की।

4. मकरंद प्रांजपे ने 2 जुलाई 2002 को मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी में "जिनोसिस ऐंड अल्टरनेटिव पोस्टक्लोनिअलिज्म्स" शीर्षक व्याख्यान दिया।

5. मकरंद प्रांजपे ने 5 जुलाई, 2002 को "द रिएलिटी आफ मिथ्स इन इण्डियन ट्रेडिशंस" विषयक टी.वी. साक्षात्कार और प्रो. हर्ष दहेजा कालेटन यूनिवर्सिटी ओटावा के साथ परिचर्चा की।

6. मकरंद प्रांजपे ने 15 जुलाई, 2002 को म्यूनिख विश्वविद्यालय, म्यूनिख में "जिनोसिस, पोस्ट आक्सिडेंटल, रीजन ऐंड पोस्टक्लोनिअल फ्यूचर्स" विषयक व्याख्यान दिया।

7. मकरंद प्रांजपे ने 24 से 29 जुलाई 2002 तक मेनला सेंटर और कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क में आयोजित "कम्पलीटिंग द ग्लोबल रिनेसाँ : द इंडिक कान्ट्रीब्युशंस" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और "द थर्ड आई ऐंड द वेज आफ (अन) नोइंग : जिनोसिस, आल्टरनेटिव मार्डर्निटीज ऐंड पोस्टक्लोनिअल फ्यूचर्स" शीर्षक व्याख्यान दिया।

8. मकरंद प्रांजपे ने 30 अगस्त 2002 को सारब्रुकेन विश्वविद्यालय, सारब्रुकेन, जर्मनी में आयोजित "पेरिफेरल सेंटर्स, सेंट्रल पेरिफिरीज : एंगलोफोन इण्डिया ऐंड इट्स डाइसस्पोरास" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "इण्डियन एंग्लाफोनी डायस्पोरन पोलिसेंट्रिकीज्म ऐंड पोस्टक्लोनिअल फ्यूचर्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. मकरंद प्रांजपे ने 29 से 31 अगस्त 2002 तक सारब्रुकेन यूनिवर्सिटी, सारब्रुकेन, जर्मनी में आयोजित "पेरिफिरल सेंटर्स, सेंट्रल पेरिफिरीज : एंगलोफोन इण्डिया ऐंड इट्स डायस्पोरा" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और एक सत्र की अध्यक्षता की।

10. मकरंद प्रांजपे ने 2 सितम्बर 2002 को 'चाइना–इण्डिया इंटर कल्चरल डायलॉग' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

11. मकरंद प्रांजपे ने 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2002 तक मोनाश विश्वविद्यालय, क्लेटन, आस्ट्रेलिया में आयोजित "कल्चरल फ्लोज इन ए ग्लोबलाइजिंग एशिया" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "एशियन आइडेंटिटीज, पोस्टक्लोनिअल फ्यूचर्स ऐंड बाम्बे ड्रीम्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

12. मकरंद प्रांजपे ने 24 से 28 जनवरी, 2003 तक वर्ल्ड सोशल फोरम पोर्टो, एलिगरे में आयोजित "कलाकारों की [illegible]" में व्याख्यान दिया।

13. मकरंद प्रांजपे ने 26 से 28 फरवरी 2003 तक पीकिंग यूनिवर्सिटी में "क्रास कल्चरल डायलाग रिट्रोस्पेक्टिव ऐंड पर्सपेक्टिव" विषयक व्याख्यान दिया।

14. नवनीत सेठी ने नवम्बर 2002 में विलफ्रेड लारिअर यूनिवर्सिटी में आयोजित मिड एन्टलांटिक एसोसिएशन के सम्मेलन में भाग लिया और "रिफ्रेजिंग डिसेबिलिटी : एन अल्टरनेटिव व्यू इन टी. मोरिस'स द ब्लुएस्ट आई" विषयक व्याख्यान दिया।

इस्पेनी अध्ययन केन्द्र

1. वसन्त जी. गदरे और एस.बी. गांगुली ने चैम्बर आफ कामर्स, वालादोलिद के निमंत्रण पर 9 से 15 जुलाई 2002 तक वालादोलिद (स्पेन) में स्थित इस्पेनी शिक्षण संस्थानों का दौरा किया और शिक्षाविदों के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया।
2. वसन्त जी. गदरे को 'कासा' एशिया (बार्सिलोना, स्पेन) द्वारा "कनटेम्पोरेरि इण्डिया ऐंड इट्स पालिटिकल डिस्कोर्स" विषयक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया, 16 जुलाई 2002
3. अनिल धींगरा ने 15 दिसम्बर 2002 को यूनिवर्सिटी आफ इलेस और बालियर्स ऐंड दिआरो दे मालोरका द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया और "La India de los contrastes" विषय पर व्याख्यान दिया।
4. अनिल धींगरा ने नवम्बर 2002 को वोलादोलिद विश्वविद्यालय, स्पेन में "Los estudios hispanicos en la India" विषयक व्याख्यान दिया।
5. अनिल धींगरा ने नवम्बर 2002 को यूनिवर्सिटी एन्टानोमा दे मैड्रिड, स्पेन में "La condicion social de la mujer en la India" विषयक व्याख्यान दिया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

चीनी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. प्रियदर्शी मुखर्जी ने 30 जुलाई 2002 को पी.एच.डी. चैम्बर आफ कामर्स ऐंड इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली में आयोजित "इण्डिया–चाइना इकोनोमिक कोआप्रेशन : चैलेंजिस ऐंड अपर्च्युनिटीज" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और "हिस्टोरिओ–कल्चरल आस्पेक्ट्स आफ इण्डिया–चाइना इकोनोमिक कोआप्रेशन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. प्रियदर्शी मुखर्जी ने 1 नवम्बर 2002 को दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में आयोजित "रोल आफ वुमन इन शेपिंग टवंटिअथ सेंचुरी इण्डिया ऐंड चाइना : ए कम्पेरिटिव व्यू" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और "वुमन आफ बेलेस–लेटर्स ऐंड देयर वर्क्स इन टवटिंअथ सेंचुरी चाइना" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
3. प्रियदर्शी मुखर्जी ने 17 से 19 जनवरी 2003 तक इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फार आर्टस, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "जुआन जेंग ऐंड द सिल्क रूट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और "द फोकलोरिस्टिक आस्पेक्ट्स आफ द करेक्टर्स इन द नावेल (जर्नी टु द वेस्ट)" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
4. प्रियदर्शी मुखर्जी ने 24 से 26 मार्च 2003 तक स्पेन दूतावास और जेएनयू द्वारा आयोजित 'हिस्पानिज्म ऐंड लुसो–ब्राजिलियन स्टडीज" विषयक 5वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "सिम्बोलीज्म्स इन निकोलस गुलियन'स वर्सिस आन चाइना" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
5. एम. भट्टाचार्य ने 17 से 19 जनवरी 2003 तक आई.जी.एन.सी.ए., नई दिल्ली में आयोजित 'जुआन जेंग ऐंड द सिल्क रूट" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
6. एम. भट्टाचार्य ने 27 से 29 जनवरी, 2003 तक इंस्टीट्यूट आफ डिफेंस स्टडीज ऐंड एनालिसिस, नई दिल्ली द्वारा इण्डिया हेबिटेट सेंटर में आयोजित 5वीं एशियन सिक्युरिटी कांफ्रेस, 2003' में भाग लिया।
7. एस. मित्रा ने 14 अप्रैल, 2002 को राजनीतिक विज्ञान विभाग, गवर्नमेंट पोस्ट ग्रेजुऐट कालेज, नहान द्वारा आयोजित "जेंडर डिसक्रिमिनेशन एम्पावरमेंट आफ वुमन" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में आलेख प्रस्तुत किया।
8. एस. मित्रा ने 15 जनवरी, 2003 को चीनी अध्ययन संस्थान द्वारा आयोजित द्वितीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
9. एस. मित्रा ने 2 दिसम्बर 2002 को चीनी अध्ययन संस्थान के तत्वावधान में "चाइनीज लिट्रेचर इन कम्पेरिटिव पर्सपेक्टिव" विषयक कार्यशाला आयोजित की।
10. डी.एस. रावत ने 27 से 29 जनवरी 2003 तक रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान द्वारा इण्डिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित 5वीं एशियन सिक्युरिटी कांफ्रेंस में भाग लिया।

11. हेमंत कुमार अधलखा ने 5 से 8 जनवरी तक कोलकाता में चीनी अध्ययन संस्थान दिल्ली, समाजशास्त्र संस्थान, पीजिंग विश्वविद्यालय, चीन, सामाजिक विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली; चीनी अध्ययन संस्थान, यू.सी.एल.ए., अमरीका द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "लोकल गवर्नेरा इन इण्डिया ऐंड चाइना : रूरल डिवलपमेंट ऐंड सोशल चैंज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

12 हेमंत कुमार अधलखा ने 27 से 29 जनवरी, 2003 तक नई दिल्ली में आयोजित 'एशियन सिक्युरिटी ऐंड चाइना इन द पीरियड 2000–2010' विषयक 5वें एशियन सिक्योरिटी सम्मेलन में भाग लिया।

13. हेमंत कुमार अधलखा ने 13 से 14 दिसम्बर 2002 तक चीनी अध्ययन संस्थान और इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "ओकातुरा टेनशिन : एक्सप्लोरिंग आर्ट, नेशनलीज्म ऐंड पैन–एशियनिज्म" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

14. हेमंत कुमार अधलखा ने 23 नवम्बर 2003 को नीति अनुसंधान केंद्र में आयोजित गोलमेज सम्मेलन में "पालिटिकल कानटेंट आफ द चाइनीज कम्युनिस्ट पार्टी'ज 16थ नेशनल पार्टी कांग्रेस" विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

15. हेमंत कुमार अधलखा ने 26 नवम्बर 2002 को चीनी अध्ययन संस्थान में 16थ नेशनल पार्टी कांग्रेस आफ द सी.पी.सी. में आलेख प्रस्तुत किया।

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1 शांता रामकृष्ण ने 6 से 8 जनवरी 2003 तक सी.आई.एल. मैसूर और सी.एल.ए.आई., नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "कैम्पेरिटिव लिट्रेचर" विषयक चौथे द्विवर्षीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "नेगोशिएटिंग लिंग्विस्टिक ऐंड लिट्रेरी आइडेंटीज, इण्डियन सीन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. शांता रामकृष्ण ने 9 से 13 जनवरी 2003 तक मैसूर विश्वविद्यालय में आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड कंजुमरीज्म, कनाडियन स्टडीज इन द एशिया–पेसिफिक कनटेक्स्ट" विषयक तीसरी एशिया-पेसिफिक और 19वीं आई.ए.सी.एस. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "प्रीजर्विंग क्रिएटिव डाइवर्सिटी इन एन इरा आफ ग्लोबलाइजेशन ऐंड कंजुमरीज्म : इण्डियन ऐंड कनाडियन परसपेक्टिव्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3. अभिजीत कारकुन ने 9 से 13 जनवरी 2003 तक मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर में आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड कंजुमरीज्म", विषयक तीसरी एशिया- पेसिफिक और 19वें आई.ए.सी.एस. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

4. अभिजीत कारकुन ने केंद्र में 11 मार्च, 2003 को 'हेनरी माइकांस' पर प्रो. वेगवेदर और 'सेलिन' पर हेनरी गोदार्ड द्वारा की गई परिचर्चाओं में भाग लिया।

5. आशीष अग्निहोत्री ने 13 से 17 दिसम्बर 2002 तक भारतीय फ्रेंच शिक्षक संघ, सी.आई.ई.एफ.एल. और हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा हैदराबाद में आयोजित "Francophonie Litteraire : Unite, Diversite, Identite" विषयक तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया और "Jean-Luc Raharimanana : entre chaos et cosmos" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. आशीष अग्निहोत्री ने 27 फरवरी से 1 मार्च 2003 तक सेंटर आफ जर्मेनिक और रोमांस स्टडीज डिपार्टमेंट दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में आयोजित "लिट्रेचर ऐंड इंडस्ट्री : फ्राम द प्रिंटेड टेक्स्ट टु द हाइपरटेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और "द रिटर्न टु द ओरल ट्रेडिशन इन द ऐज आफ इंडस्ट्रीयलाइजेशन : सरगेई आइजनस्टाइन'स बेटलशिप पोतेम्किन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. आशीष अग्निहोत्री ने 29 जनवरी, 2003 को अंग्रेजी और भाषा विज्ञान केंद्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, जे.एन.यू. में "ए रिटर्न टु द सांग ऐंड डांस : अरटाड ऐंड द थिएटर आफ द एबसर्ड" विषयक व्याख्यान दिया।

8. आशीष अग्निहोत्री ने 5 फरवरी 2003 को भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केंद्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान में "ए रिटर्न टु द सांग ऐंड डांस : जीनेट ऐंड द थिएटर आफ एबसर्ड" शीर्षक व्याख्यान दिया।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. अनिल भट्टी ने 12 मार्च 2003 को आयोजित "थिओडोर डब्ल्यू एडोर्नो (1903 1969)" कार्यशाला में "कोमिमोरेटिंग एडोर्नो फिलोसफी इन डिफिकल्ट टाइम्स" शीर्षक व्याख्यान दिया।

2. अनिल भट्टी ने 27 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक डिपार्टमेंट आफ जर्मेनिक ऐंड रोमांस स्टडीज, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित "लिट्रेचर ऐंड इंडस्ट्री : फ्राम द प्रिंटिड टेक्स्ट टु द हाइपरटेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और एक सत्र की अध्यक्षता की।

3. अरिजीत दक्षी (आमंत्रित वक्ता) ने 12 मार्च, 2003 को आयोजित थिओडोर डब्ल्यू एडोर्नो (1903–1969)" कार्यशाला में "एडोर्नो ऐंड द होलोकास्ट" विषयक परिचर्चा की।

4. कविता भाटिया (अंशकालिक शिक्षिका) ने 27 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक डिपार्टमेंट आफ जर्मेनिक ऐंड रोमांस स्टडीज, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित लिट्रेचर ऐंड इंडस्ट्री : फ्राम द प्रिंटिड टेक्स्ट टु द हाइपरटेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

5. प्रमोद तलगेरि ने 25 अप्रैल 2002 को लखनऊ में आयोजित "इंट्रोडक्शन टु स्टडीज" शीर्षक वि.अ.आ. के पुनश्चर्या कोर्स में परिचायात्मक व्याख्यान दिया।

6. प्रमोद तलगेरि ने 13 दिसम्बर 2002 को सी.आई.ई.एफ.एल. हैदराबाद में फ्रेंकाफोन अध्ययन के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "मल्टीकल्चलिज्म, लैंग्यूवेज, ग्रोथ ऐंड आइडेंटिटी फार्मेशन" शीर्षक परिचयात्मक व्याख्यान दिया।

7. प्रमोद तलगेरि ने अखिल भारतीय जर्मन शिक्षक सम्मेलन, दियू में "लैंग्यूवेज, कल्चरल कांशसनेस ऐंड नेशन बिल्डिंग" विषयक उद्घाटन सत्र में मुख्य व्याख्यान दिया।

8. प्रमोद तलगेरि ने 6 से 8 जनवरी, 2003 तक "इंटरकल्चर हर्मेन्यूटिक्स" विषयक वि.अ.आ. के जर्मन पुनश्चर्या कोर्स के विशेषज्ञ के रूप में संचालन किया।

9. प्रमोद तलगेरि ने 12 मार्च 2003 को जर्मन अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित "थिओडोर डब्ल्यू. एडोर्नो (1903–1969)" विषयक कार्यशाला में "डायलेक्टिक्स आफ एनलाइटनमेंट" शीर्षक व्याख्यान दिया।

10. प्रमोद तलगेरि ने 27 से 28 फरवरी 2003 को ए.आई.एस. कालेज फार गर्ल्स, पुणे के सहयोग से आयोजित "इंग्लिश इन इण्डियन कनटेक्स्ट" विषयक वि.अ.आ. के राष्ट्रीय सम्मेलन में "द एम्बिवेलेंट स्टेटस आफ इंग्लिश इन इण्डिया" शीर्षक व्याख्यान दिया।

भारतीय भाषा केन्द्र

1. नसीर अहमद खान ने दिल्ली उर्दू अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित "नये–पुराने चिराग" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

2. नसीर अहमद खान ने दिल्ली उर्दू अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित "उर्दू क्रिटिसिज्म, उर्दू फिक्शन ऐंड उर्दू पोइट्री" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

3. मोहम्मद शाहिद हुसैन ने 28 फरवरी से 3 मार्च 2003 तक अंजुमन तरक्की उर्दू द्वारा आयोजित "जश्न–ए–सदसाला" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

4. मोहम्मद शाहिद हुसैन ने 24 मार्च 2003 को "उर्दू जर्नलिज्म ट्रेनिंग नीड्स ऐंड प्रोसपेक्टस" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

5. वीर भारत तलवार ने 31 जुलाई 2002 को नई दिल्ली में आयोजित "नव–जागरण के संगठन और संस्थाएं" विषयक हंस वार्षिक गोष्ठी में भाग लिया।

6. देवेन्द्र कुमार चौबे ने 26 से 27 अक्टूबर 2002 तक चीनी और जापानी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा भारत में आयोजित जापान फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "सोशल आइडेंटिटीज आफ लिट्रेचर ऐंड द व्यूज आफ हिन्दी राइटर्स अबाउट जेपनीज लिट्रेचर" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. सुषमा जैन ने 9 से 11 जनवरी 2003 तक आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली द्वारा आयोजित "फिफ्टी ईयर्स आफ इण्डो–जेपनीज रिलेशंस" विषयक इण्डो–जापान संगोष्ठी की परिचर्चा में भाग लिया।

2. सुषमा जैन ने 7 से 8 नवम्बर 2002 तक एम.ओ.एस.ए.आई. और एसोसिएशन आफ इंटरनेशनल एज्यूकेशन, जापान द्वारा इण्डिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित "इण्डिया–जापान कोआप्रेशन इन एज्यूकेशन फार ग्लोबल पार्टनरशिप" विषयक द्विपक्षी संगोष्ठी में भाग लिया और रिपोर्ट पेश की।

3. सुषमा जैन ने 17 से 21 दिसम्बर, 2002 तक भारतीय जापानी भाषा शिक्षक संघ, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "डिवलपिंग माडल करिकुलर फार जेपनीज लैंग्यूवेज टीचिंग इन इण्डिया" विषयक कार्यशाला में भाग लिया और कार्यशाला की शिक्षा–समिति की संयोजक के रूप में कार्य किया।

4. राजेन्द्र तोमर ने 26 से 27 दिसम्बर 2002 तक चीनी और जापानी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा इण्डिया हेबिटेट सेंटर में आयोजित "एंडयूरिंग टाइस बिटविन इण्डिया ऐंड जापान थ्रू लिट्रेचर : इट्स हिस्ट्री ऐंड फ्यूचर प्रोस्पेक्टस" विषयक इण्डो–जापान अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "इण्डियन रिफलेक्शंस इन निहोंगी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. राजेन्द्र तोमर ने दिसम्बर 2002 में नेहरू युवा केंद्र, नई दिल्ली में भारतीय जापानी भाषा शिक्षक संघ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय 'जलतेई' कार्यशाला में 'पार्टटाइम इंटेंसिव कोर्स इन जेपनीज' शीर्षक कोर्स की पाठ्य संरचना तैयार की।

6. मंजुश्री चौहान ने 26 से 27 दिसम्बर 2002 को इण्डिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में चीनी और जापानी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित "एंडयूरिंग टाइस बिटवीन इण्डिया ऐंड जापान थ्रु लिट्रेचर : इट्स हिस्ट्री ऐंड फ्यूचर प्रोसपेक्टस" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय इण्डो–जापान सम्मेलन में भाग लिया और "इण्डियन फोकटेल्स इन जेपनीज फोक–लिट्रेचर इन इण्डिया – हिस्टोरिकल बैकग्राउंड ऐंड फ्यूचर प्रोसपेक्टस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. मंजुश्री चौहान ने दिसम्बर 2002 में नेहरू युवा केंद्र, नई दिल्ली में भारतीय जापानी शिक्षक संघ द्वारा आयोजित 'जलतेई' कार्यशाला में "डिस्टेंस लर्निंग इन जेपनीज" शीर्षक कोर्स की संरचना तैयार की।

8 प्रेम मोटवानी ने 26 से 27 अक्टूबर को जापान फांउडेशन द्वारा प्रायोजित और दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित "एंडयूरिंग टाइज बिटवीन इण्डिया ऐंड जापान थ्रु लिट्रेचर : इट्स हिस्ट्री ऐंड फ्यूचर प्रोसपेक्टस" विषयक इण्डो–जापान अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "लिट्रेचर ऐंड सोशल चैंज इन मेईजी जापान–नतसुमे सोसेकी ऐंड न्मोरी ओगई" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. प्रेम मोटवानी ने 17 दिसम्बर, 2002 को ताज महल होटल, नई दिल्ली में आयोजित "इण्डो जापान 21स्ट सेंचुरी" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

10. प्रेम मोटवानी, यूमेज़ावा नोबयोशी : द विनिंग फार्मूला – मार्केटिंग इनिशिएटिंग प्रोजेक्ट, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2003 (जापानी से अनुदित)

11. प्रेम मोटवानी, यम्मादा मामी : द ब्लैक अम्ब्रेला (अंग्रेजी में शीघ्र प्रकाशित होने वाला जापानी से अनुदित एक उपन्यास)

12. अनिता खन्ना ने 14 जून, 2002 को निचिबुन केन क्योटा में आयोजित "द कनसेप्ट आफ द अदर वर्ल्ड ऐज पोट्रेड इन जताका स्टोरिज" विषयक चौथी संयुक्त संगोष्ठी में भाग लिया।

13. अनिता खन्ना ने अक्टूबर 2002 में इण्डिया हेबिटेट सेंटर में आयोजित "एंडयूरिंग टाइज बिटवीन इण्डिया ऐंड जापान थ्रु लिट्रेचर" विषयक सम्मेलन में भाग लिया और दो आलेख प्रस्तुत किए।

14. अनिता खन्ना ने नवम्बर, 2002 में आयोजित "माडल करिकुला फार टीचिंग जेपनीज इन इण्डिया" विषयक 5दिवसीय कार्यशाला एव संगोष्ठी में भाग लिया और संयुक्त रूप से एक आलेख प्रस्तुत किया।

15. अनिता खन्ना ने 9 से 11 जनवरी, 2003 तक आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली द्वारा आयोजित "फिफ्टी इयर्स आफ इण्डिया जेपनीज रिलेशंस" विषयक इण्डो–जापान संगोष्ठी में भाग लिया और 10 जनवरी 2003 के "जेपनीज लिट्रेचर" विषयक सत्र में परिचर्चा की।

16. अनिता खन्ना ने जापान दूतावास से भारत–जापान के राजनयिक सम्बन्धों के पचास वर्ष पूरे होने पर 'संगम' पत्रिका निकाली, अक्टूबर 2002

17. नीरा कोंगरी ने 17 से 21 दिसम्बर 2002 तक जापानी भाषा शिक्षक संघ द्वारा आयोजित "माडल कारिकुला फार टीचिंग जेपनीज" विषयक 5दिवसीय कार्यशाला व संगोष्ठी में भाग लिया।

18. नीरा कोंगरी, अशोक के. चावला, मसाको मित्रा ने 'जलतेई' की "जेपनीज लैंग्वेज लर्निंग इन इण्डिया : टीचिंग मैथडोलाजी ऐंड द इश्यूज" विषयक संगोष्ठी की कार्यवाही का सम्पादन किया।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. कपिल कपूर ने 6 अप्रैल 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में (आई.सी.पी.आर. द्वारा प्रायोजित) आयोजित "फिलासफी आफ ड्रामेटिक आर्ट्स" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और "फिलासफी आफ नाट्यशास्त्र" शीर्षक मुख्य व्याख्यान दिया।

2. कपिल कपूर ने 13 अप्रैल 2002 को इण्डिया हेबीटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित (आई.सी.एस.एस.आर. द्वारा प्रायोजित) "संस्कृत साइंटिफिक लिट्रेचर" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में "वेल्यू सिस्टम इन संस्कृत साइंटिफिक थाट" शीर्षक समापन वकतव्य दिया।

3. कपिल कपूर ने 27 सितम्बर 2002 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति में "पाणिणी'स अष्टाध्यायी ऐंड कंप्यूटेशनल पासिबिलिटीज" शीर्षक व्याख्यान दिया।

4. कपिल कपूर ने 29 जनवरी 2003 को सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के अंग्रेजी और तुलनात्मक साहित्य विभाग में "इण्डियन 19थ सेंचुरी रेनेसाँ" विषयक मुख्य व्याख्यान दिया।

5. कपिल कपूर ने 2 फरवरी 2003 को उत्तरी गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन में इंडियन डायस्पोरा विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में इण्डियन डायस्पोरिक कंशसनेस शीर्षक व्याख्यान दिया।

6. एस.के. सरीन ने 23 से 25 जनवरी, 2003 तक जेएनयू में आयोजित "पोस्टक्लोनियअल लिट्रेचर्स : पोइटिक्स, पालिटिक्स ऐंड प्रैक्सिस" विषयक आई.ए.सी.एल.ए.एल.एस. वार्षिक सम्मेलन में "इमेजिस आफ सारो इन एबओरिजनल पोइट्री : द आस्ट्रेलियन एक्सपिरियंस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. मकरंद प्रांजपे ने 5 अप्रैल 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित "वेल्यू एज्यूकेशन ऐंड द ड्रामेटिक आर्ट्स" विषयक आई.सी.पी.आर. संगोष्ठी में "नाट्योत्पत्तिः द ओरिजन आफ ड्रामा" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. मकरंद प्रांजपे ने 23 सितम्बर 2002 को फोर्ड फांउडेशन, नई दिल्ली में आयोजित "स्प्रियुअलिटी ऐंड डिवलपमेंट" विषयक एक दिवसीय सम्मेलन में भाग लिया और "स्वाध्याय ऐंड डिवलपमेंट" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. मकरंद प्रांजपे ने 28 से 30 अक्टूबर, 2002 तक इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में महात्मा गांधी इंटरनेशनल हिन्दी विश्वविद्यालय और सेंट्रेल इंस्टीट्यूट आफ इण्डियन लैंग्यूवेजिस द्वारा आयोजित "21स्ट सेंचुरी रिएलिटी : लैंग्यूवेज, कल्चर ऐंड टेक्नोलाजी" विषयक सम्मेलन में "बाम्बे ड्रीम्स ऐंड रिएलिटीज : बालीवुड ऐंड पोस्टक्लोनिअल फ्यूचर्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया तथा एक सत्र की अध्यक्षता भी की।

10. मकरंद प्रांजपे ने 12 दिसम्बर 2002 को गोवा कला अकादमी और साहित्य अकादमी, गोवा द्वारा आयोजित "ट्रेवल राइटिंग" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक सत्र की अध्यक्षता की।

11. मकरंद प्रांजपे ने 17 से 18 दिसम्बर 2002 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता में आयोजित "होम ऐंड द वर्ल्ड : लिट्रेरी ऐंड कल्चरल एनकाउंटर्स इन क्लोनिअल ऐंड पोस्टक्लोनिअल इण्डिया" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में "रीवर्ल्डिंग द होम : क्लोनिअलिज्म, कल्चर ऐंड चैंज" शीर्षक उद्घाटन व्याख्यान दिया और एक सत्र की अध्यक्षता भी की।

12. मकरंद प्रांजपे ने 20 से 22 दिसम्बर 2002 तक उत्तरी गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन में आयोजित "इण्डियन डायस्पोरिक एक्सपिरियंस : हिस्ट्री, कल्चर ऐंड आइडेंटिटी" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया, एक सत्र की अध्यक्षता की और समापन वकतव्य दिया।

13. मकरंद प्रांजपे ने 14 फरवरी, 2003 को भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रो. बृज बी. काचरू द्वारा दिए गए प्रो. आर.एन. श्रीवास्तव स्मारक व्याख्यान की अध्यक्षता की।

14. मकरंद प्रांजपे ने 22 फरवरी 2003 को प्रेजिडेंसी कालेज, कलकता में "द रिलक्टेंट गुरू : आर.के. नारायण ऐंड द गाइड" शीर्षक प्रथम हरेन्द्रनाथ बासक स्मारक व्याख्यान दिया।

15. मकरंद प्रांजपे ने 22 से 23 फरवरी 2003 को इंटरनेशनल फोरम आन इण्डिया'ज हेरिटेज ऐंड श्री श्री सीता राम दास ओकारनाथ संस्कृत शिक्षा संसद द्वारा आई.आई.ए.एस., आई.सी.पी.आर. और आई.सी.एच.आर., जादवपुर यूनिवर्सिटी, कलकता के सहयोग से आयोजित "द फिलास्फी आफ वेल्यू एज्यूकेशन" विषयक संगोष्ठी में "इंटोरेगेटिंग इण्डियन पोस्ट–नेशनलीज्म : कल्चर सिटीजनशिप ऐंड ग्लोबल फ्यूचर्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

16. मकरंद प्रांजपे ने 20 मार्च 2003 को सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट में "द रिनेसाँ इन इण्डिया", शीर्षक लखानी स्मारक व्याख्यान दिया।

17. जी.जे.वी. प्रसाद ने फरवरी 2003 में कथा द्वारा आई.आई.सी. में आयोजित संगोष्ठी के "राइटिंग्स फ्राम द मार्जिंस" विषयक सत्र की अध्यक्षता की।

18. फ्रांसन मंजलि ने मार्च 2003 में जर्मन अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "थीओडो डब्ल्यू एडोरनो स्मारक कार्यशाला में एडोरनो ऐंड डीकंस्ट्रक्शन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

19. फ्रांसन मंजलि ने फरवरी 2003 में महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संस्थान, कोटटायम द्वार आयोजित "पोस्ट क्लोनिअलिज्म : थीअरिज ऐंड डिलेमास" विषयक आई.सी.एस.एस.आर. राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "पोस्ट क्लोनिअलिज्म ऐंड पोस्ट मार्डनीज्म : डिलेमास" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

20. फ्रांसन मंजलि ने नवम्बर 2002 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई द्वारा गोवा में आयोजित "यूनिवर्सल नालेज ऐंड लैंग्यूवेज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "टाइम डिसकोर्स ऐंड ट्रांस–कल्चरलिटी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

दर्शनशास्त्र ग्रुप

1. आर.पी. सिंह ने 6 से 8 अप्रैल 2002 तक आई.सी.पी.आर. और आई.एफ.आई.एच. (इंटरनेशनल फोरम फार इण्डियन हेरिटेज) द्वारा आयोजित "फिलास्फी आफ इण्डियन ड्रामेटिक आर्ट्स ऐंड वेल्यू एज्यूकेशन" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

2. आर.पी. सिंह ने 20 से 21 अप्रैल 2002 तक 'सीता' द्वारा आयोजित "इण्डियन कल्चर इन द इमर्जिंग ग्लोबल आर्डर : चैलेंजिस ऐंड पासिबिलिटीज" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

3. आर.पी. सिंह ने 29 मई 2002 को आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित "जर्मिनेशन ऐंड लेजिटीमेशन आफ साइंस" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

4. आर.पी. सिंह ने 26 से 28 जून 2002 को सी.एस.सी. द्वारा आयोजित "माइनरिटी रिलिजन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

5. आर.पी. सिंह ने 26 से 28 जुलाई 2002 तक 'दिवा' द्वारा आयोजित "एप्लाइड एथिक्स" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

6. आर.पी. सिंह ने 30 जुलाई 2002 को सी.एस.सी., आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित "फिलास्फी आफ हिस्ट्री : गोल्स आफ वेल्यू सीकिंग" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

7. आर.पी. सिंह ने 26 अगस्त 2002 को आयोजित "लैंग्यूवेज ग्रामर ऐंड लिंग्विस्टिक्स इन इण्डियन ट्रेडिशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

8. आर.पी. सिंह ने 24 सितम्बर 2002 को आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित "वीवेक्स सेंट्रेल इनसाइट" विषयक राष्ट्रीय व्याख्यान में भाग लिया।

9. आर.पी. सिंह ने 8 अक्टूबर 2002 को संस्कृत अध्ययन केंद्र जेएनयू द्वारा आयोजित "नव्य–न्याय" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

10. आर.पी. सिंह ने 22 अक्टूबर 2002 का आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित "कांशसनेस" विषय पर प्रो. कासाती द्वारा दिए गए व्याख्यान में भाग लिया।

11. आर.पी. सिंह ने 7 अक्टूबर 2002 को सी.एस.सी. द्वारा आयोजित प्रो. हिलेरी पटनम के "एथिक्स विदाउट मेटाफिजिक्स" विषयक राष्ट्रीय व्याख्यान में भाग लिया।

12. आर.पी. सिंह ने 23 नवम्बर 2002 को सी.एस.सी. द्वारा आयोजित "वर्किंग साइंटिस्ट्स एक्सपिरियंस विद द योग वशिष्ठ" विषयक राष्ट्रीय व्याख्यान में भाग लिया।

13. आर.पी. सिंह ने 24 दिसम्बर को आई.सी.पी.आर./सी.एस.सी. द्वारा आयोजित "कंस्ट्रक्शन आफ इण्डियन आइडेंटिटी : न्यू चैलेंजिस ऐंड ओरिएंटेशंस" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

14. आर.पी. सिंह ने 23 दिसम्बर 2002 को दर्शनशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रो. डेविड मिलर के "क्रिटिकल रेशनलिज्म" विषयक राष्ट्रीय व्याख्यान में भाग लिया।

15. आर.पी. सिंह ने 6 से 8 जनवरी 2003 तक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा आई.सी.पी.आर के सहयोग से आयोजित "यूनिटी आफ माइंड, साइंस, स्प्रिचुअलिटी ऐंड द फ्यूचर सोसायटी" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

16. आर.पी. सिंह ने 23 जनवरी 2003 को सी.एस.सी. द्वारा आयोजित "शोपेनहावर" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

17. आर.पी. सिंह ने 24 से 26 जनवरी 2003 तक सी.एस.सी. द्वारा आयोजित "हिन्दूइज्म" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

18. आर.पी. सिंह ने 28 फरवरी से 1 मार्च 2003 तक आयोजित "स्वामी दयानंद सरस्वती" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

19. आर.पी. सिंह ने 12 मार्च 2003 को जर्मन अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान द्वारा आयोजित : कम्युमोरेटिंग एडोर्नो 'विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में 'एडोर्नोज क्रिटिक आफ कांट ऐंड हीगल" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

20. आर.पी. सिंह ने 29 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित "इण्डियन फिलास्फी, साइंस ऐंड कल्चर" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. वरयाम सिंह, ने 18 से 21 सितम्बर 2002 तक रूसी अध्ययन केंद्र, सी.आई.ई.एफ.एल., हैदराबाद द्वारा आयोजित "ट्रांसलेटिंग बुनिन" विषयक कार्यशाला में मुख्य व्याख्यान दिया।

2. वरयाम सिंह ने 16 अगस्त 2002 को इंटरनेशनल रोरिच ट्रस्ट और इंटरनेशनल अकादमी आफ इण्डियन कल्चर, नई दिल्ली द्वारा प्रख्यात रूसी प्राच्यविद यूरी रोरिच के 100वें जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में व्याख्यान दिया।

3. आर. कुमार ने 30 से 31 अगस्त तक नई दिल्ली में आयोजित "माइनारेटी ऐंड ह्यूमन राइट्स इन बंगलादेश" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

4. आर. कुमार ने 29 से 30 जनवरी 2003 तक नई दिल्ली में आयोजित "रोल आफ बंगलादेश इन इनसरजेंसी इन नार्थ–ईस्ट" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

इस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. एस.पी. गांगुली ने 24 से 26 मार्च 2003 तक भारत में आयोजित "हिस्पानिज्म ऐंड लुसो–ब्राजिलियन स्टडीज : फ्लेशबेक्स ऐंड प्रोजेक्शंस" विषयक पांचवीं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'La recepcion de Nehru en la prensa espanola de los resenta' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. राजीव सक्सेना ने 24 से 26 मार्च 2003 तक भारत (नई दिल्ली) में आयोजित "हिस्पानिज्म ऐंड लुसो ब्राजिलियन स्टडीज : फ्लेशबैक ऐंड प्रोजेक्शंस फ्राम द प्रेजेंट : ए कालेज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "La ensenanza den espanol como L/E en el contexto multilingue de la India" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. शांता रामकृष्ण ने 3 से 7 मार्च 2003 तक गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में स्नातकोत्तर और शोध छात्रों के लिए आयोजित 'मल्टीकल्चरलिज्म एण्ड मल्टीलिंग्वलिज्म इन कनाडा – ए बैक ग्राउण्ड प्रजेन्टेशन' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. अनिल भट्टी ने 27 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक डिपार्टमेंट आफ जर्मेनिक ऐंड रोमंस स्टडीज, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित "लिट्रेचर ऐंड इण्डस्ट्री : फ्राम द प्रिंटेड टेक्स्ट टु द हाइपर टेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया और एक सत्र की अध्यक्षता की।

2. कविता भाटिया ने 27 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक डिपार्टमेंट आफ जर्मेनिक ऐंड रोमंस स्टडीज, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित "लिट्रेचर ऐंड इण्डस्ट्री : फ्राम द प्रिंटिड टेक्स्ट टु द हाइपरटेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

भारतीय भाषा केन्द्र

1. मैनेजर पाण्डेय ने 28 अप्रैल 2002 को महाराष्ट्र संस्कृत केंद्र, मुम्बई में "आज का समाज और कबीर" विषयक व्याख्यान दिया।

2. मैनेजर पाण्डेय ने 19 अक्टूबर 2002 को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल में "हिन्दी नवजागरण का महत्व" विषयक व्याख्यान दिया।

3. मैनेजर पाण्डेय ने 9 नवम्बर 2002 को इलाहाबाद में "भूमण्डलीकरण और साहित्य का संकट" विषयक देवी शंकर अवस्थी स्मृति व्याख्यान दिया।

4. मैनेजर पाण्डेय ने 10 नवम्बर, 2002 को आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी में "साहित्य और मार्क्सवादी आलोचना दृष्टि" विषयक व्याख्यान दिया।

5. मैनेजर पाण्डेय ने 10 दिसम्बर 2002 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर "साहित्य में स्त्री विमर्श" विषयक व्याख्यान दिया।

6. मैनेजर पाण्डेय ने 12–13 दिसम्बर 2002 को गोरखपुर विश्वविद्यालय में आयोजित हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "भूमण्डलीकरण, सांस्कृतिक राष्ट्रीयवाद और साहित्य" विषयक व्याख्यान दिया।

7. मैनेजर पाण्डेय ने 16 दिसम्बर 2002 को पंजाब विश्वविद्यालय में आयोजित हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "भारतेन्दु और भारतीय नवजागरण" विषयक व्याख्यान दिया।

8. मैनेजर पाण्डेय ने 24 दिसम्बर को मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद में आयोजित हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "उत्तरशती का हिन्दी साहित्य" विषयक समापन व्याख्यान दिया।

9. मैनेजर पाण्डेय ने 4 मार्च, 2003 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के हिन्दी विभाग में "भक्ति आंदोलन का सांस्कृतिक महत्व" विषयक व्याख्यान दिया।

10. मैनेजर पाण्डेय ने 28 मार्च 2003 को दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्क्रम में "साहित्य और मूल्य चेतना" विषयक व्याख्यान दिया।

11. नसीर अहमद खान ने प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन, दिल्ली द्वारा आयोजित "उर्दू क्रिटिसिज्म आफ प्रोग्रेसिव मूवमेंट ऐंड उर्दू लिट्रेचर" विषयक व्याख्यान दिया।

12. नसीर अहमद खान ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में "उर्दू फिक्सन" विषयक व्याख्यान दिया।

13. नसीर अहमद खान ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में "इकबाल ऐंड ह्यूमनिज्म, सांझी विरासत" विषयक व्याख्यान दिया।

14. पुरूषोत्तम अग्रवाल ने 3 अगस्त 2002 को नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में "द वेज आफ सीइंग" विषयक व्याख्यान दिया।

15. पुरूषोत्तम अग्रवाल ने 23 दिसम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में आयोजित अनुशीलन कोर्स के प्रतिभागियों को "द आइडिया आफ लिट्रेचर" विषयक व्याख्यान दिया।

16. पुरूषोत्तम अग्रवाल ने 7.12.2003 को महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में एम.ए. (हिन्दी) और एम.ए. (अहिंसा) के छात्रों को व्याख्यान दिए।

17. मोहम्मद शाहिद हुसैन ने 22 फरवरी 2003 को गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में "टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम" में विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिया।

18. देवेंद्र कुमार चौबे ने 28 अगस्त 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में "न्यू हिन्दी लिट्रेचर : दलित राइटिंग" विषयक व्याख्यान दिया।

19. ज्योतिसर शर्मा ने 14 अगस्त 2002 को फादर एगनल स्कूल, गौतम नगर नई दिल्ली में व्याख्यान दिया।

20. ओम प्रकाश सिंह ने 2 जनवरी 2003 को हिन्दी विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी में "आरंभिक हिन्दी आलोचना के स्वरूप" विषयक व्याख्यान दिया।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. एस.के. सरीन ने अकादमिक स्टाफ कालेज, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में "आस्ट्रेलियन पोइट्री एंड साउथ एशियन लव पोइट्री" विषयक दो व्याख्यान दिए।

2. मकरंद प्रांजपे ने 4 से 6 अक्टूबर, 2002 तक फायरफ्लाईज आश्रम, बंगलौर में "कम्यूनल हार्मोनी" विषयक पीपल ट्री कार्यशाला में "धर्म और कम्युनलिज्म" विषयक परिचर्चा की।

3. मकरंद प्रांजपे ने 8 नवम्बर 2002 को नेशनल बुक ट्रस्ट के पूर्वी पुस्तक मेला धुलिअंजन, आसाम में "इंग्लिश लिट्रेचर वर्सिज भाषा लिट्रेचर" विषयक व्याख्यान दिया।

4. मकरंद प्रांजपे ने 14 नवम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में "लिट्रेरी थीअरि आफ्टर स्ट्रक्चरलिज्म" और 'पोस्टक्लोनियल थिअरी' विषयक दो व्याख्यान दिए।

5. मकरंद प्रांजपे ने 16 नवम्बर 2002 को कमानी सभागार में रेनेसाँ आर्टिस्ट ऐंड राइटर्स एसोसिएशन (रावा) में अतिथि के रूप में संक्षिप्त परिचर्चा की।

6. मकरंद प्रांजपे ने 6 फरवरी, 2003 को ला मेरिडियन होटल, नई दिल्ली में "रशिया ऐंड इंडिया : डायलाग आफ सिविलाइजेशंस इन ए ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड" विषयक संगोष्ठी में आमंत्रित प्रतिभागी के रूप में भाग लिया।

7. मकरंद प्रांजपे ने 20 फरवरी 2003 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में "टीचिंग लिट्रेचर टुडे" विषयक वि.अ.आ. पुनश्चर्या कोर्स में उद्घाटन भाषण दिया।

8. मकरंद प्रांजपे ने श्री अरबिंदो आश्रम, दिल्ली शाखा में प्रत्येक माह के पहले रविवार को "सावित्री : द एपिक आफ कांशसनेस" विषयक व्याख्यान दिए।

9. पी.के.एस. पाण्डेय ने 7 से 8 जनवरी 2003 तक सी.आई.ई.एफ.एल., लखनऊ परिसर में आयोजित पुनश्चर्या कोर्स में "इंग्लिश फोनोलाजी" विषयक व्याख्यान दिए।

10. जी.जे.वी. प्रसाद ने नवम्बर 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में "इण्डियन इंग्लिश लिट्रेचर" विषयक व्याख्यान दिए।

11. फ्रांसन मंजलि ने फरवरी 2003 में फ्रेंच इंफोर्मेशन रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली में "जीन लुक नेंसी : फ्राम बींग टु बींग–इन–कामन" विषयक व्याख्यान दिया।

रूसी अध्ययन केंद्र

1. मीता नारायण ने 23 सितम्बर 2002 को अंग्रेजी और आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आयोजित "रशियन कल्चर ऐंड सिवलाइजेशन" विषयक व्याख्यानमाला में "चैंजिस इन द वेकेबलरी आफ रशियन लैंग्यूवेज" विषयक व्याख्यान दिया।

2. मीता नारायण ने 17 दिसम्बर 2002 को जर्मन/रूसी विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई में "न्यू तकनीक्स ऐंड मैथड्स आफ टीचिंग रशियन" विषयक व्याख्यान दिया।

3. मीता नारायण ने 27 जनवरी 2003 को राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मालवीय नगर, नई दिल्ली में "कोर्सिस ऐंड केरियर्स इन फारेन लैंग्यूवेजिज" विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान में आए अतिथि

चीनी और दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र

केंद्र को चीनी दूतावास के राजदूत महामहिम हुआ जुंदुओ से एक कंप्यूटर और चीनी सॉफ्टवेयर उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ। भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन केंद्र के समिति कक्ष में 18 सितम्बर 2002 को एक समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के डीन प्रो. वसन्त गदरे, चीनी गणराज्य के राजदूत महामहिम हुआ जुंदुओ और केंद्र के अध्यक्ष डा. एम. भट्टाचार्य ने वक्तव्य दिए।

2. आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली के निमन्त्रण पर भारत आए साहित्य संस्थान, चीनी सामाजिक विज्ञान अकादमी, चीनी गणराज्य के प्रो. यांग यी और प्रो. जीओ जियानपिंग ने 3 जनवरी 2003 को केंद्र का दौरा किया और संकाय सदस्यों के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया। प्रो. यांग, जो संस्थान के निदेशक और लिट्रेरी रिव्यू के मुख्य सम्पादक भी हैं, ने चीन की सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रवृत्तियों के विभिन्न पक्षों पर परिचर्चा की। प्रो. जिओ जो सौंदर्यशास्त्र में विशेषज्ञ हैं, ने आधुनिक चीनी साहित्य और चीनी साहित्य पर भूमण्डलीकरण के प्रभाव से सम्बन्धित मामलों पर संक्षिप्त चर्चा की।

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. प्रो. शेरी साइमन, कोनकोर्डिया विश्वविद्यालय
2. पासकल ब्रुकनेर, समसामयिक फ्रांस के सुप्रसिद्ध बुद्धिजीवी, उपन्यासकार, निबन्धकार तथा पत्रकार हैं।
3. हेनरी गोदार्द, सीलाइन और मालराक्स पर ला पलेइदा भाग के सम्पादक हैं।
4. यीव्स वेगबेदर, मालट्राक्स और भारत के विशेषज्ञ, प्रोफेसर देस यूनिवर्सिटि'स

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. प्रो. डा. वेनो तेसच्को, यूनिवर्सिटी आफ स्वानस्का, वेल्स, ग्रेट ब्रिटेन, 16 अप्रैल 2002 को केंद्र में आए।
2. श्री वाल्टर श्वेप (एम.एम.वी.) 30 अक्टूबर 2002 को केंद्र में आए और 'साहित्यिक अनुवाद (जर्मन काव्य)' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।
3. सुश्री लिलियन फाशिंगर, प्रसिद्ध आस्ट्रियाई लेखिका, 28 जनवरी 2003 को केंद्र में आईं और अपनी कृतियाँ पढ़ कर सुनाईं।
4. प्रो. डा. एच. इगर्त, एफ.यू. बर्लिन, जर्मनी, 25 फरवरी 2003 को केंद्र में आए और व्याख्यान दिया।
5. डा. कैथलीन केर, यूनिवर्सिटी आफ सुंदरलैण्ड, यू.के. 26 फरवरी 2003 को केंद्र में आए और एडोर्नो पर व्याख्यान दिया।
6. प्रो. डा. मैनफ्रेड स्तासेन, 'डाड', बोन, जर्मनी, 26 फरवरी 2003 को केंद्र में आए और एडोर्नो पर व्याख्यान दिया।
7. प्रो. मार्टिन बोलाकेर, यूनिवर्सिटी आफ बोचम, जर्मनी, 6 मार्च 2003 को केंद्र में आए और 'वर्ल्ड लिट्रेचर' पर व्याख्यान दिया।
8. डा. हेनरिक बलोमेके, निदेशक, एम.एम.बी., नई दिल्ली 12 मार्च 2003 को केंद्र में आए और शैक्षिक आदान-प्रदान के लिए विचार-विमर्श किया।
9. डा. सोमित राय, शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत, 12 मार्च 2003 को केंद्र में आए और 'एडोर्नो' कार्यशाला में व्याख्यान दिया।
10. डा. अभय कुमार मिश्र, बी.एच.यू., वाराणसी, 12 मार्च 2003 को केंद्र में आए और एडोर्नो' कार्यशाला में व्याख्यान दिया।
11. डा. एस. मजुमदार, दिल्ली विश्वविद्यालय 12 मार्च 2003 को केंद्र में आए और एडोर्नो कार्यशाला में भाग लिया।
12. प्रो. नामवर सिंह, जेएनयू, ने 12 मार्च 2003 को एडोर्नो कार्यशाला में 'एडोर्नो और हिन्दी लिट्रेचर' विषय पर व्याख्यान दिया।
13. प्रो. मैनेजर पाण्डेय, जेएनयू, ने 12 मार्च 2003 को एडोर्नो कार्यशाला में 'एडोर्नो ऐंड हिन्दी लिट्रेचर' विषय पर व्याख्यान दिया।
14. प्रो. जी.पी. देशपाण्डे, जेएनयू, ने 12 मार्च को एडोर्नो कार्यशाला में 'एडोर्नो ऐंड इण्डियन लिट्रेचर' विषय पर व्याख्यान दिया।

जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. प्रो. ताकाहाशी ने 4, 9, 11 और 18 अक्टूबर, 2002 को "पोस्ट वार ऐंड माडर्न जेपनीज लिट्रेचर' विषय पर व्याख्यान दिए
2. प्रो. एस.के. चौधरी ने "इण्डियन डाइटीस इन जेपनीज लिंग्विस्टिक" विषय पर व्याख्यान देने हेतु 5, 9 और 10 दिसम्बर 2002 को केंद्र का दौरा किया।
3. श्री योशिआकी दिदा, गकूगई यूनिवर्सिटी, टोकियो, ने 6 फरवरी 2003 से 4 मई 2003 तक स्नातकोत्तर छात्रों के लिए "माडर्न जेपनीज लिट्रेचर" विषय पर व्याख्यान दिए।
4. डा. अहन जिओंग-लिओन ने 13 फरवरी, 2003 को केंद्र का दौरा किया और 'न्यू जेनरेशंस कोरिया' विषयक व्याख्यान दिया।
5. केन्द्र के कोरियाई भाषा पाठ्यक्रम के छात्रों के लिए एक कोरियाई निवासी ने कोरियन किमची बनाने का तरीका बताया और एक विशेष व्याख्यान दिया।

6. ओसाका यूनिवर्सिटी आफ फारेन स्टडीज के छात्रों और शिक्षकों ने 28 मार्च 2003 को एक हिन्दी नाटक का मंचन किया।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. प्रो. आर.सी. शर्मा ने 23 अप्रैल और 30 अप्रैल 2002 को 'थीअरिज आफ ब्रेन ऐंड लैंग्यूवेज' विषय पर दो व्याख्यान दिए।
2. डा उलरिके जेशान ने 25 सितम्बर 2002 को 'रिसर्च आन इण्डियन साइन लैंग्यूवेज – पर्सपेक्टिव्स फार द फ्यूचर' विषयक व्याख्यान दिया।
3. प्रो. राय हेरिस ने 29 अक्टूबर 2002 को 'इंटिग्रेशनिज्म, टाइम ऐंड लैंग्यूवेज' विषय पर व्याख्यान दिया।
4. प्रो. के.के. भारद्वाज ने 21 नवम्बर 2002 को 'आर्टिफिशिअल इंटेलिजेंस ऐंड न्यूरल नेटवर्क' विषयक व्याख्यान दिया।
5. प्रो. मार्टिना घोष – शेलहोर्न ने 5 फरवरी 2003 को 'लीविंग विदिन कल्चर्स ट्रांसकल्चरल आइडेंटिटी' विषयक व्याख्यान दिया।
6. प्रो. चॉदनी लोकुज ने 5 फरवरी 2003 को "द इण्डो–ब्रिटिश एनकाउंटर इन अर्ली इण्डियन इंग्लिश वूमन'स टेक्स्ट्स" विषयक व्याख्यान दिया।
7. डा. करण सिंह ने 11 फरवरी 2003 को काव्य पाठ किया।
8. पीटर केरी और किम स्काट ने 11 फरवरी 2003 को परिचर्चा की/अपनी कृतियों को पढ़ा।
9. अर्ल चार्टर ने 11 फरवरी 2003 को द हूपडॉस पर व्याख्यान दिया तथा प्रदर्शन किया।
10. डा. राम पंडित ने 6 मार्च और 11 मार्च 2003 को 'डिफ्रेंट टाइप्स आफ कम्युनिकेशन डिसआर्डर्स' विषयक 2 व्याख्यान दिए।
11. एस.एस. शर्मा ने 11, 22 और 25 मार्च 2003 को "द ट्रेडिशन आफ लिट्रेरी क्रिटिसिज्म इन कनाडा" विषय पर 3 व्याख्यान दिए।

दर्शनशास्त्र ग्रुप

1. डा. सरल जींगरान, पूर्व शोध विज्ञानी – बी ने 27 अगस्त 2002 को "इंट्रोडक्शन टु इण्डियन फिलास्फी" विषयक व्याख्यान दिया।
2. डा. सरल जींगरान, पूर्व शोध विज्ञानी – बी ने 11 सितम्बर 2002 को "अद्वैत वेदान्त" विषय पर व्याख्यान दिया।
3. प्रो. वी.एन. झा, संस्कृत अध्ययन केंद्र, जेएनयू ने 18 सितम्बर 2002 को "बेसिक फीचर्स आफ इण्डियन फिलास्फी" विषयक व्याख्यान दिया।
4. प्रो. बलराम सिंह, मेसाचुसेटस यूनिवर्सिटी, बोस्टन, यू.एस.ए. ने दर्शनशास्त्र ग्रुप द्वारा आयोजित "साइंस ऐंड फिलास्फी इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।
5. प्रो. वी.एन. झा, संस्कृत अध्ययन केंद्र, जेएनयू ने 29 जनवरी, 2003 को "इण्डिन मेटिरियलिज्म, रिएलिज्म ऐंड आइडिआलिज्म" विषयक व्याख्यान दिया।

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. सुश्री नीरा शोवगरयान, रूसी शोधार्थी ने 11 अप्रैल 2002 को "आर्मेनिया इन इण्डिया – एंशिऐंट कनटेक्ट" विषयक व्याख्यान दिया।
2. सुश्री तात्याना बाइकोवा, रूसी शोधार्थी ने 12 अगस्त 2002 को "इण्डोलॉजी इन सेंट पीटर्सबर्ग यूनिवर्सिटी" विषयक व्याख्यान दिया।
3. सुश्री स्वेतलाना कारावत्सोवा, रूसी शोधार्थी ने 16 जनवरी 2003 को "चैंजिस टेकिंग प्लेस इन कनटेम्पोरेरि रशिया" विषयक व्याख्यान दिया।
4. श्री वाई.आई. मकारोवा, अध्यक्ष, सूचना एवं संस्कृति अनुभाग, रूसी विज्ञान एवं संस्कृति केंद्र, नई दिल्ली ने 23 जनवरी 2003 को केंद्र का दौरा किया और संकाय सदयों के साथ विचार–विमर्श किया।
5. सुश्री एन.जी. एलिसीवा, अध्यक्ष, बोर्ड आफ डायरेक्टर्स, सेंट पीटर्सबर्ग एसोसिएशन फार इंटरनेशनल कोआप्रेशन, सेंट पीटर्सबर्ग, के नेतृत्व में एक उच्चाधिकार प्राप्त शिष्टमंडल ने 7 मार्च 2003 को केंद्र का दौरा किया और "रिच कल्चर ऐंड लिट्रेरी हेरिटेज आफ सेंट पीटर्सबर्ग" विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान द्वारा अयोजित संगोष्ठियां/सम्मेलन

चीनी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. केंद्र ने शीतकालीन सत्र के दौरान फरवरी के अन्त और अप्रैल के मध्य में एक विशेष व्याख्यानमाला 2003 का आयोजन किया। इसमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विभिन्न केंद्रो में शोध कार्य में संलग्न चीनी गणराज्य के शोधार्थियों ने विभिन्न निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिए –
    1. सुश्री गुआ सुइयान, "युनान ऐंड इट्स कनटेक्स्ट्स विद इण्डिया"
    2. सुश्री शेन केयान, "शिंघई – द लार्जेस्ट मेट्रोपोलिक्सि आफ चाइना"
    3. श्री माओ शिचांग, "विसिटीट्यूड्स आफ फाइव डिकेड्स आफ न्यू चाइना"
    4. सुश्री मा लींग, "एज्यूकेशन इन कंटेम्पोरेरि चाइना"
    5. श्री जिआ हेताओ, "5000 ईयर्स आफ चाइनीज सिवलाइजेशन"
    6. सुश्री डेंग लॉन, "माइनोरिटी एथनिक ग्रुप्स आफ चाइना"
2. एम. भट्टाचार्य ने सितम्बर 2002 में "लु शुन : एन इंट्रोडक्शन" विषयक व्याख्यान दिया।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. अनिल भट्टी ने 12 मार्च 2003 को थिओडोर डब्ल्यू एडोर्नो (1903–1969) पर आयोजित कार्यशाला में "कोमिमोरेटिंग एडोर्नो : फिलारफी इन डिफिकल्ट टाइम्स" विषयक व्याख्यान दिया।
2. प्रमोद तलगेरि ने 12 मार्च 2003 को "आन द डायलेक्टिक आफ एनलायटनमेंट, थिओडोर डब्ल्यू एडोर्नो (1903–1969)" विषयक व्याख्यान दिया।
3. अरिजीत दक्षी (अतिथि वक्ता) ने 12 मार्च 2003 को "एडोर्नो ऐंड द होलोकास्ट" डिसक्शन, थिओडोर डब्ल्यू एडोर्नो (1903–1969) विषयक व्याख्यान दिया।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. केंद्र ने 23 से 25 जनवरी 2003 तक "पोस्ट क्लोनियल लिट्रेचर्स : पालिटिक्स, पोइटिक्स ऐंड प्रेक्सिस" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।
2. अमस्टर्डम विश्वविद्यालय के प्रो. ऐनी ई. बेकर द्वारा 27 से 31 जनवरी 2003 तक "साइन लैंग्यूवेज ऐंड साइन लिंग्विस्टिक्स" विषयक 5 दिवसीय कार्यशाला–व–संगोष्ठी आयोजित की गई।

इस्पेनी अध्ययन केन्द्र

केंद्र ने 24–26 मार्च 2003 को "हिस्पानिक ऐंड लुसो–ब्राजिलियन स्टडीज : फ्लैशबैक्स ऐंड प्रोजेक्शंस फ्राम द प्रेजेंट" विषयक 5वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। डा. इंद्राणी मुखर्जी सम्मेलन की निदेशक थीं।

शिक्षकों को प्राप्त सम्मान/पुरस्कार/अध्येतावृत्तियां

चीनी और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. प्रियदर्शी मुखर्जी को मई–जून 2002 के लिए चीन राज्य शिक्षा आयोग की "चाइना कल्चर रिसर्च फेलोशिप" प्राप्त हुई।
2. एस. मित्रा को चीनी गणराज्य के शिक्षा मंत्रालय की चीन अध्येतावृत्ति परिषद द्वारा 9 जुलाई से 20 अगस्त 2003 तक बिजिंग नार्मल विश्वविद्यालय, बिजिंग में चीनी भाषा के विदेशी शिक्षकों के लिए अल्पकालीन अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।
3. हेमन्त कुमार अधलखा को 2 से 12 नवम्बर, 2002 तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के 16वीं राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस से संबंधित अध्ययन करने एवं शोध सामग्री एकत्रित करने के संबंध में चीन का दौरा करने के लिए 10 दिन की फेलोशिप प्राप्त हुई।

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. एस.बी. ससालती को 6 जनवरी 2002 से 5 जुलाई 2002 तक गेरहार्ड मरकेटर यूनिवर्सिटी, डयूसबर्ग, जर्मनी ने "विजिटिंग प्रोफेसर आफ जर्मन लिंग्विस्टिक्स ऐंड डिडाक्टिक्स आफ जर्मन ऐज ए फारेन लैंग्वेज" के रूप में आमंत्रित किया।

भारतीय भाषा केन्द्र

1. मैनेजर पाण्डेय को 10 नवम्बर, 2002 को रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा 'आलोचना सम्मान' (राष्ट्रीय पुरस्कार) प्रदान किया गया।
2. ज्योतिसर शर्मा को 9 जनवरी 2002 से रिसर्च साइंटिस्ट 'सी' (प्रोफेसर) नियुक्त किया गया।

जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. पी.ए. जार्ज को 21 सितम्बर 2002 को हानामाकी सिटी गर्वनमेंट, इवाते, जापान द्वारा 12वां मीयाजावा केंजी शोरिसो पुरस्कार (युवा विद्वानों के लिए 12वां मीयाजावा केंजी पुरस्कार) प्रदान किया गया।
2. पी.ए. जार्ज को जापान फाउण्डेशन, टोकियो, जापान द्वारा पोस्ट डाक्टरल रिसर्च फेलोशिप प्रदान की गई।

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. मकरंद प्रांजपे को लोवा विश्वविद्यालय, लोवा सिटी, यू.एस.ए., द्वारा अप्रैल 2002 में आई.एफ.यू.एस.एस. इंटरनेशनल फेलो नामित किया गया।
2. मकरंद प्रांजपे को हेरी रेनसम ह्यूमेनिटीज रिसर्च सेंटर, यूनिवर्सिटी आफ टेक्सास, आस्टिन, यू.एस.ए., द्वारा जून 2002 में मेलन फेलो नामित किया गया।
3. मकरंद प्रांजपे, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट में 20 से 27 मार्च 2003 तक यू.जी.सी. विजिटिंग फेलो रहे।

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. के.पी.एस. उन्नी को भारतीय वैज्ञानिक अनुवादक संघ, नई दिल्ली द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर 'स्क्रोल आफ आनर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें भारत में वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद के क्षेत्र को उन्नत करने में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1. प्रियदर्शी मुखर्जी, सदस्य, सी.ए.एस.आर., एस.एल.एल.सी.एस., जेएनयू, सितम्बर 2000 से अगस्त 2002 तक; सदस्य, अध्ययन मण्डल, एस.एल.एल.सी.एस., जेएनयू, (आज तक); सदस्य, विद्या परिषद, जेएनयू, सितम्बर 2002 से अगस्त 2002 तक; सदस्य, विशेषज्ञ, चीनी भाषा एवं साहित्य के लिए चयन समिति, चीनी सरकार छात्रवृत्ति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 26 अप्रैल 2002 और सदस्य, विशेषज्ञ, चीनी दुभाषियों के लिए गठित चयन समिति, रॉ, सेना आसूचना, भारत सरकार, 4 अप्रैल 2002.
2. एस. मित्रा, 10 मार्च 2003 से मानद फेलो, चीनी अध्ययन संस्थान, सेंटर फार स्टडीज आफ डिवलपिंग सोसाइटीज, नई दिल्ली,
3. हेमन्त कुमार अधलखा, 10 मार्च, 2003 से मानद फेलो, चीनी अध्ययन संस्थान, सी.एस.डी.एस., नई दिल्ली,

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. शांता रामकृष्णा, सदस्य, अध्ययन मण्डल (फ्रेंच) कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र; पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला और सदस्य, कार्य–समिति, इण्डियन एसोसिएशन आफ कनाडियन स्टडीज.
2. किरण चौधरी, सदस्य, अध्ययन मण्डल (फ्रेंच) मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ और सदस्य, कोर्स समिति, सी.बी.एस.ई.

जर्मन अध्ययन केन्द्र

1. अनिल भट्टी, कॉरसपोंडिंग मेम्बर आफ कुरातोरियम, यूरोपेआशिस फोरम, अल्पबेक
2. चित्रा हर्षवर्धन, जेएनयू कोर्ट की सदस्य और जेएनयू विद्या समिति की सदस्य
3. प्रमोद तलगेरि, सदस्य, अध्ययन मण्डल, सामाजिक विज्ञान संस्थान; सदस्य, अरबी और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र, एस.एल.एल.सी.एस.; एस.एल.एल.सी.एस. की भाषा प्रयोगशाला के लिए कुलदेशिक द्वारा गठित विशेष क्रय समिति के सदस्य; वि.अ.आ. द्वारा अहमदाबाद विश्वविद्यालय के लिए गठित दसवीं योजना की विजिटिंग कमेटी के अध्यक्ष; वि.अ.आ. द्वारा पंजाबी विश्वविद्यालय के लिए गठित 10वीं योजना की विजिटिंग कमेटी के अध्यक्ष;

वि.अ.आ. द्वारा विश्वभारती, शान्ति निकेतन के लिए गठित 10वीं योजना की विजिटिंग कमेटी के सदस्य; नागालैण्ड विश्वविद्यालय, कोहिमा की चयन समितियों के लिए विजिटर के नामिती; तेजपुर विश्वविद्यालय की चयन समितियों के लिए विजिटर के नामिती; ई.एम.आर.सी., जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के निदेशक के चयन हेतु गठित चयन समिति में वि.अ.आ. के नामिती; नागालैण्ड विश्वविद्यालय, कोहिमा की वित्त समिति के सदस्य; जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के अकादमिक स्टाफ कोलेज के निदेशक के चयन हेतु गठित चयन समिति में वि.अ.आ. के नामिती।

भारतीय भाषा केन्द्र

1. मैनेजर पाण्डेय, सदस्य, अध्ययन मण्डल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2002; सदस्य, मानविकी संस्थान मण्डल, इग्नू, नई दिल्ली, 2002–2003; सदस्य, दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा बी.ए. (आनर्स) कोर्स के लिए गठित अधिकार प्रदत्त समिति, 2002–2003; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की हिन्दी पुरस्कार के लिए गठित जूरी के सदस्य, 2002; मध्य प्रदेश कला परिषद की हिन्दी पुरस्कार के लिए गठित जूरी के सदस्य, 2002.
2. नसीर अहमद खान, सदस्य, अध्ययन मण्डल, कला संकाय, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू; सदस्य, प्रोफेसर के पद हेतु गठित चयन समिति, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; सदस्य, चयन समिति उ.प्र. उच्च शिक्षा बोर्ड, इलाहाबाद; सदस्य, चयन समिति, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.
3. पुरुषोत्तम अग्रवाल, सदस्य एम.ए. (अहिंसा) पाठ्यक्रम के लिए गठित कोर्स सलाहकार समिति, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
4. वीर भारत तलवार, सदस्य, अध्ययन मण्डल समिति, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, ज.ने.वि.
5. एस.एम. अनवार आलम, सदस्य, अध्ययन मण्डल, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, ज.ने.वि.; सदस्य, परीक्षक मण्डल, पंजाब विश्वविद्याय, चण्डीगढ़; सदस्य, परीक्षक मण्डल, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, यू.पी.; सदस्य, परीक्षक मण्डल,रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.; सदस्य, परीक्षक मण्डल, बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार; सदस्य, परीक्षक मण्डल, बी.पी. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार; सदस्य, शोध समिति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ.प्र.।
6. गोविंद प्रसाद, सदस्य, रक्षा उत्पादन एवं आपूर्ति हिंदी समिति, भारत सरकार

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. पी.के.एस. पाण्डेय, सदस्य, भाषा विज्ञान अध्ययन मण्डल, एम.एस. बड़ौदा, विश्वविद्यालय; सदस्य, भाषा विज्ञान अध्ययन मण्डल, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद; सदस्य, सलाहकार मण्डल, भाषा विज्ञान में विशेष सहायता कार्यक्रम, अन्नामल्लाई विश्वविद्यालय, अन्ना मलाई नगर, तमिलनाडु
2. नवनीत सेठी, सदस्य, सोसाइटी फार द स्टडी आफ मल्टी–एथनिक लिट्रेचर्स आफ द यूनाइटिड स्टेट्स

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. आर. कुमार, सदस्य (2002 से) आधुनिक एवं प्राचीन यूरोपीय भाषा एवं साहित्य में अध्ययन मण्डल, एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात
2. वरयाम सिंह, सदस्य, अध्ययन मण्डल, चौधरी चरण सिंह, विश्वविद्यालय, मेरठ; सदस्य, अध्ययन मण्डल, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर; सदस्य, अध्ययन मण्डल, बम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई
3. मीता नारायण, सदस्य, अध्ययन मण्डल, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान।

हिस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. वसन्त जी. गदरे, दिसम्बर 2002 में 'क्षेत्रीय अध्ययन' कार्यक्रम पर वि.अ.आ. द्वारा गठित सलाहकार स्थाई समिति के अध्यक्ष नामित हुए; फरवरी, 2003 में एन.ए.ए.सी., बंगलौर की कार्य समिति के सदस्य नामित हुए।

छात्रों की उपलब्धियाँ

चीनी और दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र

केंद्र के छात्रों ने 20 फरवरी 2003 को कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान के सभागार में चीन का वसन्त ऋतु समारोह (पारम्परिक चीनी नववर्ष) आयोजित किया। इसमें प्रथम वर्ष से लेकर 5वें वर्ष के सभी छात्रों ने रंग बिरंगी पोशाकों

में नृत्य, चीनी लोक नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किए। छात्रों के अतिरिक्त केंद्र के शिक्षकों, संस्थान के डीन, चीनी गणराज्य के दूतावास के अधिकारियों और जेएनयू में पढ़ाई कर रहे चीनी छात्रों ने भी इस समारोह में भाग लिया। चीन से आए कलाकारों ने भी भारतीय और चीनी नृत्य प्रस्तुत किए।

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

केंद्र के छात्रों ने भाषा साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के वार्षिक समारोह कलोल में ट्राफी हासिल की।

जापानी और उत्तर–पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. एम.ए. जापानी पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष की कु. तनुश्री सांडिल्य और श्री आदित्य कुमार को अक्टूबर 2001 से सितम्बर 2002 तक एक वर्ष के लिए जापानी सरकार की छात्रवृति प्राप्त हुई।
2. एम.ए. कोरियाई पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष की छात्रा कु. गीतिका तलवार को सितम्बर 2002 से अगस्त 2003 तक कोरियाई सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की गई।
3. प्री पी–एच.डी. जापानी पाठ्यक्रम के छात्र श्री नसीम बेडेकर को अप्रैल 2002 से मार्च 2004 तक जापान सरकार द्वारा वरिष्ठ अध्येतावृत्ति प्रदान की गई।
4. अखिल भारतीय जापानी भाषा की वाक प्रतियोगिता में केंद्र के निम्नलिखित छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किए–

वरिष्ठ ग्रुप	**कनिष्ठ ग्रुप**
तीसरा पुरस्कार – अपूर्वा अग्रहारी	द्वितीय पुरस्कार – दीपिका कौशिक

5. केंद्र के निम्नलिखित छात्रों ने अखिल भारतीय जापानी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किए –

वरिष्ठ ग्रुप

प्रथम पुरस्कार – प्रसाद बाकरे, एम.ए. प्रथम वर्ष, जापानी

द्वितीय पुरस्कार – इरा शर्मा, एम.ए. द्वितीय वर्ष, जापानी

तृतीय पुरस्कार – निशा परमेश्वरण, बी.ए. तृतीय वर्ष, जापानी

कनिष्ठ ग्रुप

प्रथम पुरस्कार – इमरोज आलम बी.ए. द्वितीय वर्ष, जापानी

द्वितीय पुरस्कार – विनीत जैन, बी.ए. द्वितीय वर्ष, जापानी

तृतीय पुरस्कार – दीपिका कौशिक

कांजी प्रतियोगिता

1. इमरोज आलम, बी.ए. द्वितीय वर्ष, जापानी
2. अपूर्वा अग्रहारी, बी.ए. तृतीय वर्ष, जापानी

इस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. केंद्र के एम.ए. पाठ्यक्रम के सर्वोत्तम छात्र के लिए निर्धारित रफेल इरूजुविता पुरस्कार संयुक्त रूप से सुश्री शिवानी काक और सुश्री सुनीति सिंह को 28.3.2003 को प्रदान किया गया (नकद राशि रू. 18,000/–, + प्रशस्ति पत्र)
2. इस्पानी में बी.ए. (आनर्स) पाठ्यक्रम में उच्चतम सी.जी.पी.ए. प्राप्त करने पर सुश्री नेहा झा को जूही प्रसाद पुरस्कार प्रदान किया गया।
3. श्री प्रेम प्रकाश, सुश्री रमा पाल और सुश्री सुनीति सिंह को इण्डो–इस्पेनी सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत इस्पेनी सरकार की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई।

कोई अन्य सूचना

1. प्रियदर्शी मुखर्जी ने 30 जून 2002 को इण्डिया–चाइना रिलेशंस : पास्ट, प्रजेंट ऐंड फ्यूचर" पर चीनी रेडियो इंटरनेशनल (हिंदी) को एक रेडियो साक्षात्कार दिया।
2. एच.के. अधलखा ने "माडर्नाइजेशन ऐंड द स्टेट इन कनटेम्पोरेरि चाइना : सर्च फार ए डिस्टेंट सिविल सोसाइटी" शीर्षक शोध प्रबन्ध जमा किया, निर्देशक – जी.पी. देशपाण्डे

3. एच.के. अधलखा, वर्ष 2002 में जे.एफ.आर. – नेट प्रश्न पत्र के लिए यू.जी.सी. विशेषज्ञ पैनल के सदस्य

4. एच.के. अधलखा, बाह्य विशेषज्ञ, मौखिक चीनी परीक्षा, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, 2002

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केंद्र

1. शान्ता रामाकृष्णा, आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली की पत्रिका Rencomtre AvesL'inde on Victor Hugo, भाग 31 के विशेषांक का सम्पादन किया, ।

2. शान्ता रामाकृष्णा, वि.अ.आ., पुनश्चर्या कोर्स, जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय

3. एन. कमला, एम. मुकुंदन'स गाड'स मिसचिव (अनुवाद – प्रेमा जयकुमार), पेंगुइन, दिल्ली 2002 बुक रिव्यू, जनवरी 2003 और हिन्दू लिट्रेरी रिव्यू, जनवरी 2003

4. शोभा शिवशंकरन आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली की पत्रिका Rencomtre AvesL'inde on Victor Hugo, भाग 31, अंक 2, 2002, में रंजन कृष्णन की लघु कहानियों का फ्रेंच अनुवाद प्रकाशित हुआ।

5. आशिष अग्निहोत्री

    1. जेएनयू की प्रवेश परीक्षा 2003 के लिए प्रश्न सुझाए।
    2. आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा की डिप्लोमा प्रवीणता परीक्षा, 2003 के लिए प्रश्न–पत्र तैयार किया।
    3. सी.आई.ई.एफ.एल., हैदराबाद में आयोजित फ्रेंच शिक्षकों के लिए 9वें पुनश्चर्या कोर्स में भाग लिया
    4. 8 फरवरी से 15 मार्च 2003 तक कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान द्वारा आयोजित 'आउटरीच प्रोग्राम इन माडर्न इण्डियन थिएटर' में भाग लिया।

6. अभिजित कारकुन

    1. वर्ष 2002–2003 के लिए भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के प्रत्यक्ष सत्यापन अधिकारी के रूप में कार्य किया।
    2. दिसम्बर, 2002 से भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के छात्रों के लिए वैकल्पिक/टूल कोर्सों के लिए समन्वयक रहे।

भारतीय भाषा केन्द्र

1. गोविन्द प्रसाद, "दो ही मिसरों के दरमियां है क्या क्या" गजल संकलन 'इंतेख़ाब' पर समीक्षा 'स्वागत' में प्रकाशित हुई, अप्रैल 2002

2. गोविन्द प्रसाद, "खून का शोर हैं" कविताएं : 16 जुलाई–सितम्बर, 2002, द्वारा मोना गुलाटी

3. गोविन्द प्रसाद, धारवी तरंगें बहुत सी हैं शेष, अंक–2, अक्टू–दिस. 2002 (मेरा घर द्वारा त्रिलोचन पर समीक्षा); फहमिदा रियाज की पाँच कविताओं का उर्दू से हिंदी में लिपायान्तरण किया, वसुधा, अंक 56–57, 2002; उर्दू आलोचक प्रो. शमीम हनफी के साथ साक्षात्कार किया, सितम्बर 2002

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. मकरंद परांजपे

    1. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जा रही दुर्लभ तथा अनुपलब्ध पुस्तकों के सम्पादक
    2. सदस्य, अंग्रेजी सलाहकार मण्डल, साहित्य अकादमी
    3. न्यासी, सामवेद इण्डिया फाउंडेशन, एक लोक कल्याण न्यास
    4. संस्थापक सम्पादक 'एतम', भारतीय साहित्य और संस्कृति पर एक बहुविषयक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका

2. [illegible]

    1. समन्वयक, अंग्रेजी में उपचारात्मक कोर्स, जेएनयू
    2. सदस्य, विशेषज्ञ समिति, पुनश्चर्या कोर्स, 2002, जामिया मिल्लिया इस्लामिया

दर्शनशास्त्र ग्रुप

सुदिप्त राय दत्ता, "शब्द प्रमाण इन संख्या" भारतीय दार्शनिक शोध परिषद की पत्रिका, भाग 21, अंक–3, जुलाई–सितम्बर 2002

रूसी अध्ययन केन्द्र

1. आर. कुमार और वाई.सी. भटनागर ने जेएनयू और मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी के बीच हुए आपसी समझौता के अन्तर्गत 24 जून 2002 से 23 जुलाई 2002 तक मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी, मास्को का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी के विदेशी भाषा के भाषाशास्त्रीय संकाय के शिक्षकों के साथ विस्तार से चर्चा की। आर. कुमार ने रशियन स्टेट लिंग्विस्टिक्स यूनिवर्सिटी के विदेशी भाषा के शिक्षकों के साथ भी विचारों का आदान–प्रदान किया।

इस्पानी अध्ययन केन्द्र

1. वसन्त जी. गदरे, वि.अ.आ. के नामित सदस्य, मई, 2002
2. वसन्त जी. गदरे, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षकों की नियुक्ति के लिए गठित चयन समिति में विजिटर के नामिती नियुक्त हुए, मार्च 2003
3. वसन्त जी. गदरे, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की कार्य परिषद् में विजिटर के नामिती नियुक्त हुए, मार्च 2003
4. एस.पी. गांगुली ने नवम्बर 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "डिक्टेटरशिप ऐंड डेमोक्रेसी इन लेटिन अमरीका" और "द डिबेट आन सिविलाइजेशन वर्सिस बारबरीज्म इन लैटिन अमेरिका" विषयक दो व्याख्यान दिए।
5. अनिल धींगरा ने अक्टूबर 2002 से दिसम्बर 2002 तक Universitat de les Illes Balears, स्पेन का विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में दौरा किया।

भाषा प्रयोगशाला समूह

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान की भाषा प्रयोगशाला पूरे एशिया में एक सर्वोत्तम विकसित और सुसज्जित प्रयोगशाला है। इस प्रयोगशाला में चार आडियो–एक्टिव भाषा प्रयोगशालाएं, पांच आडियो–विजुअल कक्ष (ओल्ड कैम्पस में 3 आडियो–विजुअल कमरे और भाषा संस्थान भवन में 2 आडियो–विजुअल कमरे हैं) और एक फिल्म प्रोजेक्शन की सुविधा वाला प्रेक्षागृह है।

भाषा प्रयोगशाला में उत्कृष्ट शैक्षणिक शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए आडियो और वीडियो टेप, स्लाइड्स, ग्रामोफोन रिकार्डस और विभिन्न विदेशी भाषाओं की फिल्म स्ट्रिप्स डुप्लीकेशन सुविधा वाले एक आडियो स्टुडियो की सुविधा उपलब्ध है। यह सामग्री भाषा प्रयोगशाला और आडियो विजुअल रूम्स में विदेशी भाषा शिक्षण कार्यक्रमों के लिए व्यापक रूप से प्रयोग में लाई जाती है।

सभी भाषा प्रयोगशालाएं, आडियो और वीडियो साफ्टवेयर प्रोडक्शन उपकरण आदि जापान, जर्मनी, ईरान, रूस आदि देशों से उपहार के तौर पर प्राप्त हुए हैं। प्रयोगशाला में लगे बाह्य उपकरण अपने ही देश से प्राप्त हुए हैं। इन उपकरणों को पूरी तरह से वातानुकूलित भाषा प्रयोगशाला समूह भवन में स्थापित किया गया है। भाषा प्रयोगशाला समूह भवन में आधुनिक अग्निशमन अलार्म सिस्टम भी लगा हुआ है।

सभी भाषा प्रयोगशलाओं और आडियो–विजुअल रूम्स का शिक्षण तथा शोध कार्यों के लिए विस्तृत रूप से उपयोग किया जाता है। भाषा प्रयोगशाला, आडियो विजुअल रूम्स/विडियो प्रोजेक्शन रूम की सुविधाओं को प्रत्येक सप्ताह औसतन 30 घंटे उपयोग में लाया जाता है। इस वर्ष इन सुविधाओं को लगभग 4,000 घंटे उपयोग में लाया गया। कांफ्रेंस सिस्टम की सुविधाएं विश्वविद्यालय के अन्य संस्थानों, विभागों, केन्द्रों को भी मुहैया कराई गई। संस्थान के छात्रों और शिक्षकों को भाषा प्रयोगशाला समूह भवन और संस्थान भवन में इंटरनेट की सुविधा भी मुहैया कराई गई। वर्ष 2002–2003 में भाषा प्रयोगशाला के लिए निम्नलिखित उपकरण खरीदे गए –

1. कॉम्बो ड्राइव के साथ सी.डी. राइटर	एक
2. डी.वी.डी. प्लेयर	एक
3. डिजिटल वॉयस रिकार्डर	दो
4. आटोमेटिक स्लाइड प्रोजेक्टर	एक

एसोसिएशन आफ इंटरनेशनल एज्यूकेशन, जापान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, नेपाल, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, लेडी श्रीराम कालेज, नई दिल्ली, एस.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, लक्ष्मण पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली, अमित इंटरनेशनल, नई दिल्ली, ए.एन. महाविद्यालय, पटना, राजकीय राजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुड़गाँव से कई आगन्तुक भाषा प्रयोगशाला देखने आए। भाषा प्रयोगशाला में प्रेक्षागृह की सुविधा को किराए पर देने से 800/– रूपये की आय हुई।

7. जीवन विज्ञान संस्थान

जीवन विज्ञान संस्थान की स्थापना वर्ष 1970–71 के दौरान हुई थी। यह संस्थान अपनी स्थापना से अब तक देश में एक अग्रणी बहु–विषयक शोध एवं शिक्षण विभाग के रूप में रहा है। संस्थान ने आधुनिक जीव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नव प्रवर्तनकारी शिक्षण एवं शोध कार्यक्रम चलाए। संस्थान पादप अणु जीव विज्ञान, आनुवांशिकी, कोशिका और अणु जीव विज्ञान, तंत्रिका जीव विज्ञान, जैव–रसायन, प्रतिरक्षा विज्ञान, विकिरण और प्रकाश जैविकी, कैंसर जीव विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शोध कार्यक्रम चलाता है। संस्थान भविष्य में तंत्रिका जीव विज्ञान, अणु जैव भौतिकी और संरचनात्मक जीव विज्ञान, जिनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स के क्षेत्र में अध्ययन के लिए केंद्रीयकृत सुविधाएं विकसित करने की योजना बना रहा है। पादप, पशु और जीवाणुओं को शामिल करते हुए आनुवांशिकी प्रौद्योगिकी (ट्रांस जिनोमिक्स, आनुवंशिक परिवर्तनशीलता आदि) में गहन शोध एवं शिक्षण के लिए उपलब्ध सुविधाओं में वृद्धि की जानी है। संस्थान की केन्द्रीय यंत्रीकरण सुविधाएं अपने आप में अद्वितीय हैं। ये सुविधाएं शोध गतिविधियों के लिए अनिवार्य सहायता उपलब्ध कराती हैं।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान संस्थान ने 10 छात्रों को एम.एस–सी. उपाधि और 9 छात्रों को पी–एच.डी. उपाधि प्रदान कीं। संस्थान के शिक्षकों ने पुस्तकों के लिए अध्याय लिखे और उनके शोध आलेख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों ने देश–विदेश में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों/संगोष्ठियों/गोष्ठियों में भाग लिया और जीवन विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर व्याख्यान भी दिए। संस्थान के शिक्षक देश–विदेश के विश्वविद्यालयों/संस्थानों के मण्डलों और उच्च स्तरीय समितियों के सदस्यों के रूप में चुने गए। संस्थान ने कई संगोष्ठियां आयोजित कीं। एक संगोष्ठी छात्रों ने भी आयोजित की।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

संस्थान के अन्तरविषयक पाठ्यक्रम, संस्थान की शोध/शिक्षण गतिविधियों का मुख्य केंद्र बिंदु है। आधुनिक जीव विज्ञान के क्षेत्र में हो रही महत्वपूर्ण प्रगति को ध्यान में रखते हुए थ्रस्ट एरिया को अद्यतन बनाया जाता है। संस्थान द्वारा निर्धारित थ्रस्ट एरिया निम्न प्रकार से हैं –

टार्गेटिड राइबोजाइम्स; थेराप्यूटिक पोटेंशियल आफ एन्टी–टी.एन.एफ. राइबोजाइम इन एक्सपेरिमेंटिली इंडयूस्ड अर्थराइटिस; टार्गेटिड राइबोजाइम अगेंस्ट टेलोमिरेस ऐंड बी.सी.12; कांस्ट्रक्टिंग नावेल राइबोजाइम्स; फोटोकेमिकल्स विद मैडिसिनल वैल्यू : इफेक्ट आफ वैनाडियम ऐंड ट्रिगोनेला सीड पावडर ऑन अलोक्सन–इंड्यूस्ड डायबिटीज; इफेक्ट आफ चोजन प्लांट एक्सट्रेक्ट्स ऑन एक्सपेरिमेंटली–इंडयूस्ड पेपिलोमस; मिजल्स वाइरस रिवर्स जैनेटिक्स।

सहयोगात्मक प्रबंध

पी–एच.डी. छात्र रविन्द्र कुमार को कोलेजन–इंडयूस्ड अर्थराइटिस विषयक एनिमल एक्सपेरिमेंट करने के लिए उपासला यूनिवर्सिटी की डा. सुश्री लिंडा क्लेनोउ की प्रयोगशाला में भेजा गया है। उनके आरम्भिक परीक्षण – प्रोमिस आफ एप्लीकेशन आफ एन्टी–टी.एन.एफ. राइबोजाइम इन विवो फार इम्पेडिंग प्रोग्रेशन आफ अर्थराइटिस – दर्शाते हैं।

प्रकाशन

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

1. राजेन्द्र प्रसाद, स्नेह लता पंवार और स्मृति, 'ड्रग रेसिस्टांस इन यीस्ट्स – एन इमर्जिंग सिनेरियो', एडवांसेज इन माइक्रोबायल फिजियोलॉजी, रिव्यू, भाग–46, 2002
2. नीरा भल्ला सरीन और यू.एस. प्रसाद, 'इन विट्रो रिजनरेशन ऐंड ट्रांसफार्मेशन आफ लिची काइनेसिस सान', (सं.) पी.के. जयवाल और आर.पी. सिंह, प्लांट जैनेटिक इंजीनियरिंग भाग–6 : इंप्रूवमेंट आफ मेजर वेजीटेवल्स ऐंड फ्रूट क्राप्स, साइंस टेक. पब्लिशिंग एल.एल.सी., ह्युस्टन, यू.एस.ए., 2002
3. नीरा भल्ला सरीन, यू.एस. प्रसाद, ए.एस. कांताराजा और एस. मोहन जैन, 'माइक्रो प्रोपेगेशन आफ लिची (लिची काइनेसिस सान)', (सं.) एस.एम. जैन और के. आइशी, माइक्रो प्रोपेगेशन आफ वुडी ट्रीज ऐंड फ्रूट्स, 721–731 : क्लूवर एकेडमिक पब्लिशर्स, नीदरलैण्ड्स, 2003

4. जयश्री पॉल, 'माइक्रोबायल डिग्रेडेशन आफ द पॉलीक्लोरीनेटिड बाइफिनाइल्स (पी.सी.बी.एस.) प्रिजेंट इन द एनवायरनमेंट', ए क्रिटिकल एप्रेजल इन द बुक माइक्रो आर्गोनिज्मस इन बायोरीमेडिएशन, (सं.) मार्कण्डेय ऐंड मार्कण्डेय, कैपिटल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली

आलेख

1. एन.जेड़ बाकर, एम. सिंक्लेयर, एस. कुंजरा, उमेश, सी.एस. यादव और पी. मैकलीन, 'रेग्यूलेशन आफ ग्लुकोज यूटिलाइजेशन ऐंड लाइपोजेनेसिस इन एडिपोज टिश्यू आफ डायबेटिक ऐंड फैट फेड एनिमल्स, इफेक्ट्स आफ इंशुलिन ऐंड मैगनीज', बायोसाइंसेज 28(2), 2003

2. एन.जेड. बाकर, उमेश, सी.एस. यादव, के. मूर्ति, "सिनरजिस्टिक इफेक्ट आफ सोडियम आर्थोवेनडेट ऐंड ट्रिग्नेनेला सीड पाउडर आन हेपेटिक लाइपोजेनिक एंजाइम्स ऐंड लिपिड प्रोफाइल ड्यूरिंग अलोक्सन डायबिटीज"

3. एन.जेड. बाकर, बी.एल. गुप्ता, "इफेक्ट आफ इंसुलिन ऐंड सोडियम आर्थो वेनडेट आन ग्लुकोज मेटाबोलिज्म एंटीआक्सीडेंट एंजाइम्स, ट्रांसमाइनेज ऐंड आर्जिनेज इन डायबेटिक रेटिक्यूलोसाइट्स ऐंड एजिंग रेड ब्लड सेल्स बायोजिरेन्टल" 2002

4. राजेन्द्र प्रसाद, स्मृति, एस. कृष्णामूर्ति, बी.एल. दीक्षित, सी.एम. गुप्ता, "आर.ए.बी.सी. ट्रांसपोर्टर्स सीडीआर1पी. सी. डीआर2पी ऐंड सीडीआर3पी आफ ए ह्यूमन पैथोजन कैंडिडा अल्बिकेंस आर जनरल फास्पोलिपिड ट्रांसलोकेटर्स", यीस्ट 2002

5. राजेन्द्र प्रसाद, अवमीत कोहली, स्मृति, कस्तूरी मुखोपाध्याय, अशोक रतन, "विट्रो लो लेवल रेसिस्टेंस टु एजोल्स इन कैंडिडा अल्बिकेंस इज एसोसिएटिड विद चेंजिज इन मेम्ब्रेन लिपिड फ्लुइडिटी ऐंड एसिमीट्री", एंटिमाइक्रोबायल एजेंट्स ऐंड कीमोथेरेपी, 46(4), 2002

6. राजेन्द्र प्रसाद, कस्तूरी मुखोपाध्याय, अवमीत कोहली, "एंटिमाइक्रोबॉयल एजेंट्स ऐंड कीमोथेरेपी ड्रग ससेप्टिबिलिटीज आफ यीस्ट सेल्स आर एफेक्टिड बाइ मेम्ब्रेन लिपिड कंपोजिशन" 46(12), 2002

7. राजीव के. सक्सेना और वी. चौधरी, "डिटेक्शन आफ एम. ट्यूबरक्लोसिस एंटिजंस इन यूरिनरी प्रोटींस आफ ट्यूबरक्लोसिस पेशंट्स", यूरोपियन जर्नल आफ क्लिनीकल माइक्रोबायोलॉजी ऐंड इंफेक्सियस डिसीज्स 21, 1–5, 2002

8. राजीव के. सक्सेना, डी. विजमैन, जे. सिम्पसन और डी.एम. लेविस, "म्यूरिन मॉडल आफ बी.सी.जी. लंग इंफेक्शन : डायनेमिक्स आफ लिंफोसाइट सबपाप्यूलेशंस इन लंग इंटर स्टिटियम ऐंड ट्रे चील लिम्फ नोड्स" बायोसाइंसेज 27, 2002

9. राजीव के. सक्सेना, डी. विजमैन, क्यू.बी. सक्सेना, जे. सिम्पसन और डी.एम. लेविस, "काइनेटिक्स आफ चेंजिस इन लिम्फोसाइट सबपाप्युलेशन्स इन द लंग्स ऐंड ड्रेनिंग लिम्फ नोड्स आफ माइस आफ्टर इन्ट्रापलमोनारी इन्फेक्शन विद एम बोविज", बेसिलस कालमेट–गुइरिन ऐंड आइडेंटिटी आफ सेल्स रिस्पोंसिबल फार आई.एफ.एन. (रिस्पोंसिस. क्लिन. एक्सपे. इम्युनोल–128,) 405–410, 2002

10. राजीव के. सक्सेना, वी वेलियाथन और डी.एम. लेविस, "एविडेंस फार एल.पी.एस.–इनड्यूस्ड डिफरेंशिएशन आफ आर.ए.डब्ल्यू. 264.7 म्यूरिन मैक्रोफेज इन टु डेनड्रिटिक लायक सेल्स", बायोसाइंसेज 28, 2003

11 राजीव के. सक्सेना, क्यू.बी. सक्सेना, डी.एम. विजमैन, जे. सिम्पसन, टी.ए. ब्लेडसो और डी.एम. लेविस, "इफेक्ट आफ डीजल एक्जांस्ट पर्टिक्यूलेट (डीईपी) आन बेसिलस कालमेट गुइरिन (बीसीजी) लंग इंफेक्शन इन माइस ऐंड द एटेंडेंट चेंजिज इन लंग इंटरस्टिटियल लिम्फॉयड सबपाप्यूलेशंस ऐंड आईएफएन गामा रिस्पांस", टॉक्सिकोलॉजीकल साइंसेज 73, 66–71, 2003

12. राजीव के. सक्सेना, क्यू.बी. सक्सेना, आर.के सक्सेना पी.डी. साइगल और डी.एम. लेविस, "आइडेंटिफिकेशन आफ आर्गेनिक फ्रेकशंस आफ डीजल एक्जास्ट पार्टिक्यूलेट (डीईपी) विच इनहीबिट नाइट्रिक आक्साइड (एन ओ) प्रोडक्शन आफ ए म्यूरिन मैक्रोफेज सेल लाइन", टाक्सीकोलॉजी लेटर्स, 2003

13. अलोक भट्टाचार्य, एस. भट्टाचार्य और डब्ल्यू.ए. जूनियर पैट्री, "एक्जामिनिंग एंटामोयबा ट्रेंड्स", पैरासिटोल, 18, 196–197, 2002

14. अलोक भट्टाचार्य, एच. रेड्डी, वी. कुमार, "द कैल्शियम बाइंडिंग प्रोटीन आफ एंटामॉयबा हिस्टोलिटिका एज ए फ्यूजन पार्टनर फार एक्सप्रेशन इन एशरीकिया कोली", बायोटेक्नोलॉजी ऐंड एप्लाइड बायोकेम. 36, 2002

15. अलोक भट्टाचार्य, आर. आर्य, ए. मेहरा, आर. विश्वकर्मा, एस. भट्टाचार्य, "बायोसिंथेसिस आफ एंटामॉयबा हिस्टोलिटिका प्रोटियोग्लाइकन इन विट्रो", मोल. बायोकेम. पैरासिटोल. 26, 1–8, 2003

16. अलोक भट्टाचार्य, एस. भट्टाचार्य, ए. बाकरे, "मोबाइल जेनेटिक एलिमेंट्स इन प्रोटोजोआ पैरासाइट्स", जैनेटिक्स 81, 73–86, 2002

17. अलोक भट्टाचार्य, एन. साहू, एस. भट्टाचार्य, "ब्लोकिंग द एक्सप्रेशन आफ ए कैल्शियम बाइंडिंग प्रोटीन आफ द प्रोटोजोआ पैरासाइट एंटामोयबा हिस्टोलिटिका बाई टेट्रासाइक्लिन रेग्युलेटेबल एंटिसेंस आर.एन.ए.", मोल. बायोकेम. पैरासिटोल 126, 2003

18. अलोक भट्टाचार्य, एस. घोष, एस. सतीश, एस. त्यागी, एस. भट्टाचार्य, "डिफरेंशियल यूज आफ मल्टिपल रेप्लिकेशन ओरिजंस इन द राइबोसोमल डीएनए एपिसम आफ द प्रोटोजोआ पैरासाइट एंटामोएबा हिस्टोलिटिका" न्यूक्लि. एसिड रिसर्च 31, 2003

19. नीरा भल्ला सरीन, शिव प्रकाश और सुनीता कौल, "जर्मीनेटिंग पिजन पी (केजानस काजन) सीड्स सिक्रेट फैक्टर हैविंग एंटिथाइलीन – लाइक इफेक्टस", फिजियोलाजिया प्लांटेरम 118, 2003

20. नीरा भल्ला सरीन, एन.डी. सिंह, एल. साहू और पी.के. जयवाल, "द इफेक्ट आफ टीडीजैड आन आर्गेनोजेनेसिस ऐंड सोमेटिक एम्ब्रायोजेनेसिस इन पिजनपी (केजानस काजन, एल.मिलस्प)", प्लांट साइंस 164 (अंक–3), 2003

21. नीरा भल्ला सरीन, एम. जैन, डी. चौधरी और पी.के. काले, "साल्ट ऐंड ग्लाईफोसेट – इंड्यूस्ड इनक्रीज इन ग्लाआक्सेलेज 1 एक्टिविटी इन सेल लाइंस आफ ग्राउंडनट (आराकिस हाइपोजिया एल.)", फिजियोलाजिआ प्लेनटेरम 114 : 2002

22. नीरा भल्ला सरीन, डी.के. दास., पी. भौमकर और एन. शिवप्रकाश, "इंप्रूव्ड मेथड आफ रिजनरेशन आफ ब्लेक ग्राम (विगनामुंगो एल.) थ्रू लिक्विड कल्चर", विट्रो (प्लांट) 38(5) 2002

23. नीरा भल्ला सरीन, "रोल आफ वुमन इन बायोटेक्नोलॉजी इनोवेशंस ऐंड आई.पी.आर.", वुमन साइंसिस्ट्स ऐंड टेक्नोलाजिस्ट्स : रोल इन नेशनल डिवलपमेंट विषयक सम्मेलन, 2002

24. नीरा भल्ला सरीन, आर. बिष्ट, एस.एल. सिंहला–पारीक, एस.के. सोपोरी, "द ग्लाइऑक्सेलेज II आफ ब्रासिका जुंसिया", कंपलीट सीडीएस (एक्सेशन न. एवाई 185202)

25. नीरा भल्ला सरीन और विनोद वार्ष्णेय "खतरे की बात उठाकर नई टेक्नोलॉजी से मुँह मोड़ना अनुचित", वर्नाकुलर में क्षेत्रीय हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित, 2002

26. प्रमोद कुमार यादव, टी. दासगुप्ता, ए.आर. राव, "किमोमाड्यूलेटरी एफिकेसी आफ बेसिल ली (ओसिमम बेसिलिकम) आन ड्रग मेटाबोलाइजिंग ऐंड एंटीआक्सीडेंट एंजाइम्स, ऐंड आन कार्सिनोजन – इनड्यूस्ड स्किन ऐंड फोरस्टोमक पेपिलोमेग्नेसिस", फाइटोमेडिसिन, 2003

27. प्रमोद कुमार यादव, टी. दासगुप्ता, ए.आर. राव "माड्यूलेटरी इफेक्ट आफ हिना लीफ (लासोनिया इनरमस) आन ड्रग मेटाबोलाइजिंग फेज–I और फेज–II एंजाइम्स, एंटीआक्सिडेंट एंजाइम्स, लिपिड पिरोक्सीडेशन ऐंड केमिकली इनड्यूस्ड स्किन ऐंड फोरस्टमक पेपिलोमेग्नेसिस इन माइस", मोलक्यूलर ऐंड सेल्यूलर बायोकेमेस्ट्री 245 : 2003

28. प्रमोद कुमार यादव, अंजु प्रीत, नजमा जहीर बाकर "रेग्यूलेशन आफ ग्लुकोज फ्लक्स थ्रू पॉलियोल पाथवे ऐंड ग्लाइकॉलिसिस इन डायबेटिक रेट टिश्यूज : इफेक्ट आफ बेनडेट ऐंड ट्रिगोनेला फॉयनम ग्रेकम", 3 से 5 फरवरी, 2003 तक जयपुर में आयोजित एसोसिएशन आफ क्लिनिकल बायोकेमिस्टस आफ इंडिया के 29वें वार्षिक सम्मेलन में

29. प्रमोद कुमार यादव, अंजु प्रीत, नजमा जहीर बाकर "माड्यूलेशन आफ द पॉलियोल पाथवे एंजाइम्स इन डायबेटिक रेट टिश्यूज : इफेक्ट आफ वेनडेट ऐंड ट्रिगोनेला फायनम ग्रेकम", 18 से 20 जनवरी, 2003 तक मुम्बई में डायबिटिज विषय पर आयोजित द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में।

30. प्रमोद कुमार यादव, टी. दासगुप्ता, एस. बनर्जी, ए.आर. राव "इवोलुएशन आफ किमोमोडूलेटरी एफिकेसी आफ बेसिल लीफ एक्सट्रेक्ट (ओसिमम बेसिलिकम) आन माउस हेपाटिक एण्ड एक्स्ट्राहेपाटिक ड्रग मेटोबोलाइजिंग

एनजाइम्स, एन्टीऑक्सिडेंट पैरामीटर्स एण्ड अगेन्स्ट कारसीनोजीन–इन्ड्यूस्ड स्कीन फोरस्टोमक पेपिलोमाजेनिसिस", फाइटोमेडिसन, 2002.

31. बी.सी. त्रिपाठी, ए. महापात्रा, "डिवलपमेंटल चेंजिज इन सब–प्लास्टीडिक डिस्ट्रीब्यूशन आफ क्लोरोफिल बायोसिंथेटिक इंटरमिडिएट्स इन कुकुम्बर (कुकुमिस सैटिवस एल)", प्लांट फिजियोलॉजी, 160, 2003

32. बी.सी. त्रिपाठी, ए. महापात्रा "डिटेक्शन आफ प्रोटोपोरफाइरिन IX इन इनविलप मेम्ब्रेन्स आफ पी क्लोरोप्लास्ट्स", बायोकेम. बायोफिजि. रिस. कम्यू. 2002

33. बी.सी. त्रिपाठी, जी. पट्टनायक, "केटालिटिक फंक्शन आफ ए नावल प्रोटीन प्रोटोक्लोरोफाइलिड आक्सीडोरिडक्टेज सी आफ आरेबिडोप्सिस थेलियाना", बायोकेम. बायोफिजि. रिस. कम्यू. 2002

34. आर. मधुबाला, बिंदु सुकुमारन, पूनम तिवारी, शैलेन्द्र सक्सेना, "वेक्सिनेशन विद डीएनए इनकोडिंग ओआरएफएफ एंटिजन कंफर्स प्रोटेक्टिव इम्यूनिटी इन माइस इनफेक्टिड विद लीशमानिया डोनोवानी" वेक्सिन 21, 2003

35. आर. मधुबाला, वन्दना एस. डोले, पी.जे. मिलर, के.डी. स्टुअर्ट, "एक्सप्रेशन आफ बाइआप्टरिन ट्रांसपोर्टर प्रोटीन इन लीशमानिया एफ.ई.एम.एस.", माइक्रोबायोलॉजी. लेट. 2002

36. आर. मधुबाला, एस. सक्सेना, पी.जे. मिलर और के.डी. स्टुअर्ट, "फंक्शनल जीनोमिक्स इन लीशमानिया", प्रोसि. इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी, बी 68 अंक–5, 2002

37. एस.के. गोस्वामी, जे.मीनाक्षी, अनुपमा, के. दत्ता, "कांस्टीट्यूटिव एक्सप्रेशन आफ हाइल्यूरोनान बाइंडिंग प्रोटीन 1 (एच.ए.बी.पी.1 / पी32 / जीसी1 क्यू.आर) इन नार्मल फाइब्रोब्लास्ट सेल्स परटर्बस इट्स ग्रोथ करेक्ट्रास्टिक्स ऐंड इंडुसीज एपोप्टोसिस", बायोकेम. बायोफिजिक रिस. कम्यू. जनवरी, 2003

38. जयश्री पॉल, अलोक भट्टाचार्य और सुधा भट्टाचार्य, "क्लोज सिक्वेंस आइडेंटिटी बिटवीन राइबोसोमल डीएनए एपिसम्स आफ द नानपैथोजेनिक एंटामोयबा डिस्पार ऐंड पैथोजेनिक एंटामोयबा हिस्टोलिटिका", जर्नल आफ बायोसाइंसेज भाग 27, अंक–6 नव. 2002

39. जयश्री पॉल, प्रीति सक्सेना, सुधा भट्टाचार्य, "इन्यूमरेशन आफ अरोबिक फ्लोरा इन हेल्थी ऐंड डिसीज्ड इनडिविजुअल्स", वर्ल्ड जर्नल आफ माइक्रोबायोलॉजी ऐंड बायोटेक्नोलॉजी 18 2002

40. जयश्री पॉल, "बेक्टेरियल फ्लोरा इन ह्यूमन गट", एन ओवरव्यू, इंडियन जर्नल आफ माइक्रोबायोलॉजी अंक–42, जून अंक, 2002

41. जयश्री पॉल, झेंग वांग, जॉन सेम्युयलसन, सी. ग्राहम क्लार्क, डेनियल आइचिंगर, "केटरिना वान डेल्लन, नील हाल, इयान एंडरसन एण्ड ब्रेंडन लाफ्टस,जीन डिस्कवरी इन द एंटामोयबा इनवेडन्स जीनोम.

42. जयश्री पॉल, सुरनजीत प्रसाद, वी. सुब्रामणियन, "डिटेक्शन आफ किमोलिथोट्रापिक बैक्टेरिया फ्राम आर्सेनिक रिच एनवायरनमेंट", 2003

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. राजेन्द्र प्रसाद, मेम्ब्रेन लिक्विड्स एज मिडिएटर्स आफ एनवायरनमेंटल मार्फोजेनेटिक क्यूज इन द ह्यूमन फंगल पैथोजन कैंडिडा अल्बिकेंस (2001–2004) वाक्सनेशन फाउंडेशन, जर्मनी.

2. राजेन्द्र प्रसाद, नावल एप्रोचिज टु काम्बेट मल्टिड्रग रेसिस्टेंस (एम.डी.आर.) इन पैथोजेनिक यीस्ट, (2001–2000) यूरोपीय आयोग, ब्रूसेल्स.

3. राजेन्द्र प्रसाद, एस्टाब्लिशमेंट आफ ए एडवांस सेन्टर आफ मोलक्यूलर बायोटाइंग, इपिडिमियोलॉजी ऐंड फंगल ससेप्टिबिलिटीज आफ अपरच्युनिस्टिक ह्यूमन पैथोजेनिक फंगी, (2001–2006) इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च.

4. राजेन्द्र प्रसाद, रेग्यूलेशन आफ मल्टिड्रग रेसिस्टेंस जीनस आफ ए पैथोजेनिक यीस्ट कैंडिडा अल्बिकेंस (2002–2005) विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

5. पी.सी. रथ, कंप्यूटेशनल ऐंड फंक्शनल रेट ऐंड ह्यूमन जीन्स (सीडीएनएस) विशिष्ट कार्यक्रम के लिए दक्ष विश्वविद्यालय, (2002–2007) वि.अ.आ. – जेएनयू

6. पी.सी. रथ, सिग्नल ट्रांसडक्शन बाइ इंटरफेरान ऐंड रेग्यूलेटरी फैक्टर–I (आईआरएफ- I), (2003 2006) विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग

7. एस.के. गोस्वामी, आइडेंटीफिकेशन आफ नावल जीन एक्सप्रेशन पाथवेज इन कार्डियाक डिसीज्स, (अप्रैल, 2002) विशिष्ट कार्यक्रम के लिए दक्ष विश्वविद्यालय

8. एस.के. गोस्वामी, डिवलपमेंट आफ ए डाटाबेस आफ ट्रांसक्रिप्शन फैक्टर बाइंडिंग साइट्स फ्राम डिवलपिंग चिक हर्ट, (मार्च, 2003) विज्ञान और औद्योगिक अनुसंधान परिषद

9. के. नटराजन, न्यूट्रिएंट कंट्रोल आफ जीन रेग्यूलेशन इन फंगी, (2002–2007) वि.अ.आ. – विशिष्ट कार्यक्रम केन्द्र

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. एन.जैड. बाकर, प्रोडक्शन बाई एस्ट्रोजन इन फिमेल एनिमल्स आन द आनसेट आफ एज रिलेटिड डिसार्ड (दीपक शर्मा के साथ संयुक्त रूप से) (2000–2003) जै.प्रौ.वि.,

2. एन.जैड. बाकर, लोंग टर्म मैनेजमेंट आफ रेटिनाल ऐंड रेनल कंपलिएशन इन एक्सपेरिमेंटल डायबिटीज बाई वेनडेट ऐंड एंटीडायबेटिक कंपाउंडस, (2001–2004) भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद

3. एन.जैड. बाकर, बायोकेमिकल आफ करेक्ट्राइजेशन आफ इफेक्ट्स आफ ट्रेस मेटल्स ऐंड प्लांटस एक्सट्रेक्ट्स इन एक्सपेरिमेंटल डायबिटीज, (2001–2004) वि.अ.आ.

4. एन.जैड. बाकर, एंटी एजिंग इफेक्ट्स ऐंड मैकेनिज्म आफ एक्शन आफ इक्सोजीनस डिहाइड्रोइपिएंड्रोस्टेरॉन (डी एच ई ए) एडमिनिस्ट्रेशन ड्यूरिंग नार्मल एजिंग इन डिफरेंट ब्रेन रिजंस (दीपक शर्मा के साथ संयुक्त रूप से) (2002–2005) वै. और. औ.अ.प.

5. एन.जैड. बाकर, रोल आफ ताचिचिनिन न्यूरोपेप्टाइड्स ऐंड देयर अनालोग्स इन मोलक्यूलर ऐंड बायोकेमिकल कोरिलेटस इन एजिंग ब्रेन फंक्शंस, (2002–2007) विशिष्ट परियोजना

6. राजीव के. सक्सेना, मैकेनिज्म ऐंड पैथो–फिजियोलॉजीकल रिलिवेंस आफ सेल मेडिएटिड लाइसिस आफ एरिथोसाइट्स, (2001–2004) वि.और प्रौ.वि.

7. राजीव के. सक्सेना, इनफ्लुएंस आफ डीजल एक्जास्ट पर्टिकुलेट मैटेरियल आन डिसीज सस्सेप्टिबिलिटी ऐंड लोकल इम्यून रिस्पांसिज इन लंग्स (2002–2005), भा.चि.अ.प.

8. राजीव के. सक्सेना, ट्यूबरक्लोसिस एंटीजन डिटेक्शन इन यूरिंग रोल आफ एंटीबॉडी एफिनिटी इन सेंसिटिबिटी आफ द एसे, (2001–2003) वि.अ.आ.

9. राजीव के. सक्सेना, माड्यूलेशन आफ टोल लाइक रिसेप्टर (टीएलआर) एक्सप्रेशन आन ल्यूकोसाइट्स इनवाल्वड विद लोकेलाइज्ड इनेट ऐंड एडोप्टिव इम्यून रिस्पांस इन लंग्स ऐंड इट्स फंक्शनल इंप्लिकेशंस, (2002–2007) वि.अ.आ.

10. राजीव के. सक्सेना, इन्नेट लोकल इम्यूनिटी इन लंग्स इट्स ऐंड माड्यूलेशन बाई एयर–बोर्न पर्टिकुलेट सीडीसी (सेंटर आफ डिसीज कंट्रोल ऐंड प्रिवेंशन, यू.एस.ए.) (2002)

11. बी.सी. त्रिपाठी, जीन एक्सप्रेशन ऐंड प्रोटीन ट्रांसपोर्ट आफ क्लोरोफिल बायोसिंथेटिक एंजाइम्स ड्यूरिंग टेम्प्रेचर स्ट्रेस, (2003–2006) जै.प्रौ.वि.

12. प्रमोद कुमार यादव, कंसट्रक्शन आफ टार्गेटेड राइबोजइम एगेंस्ट आर.एन.ए. कंपोनेंट आफ टिलोमरेज, (2001–2004) वै. और औ.अ.प.

13. प्रमोद कुमार यादव, आर.एन.ए. प्रोटीन इंटरएक्शंस इन फार्मेशन आफ मीजल्स वायरस न्यूक्लियोकेपसिड, (2001–2004) वि.अ.आ.

14. प्रमोद कुमार यादव, रेसक्यू आफ काइमेरिक मीजल्स वायरस इनकॉर्पोरेटिंग हिट्रोलोगस पेप्टाइड्स, (2002–2003) वि. और प्रौ.वि.

15. आर. मधुबाला, सिगनल ट्रांसडक्शन इन मार्कोपेजिज बाई लीशमानिया लाइपोफास्फोग्लाइकन, (2001–2004) वि. और प्रौ.वि.

16. आर. मधुबाला, पॉलिएमाइन सिंथेसिस इन द मलेरिया पेरासाइट प्लाजमोडियम फाल्सिपेरम एज टार्गेट फार ड्रग डिवलपमेंट, वि.और प्रौ.वि. (भारत–जर्मनी)

17. आर. मधुबाला, वेक्सिनेशन एगेंस्ट म्यूरिन विसरल लीशमानियासिस, एल.एस.आर.बी. (डी.आर.डी.ओ.) (2001–2004)

18. आर. मधुबाला, जीनोमिक्स इन लीशमानिया, विशिष्ट कार्यक्रम के लिए दक्ष विश्वविद्यालय (वि.अ.आ. वित्त पोषित)

19. आर. मधुबाला, मोलक्यूलर ऐंड बायोकेमिकल मैकेनिज्मस आफ पेंटामिडाइन रेसिस्टेंस इन लीशमानिया, (2002–2005) द वेल्कम ट्रस्ट

20. आर. मधुबाला, मोलक्यूलर स्टडी आफ एस–एडेनोसिल–मेथियोनाइन डिकार्बोजिलेस : एन एंटी लीशमानियल टार्गर एंजाइम, (2003–2006) स्वेडिश इंटरनेशनल डिवलपमेंट कार्पोरेशन एजोंनी (सीडा)

21. नीरा भल्ला सरीन, मास स्केल प्रोपेगेशन आफ लिची काइनेसिस सान, (2000–2003) जैव प्रौद्योगिकी विभाग

22. नीरा भल्ला सरीन, डिवलपमेंट आफ ट्रांसफार्मेशन मेथड्स फार ब्लेक ग्राम (विग्ना मुंगो) फोर बायोटिक, एबायोटिक स्ट्रेस टोलरेंस, (2001–2004) भारत–रूस, जै.प्रौ.वि.

23. नीरा भल्ला सरीन, माड्यूलेशन आफ द एक्सप्रेशन आफ द ग्लाइआक्सेलेज I ऐंड द ग्लाइआक्रोलज II जीन इन ब्रासिका जुंसिया फार साल्ट स्ट्रेस टालरेंस, (2001–2004) एन.ए.टी.पी.

24. नीरा भल्ला सरीन, आइडेंटीफिकेशन आफ नावल प्रोटींस इन साल्ट–टालरेंट वर्सस साल्ट सेंसीटिव सेल लाइन्स आफ अरेकिस हाइपोजिया फार बायोटेक्नोलॉजीकल एप्लिकेशन, (2002–2007) वि.अ.आ.

25. नीरा भल्ला सरीन, रिजनरेशन ऐंड ट्रांसफॉर्मेशन आफ विग्ना मुंगो एल., (2002–2005) वि. और प्रौ. वि.

26. जश्री पॉल, डिटेक्शन ऐंड इन्यूमरेशन आफ गट फ्लोरा इन नॉर्मल ऐंड डिसीज्ड इनडिविजुअल्स, (2002–2005) वि. और प्रौ.वि.

27. जश्री पॉल, डिवलपमेंट आफ मोलक्यूलर प्रॉब्स फार अनालाइजिंग नेचुरल आइसोलेट्स आफ एंटामॉयबा, (2002–2005) वि. और प्रौ. वि.

28. जश्री पॉल, डिटेक्शन ऐंड अनालिसिस आफ फूड बोर्न पैरासाइट्स, (2003–2006) भा.चि.अ.प.

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

1. प्रमोद कुमार यादव और रविन्द्र कुमार, इफेक्ट आफ टार्गेटिड राइबोजाइम्स अगेंस्ट टीएनएफ – अल्फा आन कालेजनइनड्यूस्ड रिमेटॉयड आर्थरिटिस इन माइस

2. प्रमोद कुमार यादव, कंसट्रक्शन आफ एन एंपलीफिएबल रेंडम सिक्वेंस पूल फार सलेक्शन आफ आर.एन.ए. विद नावल केटालिटिक एक्टिविटी

शिक्षकों की संगोष्ठियों/सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1. राजेन्द्र प्रसाद ने 6 से 10 जून, 2002 तक बाल्टीमोर, यू.एस.ए. में आयोजित "स्माइट 2002" विषयक सम्मेलन में आमंत्रित वक्ता के रूप में भाग लिया।

2. आर. मधुबाला, 1 से 6 अक्टूबर, 2002 तक आई.सी.जी.ई.बी. कोर्स में व्याख्यान देने के लिए ट्रीस्टे, इटली गई।

3. आर. मधुबाला, 8 से 16 दिसम्बर, 2002 तक द वेल्कम ट्रस्ट द्वारा वित्त पोषित 'पेंटामिडाइन रेसिस्टेंस' विषयक परियोजना पर चर्चा करने के लिए ग्लासकोव विश्वविद्यालय, स्काटलैण्ड गई।

4. आर. मधुबाला ने 30 मार्च से 4 अप्रैल, 2003 तक लुंड विश्वविद्यालय, स्वीडन में आयोजित 'मोलक्यूलर स्टडीज आन एस–एडेनोसिलमेथियोनाइन डिकार्बोक्सिलेज : एन एंटीलीशमानियल टार्गेट एंजाइम' विषयक बैठक में भाग लिया।

शिक्षकों की संगोष्ठियों/सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. एन.जैड. बाकर ने 18 से 20 जनवरी, 2003 तक मुम्बई, भारत में आयोजित 'डायबिटीज' विषयक बिहारी लाल गुप्ता द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "रोल आफ इंसुलिन ऐंड सोडियम आर्थोवेनडेट आन ग्लुकोज ऐंड प्रोटीन मेटाबॉलिज्म इन डायबिटिक एजिंग रेड ब्लड सेल्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. एन.जैड. बाकर ने 3 से 5 फरवरी, 2003 तक जयपुर, भारत में आयोजित 'एसोसिएशन आफ क्लिनिकल बायोकेमिस्ट्स आफ इंडिया – 2003' के 29वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा समीर मोहम्मद, आसिया तथा और आर.एन.के. बामजेई के साथ मिलकर 'पायरूवेट मेटाबॉलिज्म इन एक्सपेरीमेंटल डायबिटीज : इफेक्ट आफ एंटीडाइबेटिक कंपाउंड्स' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

3. एन.जैड. बाकर 3 से 5 फरवरी, 2003 तक जयपुर, भारत में आयोजित 'एसोसिएशन आफ क्लिनिकल बायोकेमिस्ट्स आफ इंडिया – 2003' के 29वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा अंजु प्रीत, पी.के. यादव के साथ मिलकर 'रेग्युलेशन आफ ग्लुकोज फ्लक्स थ्रू पॉलियोल पाथवे ऐंड ग्लाइकोलिसिस इन डायबेटिक रेट टिश्यूज : इफेक्ट आफ वेनडेट ऐंड ट्रिगोनेला फोयनम ग्रेकम' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

4. एन.जैड. बाकर ने 10 से 12 फरवरी, 2003 तक लखनऊ में आयोजित 'रोल आफ फ्री रेडिकल्स ऐंड एंटीआक्सिडेंट इन हेल्थ ऐंड डिसीज' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'आसिया ताहा, सालोमन जेनेट, के. मूर्ति और आर.के. काले के साथ मिलकर 'एंटीआक्सिडेंट स्टेटस इन अलोक्सन डायबेटिक रेट टिश्यूज : रिवरसल बाई एंटीडायबेटिक कंपाउंडस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. एन.जैड. बाकर ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक लखनऊ में आयोजित 'बायोटेक्नोलॉजीकल डिवलपमेंट्स आफ हर्बल मेडिसिन' विषयक द्वितीय विश्व कांग्रेस में भाग लिया तथा 'बायोकेमिकल ऐंड हिस्टोलॉजीकल चेंजिज इन माइटोकांड्रिया आफ एक्सपेरिमेंटल डायबिटीज इनड्यूस्ड डायबिटीज इन रैट्स आफ्टर ट्रिगोनेला फायनम ग्रेकम थिरेपी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. राजेन्द्र प्रसाद ने 20 से 22 फरवरी 2003 तक इंस्टीट्यूट आफ माइक्रोबायल टेक्नोलॉजी, चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' में भाग लिया तथा 'लिपिड एज माड्यूलेटर्स आफ ड्रग रेसिस्टेंस इन यीस्ट्स' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

7. राजेन्द्र प्रसाद ने मार्च, 2003 में जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित 'मोलक्यूलर बायोलॉजी ऐंड बायोटेक्नोलॉजीकल सिम्बायोसिस' विषयक इण्डो–यू.एस. कार्यशाला और राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया तथा 'मोलक्यूलर बेसिस आफ एंटीफंगल रेसिस्टेंस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. राजीव के. सक्सेना और ए. दास ने 27 से 29 नवम्बर, 2002 तक आर.एम.आर.सी., भुवनेश्वर में आयोजित इण्डियन इम्यूनोलॉजी सोसाइटी की 29वीं वार्षिक बैठक में भाग लिया तथा 'ए रोल आफ इंटरएक्शन बिटवीन एमएचसी I ऐंड काग्नेट एल.वाई 49 रिसेप्टर मोलक्यूलस इन आई एल 2 एक्टिवेशन आफ एन के सेल्स' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

9. बी.सी. त्रिपाठी ने जनवरी, 2003 में आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली में आयोजित 'प्लांट फिजियोलॉजी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

10. बी.सी. त्रिपाठी ने मार्च, 2003 में दिल्ली विश्वविद्यालय, दक्षिण परिसर में आयोजित 'फोटो बायोलॉजी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

11. प्रमोद कुमार यादव ने मार्च, 2003 में नई दिल्ली में आयोजित 'एनवायरनमेंटल म्यूटेजन सोसाइटी आफ इंडिया' की 26वीं बैठक में भाग लिया।

12. आर. मधुबाला ने 23–24 फरवरी, 2002 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित 'लीशमानियासिस' अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'वेक्सिन कंडीडेट्स फार प्रिवेंटिंग लीशमानियासिस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

13. नीरा भल्ला सरीन ने नवम्बर, 2002 में मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, चेन्नई में जैव–प्रौद्योगिकी में भारत–रूस सहयोग की द्वितीय पल्स नेटवर्क बैठक में भाग लिया।

14. नीरा भल्ला सरीन ने जनवरी, 2003 में आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली में आयोजित 'प्लांट फिजियोलॉजी' द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया।

15. नीरा भल्ला सरीन ने मार्च, 2003 में नई दिल्ली में आयोजित 'ट्रेंड्स इन सेलुलर ऐंड मोलकूलर बायोलॉजी' के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

16. पी.सी. रथ, इन्द्रानिल डे, गगन दीप बजाज ने 22 अक्टूबर, 2002 को जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित 'ट्रांसक्रिप्शन' विषयक बैठक में भाग लिया तथा 'रिपीट्स, क्रोमेटिन ऐंड ट्रांसक्रिप्ट्स' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

17. जयश्री पॉल ने 3 से 7 जनवरी, 2003 तक बंगलौर विश्वविद्यालय में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 90वें सत्र में पर्यावरण विज्ञान अनुभाग में 'रोल आफ माइक्रोब्स इन आर्सेनिक रिच एनवायरनमेंट' विषयक व्याख्यान दिया।

18. के. नटराजन ने 16 से 20 नवम्बर, 2002 तक गुहा शोध सम्मेलन, गार्जिया, उत्तरांचल में 'जीनोमिक रेग्यूलेटरी सर्किट्स आपरेटिव इन न्यूट्रिएंट कंट्रोल आफ जीन एक्सप्रेशन इन यीस्ट' विषयक व्याख्यान दिया।

शिक्षकों के व्याख्यान विश्वविद्यालय से बाहर

1. राजेन्द्र प्रसाद ने 7 सितम्बर, 2002 को युवा विज्ञानियों की 28वीं वार्षिक बैठक तथा 'ट्रेंड्स इन मोलक्यूलर मेडिसन' विषयक संगोष्ठी में पूर्ण व्याख्यान दिया।
2. राजेन्द्र प्रसाद ने 4 दिसम्बर, 2002 को पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में आयोजित रिसेंट डिवलपमेंट्स इन फंगल डिसीज्स : एसपरगिलोसिस' विषयक संगोष्ठी में 'ड्रग रेसिस्टेंस जीन्स इन सी. अल्बिकेंस' शीर्षक व्याख्यान दिया।
3. राजेन्द्र प्रसाद ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक इंस्टीट्यूट आफ माइक्रोबॉयल टेक्नोलॉजी, चण्डीगढ़ में आयेजित 'यीस्ट 2003' में 'लिपिड एज माड्यूलेटर्स आफ ड्रग रेसिस्टेंस इन यीस्ट्स' विषयक व्याख्यान दिया।
4. राजेन्द्र प्रसाद ने 10 मार्च, 2003 को जैव–विज्ञान विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 'मल्टिपल ड्रग रेसिस्टेंस : फ्राम माइक्रोब्स टु मैन' विषयक व्याख्यान दिया।
5. राजीव के. सक्सेना ने जून, 2002 में नियोश, सी.डी.सी., मोर्गनटाउन, वेस्ट वर्जिनिया, यू.एस.ए. में आयोजित 'आक्सिजन ऐंड नाइट्रोजन रेडिकल्स : सेल इंजरी ऐंड डिसीज' विषयक सम्मेलन में आमंत्रित प्रतिभागी के रूप में भाग लिया।
6. राजीव के. सक्सेना ने 1 से 5 जून, 2002 तक नियोश, सी डी सी, मोर्गनटाउन, वेस्ट वर्जिनिया, यू.एस.ए. में आयोजित 'आक्सिजन/नाइट्रोजन रेडिकल्स : सेल इंजरी ऐंड डिसीज' विषयक तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'आर.ओ.एस./आर.एन.एस. ऐंड जीन एक्सप्रेशन इन कैंसर ऐंड फाइब्रोप्रालिफ्रेटिव डिसीज' शीर्षक सत्र में पेनल परिचर्चा की।
8. प्रमोद कुमार यादव ने जैव–प्रौद्योगिकी संस्थान, अमरावती विश्वविद्यालय में 'एप्लिकेशंस आफ पॉलिमरेज चेन रिएक्शन' विषयक व्याख्यान दिया।
9. प्रमोद कुमार यादव ने बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल में 'एंटीवायरल स्ट्रेटिजीस' विषयक व्याख्यान दिया।
10. नीरा भल्ला सरीन ने एफ.एम.आई., बेसल स्विटजरलैण्ड में 'रिजेनरेशन ऐंड ट्रांसफार्मेशन आफ विग्ना मुंगो फार एबयोटिक स्ट्रेस टॉलरेंस' विषयक व्याख्यान दिया।
11. नीरा भल्ला सरीन ने मदुरई कामराज विश्वविद्यालय चेन्नई में 'रेग्यूलेटिड ट्रांसजीन एक्सप्रेशन इन विग्नो मुंगो' विषयक व्याख्यान दिया।
12. के. नटराजन ने 31 मार्च, 2003 को जैव–प्रौद्योगिकी विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में एम.एस–सी. (जैव–प्रौद्योगिकी) अंतिम वर्ष के छात्रों के समक्ष 'माइक्रोएरेज ऐंड फंक्शनल जीनोमिक्स' विषयक व्याख्यान दिया।

XII. संस्थान में आए अतिथि

1. डा. डेविड डेनिंग्स, मानचेस्टर विश्वविद्यालय, नवम्बर, 2002
2. डा. बारबरा सिवलस्का, तकनीकी विश्वविद्यालय गडनस्क, फरवरी, 2003
3. डा. जोयाचिम मरकोसर, बुर्जवर्ग विश्वविद्यालय, फरवरी, 2003
4. डा. जोयाचिन अर्मस्ट, डजलडोर्फ विश्वविद्यालय, मार्च, 2003
5. प्रो. फलीचर, डायरेक्टर, बॉन नोख्त इंस्टीट्यूट आफ ट्रापिकल मेडिसिन, हम्बर्ग जर्मनी।

संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन

1. राजेन्द्र प्रसाद, 16 से 20 नवम्बर, 2002 तक आयोजित गुहा शोध सम्मेलन में सह–संयोजक थे।
2. बी.सी. त्रिपाठी ने 6 से 8 मार्च, 2003 तक संस्थान में 'सेल्यूलर ऐंड मोलक्यूलर बायोलॉजी' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया।
3. एस.के. गोस्वामी ने 22–23 अक्टूबर को संस्थान में छठी ट्रांसक्रिप्शन एसेम्बली तथा अखिल भारतीय ट्रांसक्रिप्शन शोधार्थियों के वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान/अध्येतावृत्तियां

1. राजेन्द्र प्रसाद को मई–जुलाई, 2002 के दौरान एवरडीन विश्वविद्यालय का दौरा करने के लिए वेलकम ट्रट फाउंडेशन से अल्पकालिक यात्रा अनुदान प्राप्त हुआ।

2. राजीव के. सक्सेना, दिसम्बर, 2002 में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के फेलो चुने गए।
3. बी.सी. त्रिपाठी को विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए सामंत चन्द्रशेखर पुरस्कार प्राप्त हुआ।
4. आर. मधुबाला, निर्वाचित सदस्य, गुहा शोध सम्मेलन, 2002
5. नीरा भल्ला सरीन, जैव प्रौद्योगिकी में भारत–रूस सहयोग के तहत एफ.एम.आई., वेसल, स्विटजरलैण्ड में 'विजिटिंग साइंटिस्ट' के रूप में रहीं।
6. पी.सी. रथ, आमंत्रित शिक्षक, भारतीय विज्ञान अकादमी, 2002
7. जयश्री पॉल को भारतीय विज्ञान कांग्रेस, 2003 के 90वें सत्र में व्याख्यान देने के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मण्डल/समितियों की सदस्यता

1. राजेन्द्र प्रसाद, अध्यक्ष, आणविक चिकित्सा शास्त्र विशेष केन्द्र
2. बी.सी. त्रिपाठी, इंडियन जर्नल आफ प्लांट फिजियोलॉजी के संपादकीय मण्डल के सदस्य चुने गए।
3. आर. मधुबाला, सदस्य, संपादकीय मण्डल, एशियन जर्नल आफ ड्रग मेटाबॉलिज्म ऐंड फार्माकाइनेटिक्स; सदस्य संपादकीय मण्डल, जर्नल आफ पैरासिटोलॉजी; आजीवन सदस्य, इंडियन सोसायटी आफ पैरासिटोलॉजी; आजीवन सदस्य, इंडियन सोसायटी आफ इम्युनोलॉजी।
4. नीरा भल्ला सरीन, सदस्य, विद्या परिषद, सी.आई.एम.ए.पी., लखनऊ; सदस्य, विद्या समिति, एनसीपीजीआर, नई दिल्ली; सदस्य, बायोसेफ्टी कमेटी, एन.सी.पी.जी.आर, नई दिल्ली
5. एस.के. गोस्वामी ने वर्ष 2002 में जीवन विज्ञान संस्थान की प्रवेश समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया; नामित सदस्य, कार्य परिषद (जून, 2002 से)
6. जयश्री पॉल, सदस्य, संकाय समिति, जीवन विज्ञान संस्थान, जेएनयू।

छात्रों की उपलब्धियां

1. सुनीत शुक्ल को एन.सी.आई. में डॉ. सुरेश अम्बूदकर प्रयोगशाला में 6 माह तक (सितम्बर, 2002 से फरवरी, 2003 तक) शोध कार्य करने के लिए एन.आई.एच. अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।
2. सुधाकर झा, शोध छात्र को 1 से 8 मार्च, 2003 तक गोसाउ, आस्ट्रिया में आयोजित चौथे एडवांस्ड एफ.ई.बी.एस. लेक्चर कोर्स : ए.टी.पी.– बाइंडिंग कैसेट (एबीसी) प्रोटींस : फ्राम जैनेटिक डिसीज टु मल्टिड्रग रेसिस्टेंस' में भाग लेने और अपना शोध कार्य प्रस्तुत करने के लिए सी.एस.आई.आर. द्वारा यात्रा अनुदान प्राप्त हुआ।
3. *रविन्द्र कुमार* को *'टीएनएफ – टार्गेटिड राइबोजाइम* इन *एक्सपेरिमेंटल मॉडल* आफ *आर्थरिटिस'* की थेरेपेटिक क्षमता का परीक्षण करने हेतु प्राणियों पर प्रयोग करने के लिए स्वीडिश संस्थान से छात्रवृत्ति प्राप्त हुई।
4. बिंदु सुकुमारन को 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2002 तक बरेली, उत्तर प्रदेश में आयोजित 'पेरासिटोलॉजी' विषयक 16वीं राष्ट्रीय कांग्रेस में 'युवा विज्ञानी पुरस्कार' तथा सर्वोत्तम आलेख प्रस्तुत करने के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।
5. सुश्री सुचन्द्रा देब राय शोध छात्र को 15 जुलाई से 15 सितम्बर, 2002 तक एफएमआई, बेसल, स्विटजरलैण्ड में 'मोलक्यूलर बायोलॉजी' में उच्च प्रशिक्षण के लिए प्रायोजित किया गया। इसके पूरे खर्चे का भुगतान आईएससीबी, स्विटजरलैण्ड द्वारा किया गया।
6. श्री नासर शोली, शोध छात्र को वर्ष, 2003 में जी.वि.सं., जेएनयू द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय विज्ञान उत्सव' में परियोजना लिखने और प्रस्तुत करने की प्रतियोगिता के लिए द्वितीय सर्वोत्तम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
7. श्री युसुफ असलम, शोध छात्र को द एसोसिएशन फार द प्रमोशन आफ फिंगरप्रिंटिंग ऐंड अदर डीएनए टेक्नोलाजी (एडीएनएटी), एएसटी, सीसीएमबी, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'प्रोटियोमिक्स ऐंड डीएनए माइक्रोएरे' विषयक प्रशिक्षण कोर्स के लिए चुना गया।

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/सम्मेलनों में छात्रों की प्रतिभागिता

8. अली अब्दुल लतीफ ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।
9. तुलिका प्रसाद ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

10. प्रीति सैनी ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

11. सुधाकर झा ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

12. सुधांशु शुक्ल ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

13. अंशु द्विवेदी ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

14. रितु पसरीजा ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

15. वर्षा राय ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित 'यीस्ट 2003' की बैठक में भाग लिया।

16. डा. कस्तूरी मुखोपाध्याय, रिसर्च एसोसिएट ने फरवरी, 2003 और मार्च 2003 में डा. अर्नोल्ड एस. बेयर्स प्रयोगशाला का दौरा किया।

17. सुधाकर झा ने 1 से 8 मार्च, 2003 तक गोसाउ, आस्ट्रिया में आयोजित 'एटीपी बाईंडिंग कैसेट (एबीसी) प्रोटींस : फ्राम जैनेटिक डिसीज टु मल्टिड्रग रेसिस्टेंस' विषयक चौथे उच्च एफईबीएस व्याख्यान कोर्स में भाग लिया।

कोई अन्य सूचना

1. पी.सी. रथ ने एम.फिल. / पी–एच.डी. हेतु 'सेल सिगनेलिंग' (3 क्रेडिट) विषयक एक नए कोर्स की शुरूआत की।

8. भौतिक विज्ञान संस्थान

वर्ष 1986 में स्थापित यह संस्थान विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान में शोध एवं शिक्षण का एक विशिष्ट विभाग बन कर उभरा है। पिछले वर्षों में संस्थान ने एम.एस–सी. और प्री–पी–एच.डी. स्तरों पर नए एवं गैर–परम्परागत कोर्सों के साथ अपने शिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक चलाया।

संस्थान ने वर्ष 1987 के मानसून सत्र से पी–एच.डी. पाठ्यक्रम शुरू किया था। अब तक लगभग 39 छात्रों को पी–एच.डी. उपाधियाँ प्रदान की गई हैं। संस्थान ने वर्ष 1992 के मानसून सत्र से भौतिकी में एम.एस–सी. पाठ्यक्रम शुरू किया था। इस पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषता बुनियादी बातों के प्रति इसका झुकाव है। इस प्रकार शोध में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए यह कोर्स बहुत ही उपयोगी है।

संस्थान ने भौतिक विज्ञान के कई थ्रस्ट एरियाओं के साथ–साथ रसायन भौतिकी और जैव–भौतिकी के अन्तर–विषयक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। संस्थान के शिक्षकों एवं छात्रों के शोध आलेख अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी संस्थान को वर्ष 1994 में विशेष सहायता विभाग योजना के अन्तर्गत अनुदान मंजूर करते हुए इसकी शोध गतिविधियों को मान्यता प्रदान की है। अब इस अनुदान योजना की अवधि को बढ़ा दिया गया है और यह कॉसिस्ट योजना के द्वारा वर्ष 2000–2004 तक चालू रहेगी।

संस्थान ने "साफ्ट कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स" पर 'ऐट द इंटरफेस आफ फिजिक्स ऐंड बायोलाजी' विषयक 2–दिवसीय बैठक का आयोजन किया। इसमें 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पिछले वर्षों की तरह संस्थान ने इस वर्ष भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें देश–विदेश के प्रसिद्ध विद्वानों ने व्याख्यान दिए। संस्थान के शिक्षकों को विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों ने आमंत्रित किया। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों ने कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने शोध आलेख भी प्रस्तुत किए।

संस्थान की शोध गतिविधियां मुख्यतः क्लासिकल ऐंड क्वांटम केओस, कंप्यूटेशनल फिजिक्स, केंडेंस्ड मैटर फिजिक्स, डिसार्डर्ड सिस्टम्स, क्वांटम फील्ड थीअरि, क्वांटम आप्टिक्स और स्टेटिस्टिकल मैकेनिक्स के सैद्धान्तिक क्षेत्रों तथा केमिकल फिजिक्स, कंप्लेक्स फ्लूइड, केंडेंस्ट मैटर फिजिक्स और नेनो–साइंस ऐंड टेक्नोलाजी के प्रयोगात्मक क्षेत्रों पर केंद्रित हैं।

प्रयोगात्मक सुविधाएं

प्राकृतिक घटनाक्रम को समझने के लिए प्रयोगशालाओं में किए गए परीक्षण काफी कठिन होते हैं और ये परीक्षण भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में शोध एवं प्रशिक्षण के अभिन्न अंग हैं। गहन सैद्धांतिक समझ के साथ प्रयोगात्मक गतिविधियों का संतुलित विकास हमारे पाठ्यक्रम को सुदृढ़ बनाता है।

संस्थान की प्रयोगात्मक सुविधाओं का सामान्यतः बाह्य विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के विज्ञानी भी प्रयोग करते हैं। संस्थान की लेजर लाईट स्केटरिंग सुविधा का उपयोग एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दक्षिण परिसर, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, आई.यू.सी.–डी.ए.ई., मुम्बई द्वारा किया जा रहा है। ए.पी.एम. सुविधा का उपयोग विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अतिरिक्त, एस.एस.पी.एल., दिल्ली, आई.आई.टी., दिल्ली, आर.आर.आई., बंगलौर, एन.एस.सी., नई दिल्ली और दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा भी किया जा रहा है।

कंप्यूटर सुविधाएं

पिछले कुछ वर्षों में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में कंप्यूटर सिम्युलेशंस ने भौतिकी और रसायनिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। संस्थान ने अब अपनी कंप्यूटर सुविधाओं में पर्याप्त वृद्धि कर ली है। संस्थान के पास हैवी कंप्यूटिंग की सुविधाएं प्राप्त करने के लिए अनेक हाई–स्पीड वर्कस्टेशन (सिलिकान ग्राफिक्स मशीन, काम्पेक एक्स.पी. 1000 और सन अल्ट्रा 60स) उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान के प्रत्येक शिक्षक के पास एक–एक पी.सी. है और शिक्षण के लिए भी पी.सी. उपलब्ध हैं।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

संस्थान के थ्रस्ट एरिया हैं – सालिड स्टेट फिजिक्स और स्टेटिस्टिकल फिजिक्स।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

1 आर. घोष, सी.एन.आर.एस. लबोरेतायर दे फोटोनीक ऐट नेनोस्ट्रक्चर, मरकोसिस, फ्रांस में 15 मई से 14 नवम्बर 2002 तक सी.एन.आर.एस. विजिटिंग सांइटिस्ट रहे।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नये कोर्सों और अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरुआत

कोर्सों को समय–समय पर संशोधित किया गया है और संस्थान की विशेष समिति के माध्यम से इनका अनुमोदन किया जाता है।

प्रकाशन

पुस्तकें

1 आर. घोष, फाउन्डेशंस आफ क्वांटम थीअरि ऐंड क्वांटम आप्टिक्स–II, सेकण्ड विन्टर इंस्टीट्यूट–2002 की कार्यवाही (सं.) रूपमंजरी घोष, भारतीय विज्ञान अकादमी, बंगलौर, 2002.

2 संजय पुरी, संपादित (एस.पी. दास और वी.के. वाधवा के साथ) "फेज ट्रांजिशन" का विशेष अंक (भाग 75, 2002) इसमें 9–10 मार्च 2000 तक आयोजित, स्लो डायनेमिक्स ऐंड फ्रीजिंग इन कंडेंस्ड मैटर सिस्टम्स, विषयक सम्मेलन की कार्यवाही शामिल है।

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

1 एच.बी. बोहिदार, करेक्टेराइजेशन आफ पालिइलैक्ट्रोलिटेस बाई लेजर लाइट स्कैट्रिंग, हैन्डबुक आफ पालिइलैक्ट्रो–लिटेस, अमेरिकन साइंटिफिक पब्लिशर्स, यू.एस.ए. 2002.

आलेख

1 एस.एस.एन. मूर्ति और मधुसूदन त्यागी, "एक्सपेरिमेंटल स्टडी आफ द हाई फ्रिक्वेंसी रिलेक्सेशन प्रोसिस इन मोनोहाइड्रोक्सी अल्कोहल्स", जर्नल आफ केमिकल फिजिक्स, भाग–117 (8), अगस्त 2002.

2 एस.एस.एन. मूर्ति, मधुसूदन त्यागी, जर्नल आफ फिजिकल केमिस्ट्री ए, भाग–106, मई 2002.

3 एस.एस.एन. मूर्ति, "स्लो रिलैक्सेशन इन आइस ऐंड आइस क्लाथरेट्स ऐंड इट्स कनेक्शन टु द लो टेम्प्रेचर फेज ट्रांजिशन इंडयूस्ड बाई डोपेन्ट्स", फेज ट्रांजिशन, भाग–75 (445), 2002.

4 एस.एस.एन. मूर्ति, मोहम्मद शाहिन, मधुसूदन त्यागी "डाइलैक्ट्रिक स्टडी आफ होमोजेनिसिटी इन सम बाइनरी लिक्विड्स इन देअर सुपरकूल्ड स्टेट", जर्नल आफ साल्युशन केमिस्ट्री, भाग 32 (2), फरवरी 2003.

5 एस.पी. दास और यू. हरबोला, "माडल फार ग्लास ट्रांजिशन इन ए बाइनरी फ्लुइड फ्राम मोड कपलिंग अप्रोच", फिजिकल रिव्यू ई–65, 036138, 2002.

6 एस.पी. दास और चरणबीर कौर, "मेटास्टेबल स्ट्रक्चर्स विद मोडिफाइड वेटिड डेनसिटी फंक्शनल थीअरि", फिजिकल रिव्यू, ई एम. 65, 026123, 2002.

7 एस.पी. दास, एस. श्रीवास्तव और यू. हरबोला, "एनोमालस स्ट्रेचिंग इन ए सिम्पल ग्लास फार्मिंग लिक्विड", फिजिकल रिव्यू, ई 65, 051506, 2002.

8 एस.पी. दास और चरणबीर कौर, "डायनेमिक हैट्रोजेनिटीज इन सिम्पल लिक्विड ओवर डिफ्रेन्ट टाइम स्केल्स", फिजिकल रिव्यू लैट. 89, 085701, 2002.

9 एस.पी. दास, सुधा श्रीवास्तव और चरणबीर कौर, "डायनेमिक्स आफ मेटास्टेबलस लिक्विड कम्पैरिजन आफ रिजल्ट्स फ्राम टु डिफ्रेन्ट अप्रोचिस", फिजिक्स लैटर्स ए 300, 2002.

10 एस.पी. दास और चरणबीर कौर, "टैग्ड पार्टिकल डायनेमिक्स : फीडबैक इफैक्ट फ्राम कलेक्टिव डायनेमिक्स", फिजिकल रिव्यू ई 56, 2003.

11 एस.पी. दास और चरणबीर कौर, "स्टेटिक ऐंड डायनेमिकल हेट्रोजेनिटीज इन सुपरकूल्ड लिक्विड्स", फिजिका ए 318, 121, स्टेटिस्टिकल फिजिक्स की कार्यवाही, कोलकाता IV, 2003.

12 एस.पी. दास और यू. हरबोला, "माडल फार बिसकोइलास्टिसिटी इन ए बाइनरी मिक्सचर", जर्नल आफ केमिकल फिजिक्स 117, 9844, 2002.

13 आर. राजारमण, "फ्रेंक्शनल चार्ज", वियना में जान बेल की स्मृति में, "क्वांटम (अन.) स्पीकेबल्स", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में व्याख्यान दिया (सं.) आर.ए. बर्टलमन और ए. जालिन्जर स्प्रिंगर बेरलाग, बर्लिन, 2002.

14 आर. राजारमण, "सी.पी.एन. साल्युशंस इन कवांटम हाल सिस्टम्स", – बंस्को, बुलगारिया में जिओकेमेस्ट्री इंटेग्रेबिलिटी ऐंड नानलिनिएरिटी इन कंडेंस्ड मैटर ऐंड सॉफ्ट कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में समापन व्याख्यान दिया।

15 अखिलेश पाण्डेय, एस. घोष, एस. पुरी और आर. साह, "नान गौसिआन रेन्डम–मेट्रिक्स इनसेम्बल्स विद बैंडिड स्पेक्ट्रा", फिजिकल रिव्यू, ई–67, 025201, (आर) 2003.

16 आर. रामास्वामी, एस. सरकार और जे.एस. हंजन, "ग्लोबल आप्टिमाईजेशन आन एन इवाल्विंग एनर्जी लैन्डस्केप", फिजिकल रिव्यू ई–66, 046704, 2002.

17 आर. रामास्वामी, "सेगमेंटेशन आफ जिनोमिक डी.एन.ए. थ्रू एन्ट्रोपिक डाइवर्जेन्स : पावर लाज ऐंड स्केलिंग", (आर. के. आजाद, पी. बरनाला – गलवान और जे. सुब्बा राव के साथ, फिजिकल रिव्यू, ई–65, 051909, 2002.

18 आर. रामास्वामी, "सिम्पलीफाइंग द मोसेइक डिस्क्रिप्शन आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस", (आर.के. आजाद, जे. सुब्बा राव और डब्ल्यू. ली के साथ), फिजिकल रिव्यू, ई–66, 031913, 2002.

19 आर. रामास्वामी, "ग्लोबल आप्टिमाइजेशन आन एन इवोल्विंग लैण्डस्केप", (जे.एस. हंजन और एस. सरकार के साथ), फिजिकल रिव्यू, ई–66, 046704, 2002.

20 आर. रामास्वामी, "सिमेट्री ब्रीकिंग इन लोकल लाइपुनोव इक्सपोनेंट्स", यूरोपीयन जर्नल आफ फिजिक्स, बी–29, 339–343, 2002.

21 आर. रामास्वामी, "फेज आर्डरिंग ऐट क्राइसिस", (एम. श्रीमाली के साथ), फिजिक्स लैटर्स ए–295, 273, 2002.

22 एच.बी. बोहिदार, "सर्फेस एक्टिव एसोसिएशन बिहेवियर आफ ओबी–ओई, ओई–ओबी–ओई को–पालिमर्स", लांगमुइर, 17, 4597–4603, 2003.

23 एच.बी. बोहिदार, "डायनेमिक लाइट स्कैटरिंग ऐंड विस्कोसिटी स्टडीज आन द एसोसिएशन बिहेवियर आफ सिलिकान सर्फेक्टेन्ट्स इन अक्वेसस साल्युशंस", जे. फिज.केम.बी., 107, 5382, 2003.

24 ए.के. रस्तोगी, "पालिमोर्फिज्म इन कु–सब्सटिट्यूटिड GAV4S8 : स्ट्रक्चरल ऐंड इलैक्ट्रानिक प्रापर्टीज", (सं.) एम.ए. रहमान और ए.के. रस्तोगी, जर्नल आफ फिजिक्स ऐंड केमिस्ट्री आफ सालिड्स, 64, 77–85, 2003.

25 ए.के. रस्तोगी, ए.ए. तुलपुरकर, ए.के. ग्रोवर, एस. रामकृष्णा, ए. नियाजी, "पीक इफैक्ट स्टडीज इन NbSe2; फिजिका बी, 312–313, 118–119, 2002.

26 संजय पुरी और एस.के. दास, "डायनेमिक्स आफ फेज सैप्रेशन इन मल्टिकम्पोनेट मिक्चर्स", फिजिकल रिव्यू, ई. 65, 026241, 2002.

27 संजय पुरी, एस.के. दास, "नानइक्विलिब्रियम डायनेमिक्स आफ द कम्पलेक्स जिंजबर्ग लैण्डायु इक्वेशन : न्युमेरिकल रिजल्ट्स इन टु ऐंड थ्री डाइमेंशंस", फिजिकल रिव्यू, ई 65, 046123, 2002.

28 संजय पुरी और के. बिन्दर, "सर्फेस डाइरेक्टिड फेज सैप्रेशन विद आफ–क्रिटिकल कम्पोजिशन : एनाल्युटिकल ऐंड न्युमेरिकल रिजल्ट्स", फिजिकल रिव्यू, ई 66, 061602, 2002.

29 संजय पुरी, एस. घोष, ए. पाण्डेय, आर. साह, "नान–गौसियान रैन्डम मैट्रिक्स इनसेम्बल्स विद बैंडिड स्पेक्ट्रा", फिजिकल रिव्यू, ई 67, आर, 025201, 2003.

30 संजय पुरी, के. वाइज, "पर्टर्बेटिव लाइनेरिजेशन आफ रिएक्शन–डिफ्युजन इक्वेंशंस", जे.फिज. ए–36, 2043, 2003.

31 संजय पुरी, जे. शर्मा, "इफैक्ट आफ थर्मल फ्लक्च्युएशंस आन फेज सैप्रेशन इन पालिमर साल्वेन्ट मिक्चर्स", स्लो डायनेमिक्स ऐंड फ्रीजिंग इन कंडेंस्ड मैटर सिस्टम्स", विषयक सम्मेलन की कार्यवाही, (सं.) संजय पुरी, एस.पी. दास और वी.के. वाधवा, फेज ट्रांजिशंस 75, 401, 2002.

32 संजय पुरी, के. तफा, डी. कुमार, "आटोकोरिलेशन फंक्शन फार डोमेन ग्रोथ विद लोकल बैरियर्स रलो डायनेमिक्स ऐंड फ्रीजिंग इन कंडेस्ड मैटर सिस्टम्स", विषयक सम्मेलन की कार्यवाही (सं.) एस. पुरी, एस.पी., दास और वी.के. वाधवा, फेज ट्रांजिशन 75, 413, 2003.

33 संजय पुरी, "काइनेटिक्स आफ वेटिंग फार फेज–सैप्रेशन बाइनरी मिक्चर्स", आन कंप्युटेशनल फिजिक्स 2001 विषयक सम्मेलन की कार्यवाही, (सं.) एन. अतिग, आर. इसर और एम. क्रेमर, कम्प. फिज. कम्युनिकेशंस, 147, 286, 2002.

34 संजय पुरी, एस.के. दास, "इनहोमोजिनस कूलिंग इन इनइलास्टिक ग्रेनुलर फ्लुइड्स", स्टेटफिज–कोलकाता–iv की कार्यवाही में, (सं.) एस.एस. मन्ना और जे.के. भट्टाचार्य, फिजिका ए, 318, 55, 2003.

35 एस. पटनायक, "फ्लक्स फ्लो आफ एब्रीकोसोव–जोसेफसन वर्टीस अलोंग ग्रेन बाउन्ड्रीज इन हाईटेम्प्रेचर सुपरकंडक्टर्स", (सं.) ए. गुरेविच, एम.एस. रिजकोवस्की, जी. डेनियल्स, एस. पटनायक, डी.सी. लारबालेस्टिसयर, बी.एम. हिनौस, एफ. फारिलो और एफ. तफुरी, फिजिकल रिव्यू लैटर्स, 2002.

36 एस. पटनायक, एस.डी.बु., डी.एम. किम, जे.एच. चोई, जे. जिनके, एल. कुली, ई.ई. हिलस्ट्रोम, डी.सी. लारबालेस्टियर और सी.बी. इओम, "सिंथेसिस ऐंड प्रापर्टीज आफ सी., एक्जिस ओरिएन्टिड इपिटेक्सिअल Mg B2 थिन फिल्म्स", एप्लाइड फिजिक्स लैटर्स 81, 2003.

37 एस. पटनायक, वी. ब्रासिनी, एल.डी. कुली, पी. मारट्रीनेथ, ए. पालेन्जोन, ए.एस. सिरी और डी.सी. लारबालेस्टियर, "सिग्नीफिकेन्ट एनहान्समेंट आफ इररिवर्सीबिलिटी फील्ड इन क्लियर लिमिट वल्क Mg B2" एप्लाइड फिजिक्स लैटर्स, 81, 2002.

38 दीपक कुमार, के. तफा, एस. पुरी और डी. कुमार, "आटोकोरिलेशन फंक्शन फार डोमेन ग्रोथ विद लोकल बैरियर्स", फेज ट्रांजिशंस, 75, 413–25, 2002.

39 दीपक कुमार, "फोटेन स्टेट्स इन एनिसोट्रोपिक मीडिया", प्रमाण, 59, 2002.

40 दीपक कुमार, आर.के. ब्रोजन सिंह "सेल्फ कंसिस्टेन्ट स्टडी आफ लोकेलाइजेशन इन थिन फिल्म्स", फिजिकल रिव्यू. बी–66, 2002.

41 दीपक कुमार और पी.एन. पाण्डेय, "इफैक्ट आफ नाइज आन क्वांटम टेलिपोर्टेशन", फिज. रिव्यू, ए–67, 2003.

42 सुभाशीष घोष, अजीत महापात्रा और एस. घोष, "स्कोटी एनर्जी बैरियर ऐंड चेंज इंजेक्शन इन मेटल / सी.यु.–पी. सी. / मेटल स्ट्रक्चर्स, एप्लाइड फिजिक्स लेटर, 80, 2002.

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1 आर. रामास्वामी, डी.एस.टी. – डाड परियोजना (प्रो. यू. फ्युडल, कार्ल वोन ओसिटज्की यूनिवर्सिटी ओल्डनबर्ग के साथ) : स्ट्रेंज नानकेआटिक अट्रेक्टर्स, ओरिजिन्स, करेक्ट्राइजेशन ऐंड एप्लिकेशंस.

2 सुभाशीष घोष, एक्सपेरिमेंटल इनवेस्टिगेशन आफ डिफैक्ट्स इन जीएएन यूजिंग आप्टिकल स्पेक्ट्रोस्कोपी, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रायोजित।

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1 एच.बी. बोहिदार, स्ट्रक्चरल करेक्ट्राइजेशन आफ ... (2002–05) विषयक डीएसटी परियोजना।

2 एच.बी. बोहिदार, "प्रापर्टीज आफ .... " विषयक आई.यू.सी.–डी.ए.ई. की परियोजना.

3 आर. रामास्वामी, "डायनेमिक्स आफ फ्रेक्टल नान केआटिक अट्रेक्टर्स", (2001–2004) विषयक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1 आर. रामास्वामी ने 28 से 29 नवम्बर 2002 तक हनोई, वियतनाम में आयोजित, "रियुलेशन ऐंड माडलिंग फिजिक्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "अनकवरिंग द मोसेइक : सेग्मेंटेशन एनालिसिस आफ डी. एन.ए. सिक्वेंसिस", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2 आर. राजारमण को 23 से 24 जुलाई 2002 तक शिकागो में "इंडिपेंडेंट टेक्नीकल सिक्यूरिटी एनालिसिस", विषयक प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय व्यावसायिक बैठक आयोजित करने के लिए आमंत्रित किया गया और "साउथ एशिया", विषयक सत्र की अध्यक्षता की।

3 आर. राजारमण ने 1 से 3 नवम्बर 2002 तक जिनेवा में आयोजित, "साउथ एशियन सिक्युरिटी", विषयक पुग्वाश कार्यशाला में भाग लिया तथा आलेख प्रस्तुत किया।

4 एस. पटनायक ने 2 से 9 अगस्त, 2002 तक होस्टन, यू.एस.ए. में आयोजित, "एप्लाइड सुपरकंडक्टिविटी", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

5 दीपक कुमार ने 3 से 7 मार्च, 2003 तक आस्टिन, यू.एस.ए. में आयोजित अमेरिकन फिजिकल सोसायटी की मार्च बैठक में भाग लिया।

6 दीपक कुमार ने पैटर्न आफ मेल्टिंग स्नो; मेटल इंसुलेटर ट्रांजिशन इन टेट्राहिड्रल सेमिकंडक्टर्स, विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

7 सुभाशीष घोष ने पुरड्यु यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. में आयोजित "फिजिक्स ऐंड टेक्नोलाजी आफ आर्गेनिक सेमिकंडक्टर्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. आर. रामास्वामी ने 31 जुलाई, 2002 को बंगलौर में आयोजित, "रिसेंट एडवांसिस इन नानलिनियर डायनेमिक्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "द थर्मोडायनेमिक्स आफ स्ट्रेन्ज नानकेआटिक अट्रेक्ट", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2 आर. रामास्वामी ने 16 अगस्त, 2002 को पुणे में आयोजित, "जिनेटिक एल्गोरिथम्स इन बायोइनफार्मेटिक्स", विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा, "जिओमेट्री आप्टिमाइजेशन", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3 आर. रामास्वामी ने 2 दिसम्बर 2002 को चेन्नई में आयोजित, "रोबस्टनेस, इमर्जेन्ट बिहेवियर ऐंड पैटर्न फार्मेशन इन बायोलाजिकल सिस्टम्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "एनट्रापिक एनालिसिस आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस : अनकवरिंग द मोसेइक", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4 आर. रामास्वामी ने 17 से 19 जनवरी, 2003 तक आई.ए.सी.एस. कोलकाता में आयोजित, "ट्रेन्ड्स इन थीअरिटीकल केमिस्ट्री", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "स्ट्रक्चर आप्टिमाइजेशन", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5 आर. रामास्वामी ने 20 से 21 जनवरी, 2003 तक खड़गपुर में आयोजित, "मोलक्युलर इलैक्ट्रानिक स्ट्रक्चर ऐंड डायनेमिक्स 2003", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "फाइंडिंग जीन्स इन डी.एन.ए.", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6 आर. रामास्वामी ने 21 से 24 जनवरी, 2003 तक आई.ए.सी.एस. कोलकाता में आयोजित, "थीअरिटीकल फिजिक्स 2003", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "क्रिटिकल लोकेलाइजेशन ऐंड क्रिटिकल एट्रेन्ज नानकेआटिक अट्रेक्टर्स : द हार्पर इक्वेशन", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7 आर. रामास्वामी ने 22 से 23 फरवरी, 2003 तक टी.आई.एफ.आर., मुम्बई में आयोजित, "प्रोटीन एग्रीगेशन ऐंड एसोसिएशन", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

8 आर. रामास्वामी ने 28 फरवरी, 2003 को आई.आई.टी. कानपुर में आयोजित, "कंडेंस्ड मैटर डेज 2003", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "फाइंडिंग जीन्स (ऐंड अदर थिंग्स) इन डी.एन.ए. (ऐंड अदर बायोलाजिकल) सिक्वेंसिस", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9 आर. रामास्वामी ने 20 से 22 मार्च, 2003 तक सिम्प कोलकाता में आयोजित, "अनकनवेंशनल एप्लिकेशंस आफ स्टेटिस्टिकल मैकेनिक्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "एनट्रापिक एनालिसिस आफ डी.एन.ए. सिक्वेंसिस : अनकवरिंग द मोसेइक", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

10 एच.बी. बोहिदर ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक आई.आई.टी. रुड़की में आयोजित, "राष्ट्रीय बायोफिजिक्स" संगोष्ठी में भाग लिया तथा, "बायो–मोलिक्युलर सेल्फ असेम्बली", विषयक व्याख्यान दिया।

11 एच.बी. बोहिदार ने 26 फरवरी, 2003 को एन.पी.एल. नई दिल्ली में आयोजित, "सोल–जेल टेक्नोलाजी", विषयक एम.आर.एस. की बैठक में भाग लिया तथा, "सोल–जेल ट्रांजिशन इन बायोफिजिक्स", विषयक व्याख्यान दिया।

12 एस. पटनायक ने 5 से 6 दिसम्बर 2002 तक आई.आई.टी. दिल्ली में आयोजित, "नैनोस्ट्रक्चर्ड मैटेरियल्स", विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

13 दीपक कुमार ने 3 से 5 दिसम्बर, 2002 तक हरिशचन्द्र अनुसंधान संस्थान में आयोजित, "ट्रेन्ड्स इन कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "मेटल–इंसुलेटर ट्रांजिशन इन टेट्राहेड्रल सेमिकंडक्टर्स", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जे.एन.यू. से बाहर)

1 आर. रामास्वामी ने 6 से 7 मई 2002 तक आई.सी.जी.ई.बी., नई दिल्ली में, "मार्क माडल्स", विषयक व्याख्यान दिए।

2 आर. रामास्वामी ने 2 अगस्त, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जे.एन.यू. नई दिल्ली में, "इंट्रोडक्शन टु डी.एन.ए. सिक्वेंस एनालिसिस", विषयक व्याख्यान दिया।

3 आर. रामास्वामी ने 1 से 9 अक्टूबर 2002 तक सेंट स्टिफन्स कालेज, दिल्ली में, "थीअरिटीकल फिजिक्स", विषयक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।

4 आर. रामास्वामी ने 25 से 27 नवम्बर, 2002 तक हनोई वियतनाम में, "सिम्युलेशन ऐंड माडलिंग फिजिक्स", विषयक व्याख्यान दिया।

5 आर. रामास्वामी ने 3 दिसम्बर, 2002 को मद्रास स्कूल आफ इकोनामिक्स, चेन्नई में, "सेल्फ आर्गेनाइज्ड क्रिटिकलिटी", विषयक व्याख्यान दिया।

6 आर. रामास्वामी ने 4 दिसम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जे.एन.यू., नई दिल्ली में, 5 दिसम्बर, 2002 को कमला नेहरू कालेज, नई दिल्ली में, 12 दिसम्बर 2002 को श्रीवेंकटेश्वर कालेज, नई दिल्ली में, 13 दिसम्बर 2002 को लेडी श्रीराम कालेज, नई दिल्ली में और 28 मार्च 2003 को दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैम्पस में, "बायोइन्फार्मेटिक्स", विषयक व्याख्यान दिए।

7 आर. रामास्वामी ने 11 दिसम्बर 2002 को खालसा कालेज, नई दिल्ली में और 17 दिसम्बर, 2002 को आचार्य नरेन्द्र देव कालेज, नई दिल्ली में, "केआस", विषयक व्याख्यान दिए।

8 एस.पी. दास ने, "मोड कपलिंग थीअरि ऐंड स्ट्रक्चरल ग्लास ट्रांजिशन", विषयक 5 व्याख्यान दिए।

9 एस.पी. दास ने 26 से 30 दिसम्बर 2002 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में, "डी.ए.ई. सालिड स्टेट फिजिक्स", विषयक संगोष्ठी में, "हेट्रोजेनिटीज इन सुपरकूल्ड लिक्विड्स", विषयक व्याख्यान दिया।

10 दीपक कुमार ने 12 से 15 दिसम्बर 2002 तक इंस्टीट्यूट आफ मैथमेटिकल साइंसिस, चेन्नई में, "इलैक्ट्रान लोकेलाइजेशन इन थिन फिल्म : मेटल–इन्सुलेटर ट्रांजिशन इन टेट्राहेड्रल सेमिकन्डक्टर्स", विषयक व्याख्यान दिया।

11 दीपक कुमार ने 12 मार्च, 2003 को सेंटर फार पालिमर स्टडीज, बोस्टन युनिवर्सिटी, बोस्टन, यू.एस.ए. में, "पैटर्न्स आफ मेल्टिंग स्नो", विषयक व्याख्यान दिया।

12 सुभाशीष घोष ने आई.आई.टी., दिल्ली में, "सिंगल मोलिक्युल बेस्ड नैनोस्ट्रक्चर्स", विषयक व्याख्यान दिया।

13 सुभाशीष घोष ने एस.एस.पी.एल. दिल्ली में, "इक्सपेरिमेंट्स विद मोलिक्युल्स : मेसोस्कोपिक ट्रांसपोर्ट टु न्यू डिवाइसिस", विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठियां/सम्मेलन

1 अविनाश खरे, इंस्टीट्यूट आफ फिजिक्स, भुवनेश्वर ने 2 अप्रैल 2002 को "लिनियर सुपरपोजिशन फार न्युक्लियर इक्वेशंस ऐंड न्यू आइडेंटिटीज फार जैकोबी इलिप्टिक फंक्शंस", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

2 अखिलेश पाण्डेय, भौतिक विज्ञान संस्थान, जे.एन.यू. ने 10 अप्रैल 2002 को, "स्क्यू–आर्थोगोनल पालिनोमिअल्स ऐंड रेन्डम मैट्रिक्स इनसेम्बल्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

3 एन.डी. हरीदास, मैटसाइंस, चेन्नई ने 10 अप्रैल, 2002 को, "इमर्जेन्स आफ द माइक्रोकैनोनिकल डिस्ट्रिब्युशन फ्राम ए प्युर क्वांटम स्टेट", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

4 संजय, इंस्टीट्यूट आफ फिजिक्स, भुवनेश्वर ने 1 मई, 2002 को, "डी. ब्रेन्स पी.पी.–वेवबैकग्राउण्ड ऐंड गाज/स्ट्रिंग ड्युएलिटी", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

5 ए. डब्ल्यु जोशी, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे ने 17 मई, 2002 को, "लो–कास्ट इनोवेटिव इक्सपेरिमेंट्स ऐट एच.एस. ऐंड यूजी लेवल्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

6 अवधेश प्रसाद, अरोजोना स्टेट यूनिवर्सिटी, टेम्पे, यू.एस.ए., ने 24 मई, 2002 को, "हाइस्टेरसिस इन कपल्ड केआटिक आस्किलेटर्स ऐंड एप्लिकेशन टु इपिलेप्टिक सीजर्स', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

7 अफसर अब्बास, इंस्टीट्यूट आफ फिजिक्स, भुवनेश्वर, ने 29 मई 2002 को, "वाट द स्टेंडर्ड माडल आफ पार्टिकल फिजिक्स हैज टु से अबाउट द अर्ली यूनिवर्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

8 विजय कुमार, इंस्टीट्यूट आफ सालिड स्टेट फिजिक्स, टोकियो, जापान, ने 5 अगस्त, 2002 को, "मेटल इनकैपसुलेटिड ऐंड हाइड्रोजिनेटिड सिलिकान फुलरनेस", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

9 अजय घटक, आई.आई.टी., दिल्ली ने 28 अगस्त, 2002 को, "रिसेंट ट्रेन्ड्स इन फाइबर आप्टिक्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

10 अमित राय, नाभिकीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली, ने 4 सितम्बर, 2002 को, "वाट'स न्यू इन एक्सिलरेटर फिजिक्स ?", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

11 दिब्येन्दु दास,ब्रान्डीज यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए., ने 9 सितम्बर, 2002 को, "ग्लासी डायनेमिक्स इन डाइमर माडल्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

12 के.एल. सिबास्तियन, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, ने 13 सितम्बर, 2002 को, "क्रामर्स प्राब्लम फार लांग चेन मोलिक्युल्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

13 टी.आर. सेशाद्री, डिपार्टमेंट आफ फिजिक्स ऐंड ऐस्ट्रोफिजिक्स, यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली, दिल्ली, ने 23 अक्टूबर 2002 को, "एनिसोट्रोपी इन टेम्प्रेचर ऐंड पोलराइजेशन आफ द कास्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउण्ड रैडिएशन", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

14 प्रबल मैती, डिवीजन आफ कैमिस्ट्री ऐंड केमिकल इंजीनियरिंग, कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी, पेसाडेना, यू.एस.ए. ने 24 अक्टूबर 2002 को, "मल्टिस्केल माडलिंग आफ साफ्ट मैटर सिस्टम्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

15 राजेश गोपाल कुमार, हरिशचन्द्र शोध संस्थान, इलाहाबाद, ने 6 नवम्बर, 2002 को, "स्ट्रिंग्स इन इलैक्ट्रिक ऐंड मैगनेटिक फील्ड्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

16 अनिल कुमार, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर ने 12 नवम्बर 2002 को, "क्वांटम कंप्युटेशन : पासिबिलिटीज ऐंड द करंट स्टेटस", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

17 दीपक धर, टाटा इंस्टीट्यूट फार फंडामेंटल रिसर्च, मुम्बई, ने 14 नवम्बर, 2002 को, "सैन्डपाइल्स ऐंड रिलेटिड माडल्स आफ सेल्फ–आर्गेनाइज्ड क्रिटिकली–III", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

18 दीपक धर, टाटा इंस्टीट्यूट फार फंडामेंटल रिसर्च, मुम्बई, ने 15 नवम्बर 2002 को, "सैन्डपाइल्स ऐंड रिलेटिड माडल्स आफ सेल्फ–आर्गेनाइज्ड क्रिटिकली–IV", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

19 सुभाशीष घोष, भौतिक विज्ञान संस्थान, जे.एन.यू., नई दिल्ली ने 20 नवम्बर 2002 को, "इक्सपेरिमेंटस विद मोलिक्युल्स : मेसोस्कोपिक ट्रांस्पोर्ट टु कोन्डो इफेक्ट", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

20 नसीम रहमान, डिपार्टमेंट आफ केमिस्ट्री, यूनिवर्सिटी आफ ट्रीस्टे, ट्रीस्टे ने 4 दिसम्बर 2002 को, "क्वांटम केआस इन मेथानोल आइसोटोपोमर्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

21 विक्रम त्रिपाठी, कैवेंडिस लैबोरेट्री, यूनिवर्सिटी आफ केम्ब्रिज, यू.के., ने 23 दिसम्बर, 2002 को, "हिडन आर्बिटल आर्डर इन Uru2Si2", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

22 श्रीराम रामास्वामी, भौतिक विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, ने 24 दिसम्बर 2002 को, "आर्डर–डिस्आर्डर साइकिल इन रिलेटिवली शेअर्ड साफ्ट मोनोलेयर्स : ए स्टोकेस्टिक रिसोनेन्स ?' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

23 टी.पी. पारिक, मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फ्युर माइक्रोस्ट्रक्चरफाइसिल, हेल, जर्मनी, ने 15 जनवरी, 2003 को, "स्पिन ऐंड चार्ज ट्रांस्पोर्ट इन प्रिजेन्स आफ स्पिन–आर्बिट इंटरएक्शन', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

24 रियु ससाकी, युकावा इंस्टीट्यूट फार थीअरिटिकल फिजिक्स, क्योटो यूनिवर्सिटी, जापान, ने 17 जनवरी, 2003 को, "इंटग्रेबल नान लिनिअर डायनेमिक्स रिलेटिड टु लाई अल्जेब्रा', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

25 आर. रामाचन्द्रन, हरिश्चन्द्र अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद ने 21 जनवरी, 2003 को, "क्वांटम मैकेनिक्स इन नान कम्युटेटिव स्पेसिस ऐंड द लैन्डाउ प्राबलम्ब", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

26 धनुदास, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ ऐस्ट्रोफिजिक्स, बंगलौर, ने 31 जनवरी, 2003 को 'द रोल आफ मैनी–बाडी थीअरि इन टेस्टिंग द स्टेंडर्ड माडल आफ पार्टिकल फिजिक्स', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

27 आर. राजारमण, भौतिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू, नई दिल्ली, ने 5 फरवरी, 2003 को, "कैंटिड एन्टी–फेरोमैग्नेटिज्म इन क्वांटम हाल सिस्टम्स', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

28 रॉल्फ रेन्टजस, फ्रेइ यूनिवर्सिटी बर्लिन, ने 7 फरवरी, 2003 को, 'स्वांटम ट्रांस्पोर्ट आफ लोकेलाइज्ड इलैक्ट्रान्स', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

29 टी.वी. रामाकृष्णन, भौतिक विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर ने 11 फरवरी, 2003 को, 'थीअरि आफ मैनजेनाइट एक्जिबिटिंग कोलोजल मैग्नेटोरेसिसटेन्स', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

30 अमिताभ भट्टाचार्य, Institut Francais du petrole, फ्रान्स, ने 12 फरवरी, 2003 को, "सर्फेक्टेन्ट–पालि–इलैक्ट्रोलाइट मिक्स्ड सिस्टम्स : सर्फेस रिओलाजी ऐंड अदर प्रापर्टीज', विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

31 गेरहार्ड किल्लर, यूनिवर्सिटी इरलांगन, इरलांगन, जर्मनी, ने 14 फरवरी, 2003 को, "स्ट्रेन्ज नानकेआटिक अट्रेक्टर्स ऐंड निगेटिव स्वार्जियन डेरिवेटिव", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

32 गेरहार्ड किल्लर, यूनिवर्सिटी – इरलांगन, इरलांगन, जर्मनी, ने 17 फरवरी 2003 को, "इलिप्टिक बिहेवियर ऐंड ड्युएलिटी इन द हार्पर इक्वेशन", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

33 के.के. सुरेन्द्रन, रीजनल इंस्ट्रूमेंटेशन सेंटर नागपुर, ने 19 फरवरी, 2003 को, "क्वांटम रिएलिटी–एन अल्टरनेटिव व्यू", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

34 गेरहार्ड किल्लर, यूनिवर्सिटी – इरलांगन, इरलांगन, जर्मनी, ने 24 फरवरी 2003 को, "परम्युटेशन एन्ट्रोपी – ए कम्पलेक्सिटी मेजर फार टाइम सीरीज बेस्ड आन आर्डर स्टेटिक्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

35 जे.के. भट्टाचार्जी, आई.ए.सी.एस., कोलकाता, ने 26 फरवरी, 2003 को, "एक्रिशन फ्लो अराउण्ड मैसिव स्टार्स : वाट सलेक्ट्स द ट्राजेक्ट्री ?", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

36 एस. पटनायक, भौतिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू, नई दिल्ली, ने 12 मार्च, 2003 को, "सुपरकंडक्टिविटी इन एमजीबी–2", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

37 एस.के. दास, Institut Fur physik, johanner Gutenberg univeritat, mainz, जर्मनी, ने 17 मार्च, 2003 को, "फेज बिहेवियर ऐंड डायनेमिक्स आफ ए सिमेट्रिकल लेनार्ड–जोनेड्स मिक्सचर : कंप्युटर सिम्युलेशंस", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

38 वी. श्रीराम शास्त्री, भौतिक विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, ने 27 मार्च 2003 को, "फ्रेस्ट्रेशन इन पाइरोक्लोरे सिस्टम्स", विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

शिक्षकों को प्राप्त सम्मान / पुरस्कार / अध्येतावृत्तियां

1. एस. पुरी को होमी भाभा फेलोशिप कांउसिल, मुम्बई द्वारा होमी भाभा अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।

2 एस.पी. दास को प्रो. जीन लुईस, बरत आफ युनिवर्सते क्लाड बरनार्ड लिओन–I, फ्रांस के साथ मिलकर "स्टेटिस्टिकल फिजिक्स आफ सुपरकूल्ड लिक्विड्स", विषयक परियोजना (जून 2002–05) पर शोध कार्य के लिए इण्डो–फ्रेंच सेंटर फार द प्रमोशन आफ एडवांस्ड रिसर्च द्वारा 2604–सी अनुदान प्राप्त हुआ।

मण्डलों / समितियों की सदस्यता

1 आर. घोष, "स्कॉलरशिप फार वुमन साइंटिस्ट्स ऐंड टेक्नोलाजिस्ट्स", (2002) विषयक विशेष योजना तैयार करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा गठित सलाहकार समिति के सदस्य; सदस्य, वैज्ञानिक सलाहकार समिति, नाभिकीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली, 2001–03; और सलाहकार, स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय सुविधाएं, जेएनयू, 2001–03.

2 एच.बी. बोहिदार, सदस्य, विद्या परिषद; सदस्य, विशेष समिति, जीवन विज्ञान संस्थान, जेएनयू और कुलानुशासक, जेएनयू, 2002–04.

3 ए.के. रस्तोगी, अध्यक्ष, जेएनयू खेल समिति; सदस्य, संकाय समिति, प्राकृतिक विज्ञान संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली; समन्वयक, किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर; सदस्य, भौतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर अध्ययन मण्डल, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा; और सदस्य, क्रायोजेनिक समिति, नाभिकीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली.

9. सामाजिक विज्ञान संस्थान

सामाजिक विज्ञान संस्थान विश्वविद्यालय का सबसे बड़ा स्नातकोत्तर संस्थान है। इसके विभिन्न केंद्रों के एम.ए., एम.फिल./पी–एच.डी. और सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों में प्रत्येक वर्ष 500 से अधिक छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। संस्थान में कोई भी स्नातक पाठ्यक्रम नहीं है; तथापि, संस्थान अन्य संस्थानों के छात्रों के लिए कुछ स्नातक कोर्स चलाता है। संस्थान में लगभग 130 शिक्षक हैं।

संस्थान में कुल 9 केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वित्त–पोषित 'महिला अध्ययन कार्यक्रम' तथा 'प्रौढ़, अनुवर्ती शिक्षा और विस्तार' की एक विशेष यूनिट है। संस्थान में समसामयिक इतिहास पर अभिलेखागार और शैक्षिक रिकार्ड शोध यूनिट भी है। संस्थान के केंद्र हैं –

1. राजनीतिक अध्ययन केंद्र
2. सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र
3. ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र
4. आर्थिक अध्ययन और नियोजन केंद्र
5. क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र
6. जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र
7. सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
8. विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र
9. दर्शनशास्त्र केंद्र

संस्थान के दर्शनशास्त्र केंद्र को छोड़कर सभी केंद्रो में एम.फिल./पी–एच.डी. और सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों में छात्र पंजीकृत हैं, जबकि एम.ए. पाठ्यक्रम केवल पांच केन्द्रों में ही चलाए जाते हैं। ये केंद्र हैं –

1. राजनीतिक अध्ययन केंद्र
2. सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र
3. ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र
4. आर्थिक अध्ययन और नियोजन केंद्र
5. क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र

संस्थान में एक सजीव शैक्षिक वातावरण है। प्रत्येक केन्द्र में नियमित रूप से सेमिनार आयोजित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान स्तर पर भी कभी–कभी संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। संस्थान प्रत्येक वर्ष दो विशेष व्याख्यान आयोजित करता है। इनमें आर्थिक अध्ययन और नियोजन केंद्र द्वारा आयोजित (1) कृष्णा भारद्वाज स्मारक व्याख्यान और (2) समसामयिक इतिहास पर अभिलेखागार द्वारा आयोजित पी.सी. जोशी स्मारक व्याख्यान शामिल हैं।

सामाजिक विज्ञान संस्थान ने सामाजिक विज्ञान और मानविकी के अध्ययन से जुड़े सभी संस्थानों द्वारा निकाले गये कुल प्रकाशनों में से आधे से ज्यादा महत्त्वपूर्ण प्रकाशन निकाले। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान संस्थान के शिक्षकों की 150 से अधिक पुस्तकें, पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय और शोध आलेख प्रकाशित हुए। कई शोध छात्रों के आलेख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की व्यावसायिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। कई उच्च स्तरीय पी–एच.डी. शोध–प्रबंध भी प्रकाशित हुए।

संस्थान के शिक्षण एवं शोध पाठ्यक्रम में कतिपय नव प्रवर्तनकारी तत्त्व मिलते हैं। किसी एक विषय में गहन प्रशिक्षण के साथ–साथ बहु विषयक अध्ययनों व शोध में रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए एक केंद्र के एक विषयक संरचना वाले पाठ्यक्रमों के छात्रों को अन्य केंद्रों के विषय पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसा करते समय छात्र की अभिक्षमता के साथ–साथ मुख्य विषय के साथ उन विषयों की सम्बद्धता को भी ध्यान में रखा जाता है। इस अनुभव से पता चलता है कि छात्रों ने विशेषकर एम.फिल. स्तर पर पर्याप्त लाभ उठाया है। इसके परिणामस्वरूप शोध कार्य का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

विज्ञान नीति अध्ययन केंद्र

सामाजिक विज्ञान संस्थान के अध्ययन मण्डल ने केंद्र के नयी प्रौद्योगिकी के सामाजिक स्वरूप और विकास के लिए नवप्रवर्तनकारी नीतियां : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित दसवीं पचं वर्षीय योजना (2002–2003 से 2006–07) को अनुमोदित कर दिया है। दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान केंद्र शिक्षण एवं शोध के वर्तमान क्षेत्रों को सुदृढ़ करने के साथ–साथ, निम्नलिखित शोध एवं शिक्षण के क्षेत्रों में भी अपनी अन्तरविषयक आधारित शोध का विस्तार करने की योजना बना रहा है :

1. विज्ञान और नीतिशास्त्र
2. नयी प्रौद्योगिकी, भूमण्डलीकरण और विकास
3. राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और ग्रामीण नवप्रवर्तनकारी पद्धतियों का प्रबन्धन
4. विकास हेतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति तथा दक्षिण–दक्षिण सहयोग
5. साइंटोमिट्रिक्स, बिबलिओमिट्रिक्स और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षमता का मूल्यांकन

विज्ञान नीति में विशेष कार्यक्रम

प्रो. पार्थासारथी द्वारा उपलब्ध करायी गई बाह्य निधि से विज्ञान नीति में चल रहा विशेष कार्यक्रम जारी है। वर्ष 2002–03 के दौरान इस कार्यक्रम के लिए दो विजिटिंग प्रोफेसरों का सहयोग मिलता रहा और केंद्र की प्रलेखन यूनिट के लिए पुस्तकों और अन्य दस्तावेजों की खरीद के लिए निधि सहित आधारभूत सहयोग भी प्राप्त होता रहा।

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र

केंद्र क्षेत्रीय विकास संबंधी समस्याओं के शिक्षण एवं अन्तरविषयक शोध में संलग्न है। शिक्षकों में जनसांख्यिकी शास्त्री, अर्थशास्त्री, भूगोलशास्त्री, भूगर्भशास्त्री, गणितज्ञ और सांख्यिकीयशास्त्री शामिल है और वे शिक्षण एवं शोध में मार्गदर्शन हेतु निम्नलिखित थ्रस्ट एरिया में प्रयासरत है :

1. संस्थाएं तथा कृषि विकास
2. कृषि विकास के क्षेत्रीय आयाम
3. उर्वरता, मर्त्यता और देशांतरण
4. औद्योगिक विकास के क्षेत्रीय आयाम
5. जनसंख्या, पर्यावरण और अधिवास अध्ययन
6. क्षेत्रीय भूगोल योजना/क्षेत्रीय विकास
7. पारिस्थितिक विज्ञान, संसाधन विकास एवं प्रबंधन
8. सामाजिक भूगोल/जेंडर अध्ययन/स्वास्थ्य एवं शिक्षा का भूगोल
9. यातायात अर्थशास्त्र पर अध्ययन
10. शहरीकरण/देशांतरण
11. आधारभूत संरचना और विकास
12. भू–सतह प्रक्रिया

उपरोक्त थ्रस्ट एरिया को ध्यान में रखते हुए तथा विकास के उभरते मुददों पर विचार करते हुए केंद्र ने अपने कोर्सों एवं पाठ्यक्रमों का पुनर्गठन करने का कार्य शुरू किया है। अप्रैल 2001 तक एम.फिल. पाठ्यक्रम के पुनर्गठन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। एम.ए. पाठ्यक्रम की संशोधित संरचना तैयार हो गई है और सत्रवार कोर्सो के साथ इसकी अंतिम संरचना तथा कोर्सो की विषयवस्तु आदि का कार्य अगले वर्ष तक पूरा हो जाने की सम्भावना है। केंद्र विशेषकर यातायात, ऊर्जा और सिंचाई लोक वित्त और विकास सिद्धांत तथा कंप्यूटर अनुप्रयोग, जी.आई.एस. और रिमोट सेंसिंग के क्षेत्रों में संरचनागत अध्ययन को सुदृढ़ बनाने की योजना बना रहा है।

दर्शनशास्त्र केंद्र

फिलहाल केंद्र के अध्ययन कार्यक्रम मुख्यतः नैतिक और राजनीतिक दर्शनशास्त्र पर केंद्रित हैं। केंद्र सामाजिक विज्ञान के दर्शनशास्त्र पर कुछ लघु कार्यशालाएं आयोजित करने की भी योजना बना रहा है। इसके लिए कुछ तैयारियां शुरू की गई हैं।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र

सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र की स्थापना वर्ष 1971 में हुई। केंद्र का मुख्य लक्ष्य तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में समाजशास्त्र के दो प्रमुख क्षेत्रों (1) सामाजिक संरचना और (2) सामाजिक प्रक्रिया पर शिक्षण एवं शोध कार्यक्रम चलाना था। केंद्र को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और अन्य ऐसी सह–पद्धतियों पर विचार करते हुए सामाजिक पद्धतियों के अध्ययन में अन्तरविषयक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करना था। केंद्र का उद्देश्य सामाजिक पद्धतियों के अध्ययन के लिए मेक्रो और माइक्रो दोनों स्तरों पर तुलनात्मक परिदृश्य विकसित करना था।

केंद्र के मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए केंद्र के शिक्षकों, छात्रों तथा शोध स्टाफ सदस्यों ने पिछले वर्षों के दौरान निम्नलिखित मुख्य थ्रस्ट एरिया के विभिन्न अध्ययनों में अपना–अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया :

1. आधुनिकीकरण और विकास का समाजशास्त्र
2. व्यवसाय और व्यवसायीकरण का समाजशास्त्र
3. सामाजिक स्तरण का समाजशास्त्र
4. सामाजिक आंदोलन और सामाजिक संघटन का समाजशास्त्र
5. सीमांत ग्रुपों, अल्पसंख्यकों और दलितों का अध्ययन
6. जनजातियों तथा संजातीयता का समाजशास्त्र
7. शिक्षा का समाजशास्त्र
8. ज्ञान का समाजशास्त्र
9. जेंडर और जेंडर सम्बन्धों का समाजशास्त्र
10. भारतीय डायसपोरा का समाजशास्त्र
11. धर्म का समाजशास्त्र, और
12. संस्कृति अध्ययन

केंद्र के शिक्षकों तथा छात्रों के शोधकार्य और प्रकाशनों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि केंद्र विश्व और राष्ट्रीय स्तर पर उभरते हुए सामाजिक मामलों के अध्ययन में संलग्न है। केंद्र ने इनमें से कुछ मामलों से सम्बद्ध नये कोर्स और शोध पाठ्यक्रम भी तैयार करने की शुरूआत की है। इन प्रयासों को और अधिक कारगर बनाने के लिए शैक्षिक संसाधनों में वृद्धि करने की जरूरत है। निम्नलिखित शोध और अध्ययन क्षेत्रों को भविष्य में समेकित करने की शुरूआत की है। इन प्रयासों को और अधिक कारगर बनाने के लिए शैक्षिक संसाधनों में वृद्धि करने की जरूरत है। निम्नलिखित शोध और अध्ययन क्षेत्रों को भविष्य में समेकित करने की आवश्यकता है :

1. समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
2. सामाजिक शोध में मात्रात्मक सिद्धान्त
3. सामाजिक जनसांख्यिकी
4. सामाजिक मनोविज्ञान
5. ऐतिहासिक नृविज्ञान
6. सामाजिक पारिस्थितिकी
7. भूमंडलीकरण का समाजशास्त्र
8. जन–सम्पर्क अध्ययन, और
9. आधुनिक भारतीय सामाजिक विचारधारा

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

वर्ष 1972 में स्थापित जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र का मुख्य उद्देश्य सामाजिक विज्ञान में बहु–विषयक परिप्रेक्ष्य के माध्यम से शैक्षिक अध्ययन के क्षेत्र में शिक्षण एवं शोध को उन्नत करना है।

केन्द्र अर्थशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के सामाजिक विज्ञान परिप्रेक्ष्य के साथ शैक्षिक अध्ययन में एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रम चलाता है। इस पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान, मानविकी के साथ–साथ प्राकृतिक विज्ञानों की पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को प्रवेश दिया जाता है। वर्ष 2002–03 के दौरान केन्द्र के एम.फिल. और पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों में 83 छात्र पंजीकृत थे। इनमें से 15 नए छात्रों को शैक्षिक वर्ष 2002–2003 में एम.फिल./ पी–एच.डी. तथा सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया गया।

विशेष सहायता विभाग कार्यक्रम

वर्ष 1991 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस केंद्र को विशेष सहायता विभाग के रूप में मान्यता प्रदान की। इस विशेष सहायता विभाग कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदान की जाने वाली अनुदान राशि को वर्ष 1999 से नवीकरण कर दिया गया है। केन्द्र में मुख्यतः – शिक्षा का अर्थशास्त्र, शिक्षा का इतिहास, शिक्षा का समाजशास्त्र और शिक्षा का सामाजिक मनोविज्ञान – क्षेत्रों में शिक्षण एवं शोध कार्य बहु–विषयक आधार पर किया जाता है। इसके अतिरिक्त केंद्र के विशेष अनुदान कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित चार थ्रस्ट एरिया हैं : –

1. उच्च शिक्षा की नीति, नियोजन और प्रबन्धन;
2. ज्ञानवर्धन, विस्तार और दक्षता विकास में शिक्षा की भूमिका
3. शिक्षा में समानता एवं विशिष्टता
4. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, संस्कृति और समाज

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र

केंद्र ने अनेक ख्याति प्राप्त जन–स्वास्थ्य केंद्रों के सहयोग से भारत के साथ–साथ दक्षिण एशिया में स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों में संरचनागत सामंजस्य बिठाने में आने वाली कठिनाइयों को समझने की चुनौती स्वीकार की है। इस आधार पर केंद्र स्वास्थ्य सुधार के लिए एक वैकल्पिक योजना तैयार करने की अपेक्षा रखता है। केंद्र ने इस संबंध में मृत्युदर, अस्वस्थता दर, रोगों की प्रकृति, स्वास्थ्य सेवाओं में समदृष्टि, विकेंद्रीकरण और स्वास्थ्य सम्बन्धी देख–रेख जैसे महत्वपूर्ण मामलों पर विशेष बल देते हुए कार्य शुरू कर दिया है।

केंद्र के निम्नलिखित थ्रस्ट एरिया हैं : –

1. स्वास्थ्य सेवा पद्धति शोध
2. संक्रामक रोग, उनके पुनरुत्थान और नये क्षेत्रों के विशेष संदर्भ में जानपदिक रोग विज्ञान
3. पौष्टिकता एवं स्वास्थ्य
4. जनसंख्या नीतियां
5. श्रमिक स्वास्थ्य सहित पर्यावरण और स्वास्थ्य, चिकित्सा समाजशास्त्र, चिकित्सा मानव शास्त्र और स्वास्थ्य अर्थशास्त्र; स्वास्थ्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था
6. जन सांख्यिकीय इतिहास

नये क्षेत्र जिनमें आरम्भिक शोध कार्य शुरू कर दिया गया है :–

1. स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए वैकल्पिक नीति के रूप में लोकतंत्रीकरण और विकेंद्रीकरण
2. स्वास्थ्य के लिए गैर–स्वास्थ्य सेवाएं
3. शहरी स्वास्थ्य
4. स्वास्थ्य विधान
5. जैव आचार–शास्त्र
6. स्वदेशी पद्धतियां और आरम्भिक स्वास्थ्य सुरक्षा
7. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विधि और स्वास्थ्य।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

केन्द्र पिछले 29 वर्षों से महत्त्वपूर्ण शिक्षण और शोध पाठ्यक्रमों में संलग्न रहा है। केन्द्र के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों तथा शिक्षकों के शोध कार्यों में अर्थशास्त्र के विभिन्न विशेषीकृत क्षेत्र शामिल हैं। केंद्र ने सिद्धान्त को अनुप्रयुक्त कार्य के साथ जोड़कर भारतीय अर्थव्यवस्था को बेहतर रूप से समझाने का प्रयास किया है। केंद्र के शिक्षकों के प्रकाशनों और छात्रों द्वारा प्रस्तुत शोध लघुशोध ग्रन्थों (कृपया परिशिष्ट-1 और 2 देखें) से केंद्र में हुए विभिन्न अध्ययनों का पता चलता है।

जैसा कि पिछले वर्ष की रिपोर्ट में भी बताया गया है कि केंद्र दसवीं योजना के दौरान कोर्स संरचना में संशोधन करके तथा इनमें नये थ्रस्ट एरिया को शामिल करते हुए अपने एम.ए. तथा एम.फिल. पाठ्यक्रमों में समन्वय तथा विस्तार करने पर विचार कर रहा है। इसके अतिरिक्त शोध कार्य को और अधिक गहन बनाने के लिए एक डाटा बैंक की स्थापना करने का भी प्रस्ताव है। विश्वविद्यालय की दसवीं योजना की जरूरतों का मूल्यांकन करने के लिए आए विश्वविद्यालय

अनुदान आयोग के दल ने केंद्र के प्रस्तावों पर सहानुभूति से विचार करते हुए केंद्र के नये थ्रष्ट एरिया में सभी प्रकार से सहयोग करने का आश्वासन दिया। हमें आशा है कि हम केंद्र में शिक्षकों के अतिरिक्त पदों का सृजन कर पाऐंगे।

केंद्र की 10वीं योजना के प्रस्तावों में उल्लिखित आधारभूत संरचनागत जरूरतों पर भी कुछ ध्यान दिया गया है। हमने हुंडई से उपहार स्वरूप 10 कंप्यूटर प्राप्त किए हैं। ये कंप्यूटर हमारे छात्रों के लिए उपयोगी होंगे और उन्हें कंप्यूटर अनुप्रयोग सीखने का अवसर प्राप्त होगा। विश्वविद्यालय ने प्रत्येक शिक्षक को एक–एक कंप्यूटर उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है और कई शिक्षकों को कंप्यूटर उपलब्ध करा दिए गए हैं। इंटरनेट कनेक्शनों में भी तेजी से वृद्धि हो रही है ताकि शिक्षक एवं छात्र इस विस्तृत सूचना स्रोत का लाभ उठा सकें। शीघ्र ही सेमिनार कक्षों में आधुनिक सुविधाएं मुहैयास करायी जायेंगी। हमने कार्यालय, कंप्यूटर कक्षों तथा सेमिनार कक्ष के लिए इनवर्टरों की मांग की है। इन सुविधाओं से केंद्र की गतिविधियों की गुणवत्ता में विशेषकर, ग्रीष्मकाल के दौरान अत्यधिक सुधार होगा।

विशेष सहायता विभाग कार्यक्रम के अन्तर्गत केंद्र की गतिविधियों की समीक्षा करने के लिए मार्च में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का एक दल केंद्र में आया। हमने उन्हें पिछले विशेष सहायता विभाग कार्यक्रम के दौरान किए गए कार्य बताए। हमें आशा है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की टीम इन कार्यों की पुष्टि करेगी।

एक्जिम बैंक – जेएनयू पुस्तकालय में एक परिवर्तन आया है। 10 वर्ष पहले इसकी योजना एवं निर्माण में संलग्न रहे अधिकतर लोग अब जा चुके हैं और अब नये समन्वयक ने इस पुस्तकालय के संचालन का दायित्व संभाल लिया है। अब इसे समेकित करने का कार्य शुरू हो गया है। जेएनयू और एक्जिम बैंक के बीच एक्जिम बैंक पुस्तकालय के लिए हुआ करार (एम.ओ.यू.) 23 फरवरी 2003 को समाप्त हो गया। एक्जिम बैंक से इस करार को अगले पांच वर्षों के लिए नवीकरण करने का प्रस्ताव भेजा गया है। इसमें प्रत्येक वर्ष पुस्तकों की खरीद की राशि 7.5 लाख रूपये तक बढ़ाने का भी प्रावधान है। यह भी उल्लेखनीय है कि पुस्तकालय ने उपहार स्वरूप अनेक पुस्तकें एवं पत्रिकाएं प्राप्त कीं और पुस्तकालय में पुस्तकों की खरीद में भी वृद्धि हुई है। इसमें नयी पुस्तकों तथा अर्थशास्त्र विषय की अनेक पत्रिकाओं का वृहद संग्रह है। पुस्तकालय के खुले रहने का समय बढ़ाकर शाम 7.00 बजे तक कर दिया गया है। पुस्तकालय में कंप्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन उपलब्ध हैं और इलेक्ट्रानिक केटलागिंग का कार्य प्रगति पर है।

केंद्र के शिक्षकों ने यह महसूस किया कि छात्रों को विषय की बेहतर समझ के लिए ट्यूटोरियल्स की अत्यधिक जरूरत होती है। इससे एम.फिल./पी–एच.डी. छात्रों की अधिगम प्रक्रिया को सहायता मिलती है। अतः केंद्र ट्यूटोरियल वर्क पद्धति को और अधिक कारगर बनाने के रास्ते खोज रहा है।

केंद्र की गतिविधियों का लोकतन्त्रीकरण करने और इन्हें पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से एक ई–मेल पद्धति की शुरूआत की गई है। दसवीं योजना के दस्तावेज, टाइम–टेबल, कोर्स, ग्रेड, संकाय बैठकों के कार्यवृत्त, परिचालन हेतु प्राप्त परिपत्रों की सूची जैसे सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज प्रत्येक संकाय सदस्य को ई–मेल पद्धति द्वारा भेजे जा रहे हैं। इस तरह अवकाश पर चल रहे संकाय सदस्य भी केंद्र की गतिविधियों से अवगत रहते हैं।

केंद्र में पुराने छात्रों का संघ भी कार्यरत है। इस संघ ने एक पत्रिका निकाली है और केंद्र के छात्रों की नौकरियों की भी व्यवस्था की है। इस संघ के प्रयासों के फलस्वरूप हुंडई ने उपहार स्वरूप कंप्यूटर प्रदान किए हैं। हमें आशा है कि यह संघ अन्य गतिविधियों का आयोजन भी कर पाएगा।

दसवीं योजना के लिए केंद्र के प्रस्ताव निम्नलिखित है : –

क. पाठ्यक्रमों में नये क्षेत्रों – विधि और अर्थशास्त्र, वित्त (पूंजीगत बजारों सहित) की अर्थव्यवस्था और मानव विकास का अर्थशास्त्र – जैसे क्षेत्रों को शामिल किया जा रहा है।

ख. सांख्यिकीय और अर्थमिति तकनीकों के उपयोग और आर्थिक विश्लेषण तथा शोध – दोनों क्षेत्रों में और इन विश्लेषणों के परिणामों के प्रचार–प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति पर बल देने का प्रस्ताव है। इस उद्देश्य के लिए भारतीय अर्थशास्त्र पर डाटा एकत्रित करना कठिन कार्य है। अतः केंद्र ने भारतीय अर्थशास्त्र का डाटा–बैंक स्थापित करने का प्रस्ताव किया है।

ग. पर्यावरणीय अर्थशास्त्र और प्राकृतिक संसाधनों के अर्थशास्त्र पर अध्ययन को सुदृढ़ बनाना है। ये क्षेत्र पिछले दो दशकों में हुए महत्वपूर्ण विकास के विस्तृत संदर्भ में शिक्षण और शोध के अन्तरविषयक क्षेत्रों के रूप में उभरे हैं। इसमें समाज कल्याण के लिए अंतराजनरेशनल और इंटरजनरेशनल क्षेत्रों से सम्बन्धित आचार–शास्त्रीय मुद्दों पर अध्ययन किया जाएगा।

केंद्र द्वारा इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए न केवल शिक्षकों की संख्या में वृद्धि करनी होगी अपितु शोध के लिए आधारभूत संरचना विकसित करने हेतु संसाधन भी जुटाने होंगे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा केंद्र को विशेष सहायता विभाग के अन्तर्गत सहायता प्रदान करने से केंद्र को उन देशों में विकास की समस्या के थ्रस्ट एरिया में शोध विस्तार करने में सहायता मिली है, जिनका औद्योगीकरण देरी से हो रहा है। पर्यावरण अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उभरते शोध क्षेत्र कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त सहयोग से केंद्र पर्यावरण और संसाधन अर्थशास्त्र के क्षेत्र मे एम.ए. और एम.फिल. स्तर पर दो नये कोर्स शुरू कर सका है। इन क्षेत्रों में शोध कार्य को और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। इसी तरह लोक वित्त और लोक नीति के क्षेत्रों में भी विस्तार करने की जरूरत है।

प्रौढ़ शिक्षा ग्रुप

प्रौढ़ अनुवर्ती शिक्षा से सम्बन्धित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा ग्रुप को औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करने, क्रेडिट और नान–क्रेडिट कोर्स चलाने, शोध कार्य शुरू करने और मूल्यांकन, प्रलेखन तथा सलाह सम्बन्धी कार्य करने का दायित्व सौंपा है। इस ग्रुप के मुख्य थ्रस्ट एरिया हैं – औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के बीच सम्पर्क स्थापित करना; विश्वविद्यालय की शिक्षा पद्धति के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के प्रौढ़ों तक पहुँचना; और सामुदायिक जरूरतों, समसामयिक समस्याओं, मामलों को उजागर करते हुए शिक्षकों एवं छात्रों की अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध बनाना तथा सिद्धान्तों को व्यावहारिक बनाना। दसवीं पंच–वर्षीय योजना के दौरान ग्रुप के मुख्य कार्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की नीतियां और व्यवहार, मेटा मूल्यांकन, नशाखोरी और सामाजिक सक्रियता, शिक्षा कार्यक्रमों से सम्बन्धित जीवनशैली पर अध्ययन करना और व्यवसायिक विकास कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाना एवं आयोजन करना तथा प्रौढ़ शिक्षा पदाधिकारियों के लिए ई–ट्रेनिंग माड्यूल्स तैयार करना है।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र

1. सल्जबर्ग यूनिवर्सिटी, आस्ट्रिया के साथ इंटर जी.आई.एस. परियोजना चल रही है।
2. आई.सी.एस.एस.आर. (आई.डी.पी.ए.डी.) के इण्डो–डच कार्यक्रम के अन्तर्गत बाल–मजदूरी पर परियोजना चल रही है।
3. डीसर्टिफिकेशन स्टेटस विद स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (आई.एस.आर.ओ.) अहमदाबाद (चल रही है)

सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र

विश्व अध्ययन कार्यक्रम

केंद्र ने समाजशास्त्र संस्थान, अल्बर्ट लुडविग्स यूनिवर्सिटी फ्रीबर्ग (जर्मनी) और नेटाल यूनिवर्सिटी, डर्बन (दक्षिण अफ्रीका) के सहयोग से एक विशेष सहयोगात्मक कार्यक्रम की शुरूआत की है। केंद्र ने इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शीतकालीन सत्र 2003 में तीन नये कोर्स विकसित किए है। इनके शीर्षक हैं – (1) साउथ एशियन सोशॅल थाट ऐंड मीडिया; (2) माडर्नाइजेशन ऐंड डिवलपमेंट : पर्सपेक्टिव्स फ्राम साउथ एशिया ऐंड ग्लोबलाइजेशन तथा (3) इंटरनेशनल इंस्टीच्युशंस ऐंड सोसायटी।

जनवरी 2002 में एक सत्र के लिए विश्व अध्ययन कार्यक्रम के पहले बैच के लिए केंद्र में छात्रों ने पंजीकरण कराया। इस बैच में 15 देशों – मैक्सिको, कोलम्बिया, यू.एस.ए., घाना, दक्षिण अफ्रीका, जर्मनी, बुल्गारिया, फिनलैण्ड, रोमानिया, भारत, चीन, थाईलैण्ड, सिंगापुर, सर्बिया और मोंटेनिग्रो – के 22 छात्र शामिल हैं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 'ग्लोबलाइजेशन ऐंड साउथ एशिया' विषयक विशेष व्याख्यान माला और 'मैथड्स आफ सोशल रिसर्च' विषयक एक कार्यशाला आयोजित की गई। छात्रों को अध्ययन दौरे के लिए वाराणसी भी ले जाया गया। इस कार्यक्रम से हमारे शैक्षिक और वित्तीय संसाधनों में वृद्धि हुई है।

विशेष व्याख्यान माला के अन्तर्गत प्रो. टी.के. ऊमन, प्रो. एस.डी. मुनि, प्रो. दीपांकर गुप्ता, डॉ. एस.एस. जोधका, हीडलबर्ग (जर्मनी) के डॉ. मार्टिन फुस और श्री अजय उपाध्याय (सम्पादक, हिन्दुस्तान) ने व्याख्यान दिए। कार्यशाला में प्रो. एहसानुल हक, डॉ. सुसन विश्वनाथन, डॉ. रेदर ग्राम (विश्व बैंक) और प्रो. आनंद कुमार ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। इस संबंध में केंद्र के प्रो. एम.एन. पाणिनी और आनंद कुमार ने जर्मनी का दौरा किया।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र

केंद्र 'मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सेक्टर पालिसीज इन साउथ एशिया' विषयक संयुक्त परियोजना के लिए निम्नलिखित संस्थानों के साथ सहयोग कर रहा है :

1. सामुदायिक चिकित्साशास्त्र विभाग, कोलम्बो विश्वविद्यालय
2. राष्ट्रीय निवारण एवं सामाजिक चिकित्साशास्त्र संस्थान, ढ़ाका, बंगला देश।
3. कल्याण एवं स्वास्थ्य हेतु राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास केंद्र, हेलसिंकी, फिनलैण्ड।
4. सामुदायिक चिकित्साशास्त्र विभाग, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय।
5. द रीजनल कम्युनिटी मैंटल हैल्थ इंस्टीच्युट, 'मास्ट्रीख्त, द नीदरलैण्ड
6. पालिसी रिसर्च फार डिवलपमेंट आल्टर्नेटिव, ढ़ाका, बंगलादेश
7. हैल्थ एक्शन बाई पीपल, त्रिवेंद्रम
8. आर्थिक और सामाजिक अध्ययन केंद्र, हैदराबाद

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केंद्र

दसवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत केंद्र ने एक डाटा–बैंक स्थापित करने का प्रस्ताव किया है। इसमें सामाजिक विज्ञान संस्थान के सभी केंद्रों के लिए उपयोगी डाटा शामिल होंगे। यह सुझाव दिया जाता है कि सार्वजनिक क्षेत्रों से एकत्रित किए गए डाटा को वेबसाइट पर डाल दिया जाए ताकि यह डाटा जेएनयू के और बाह्य शोधार्थियों को उपलब्ध हो सकें।

प्रौढ़ शिक्षा ग्रुप

इस ग्रुप ने दुर्गा देवी स्मारक न्यास और दो व्यावसायिक संगठनों – यथा राज्य संसाधन केंद्र और भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ जैसे गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से विभिन्न क्षेत्रीय कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 2002–2003 के दौरान कुसुमपुर पहाड़ी झोंपड़ पट्टी (वसन्त विहार) दक्षिण दिल्ली और पल्लाह गाँव, गुड़गाँव में तीन कार्यक्रम चलाए गए। इन कार्यक्रमों का समन्वय प्रो. एस.वाई. शाह के मार्गदर्शन में श्री ओ.पी. स्वामी द्वारा किया गया।

ग्रुप ने स्थानीय स्वयं सेवकों के सहयोग से पल्लाह गाँव और कुसुमपुर पहाड़ी के 77 प्रतिभागियों के लिए प्रौढ़ आधारभूत शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। ग्रुप ने स्थानीय संस्था 'प्रेरक' (श्रीमती सोनिया वर्मा) के सहयोग से 175 प्रतिभागियों के लिए उत्तर साक्षरता कार्यक्रम भी आयोजित किया। वर्ष के दौरान नवसाक्षरों में 210 पुस्तकें वितरित की गईं।

केंद्र ने प्रारम्भिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाने के उद्देश्य से कुसुमपुर पहाड़ी के विद्यालय छोड़ चुके या दाखिल नहीं हुए बच्चों के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें स्थानीय बेरोजगार युवकों ने अंशकालिक शिक्षक के रूप में सहयोग किया। इस कार्यक्रम में वर्ष के दौरान 40 बच्चों का पंजीकरण किया गया।

श्रीमती शांता कृष्णन ने कर्नाटक और हरियाणा राज्यों में गहन विस्तार कार्य किए। इन्होंने कर्नाटक राज्य के चल्लाकेरे, चित्रदुर्ग और देवनागरे का दौरा किया। ये बंधुवा मजदूरी, कृषि में संलग्न और अन्य श्रमों से मुक्त कराए गए बच्चों के लिए के.वी.बी.के.आर. ट्रस्ट द्वारा स्थापित आवासीय प्रारंभिक पाठशाला, चल्लाकेरे तथा इसी तरह की चित्रदुर्ग में अन्य गैर सरकारी संगठन द्वारा स्थापित पाठशाला में भी गईं। इन्होंने उन्हें व्यावसायिक शिक्षा और रोजगारपरक दक्षता पर बल देते हुए इन पाठशालाओं को आगे संचालित करने संबंध मार्गदर्शन दिया। इन्होंने उपरोक्त वर्ग के बच्चों के लिए शैक्षिक सुविधा संचालित करने और इनका विस्तार करने के लिए राज्य की सहायता बढ़ाने के संबंध में श्रम आयुक्त और प्रधान सचिव, श्रम विभाग, कर्नाटक सरकार के साथ बैठक की। इस मध्यस्थता के परिणामस्वरूप दो और पाठशालाएं मंजूर की गईं। इस वर्ग के बच्चों के लिए ये पाठशालाएं चल्लाकेरे–चित्रदुर्ग क्षेत्र में स्थापित होंगी।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नए कोर्सों और अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरुआत

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. पाँच नए कोर्स शुरू किए गए।
2. सभी कोर्सों तथा एम.फिल. शोध प्रबन्ध के लिए निर्धारित क्रेडिट में संशोधन किया गया। नई योजना के तहत कोर्स कार्य 16 क्रेडिट तथा शोध प्रबन्ध 8 क्रेडिट का होगा। प्रत्येक कोर्स 4 क्रेडिट या 2 क्रेडिट का होगा।

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

शीतकालीन सत्र–2003 केन्द्र के वैश्विक अध्ययन कार्यक्रम के तहत तीन नए कोर्स चलाए गए। इनके नाम हैं : साउथ एशियन सोशल थॉट ऐंड मीडिया, माडर्नाइजेशन ऐंड डिवलपमेंट : पर्सपेक्टिव्स फ्राम साउथ एशिया एण्ड ग्लोबलाइजेशन, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूशंस एण्ड सोसायटी।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

कोर्स संशोधित किए : रिसर्च मेथड–I, फिलॉस्फी आफ साइंस सेक्शन (एम.फिल. स्तर)। संस्थान स्तर पर एम.ए. के छात्रों हेतु नए कोर्स शुरू किए :

1. सोशल थीअरि आफ साइंस
2. साइंस ऐंड सोसायटी इन कॉलोनियल साउथ एशिया
3. मेडिकल नॉलेज, इंस्टीट्यूशंस ऐंड प्रेक्टीसेज

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. रणबीर चक्रवर्ती, 'ट्रेड ऐंड अर्बन सेंटर्स इन इंडिया सी.ए.डी. 400–1300' शीलकालीन सत्र 2002.

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. संघमित्रा एस. आचार्य, 'हेल्थ, पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट' विषयक कोर्स शिक्षण हेतु अनुमोदित किया गया।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

एम.ए. कोर्स के नए ढांचे को अंतिम रूप दिया गया तथा इसे शीघ्र ही केन्द्र की समिति की बैठक और सा.वि.सं. के अध्ययन मण्डल के अनुमोदन हेतु रखा जाएगा। प्रो. सी.पी. चन्द्रशेखर की अध्यक्षता में प्रयास शुरू किए गए। उनके प्रयासों से ही लम्बे समय से चली आ रही प्रक्रिया की समीक्षा की जा सकी।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

समूह वर्ष 1999 से एम.ए. स्तर पर 'एडल्ट एज्यूकेशन इन इंडिया' विषयक चार क्रेडिट का एक ऐच्छिक कोर्स चला रहा है। प्रत्येक सत्र में औसतन 10–12 छात्र इस कोर्स का चुनाव करते हैं।

शांता कृष्णन ने जेएनयू के एम.एस–सी., एम.ए., एम.फिल. के छात्रों हेतु 'नान फॉर्मल एज्यूकेशन इन नेचुरल डिसास्टर्स ऐंड देयर मिटिगेशन ऐंड मैनेजमेंट' विषयक एक अन्तर–विषयक ऐच्छिक, क्रेडिट कोर्स तैयार किया। सी.ए.एस.आर. के साथ परिचर्चा और प्राप्त सुझावों के आलोक में पाठ्यचर्या के प्रारूप को संशोधित किया गया।

अ.जा./अ.ज.जा. और शैक्षिक रूप से पिछड़े अन्य छात्रों के लिए उपचारात्मक कोर्स

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

केन्द्र में प्रत्येक वर्ष कमजोर वर्ग से संबंधित कम से कम तीन छात्रों को एम.फिल./पी–एच.डी. में प्रवेश दिया जाता है। इन छात्रों को किसी विशेष कोर्स से संबंधित शिक्षण सामग्री तथा सहायता उपलब्ध कराने के प्रयास किए जाते हैं। इन छात्रों को शोध कार्य में भी विशेष रूप से सहयोग किया जाता है। कुछ छात्रों को विश्वविद्यालय के समान अवसर कार्यालय द्वारा चलाए जा रहे पूरक अंग्रेजी भाषा कोर्स में भाग लेने के लिए भेजा जाता है।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केंद्र

प्रवीण झा, पढ़ाई में कमजोर छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर केन्द्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

प्रकाशन

पुस्तकें

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. जोया हसन, सह सम्पादक (इ. श्रीधरण और आर. सुदर्शन के साथ) इण्डिया'स लिविंग कांस्टीट्यूशन : आइडियाज, प्रेक्टिसीज ऐंड कंट्रोवर्सीज, परमानेन्ट ब्लैक, नई दिल्ली, 2002
2. सुधा पई, दलित ऐसर्शन ऐंड द अनफिनिस्ड रिवोल्यूशन : द बी.एस.पी. इन उत्तर प्रदेश, इन द सेज सीरीज : कल्चरल सबॉर्डिनेशन ऐंड द दलित चैलेन्ज, सेज प्रकाशन, भाग–3, नई दिल्ली 2002.

3. कुलदीप माथुर, जेम्स डब्ल्यू. बजोरकमैन के साथ, पालिसी टेक्नोक्रेसी ऐंड डिवलपमेंट : ह्यूमन कैपिटल पालिसी इन द नीदरलैण्ड्स ऐंड इंडिया, आई.डी.पी.ए.डी. और मनोहर, नई दिल्ली.

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. सुदेश नांगिया, इन द नेम आफ चाइल्ड लेबर : इरैडिकेशन ऐंड इवैल्युएशन प्रोग्राम (बी. जुत्शी, मंदिरा दत्ता के साथ), शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 224, 2002
2. सुदेश नांगिया, करिकुलम डिवलपमेंट इन जिओग्राफी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रकाशित
3. जी.के. चड्ढा, रूरल इंडस्ट्री इन इण्डिया : पालिसी पर्सपेक्टिव्स, पास्ट पर्फार्मेन्स ऐंड फ्यूचर आप्शंस अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ, नई दिल्ली, मार्च 2003

दर्शनशास्त्र ग्रुप

1. पी.बी. मेहता, द बर्डन्स आफ डेमोक्रेसी, जुलाई 2003 में प्रकाशित होनी है।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. जे.एस. गांधी, थ्रू ए इसप्लेंडिड विन्डो, ए सोसिओलाजिकल व्यू आफ अवर ला प्रोफेशनल्स ऐंड लीगल आप्रेट्स, रावत प्रकाशन, जयपुर, 2003
2. सुसन विश्वनाथन, द विजिटिंग मून, इण्डिया, इंक, दिल्ली, 2002
3. अविजित पाठक, सोशल इंप्लिकेशंस आफ स्कूलिंग, नालेज, पेडागोगी ऐंड कांससनेस, रेनबो, नई दिल्ली, 2002
4. रेणुका सिंह, द पाथ टु ट्रांक्विलिटी, (सं.) पेंगुइन पुतनाम, यू.एस.ए., 2002; (सं.) रैन्डम हाउस, राइडर, यू.के. 2002; (सं.) जर्मन, हरडर, फ्रीबर्ग, जर्मनी, 2002; इतावली रिजोली, मिलन, इटली, 2002; चीनी, हिशिआन्ग, ताईवान, 2002;
5. रेणुका सिंह, द ट्रांस्फोर्म्ड माइन्ड (सं.), मुनिडंग पब्लिकेशिंग कम्पनी, कोरिया; होडर ऐंड स्टोघटन, यू.के. 2002;
6. रेणुका सिंह, (सं.) लाइव इन ए बैटर वे, पेंगुइन, पुतनाम, यू.एस.ए., 2002
7. अमित कुमार शर्मा, स्ट्रक्चर आफ इण्डियन सोसाइटी, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली, 2003
8. अमित कुमार शर्मा, भारतीय समाज की संरचना (हिन्दी) एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली, 2003
9. विवेक कुमार दलित लीडरशिप इन इण्डिया, कल्पज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. गीता बी. नाम्बिसन, चाइल्ड लेबर ऐंड द राइट टु एज्यूकेशन इन साउथ एशिया : नीड्स वर्सस राइट्स ? (सह सम्पादन) सेज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
2. ध्रुव रैना, इमेज्स ऐंड कंटेक्स्ट द हिस्ट्रोग्राफी आफ साइंस ऐंड माडर्निटी इन इण्डिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2003

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. भट्टाचार्य, एज्यूकेशन ऐंड द डिसिप्रिवलेज्ड : 19टींथ ऐंड 20टींथ सेंचुरी इण्डिया, सम्पादक द्वारा प्रस्तावना के साथ, एन अप्रोच टु एज्यूकेशन ऐंड इनइक्वैलिटी, ओरिएन्ट लोंगमैन, नई दिल्ली, पृ. 1–32
2. रणवीर चक्रवर्ती, प्राचीन भारतेर आर्थनैतिक इतिहासेर संधाने, आनन्द प्रकाशन, कोलकाता, 2002

सामाजिक चिकित्सा–शास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. घनश्याम शाह, मारिओ रतन और हेइन स्ट्रीफकर्क, डिवलपमेंट ऐंड डेप्रिवेशन इन गुजरात, सेज प्रकाशन, दिल्ली, 2003
2. घनश्याम शाह, कास्ट ऐंड डेमोक्रेटिक पालिटिक्स इन इण्डिया, दिल्ली परमानेन्ट ब्लैक, 2002
3. घनश्याम शाह, डी.सी. शाह, लैण्ड रिफार्म्स इन वेस्टर्न इण्डिया, सेज प्रकाशन, दिल्ली, 2002
4. घनश्याम शाह, सोशल मूवमेंट ऐंड द स्टेट, सेज प्रकाशन, दिल्ली, 2002

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. अंजन मुखर्जी, एन इंट्रोडक्शन टु जनरल इक्विलिप्रियम एनालिसिस, वालरेसियान ऐंड नान–वालरेसियान इक्विलिब्रिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, अगस्त/सितम्बर, 2002

2. अरूण कुमार, द ब्लैक इकोनामी इन इण्डिया, पेंगुइन इण्डिया, नई दिल्ली, संशोधित द्वितीय संस्करण, अगस्त 2002

3. सी.पी. चन्द्रशेखर और जयती घोष, वर्क ऐंड वैलफेयर इन द ऐज आफ फाइनेन्स, मुत्तुकादु आलेख 1, तूलिका प्रकाशक, दिल्ली, 2002

4. पी. पटनायक, द रिट्रिट टु अनफ्रीडम : एसेज आन द इमर्जिंग वर्ल्ड आर्डर, तूलिका, दिल्ली, 2003

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. शांता कृष्णन, सोसिओ इकोनोमिक, टेक्नो–आक्युपेशनल प्रोफाइल, एज्यूकेशनल ऐंड डिवलपमेंटल नीड्स ऐंड इनटाइटलमेंट्स आफ द नोमेडिक आर्टिजन कम्यूनिटी आफ गाडिया लोहार

2. शांता कृष्णन, ट्रेडिशनल इक्सपिरिअन्सिस आफ मास एज्यूकेशन इन इण्डिया

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. वी.वी. कृष्णा और उषा कृष्णा, 'साउथ एशिया, यूनेस्को साइंस रिपोर्ट, पेरिस, 2002

2. के.जे. जोसेफ, ग्रोथ आफ आई.सी.टी. एण्ड आई.सी.टी. इन डिवलपमेंट : इण्डियन इक्सपिरिअन्स पब्लिस्ड ऐज यू.एन.यू./वाइडर डिस्कशन पेपर नं. 2002/78, अगस्त 2002

3. के.जे. जोसेफ, फ्राम द फ्राइंग पैन इनटु द फायर ? एन एनालिसिस आफ कार्मिशयल एग्रीकल्चर इन केरला अंडर डब्ल्यू.टी.ओ., यू.एन.यू./वाइडर हेलसिंकी द्वारा प्रकाशित भाग

4. के.जे. जोसफ, 'इनोवेशन अन्डर इक्सपोर्ट ओरिएन्टेशन : द केस आफ इण्डिया'स आई.सी.टी. सेक्टर : (अशोक पार्थासारथी के साथ संयुक्त रूप से) (सं.) इ. श्रीधरण और पी. एन्थनी, डी. कोरट लन्दन : पालग्रेव मैकमिलन इण्डिया इन द ग्लोबल साफ्टवेयर इंडस्ट्री : इनोवेशन फर्म स्ट्रेटजीस ऐंड डिवलपमेंट, 2003

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. बलवीर अरोड़ा, रिकोग्निशन ऐंड टालरेन्स आफ डाइवर्सिटी इन इण्डिया फेडरलिज्म (सं.) के.जे. महाले, टालरेन्स : गोल्डन पाथ टु पीसफुल को–इक्जिस्टेंस, अध्याय–8, पृ. 95–105, बुक्स इण्डिया इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2002

2. बलवीर अरोड़ा, द इण्डियन पार्लियामेंट ऐंड डेमोक्रेसी, (सं.) अजय के. मेहरा और जी.डब्ल्यू. क्वेक, द इण्डियन पार्लियामेंट : ए कम्पैरेटिव पर्सपेक्टिव, अध्याय–2, पृ. 14–41, कोणार्क प्रकाशक, नई दिल्ली, 2003

3. बलवीर अरोड़ा, फेडरलिज्म आफ इण्डिया'स पार्टी सिस्टम, (सं.) अजय के. मेहरा, डी.डी. खन्ना और जी.डब्ल्यू. क्वेक, पालिटिकल पार्टी ऐंड पार्टी सिस्टम्स, अध्याय–3, पृ. 83–99, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली

4. बलवीर अरोड़ा, स्टेट सिविल सोसायटी ऐंड द वालन्टेरिअट इंस्टीट्यूशंस डायमेंशंस ऐंड डायनेमिक्स, (सं) अजय के. मेहरा, अनिल के. सिंह और जी.डब्ल्यू. क्वेक, सोसायटी, पालिटिक्स ऐंड द वालन्ट्री सेक्टर, वालंट्री ऐक्शन नेटवर्क इण्डिया, नई दिल्ली, अध्याय–3, पृ. 33–52, 2003

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. जी.के. चडढा, "डब्ल्यू.टी.ओ. ऐंड द इंप्लायमेंट फार रूरल हाउसहोल्ड्स : चैलेंजिस फ्राम विदिन ऐंड विदाउट", आई.ए.एम.आर. (सं.) इकोनोमिक रिफार्म्स ऐंड इंप्लायमेंट, कंसेप्ट पब्लिशिंग कं. नई दिल्ली, 2002

2. सतीश कुमार, "द इवोल्युशन आफ स्पेशल आर्डरिंग इन कलोनिअल मद्रास", (सं.) अलिशन ब्लन्ट और चेरिल मैक इवान, पोस्ट कलोनिअल जिओग्राफीज लन्दन कंटिनम प्रेस, 2002

3. सतीश कुमार, "H acia una education humanistca por" (सं.) ए. सालाजर पुसी, "La Creacion De Valor EN LAS IDEAS DE TSUNESABUR (MAKIGICHI, filosofoy educador japones, Carakas : Universidad Central De Venezuela Ediciones De La Biblioteca)", पुर्तगीज, पृ. 34–45, 2002

4. अमिताभ कुण्डु, "पावर्टी ऐंड वल्नरेबिलिटी इन ए ग्लोबलाइजिंग मेट्रोपोलिस : अहमदाबाद", मानिक प्रकाशक, नई दिल्ली, 2002

5. अमिताभ कुण्डु, "इंडस्ट्रियल ग्रोथ इन स्माल ऐंड मिडियम टाउन्स ऐंड देअर वर्टिकल इंटीग्रेशन : द केस आफ गोविन्दगढ़, पंजाब, इण्डिया", (एस. भाटिया के साथ) परिचर्चा आलेख संख्या 58, यूनेस्को, पेरिस, 2002

6. असलम महमूद, "माइग्रेशन एज्यूकेशन इन इण्डिया इन इनसाइक्लोपीडिया आन एज्यूकेशन", राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भारत सरकार, 2002

7. असलम महमूद, "इंटरनल माइग्रेशन इन इंटीग्रेटिंग माइग्रेशन एज्यूकेशन इनटु स्कूल करिकुलम", राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. और यूनेस्को, बैंकाक, अनुलिपि, 2002

8. असलम महमूद, "बेसिक कंसेप्ट्स, काजिस ऐंड कांसिक्वेंसिस आफ माइग्रेशन इन इंटीग्रेटिंग माइग्रेशन एज्यूकेशन इनटु सोशल साइंसिस", करिकुलम ऐट सेकण्ड्री स्टेज. शिक्षकों के लिए सहायक सामग्री, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद और यूनेस्को, अनुलिपि, 2002

9. सुदेश नांगिया, "इम्पावरमेंट आफ वुमन ऐंड मैटरनल ऐंड चाइल्ड हैल्थ इन नार्थ ईस्ट इण्डिया", (सह लेखक अनुराधा बैनर्जी) 2002

10. एस.के. थोरट, "कास्ट ऐंड इकोनोमिक ऐंड इनइक्वैलिटी इकोनामिक थीअरि ऐंड इविडेन्स", (सं.) घनश्याम शाह (संपादित) दलित आइडेंटिटी ऐंड पालिटिक्स (सह लेखक) आर.एस. देशपाण्डे

दर्शनशास्त्र केन्द्र

1. पी.बी. मेहता, "द आइडिया आफ कलेक्टिव रिस्पोंसिबिलिटी : सम फिलासोफिकल कंसिड्रेशंस", (सं.) एस. मोतीलाल, रिस्पोंसिबिलिटी ऐंड राइट्स, दिल्ली, 2003

2. पी.बी. मेहता, "नैपुल ऐंड द बर्डन्स आफ हिस्ट्री", (सं.) पी. पवार, क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स आफ नैपुल, दिल्ली, 2003

3. पी.बी. मेहता, "डेमोक्रेसी ऐंड सोशल कोआपरेशन", (सं.) टी.सी. किम द आइडिया आफ पब्लिक हैपीनेस, क्योटो, 2003

4. पी.बी. मेहता, "द डायलेमास आफ मुस्लिम पालिटिक्स", (सं.) के. चैतन्य, फासिज्म इन इण्डिया, दिल्ली, 2003

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. एम.एन. पाणिनी, "वेस्टरनाइजेशन–साउथ एशिया", इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया आफ माडर्न एशिया, न्यूयार्क, 2003

2. एम.एन. पाणिनी, "संस्कृताइजेशन, इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया आफ माडर्न एशिया", न्यूयार्क, स्क्रब्नर्स, 2003

3. दीपांकर गुप्ता, "सोशल स्ट्रेटिफिकेशन", आक्सफोर्ड कम्पेनियन वाल्यूम आफ सोशल साइंसिस, (सं.) वीना दास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2003

4. ऐहसानुल हक, "एज्यूकेशन, रिलीजन ऐंड ग्लोबल आर्डर", माइनार्टी ऐंड ह्युमन राइट्स इन बंगलादेश, (सं) सुधीर कुमार सिंह, आथर्स प्रेस, नई दिल्ली, फरवरी, 2003

5. आनन्द कुमार, "समाजविज्ञान और हिन्दी, वैश्वीकरण के दौर में (हिन्दी)", डा. ओ.पी. काजिनवाल, नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली, 2002

6. मैत्रेयी चौधरी, "रिप्रोड्यूस्ड जेंडर इन द मेकिंग आफ द इण्डियन नेशन स्टेट", (सं.) शर्मिला रीज, द सोसिआलाजी आफ जेंडर द चैलेंज आफ फेमिनिस्ट सोसिआलोजिकल नालेज, सेज, 2003

7. मैत्रेयी चौधरी, "वुमन इन इण्डियन सोसायटी", (सं.) योगेन्द्र सिंह और मंजू भट्ट, ए बुक आफ रीडिंग इन सोसिआलोजी, एन.सी.ई.आर.टी., 2003

8. रेणुका सिंह, "अवर फादर : इन द वर्नाकुलर, नवयुग टकसाल", गुजलार संधु, अमृतसर लोक साहित्य प्रकाशन, 2002

9. सुरेन्द्र एस. जोधका, "एग्रेरियन स्ट्रक्चर्स ऐंड देअर ट्रांसफार्मेशंस", (सं.) वीणा दास, आक्सफोर्ड इण्डिया कम्पेनियन टु सोसिआलोजी ऐंड सोशल एन्थ्रोपोलाजी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2003

10. सुरेन्द्र एस. जोधका, "मेकिंग आफ द कल्चरल डिफ्रेंस, आइडेंटिटी फार्मेशन अमंग द सिख्स इन पंजाब", मैपिंग मल्टिकल्चरलिज्म, (सं.) कुशल देव, रावत, नई दिल्ली, 2002

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. दीपक कुमार, "टेक्नो–साइंटिफिक नालेज इन ऐन 'एज आफ डिवलाइन' : ए स्टडी आफ ऐट्टींथ सेंचुरी इण्डिया", (सं.) राय पोर्टर, साइंस इन ऐट्टींथ सेंचुरी, सी.यू.पी. केम्ब्रिज, 2003

2. गीता बी. नाम्बिसन, "नीड्स वर्सस राइट्स ? चाइल्ड लेबर, सोशल एक्सक्लुजन ऐंड द चैलेंज आफ यूनिवर्सेलाजिंग प्राइमरी एज्यूकेशन", चाइल्ड लेबर ऐंड द राइट टु एज्यूकेशन इन साउथ एशिया : नीड्स वर्सस राइट्स ? (सं.) एन. कबीर, जी. नाम्बिसन और आर. सुब्रामणियन, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 15–44, 2003

3. गीता बी. नाम्बिसन, "सोशल एक्सक्लुजन, चिल्ड्रन'स वर्क ऐंड एज्यूकेशन : ए व्यू फ्राम द मार्जिन्स", (सं.) कबीर, जी. नाम्बिसन और आर. सुब्रामणियन, चाइल्ड लेबर ऐंड द राइट टु एज्यूकेशन इन साउथ एशिया ? नीड्स वर्सस राइट्स, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 109–142, 2003

4. ध्रुव रैना, "टुवर्ड्स ए ग्लोबल हिस्ट्री आफ साइंस", (सं.) अभय कुमार, प्रसंजीत बोरा, रामिक लाहिरी, बिहाइन्ड द ब्लैकबोर्ड : कंटेम्पोरॅरि पर्सपेक्टिव्स आन इण्डियन एज्यूकेशन, नई दिल्ली, 2002

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. भट्टाचार्य, "टैगोर ऐंड कबीर" इन रवीन्द्रनाथ टैगोर, वन हन्ड्रेड पोइम्स आफ कबीर, रिप्रिन्ट आफ 1914 ऐडिशन, डेक्कन क्रानिकल्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 1–29, 2003

2. एस. भट्टाचार्य, "इंट्रोडक्शन" (सं.) एन.एन. वोहरा और एस. भट्टाचार्य, लुकिंग बैक : इण्डिया इन द टवेन्टीथ सेंचुरी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ. 13–42, 2002

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. घनश्याम शाह, "एज्यूकेशन ऐंड बैकवर्ड कास्ट्स इन गुजरात", एज्यूकेशन ऐंड डिस्प्रिविलेज्ड, (सं.) एस. भट्टाचार्य, ओरिएन्ट लांगमैन, दिल्ली, 2002

2. घनश्याम शाह, "कनवर्जन, रिकनवर्जन ऐंड द स्टेट", कम्पेटिंग नेशनलिज्म इन साउथ एशिया (सं.) पाल ब्रास और अचिन विनायक, ओरिएन्ट लांगमैन, दिल्ली, 2002

3. मोहन राव, "प्युनिटिव पाप्यूलेशन पालिसीज", द इण्डियन इकोनोमी 2001–2001 : एन अल्टरनेट सर्वे, दिल्ली साइंस फोरम, 2002

4. इमराना कादिर, "वुमन हैल्थ पालिसीज ऐंड प्रोग्राम्स : ए क्रिटिकल रिव्यू" (सं.) रेणु खन्ना, मीरा शिवा और सरला गोपालन, टुवर्ड्स कंप्रिहेंसिव वुमन'स हैल्थ प्रोग्राम्स ऐंड पालिसी, सहज फार वुमन ऐंड हैल्थ, नई दिल्ली, पृ. 231–60, 2002

5. इमराना कादिर, "ऐथिक्स ऐंड मेडिकल केयर इन ए ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड : सम रिफ्लेक्शंस", (सं.) कस्तूरी सेन, रिस्ट्रक्चरिंग हैल्थ सर्विसिस : चेंजिंग कंटेक्स्ट्स ऐंड कम्पैरटिव पर्सपेक्टिव्स, जेड, लन्दन, पृ. 53–64, 2003

6. इमराना कादिर, "प्राइमरी हैल्थ केयर : फ्राम एडजेस्टमेंट टु रिफार्म्स", (सं.) के. सीता प्रभु और आर. सुदर्शन, रिफार्मिंग इण्डिया'स सोशल सैक्टर : पावर्टी, न्यूट्रिशन हैल्थ ऐंड जेंडर, सोशल साइंस प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 221–31

7. रामा वी. बारू, "हैल्थ सैक्टर रिफार्म : द इण्डियन इक्सपिरिअन्स", (सं.) ए. टवेडल, हैल्थ केयर रिफार्म इफर्ट्स अराउण्ड द वर्ल्ड, ऐब .. हाउस, ग्रीनवुड प्रेस, 2002

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. अरुण कुमार, "फैक्टर्स अण्डरलाइंग द इकोनामिक स्लोडाउन : ग्रोविंग डिस्पेर्टीज, ग्लोबलाइजेशन ऐंड द ब्लैक इकोनामी" द अल्टरनेटिव इकोनोमिक सर्वे 2001–02, रेनबो पब्लिशर्स लिमिटेड, लोक कल्याण और आजादी बचाओ आन्दोलन, नई दिल्ली, पृ. 27–38, 2002

2. सी.पी. चन्द्रशेखर और जयती घोष, "न्यू अप्रोचिस टु हार्नेसिंग टेक्नोलाजिकल प्रोग्रेस फार चिल्ड्रन" (सह लेखक जयती घोष) (सं.) जी. ऐन्ड्रेआ कोर्निआ, हार्नेसिंग ग्लोबलाइजेशन फार चिल्ड्रन, इन्नोसेंटी सेंटर, फ्लोरेन्स, 2002

3. जयती घोष और सी.पी. चन्द्रशेखर, "सर्विसिस ऐंड द न्यू कैपिटेलिज्म", (सं.) वर्क ऐंड वेलफेयर इन द ऐज आफ फाइनेन्स, तुलिका प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

4. जयती घोष "द केस आफ मेडिकल नालेज", (सं.) रोबर्ट बीगलेहोल और रिचार्ड स्मिथ, ग्लोबल पब्लिक गुड्स फार हैल्थ, अकादमी प्रकाशक, लन्दन, 2003

5. जयती घोष "एग्रीकल्चर इन इण्डिया" विषयक अध्याय, साउथ एशियन ह्युमन डिवलपमेंट रिपोर्ट, महबूब उल हक सेंटर फार ह्युमन डिवलपमेंट, पाकिस्तान, 2002

6. जयती घोष "द इकोनामिक्स आफ साउथ एशिया", विषयक अध्याय, रीयल वर्ल्ड इकोनामिक आउटलुक, न्यू इकोनामिक्स सोसायटी, लन्दन, 2003

7. सतीश के. जैन, "ग्लोबलाइजेशन, लीगल इंस्टीट्यूशंस ऐंड वैल्यूज", इकोनामिक इंस्टीट्यूशंस इन इण्डिया, (सं.) पार्थासारथी बैनर्जी और फ्रेंक–जर्गन रिचर, पालग्रेव मैकमिलन, लन्दन, 2003

8. अरिजीत सिंह, "ए सिम्पल थीअरी आफ द इक्सटेंडिड फेमिली सिस्टम ऐंड मार्किट वैरियर्स टु द पूअर", (सं) एस. बोलस और एस. डर्लोफ, पावर्टी ट्रेप्स, (सह लेखक कार्लाहोफ के साथ)

9. पी. पटनायक, "सामराज्यवाद ओ उन्नयानेर बिकिरो, विश्वांय : भावना" दुर्भावाना, भाग–1 (ए कलेक्शन आफ एसेज आन ग्लोबलाइजेशन इन बंगला) सम्पादक : सम्पादकीय मण्डल के अध्यक्ष ए.के. बागची और आई. मुखर्जी, डी. दत्तागुप्ता और एस. भट्टाचार्य, नेशनल बुक एजेन्सी, कोलकाता, 2002

10. पी. पटनायक, "बाजार, नैतिकता इबोंग गणमाध्यम, विश्वांय : भावना" दुर्भावना, भाग–2, अन्य सभी विवरण ऊपर दिए गए हैं।

11. पी. पटनायक, "आन फाइनेन्स ऐंड फासिज्म" (सं.) के.एन. पाणिक्कर और एस. मुरलीधरण, कम्यूनिलिज्म, सिविल सोसाइटी ऐंड द स्टेट – रिफ्लेक्शंस आन ए डिकेड आफ टर्व्युलेन्स, सहमत, दिल्ली, 2002

12. पी. पटनायक, "इण्डिया : डिरिजिस्म, स्ट्रक्चरल एडजेस्टमेंट ऐंड द रेडिकल अल्टरनेटिव" (सी.पी. चन्द्रशेखर के साथ) प्रेमा–चन्द्रा अथुकोराला, सं. द इकोनोमिक डिवलपमेंट आफ साउथ एशिया, भाग–1, चेलतेनहम : ऐडवार्ड ऐल्गर, 2002

13. पी. पटनायक, "मनी फाइनेन्स ऐंड द कंट्राडिक्शंस आफ कैपिटेलिज्म" (सं.) जे. घोश और सी.पी. चन्द्रशेखर, वर्क ऐंड वेल बीइंग इन द ऐज आफ फाइनेन्स, तुलिका, दिल्ली, 2003

14. उत्सा पटनायक, "खादयो निरापता ओ विश्वांए", विश्वांए : भावना–दुर्भावना, भाग–2, (ए कलेक्शन आफ एसेज आन ग्लोबलाइजेशन इन बंगला) (सं.) सम्पादकीय मण्डल के अध्यक्ष, ए.के. बागची और आई. मुखर्जी, डी. दत्तागुप्ता और एस. भट्टाचार्य, नेशनल बुक एजेन्सी, कोलकाता, 2002

15. उत्सा पटनायक, "प्रोग्रेस नेशनलिज्म कंफ्रन्ट्स फासिस्ट चौविनिज्म", (सं.) के.एन. पाणिक्कर और एस. मुरलीधरण, कम्यूनिलिज्म, सिविल सोसायटी ऐंड द स्टेट रिफ्लेक्शंस आन ए डिकेड आफ टर्ब्युलेन्स, सहमत, दिल्ली, 2002

16. उत्सा पटनायक, "आन द इनवर्स रिलेशन बिटवीन प्राइमरी एक्सपोर्ट ऐंड फूड ऐबजारप्शन इन डिवलपिंग कंट्रीज अंडर लिबरलाइज्ड ट्रेड रिजिम्स", (सं.) जे. घोष और सी.पी. चन्द्रशेखर, वर्क ऐंड वेल बीइंग इन द ऐज आफ फाइनेन्स, तुलिका, दिल्ली, 2003

प्रौढ़ शिक्षा ग्रुप

1. एस.वाई शाह, "कंटीन्युइंग एज्यूकेशन फार वुमन इन अर्बन स्लम्स", (सं.) मधु सिंह, इंस्टीट्यूशनेलाइजिंग लाइफलांग लर्निंग, यूनेस्को इंस्टीट्यूट फार एज्यूकेशन, हम्बर्ग, 2002

2. एस.वाई शाह, "इक्सप्लोरिंग द पोटेंशल आफ ओपन डिस्टेन्स लर्निंग फार द ट्रेनिंग आफ ग्रासरूट्स लेवल वर्कर्स", (सं.) विरोनिका मकेई और मधु सिंह, ओपन डिस्टेन्स एज्यूकेशन, यूनेस्को इंस्टीट्यूट फार एज्यूकेशन, हम्बर्ग, 2003

आलेख

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. ए. पार्थासारथी, "टैक्लिंग द ब्रेन ड्रेन फ्राम इण्डिया'स इनफार्मेशन ऐंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलाजी सेक्टर : द नीड फार ए न्यू इंडस्ट्रियल ऐंड साइंस ऐंड टेक्नोलाजी स्ट्रेटजी", साइंस ऐंड पब्लिक पालिसी, लन्दन, भाग–29, अंक–2, 2002

2. ए. पार्थासारथी, "प्राइआर्टीज इन साइंस ऐंड टेक्नोलाजी फार डिवलपमेंट : नीड फार मेजर रिस्ट्रक्चरिंग", करंट साइंस, इण्डियन अकादमी आफ साइंस, भाग–82, अंक–3, 25 मई, 2002

3. ए. पार्थासारथी, "लिमिट्स टु इनोवेशन विद स्ट्रांग एक्सपोर्ट ओरिएन्टेशन : द केस आफ इण्डिया'स इनफार्मेशन ऐंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलाजीस सेक्टर", साइंस टेक्नालोजी ऐंड सोसाइटी, भाग–7, अंक–1, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली, जनवरी–जून 2002

4. ए. पार्थासारथी, "इण्डिया : ए चैम्पियन आफ न्यू टेक्नोलाजीस", नेचर, लन्दन, भाग–422, 6 मार्च 2003

अन्य प्रकाशन

साइंस, टेक्नोलाजी ऐंड सोसायटी : विषयक विकासशील देशों को समर्पित अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका, सेज प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

केन्द्र के शिक्षक, इंस्टीट्यूट फार रिसर्च ऐंड डिवलपमेंट कोआपरेशन (आई.आर.डी.), पेरिस और सेज पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से एस.टी.एस. अध्ययन के गहन क्षेत्र में एक द्विवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन में शामिल हैं। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, "कंटेक्स्ट आफ इनोवेशन इन इनफार्मेशन ऐंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलाजीस" ऐंड "इनोवेशन कंटेक्स्ट ऐंड स्ट्रेटी आफ साइंटिफिक रिसर्च इन लैटिन अमेरिका" विषयक दो विशेष अंक प्रकाशित हुए। इस एस.टी.एस. पत्रिका का एक लाभ यह है कि विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र के प्रलेखन विभाग को एस.टी.एस. पत्रिका के द्वारा विनिमय के आधार पर 5 अन्तर्राष्ट्रीय कोर पत्रिकाएं और 2 भारतीय पत्रिकाएं प्राप्त हुई। एम.फिल. छात्रों की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक समीक्षा और टर्म पेपर एस.टी.एस. की पत्रिका में प्रकाशित हुए।

राजनीतिक अध्ययन केंद्र

1. जोया हसन, "द पालिटिक्स आफ प्रिजेन्स ऐंड लेजिस्टेटिव रिजर्वेशंस फार वुमन'स", (सं.) जोया हसन, इ. श्रीधरन और आर. सुदर्शन, इण्डिया'स लिविंग कांस्टीट्यूशन : आइडियाज, प्रेक्टिसीज ऐंड कंट्रोवर्सिज, परमानेन्ट ब्लैक, नई दिल्ली, 2002
2. जोया हसन, "चेंजिंग पालिटिकल ओरिएन्टेशंस आफ द मिडल क्लासिस इन इण्डिया", (सं.) इम्तियाज अहमद और हेलमट रिफील्ड, मिडिल क्लास वेल्यूज इन इण्डिया ऐंड वेस्टर्न यूरोप, सोशल साइंस प्रेस, नई दिल्ली, 2003
3. जोया हसन, "हिन्दुत्व ऐंड द मिडिल क्लासिस इन इण्डिया", (सं.) के.एन. पणिक्कर और एस. मुरलीधरन, हिन्दुत्व पालिटिक्स, सहमत, नई दिल्ली
4. सुधा पई, "हंग असेम्बली अगेन : इलैक्टोरल आइडेंटिटी पालिटिक्स इन उत्तर प्रदेश", इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल वीकली, 6 से 12 अप्रैल, 2002
5. सुधा पई, "डेप्रिवेशन ऐंड डिवलपमेंट इन यू.पी. : इकोनामिक एजेन्डा फार बी.एस.पी.", मैन ऐंड डिवलपमेंट, मार्च 2003
6. गुरप्रीत महाजन, "सेक्युलरिज्म", (सं.) वीना दास, इनसाइक्लोपीडिया आफ सोसियोलाजी ऐंड एन्थ्रोपालाजी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2003
7. गुरप्रीत महाजन, "वालन्ट्री सेक्शन ऐंड सिविल सोसाइटी", वन इण्डिया वन पीपल, बाम्बे, 2002
8. गुरप्रीत महाजन, "आन मल्टिकल्चरल डेमोक्रेसी", न्यू होप 3/2, मार्च-अप्रैल 2002
9. गुरप्रीत महाजन, "द ऐनलाइटनमेंट", एम.ए. पाठ्यक्रम इतिहास विभाग, इग्नू।
10. गुरप्रीत महाजन, "क्रिटिक्स आफ एनलाइटमेंट", एम.ए. पाठ्यक्रम, इतिहास विभाग, इग्नू।
11. गुरप्रीत महाजन, "काजेशन इन हिस्ट्री", एम.ए. पाठ्यक्रम, इतिहास विभाग, इग्नू।
12. गुरप्रीत महाजन, "मल्टिकल्चरलिज्म", पालिटिकल थीअरि में एम.ए. पाठ्यक्रम, राजनीति विज्ञान विभाग, इग्नू, ब्लाक -6, यूनिट–24
13. कुलदीप माथुर, "गुड गवर्नेंस : स्टेट ऐंड सिविल सोसाइटी इन इण्डिया मैन ऐंड डिवलपमेंट", भाग–IV, अंक–4, पृ. 73–84, 2002

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा बैनर्जी (सह लेखक प्रो. सुदेश नांगिया) "इमपावरमेंट आफ वुमन, मैटेरनल ऐंड चाइल्ड हैल्थ इन इण्डिया", (एन एफ एच एस पर आधारित) आई.ए.एस.पी. के 25वें वार्षिक सम्मेलन, मुम्बई में आलेख प्रस्तुत किया।
2. अनुराधा बैनर्जी "एप्लिकेशन आफ रिमोट सेंसिंग ऐंड जी आइ एस इन डेमोग्राफिक ऐंड सोसियोइकोनामिक एनालिसिस इन देहरादून सिटी", कनवर्जेन्स आफ इमेजरी, इनफार्मेशन ऐंड मैप्स अहमदाबाद विषयक आई.एन.सी.ए. की 22वीं कांग्रेस में आलेख प्रस्तुत किया, 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2002 तक।
3. बी.एस. बटोला, "ह्युमन राइट्स ऐंड नेशनलाइज्ड सिविलाइजेशन", ह्युमन राइट ऐंड इनसर्जेन्सी इन द नार्थ–ईस्ट इण्डिया, (सं.) आर.आर. धमाल और एस. भट्टाचार्य, शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 163–178, 2002

4. बी.एस. बटोला, "डिवलपमेंट डिस्कोर्सिस इन सोशल साइंस रिसर्च इन द नार्थ ईस्टर्न रीजन", डिवलपमेंट प्राइआर्टीज इन नार्थ–ईस्ट इण्डिया, (सं.) बी.जे. देव, कंसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ. 31–39, 2002

5. जी.के. चड्ढ़ा, "पोस्ट–रिफार्म सैटबैक्स इन रूरल इम्प्लायमेंट दैट नीड फर्दर स्क्रूटिनी", (पी.पी. साहू के साथ संयुक्त रूप से), इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल वीकली, रिव्यू आफ लेबर 37/21, 25–31 मई, 2002

6. जी.के. चड्ढ़ा, "रूरल नान–फार्म इम्प्लायमेंट इन इण्डिया : वाट डज रिसेंट इक्सपिरिअन्स टीच अस ?" इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनोमिक्स, 45/4, जुलाई–सितम्बर, 2002

7. जी.के. चड्ढ़ा, "इण्डिया'स आई.टी. प्रोफेशनल्स : सम व्यूज आन ब्रेन ड्रेन आर ब्रेन सरकुलेशन", एल.ओ. – जिनेवा, परिचर्चा आलेख, दिसम्बर, 2002

8. जी.के. चड्ढ़ा, "इण्डियन एग्रीकल्चर इन द न्यू मिलेनियम : ह्युमन रिस्पांस टु टेक्नोलाजी चैलेंजिस", इण्डियन सोसायटी आफ द एग्रीकल्चरल इकोनामिक्स के 62वें वार्षिक सम्मेलन में अध्यक्षीय व्याख्यान, 19 से 21 दिसम्बर, 2002

9. जी.के. चड्ढ़ा, "इण्डियन एग्रीकल्चर इन द न्यू मिलेनियम : ह्युमन रिस्पांस टु टेक्नोलाजी चैलेंजिस", इण्डियन जर्नल आफ एग्रीकल्चरल इकोनामिक्स, भाग–58, अंक–1, जनवरी–मार्च 2003

10. नारायण सी जेना, "मेजर ग्लोबल इश्यूज आफ एनवायरनमेंट", जर्नल आफ इण्डियन जिओग्राफिकल फाउन्डेशन, भाग 8–9, पृ. 103–107, कलकत्ता

11. नारायण सी जेना, "रूरल डिपाप्यूलेशन : ए कंस्ट्रेन्ट टु सस्टेनेबल डिवलपमेंट", भारत विद्या भाग–II, वर्दवान, 2003

12. पी.एम. कुलकर्णी, "अनमेट नीड फार कंट्रासेप्शन इन उत्तरांचल – इविडेंस फ्राम द एन.एफ.एच.एस.–2 ऐंड द आर.सी.एच. सर्वे", पाप्यूलेशन ऐंड रिप्रोडक्टिव ऐंड चाइल्ड हैल्थ इश्यूज इन उत्तरांचल, गवर्नमेंट आफ उत्तरांचल और फ्युचर्स इंटरनेशनल ग्रूप, देहरादून और नई दिल्ली, कार्यशाला की कार्यवाही, पृ. 68–75, 2002

13. पी.एम. कुलकर्णी, "रिव्यू आफ रिसर्च आन फर्टिलिटी इन तमिलनाडु" (एस. कृष्णामूर्ति और एन. अन्दीनारायण के साथ संयुक्त रूप से), डेमोग्राफी इण्डिया 31(1), पृ. 17–36, 2002

14. एम. सतीश कुमार, "अनिल अग्रवाल (1947–2002) फ्राम रिओ टु रिओ + 1 C AN एप्रिसिएशन", लोकल एनवायरनमेंट, भाग–7, अंक–3

15. एम. सतीश कुमार, "एज्यूकेशन, स्किल्स ऐंड द लेबर मार्किट इन ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड : ए केस आफ इण्डिया", इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनोमिक्स, भाग–45 (आर.के. शर्मा और एस. मेहर के साथ) पृ. 1129–47

16. अमिताभ कुण्डु, "टेन्यूर सिक्यूरिटी, हाउसिंग इनवेस्टमेंट ऐंड एनवायरनमेंट इम्प्रूवमेंट : द केस आफ दिल्ली ऐंड अहमदाबाद, इण्डिया", (सं.) जी. पाइने, लैण्ड राइट्स ऐंड इनोवेशन, आई.टी.डी.जी. प्रकाशक, लन्दन

17. अमिताभ कुण्डु, "डिकोटोमी आर कंटिनम : एनालिसिस आफ इम्पैक्ट आफ अर्बन सेंटर्स इन देअर पेरिफेरी", इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–37, अंक–14

18. अशोक माथुर, "नेशनल ऐंड रीजनल ग्रोथ परफार्मेंस इन द इण्डियन इकोनामी : ए सैक्टरल एनालिसिस", रिफार्म ऐंड इंप्लायमेंट, इंस्टीट्यूट आफ एप्लाइड मैनपावर रिसर्च, नई दिल्ली, 2002

20. अशोक माथुर, "टेक्नीकल स्किल्स, एज्यूकेशन ऐंड इकोनोमिक डिवलपमेंट इन इंडिया", (आर.पी. ममगैन के साथ) संयुक्त रूप से, इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनोमिक्स, भाग–45, अंक–4, अक्टूबर–दिसम्बर 2002

21. सुदेश नांगिया, "रीजनल डिस्पैरिटीज इन हैल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर ऐंड डिवलपमेंट इन श्रीलंका", (ए एन्टोनीरंजन के साथ संयुक्त), इण्डियन जिओग्राफिकल जर्नल, यूनिवर्सिटी आफ मद्रास, चैन्नई

22. सुदेश नांगिया, "अर्बन सेटलमेंट्स इन नार्थ गंगा प्लेन", (दीपा अहलुवालिया के साथ) इण्डियन जर्नल आफ रीजनल साइंस, रीजनल साइंस एसोसिएशन, कलकत्ता

23. सुदेश नांगिया, "इम्पावरमेंट आफ वुमन, मैटेरनल ऐंड चाइल्ड हैल्थ इन इण्डिया", (अनुराधा बैनर्जी के साथ) आई.ए.एस.पी., नई दिल्ली द्वारा आयोजित 25वें सम्मेलन की कार्यवाही

24. सरस्वती राजू, "वी.आर. डिफ्रेंट, बट कैन वी टॉक ?" जेंडर प्लेस ऐंड कल्चर, भाग–9, अंक–2, पृ. 173–77

25. सरस्वती राजू, "वुमन, एन जी ओ'स ऐंड द कंट्राडिक्शंस आफ इम्पावरमेंट ऐंड डिस्इम्पावरमेंट : ए कनवर्शेशन", एन्टीपोड 35(1), 2003

26. आर.के. शर्मा, "एज्यूकेशन स्किल्स ऐंड द लेबर मार्किट आई.एन.ए. – ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड : ए केस आफ इण्डिया", (एम. सतीश कुमार और सुरेन्दर मेहर के साथ), इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनोमिक्स, भाग–45, अंक–4, 2002

27. अतुल सूद, "डिवलपमेंट ऐंड ऐड : बिल्डिंग आन मोनटेरी", बैकग्राउन्ड पेपर फार द जी 20, मीटिंग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, नवम्बर, 2002

28. अतुल सूद, "बजट 2002–03", अल्टरनेटिव इकोनोमिक सर्वे : 2002–03, रेनबो प्रकाशक, दिल्ली, 2002

29. एम.डी. विमूरी, "सेंटर – स्टेट ट्रांसफर आफ रिसोर्सिस : द पाप्यूलेशन फैक्टर", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, 37 (33), 3406–9, (टी. रवि कुमार के साथ), 17 अगस्त, 2002

दर्शनशास्त्र केन्द्र

1. पी.बी. मेहता, "द ऐथिक्स आफ ह्यूमैनिटेरियम इंटरवेंशन", नोमोस, मार्च 2003
2. पी.बी. मेहता, "फिलन्थ्रोपी : फिलोसाफिकल पर्सपेक्टिव्स", आलेख, सेंटर फार हिस्ट्री ऐंड इकोनोमिक्स, किंग्स कालेज, केम्ब्रिज
3. पी.बी. मेहता, "पैशन ऐंड कंस्ट्रेन्ट", संगोष्ठी, जनवरी–2003
4. पी.बी. मेहता, "इज इलैक्टोरल ऐंड इंस्टीट्यूशनल रिफार्म द आन्सर ?", संगोष्ठी, जुलाई 2002

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. योगेन्द्र सिंह, (मानद प्रोफेसर), "ग्लोबलाइजेशन : आइडोयोलाजी, स्ट्रक्चर ऐंड प्रोसेसिस", (सं.) राधेन्द्र प्रताप सिंह, एप्लाइड फिलास्फी, ओम प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
2. योगेन्द्र सिंह, (मानद प्रोफेसर), "चैलेंजिस आफ ग्लोबलाइजेशन टु कल्चरल आइडेंटिटी ऐंड इकोनोमिक डिवलपमेंट", पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, जनवरी 2003
3. योगेन्द्र सिंह, (मानद प्रोफेसर), "फिलास्फी ऐंड सोसिओलाजिकल केटेगरीज ऐंड डिस्कोर्सिस इन इण्डियन सोसिओलाजी", फिलास्फी, साइंस ऐंड कल्चर, आई.सी.पी.आर., नई दिल्ली, 2003
4. दीपांकर गुप्ता, "कश्मीरी मुस्लिम : काट इन द मिडिल", रिलीजन इन द न्यूज कनेक्शन, यू.एस.ए. भाग–5, 2002
5. दीपांकर गुप्ता, "लिमिट्स आफ टालरैन्स : प्रासपेक्ट्स आफ सेक्युलेरिज्म इन इण्डिया आफ्टर गुजरात", इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–37/46, 2002
6. दीपांकर गुप्ता, "एथिक्स ऐंड द अदर", मैनेजमेंट रिव्यू, भाग 14/4, 2002
7. तिपलुत नोंगब्री, "डेमोक्रेसी, जेंडर ऐंड ट्राइब्स : अप्रेजल आफ कांस्टिट्यूशनल पालिसी", इण्डियन एन्थ्रोपोलाजिस्ट, जनवरी 2003
8. तिपलुत नोंगब्री, "पावर्टी ऐंड इंडिजिनस पीपल्स विद स्पेशल रिफ्रेंस टु इण्डिया", इंडिजिनस अफेयर्स, जनवरी 2003
9. तिपलुत नोंगब्री, "इम्पावरिंग वुमन थ्रू सेल्फ हैल्प ग्रुप्स : ए केस स्टडी आफ थ्री नागा विलेजस इन मणिपुर", स्टडीज इन जेंडर मेनस्ट्रीमिंग इन आई एफ ए डी प्रोजेक्ट्स इन एशिया, भाग–1, आई एफ डी ए. एशिया डिविजन, रोम, 2002
10. तिपलुत नोंगब्री, "स्टडीज इन जेंडर मेनस्ट्रीमिंग", आई.एफ ए.डी, प्रोजेक्ट्स इन एशिया, भाग–1, आई एफ ए डी, एशिया डिविजन, रोम, 2002
11. मैत्रेयी चौधरी, "मीडिया, सिविल सोसायटी ऐंड द रिसेंट गुजरात कार्नेज इन इण्डिया", वुमन इन एक्शन, अंक–1, 2002
12. मैत्रेयी चौधरी, "लर्निंग थ्रू टीचिंग सोसिओलाजी आफ जेंडर", इण्डियन जर्नल आफ जेंडर स्टडीज 2002
13. सुसन विश्वनाथन, "एस.के. रुद्र, सी.एफ. एन्ड्रूस और एम.के. गांधी", इ.पी.डब्ल्यू., भाग–38, अंक 34, 24 अगस्त, 2002
14. सुसन विश्वनाथन, "कास्ट सर्गासो सी", संगोष्ठी मार्च 2003
15. सुरिन्दर एम. जोधका, "कास्ट, कास्ट ऐंड कम्यूनल पालिटिक्स", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग 38(3) पृ. 174, 18 जनवरी, 2003
16. सुरिन्दर एम. जोधका, "नेशन ऐंड विलेज : इमेज्स आफ रूरल इण्डिया इन गांधी, नेहरू ऐंड अम्बेडकर", इकोनामिक ऐड पालिटिकल वीकली, भाग 37(32), पृ. 334–54, 10 अगस्त 2002

17. सुरिन्दर एम. जोधका, "कास्ट ऐंड अनटचेबिलिटी इन रूरल पंजाब", इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग 37(19), पृ. 181323, 11 मई, 2002

18. विवेक कुमार, "अम्बेडकर'स विजन आफ सोशल जस्टिस : क्वेस्ट फार यूनिफिकेशन, इम्पावरमेंट ऐंड डिफ्रेसिएशन", जागृति, जर्नल आफ हिस्ट्री, कल्चर, आर्ट ऐंड सोशल जस्टिस, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र.

19. विवेक कुमार, "सोसिओ–पालिटिकल मोबिलाइजेशन आफ दलित्स इन उत्तर प्रदेश", जर्नल आफ कंटेम्पोरेरि सोशल वर्क, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भाग–19, अप्रैल 2002

20. विवेक कुमार, "द पावर आफ स्ट्रेटजी ऐंड द दलित", दलित मीडिया नेटवर्क, चैन्नई, तमिलनाडु, मई–जून 2002

21. विवेक कुमार, "दलित साहित्य का समाज शास्त्र, सोसिओलाजी आफ दलित लिट्रेचर", उत्तर प्रदेश सूचना विभाग, सितम्बर–अक्टूबर 2002

22. विवेक कुमार, "नव दलित आन्दोलन की आवश्यकता : नीड आफ निओ दलित मूवमेंट", डा. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू, (म.प्र.)

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. करूणा चानना, "वुमन ऐंड ह्यूमन राइट्स", द एशियन जर्नल आफ वुमन स्टडीज, सियोल, कोरिया, भाग–8, अंक–2, पृ. 104–14, सितम्बर, 2002

2. करूणा चानना, "व्यू फ्राम द मार्जिन्स : सोसिओलाजी आफ एज्यूकेशन ऐंड जेंडर", द इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–37, अंक–36, पृ. 3717–21, 7–13 सितम्बर, 2002

3. बिनोद खादरिया, "सिचुएटिंग द यूनिवर्स आफ डिस्कोर्स इन ए ग्लोबल कंटेक्स्ट : इश्यूज रिलेटिंग टु द स्टेटस ऐंड डिवलपमेंट आफ उर्दू लैंग्यूवेज इन ऐंड फार स्कूल एज्यूकेशन इन इण्डिया", द एनुअल आफ उर्दू स्टडीज, यूनिवर्सिटी आफ विस्कोनसिन, मैडिसन, पृ. 150–154, अंक–2002

4. बिनोद खादरिया, "पैराडाक्सिस ऐंड पिटफाल्स इन ग्लोबलाइजेशन आफ एज्यूकेशन अंडर द डब्ल्यू.टी.ओ. रिजीम आफ ट्रेड इन एज्यूकेशनल सर्विसिस", नोराग न्यूज, अंक–31, 2002–03

5. मिनाती पंडा, रिव्यू आफ प्रमा चारके, "टीचिंग ऐंड लर्निंग : द कल्चर ऐंड पैडेगोगी", द बुक रिव्यू भाग–16, अंक–3, (सेज, नई दिल्ली, 2001) 2002

6. मिनाती पंडा, "सोशल आइडेंटिटी ऐंड पर्सेप्शंस आफ इक्विटी अमंग कोंध ऐंड ओरेआन कालेज स्टडीज आफ उड़ीसा", इण्डियन जर्नल आफ बिहेवियर, 24, 17–24, 2002

7. एस. श्रीनिवास राव, "दलित्स इन एज्यूकेशन ऐंड वर्कफोर्स", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–37, अंक–29, पृ. 2998–3000, 20 से 26 जुलाई 2002

8. एस. श्रीनिवास राव, "डाइवर्सिटी डिस्क्रिमिनेशन ऐंड डिसएडवांटेज", बियांड द मार्जिन्स, ए क्वाटर्ली न्यूजलैटर आन डाइवर्सिटी ऐंड मल्टिकल्चरल एज्यूकेशन, पृ. 6–7, जुलाई 2002

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. भट्टाचार्य, "राइटिंग ऐंड मनीमेकिंग : मुंशी प्रेमचन्द '1934–35', इन कंटेम्पोरेरि इण्डिया", जर्नल आफ नेहरू मेमोरियल म्युजियम ऐंड लाइब्रेरी, भाग–1, पृ. 87–98, मार्च 2003

2. इंदिवर काम्तेकर, "द शिवर आफ 1942", स्टडीज इन हिस्ट्री, 18.1, पृ. 81–102, जनवरी–जून 2002

3. इंदिवर काम्तेकर, "ए डिफ्रेंट वार डांस : स्टेट ऐंड क्लास इन इण्डिया 1939–45, पास्ट ऐंड प्रिजेन्ट", अंक–176, पृ. 187–221, अगस्त, 2002

4. रणबीर चक्रवर्ती, "पालिटिक्स ऐंड सोसायटी इन इण्डिया ए डी 300–1000", (सं.) एस. मूर्ति, लाइफ, थोट ऐंड कल्चर इन इण्डिया (ए डी 300–1000), पी.एच.आई.एस.पी.सी. भाग–II, अंक–1 सेंटर फार द स्टडी आफ द सिविलाइजेशंस, नई दिल्ली, पृ. 53–170, 2002

5. रणबीर चक्रवर्ती, "पर्सिविंग द एनवायरनमेंट : मानसून, हाइड्रोलिक रिसोर्सिस ऐंड एग्रेरियन सेटलमेंट्स इन इण्डिया इन द इलेवन्थ सेंचुरी", (सं.) संकुलन और जेम्स इ. हिट्समेन, द वर्ल्ड इन द ईयर ए डी 1000, न्यूयार्क

6. रणबीर चक्रवर्ती, "रीडचिंग आउट टु द डिस्टेंट शोर : इण्डो–जुडैइक ट्रेड कनेक्शंस", (सं.) नाथन काट्ज और एस. वेल, ए व्यू फ्राम द मार्जिंग : द स्टेट आफ द इण्डो–जुडैइक स्टडीज, न्यूयार्क ओयूपी

सामाजिक चिकित्सा शास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. घनश्याम शाह, "कंटेस्टेशन ऐंड निगोसिएशंस : हिन्दुत्व सेंटिमेंटस ऐंड टेम्पोरल इंटरेस्ट्स इन गुजरात इलैक्शंस", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग 37, अंक–48, 30 नवम्बर 2002
2. इमराना कादिर, "द नेशनल पाप्यूलेशन पालिसी : प्राब्लम्स ऐंड पासिबिलिटीज", इण्डियन सोशल साइंस रिव्यू भाग–4, अंक–1, पृ. 69–86, 2002
3. रितु प्रिया मेहरोत्रा, "ऐथिकल आस्पेक्ट्स आफ द ट्युबरक्लोसिस प्रोग्राम", हैल्थ एडमिनिस्ट्रेटर, ट्युबरक्लोसिस प्रोग्राम विषयक विशेष अंक, भाग 15, अंक–1 और 2 (डा. के.के. सिंह के साथ) पृ. 156–68
4. रितु प्रिया मेहरोत्रा, "द सस्टेनेबिलिटी आफ हैपेटाइटिस बी इम्युनाइजेशन विदिन द युनिवर्सल इम्युनाइजेशन प्रोग्राम इन इण्डिया", हैल्थ पालिसी ऐंड प्लानिंग, भाग 17(1) (डा. आर. दासगुप्ता के साथ) पृ. 99–105
5. मोहन राव, "पाप्यूलेशन पालिसीज : फ्राम बैड टु वर्स", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–37, अंक–22, 1 जून 2002
6. मोहन राव, "एन्टि–पीपल स्टेट पाप्यूलेशन पालिसीज", पालिटिकल एनवायरमेंट, मसाचुसेट्स, अंक–9,स्प्रिंग, 2002
7. मोहन राव, "इनजेक्टेबल्स, इनसेंटिव ऐंड डिसइंसेंटिव्स : शार्ट साइटिड पाप्यूलेशन पालिसीज", नेशनल मेडिकल जर्नल आफ इण्डिया, भाग–15, अंक–3, मई–जून 2002
8. मोहन राव, "विदर पाप्यूलेशन पालिसी ?", हैल्थ फार द मिलियन्स, भाग–28, अंक–2, जुलाई 2002
9. मोहन राव, "साइंटिफिक रेसिज्म : ए टेंगल्ड स्केन", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–38, अंक–8, 22 फरवरी, 2003
10. मोहन राव, (देविका रानी के साथ), "स्कल्पटिंग पाप्यूलेशन पालिसीज : सम इश्यूज", इण्डियन जर्नल आफ जेंडर स्टडीज, भाग–10, अंक–1, 2003
11. के.आर. नायर, "नो क्विक फिक्स फार सोशल साइंस इन पब्लिक हैल्थ", बुलेटिन आफ द वर्ल्ड हैल्थ आर्गेनाइजेशन, भाग–80, अंक–8, पृ. 683, 2002
12. के.आर. नायर, "आरडरिंग द डॉक्टर्स : न्यू कोड आफ ऐथिक्स", इकोनामिक ऐंड पालिटिकल वीकली, भाग–37, अंक–27, पृ. 2686–87, 2002
13. अल्पना सागर और इमराना कादिर, अल्टरनेटिव इकोनामिक सर्वे 2001–02 – "इकोनामिक रिफार्म्स", डिवलपमेंट डिनाइड, रेनबो पब्लिशर्स दिल्ली
14. अल्पना सागर "हू पेज फार द कास्ट आफ रिसेटलमेंट हैल्थ फार द मिलियन्स 'पावर्टी ऐंड हैल्थ'", वीएचएआई, दिल्ली

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. सी.पी. चन्द्रशेखर, "फाइनेन्स ऐंड द रीयल इकोनामी : द ग्लोबल कंजक्चर", कनेडियन जर्नल आफ डिवलपमेंट स्टडीज, भाग–24, अंक–2, 2003
2. सी.पी. चन्द्रशेखर, "द डिजिटल प्रोमिस ऐंड द केस फार काशन", फ्युचरा 1/2003, जर्नल आफ द फिनिश सोसायटी फार फ्युचर्स स्टडीज, 2003
3. पी. पटनायक "स्वेद बाई द हमबंग आफ फाइनेन्स : इकोनामिक पालिसी अंडर द बी.जे.पी. लेड गवर्नमेंट साउथ एशिया", जर्नल आफ साउथ एशियन स्टडीज, न्यू सीरीज भाग–25, अंक–3, दिसम्बर 2002
4. पी. पटनायक "ग्लोबलाइजेशन ऐंड द इमर्जिंग ग्लोबल पालिटिक्स", सोशल साइंटिस्ट, भाग–30, अंक–11–12, 2002
5. उत्सा पटनायक, "ग्लोबल कैपिटेलिज्म, डिफ्लेशन ऐंड एग्रेरियन क्राइसिस इन डिवलपिंग कंट्रीज", जर्नल आफ एग्रेरियन चेंज, भाग–3, अंक–1–2, जनवरी और अप्रैल 2003

प्रौढ शिक्षा समूह

1. एस.वाई शाह, "लेसन्स फ्राम एडल्ड एज्यूकेशन प्रोग्राम इन द ईस्ट ऐंड साउथ–ईस्ट एशियन कंट्रीज : ए केस स्टडी आफ थाइलैण्ड", इंटरनेशनल जर्नल आफ एडल्ट ऐंड लाइफलांग एज्यूकेशन, भाग–1, अंक–1, जनवरी–जून 2003
2. एस.वाई शाह, "एडल्ट ऐंड लाइफलांग एज्यूकेशन", अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका के प्रथम अंक का सम्पादन किया, जनवरी–जून, 2003
3. शांता कृष्णन, "इश्यूज ऐंड डायलेमास इन हैल्थ ऐंड मेडिकल केयर", जेएनयू न्यूज, सितम्बर–अक्टूबर 2002

पूरी हो चुकी शोध परियोजनाएं

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. जोया हसन, "डाइवर्सिटी आफ मुस्लिम वुमन'स लाइव्स इन इण्डिया", विषयक पूरी हो चुकी शोध परियोजना, नेहरू स्मारक संग्राहलय और पुस्तकालय, नई दिल्ली, दिसम्बर 2002

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. जी.के. चड्ढा, "रूरल इम्प्लायमेंट इन इण्डिया : करंट सिचुएशन चैलेन्जिस ऐंड पोटेंशिएल फार एक्सपेंशन", आई.एल.ओ., जिनेवा (मिमिओ)
2. ए.एच. किदवई, "इकोनोमिक पालिसी, पाप्यूलेशन डिसप्लेसमेंट ऐंड डिवलपमेंट एथेक्सि", कनेडियन इंटरनेशनल डिवलपमेंट एजेंसी और शास्त्री इण्डो कनेडियन इंस्टीट्यूट द्वारा प्रायोजित
3. सुदेश नांगिया, "इनवाल्वमेंट आफ इलैक्टिड रिप्रजैटेंटिव्स फार एडवोकेसी आन पाप्युलेशन रिप्रोडेक्टिव हैल्थ, एच.आई.बी/एडस, रिप्रोडक्टिव राइट्स ऐंड इम्पावरमेंट आफ वुमन", (अनुराधा बैनर्जी के साथ) इण्डियन एसोसिएशन आफ पार्लियामेंटेरियन्स आन पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट के सहयोग से यूएनएफपीए द्वारा, प्रायोजित, दिसम्बर 2002
4. सुदेश नांगिया, "पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट – प्रोफाइल आफ डिस्ट्रिक्ट उदयपुर", आएएपीपीडी, नई दिल्ली अप्रैल 2002
5. सुदेश नांगिया, "इवैल्युशन आफ गवर्नमेंट ऐंड नान–गवर्नमेंट प्रोग्राम्स फार द वैलफेयर आफ बिरहोर ट्राइव इन हजारीबाग डिस्ट्रिक्ट", जनजातीय मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार, दिसम्बर 2002
6. सरस्वती राजू, "ह्यूमन रिसोर्स डिवलपमेंट, जेंडर ऐंड लेबर मार्किट सेगमेंटेशन", आईडीपीएडी – आईसीएसएसआर
7. अतुल सूद, "द न्यू रेग्युलेटरी रिजीम : वालन्ट्री सेल्फ रेग्युलेशन वर्सस मैनेडेट्री लेजिस्लेटिव स्कीम्स फार इंप्लिमेंटिंग लेबर स्टेंडर्डस", कंज्युमर यूनिटी ऐंड ट्रस्ट सोसायटी, जयपुर, इण्डिया द्वारा प्रायोजित, अगस्त 2002
8. रवि श्रीवास्तव, "सोशल डिवलपमेंट इन उत्तर प्रदेश", विषयक योजना आयोग द्वारा तैयार की जा रही उत्तर प्रदेश विकास रिपोर्ट का एक भाग, 2001–02
9. रवि श्रीवास्तव, "एन्टी पावर्टी प्रोग्राम्स इन उत्तर प्रदेश इन द कंटेक्स्ट आफ डिसेंट्रलाइजेशन", विषयक योजन आयोग की शोध परियोजना, 1999–2002
10. एस.के. थोरट, "प्रो–पूअर एग्रीकल्चर ग्रोथ – ए कम्पैरटिव इक्सपिरिअन्स आफ इण्डिया", मलावी ऐंड जिम्बाबे, डी.एफ.आई.टी., लन्दन (यू.के.) द्वारा प्रायोजित
11. एस.के. थोरट, "स्माल फार्म ऐंड लिवलीहुड स्ट्रेटजीस इन इण्डिया – स्टडी", इंटरनेशनल फूड पालिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन डी.सी. (यू.एस.ए.) द्वारा प्रायोजित

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. जे.एस. गांधी, "सोशल इम्पैक्ट असेसमेंट स्टडी फार द स्टेट आफ पंजाब", विद्युत वित्त निगम लि. द्वारा वित्त पोषित, जनवरी 2003
2. रेणुका सिंह, "स्प्रेड आफ बुद्धिज्म", स्वयं वित्त पोषित

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. करूणा चानना, "आर वुमन इन यूनिफार्म हैल्ड बैक ? ए स्टडी आफ वुमन ऐंड मैन इन दिल्ली पुलिस", दो साथियों के साथ संयुक्त रूप से, दिल्ली पुलिस द्वारा प्रायोजित और ब्रिटिश कांउसिल, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित, अगस्त 2002–मार्च 2003
2. मिनाती पंडा, "ऐज – इफ डिस्कोर्स ऐंड मैथमेटिक्स लर्निंग : ए स्टडी आफ लैंजिआ साओरा इन उड़ीसा", विशेष सहायता विभाग, जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र द्वार प्रायोजित 2002
3. एस. श्रीनिवास राव, "नेशनल इवैल्युएशन स्टडी आन सिविल वर्क्स अंडर डिस्ट्रिक्ट प्राइमरी एज्यूकेशन प्रोग्राम आफ गवर्नमेंट आफ इण्डिया", एज्यूकेशनल कंसल्टेंट्स इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित। अध्ययन टीम में तीन सदस्य थे और आन्ध्र प्रदेश से संबंधित।
4. ध्रुव रैना, "द हिस्ट्री ऐंड हिस्टोरिग्राफी आफ प्रूफ्स इन एनशन्ट ट्रेडिशंस", इंटरनेशनल प्रोग्राम आफ एडवांस्ड स्टडी, एम.एस.एच., पेरिस द्वारा प्रायोजित और कारिन केमिला, यूनिवर्सिटी आफ पेरिस द्वारा संयोजित, 2002

सामाजिक चिकित्सा–शास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. रामा वी. बारू, "द फ्युचर आफ पब्लिक हास्पिटल्स इन द कंटेक्स्ट आफ प्राइवेटाइजेशन इन इण्डिया", यूनाइटिड नेशंस रिसर्च इन सोशल डिवलपमेंट, जिनेवा द्वारा प्रायोजित
2. एस.एस. आचार्य, "सोशल असेसमेंट आफ रिप्रोडक्टिव ऐंड चाइल्ड हैल्थ इन उत्तरांचल", ऐज ए पार्ट आफ द लार्जर स्टडी आन सोशल असेसमेंट आफ रिप्रोडक्टिव ऐंड चाइल्ड हैल्थ इन फाइव स्टेट्स – आसाम, हरियाणा, महाराष्ट्र और उत्तरांचल। यह अध्ययन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय, नई दिल्ली और डी एफ आई डी के लिए टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसिस, बाम्बे, द्वारा किया जा रहा है।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. जयती घोष, "द इंटरविनिंग आफ सस्टेनेबल डिवलपमेंट ऐंड इंप्लायमेंट : ए कम्पैरटिव स्टडी आफ इण्डिया ऐंड द यूरोपीयन यूनियन", विषयक आई.डी.पी.ए.डी / आई.सी.एस.एस.आर. की परियोजना – क्षेत्रीय परियोजना निदेशक, सहयोगी संस्थान : इरासमस यूनिवर्सिटी, रोटरडम, द नीदरलैण्ड्स। यह परियोजना पूरी हो चुकी है और अप्रैल 2002 में प्रस्तुत कर दी गई है।
2. जयती घोष, "ड्राट प्रूफिंग छत्तीसगढ़ : वाटर पालिसी ऐंड इंप्लिमेंटेशन स्ट्रेटिजी", विषयक योजना आयोग / मानव विकास संस्थान की परियोजना, प्रोजेक्ट निदेशक, यह परियोजना जनवरी 2003 में पूरी हो चुकी है।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई. शाह, "पालिसी ऐंड ट्रेंड्स इन फाइनेंसिंग ऐडल्ट लिट्रेसी इन इण्डिया", विषयक पूरी हो चुकी परियोजना, द एशियन साउथ पेसिफिक ब्यूरो आफ एडल्ट एज्यूकेशन द्वारा प्रायोजित की गई।
2. एस.वाई. शाह, "इक्सप्लोरिंग द पोटेंशल आफ ओपन ऐंड डिस्टेन्स एज्यूकेशन इन द ट्रेनिंग आफ ग्रासरूट्स लेवल वर्कर्स इन द फील्ड आफ एडल्ट बेसिक एज्यूकेशन इन इण्डिया", विषयक पूरी हो चुकी परियोजा । यह परियोजना यूनेस्को इंस्टीट्यूट फार एज्यूकेशन, हम्बर्ग द्वारा प्रायोजित की गई।

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. "ग्लोबलाइजेशन ऐंड द चेंजिंग स्ट्रक्चर आफ द साइंटिफिक कम्यूनिटीज इन द डिवलपिंग वर्ल्ड", यह परियोजना प्रो. कृष्णा, डा. आर. वास्त, डा. जे. गैलार्ड और आर. अरवानितिस, आई.आर.डी., पेरिस, फ्रांस और प्रो. टिम टुरपिन (आस्ट्रेलियन एक्सपर्ट ग्रुप आन इंडस्ट्री / इनोवेशन स्टडीज), यूनिवर्सिटी आफ वेस्टर्न सिडनी, सिडनी, आस्ट्रेलिया के बीच चल रही है।

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. एल.एम. भट्ट, "माइक्रो लेवल प्लानिंग / डिसेंट्रेलाइज्ड प्लानिंग इन इण्डिया", (आई.सी.एस.एस.आर. फेलो के रूप में)।
2. एल.एस. भट्ट, "आई.सी.एस.एस.आर. ऐब्सट्रक्ट्स ऐंड रिव्यूज इन जिओग्राफी", जनवरी 2003 से चल रही परियोजना (सुदेश नांगिया के साथ)।

3. जी.के. चड्ढा, "इंस्टीट्यूशनल टेक्नोलाजिकल ऐंड मार्केटिंग कंस्ट्रेन्ट्स आफ स्माल एग्रो–बेस्ड इंटरप्राइजिस इन इंडिया", इंटरनेशनल फूड पालिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन द्वारा प्रायोजित। इस परियोजना के जुलाई–अगस्त 2003 तक पूरी होने की सम्भावना है।

4. सुदेश नांगिया, "पाप्यूलेशन हैल्थ, फैमिली स्ट्रक्चर ऐंड द एनवायरमेंट", (रोनाल्ड एफ. ऐबलर, महासचिव आई.जी.यू. और डा. अलिना पोर्टिकोवस्का, चेयर, कमीशन आन पाप्यूलेशन ऐंड एनवायरनमेंट, आई.जी.यू. के साथ)।

5. सुदेश नांगिया, "स्टेटस आफ वुमन ऐंड वुमन इम्पाक्रमेंट इन रेट्रोस्पेक्ट ऐंड प्रास्पेक्ट", इण्डियन एसोसिएशन आफ पार्लियामेंटेरियन्स आन पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित।

6. सुदेश नांगिया, "आई.सी.एस.एस.आर. एब्सट्रेक्ट ऐंड रिव्यूज इन जिओग्राफी", जनवरी 2003 से परियोजना चल रही है (प्रो. एल.एस. भट्ट के सहयोग से)।

7. सरस्वती राजू, "एक्सस आफ वलनरेबल ग्रुप्स टु रिप्रोडक्टिव ऐंड चाइल्ड हैल्थ सर्विसिस इन रूरल ऐंड अर्बन हरियाणा", डी.एफ.आई.डी. – वर्ल्ड बैंक द्वारा प्रायोजित और टिस, मुम्बई द्वारा संचालित परियोजना।

8. मिलाप सी. शर्मा, "डेजरटिफिकेशन स्टेट्स मैपिंग कोल्ड डेजर्ट : यूजिंग रिमोर्ट सेंसिंग ऐंड जी.आई.एस.", डिपार्टमेंट आफ स्पेस, गवर्नमेंट आफ इण्डिया, स्पेस एप्लिकेशन सेंटर, अहमदाबाद (प्रो. हरजीत सिंह के साथ)।

9. आर.के. शर्मा, "पाप्यूलेशन ग्रोथ ऐंड कामन प्रापर्टी रिसोर्सिस : इंप्लिकेशंस फार वुमन ऐंड द पुअर : ए केस स्टडी आफ रूरल हिमाचल प्रदेश"।

10. हरजीत सिंह, "डेजरटिफिकेशन स्टेटस मैपिंग – असेसमेंट ऐंड मानिटरिंग", स्पेस एप्लिकेशन सेंटर (आई.एस.आर.ओ.) अहमदाबाद द्वारा प्रायोजित।

11. अतुल सूद, "द पालिटिकल इकोनोमी आफ कार्पोरेट एनवायरनमेंटल ऐंड सोशल रिस्पांसिबिलिटी इन डिवलपिंग कंट्रीज : द केस आफ इण्डिया", यूनाइटिड नेशंस रिसर्च इंस्टीट्यूट इन सोशल डिवलपमेंट, जिनेवा द्वारा प्रायोजित

12. रवि श्रीवास्तव, "राइट टु एज्यूकेशन इन इण्डिया", सेंटर फार डिवलपमेंट ऐंड ह्युमन राइट्स/हारवर्ड यूनिवर्सिटी (2002) चल रही परियोजना।

13. रवि श्रीवास्तव, इण्डो–डच प्रोग्राम फार अल्टरनेटिव्स इन डिवलपमेंट ऐंड द इण्डियन काउंसिल फार सोशल साइंस की "लेबर माइग्रेशन ऐंड एग्रेरियन चेंज इन ईस्टर्न यू.पी." विषयक शोध परियोजना (फेज–4) (1998–2000, चल रही परियोजना)।

14. एस.के. थोरट, डिवलपमेंट आफ रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर इन इण्डिया – ए मिलेनियम स्टडीज आन "फार्मर्स आफ इण्डिया", कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. आनन्द कुमार, "क्रानिक पावर्टी इन इण्डिया", आई.आई.पी.ए.
2. आनन्द कुमार, "ओल्ड ऐज पेंशन स्कीम : केस स्टडी आफ वाराणसी", हैल्पेज, इण्डिया

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. दीपक कुमार और वी.के. यादवेन्दु, "बायोथिस ऐंड सोसायटी : कंस्ट्रक्टिंग बायोजुरिसप्रूडेंस इंटरप्राइज", विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एक्सिलेन्स प्रोग्राम, 2002–05 के तहत।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. भट्टाचार्य, "आरिजिन्स आफ इण्डियन सोशल साइंसिस : इक्सप्लोरेशंस इन द हिस्ट्री आफ सोसिओ–इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल थाट इन इण्डिया, 1850–1950", हिस्ट्री आफ इण्डियन साइंस, फिलास्फी ऐंड कल्चर, इण्डियन काउंसिल आफ फिलासिफिकल रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित परियोजना। अप्रैल 2002 में प्रारम्भ हुई परियोजना

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. के.आर. नैयर, "मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सैक्टर पालिसीज इन एशिया", यूरोपीयन आयोग द्वारा प्रायोजित, समन्वयक।

2. रितु प्रिया मेहरोत्रा, "मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सैक्टर्स पालिसीज इन साउथ एशिया", विषयक परियोजना की इंटरनेशनल क्लोबरेटिव यूरोपीयन यूनियन के थ्री वर्किंग ग्रुप्स में से एक की समन्वयक, सामाजिक चिकित्सशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र।

3. रितु प्रिया मेहरोत्रा, सदस्य सेंट्रल कोर टीम आफ स्टडी, "असेसमेंट आफ इंजेक्शन प्रेक्टिसीज इन इण्डिया (2002–03)", द आल इण्डिया क्लिनिकल इपिडेमिआलाजी नेटवर्क क्लिनिकल इपिडेमिऑलाजी यूनिट आल इण्डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसिस, नई दिल्ली।

4. एस. संघमित्रा आचार्य, "मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सेक्टर" विषयक इ.यू. चल रही परियोजना के निम्नलिखित प्रकाशित डाटा के आधार पर एक भाग को पूरा किया –

   1. "वुमन'स कैपेबिलिटी ऐंड मोरबिडिटी–मारटेलिटी अमंग चिल्ड्रन" -- इलस्ट्रेशंस फ्राम एनएफएचएस.
   2. डिस्पैरिटी इन मोरबिडिटी अमंग एडल्ट्स एन एनालिसिस अफ एनएफएचएस डाटा
   3. सोसिओ–इकोनामिक डिटर्मिनेंट्स आफ इनफेट्स ऐंड चाइल्ड मोरटेलिटी इन इण्डिया
   4. चाइल्ड मोरबिडिटी ऐंड ट्रीटमेंट पैटर्न - एन एनालिसिस आफ शिफ्ट्स ड्यूरिंग 1990'स
   5. डिफ्रेंशल्स इन हैल्थ केयर सर्विसिस यूटिलाइजेशन – एन एनालिसिस आफ फोर स्टेट्स -- आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणा
   6. नालेज ऐंड अवेयरनेस आफ एड्स इन सलेक्टिड इण्डिया स्टेट्स इन इण्डिया -- रोल आफ मीडिया
   7. हैल्थ केयर सर्विसिस यूटिलाइजेशन इन निरपुरा, डिस्ट्रिक्ट मेरठ – राम इश्यूज एग्जामिंड, इ.यू. परियोजना का क्षेत्रीय कार्य पर आधारित अध्ययन का एक भाग पूरा होने वाला है।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई शाह, "इवैल्युएशन इन एडल्ट एज्यूकेशन : ए क्रिटिकल रिव्यू आफ पालिसी, मेथड्स ऐंड फाइंडिंग्स", इंटरनेशनल इस्टीट्यूट आफ ऐडक्ट ऐंड लाइफलांग एज्यूकेशन द्वारा प्रायोजित।

शोध परियोजना (अप्रायोजित)

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा बैनर्जी, "इश्यूज आन पाप्यूलेशन ऐंड सस्टेनेबल डिवलपमेंट इन इण्डिया", केंद्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष सहायता कार्यक्रम के तहत प्राप्त सहायता।
2. कुसुम चोपडा, "अनइवन एक्सस टु फूड : ए स्टडी आफ रीजनल डिस्पैरिटीज इन इण्डिया"।
3. अतिया किदवई, "टेरिटोरियल ऐंड सोशल आइडेंटिटीज इन इण्डिया – ए स्टडी आफ हिस्टोरिकल जिओग्राफी"।
4. असलम महमूद, "रिसेंट ट्रेन्ड्स इन लिट्रेसी ऐंड इट्स डिटर्मिनेंट्स इन इण्डिया"।
5. सरस्वती राजू, "पावर्टी, इकोलाजी ऐंड वुमन'स वर्क : रिस्पांस टु ग्लोबलाइजिंग मार्किट"।

दर्शनशास्त्र केन्द्र

1. पी.बी. मेहता, "ऐथिक्स इन एन इम्परफैक्ट वर्ल्ड, द आइडिया आफ कंस्टीट्यूशनेलिज्म"।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. ऐहसानुल हक, "सोसिओलाजी आफ एज्यूकेशन"।
2. सुसन विश्वनाथन, "अंडरस्टेंडिंग रमण महर्षि"।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. श्रीनिवास राव, "मैनेजिंग डाइवर्सिटी ऐंड एक्सिलेंस इन इण्डियन हायर एज्यूकेशन : ए कम्पैरिटिव स्टडी आफ जनरल ऐंड प्रोफेशनल हायर एज्यूकेशन इंस्टीट्यूशंस"। प्रिपेरिंग टीचर्स फार डाइवर्सिटी : इम्पैक्ट आफ ट्रेनिंग आन कालेज टीचर्स।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. इंदिवर काम्तेंकर, "द एन्ड आफ द कलोनिअल स्टेट इन इण्डिया, 1942–47"।
2. कुणाल चक्रवर्ती, "इमेजिंग द फारेस्ट इन इण्डियन ट्रेडिशन"।
3. रणबीर चक्रवर्ती, "क्राफ्ट्समैन, मर्चेन्टस ऐंड अर्बन सोसायटी : सोशल हिस्ट्री आफ एशन्ट इण्डिया", (पीएचआईएसपीसी परियोजना) (सं.) प्रो. बी.डी. चट्टोपाध्याय।

सामाजिक चिकित्शास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. रितु प्रिया मेहरोत्रा, "इवोल्विंग ए होलिस्टिक इपिडेमिओलाजी ऐंड पब्लिक हैल्थ"।
2. के.आर. नायर, "रोल आफ सेल्फ–हैल्थ ग्रुप्स इन हैल्थ केयर", (ओलिवर राजुम, हिडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी के साथ)

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. शांता कृष्णन, "ए स्टडी आफ सेमी–नोमेडिक ट्रेडिशनल आर्टिजन्स आफ गाडिया लोहार कम्यूनिटी"।

शिक्षकों की सम्मलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

विज्ञान अध्ययन केन्द्र

1. वी.वी. कृष्णा ने 1 से 6 दिसम्बर, 2002 तक यूनिवर्सिटी आफ वेस्टर्न सिडनी, (हाक्सबरी कैम्पस) सिडनी, आस्ट्रेलिया में आयोजित साइंस, टेक्नोलाजी ऐंड डिवलपमेंट पी–एच.डी. कार्यशाला/संगोष्ठी में भाग लिया और "साइंस ऐंड टेक्नोलाजी इन द डिवलपिंग कंट्रीज : वाट आप्शंस फार डिवलपमेंट", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. वी.वी. कृष्णा ने 17 से 20 अक्टूबर 2002 तक टोरंटों में आयोजित सोसायटी फार द हिस्ट्री आफ साइंस की वार्षिक बैठक में भाग लिया।
3. नासिर तैयबजी ने 3 से 5 अक्टूबर, 2002 तक द कमीशन आन द हिस्ट्री आफ मार्डन केमिस्ट्री, डिवीजन आफ द हिस्ट्री आफ साइंस, द इंटरनेशनल यूनियन आफ द हिस्ट्री ऐंड फिलास्फी आफ साइंस ऐंड द केमिकल हैरिटेज फाउन्डेशन, फिलाडेल्फिया द्वारा आयोजित "इंडस्ट्रियल–अकेडमिक रिलेशनशिप्स इन द केमिकल ऐंड मोलिकुलर साइंसिस", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "इक्जैम्पलर आफ अकेडमिया–इंडस्ट्री इंटरचेंज : द डिपार्टमेंट आफ केमिकल टेक्नोलाजी ऐट बाम्बे यूनिवर्सिटी", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
4. के.जे. जोसफ ने 10 से 11 मई 2002 तक हेलसिंकी में आयोजित "न्यू इकोनामी इन डिवलपमेंट", विषयक वाइडर सम्मेलन में भाग लिया तथा "ग्रोथ आफ आई.सी.टी. ऐंड आई.सी.टी इन डिवलपमेंट : द इण्डियन इक्सपिरिअन्स", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया तथा वाइडर परिचर्चा आलेख के रूप में प्रकाशित हुआ, संख्या 2002/78 अगस्त 2002
5. के.जे. जोसफ ने 13 मई 2002 को साइंस पालिसी रिसर्च यूनिट, यूनिवर्सिटी आफ ससेक्स, यू.के. द्वारा आयोजित "द आई सी टी बूम इन इण्डिया : चैलेंजिस अहेड", विषयक संगोष्ठी में आलेख प्रस्तुत किया।
6. के.जे. जोसफ ने 21 से 22 नवम्बर 2002 तक आयोजित "प्रमोटिंग – नालेज–बेस्ड इकोनामिज इन एशिया", विषयक ओ इ सी डी आई पी एस कार्यशाला में भाग लिया तथा "ग्रोथ आफ आई सी टी ऐंड हार्नेसिंग इट फार डिवलपमेंट : द इण्डियन इक्सपिरिअन्स", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
7. के.जे. जोसफ ने 14 से 17 जनवरी 2003 तक होनोलुलु हवाई में आयोजित "पालिसी फ्रेमवर्क्स फार द डिजिटल इकोनोमी" विषयक ओईसीडी ग्लोबल संगोष्ठी में भाग लिया।

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. जोया हसन ने नवम्बर 2002 में आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, केनबरा में आयोजित "ह्यूमन वैल्यूज", विषयक मार्था नुसबौम'स टैनर व्याख्यान पर टीका टिप्पणी की।
2. सुधा पई ने 18 से 19 नवम्बर, 2002 तक उपासला विश्वविद्यालय, स्वीडन द्वारा आयोजित "एज्यूकेशन ऐज ए सोशल मूवमेंट", विषयक यूएनआरआईएसडी बुक परियोजना में भाग लिया तथा "यूनिवर्शल एलिमेंट्री एज्यूकेशन इन इण्डिया : एन एक्सप्लेनेट्री स्टडी आफ मूवमेंट्स इन सिविल सोसायटी", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया। यह आलेख यूएनआरआईएसडी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली आगामी पत्रिका में शामिल होगा।

3. गुरप्रीत महाजन ने 4 से 5 अक्टूबर 2002, यूनिवर्सिटी आफ नेबरास्का, लिंकन, यू.एस.ए. में आयोजित "माइनार्टीज विदिन माइनार्टीज : इक्वैलिटी, राइट्स ऐंड डाइवर्सिटी", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "अकोमोडेटिंग इंटर्नल माइनार्टीज : द लिमिटेशंस आफ मल्टिकल्चरल थीअरि ऐंड प्रेक्टिस", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. गुरप्रीत महाजन ने 3 अक्टूबर 2002 को वुमन स्टडीज कोलाक्विम यूनिवर्सिटी आफ नेबरास्का, लिंकन द्वारा आयोजित "वुमन जेंडर ऐंड इक्वैलिटी : वेयर डू वी स्टेंड टुडे – ए पर्सपेक्टिव फ्राम इण्डिया", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

5. गुरप्रीत महाजन ने 9 अक्टूबर 2002 को साउथ एशियन स्टडीज, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित "रिलीजन ऐंड द स्टेट इन इण्डिया", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

6. गुरप्रीत महाजन ने 24 से 25 जनवरी, 2003 तक उपियासी द्वारा आयोजित "डेमोक्रेसी ऐंड प्लुरलिज्म", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "रिलीजस माइनार्टीज ऐंड द स्टेट इन इण्डिया", शीर्षक आलेख पर परिचर्चा की।

7. गुरप्रीत महाजन ने 1 से 3 जुलाई 2002 तक मिचीगन विश्वविद्यालय, अन्न अर्बर द्वारा आयोजित "नेटसैपे" (नेटवर्क आफ एशियन पालिटिक्स ऐंड पालिटिकल इकोनोमी) के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा "ट्रेडिशन, माइनार्टी ऐंड रीजन", शीर्षक आलेख पर परिचर्चा की तथा "ए कम्पैरेटिव स्टडी आफ इण्डिया", विषयक सत्र की अध्यक्षता की।

8. कुलदीप माथुर ने जुलाई 2002 में यूनाटिड नेशंस, न्यूयार्क में आयोजित "पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में विशेषज्ञों", की बैठक में भाग लिया।

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. जी.के. चड्ढा ने इण्डो–लिबियन फ्रेंडशिप प्रमोट करने के कार्यक्रम के अन्तर्गत दो देशों के बीच शिक्षा के क्षेत्र में विचारों और अनुभवों का आदान–प्रदान करने के लिए मई 2002 में लीबिया की यात्रा की।

2. जी.के. चड्ढा ने 21 से 27 अगस्त 2002 तक निहोन फुकुशी यूनिवर्सिटी, ओकुडा, जापान द्वारा आयोजित "साउथ ईस्ट एशियन रीजनल डिवलपमेंट स्टडीज", विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

3. जी.के. चड्ढा ने 26 से 27 सितम्बर, 2002 तक न्यूयार्क में आयोजित "सिटीजनशिप ऐंड आइडेंटिटी इन हायर एज्यूकेशन", विषयक लीग आफ वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज के द्विवार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

4. जी.के. चड्ढा ने 21 से 23 नवम्बर 2002 तक पारो, भूटान में मिनिस्ट्री आफ एग्रीकल्चर, भूटान–एन सी ए पी – आई एफ पी आर आई, वाशिंगटन के सहयोग से आयोजित "एग्रीकल्चरल डाइवर्सिफिकेशन इन साउथ एशिया", विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "एग्रो इंडस्ट्रिलाइजेशन इन इण्डिया", विषयक व्याख्यान दिया।

5. जी.के. चड्ढा ने 16 दिसम्बर 2002 को जिनेवा, स्विीटजरलैण्ड में आयोजित "इंटरनेशनल माइग्रेशन" विषयक नालेज नेटवर्क बैठक में भाग लिया।

6. सतीश एम. कुमार ने 2002 में वार आन वान्ट, नार्दन आयरलैण्ड, यू.के. द्वारा आयोजित "फाइटिंग वर्ल्ड पावर्टी" विषयक तीसरे वार्षिक वालियंटर्स डे में भाग लिया तथा "फ्राम डेमोक्रेसी टु गवर्नेन्स : चेंजिंग पर्सपेक्टिव्स आन पावर्टी फ्राम द आइवरी टावर आफ डिवलपमेंट", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. सतीश एम. कुमार ने 30 मई 2002 को आल आयरलैण्ड सोसायटी फार हायर एज्यूकेशन, बेलफास्ट कैसल में आयोजित "पीर आब्जरवेशन आफ टीचिंग" विषयक क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "पीर आब्जरवेशन आफ टीचिंग" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. अमिताभ कुण्डु ने फरवरी 2003 में जर्मनी में आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया तथा "फाइनेन्शल मार्किट्स इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. सुदेश नांगिया ने 10 से 13 जून, 2002 तक डिपार्टमेंट आफ पाप्यूलेशन स्टडीज, चुलालोंगकोर्न यूनिवर्सिटी, थाइलैण्ड, बैंकाक द्वारा आयोजित आई यू एस एस पी क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लिया और तपस विश्वास के साथ "पैटर्न आफ ग्रोथ आफ मेगासिटीज इन इण्डिया", विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

10. सरस्वती राजू ने 23 से 25 अक्टूबर 2002 तक बान, जर्मनी में आयोजित "एनवायरनमेंट ऐंड ह्युमन सिक्युरिटी" विषयक यू.एन.यू./आर.टी.सी. की कार्यशाला में भाग लिया।

11. सरस्वती राजू ने 26 से 27 सितम्बर 2002 तक बिजनेस सिस्टम्स ऐंड इंस्टीट्यूशन इन इण्डस्ट्री ऐंड एग्रीकल्चर मोमवासा, केन्या द्वारा आयोजित "ग्लोबल एस्पिरेशंस ऐंड एमबेडिड कंटेक्स्ट्स : जेंडर ऐंड वोकेशनल ऐंड स्किल फार्मेशंस इन सेग्मेंटिड लेबर मार्किट : ए केस आफ दिल्ली", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

12. सरस्वती राजू ने 25 से 30 जून 2002 तक बिक्ससावा, हंग्री में आयोजित क्रिटिकल जिओग्राफी प्रेक्सिस – एन ओवरव्यू फ्राम इण्डिया", विषयक तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में समापन व्याख्यान दिया।

13. सरस्वती राजू ने 31 मई से 2 जून 2002 तक टोरन्टो ओनटैरियो, कनाडा में आयोजित "आई जी यू जेंडर ऐंड जिओग्राफी कमीशन वर्कशाप आन प्लेसिंग जेंडर/मेकिंग पालिसी, "फोरग्राउंडिंग वुमन मिसिंग जेंडर: पालिसी इंटरवेंशन क्रिऐट्स 'दस फार ऐंड ना फर्दर' स्पोर्टिव इंफ्लुअन्स : ए केस फ्राम इण्डिया ?", विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

14. अतुल सूद ने 21 से 22 मई 2002 तक ब्रूसेल्स बेल्जियम में आयोजित इ.यू – इण्डिया नेटवर्क की "ट्रेड ऐंड डिवलपमेंट" विषयक बैठक में भाग लिया तथा "वालन्ट्री कोड्स ऐंड इण्डियन लेबर" विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

15. एस.के. थोरट ने 4 से 5 अक्टूबर 2002 तक सेंटर फार साउथ एशिया स्टडीज, यूनिवर्सिटी आफ आइओवा, आइओवा (यू.एस.ए.) द्वारा आयोजित "बियान्ड अर्बन कास्ट ऐंड रेस डायलाग", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "कास्ट रेस ऐंड यू.एन. पर्सपेक्टिव आन डिस्क्रिमिनेशन – कोपिंग विद इर्मजिंग चैलेंजिस फ्राम एशिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

16. एस.के. थोरट ने विस्कोनसिस यूनिवर्सिटी मैडिसन (यू.एस.ए.) में आयोजित "चैलेंजिंग कास्ट : आइडआलाजीज, वायलन्स, क्रिएटिविटी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "इनफोर्सिंग आइडोलाजी थ्रू पावर ऐंड वायलन्स – इक्सपिरिअन्स आफ कास्ट डिक्रिमिनेशन आफ दलित्स", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

दर्शनशास्त्र ग्रुप

1. पी.बी. मेहता ने अप्रैल 2002 में क्योटो, जापान में आयोजित "वैराइटीज आफ लिबरलिज्म, फाउन्डेशन फार फ्युचर जेनरेशंस", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
2. पी.बी. मेहता, नेटसापे, मिचीगन यूनिवर्सिटी, जून, 2002
3. पी.बी. मेहता, ह्युमैनिटेरियन, इंटरवेंशन रिकंसीडर्ड, अमेरिकन पालिटिकल साइंस एसोसिएशन, बोस्टन (अमेरिकन सोसायटी फार ऐप्लाइड ऐंड लीगल फिलास्फी के सहयोग से) सितम्बर, 2002
4. पी.बी. मेहता, पोपर, हायेक ऐंड द क्रिटिक आफ रैशनलिज्म, क्राइस्टचर्च, न्यूजीलैण्ड, नवम्बर 2002
5. पी.बी. मेहता, ग्लोबल डिवलपमेंट नेटवर्क, काइरो, जनवरी, 2003

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. दीपांकर गुप्ता ने ग्लोबल डिवलपमेंट नेटवर्क, काइरो द्वारा आयोजित "फेल्ट एस्पिरेशंस : ग्लोबेलाइजेशन आर इक्विटी फ्राम एन एन्थ्रोपोलाजिकल पर्सपेक्टिव", विषयक बैठक में अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
2. आनन्द कुमार ने 4 से 7 अप्रैल 2002 तक ट्रांसनेशनल पार्टी, जिनेवा द्वारा आयोजित "ग्लोबेलाइजेशन आफ डेमोक्रेसी" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "ग्लोबलाइजेशन आफ डेमोक्रेसी ऐंड रिलेवेंस आफ गांधी", विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
3. आनन्द कुमार ने 5 नवम्बर 2002 को ऐम्सटर्डम विश्वविद्यालय ऐम्सटर्डम द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा "रिलीजस वायलन्स इन साउथ एशिया", विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
4. आनन्द कुमार ने 7 नवम्बर 2002 को आर्नोल्ड बर्गेस्ट्रेब्जर इंस्टीट्यूट, फ्रीबर्ग द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा "इश्यू आफ तिब्बत बिटवीन होप ऐंड डिस्पेयर", विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
5. आनन्द कुमार ने 18 नवम्बर 2002 को ए.बी. इंस्टीट्यूट फ्रीबर्ग यूनिवर्सिटी, फ्रीबर्ग द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा "ग्लोबलाइजेशन नेशनलिज्म ऐंड टेरेरजिम : रिडिस्कवरिंग गांधी", विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।
6. आनन्द कुमार ने 11 से 12 दिसम्बर 2002 तक बान, जर्मनी द्वारा आयोजित "नेशनबिल्डिंग ऐंड ग्लोबलाइजेशन ऐंड पीस डिवलपमेंट फाउन्डेशन", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "नेशन बिल्डिंग इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. तिपलुत नोंगब्री ने 9 से 12 अगत 2002 तक ननकाई यूनिवर्सिटी, तिआंजिन, चीनी गणराज्य द्वारा आयोजित "चाइनीज फैमिल्टी हिस्ट्री स्टडीज", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "मैट्रिलिनियल किनशिप सिस्टम्स : ए कम्पैरटिव एनालिसिस आफ द खासी आफ नार्थ–ईस्ट इण्डिया ऐंड द मोसुओ आफ यूनान", विषयक व्याख्यान दिया।

8. तिपलुत नोंगब्री ने 13 से 16 नवम्बर 2002 तक आई डब्ल्यू जी आई, डेनमार्क और सिडा, स्वीडन द्वारा तोमिलिला, स्वीडन में आयोजित "इनडिजिनस पीपल्स ऐंड पावर्टी", विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "पावर्टी ऐंड इंडिजिनस पीपल्स विद स्पेशल रिफ्रेन्स टु इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

9. रेणुका सिंह ने 13 जून 2002 को सोर्बोने यूनिवर्सिटी आफ पेरिस द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा "जेंडर स्टडीज इन इण्डिया", विषयक व्याख्यान दिया।

10. रेणुका सिंह ने 29 जून 2002 को इण्डियन लिट्रेसी सोसायटी, न्यूयार्क द्वारा आयोजित "लिट्रेचर ऐंड इण्डियन डाइसपोरा", विषयक सम्मेलन में परिचर्चा की।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. करूणा चानना ने 27 से 28 फरवरी 2003 तक हायर एज्यूकेशन रिसर्च ऐंड नालेज, विषयक यूनेस्को फोरम, यूनेस्को (पेरिस) बैंकाक द्वारा आयोजित "रीजनल साइंटिफिक कमेटी फार एशिया ऐंड द पेरिफिक" की प्रथम बैठक में भाग लिया तथा "हायर एज्यूकेशन इन ए ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड : रिडिफाइंग रिसर्च गोल्स ऐंड प्राइआर्टीज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. दीपक कुमार ने 14 से 16 नवम्बर 2002 तक पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, यू.एए.ए. द्वारा आयोजित "एशियन मेडिसिन", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

3. दीपक कुमार ने 18 से 22 दिसम्बर 2002 तक एसोसिएशन आफ हिस्टोरिअन्स आफ एशिया, ढाका के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

4. दीपक कुमार ने 19 से 21 मार्च 2003 तक ससेक्स विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "फारेस्ट ऐंड एनवायरनमेंटल हिस्ट्री आफ द ब्रिटिश एम्पायर", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

5. बिनोद खादरिया ने 24 मई 2002 को द फ्लेमिश इंटर यूनिवर्सिटी काउंसिल, सेंटर फार इक्वल अपरच्युनिटीज ऐंड अपोजीशन टु रेशिज्म, द हायर इंस्टीट्यूट आफ लेबर स्टडीज (यूनिवर्सिटी आफ ल्युविन) आई एल ओ और आई ओ एम द्वारा फेडरल पार्लियामेंट आफ बेल्जियम, बुसेल्स में आयोजित "ब्रेन ड्रेन ब्रेन ग्रेन ओर ब्रेन ट्रांस्फर–लासिंग देअर माइंड्स ?" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "द इमिग्रेशन आफ नालेज वर्कर्स", विषयक कार्यशाला आयोजित की तथा "ए क्लोजर लुक इंटु द शिफ्टिंग पैराडिग्म आफ ब्रेन ड्रेन : एन्टिथिसिस टु द इमर्जेन्स आफ सर्कुलेटरी माइग्रेशन आफ नालेज वर्कर्स फ्राम डिवलपिंग कंट्रीज एज ए बिल्ट -- इन रेमडी शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. बिनोद खादरिया को 23 से 26 सितम्बर 2002 तक फीजी में आयोजित "सब्जेक्ट आफ द माइग्रेशन ऐंड पावर्टी", विषयक 5वें एशिया–पेसिटिक माइग्रेशन रिसर्च नेटवर्क के सम्मेलन में भारत के लिए क्षेत्रीय समन्वयक के रूप में आमंत्रित किया गया तथा उन्होंने "हाई स्किल इमिग्रेशन ऐंड पावर्टी एलिविएशन इन इण्डिया : टुवर्डस माडलिंग द प्रिफ्रेस फार ए पाजिटिव रिलेशनशिप", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. बिनोद खादरिया ने 15 से 16 नवम्बर 2002 तक तामकंग विश्वविद्यालय, तानसुई, ताइपेई, ताइवान द्वारा आयोजित "ग्लोबेलाइजेशन, एज्यूकेशन ऐंड लैंग्यूवेज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "ग्लोबेलाइजेशन आफ एज्यूकेशन : पालिसी कंसर्स इन द इमर्जिंग ट्रेन्डस आफ इमवाडीड ऐंड डिसइमबाडीड मोबिलिटी आफ नालेज", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. बिनोद खादरिया ने 21 से 22 नवम्बर 2002 तक आई.यू.ई.डी., जिनेवा और आई.आर.डी., पेरिस द्वारा जिनेवा में आयोजित "डिवलपमेंट थ्रू नालेज ? ए न्यू लूक ऐट द ग्लोबल नालेज–बेस्ड इकोनामी ऐंड सोसाइटी", विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "डिवलपमेंट टेल्स इन इकोनामिक्स : सार्फिंग द यूनिवर्स आफ डिस्कोर्सिस आन नालेज", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. बिनोद खादरिया ने 7 मार्च 2003 को ओ ई सी डी, पेरिस द्वारा आयोजित "ह्युमन रिसोर्सिस डिवोटिड टु साइंस ऐंड टेक्नोलाजी", विषयक नेस्टी की कार्यशाला में भाग लिया तथा "इण्डियन एच.आर.एस.टी. ऐंड इंटरनेशनल मोबिलिटी आफ हाइली स्किल्ड लेबर–प्रिजेंटेशन आफ डाटा, डाटा सोर्सिस ऐंड द केस स्टडीज", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

10. ध्रुव रेना और आगथे केल्लर ने 15 से 17 मई 2002 तक पेरिस में आयोजित "द हिस्ट्री ऐंड हिस्ट्रोग्राफी आफ प्रूफ्स इन ऐंशन्ट ट्रेडिशंस" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "द प्रिहिस्ट्री आफ प्रूफ : फ्राम कोलिब्रोक टु थिबौथ", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

11. ध्रुव रेना, एस. इरफान हबीब ने 14 से 16 नवम्बर 2002 तक पिट्सबर्ग द्वारा आयोजित "एशियन मेडिसिन नेशनलिज्म ट्रांसनेशनलिज्म ऐंड द पालिटिक्स आफ कल्चर", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "रिइन्वेंटिंग ट्रेडिशनल मेडिसिन : थ्री प्रोजेक्ट्स आन मैथड, इंस्टीट्यूशनल चेंज, ऐंड द मैन्युफैक्चर आफ ड्रग्स ऐंड मेडिकेशन इन लेट कलोनिअल इण्डिया", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. रणबीर चक्रवर्ती ने दिसम्बर 2002 में जेएनयू और ससेक्स विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित "एनवायरनमेंट ऐंड हिस्ट्री" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. इमराना कादिर ने 26 से 27 अगस्त 2002 तक फैकल्टी आफ मैडिसिन, यूनिवर्सिटी आफ कोलम्बो, श्रीलंका द्वारा आयोजित "मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सैक्टर इन साउथ एशिया", विषयक द्वितीय समीक्षा बैठक में भाग लिया।

2. इमराना कादिर ने 23 से 25 नवम्बर 2002 तक काठमाण्डु, नेपाल द्वारा आयोजित "मेथडोलाजी आफ हैल्थ सिस्टम्स रिसर्च" विषयक आरआईएजीजी एमएएएसटीआरआईसीएसटी कार्यशाला में भाग लिया और "मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सैक्टर पालिसीज इन साउथ एशिया", आलेख प्रस्तुत किया।

3. मोहन राव ने 3 से 6 अक्टूबर 2002 तक मैक्सिको द्वारा आयोजित "गौदलाजरा" विषयक एविड (एसासिएशन फार वुमन इन डिवलपमेंट) के नौवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

4. मोहन राव ने 14 से 18 अक्टूबर 2002 तक कुनमिंग, चीन द्वारा आयोजित 6ठी एशिया पेस्फिक सोशल साइंस ऐंड मेडिसिन कांग्रेस में भाग लिया।

5. मोहन राव ने 27 से 30 मार्च 2003 तक डोरसेट यू.के. द्वारा आयोजित "वुमन पब्लिक हैल्थ पाप्यूलेशन ऐंड ग्लोबलाइजेशन", विषयक बैठक में भाग लिया तथा "वुमन'स ग्लोबल नेटवर्क फार रिप्रोडक्टिव राइट्स ऐंड कार्नरहाउस", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. रामा वी. वारू ने 23 से 25 नवम्बर 2002 तक रिआग, मिस्ट्रच्ट, काठमाण्डु नेपान द्वारा आयोजित "मेथडोलाजी आफ हैल्थ सिस्टम्स रिसर्च", विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

7. रामा वी. वारू ने 26 से 28 सितम्बर 2002 तक आई.एल.ओ. और डब्ल्यू एच ओ के सहयोग से टुबरोविंक क्रोसिया में आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड सोशल पालिसी", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

8. रामा वी. वारू ने 3 से 5 मार्च 2003 तक अनरिस्ट, जिनेवा द्वारा आयोजित "कामर्शिलाइजेशन आफ हैल्थ केयर : ग्लोबल ऐंड लोकल डायनेमिक्स पालिसी रिस्पांसिस", विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

9. के.आर. नायर ने 23 जुलाई 2002 को डिपार्टमेंट आफ ट्रापिकल हाइजीन ऐंड पब्लिक हैल्थ यूनिवर्सिटी आफ हिडलबर्ग, जर्मनी द्वारा आयोजित "करंट रिसर्च इन इंटरनेशनल पब्लिक हैल्थ", विषयक आयोग संगोष्ठी श्रृंखला तथा "सेल्फ हैल्थ इन हैल्थ केयर : थर्ड वे आर नो वे", विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

10. के.आर. नायर ने 31 जुलाई 2002 को यूनिवर्सिटी आफ हिडलबर्ग, जर्मनी द्वारा आयोजित, सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार की अध्यक्षता में जी टी जेड प्रायोजित फैक्ट फाइंडिंग मिशन में "हैल्थ सिस्टम डिवलपमेंट ऐंड डिसेंट्रेलाइजेशन", शीर्षक पर परिचर्चा की।

11. रितु प्रिया मेहरोत्रा ने 24 से 26 मई 2002 तक सोस्टबर्ग, नीदरलैण्ड द्वारा आयोजित फेडरेशन आफ हैल्थ ऐंड ह्युमन राइट्स आर्गेनाइजेशंस के राइट टु हैल्थ : इंप्लिमेंटेशन ऐंड मानिटरिंग विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा हैल्थ सिस्टम्स रिस्पांस टु कम्युनल वायलन्स इन गुजरात शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

12. एस.एस. आचार्य ने 26 से 27 अगस्त, 2002 तक डिपार्टमेंट आफ कम्यूनिटी हैल्थ, यूनिवर्सिटी आफ कोलम्बो, श्रीलंका द्वारा आयोजित "मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सैक्टर", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

13. अल्पना सागर ने कोलम्बो, श्रीलंका द्वारा आयोजित "स्टडी आन मानिटरिंग शिफ्ट्स इन हैल्थ सैक्टर इन साउथ एशिया", विषयक द्वितीय समीक्षा बैठक में भाग लिया तथा "ए कंसिड्रेशन आफ सम इश्यूज इन न्यूट्रिशन ट्रेन्ड इन इण्डिया", विषयक शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. अरूण कुमार ने 2 से 4 दिसम्बर 2002 तक मिनिस्ट्री आफ फारेन अफेयर्स, फिनलैण्ड और क्राइसिस मैनेजमेंट इनिसिएटिव, फिनलैण्ड इन द हाल आफ इस्टेट हेलसिंकी द्वारा आयोजित "सर्चिंग फार ग्लोबल पार्टनरशिप", विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

2. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 12 सितम्बर 2002 को इकोनामिक रिसर्च सेंटर मिडिल ईस्टर्न टेक्नीकल यूनिवर्सिटी, अंकारा द्वारा आयोजित "फाइनेन्स ऐंड रीयल इकोनामी : द ग्लोबल कंजक्चर" विषयक वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

3. जयती घोष ने 8 से 10 मई 2002 तक लेवी इकोनामिक्स इंस्टीट्यूट आफ बार्ड कालेज, न्यूयार्क द्वारा आयोजित "जेंडर ऐंड मैक्रोइकोनामिक्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "एक्सपोर्ट–आरिएंटिड इंप्लायमेंट फार वुमन इन साउथ एशिया : पैटर्न्स ऐंड पालिसी इश्यूज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. जयती घोष ने 15 मई 2002 को वूडरोविल्सन इंटरनेशनल सेंटर फार स्कालर्स, वाशिंगटन, डी.सी. द्वारा आयोजित "वार इन साउथ एशिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "द इकोनामिक्स आफ वार" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. जयती घोष ने 11 से 14 सितम्बर 2002 तक मिडिल ईस्टर्न टेक्नीकल यूनिवर्सिटी, अंकारा, टर्की आयोजित इकोनामिक्स विषयक 6ठे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "इम्पेरिलिस्ट ग्लोबलाइजेशन ऐंड द पालिटिकल इकोनामी आफ साउथ एशिया", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. जयती घोष ने 13 से 14 नवम्बर 2002 तक मनीला फिलिपीन्स द्वारा आयोजित "जेंडर मैक्रोइकोनोमिक्स ऐंड ट्रेड" विषयक ए डी बी कार्यशाला में भाग लिया तथा "वुमन'स वर्क प्रोडक्टिविटी ऐंड ग्रोथ इन एक्सपोर्ट–ओरिएन्टिड मैन्युफेक्चरिंग इन साउथ एशिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. जयती घोष ने 15 नवम्बर 2002 को मिरिअम कालेज और फिलिपीन्स विश्वविद्यालय, मनीला फिलिपीन्स द्वारा आयोजित "वुमन वर्कर्स ऐंड द इंटरनेशनल इकोनामी" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इज देअर ए ट्रेड आफ बिल्वीन इम्प्लायमेंट ऐंड वर्किंग कंडीशंस फार वुमन इन एशिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. जयती घोष ने दिसम्बर 2002 में मुटुकाडु, तमिलनाडु द्वारा आयोजित "इंटरनेशनल फाइनेन्स ऐंड द मैक्रोइकोनामिक पालिसीज आफ डिवलपिंग कंट्रीज" विषयक आइडिया के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "इंडिपेंडेंट आर इरेवलेन्ट ? द पालिटिकल इकोनामी आफ सेंट्रल बैंकिंग इन द ब्रेव न्यू वर्ल्ड", शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. प्रवीण झा ने इंटरनेशनल बजट प्रोजेक्ट आफ द सेंटर फार बजट ऐंड पालिसी प्राइआरटीज, वाशिंगटन में आयोजित सम्मेलन में आलेख प्रस्तुत किया। यह सम्मेलन 10 से 13 मार्च 2003 तक मैक्सिको सिटी में आयोजित किया गया।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई शाह ने 21 दिसम्बर 2002 को साउथ एशिया पेसिफिक ब्यूरो आफ एडल्ट एज्यूकेशन और ढाका अहसानिया मिशन, ढाका द्वारा आयोजित "साउथ एशिया कंसल्टेशन आन सी ओ एस पालिसी इनगेजमेंट इन इ एफ ए" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "फाइनेंसिंग आफ एडल्ट एज्यूकेशन इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. एस.वाई शाह ने 7 जनवरी 2003 को यूनेस्को इंस्टीट्यूट फार एज्यूकेशन तथा यूनिवर्सिटी आफ साउथ अफ्रीका, प्रिटोरिया द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की बैठक में भाग लिया तथा "ओवरव्यू आफ ट्रेनिंग अप्रोसिस फार ट्रेनिंग ग्रासरूट्स लेवल फैसिलिटेटर्स ? इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. अशोक पार्थासारथी ने 6 मार्च 2003 को लीडिंग एन.जी.ओ., जीन कम्पेन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित आर्गेनाइजेशन रिट्रीट में भाग लिया।

2. प्रणव एन देसाई ने 22 से 26 जनवरी 2003 तक आन्ध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम में आयोजित पावर आफ साइंस ऐंड टेक्नोलाजी, वायलेन्स ऐंड सोसायटी : ए नीड फार पैराडिग्मेटिक शिफ्ट : XXVI इण्डियन सोशल

साइंस कांग्रेस विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा पावर आफ साइंस ऐंड टेक्नोलाजी, वायलेन्स ऐंड सोसायटी : ए नीड फार पैराडिग्म शिफ्ट शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

3. नासिर तैयबजी ने 14 से 15 सितम्बर 2002 तक जर्नल सोशल साइंटिस्ट और डा. गाडगिल सेंटिनरी कमेटी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स फार इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "लर्निंग टु इनोवेट वर्सिस लर्निंग टु मेन्यूफेक्चर : टुवर्ड्स ऐन अल्टरनेटिव टेक्नोलाजी स्ट्रेटजी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. नासिर तैयबजी ने 4 से 7 दिसम्बर 2002 तक जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, जेएनयू और ससेक्स विश्वविद्यालय, यू.के. द्वारा नई दिल्ली में आयोजित एनवायरनमेंटल हिस्ट्री आफ एशिया विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा सत्र की परिचर्चा एवं अध्यक्षता की।

5. नासिर तैयबजी ने 6 मार्च 2003 को द लीडिंग एन जी ओ जीन कैम्पेन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित आर्गेनाइजेशनल रिट्रीट में भाग लिया।

6. के.जे. जोसफ ने 8 से 9 जून 2002 तक द कंज्यूमर यूनिटी ऐंड ट्रस्ट सोसायटी द्वारा चैन्नई में आयोजित कम्पीटीशन रेग्युलेशन ऐंड इनवेस्टमेंट : रोल इन इकोनामिक ग्रोथ विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा स्लिप बिटवीन द कप ऐंड द लिप : एन एनालिसिस आफ अप्रूव्ड ऐंड रिअलाइज्ड एफ डी आई इन इण्डिया (महेश शर्मा और निमेश चन्द्र के साथ संयुक्त रूप से) आलेख प्रस्तुत किया।

7. के.जे. जोसफ ने 9 से 11 दिसम्बर 2002 तक द इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज हेग, नीदरलैण्ड और द इंस्टीट्यूट आफ ह्यूमन डिवलपमेंट, नई दिल्ली, बंगलौर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित आईसीटी'ज ऐडं इण्डियन डिवपलमेंट विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा मूविंग अप आर लैगिंग बिहाइन्ड इन टेक्नोलाजी ? एन एनालिसिस आफ इण्डिया'स आई सी टी सैक्टर शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. के.जे. जोसफ ने 3 से 5 मार्च 2003 तक द स्कूल आफ पब्लिक पालिसी, जार्ज मेशन यूनिवर्सिटी, वर्जिनिया, यू. एस.ए. और डिपार्टमेंट आफ मैनेजमेंट स्टडीज, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इण्डियन डिवलपमेंट विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा पेरिल्स आफ एक्सेसिव एक्सपोर्ट ओरिएन्टेशन : द केस आफ इण्डियन'स आईसीटी सैक्टर शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. के.जे. जोसफ ने 18 अप्रैल 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू में आयोजित द आई.टी. फैक्टर इन ग्लोबलाइजेशन विषयक पंडित हृदयनाथ कुंजरू स्मारक व्याख्यान दिया।

10. के.जे. जोसफ ने 19 अगस्त 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज में आयोजित ग्रोथ पर्फोमेन्स आफ इण्डिया'स आईसीटी. सैक्टर विषयक 2 व्याख्यान दिए।

11. के.जे. जोसफ ने 7 से 8 अक्टूबर 2002 तक अकादमिक स्टाफ कालेज में आयोजित इण्डिया'स आईसीटी. बूम : चैलेंज्स अहेड विषयक 2 दो व्याख्यान दिए।

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. जोया हसन ने नवम्बर में रोली बुक्स मंसूरी द्वारा आयोजित राइटर्स रिट्रीट में भाग लिया।

2. जोया हसन ने दिसम्बर 2002 में नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित डाइवर्सिटी आफ मुस्लिम वुमन'स लाइव्स इन इण्डिया विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

3. बलवीर अरोड़ा ने 10 अप्रैल 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित इलैक्शन प्रोसिस इन इण्डिया विषयक आई.सी.एस.एस.आर. कार्यशाला में भाग लिया।

4. बलवीर अरोड़ा ने 26 अप्रैल 2002 को इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसिस ऐंड फोरम आफ फेडरेशंस (कमाडा) द्वारा नई दिल्ली में आयोजित "मकेनिज्म आफ इंटर–गर्वनमेंटल रिलेशंस इन इण्डिया" विषयक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

5. बलवीर अरोड़ा ने 11 जनवरी 2003 को दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, दिल्ली सचिवालय द्वारा आयोजित, "रिआर्गेनाइजेशन आफ दिल्ली" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

6. बलवीर अरोड़ा ने 15 जनवरी 2003 को इण्डियन कांउसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स, सप्रू हाउस, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एक्सपेंशन आफ द यूरोपीयन यूनियन ऐंड इट्स रैमिफिकेशंस" विषयक पैनल परिचर्चा में भाग लिया।

7. बलवीर अरोड़ा ने 25 जनवरी 2003 को पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय द्वारा प्रायोजित भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित "डेमोक्रेसी ऐंड डाइवर्सिटी : इण्डिया ऐंड द अमेरिकन इक्सपिरिअन्स" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

8. बलवीर अरोड़ा ने 4 अक्टूबर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "इंटरफेस बिटवीन फारेन ऐंड डोमेस्टिक पालिटिक्स" विषयक व्याख्यान दिया।

9. सुधा पई ने 21 23 मार्च 2003 तक गिरि इंस्टिट्यूट आफ डिवलपमेंट स्टडीज, लखनऊ द्वारा आयोजित "डेप्रिवेशन ऐंड डिवलपमेंट : आप्शंस ऐंड स्ट्रेटजीस फार उत्तर प्रदेश" विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "डेप्रिवेशन ऐंड डेवलपमेंट इन यू.पी. : द इकोनोमिक अजेंडा आफ द बी.एस.पी." शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

10. सुधा पई ने 4 से 6 अप्रैल 2002 तक सामाजिक और आर्थिक अध्ययन केंद्र, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद में आयोजित "पालिटिक्स आफ इकोनामिक्स रिफार्म इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "पाप्यूलिज्म ऐंड इकोनोमिक रिफार्म इन यू.पी. : द बी.जे.पी. एक्सपेरिमेंट" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया। यह आलेख एक भाग में प्रकाशित हो रहे हैं।

11. गुरप्रीत महाजन ने 30 से 31 मार्च, 2003 तक सेंटर फार स्टडीज इन सिविलाइजेशन में आयोजित "हिस्ट्री आफ इण्डियन साइंस, फिलास्फी आफ कल्चर" विषयक परियोजना के तहत "एकोमोडेटिंग डिफ्रेंसिस इन प्लुरल सोसायटी : थ्री रिस्पोंसिस फ्राम प्रि–इंडिपेंडेंस इण्डिया" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

12. गुरप्रीत महाजन ने 3 से 5 जनवरी 2003 तक राजनीतिक विज्ञान विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा आयोजित "पालिटिकल थीअरि इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "रिथिंकिंग मल्टिकल्चरलिज्म" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

13. गुरप्रीत महाजन ने 29 अगस्त 2002 को गार्गी कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित "ऐप्लाइड ऐथिक्स" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "ऐथिक्स आफ डिस्क्रिमिनेशन : जेंडर कास्ट ऐंड रिलीजन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

14 गुरप्रीत महाजन ने 22 अप्रैल 2002 को सेंटर डे साइंसिस ह्यूमेनिज, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "रिजर्वेशंस ऐंड पालिटिकल रिप्रेजेंटेशंस" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "रिजर्वेशंस फार शैड्यूल्ड कास्टस" शीर्षक आलेख पर परिचर्चा की।

15. गुरप्रीत महाजन ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "पोस्टमाडर्निज्म" विषयक व्याख्यान दिया।

16. गुरप्रीत महाजन ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "मल्टिकल्चरलिज्म" विषयक व्याख्यान दिया।

17. गुरप्रीत महाजन ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "कंटेम्पोरेरि लिबरल थीअरि" विषयक व्याख्यान दिया।

18. कुलदीप माथुर ने अप्रैल 2002 में भारतीय प्रबन्धन संस्थान, कलकत्ता द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन, गुड गवर्नेन्स ऐंड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा बैनर्जी ने 3 जून से 26 जुलाई 2002 तक इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ रिमोट सेंसिंग, नेशनल रिमोट सेंसिंग एजेन्सी, डिपार्टमेंट आफ स्पेस गवर्नमेंट आफ इण्डिया, देहरादून द्वारा "जी.आई.एस. टेक्नोलाजी ऐंड ऐप्लिकेशंस" विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

2. अनुराधा बैनर्जी ने 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2002 तक अहमदाबाद मे आयोजित "कनवर्जेन्स आफ इमेजरी, इनफार्मेशन ऐंड गैप्स" विषयक 22वीं इंसा कांग्रेस में भाग लिया।

3. अनुराधा बैनर्जी ने 2 से 6 दिसम्बर 2002 तक इन्दिरा गांधी इंस्टीट्यूट आफ डिवलपमेंट रिसर्च, मुम्बई द्वारा आयोजित "अर्बन एनवायरनमेंट मैनेजमेंट" विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

4. बी.एस. बुटोला ने अक्टूबर 2002 में डी.एफ.डी.आई., दिल्ली द्वारा आयोजित "लिवलीहुड आप्शन ऐंड ओवरसीज डिवलपमेंट इंस्टीट्यूट" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

5. बी.एस. बुटोला ने 4 से 7 दिसम्बर 2002 तक जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र जेएनयू और ससेक्स विश्वविद्यालय यू.के., द्वारा दिल्ली में आयोजित "एनवायरनमेंटल हिस्ट्री आफ एशिया" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

6. जी.के. चड्ढा ने 14 मई 2002 को भारतीय सामाजिक विज्ञान संघ, सूरज कुंड, हरियाणा द्वारा आयोजित "रिलेवेंस आफ सिग्निफिकेंस आफ सोशल साइंसिस एक्टिविटीज ऐंड रिसर्च" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

7. जी.के. चड्ढा ने 9 जून 2002 को अहेड 2002 में एसोकेम द्वारा आयोजित सम्मेलन व प्रदर्शनी में भाग लिया तथा "अपरच्युनिटीज फार स्टुडेंट्स ऐंड स्ट्रेस आन पैरेन्ट्स" विषयक सत्र में व्याख्यान दिया।

8. जी.के. चड्ढा ने 14 जून 2002 को आई.सी.डब्ल्यु.ए. में आयोजित "इण्डिया ऐंड अफ्रीका : न्यू हारिजन्स" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इश्यूज आफ डिवलपमेंट" विषयक 5वें सत्र की अध्यक्षता की।

9. जी.के. चड्ढा ने 29 जुलाई 2002 को सनेई द्वारा आयोजित "ग्लोबल रिसर्च" परियोजना कार्यशाला में भाग लिया तथा "इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

10. जी.के. चड्ढा ने 2 अगस्त 2002 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "डिवलपमेंट आफ इण्डियन इाकेनामी : द रिफार्म सीनारियो" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्षीय व्याख्यान दिया तथा "ग्लोबलाइजेशन ऐंड इट्स इम्पैक्ट आन इण्डियन इकोनामी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

11. जी.के. चड्ढा ने 6 से 7 अक्टूबर 2002 को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी द्वारा आयोजित "चैलेंजिस इन हायर एज्यूकेशन इन द न्यू मिलेनियम" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

12. जी.के. चड्ढा ने 7 अक्टूबर 2002 को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय में "ए.आई.यू.'स नार्थ जोन वाइस चांसलर्स" के सम्मेलन में भाग लिया।

13. जी.के. चड्ढा ने 6 नवम्बर 2002 को सी.एस.सी.पी., नई दिल्ली द्वारा आयोजित "मेथडोलाजिकल इश्यूज" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

14. जी.के. चड्ढा ने आर.आई.एस., नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एग्रीकल्चर ट्रेड लिबरलाइजेशन ऐंड साउथ एशिया–इंप्लिकेशंस ऐंड आप्शंस" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा एक सत्र की अध्यक्षता की।

15. जी.के. चड्ढा ने 11 दिसम्बर 2002 को द वर्ल्ड कमीशन के तहत आयोजित "सोशल डायमेंशंस ऐंड ग्लोबलाइजेशन" विषयक राष्ट्रीय परिचर्चा में भाग लिया।

16. जी.के. चड्ढा ने 15 से 17 दिसम्बर 2002 तक गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर द्वारा आयोजित "द इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनोमिक्स" के 44वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा "रूरल नान फार्म इम्प्लायमेंट इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

17. जी.के. चड्ढा ने 19 से 20 दिसम्बर 2002 तक नई दिल्ली में आयोजित इण्डियन सोसायटी आफ एग्रीकल्चर इकोनामिक्स के 62वें वार्षिक सम्मेलन में अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

18. जी.के. चड्ढा ने 25 से 26 मार्च 2003 तक जेएनयू – आई.एफ.पी.आर.आई. के सहयोग से आयोजित "द ड्रेगन ऐंड द ऐलिफेन्ट : ए कम्पैरेटिव स्टडी आफ इकोनामिक ऐंड एग्रीकल्चरल रिफार्म्स इन चाइना ऐंड इण्डिया" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "रूरल नान–फार्म सैक्टर इन इण्डियन इकोनामी : ग्रोथ चैलेंजिस ऐंड फ्युचर डाइरैक्शन" शीर्षक आलेख पढ़ा।

19. जी.के. चड्ढा ने 21 मार्च 2003 को "द रिजल्ट्स आफ एन.एस.एस. 56थ राउन्ड" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इंप्लायमेंट इन आर्गेनाइज्ड मैन्युफैक्चरिंग इन इण्डिया : पोस्ट रिफार्म ट्रेन्ड्स ऐंड फ्युचर डाइरेक्शंस" शीर्षक (पी.पी. साहू के साथ संयुक्त रूप से) आलेख पढ़ा।

20. जी.के. चड्ढा ने 5 अगस्त 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज जेएनयू मे "इण्डियन इकोनामी आन क्रास रोड्स : इमर्जिंग चैलेंजिस ऐंड अपच्युनिटीज" विषयक व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान अर्थशास्त्र में पुनश्चर्या कोर्स के प्रतिभागियों के लिए दिया गया।

21. नारायण सी. जेना ने 14 से 15 सितम्बर 2002 तक डी.आर. गाडगिल सेंटिनरी कमेटी ऐंड सोशल साइंटिस्ट, जेएनयू नई दिल्ली द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स बिफोर इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

22. नारायण सी. जेना ने 13 से 15 दिसम्बर 2002 तक ए आई एफ यू सी टी ओ, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "वर्ल्ड फेडरेशन आफ टीचर्स यूनियन्स" विषयक 15वें सम्मेलन में और "सेव ऐंड स्ट्रेंथन पब्लिक एज्यूकेशन" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

23. नारायण सी. जेना ने 18 से 20 दिसम्बर 2002 तक भूविज्ञान विकास फाउन्डेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "सटेनेबल एग्रीकल्चर, वाटर रिर्सोसिस डिवलपमेंट ऐंड अर्थ केयर पालिसीज" विषयक द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

24. नारायण सी. जेना ने 14 से 16 फरवरी 2003 तक अखिल भारत भुविधा ओ परिवेश समिति, शांतिनिकेतन के सहयोग से नेचुरल डिजेस्टर मैनेजमेंट सेल, विश्व भारती के सहयोग से आयोजित "रिवर फ्लड्स : ए सोसिओ–टेक्नीकल अप्रोच" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "मेजर फ्लड्स आफ द वर्ल्ड इन 1990'स : लेसन्स फार फ्लड मैनेजमेंट इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

25. नारायण सी. जेना ने 15 से 16 फरवरी 2003 तक बर्दवान में आयोजित "कामर्स ऐंड कल्चर : इण्डियन कंटेक्स्ट" विषयक भारत विधा चर्चा केंद्र के तीसरे वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा "इज ग्लोबलाइजेशन ए थ्रेट टु इण्डियन कल्चर ?" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

26. अतिया किदवई ने (जय ड्राइडीक, कार्लेटन विश्वविद्यालय, कनाडा के साथ) 6 से 7 फरवरी 2003 तक इग्नू वर्ल्ड बैंक द्वारा आयोजित "अर्जेन्ट इश्यूज इन डिसप्लेसमेंट, रिसेटलमेंट ऐंड रिहैबिलिटेशन" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "डिवलपमेंट इंड्यूस्ड पाप्यूलेशन डिसप्लेसमेंट : केस स्टडीज फ्राम अर्बन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

27. अतिया किदवई ने 22 से 23 फरवरी, 2003 तक एनवायरनमेंटल लॉ मैनेजमेंट कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोजेक्ट, बी. एच.यू. लॉ स्कूल द्वारा आयोजित "सस्टेनेबल रूरल ऐंड टाउन प्लानिंग" विषयक प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया तथा "द कंसेप्ट आफ सस्टेनेबल डिवलपमेंट ऐंड द करंट प्रक्टिस आफ अर्बन प्लानिंग इन इण्डिया : ए केस स्टडी आफ बंगलौर" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

28. पी.एम. कुलकर्णी ने उत्तरांचल सरकार द्वारा आयोजित "रिप्रोडक्टिव ऐंड चाइल्ड हैल्थ पालिसी इश्यूज इन उत्तरांचल" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा आलेख प्रस्तुत किया।

29. पी.एम. कुलकर्णी ने 2 से 3 मई 2002 तक देहरादून में आयोजित "अनमेट नीड फार कंट्रासेप्शन इन उत्तरांचल -- इविडेंस फ्राम द एन.एफ.एच.एस.–2 ऐंड द आर.सी.एच. सर्वे" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "रोल आफ द अदर एजैंसीज" शीर्षक सत्र की भी अध्यक्षता की।

30. पी.एम. कुलकर्णी ने 5 से 6 अगस्त 2002 तक आई.ए.एस.पी. द्वारा आयोजित "भरतिया, विश्वविधालय, कोयम्बतूर में इमर्जिंग इश्यूज इन पाप्यूलेशन ऐंड हैल्थ इन द साउथर्न स्टेट्स आफ इण्डिया" विषयक संगोष्ठी में भाग लिथा तथा "डू स्टेट्स इन द साउथर्न रीजन नीड टु फार्म्युलेट स्टेट पाप्यूलेशन पालिसीज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

31. एम. सतीश कुमार ने 19 से 20 दिसम्बर 2002 तक (एस. नाग के साथ संयुक्त रूप से) नेहरू मेमोरियल म्युजियम ऐंड हिस्ट्री, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "नार्थ–ईस्ट चैलेंजिस ऐंड रिस्पांस" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "नोवल सैवेज्स टु जेंटलमैन : डिस्कोर्सिस आफ इंग्लिशनैस ऐंड आइडेंटिटी अमंग द ट्राइबल्स आफ नार्थ–ईस्ट इंडिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

32. एम. सतीश कुमार ने 15 से 17 दिसम्बर 2002 तक (आर.के. शर्मा और एस. मेहर के साथ संयुक्त रूप से) पंजाब स्कूल आफ इकोनामिक्स, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर द्वारा आयोजित 44वें लेबर इकोनामिक्स सम्मेलन में भाग लिया तथा "एज्यूकेशन स्किल्स ऐंड द लेबर मार्किट इन ए ग्लोबल वर्ल्ड : ए केस आफ इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

33. एम. सतीश कुमार ने 22 से 23 नवम्बर 2002 तक नेहू द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन इंप्लायमेंट माइग्रेशन ऐंड ट्रेड : रिलेवेंस फार द नार्थ–ईस्टर्न रीजन आफ इण्डिया" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "स्ट्रक्चर ऐंड ट्रेन्ड्स इन द इनफार्मल सैक्टर : ए केस आफ नार्थ–ईस्ट इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

34. एम. सतीश कुमार ने अगस्त 2002 में भूगोल विभाग किरोड़ीमल कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "पोस्ट एन्जेलीस इन जिओग्राफी : रिआलिस्टिक असेसमेंट आफ डिस्कोर्सिस" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

35. एम. सतीश कुमार ने 14 सितम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज जेएनयू मे इकोनामिक्स में 27वें पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "एनवायरनमेंटल इंप्लिकेशन इन द थर्ड वर्ल्ड" विषयक व्याख्यान दिया।

36. असलम महमूद ने अप्रैल 2002 में गाजियाबाद में आयोजित "कामनवेल्थ ब्यूरो आफ जिओग्राफर्स" विषयक कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया तथा "पाप्यूलेशन ग्रोथ इकोनामिक डिवलपमेंट ऐंड फूड सिक्युरिटी इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

37. अशोक माथुर ने यू.एन.डी.पी., गवर्नमेंट आफ झारखंड और आई.एच.डी. द्वारा आयोजित (नीरा रामचन्द्रन के साथ संयुक्त रूप से), "झारखण्ड : ए डिवलपमेंड विजन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इको–फार्मेशन ऐंड ह्युमन डिवलपमेंट इन झारखण्ड : एन ओवरव्यू" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

38. अशोक माथुर ने "टुवर्डस इकोनामिक रिसर्जेन्स आफ बिहार" विषयक बिहार इकोनामिक एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

39. अशोक माथुर ने गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ द्वारा आयोजित "डिप्रिवेंशन ऐंड इनक्लुसिव डिवलपमेंट : आप्शंस ऐंड स्ट्रेटजीस फार यू.पी." विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "टू फेसेट्स आफ इकोनामिक डेप्रिवेशन इन इण्डिया : अन इम्प्लायमेंट ऐंड पावर्टी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

40. अशोक माथुर ने जामियो मिल्लिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "पावर्टी ऐंड फूड सिक्युरिटी इन इण्डिया : प्राब्लम्स ऐंड पालिसीज" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा सत्र की अध्यक्षता की एवं परिचर्चा की।

41. अशोक माथुर ने पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा आयोजित "ट्रेडिशनल क्राइसिस इन ग्रीन रिवोल्युशन बेल्ट ऐंड रिस्पांस आफ पब्लिक पालिसी" विषयक संगोष्ठी में ाग लिया।

42. अशोक माथुर ने इंस्टीट्यूट फार ह्युमन डिवलपमेंट, नई दिल्ली द्वारा अयोजित "इकोनामिक रिफार्म्स ऐंड द लेबर कमीशन रिपोर्ट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

43. सुदेश नांगिया ने 11 से 12 फरवरी, 2003 तक भूगोल विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "डेमोग्राफिक डायनेमिज्म इन इण्डिया विद ए फोकस आन 2001" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया (सत्र की अध यक्षता की) तथा "पाप्यूलेशन ग्रोथ ऐंड इट्स इम्पेक्ट आन एनवायरनमेंट इन मेगासिटीज आफ इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

44. सुदेश नांगिया ने 23 फरवरी, 2003 को हिन्दू कालेज, अल्मोड़ा उ.प्र. द्वारा आयोजित "पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट" विषयक भूगोल के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

45. सुदेश नांगिया ने 21 से 22 फरवरी, 2003 तक भूगोल विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित "स्पेशल इनफोर्मेशन टेक्नोलाजी फार सस्टेनेबल एग्रीकल्चरल डिवलपमेंट" विषयक डी.एस.ए., यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित संगोष्ठी में भाग लिया तथा एक सत्र की अध्यक्षता की।

46. सुदेश नांगिया ने 25 से 26 मार्च 2003 तक आई.एफ.पी.आर.आई. और जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "ड्रेगन ऐंड द एलिफेन्ट : ए कम्पैरेटिव स्टडी आफ इकोनोमिक ऐंड एग्रीकल्चर रिफार्म्स इन चाइना ऐंड इण्डिया" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

47. सरस्वती राजू ने 17 मई 2002 को सेंट्रल डाइरैक्टोरेट आफ एडल्ट एज्यूकेशन और यूएनएफपीए द्वारा आयोजित "पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट एज्यूकेशन प्रोजेक्ट" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

48. सरस्वती राजू ने जुलाई 2002 में इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "टुवर्डस फ्रेश इनसाइट्स इमर्जिंग लिट्रेसी सेनारियो – वाट डू द 2001 सेंसस डाटा टैल अस" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

49. सरस्वती राजू ने 5 अक्टूबर 2001 को (बर्नाली विश्वास के साथ) "प्रोग्रेस आफ लिट्रेसी इन इण्डिया : वाट द सेंसस 2001 रिवील्स" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "महाराष्ट्र : ए सोशल स्पेशल एनालिसिस आफ लिट्रेसी ट्रेन्डस विद स्पेशल रिफ्रेंस टु 2001 सेंसस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

50. सरस्वती राजू ने 15 से 17 दिसम्बर 2002 तक इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनामिक्स अमृतसर द्वारा आयोजित "जेंडर्ड लेबर मार्किट ऐंड स्किल फार्मेशन इन दिल्ली" विषयक 44वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

51. मिलाप सी. शर्मा ने 26 से 28 मार्च, 2003 तक डी.एम.टी. भारत सरकार द्वारा प्रायोजित जिओलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, ग्लेसिआलाजी, डिवीजन द्वारा आयोजित "ग्लेसियर" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "ग्लेसियल जिओमार्फोलाजी ऐंड ट्रेन्ड्स इन फ्लक्चुएशन आफ द गंगोत्री ग्लेशियर, एन.डब्ल्यु. गढ़वाल" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

52. आर.के. शर्मा ने दिसम्बर 2002 में इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनामिक्स, सी.एन.डी.यू. अमृतसर में आयोजित वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

53. हरजीत सिंह ने 9 से 10 मई, 2002 तक ग्रामीण विकास मंत्रालय, इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर द्वारा आयोजित प्रज्ञा वेस्टर्न हिमालयाज प्रोग्राम के तहत, "एनवायरनमेंट सोसायटी ऐंड द प्राब्लम्स आफ डिवलपमेंट इन द कोल्ड डेजर्ट आफ लद्दाख" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "एप्रोप्रिएट डिवलपमेंट आफ कोल्ड डेजर्टस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

54. हरजीत सिंह ने 1 से 2 नवम्बर 2002 तक आई.आई.सी. नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एनवायरनमेंट : साइंस ऐंड टेक्नोलाजी इंटरवेंशन फार कंजरवेशन ऐंड रिजेनरेशन" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "साइंस ऐंड टेक्नालाजी टु एनरजायिज द माउन्टेस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

55. हरजीत सिंह ने 14 नवम्बर 2002 को नादर्न रीजनल सेंटर आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली द्वारा आयोजित "रीजनल डिस्पैरिटी इन चाइना ऐंड फ्युचर डिवलपमेंट" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

56. हरजीत सिंह ने 11 से 12 फरवरी, 2003 तक भूगोल विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "डेमोग्राफिक डायनामिज्म इन इण्डिया" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "आस्पेक्ट्स आफ डिस्ट्रीब्यूशन ऐंड ग्रोथ आफ पाप्यूलेशन इन द इण्डियन हिमालयाज (सेंसस 2001)" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

57. के.एस. सिवासामी ने 1 से 19 अगस्त 2002 तक कलकत्ता में आयोजित "प्रोफेसर एस.पी. चटर्जी'स लाइफ ऐंड कंट्रीब्युशन टुवर्डस सोसायटी" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "प्रोफेसर चटर्जी ऐंड हाइड्रो जिओमार्फोलाजिकल स्टडीज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

56. एस.के. थोरट ने 15 नवम्बर 2002 को राजनीति विज्ञान विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, पणजी द्वारा आयोजित "कास्ट ऐंड इकोनामिक डिस्क्रिमिनेशन – रिफलेक्शन आन थीअरि कंसेप्ट ऐंड कंसिक्वेंसिस" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

59. एस.के. थोरट ने 6 अगस्त 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "इंस्टीट्यूशन ऐंड इकोनामिक ग्रोथ" विषयक व्याख्यान दिया।

60. एम.डी. विमूरी ने 11 से 12 अप्रैल 2002 तक महा पंजीयक और जनगणना आयुक्त, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "इनफेन्ट मार्टेलिटी : लेवल्स ट्रेन्ड्स ऐंड इंटरवेंशंस" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

61. एम.डी. विमूरी ने 14 नवम्बर 2002 को नार्दर्न रीजनल सेंटर, आई.सी.एस.एस.आर. और सी.एस.आर.डी. जेएनयू द्वारा आयोजित "एन इंट्रोडक्शन टु चाईना'स रीजनल डिस्पैरिटी ऐंड इट्स फ्युचर डिवलपमेंट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

62. एम.डी. विमूरी ने 25 से 26 मार्च 2003 तक आई.एफ.पी.आर.आई. और जेएनयू नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "द ड्रेगन ऐंड द एलिफेंट : ए कम्पैरेटिव स्टडी आफ इकोनामिक ऐंड एग्रीकल्चरल रिफार्म्स इन चाईना ऐंड इण्डिया" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

63. एम.एच. कुरेशी ने 15 अप्रैल 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज जेएनयू में "कंसेप्चुअलाइजिंग इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

दर्शनशास्त्र केन्द्र

1. पी.बी. मेहता ने सितम्बर 2002 में दिव्या, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "द आइडिया आफ कलेक्टिव रिस्पोंसिबिलिटी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

2. पी.बी. मेहता ने नवम्बर 2002 में गार्गी कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "ऐथिक्स ऐंड पालिटिक्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

3. पी.बी. मेहता ने नवम्बर 2002 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "अगेंस्ट टालरेशन" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

4. पी.बी. मेहता ने दिसम्बर 2002 में सी.एस.डी.एस. दिल्ली द्वारा आयोजित "कांट ऐंड थिओडिसी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

5. पी.बी. मेहता ने दिसम्बर 2002 में जामिया मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली द्वारा आयोजित "लिविंग टुगेदर सेप्रेटली" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "अगेंस्ट कम्पोजिट कल्चर" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. पी.बी. मेहता ने दिसम्बर 2002 में पी.एच.आई.एस.पी.सी., नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ट्रांस्लेटिंग डेमोक्रेसी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

7. पी.बी. मेहता ने फरवरी 2003 में दिल्ली में आयोजित "द डाइलेमा आफ मुस्लिम पालिटिक्स" जाकिर हुसैन स्मारक व्याख्यान दिया।

8. पी.बी. मेहता ने फरवरी 2003 में गोवा में आयोजित "सिटीजनशिप ऐंड द नेशन स्टेट" विषयक सी.एस.एस.सी. के सम्मेलन में भाग लिया।

9. पी.बी. मेहता ने 2003 में आयोजित "पोस्ट डेमोक्रेसी" विषयक इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ जुस्टिस के सम्मेलन में भाग लिया।

10. पी.बी. मेहता ने मार्च 2003 में पुणे विश्वविद्यालय, पुणे द्वारा आयोजित "द ऐथिक्स आफ टालरेशन" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

11. पी.बी. मेहता ने मार्च 2003 में पी.एच.आई.एस.पी.सी. के "द ट्रम्फ आफ हिन्दुत्व" के सम्मेलन में भाग लिया।

12. पी.बी. मेहता ने मार्च 2003 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "द ऐट्टीन्थ सेंचुरी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "ऐथिक्स ऐंड इविल" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

13. पी.बी. मेहता ने मार्च 2003 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "बुर्के, फ्यूर्ट ऐंड द क्वेश्चन आफ टेरॅर" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. योगेन्द्र सिंह ने 25 से 26 अक्टूबर 2002 तक आयोजित "बिल्डिंग ह्युमन कैपेबिलिटीज : टुवर्डस ए नालेज सोसायटी" विषयक संगोठी में भाग लिया।

2. योगेन्द्र सिंह ने 20 दिसम्बर 2002 को कानपुर में आयोजित आल इण्डिया सोसिआलाजिकल के 18वें सम्मेलन में भाग लिया तथा "फ्राम वर्ल्ड टु थिंग्स : कंटेम्पोरेरि चैलेंजिस टु सोसायटी ऐंड इट्स मेथड्स" विषयक व्याख्यान दिया।

3. के.एल. शर्मा ने 3 से 23 जनवरी 2003 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पुनश्चर्या कोर्स में राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर में सोसिआलाजी के 5वें पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।

4. के.एल. शर्मा ने 18 से 19 फरवरी 2003 तक राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पिछड़ा वर्ग के कल्याण के लिए राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्षों, सदस्यों और सदस्य सचिवों और रज्य सरकार/केंद्र शासित प्रदेशों के सचिवों के सम्मेलन में भाग लिया।

5. के.एल. शर्मा ने 15 अप्रैल, 2002 को आयोजित "सोसियालाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी (प्रो. वी.एन. वेणुगोपाल के सम्मान में) में भाग लिया तथा "कल्चर, इकोनामी ऐंड सोशल स्ट्रटिफिकेयशन : ए स्टडी आफ चन्देरी : ए स्माल टाउन इन मध्य प्रदेश" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. के.एल. शर्मा ने 2002 में आयोजित "इण्डियन डायसपोरा" विषयक संगोष्ठी (प्रो. आर.के. जैन के सम्मान में) में भाग लिया तथा "द तमिल डाइसपोरा, ऐथनिसिजेशन ऐंड स्टेट इन कंटेम्पोरेरि श्रीलंका" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

7. एम.एन. पाणिनी ने 26 से 28 मार्च, 2003 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "स्टेट, मार्किट ऐंड सोसायटी" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "कास्ट कम्यूनेलिज्म ऐंड लिबरलाइजेशन इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. एम.एन. पाणिनी ने 13 मार्च 2003 को दक्षिण भारतीय अध्ययन केंद्र, श्री वेंकटेश्वर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया तथा "वाई इज देअर नो कन्नड़ नेशनलिज्म" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. जे.एस. गांधी ने अप्रैल 2002 में आयोजित "इण्डियन डाइसपोरा" विषयक संगोष्ठी (प्रो. आर.के. जैन के सम्मान में) में भाग लिया तथा अध्यक्षता की।

10. जे.एस. गांधी ने 15 अप्रैल 2002 को आयोजित "सोसिओलाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी (प्रो. सी.एन. वेणुगोपाल के सम्मान में) का आयोजन किया।

11. जे.एस. गांधी ने 21 से 23 अक्टूबर 2002 तक सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू नई दिल्ली में आयोजित "रिथिंकिंग सोसियोलाजी : द इण्डियन कंटेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी (प्रो. टी.के. ऊमन के सम्मान में) में भाग लिया तथा "प्रोफेसन्स ऐंड स्टेट आप्रेटस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

12. ऐहसानुल हक ने 20 से 21 अप्रैल 2002 तक सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू में आयोजित "इण्डियन कल्चर इन द इमर्जिंग ग्लोबल आर्डर" विषयक कार्यशाला के सत्र की अध्यक्षता की।

13. ऐहसानुल हक ने 15 अप्रैल 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र सामाजिक विज्ञान संस्थान जेएनयू मेंा आयोजित "सोसियोलाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी के एक सत्र की अध्यक्षता की।

14. ऐहसानुल हक ने 3 से 5 सितम्बर 2002 तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा आयोजित "स्कूल टेक्स्टबुक्स" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

15. ऐहसानुल हक ने 30 सितम्बर 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान जेएनयू में आयोजित "प्राब्लम्स आफ माइनार्टीज इन बंगलादेश" विषयक संगोष्ठी के एक सत्र की अध्यक्षता की।

16. ऐहसानुल हक ने 21 से 23 अक्टूबर 2002 तक सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू में आयोजित "रिथिंकिंग सोसियोलाजी" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "सेक्युलर एज्यूकेशन ऐंड रिजिलिअन्स आफ ट्रेडिशन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

17. ऐहसानुल हक ने 4 से 7 दिसम्बर 2002 तक जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान जेएनयू में आयोजित "एनवायरनमेंटल हिस्ट्री आफ एशिया" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

18. ऐहसानुल हक ने 29 से 30 जनवरी 2003 तक सामाजिक विज्ञान संस्थान जेएनयू में आयोजित "रोल आफ बंगलादेश इन इनसर्जेन्सी इन द नार्थीस्ट" विषय राष्ट्रीय संगोष्ठी के एक सत्र की अध्यक्षता की।

19. ऐहसानुल हक ने 12 मार्च 2003 को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान जेएनयू में आयोजित "इण्डियन सोसायटी इन ट्रांजिशन" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला के एक सत्र की अध्यक्षता की।

20. आनन्द कुमार ने 19 जून 2002 को राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "चाइल्ड लेबर इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन की अध्यक्षता की।

21. तिपलुत नांगब्री ने अप्रैल 2002 में आकार और डिपार्टमेंट आफ सोसियोलाजी, नार्थ–ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग द्वारा आयोजित "इक्सप्लोरिंग मैसकुलिनिटी" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "डिकंस्ट्रक्टिंग मैसकुलिनिटी : फादरहुड मैट्रिलिनी ऐंड सोशल चेंज" विषयक व्याख्यान दिया।

22. तिपलुत नांगब्री ने 22 अक्टूबर 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू में आयोजित प्रोफेसर टी.के. ऊमन के अभिनन्दन समारोह में "एथनिसिटी, जेंडर ऐंड द स्टेट" विषयक व्याख्यान दिया।

23. तिपलुत नांगब्री ने 3 दिसम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज जेएनयू में आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "ट्राइबल स्टडीज इन इण्डिया : ए क्रिटिकल अप्रेजल" विषयक व्याख्यान दिया।

24. तिपलुत नांगब्री ने 6 से 8 जनवरी 2003 तक इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसिस, नई दिल्ली, सेंटर फार चाइनीज स्टडीज, यू.सी.एस.ए., लॉस एंजेल्स, इंस्टीट्यूट आफ सोसियोलाजी, पीकिंग यूनिवर्सिटी, बीजिंग और इंस्टीट्यूट आफ चाइनीज स्टडीज, सी.एस.डी.एस., दिल्ली द्वारा कलकत्ता में आयोजित "लोकल गवर्नेन्स इन इण्डिया ऐंड चाइना : रूरल डिवलपमेंट ऐंड सोशल चेंज" विषयक अतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "ट्रान्स हिमालयन पर्सपेक्टिव आन मैट्रिलिनी ऐंड द स्टेट : ए कम्पैरिजन आफ इण्डिया ऐंड चाईना" विषयक व्याख्यान दिया।

25. मैत्रीय चौधरी ने 28 सितम्बर 2002 को सेंट्रेल इंस्टीट्यूट आफ एज्यूकेशन, यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली और सेंटर फार वुमन'स डिवलपमेंट स्टडीज, दिल्ली यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली द्वारा आयोजित "द सोशल कंस्ट्रक्शन आफ जेंडर" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

26. मैत्रीय चौधरी ने अक्टूबर 2002 में एम.के.पी. (पी.जी.) कालेज देहरादून द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड जेंडर" विषयक शताब्दी समारोह में भाग लिया।

27. मैत्रीय चौधरी ने 3 दिसम्बर 2002 को सी.एस.डी.एस. द्वारा आयोजित "वुमन इन नानटीथ सेंचुरी इण्डियन राइटिंग" विषयक सम्मेलन की परिचर्चा की।

28. मैत्रीय चौधरी ने 17 जनवरी 2003 को जानकी देवी स्मारक कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय और यूनिवर्सिटी आफ सुन्दरलैण्ड द्वारा जे.डी.एम. कालेज में आयोजित "जर्नी आफ ए वुमन थ्रू लाईफ" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "रिप्रेंटेटिव आफ वुमन इन द मीडिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

29. मैत्रीय चौधरी ने 8 फरवरी 2003 को वाई.एम.सी.ए., चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "मीडिया ऐंड वायलन्स" विषयक कार्यशाला में भाग यिा तथा "रिप्रेजेंटेटिव वायलन्स इन द मीडिया : सम क्वेश्चन्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

30. मैत्रीय चौधरी ने 27 मार्च, 2003 को समाजशास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "स्टेट मार्किट ऐंड सोसायटी : इमर्जिंग इश्यूज ऐंड इंटरफेस इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "ग्लोबलाइजेशन ऐंड द प्रेक्टिस आफ सोसियोलाजी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

31. सुसन विश्वनाथन ने 19 नवम्बर, 2002 को फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केंद्र, जेएनयू द्वारा आयोजित सम्मेलन में "फिक्शन ऐंड कलेक्टिव रिप्रेजेंटेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

32. सुसन विश्वनाथन ने 12 दिसम्बर 2002 को जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "टाक ऐंड रीडिंग आफ शार्ट स्टोरीज" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

33. सुसन विश्वनाथन ने 23 अक्टूबर 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित प्रो. टी.के. ऊमन के अभिनन्दन समारोह में भाग लिया तथा "पालिटिक्स ऐंड द लिट्रेचर आफ ऐलिनेशन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

34. सुरिन्द एस. जोधका ने 21 अक्टूबर 2002 को जेएनयू नई दिल्ली द्वारा आयोजित "रिथिंकिंग इण्डियन सोसियोलाजी" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "रिथिंकिंग रीजन्स : एथनिक आइडेंटिटीज इन द इण्डियन पंजाब" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

35. सुरिन्द एस. जोधका ने 29 नवम्बर 2002 को चण्डीगढ़ में आयोजित नवीसा के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा "कंसेप्चुअलाइजिंग मार्जिनेलिटी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

36. सुरिन्द एस. जोधका ने 22 जनवरी 2003 को हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद में आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया तथा "कास्ट ऐंड जेंडर इन पंजाब" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

37. अमित कुमार शर्मा ने 15 अप्रैल 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान जेएनयू द्वारा आयोजित प्रो. सी.एन. वेणुगोपाल के सम्मान में आयोजित "सोसियोलाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "गांधी ऐज ए हिन्दू थिओलाजिअन" विषयक व्याख्यान दिया।

38. अमित कुमार शर्मा ने 20 से 21 अप्रैल 2002 तक सिटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित "इण्डियन कल्चर" दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

39. अमित कुमार शर्मा ने 3 से 5 सितम्बर, 2002 तक डिपार्टमेंट आफ एज्यूकेशन इन सोशल साइंसिस ऐंड ह्युमेंनिटीज, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा आयोजित "नेशनल कारिकुलम फ्रेम वर्क फार स्कूल एज्यूकेशन, 2000" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

40. निलिका मेहरोत्रा ने अप्रैल 2002 में उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय, सिलिगुड़ी में आयोजित "एथनिसिटी, आइडेंटिटी ऐंड मूवमेंट्स" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "माइग्रेशन ऐंड एथनिसिटी इन आसाम" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

41. निलिका मेहरोत्रा ने 15 अप्रैल 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान जेएनयू द्वारा आयोजित "सोसियालाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

42. निलिका मेहरोत्रा ने 6 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2002 तक अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू नई दिल्ली द्वारा आयोजित सामाजिक विज्ञान के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया।

43. निलिका मेहरोत्रा ने अक्टूबर 2002 में समाजशास्त्र विभाग एम.के.पी. (पी.जी.) कालेज देहरादून में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा "जेंडर ऐंड ग्लोबलाइजेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

44. निलिका मेहरोत्रा ने 23 से 25 जनवरी 2003 तक समाजशास्त्र विभाग, हैदराबाद द्वारा आयोजित "जेंडर ऐंड ग्लोबलाइजेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

45. निलिका मेहरोत्रा ने 28 फरवरी से 2 मार्च 2003 तक एथनोग्राफिक ऐंड फाक कल्चर सोसायटी, लखनऊ द्वारा आयोजित डी.एन. मजूमदार शताब्दी समारोह में भाग लिया तथा "जेंडर इन ट्राइबल एथनोग्राफिज आफ इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

46. निलिका मेहरोत्रा ने 6 मार्च, 2003 को वेंकटेश्वर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा "यंग मिडिल क्लास वुमन ऐंड ग्लोबलाइजेशन इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

47. निलिका मेहरोत्रा ने 7 मार्च 2003 को समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "फील्डवर्क मेथडोलाजी ऐंड एथनोग्राफिक राइटिंग" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

48. निलिका मेहरोत्रा ने 29 से 31 मार्च 2003 तक मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "पीपल्स आफ इण्डिया : एन्थ्रोपोलाजिकल पर्सपेक्टिव्स" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

49. रेणुका सिंह ने जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "रेलिवेन्स आफ बुद्धिज्म : सोसियोलाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

50. विवेक कुमार ने 14 नवम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज जेएनयू में "सोशल लेजिस्लेशन ऐंड इट्स इम्पैक्ट आन शैडयूल्ड कास्टस" विषयक व्याख्यान दिया।

51. विवेक कुमार ने 15 अप्रैल 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू में "रिलीजन इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "रिलीजंस रिस्पोंसिस आफ दलित्स इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

52. विवेक कुमार ने 4 से 5 अक्टूबर 2002 तक इंटरनेशनल सेंटर फार एथनिक स्टडीज, कोलम्बो द्वारा इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित "डाइवर्सिटी ऐंड प्लूरलिज्म ऐंड द रोल आफ नेशनल इंस्टीट्यूशंस इन द प्रोटेक्शन आफ माइनर्टीज राइट्स" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया तथा "नेशनल कमीशन फार शैड्ल्ड कास्ट्स ऐंड शैडयूल्ड ट्राइब्स" शीर्षक सत्र पर परिचर्चा की।

53. विवेक कुमार ने 21 से 23 अक्टूबर 2002 तक सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित "रिथिंकिंग सोसियोलाजी : इण्डियन कंटेक्स्ट" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "कंटेम्पोरेरि ट्रेन्ड्स इन दलित मूवमेंट" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

54. विवेक कुमार ने 26 से 27 नवम्बर 2002 तक प्रेस इंस्टीट्यूट आफ इण्डिया ऐंड कम्यूनिकेशन मैनेजमेंट फाउन्डेशन, नई दिल्ली द्वारा लखनऊ में आयोजित "मीडिया ऐथिक्स" विषयक क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "पोट्रेयल आफ वुमन इन मीडिया : ए मैक्रो पर्सपेक्टिव" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

55. विवेक कुमार ने 14 से 15 दिसम्बर 2002 तक सेंटर फार बिहेविअरल ऐंड सोशल साइंसिस इन मेडिसिन यूनिवर्सिटी कालेज लन्दन के सहयोग से बापू ट्रस्ट पुणे में आयोजित "कास्ट ऐंड डिस्कोर्सिस आफ द माइन्ड" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इज कास्टिज्म लीड टु स्टिग्मेटाइज्ड आइडेंटिटीज ? हाउ आर दे कंटेस्टिड ऐंड/आर सबवर्टिड : ए केस आफ दलित्स आफ इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

56.. विवेक कुमार ने 30 से 31 दिसम्बर, 2002 तक डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान महू (म.प्र.) द्वारा आयोजित "रेस्टोरेशन आफ ह्युमन राइट्स ऐंड डिग्निटी टु दलित्स विद स्पेशल रिफ्रेंस टु स्केवेजर्स" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "दलित वुमन : पैराडाक्टिस आफ इम्पावरमेंट : ए केस आफ धोबी (वासरवुमैन) आफ लखनऊ" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

56. विवेक कुमार ने 19 से 20 फरवरी 2003 तक वायस आफ दलित इंटरनेशनल इण्डिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "दलित्स ऐंड इंटरनेशनल डिवलपमेंट ऐड" के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "दलित इंटरनेशनल डिवलपमेंट ऐड – राम एक्सपेक्टेशंस" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

57. विवेक कुमार ने 8 से 9 फरवरी, 2003 तक समाजशास्त्र विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड द अनप्रिविलिज्ड : पर्सेप्शंस, फियर्स ऐंड करिकॉसिस" शीर्षक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "ग्लोबलाइजेशन ऐंड मोबिलाइजेशन आफ दलित्स ऐट इंटरनेशनल लेवल" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

58. विवेक कुमार ने 28 फरवरी से 2 मार्च 2003 तक ऐथनोग्राफिक ऐंड फाक कल्चर सोसायटी, लखनऊ द्वारा आयोजित "ट्राइबल आइडेंटिटी, ग्लोबलाइजेशन ऐंड प्लांड डिवलपमेंट" विषयक डी.एन. मजुमदार सेंटिनल अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "कंफ्रंटिग ट्राइबल आइडेंटिटीज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

59. विवेक कुमार ने 7 से 8 मार्च, 2003 तक अम्बेडकर केंद्र, समाजशास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "द इम्पावरमेंट आफ दलित्स इन द नार्थ वेस्ट इंडिया" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "इम्पावरमेंट आफ दलित यूथ" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. करूणा चानना ने 7 मार्च 2003 को राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "वुमन इन गवर्नेन्स" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

2. करूणा चानना ने 21 फरवरी, 2003 को नीपा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड चैलेंजिस फार एज्यूकेशन फोकस आन इक्विटी ऐट इक्वैलिटी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "साइंस रिलिजन ऐंड डिवलपमेंट" शीर्षक सत्र की अध्यक्षता की।

3. करूणा चानना ने 20 फरवरी, 2003 को नीपा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड चैलेंजिस फार एज्यूकेशन फोकस आन इक्विटी ऐंड इक्वैलिटी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "सोशल इनइक्वैलिटीज" शीर्षक सत्र की अध्यक्षता की।

4. करूणा चानना ने 19 फरवरी, 2003 को लेडी इरविन कालेज आफ होम साइंस, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "टीचर एज्यूकेशन : विजन आफ द रोड अहेड" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

5. करूणा चानना ने 27 जनवरी 2003 को राष्ट्रीय महिला आयोग नई दिल्ली द्वारा आयोजित "वुमन इन पब्लिक सैक्टर अंडरटेकिंग्स" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला की परिचर्चा की अध्यक्षता की।

6. करूणा चानना ने 10 जनवरी 2003 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर और साउथ एशिया सेंटर फार पालिसी स्टडीज, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "साउथ एशिया कोआपरेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

7. करूणा चानना ने 10 से 11 दिसम्बर 2002 तक नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "डाइवर्सिटी आफ वुमन'स लाइव्स इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

8. करूणा चानना ने 19 अक्टूबर 2002 को इंस्टीट्यूट आफ इनफार्मेटिक्स ऐंड कम्यूनिकेशन, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ग्रास रूट्स इनोवेशंस : ऐन एक्सपोज" विषयक सम्मेलन की परिचर्चा की।

9. करूणा चानना ने 25 से 27 सितम्बर 2002 तक नीपा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "फंकसनिंग आफ शिफ्ट स्कूल इन इंडिया" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

10. करूणा चानना ने 25 सितम्बर 2002 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एज्यूकेशन ऐंड डेमोक्रेसी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

11. करूणा चानना ने 14 से 15 जून 2002 तक नीपा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "फ्रेमिंग द फालो अप लेजिस्लेशन टु द फण्डामेंटल राइट टु एज्यूकेशन" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

12. करूणा चानना ने 9 से 10 मई, 2002 तक कनेडियन अध्ययन कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित कनाडा'स ग्लोबल इनगेजमेंट्स इन द टवेन्टी फर्स्ट सेंचुरी विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

13. करूणा चानना ने 26 से 27 अप्रैल, 2002 तक नीपा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "डिवलपमेंट आफ हायर एज्यूकेशन ड्यूरिंग द 10थ फाइव ईयर प्लान" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "डिवलपमेंट आफ वुमन इन हायर एज्यूकेशन ड्यूरिंग द 10थ फाइव ईयर प्लान" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

14. करूणा चानना ने 17 से 18 मई, 2002 तक राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "वुमन आन डिटेंशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

15. दीपक कुमार ने 29 से 31 जनवरी 2003 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित "साइंस टेक्नोलाजी ऐंड सोसायटी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

16. बिनोद खादरिया ने 18 से 20 सितम्बर 2002 तक वी.वी.जी.एन.एल.आई., इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनोमिक्स और इंस्टीट्यूट फार ह्युमन डिवलपमेंट आफ लेबर, नोयडा में आयोजित "लेबर मोबिलिटी इन ए ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड : कंसेप्चुअल ऐंड इम्पेरिकल इश्यूज" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इंप्लिकेशंस आफ इंटरनेशनलाइजेशन आफ प्रोडक्शन, ट्रेड ऐंड फाइनेन्स आन लेबर मोबिलिटी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

17. बिनोद खादरिया ने 15 से 17 दिसम्बर, 2002 तक अमृतसर में आयोजित द इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनामिक्स के 44वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा "एज्यूकेशन, स्किल डिवलपमेंट ऐंड चेंजिंग लेबर मार्किट" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

18. बिनोद खादरिया ने 27 से 29 मार्च, 2003 तक जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एज्यूकेशन : ब्रेकिंग द बैरयर्स (इ.बी.बी. 2003)" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "ग्लोबलाइजेशन आफ हायर एज्यूकेशन" शीर्षक आलेख तकनीकी सत्र–VI में प्रस्तुत किया, "फाइनेंशिंग ऐंड चेंज इन हायर एज्यूकेशन" विषयक तकनीकी सत्र–VII की अध्यक्षता की।

19. गीता बी. नाम्बिसन ने 23 दिसम्बर 2002 को प्रारम्भिक शिक्षा और साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित "प्रीप्रेशन आफ ए नेशनल प्लान आफ एक्शन फार मीटिंग द गोल्स आफ एज्यूकेशन फार आल" विषयक राष्ट्रीय सलाहकार बैठक में भाग लिया।

20. मिनाती पण्डा ने 26 से 27 फरवरी, 2003 तक बंगलौर में आयोजित "इनक्लुसिव एज्यूकेशन प्रेक्टिसीज इन स्कूल्स" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "टीचिंग मैथमेटिक्स इन एन इनक्लुसिव क्लास : इश्यूज ऐंड प्राब्लन्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. भट्टाचार्य ने 22 दिसम्बर 2002 को इण्डियन एसोसिएशन आफ लेबर इकोनामिक्स, अमृतसर में आयोजित "पैराडिग्मस आफ हिस्टोरिकल अप्रोच टु लेबर इन इण्डिया" विषयक वार्षिक सम्मेलन में वी.वी. गिरि स्मारक व्याख्यान दिया।

2. एम.एच. सिद्दीकी ने 6 दिसम्बर 2002 को जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित "एनवायरनमेंट ऐज हिस्ट्री" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

3. एम.एच. सिद्दीकी ने 27 फरवरी, 2003 को ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित "बायोग्राफी ऐज हिस्ट्री" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

4. एम.एच. सिद्दीकी ने मार्च 2003 में आयोजित जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित "नेशनलिटी ऐंड आइडेंटिटी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

5. ज्योति अटवाल ने 21 से 22 फरवरी 2003 तक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा आयोजित "इंट्रोगेटिंग मार्जिनेलाइजेशन : विडोज, कलोनिएलिज्म ऐंड सोशल रिफार्म इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया और "विडोहुड इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

6. रणवीर चक्रवर्ती ने मार्च 2003 में इण्डियन नेवी ऐंड द आर्किआलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, नई दिल्ली के तत्वावधान में मैरीन आर्किआलाजी, नई दिल्ली में आयोजित "इण्डियन ऐंड द इण्डियन ओशन ए.डी. 400 1300" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

7. रणवीर चक्रवर्ती ने मार्च 2003 में उच्च अध्ययन केंद्र इतिहास विभाग अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ द्वारा आयोजित "इकोनामिक हिस्ट्री आफ मिडिवल इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. घनश्याम शाह ने 7 से 9 दिसम्बर 2002 तक गोवा विश्वविद्यालय, गोवा द्वारा आयोजित "एनवायरनमेंट" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "अर्बन गवर्नेन्स ऐंड पब्लिक हैल्थ : द पोस्ट–प्लेग सूरत" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2. इमराना कादिर ने 7 अप्रैल 2002 को लुधियाना में आयोजित इण्डियन डाक्टर्स फार पीस ऐंड डिवलपमेंट के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "कम्यूनिटी हैल्थ प्रजेंट सेनारिओ" विषयक व्याख्यान दिया।

3. इमराना कादिर ने 26 से 28 जून 2002 तक इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एडवोकेसी ऐंड मानिटरिंग फार वुमन'स हैल्थ ऐंड राइट्स" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

4. इमराना कादिर ने इंटरनेशनल सेंटर, गोवा द्वारा आयोजित "रीयक्टिंग बियांड फिगर्स : स्टेट आफ वुमन'स हैल्थ इन गोवा" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

5. इमराना कादिर ने 22 मार्च, 2003 को नेशनल इंस्टीट्यूट फार रिसर्च इन रिप्रोडक्टिव हैल्थ, मुम्बई द्वारा आयोजित सोशल बिहेवियर ऐंड आप्रेशनल रिसर्च प्रोग्राम्स की समीक्षा करने के लिए विशेषज्ञ ग्रुप की बैठक में भाग लिया।

6. इमराना कादिर ने 1 से 2 मार्च 2003 तक वुमन स्टडी रिसर्च सेंटर यूनिवर्सिटी आफ कलकत्ता और इण्डियन एसोसिएशन फार एशियन ऐंड पेस्फिक स्टडीज द्वारा आयोजित "वुमन एक्रास एशिया : इश्यूज आफ आइडेंटिटीज" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

7. इमराना कादिर ने 4 से 5 अप्रैल 2003 तक वर्ल्ड फूड प्रोग्राम, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "टुवर्डस हंगर फ्री इण्डिया : काउन्टाडाउन फ्राम 2001" विषयक सलाहकार बैठक में भाग लिया।

8. इमराना कादिर ने कम्यूनिटी हैल्थ ऐंड सैनिटेशन -- ए विजन फार हंगर फ्री इण्डिया शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

9. मोहन राव ने 20 से 21 नवम्बर, 2002 तक कांउसिल फार सोशल डिवलपमेंट, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "सोशल चार्टर फार द सार्क रीजन" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

10. मोहन राव ने 17 मार्च 2003 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में पब्लिक हैल्थ पालिसी इन इण्डिया विषयक व्याख्यान दिया।

11. मोहन राव ने 2 से 7 जनवरी 2003 तक हैदराबाद में आयोजित "पालिटिक्स आफ पाप्यूलेशन और साइंस ऐंड एक्सक्लुजन" विषयक एशियन सोशल फोरम के पैनल में भाग लिया।

12. मोहन राव ने 11 से 12 दिसम्बर 2002 तक सेंटर फार पालिसी रिसर्च द्वारा आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित "मोबिलाइजिंग पब्लिक पालिसी मेक्स फार पाप्यूलेशन स्टेबिलाइजेशन इन इण्डिया" विषयक राष्ट्रीय बैठक में भाग लिया।

13. मोहन राव ने 15 से 17 जनवरी 2003 तक हारवर्ड'स ग्लोबल इक्विटी इनिसिएटिव मैक आर्थर फाउन्डेशन और यूनिसेफ हैदराबाद द्वारा आयोजित "हैल्थ इक्विटी इन इण्डिया : सिस्टम्स ऐंड पीपल" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

14. मोहन राव ने 7 मार्च 2003 को सेंटर फार हैल्थ ऐंड जेंडर इक्विटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ग्लोबल एजेन्डास, लोकल रिएलिटीज : इंप्लिकेशंस आफ हैल्थ सैक्टर रिफार्म्स आन वुमन'स एक्सिस टु रिप्रोडक्टिव हैल्थ सर्विसिस इन इण्डिया" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "पर्सेप्शंस ऐंड एक्सपिरिअन्स आफ हैल्थ सैक्टर रिफार्म" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

15. के.आर. नायर ने 25 फरवरी 2003 को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "रोल आफ वालन्टेरिज्म इन कंटेम्पोरेरि सोसायटी" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

16. रामा वी. बारू ने 11 से 12 दिसम्बर 2002 तक सेंटर फार पालिसी रिसर्च द्वारा इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित "मोबिलाइजिंग पब्लिक पालिसी मेकर्स फार पाप्यूलेशन स्टेबिलाइजेशन इन इण्डिया" विषयक राष्ट्रीय सलाहकार बैठक में भाग लिया।

17. रामा वी. बारू ने 15 से 17 जनवरी 2003 तक हारवर्ड'स ग्लोबल इक्विटी इनिसिएटिव, मैक आर्थर फाउन्डेशन और यूनिसेफ, हैदराबाद द्वारा आयोजित "हैल्थ इक्विटी इन इण्डिया : सिस्टम्स ऐंड पीपल" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

18. रामा वी. बारू ने 7 मार्च 2003 को सेंटर फार हैल्थ ऐंड जेंडर इक्विटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ग्लोबल एजेन्डास लोकल रिएलिटीज : इंप्लिकेशंस आफ हैल्थ सैक्टर रिफार्म्स आन वुमन'स एक्सिस टु रिप्रोडक्टिव हैल्थ सर्विसिस इन इण्डिया" विषयक ıकर्यशाला में भाग लिया तथा "पर्सेप्शंस ऐंड इक्सपिरिअन्सिस आफ हैल्थ सैक्टर रिफार्म" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

19. रामा वी. बारू ने 17 मार्च 2003 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "पब्लिक हैल्थ पालिसी इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

20. रितु प्रिया मेहरोत्रा 21 से 23 अगस्त, 2002 तक यूनेस्को द्वारा आयोजित इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में "ए कल्चरल अप्रोच टु एच.आई.वी./एड्स प्रिवेंशन ऐंड केयर" विषयक कार्यशाला के पैनल में थी।

21. रितु प्रिया मेहरोत्रा ने 12 सितम्बर 2002 को द इंटरनेशनल लेबर आर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "प्रिवेंशन आफ एच.आई.वी./एड्स इन द वर्ल्ड आफ वर्क : ट्रिपार्टीट रिस्पांस" विषयक परियोजना की द्वितीय बैठक में भाग लिया।

22. एस.एस. आचार्य ने 8 नवम्बर 2002 को डाइरेक्टोरेट आफ हैल्थ सर्विसिस, गवर्नमेंट आफ एन.सी.टी., दिल्ली और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ पाप्यूलेशन साइंसिस बाम्बे द्वारा आयोजित "एन एफ एच एस 2 : दिल्ली फाइंडिंग्स" विषयक डिसिमिनेशन संगोष्ठी में भाग लिया तथा "फर्टिलिटी फैमिली प्लानिंग ऐंड क्वालिटी आफ केयर" विषयक टेक्नीकल सेशन के विशेषज्ञ रहे।

23. एस.एस. आचार्य ने 19 से 20 दिसम्बर 2002 तक इंस्टीट्यूट फार रिसर्च इन मेडिकल स्टेटिक्स, आई.सी.एम. आर. और डिपार्टमेंट आफ बायोस्टेटिक्स, एम्स, नई दिल्ली द्वारा आयोजित इण्डिया सोसायटी फार मेडिकल स्टेटिक्स के 20वें वार्षिक सम्मेलन और आई.आर.एम.एस. के रजत जयंती समारोह में भाग लिया तथा "डिवलपमेंट ऐंड हैल्थ इश्यूज फार वुमन इन दिल्ली – इलस्ट्रेशंस फ्राम एन.एफ.एच.एस." शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

24. एस.एस. आचार्य ने 24 से 25 जनवरी, 2003 तक पाप्यूलेशन रिसोर्स सेंटर, अकादमी आफ एडमिनिस्ट्रेशन, भोपाल द्वारा आयोजित "पाप्यूलेशन पालिसी आफ मध्य प्रदेश – ए क्रिटिकल इक्जैमिनेशन" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "पाप्यूलेशन पालिसी आफ मध्य प्रदेश – सम इश्यूज इक्जामिन्ड" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

25 एस.एस. आचार्य ने 29 फरवरी और 1 मार्च 2003 को टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसिस, बाम्बे और मिनिस्ट्री आफ हैल्थ ऐंड फैमिली वैलफेयर नई दिल्ली द्वारा आयोजित "सोशल असेसमेंट आफ रिप्रोडक्टिव ऐंड चाइल्ड हैल्थ इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

26. अल्पना सागर ने 21 नवम्बर 2002 को आई.एस.आई. लोदी रोड, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "वुमन ऐंड हैल्थ प्राब्लम्स ऐंड पासिबिलिटीज" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "वुमन : हैल्थ सेनारिओ" विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

27. अल्पना सागर ने 5 मार्च 2003 को कम्यूनिटी हैल्थ इंट्रोडक्ट्री लेक्चर – कम्यूनिटी हैल्थ इन इण्डिया – ओवरव्यू विषयक आई.एस.आई. के सम्मेलन में भाग लिया।

28. अल्पना सागर ने 3 से 6 अक्टूबर, 2002 तक दिल्ली में आयोजित वाइट रिबन अलाइन्स फार सेज मदरहुड "सेविंग मदर'स लाइव्स वाट वर्क्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "टु अण्डरटेड लिंक्स बिटवीन वुमन'स सोशल इक्जिस्टेन्स ऐंड दैन हैल्थ" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

29. अल्पना सागर ने जनवरी 2003 में हैदराबाद में आयोजित फैमिली मेडिसिन -- दिल्ली पेपर प्राइमरी हैल्थ केयर ऐंड फैमिली मेडिसिन विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "एशियन सोशल फोरम रिथिंकिंग एड्स एज ए सोशल रिस्पांसिबिलिटी 'रिस्पांसिबिलिटी आफ द सिस्टम टुवर्डस एड्स" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. रामप्रसाद सेनगुप्ता ने 11 से 16 नवम्बर, 2002 तक नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग में आयोजित यूनिवर्सिटी एज्यूकेशन आन इंटरग्रेटिड अप्रोचिस टु माउन्टेन नेचुरल रिसोर्सिस मैनेजमेंट विषयक यूनेस्को की क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया तथा "इकोलाजी माउन्टेन्स ऐंड सस्टेनेबल डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

2. अरूण कुमार ने 17 से 19 अगस्त 2002 तक श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर द्वारा टैगोर हाल, इन्दौर में आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड हिन्दी" विषयक सत्र में और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 54वें सत्र में भाग लिया तथा "इकोनामिक ग्लोबलाइजेशन ऐंड द प्लेस आफ हिन्दी" विषयक व्याख्यान दिया।

3. अरूण कुमार ने 14 से 15 सितम्बर 2002 तक डी.आर. गाडगिल जन्मशती समिति और जेएनयू में समाजविज्ञानियों द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स बिफोर इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "अल्टरनेटिव फिस्कल पालिसी रिजीम इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

4. अरूण कुमार ने 21 से 23 अक्टूबर 2002 तक सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू द्वारा कंसेप्ट्स ऐंड सोशल फैक्टस : सिचुएटिंग द इण्डियन सोसायटी विषयक प्रो. टी.के. ऊमन अभिनन्दन समारोह में भाग लिया तथा "एनलाइजिंग द इण्डियन सोशल रिएलिटी : द सोशल फैक्टस वी चूज टु इग्नोर" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

5. अरूण कुमार ने 21 से 23 अक्टूबर 2002 तक सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू द्वारा भोपाल में आयोजित प्रो. टी.के. ऊमन के अभिनन्दन समारोह में भाग लिया तथा "दलित एजेन्डा" विषयक पैनल परिचर्चा में भाग लिया।

6. अरूण कुमार ने 16 से 17 दिसम्बर 2002 तक सोशल डिवपलमेंट फाउन्डेशन और सी.ए.डी.ए.एम. के सहयोग से दलितों के संगठन के राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा गांधी पीस फाउन्डेशन में आयोजित "दलित्स, मार्जिनेलाइज्ड ऐंड टेन्थ फाइव ईयर प्लान" विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "द मार्जिनल्स फर्दर मार्जिनेलाइज्ड इन टेन्थ फाइव ईयर प्लान : द इम्पैक्ट आफ ग्लोबलाइजेशन ऐंड मार्केटाइजेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

7. अरूण कुमार ने 7 से 8 मार्च 2003 तक आयोजित आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के "इफैक्टिव पाथ फार आग्मेंटिंग एडिकेट रिसोर्सिस टु स्टेप अप ग्रोथ ऐंड क्रिएशन आफ जाब्स" विषयक सम्मेलन में "मॉनेटरी ऐंड फाइनेंशियल पालिसी एट जी.पी.एफ." विषयक सत्र में "रिसोर्स मोबिलाइजेशन फार इंडिजीनस डिवलपमेंट ऐंड एम्पलायमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

8. अरिजित सेन ने अकादमिक स्टाफ कालेज जेएनयू में अर्थशास्त्र के स्नातक स्तर के शिक्षकों के लिए व्याख्यान दिया।

9. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 11 जुलाई 2002 को म.प्र. राज्य शासन अकादमी, भोपाल द्वारा आयोजित डब्ल्यू.टी.ओ. ऐंड इण्डियन एग्रीकल्चर विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

10. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 14 *अगस्त,* 2002 को *अर्थशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय* द्वारा *आयोजित* पोस्ट *रिफार्म* इकोनामिक पर्फामेन्स इन इण्डिया विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

11. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 14 से 15 सितम्बर 2002 तक डी.आर. गाडगिल सेंटनरी कमेटी और सोशल साइंटिस्ट, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स बिफोर इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इण्डिया'स इंडस्ट्रियल ग्रोथ ड्यूरिंग द 1980'स ऐंड 1990'स ए कम्पैरेटिव असेसमेंट ऐंड इट्स *इंप्लिकेशंस" शीर्षक आलेख* प्रस्तुत किया।

12. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 23 सितम्बर 2002 को मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "लिबरलाइजेशन ऐंड इंडस्ट्रियल पर्फामेंस इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

13. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 28 अक्टूबर 2002 को जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "डब्ल्यू. टी.ओ. ऐंड द डिवलपिंग कंट्रीज" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

14. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 9 दिसम्बर 2002 को इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज, द हेग और इंस्टीट्यूट आफ हयुमन डिवलपमेंट, नई दिल्ली द्वारा बंगलौर में आयोजित "आई.सी.टी'स ऐंड इण्डियन डिवलपमेंट", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा "द डिफ्युजन आफ इंफार्मेशन टेक्नोलाजी ऐंड द इंप्लिकेशंस फार डिवलपमेंट" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

15. सी.पी. चन्द्रशेखर ने 16 से 19 दिसम्बर 2002 तक "इंटरनेशनल मनी ऐंड मैक्रोइकोनामिक पालिसी इन डिवलपिंग कंट्रीज" विषयक आइडियाज के सम्मेलन में भाग लिया तथा "न्यू फाइनेन्शल स्ट्रक्चर्स ट्रांसमिशन मेकेनिज्म ऐंड डिफ्लेशन इन द ग्लोबल इकोनामी" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

16. प्रवीण झा ने 14 से 15 सितम्बर 2002 तक सोशल साइंटिस्ट और डी.आर. गाडगिल सेंटिनरी द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स बिफोर इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक सम्मेलन में आलेख प्रस्तुत किया।

17. पी. पटनायक ने 14 से 15 सितम्बर, 2002 तक डी.आर. गाडगिल सेंटिनरी कमेटी और सोशल साइंटिस्ट द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स बिफोर इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

18. पी. पटनायक ने 16 से 19 दिसम्बर 2002 तक इंटरनेशनल डिवलपमेंट इकोनामिक्स अल्टरनेटिव्स, मुटुकाडु, तमिलनाडु द्वारा आयोजित "इंटरनेशनल मनी ऐंड डिवलपमेंट कंट्रीज : थियोरेटिकल ऐंड पालिटिकल इश्यूज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "द थीअरि आफ मनी ऐंड वर्ल्ड कैपिटेलिज्म" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

19. *उत्सा पटनायक* ने 14 से 15 *सितम्बर* 2002 तक डी.आर. *गाडगिल सेंटिनरी कमेटी* और *सोशल साइंटिस्ट* द्वारा आयोजित "अल्टरनेटिव्स बिफोर इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा "फूड स्टाक ऐंड हंगर" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

20. उत्सा पटनायक ने 16 से 19 दिसम्बर 2002 तक इंटरनेशनल डिवलपमेंट इकोनामिक्स अल्टरनेटिव्स, मुदुकाडु, तमिलनाडु द्वारा आयोजित "इंटरनेशनल मनी ऐंड डिवलपिंग कंट्रीज : थीअरेटिकल ऐंड पालिसी इश्यूज" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "मैलएडजेस्टिड अफ्रीकन इकोनामिक्स ऐंड ग्लोबलाइजेशन" शीर्षक आलेख की परिचर्चा की।

21. उत्सा पटनायक ने 21 से 23 मार्च 2003 तक गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ द्वारा आयोजित "डेप्रिवेशन ऐंड इंक्लुसिव डिवलपमेंट" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "डिफ्लेशनरी पालिसीज ट्रेड लिबरलाइजेशन ऐंड इण्डियन एग्रीकल्चर" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

22. जयती घोष ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू द्वारा आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई. शाह ने 9 अप्रैल 2002 को यूनेस्को और राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, हैदराबाद द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "कंटीन्यूइंग एज्यूकेशन इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

2 एस.वाई शाह ने 11 से 13 दिसम्बर, 2002 तक इण्डियन इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "अर्बन लिट्रेसी" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

3. एस.वाई शाह ने 28 से 30 मार्च, 2003 तक नेशनल इंस्टीट्यूट आफ ओपन स्कूलिंग ऐंड कामनवेल्थ आफ लर्निंग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "इंटरप्राइजिंग कम्यूनिटी थ्रू एज्यूकेशन : पर्सपेक्टिव फार ओपन स्कूलिंग" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

4. एस.वाई शाह ने 16 अगस्त, 2002 को नेशनल इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक कोआप्रेशन ऐंड चाइल्ड डिवलपमेंट नई दिल्ली द्वारा आयोजित "पार्टिसिपेट्री रिसर्च" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

5. एस.वाई शाह ने 4 सितम्बर 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "अर्बन लिट्रेसी" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

6. एस.वाई शाह ने 26 से 27 दिसम्बर 2002 तक गांधीग्राम विश्वविद्यालय, मदुरई में आयोजित "इण्डियन एडल्ट एज्यूकेशन एसोसिएशन" के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया तथा एक सत्र की अध्यक्षता की।

7. शांता कृष्णन ने 6 से 7 अप्रैल 2002 तक वालन्ट्री हैल्थ एज्यूकेशन ऐंड रूरल डिवलपमेंट सोसायटी, चैन्नई द्वारा आयोजित "मेडिसिनल प्लांट्स ऐंड स्पाईसीज – पेटेंट्स ऐंड एक्सपोर्ट्स" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

8. शांता कृष्णन ने 20 अप्रैल 2002 को योजना आयोग द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित "रोल आफ वालन्ट्री सेक्टर इन नेशनल डिवलपमेंट" विषयक अखिल भारतीय सम्मेलन में भाग लिया।

9. शांता कृष्णन ने 29 से 30 सितम्बर, 2002 तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के सहयोग से राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित "एज्यूकेशन ऐंड सोसिओ इकोनामिक इम्पावरमेंट आफ एस सी'स ऐंड एस.टी'स" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

10. शांता कृष्णन ने 7 से 8 नवम्बर 2002 तक श्रम मंत्रालय और राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित "अन आर्गेनाइज्ड सैक्टर" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

11. शांता कृष्णन ने 18 से 19 दिसम्बर 2002 तक नेशनल इनोवेशन फाउन्डेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित (आई.आई.एम. अहमदाबाद के प्रो. अनिल गुप्ता) "ग्रास रूट्स इनोवेशन – एन एक्सपोज" विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

12. शांता कृष्णन ने 28 से 29 दिसम्बर 2002 तक नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड के सहयोग से हर्बल बायोमेड फाउन्डेशन द्वारा ग्राम – बजहेरा तहसील नुहू जिला गुड़गांव में आयोजित "आर्गेनिक कल्टीवेशन आफ मेडिसिनल प्लांट्स ऐंड ऐलाइड क्राप्स" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

13. शांता कृष्णन ने 7 जनवरी 2003 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली द्वारा आयोजित "इण्डियन अमेरिकन एसोसिएशंस" के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा "मेडिसिनल प्लांट्स ऐंड स्कोप फार इनवेस्टमेंट ऐंड इंप्लायमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

14 शांता कृष्णन ने एलाइन्स फार चाइल्ड राइट्स आन मानिटरिंग द इंप्लिकेशन आफ द सी.आर.सी. (यूनाइटिड नेशंस कंवेंशन आन द राइट्स आफ द चाइल्ड) और फार्म्युलेशन आफ नेशनल प्लान फार द चाइल्ड, नई दिल्ली द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भाग लिया।

15. एम.सी. पाल ने 2 अप्रैल 2002 को जेएनयू कुलाधिपति डा. कर्ण सिंह द्वारा दिए गए "ग्लोबलाइजेशन : इम्पैक्ट ऐंड रसिसटेंस" विषयक हृदयनाथ कुंजरू स्मारक व्याख्यान में भाग लिया।

16. एम.सी. पाल ने 3 अप्रैल 2002 को जेएनयू द्वारा आयोजित डा. अप्पादोराई और लक्ष्मी अप्पादोराई स्मारक व्याख्यान में भाग लिया।

17. एम.सी. पाल ने 4 अप्रैल 2002 को जेएनयू द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड साउथ एशिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

18. एम.सी. पाल ने 8 अप्रैल 2002 को जेएनयू द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड इस्लामिक रिसर्जेन्स इन वेस्ट एशिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

19. एम.सी. पाल ने 15 अप्रैल, 2002 को सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र जेएनयू द्वारा आयोजित "सोसिआलोजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

20. एम.सी. पाल ने 22 अप्रैल 2002 को जेएनयू द्वारा आयोजित "ग्लोब ऐंड रिलीजन कंफ्लेक्टिंग ऐंड कर्जेन्ट ट्रेन्ड्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

21. एम.सी. पाल ने 23 अप्रैल 2002 को इंटररिलिजस ऐंड इंटरनेशनल फेडरेशन फार वर्ल्ड पीस, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एज्यूकेशन फार करेक्टर इन एज्यूकेशन फार पीस" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

22. एम.सो. पाल ने 24 अप्रैल 2002 को जेएनयू द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन ऐंड द स्टेट" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

23. एन.सी. पाल ने 31 मई 2002 को डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा प्रायोजित हृदय और शान द्वारा एम्स में आयोजित "एज्यूकेशनल अवेयरनेस प्रोग्राम आन वर्ल्ड टुबैको डे" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

24. एन.सी. पाल ने सी.एस.डी. नई दिल्ली में आयोजित "इस्लाम कल्चर ऐंड पालिटिक्स" विषयक दुर्गाबाई देशमुख स्मारक व्याख्यान में भाग लिया।

25. एन.सी. पाल ने 29 अगस्त 2002 को आई.आई.सी. नई दिल्ली में आयोजित "थीअरि आफ एज्यूकेशन ऐंड ऐथिक्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

26. एन.सी. पाल ने 1 अक्टूबर 2002 को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी) और संस्कृत अध्ययन विशेष केंद्र जेएनयू द्वारा आयोजित "नव्य–न्याय लैंग्यूवेज ऐंड मेथडोलाजी" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

27. एन.सी. पाल ने 29 अक्टूबर 2002 को आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित "द रोल आफ द एज्यूकेशन ऐंड स्प्रिचुअल वर्ल्ड इन रिलेशन टु वर्ल्ड पीस" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

28. एन.सी. पाल ने 27 जनवरी 2003 को आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित "द काजिस ऐंड रिजोल्युशन आफ कंफ्लिक्ट" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

29. एन.सी. पाल ने सामाजिक विज्ञान संस्थान जेएनयू द्वारा आयोजित "ग्लोबलाइजेशन, डेमोक्रेसी ऐंड ह्युमन राइट्स" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

30. एम.सी. पाल ने 30 से 31 अगस्त 2002 तक स्पंदन, भाषा साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, जेएनयू द्वारा आयोजित "माइनार्टी ऐंड ह्युमन राइट्स इन बंगलादेश" विषयक व्याख्यान दिया।

31. ओ.पी. स्वामी ने 25 अक्टूबर 2002 को प्रिया, नई दिल्ली में आयोजित "वुमन'स इंपावरमेंट थ्रू लिट्रेसी ऐंड लिविलीहुड डिवलपमेंट" विषयक बैठक में भाग लिया।

32. ओ.पी. स्वामी ने 11 से 13 दिसम्बर 2002 तक इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "लिट्रेसी ऐंड लिविलीहुड इन अर्बन कंटेक्स्ट" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

33. ओ.पी. स्वामी ने 28 से 30 मार्च 2003 तक नई दिल्ली में आयोजित "इंटरप्राइजिंग कम्यूनिटी थ्रू एज्यूकेशन पर्सपेक्टिव्स फार ओपन स्कूलिंग" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (जेएनयू से बाहर)

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. ए. पार्थासारथी ने 16 नवम्बर 2002 को नेवल वार कालेज, मुम्बई में "एक्विजिशन ऐंड डिवपलमेंट आफ टेक्नोलाजी : द इण्डियन इक्सपिरिअन्स" विषयक व्याख्यान दिया।
2. ए. पार्थासारथी ने 6 जनवरी 2003 को बंगलौर में इण्डियन साइंस कांग्रेस के 81वें वार्षिक सत्र में "साइंस ऐंड इट्स इंप्लिकेशंस फार सोसायटी सिक्युरिटी" विषयक व्याख्यान दिया।
3. वी.वी. कृष्णा ने 6 मार्च 2003 को साउथ एशिया रिसर्च सेंटर फैकल्टी आफ इकोनोमिक्स ऐंड पालिटिकल साइंस, यूनिवर्सिटी आफ सिडनी, सिडनी, आस्ट्रलिया में "साइंस इन साउथ एशिया : चैलेंजिस इन द ईरा आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक व्याख्यान दिया।
4. के.जे. जोसफ ने 24 और 28 फरवरी, 2003 को आई.आई.टी. दिल्ली में 2सत्रों में "इंप्लिकेशंस आफ द आई.सी.टी. बूम आन द इण्डियन इकोनामी" विषयक व्याख्यान दिया।

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. बलवीर अरोडा ने 26 सितम्बर 2002 को भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, प्रबन्धन विकास कार्यक्रम, नई दिल्ली में "कंटेम्पोरेरि ट्रेन्ड्स इन इण्डियाज़ फेडरल पालिटी" विषयक व्याख्यान दिया।
2. बलवीर अरोडा ने 26 मार्च 2003 को इंस्टीट्यूट आफ पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज, नई दिल्ली में "इण्डियन फेडरलिज्म : डीलिंग विद रीजनलिज्म ऐंड सेसनिस्ट क्लेमरिंग" विषयक व्याख्यान दिया।
3. सुधा पई ने 8 जून 2002 को राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान में सोशल कौन्सिल विषयक कोर्स में "पालिसी ऐंड इंस्टीट्यूशनल रिफार्म्स फार सस्टेनेबल डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।
4. सुधा पई ने 12 मार्च 2003 को इंस्टीट्यूट आफ पीस ऐंड कंफ्लिक्ट स्टडीज, नई दिल्ली में "यूज आफ कास्ट ऐंड रिलीजन इन इलैक्टोरल पालिटिक्स" विषयक व्याख्यान दिया।
5. गुरप्रीत महाजन ने 17 जनवरी 2003 को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी नई दिल्ली में "सेक्युलरिज्म" विषयक व्याख्यान दिया।
6. गुरप्रीत महाजन ने 6 जनवरी, 2003 को मानवाधिकार केन्द्र, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद में "द कंसेप्ट आफ हयुमन राइट्स" और "ए फ्रेमवर्क फार द स्टडी आफ हयुमन राइट्स" विषयक व्याख्यान दिए।

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र

1. अतिया किदवई ने डिपार्टमेंट आफ आर्किटेक्चरल कंजरवेशन, स्कूल आफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में "इवोल्युशन आफ कल्चरल रीजन्स इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।
2. अतिया किदवई ने डिपार्टमेंट आफ आर्किटेक्चरल कंजर्वेशन, स्कूल आफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में "द प्लानिंग प्रोसस ऐंड हैरिटेज रीजन्स" विषयक व्याख्यान दिया।
3. अतिया किदवई ने डिपार्टमेंट आफ आर्किटेक्चरल कंजर्वेशन, स्कूल आफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में "द करंट माइक्रो--लेवल डिवलपमेंट प्लानिंग प्रोसिस इन इण्डिया – सोशियो कल्चरल इंप्लिकेशंस फार ए हैरिटेज प्लेस" विषयक व्याख्यान दिया।
4. अतिया किदवई ने डिपार्टमेंट आफ आर्किटेक्चरल कंजर्वेशन, स्कूल आफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में (1) कल्चरल रीजन्स – अवध (2) द माइक्रो–लेवल डिवलपमेंट प्लानिंग मशीनरी इन इंण्डिया ऐंड हैरिटेज रीजन्स (3) डाटा बेस फार रीजनल प्लानिंग विषयक व्याख्यान दिए।
5. अमिताभ कुण्डु ने अर्थशास्त्र विभाग, कैसेर्सलार्टन विश्वविद्यालय, जर्मनी में फाइनेन्शल क्राइसिस इन एशियन कंट्रीज विषयक व्याख्यान दिया।
6. अमिताभ कुण्डु ने भूगोल विभाग, हनोई विश्वविद्यालय में "पोइट्री ऐंड स्लम्स इन लार्ज सिटीज : द केस आफ हनोई ऐंड दिल्ली" विषयक व्याख्यान दिया।
7. अमिताभ कुण्डु ने 2 जनवरी 2003 को पश्चिम बंगाल सरकार कोलकाता द्वारा आयोजित संगोष्ठी में "म्युनिसिपल गवर्नेन्स" विषयक व्याख्यान दिया (एक सत्र की अध्यक्षता की)

8. अमिताभ कुण्डु ने राजस्थान इकोनामिक एसोसिएशन, उदयपुर के वार्षिक सम्मेलन में समापन व्याख्यान दिया।

9. अमिताभ कुण्डु ने 11 फरवरी, 2003 को राष्ट्रीय रक्षा कालेज, दिल्ली में "प्राब्लम्स आफ अर्बन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

10. अशोक माथुर ने अर्थशास्त्र विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय में "रिसेंट इक्सपिरिअन्स आफ रीजनल इकोनामिक डिवलपमेंट इन इण्डिया ऐंड ट्रेड इन एज्यूकेशन सर्विसिस" विषयक व्याख्यान दिया।

11. अशोक माथुर ने "रीजनल इकोनामिक डिवलपमेंट : ए कंसेप्चुअल फ्रेमवर्क ऐंड द इण्डियन इक्सपिरिअन्स" विषयक व्याख्यान दिया।

12. अशोक माथुर ने अकादमिक स्टाफ कालेज, वर्दवान विश्वविद्यालय, वर्दवान में "द पैटर्न आफ इंप्लायमेंट ऐंड अनइंप्लायमेंट इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

13. असलम महमूद, यूनेस्को, बैंकाक में विशेषज्ञ रहे।

14. असलम महमूद ने जुलाई 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में "इंटिग्रेटिंग माइग्रेशन एज्यूकेशन इन स्कूल करिकुलम इन इण्डिया" विषयक एन.सी.ई.आर.टी. की कार्यशाला में व्याख्यान दिया।

15. सुदेश नांगिया ने 17 जून 2002 को केन्द्रीय विद्यालय, आई.एन.ए. नई दिल्ली में "न्यू डाइमेंशंस इन पाप्यूलेशन ऐंड सेटलमेंट जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

16. सुदेश नांगिया ने 17 जून 2002 को केन्द्रीय विद्यालय, आई.एन.ए., नई दिल्ली में "ह्यूमन डिवलपमेंट इंडेक्स" विषयक व्याख्यान दिया।

17. सुदेश नांगिया ने 19 सितम्बर 2002 को दिल्ली विश्वविद्यालय में "रोल आफ पी ई आर सी'स इन प्रमोटिंग पाप्यूलेशन एज्यूकेशन अंडर यू.जी.सी. सिस्टम" विषयक व्याख्यान दिया।

18. सुदेश नांगिया ने 23 जनवरी 2002 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में "पाप्यूलेशन – एनवायरनमेंट इंटरफेस : थिओरेटिकल फ्रेमवर्क" विषयक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।

19. सुदेश नांगिया ने 23 जनवरी 2003 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में "ऐथिक्स ऐंड एनवायरमेंट" विषयक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।

20. सुदेश नांगिया ने 6 मार्च 2003 को भगत सिंह कालेज, दिल्ली में "पाप्यूलेशन ग्रोथ ऐंड सस्टेनेबल डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

21. सुदेश नांगिया ने 11 से 12 फरवरी 2003 तक भूगोल विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित संगोष्ठी में "डेमोग्राफिक डायनामिज्म इन इण्डिया विद ए फोकस आन 2001" विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

22. सुदेश नांगिया ने 23 फरवरी 2003 को हिन्दू कालेज, अल्मोड़ा, उ.प्र. द्वारा आयोजित भूगोल के वार्षिक सम्मेलन में "पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट" विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

23. एम.एच. कुरेशी ने 2 अप्रैल, 2002 को सेना पब्लिक स्कूल नोएडा में "न्यू करिकुलम इन जिओग्राफी – ए क्रिटिक" विषयक व्याख्यान दिया।

24. एम.एच. कुरेशी ने 24 अप्रैल, 2002 को केन्द्रीय विद्यालय, आई.एन.ए., नई दिल्ली द्वारा आयोजित स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों को पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "फील्ड सर्वे मेथड्स इन जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

25. एम.एच. कुरेशी ने शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों को पुनश्चर्या पाठ्क्रम में "थीअरि आफ लोकेशन आफ इकोनोमिक एक्टिविटीज" विषयक व्याख्यान दिया।

26. एम.एच. कुरेशी ने 11 जून 2002 को सर्वोदय बाल विद्यालय राधेश्याम पार्क, दिल्ली द्वारा आयोजित स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "रिसोर्सिस ऐंड रीजनल डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

27. एम.एच. कुरेशी ने 21 जून, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में "इकोलाजी ऐंड एनवायरनमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

28. एम.एच. कुरेशी ने 26 जुलाई 2002 को श्रमजीवी विद्यापीठ (मानद विश्वविद्यालय, उदयपुर) द्वारा आयोजित कालेज शिक्षकों के लिए भूगोल में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "जिओग्राफी – जियोग्राफर्स ऐंड चैलेंजिस अहेड" विषयक व्याख्यान दिया।

29. एम.एच. कुरेशी ने 27 जुलाई 2002 को श्रमजीवी विद्यापीठ (मानद विश्वविद्यालय, उदयपुर) द्वारा आयोजित कालेज शिक्षकों के लिए भूगोल में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "कंजरवेशन आफ लैण्ड वाटर ऐंड फारेस्ट रिसोर्सिस नेसिसिटी ऐंड स्ट्रेटजी" विषयक व्याख्यान दिया।

30. एम.एच. कुरेशी ने 2 नवम्बर 2002 को नेशनल इंटिग्रेशन कैम्प, हाली पार्क, पानीपत में "टेरेरिज्म, वर्ड पीस ऐंड इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

31. एम.एच. कुरेशी ने 11 नवम्बर 2002 को महिला अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली में "इण्डिया, लैण्ड ऐंड पीपल" विषयक व्याख्यान दिया।

32. एम.एच. कुरेशी ने 18 नवम्बर 2002 को डी.जी. कालेज, कानपुर द्वारा मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ यू.पी. में आयोजित संगोष्ठी में "रूरल डिवलपमेंट : कंसेप्ट ऐंड कंसर्न्स" विषयक व्याख्यान दिया।

33. एम.एच. कुरेशी ने 22 नवम्बर 2002 को स्टेट कांउसिल फार एज्यूकेशनल रिसर्च ऐंड ट्रेनिंग, डिफेंस कालोनी नई दिल्ली द्वारा आयोजित स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों को पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "इंटिग्रेटिंग टीचिंग आफ सोशल साइंसिस इन स्कूल" विषयक व्याख्यान दिया।

34. एम.एच. कुरेशी ने 24 नवम्बर, 2002 को सी.सी.ए. पब्लिक स्कूल गुड़गांव में "रोल आफ टीचर्स ऐंड सोसायटी'स एस्पेक्टेशन फ्राम देम" विषयक व्याख्यान दिया।

35. एम.एच. कुरेशी ने 1 दिसम्बर 2002 को हमदर्द पब्लिक स्कूल तालिमाबाद, संगम विहार, नई दिल्ली में "रमजान ऐंड ईद इन इस्लाम" विषयक व्याख्यान दिया।

36. आर.के. शर्मा ने जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में "पावर्टी ऐंड अनइंप्लायमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

37 आर.के. शर्मा ने अकादमिक स्टाफ कालेज, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में "रूरल पावर्टी ऐंड इंप्लायमेंट ट्रेन्ड्स" विषयक व्याख्यान दिया।

38. आर.के. शर्मा ने इंस्टीट्यूट आफ रेल ट्रांस्पोर्ट, नई दिल्ली में "मार्जिनल कोस्ट प्राइसिंग" विषयक व्याख्यान दिया।

39. हरजीत सिंह ने 15 जुलाई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में "इकोलाजी, इकोसिस्टम ऐंड जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

40. हरजीत सिंह ने 15 जुलाई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में "इश्यूज आफ मेथडोलाजी इन जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

41. हरजीत सिंह ने 16 जुलाई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में "एनवायरनमेंट ऐंड इकोलाजी आफ द इण्डियन हिमालयाज" विषयक व्याख्यान दिया।

42 हरजीत सिंह ने 16 जुलाई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में "एनवायरनमेंट ऐंड डिवलपमेंट इन द हाई एल्टीट्यूड रीजन आफ लद्दाख" विषयक व्याख्यान दिया।

43. हरजीत सिंह ने 19 जुलाई 2002 को टीचर ट्रेनिंग कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली में "इकोलाजी ऐंड इकोसिस्टम ऐंड देअर रिलिवेन्स इन जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

44. हरजीत सिंह ने 21 जुलाई 2002 को केन्द्रीय विद्यालय, नई दिल्ली में टीचर ट्रेनिंग कार्यक्रम में "ह्यूमन इकोलाजी ऐंड जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

45. हरजीत सिंह ने 21 जुलाई 2002 को केन्द्रीय विद्यालय, नई दिल्ली के टीचर ट्रेनिंग कार्यक्रम में "फील्ड वर्क इन जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

46. हरजीत सिंह ने 26 जुलाई 2002 को वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शाहदरा, दिल्ली के स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में "इश्यूज आफ एनवायरनमेंट इन द हिमालयाज" विषयक व्याख्यान दिया।

47. हरजीत सिंह ने 26 जुलाई 2002 को वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शाहदरा दिल्ली के स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में "मेथडोलाजिकल इश्यूज इन जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

48. हरजीत सिंह ने 19 अक्टूबर 2002 को यूनिवर्सिटी वुमन'स एसोसिएशन आफ दिल्ली में "इण्डियन माउन्टेन्स ऐंड इको–टूरिज्म" विषयक व्याख्यान दिया।

49. हरजीत सिंह ने 13 जनवरी 2003 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में "जिओग्राफर्स'स कंसर्न फार ह्युमन इकोलाजी इन द ट्वेन्टी फर्स्ट सेंचुरी" विषयक व्याख्यान दिया।

50. हरजीत सिंह ने 13 जनवरी 2003 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में "इमर्जिंग ट्रेन्ड्स इन मेथडोलाजी आफ जिओग्राफी" विषयक व्याख्यान दिया।

51. हरजीत सिंह ने 24 जनवरी 2003 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में "जिओग्राफी ह्युमन इकोलाजी इंटरफेस – करंट इश्यूज" विषयक व्याख्यान दिया।

52. हरजीत सिंह ने 24 जनवरी 2003 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में "न्यू चैलेंजिज इन जिओग्राफी मेथेडोलाजी" विषयक व्याख्यान दिया।

53. हरजीत सिंह ने 30 जनवरी 2003 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में पैनल परिचर्चा में "जिओग्राफी ऐंड सस्टेनेबल डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

54. एस.के. थोरट ने 4 फरवरी 2003 को सिडनहम कालेज, बाम्बे में "अम्बेडकर व्यूज आफ इकोनामिक डिवलपमेंट ऐंड इकोनामिक इन द कंटेक्स्ट आफ इकोनामिक लिब्रेशन" विषयक अम्बेडकर स्मारक व्याख्यान दिया।

55. एस.के. थोरट ने 7 अगस्त 2002 को अम्बेडकर केंद्र, समाजशास्त्र विभाग, चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में "इकोनामिक स्टेटस आफ दलित्स – इमर्जिंग इश्यूज" विषयक व्याख्यान दिया।

56. एस.के. थोरट ने 23 अगस्त 2002 को राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद में "स्पेशल कम्पोनेंट प्लान ऐंड द डिवलपमेंट आफ शैड्यूल्ड कास्ट" विषयक व्याख्यान दिया।

57. एस.के. थोरट ने 9 अक्टूबर 2002 को राय विल्किन सेंटर, हम्परी इंस्टीट्यूट, मिनिसोटा यूनिवर्सिटी मिनिओपालिस यू.एस.ए. में "इकोनामिक आफ कास्ट सिस्टम–रिफ्लेक्शन आन थीअरि" विषयक व्याख्यान दिया।

58. एस.के. थोरट ने 16 दिसम्बर 2002 को दिल्ली फोरम में, "दलित ऐंड 10थ फाइव ईयर प्लान" विषयक व्याख्यान दिया।

दर्शनशास्त्र केन्द्र

1. पी.बी. मेहता ने फरवरी 2003 में जामिया हमदर्द में "रिलीजन ऐंड माडर्निटी" विषयक व्याख्यान दिया।

2. पी.बी. मेहता ने फरवरी 2003 में लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में "प्लेटो, रूसो ऐंड राल्स" विषयक 6 व्याख्यान दिए।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. योगेन्द्र सिंह ने 17 फरवरी 2003 को राष्ट्रीय रक्षा कालेज, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली में "नेशनल सिक्यूरिटी ऐंड स्ट्रेटजिक स्टडीज" विषयक 43वें पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के लिए "ट्रेडिशन वर्सस माडर्निटी इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

2. योगेन्द्र सिंह ने 30 सितम्बर 2002 को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में स्व. प्रो. राम आहूजा की स्मृति में व्याख्यान दिया।

3. योगेन्द्र सिंह ने 26 अगस्त, 2002 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में "चैलेंजिस आफ ग्लोबलाइजेशन टु कल्चरल आइडेंटिटी ऐंड इकोनामिक डिवलपमेंट इन इण्डिया" विषयक सैनी फाउन्डेशन राष्ट्रीय व्याख्यान दिया।

4. के.एल. शर्मा ने 16 फरवरी 2003 को मेशन डे 1, इन्डे, पेरिस, फ्रान्स में "कास्ट सिस्टम इन प्रिजेन्ट डे इण्डिया", विषयक व्याख्यान दिया।

5. जे.एस. गांधी ने जनवरी 2003 में समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में "द रोल आफ की रिस्पोंडेंट्स इन फील्ड रिसर्च" विषयक व्याख्यान दिया।

6. दीपांकर गुप्ता ने नई दिल्ली में "नोट बाइ टालरेन्स अलोन : इण्डिया आफ्टर गुजरात" विषयक 7वां प्रेम भाटिया स्मारक व्याख्यान दिया।

7. आनन्द कुमार ने 1 मई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "टीचर्स मूवमेंट्स इन इण्डिया टुडे", विषयक व्याख्यान दिया।

8. मैत्रेयी चौधरी ने 29 नवम्बर 2002 को राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र विभाग, जानकी देवी स्मारक कालेज में "द इण्डियन प्रिंट मीडिया : एडवरटाइजमेंट ऐंड जेंडर इन द कंटेक्स्ट आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक कमला रानी स्मारक व्याख्यान दिए।

9. मैत्रेयी चौधरी ने मार्च 2003 में कला संकाय, दक्षिण परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "फेमिनिज्म इन साउथ एशिया" विषयक व्याख्यान दिया।

10. अविजित पाठक ने 4 सितम्बर 2002 को दौलत राम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में "वैल्यु एज्यूकेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

11. अविजित पाठक ने 6 सितम्बर 2002 को भारतीय सामाजिक संस्थान, लोधी रोड, नई दिल्ली में, "पारिबल इंटरवेंशंस इन द डोमेन आफ एज्यूकेशन" विषयक व्याख्यान दिया.

12. अविजित पाठक ने 17 मई 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में "व्हाट इज डयूरेबल इन इण्डियन कल्चर" विषयक व्याख्यान दिया।

13. अविजित पाठक ने 25 सितम्बर 2002 को लेडी इरविन कालेज, नई दिल्ली में "एज्यूकेटिंग द चाइल्ड रिफ्लेक्शंस आन एथिक्स ऐंड एज्यूकेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

14. अविजित पाठक ने 23 नवम्बर 2002 को मैक्समूलर भवन, में "रिलीजस फंडामेंटलिज्म ऐंड पालिटिक्स आफ कल्चर डिफ्रेंसिएशन" विषयक व्याख्यान दिया।

15. अविजित पाठक ने 28 नवम्बर 2002 को जानकी देवी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में "रिथिंकिंग माडर्निटी" विषयक व्याख्यान दिया।

16. अविजित पाठक ने 4 दिसम्बर 2002 को प्रौद्योगिकी और प्रबन्धन संस्थान, गुड़गांव में "आन सोसिओलाजिकल थिंकिंग" विषयक व्याख्यान दिया।

17. अविजित पाठक ने 30 जनवरी 2003 को इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ मास कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली में "कल्चर इन द ऐज आफ ग्लोबलाइजेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

18. अविजित पाठक ने 31 जनवरी 2003 को वी.वी. गिरि इंस्टीट्यूट आफ लेबर, नोयडा में "इश्यूज इन सोशल रिसर्च" विषयक व्याख्यान दिया।

19. एस.एस. जोधका ने 20 मई 2002 को डिपार्टमेंट आफ रूरल सोसियोलाजी, यूनिवर्सिटी आफ विस्कोनसिन, मैडिसन डब्ल्यू.ई., यू.एस.ए. में "कैपिटेलिस्ट एग्रीकल्चर ऐंड अनफ्री लेबर : द इण्डियन डिबेट" विषयक व्याख्यान दिया।

20. विवेक कुमार ने 14 अप्रैल 2002 को यूनाइटिड दलित स्टूडेंट्स फोरम में "दलित मूवमेंट : डाइरेक्शन ऐंड चैलेंजिस" विषयक व्याख्यान दिया।

21. विवेक कुमार ने 15 अप्रैल 2002 को इण्डियन सोशल इंस्टीट्यूट में "दलित मूवमेंट ऐंड रिस्पांसिस आफ सिविल सोसायटी" विषयक व्याख्यान दिया।

22. विवेक कुमार ने 20 से 21 अप्रैल 2002 तक दलित राइटर्स फोरम, नई दिल्ली मे "सोसियोलाजी आफ दलित लिट्रेचर" विषयक व्याख्यान दिया।

23. विवेक कुमार ने 4 जून 2002 को इस्लामिक स्टूडेंट आर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली में "दलित मूवमेंट : ए मैक्रो एनालिसिस" विषयक व्याख्यान दिया।

24. विवेक कुमार ने 6 जुलाई 2002 को इण्डियन सोशल इंस्टीट्यूट में "पंचायती राज इंस्टीट्यूशन ऐंड स्टेटस आफ वीकर सैक्शंस" विषयक व्याख्यान दिया।

25. विवेक कुमार ने 27 जुलाई 2002 को लखनऊ इंटेलेक्चुअल फोरम, लखनऊ में "हन्ड्रेड ईयर्स आफ रिजर्वेशंस" विषयक व्याख्यान दिया।

26. विवेक कुमार ने 27 से 28 जुलाई 2002 तक भारतीय सामाजिक संस्थान, लखनऊ द्वारा आयोजित "दलित यूथ ऐंड डिवलपमेंट आफ लीडरशिप" विषयक कार्यशाला में "दलित यूथ ऐंड डिवलपमेंट आफ लीडरशिप" विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

27. विवेक कुमार ने 3 सितम्बर 2002 को भारतीय सामाजिक संस्थान में "दलित्स : डिस्क्रिमिनेशन ऐंड इमेंसिपेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

28. विवेक कुमार ने 7 सितम्बर, 2002 को भारतीय सामाजिक संस्थान में "गुजरात कार्नेज ऐंड यूनिटी आफ दलित्स ऐंड माइनार्टीज" विषयक व्याख्यान दिया।

29. विवेक कुमार ने 24 सितम्बर 2002 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में "दलित्स ऐंड द क्वेश्चन आफ ह्युमन राइट्स" विषयक व्याख्यान दिया।

30. विवेक कुमार ने 25 फरवरी 2003 को भारतीय सामाजिक संस्थान में "जर्नलिज्म ऐंड डिवलपमेंट आफ लीडरशिप अमंग दलित यूथस" विषयक व्याख्यान दिया।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. दीपक कुमार ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में पुनश्चर्या पाठ्यचर्या में व्याख्यान दिए।

2. बिनोद खादरिया ने जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के अनुशीलन कार्यक्रम में व्याख्यान दिया।

3. गीता बी. नाम्बिनसन ने 7 मार्च 2003 को भारती कालेज द्वारा आयोजित दिल्ली विश्वविद्यालय के कालेज के शिक्षकों के लिए आयोजित अनुशीलन पाठ्यक्रम में "हायर एज्यूकेशन इन इण्डिया, इश्यूज आफ एक्सस ऐंड क्वालिटी" विषयक व्याख्यान दिया।

4. मिनाती पण्डा ने 4 सितम्बर 2002 को बेहरामपुर विश्वविद्यालय, भंजाविहार, उड़ीसा में "कल्चर कोग्निशन ऐंड अर्थमेटिक" विषयक व्याख्यान दिया।

5. ध्रुव रैना ने 20 से 21 फरवरी, 2003 तक अजमेर विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "हिस्ट्री आफ साइंस" विषयक 4 व्याख्यान दिए।

6. ध्रुव रैना ने 21 मार्च, 2003 को नेशनल सेंटर फार बायोलाजिकल सिस्टम्स बंगलौर में "इनलाइटमेंट हिस्ट्रीज जेस्यूट सोर्सिस" विषयक व्याख्यान दिया।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. ज्योति अटवाल ने 30 जनवरी 2003 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में "ट्राजेक्टरिज आफ विडोहुड : कम्यूनिटी रिस्पांस इन क्लोनिअल कंटेम्पोरेरि इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

2. कुणाल चक्रवर्ती ने जुलाई 2002 में द राकफेलर रिसर्च सेंटर, बेलाजिओ, इटली में "इमेजिंग द फारेस्ट इन इण्डियन ट्रेडिशन" विषयक व्याख्यान दिया।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. मोहन राव ने 16 जुलाई 2002 को राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली में "ग्लोबलाइजेशन ऐंड हैल्थ : ऐन ओवरव्यू" विषयक व्याख्यान दिया।

2. के.आर. नायर ने 21 जनवरी 2003 को वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान में "मेथड्स इन लेबर रिसर्च" विषयक पाठ्यक्रम में "अप्रोचिस टु क्वालिटेटिव लेबर रिसर्च" विषयक व्याख्यान दिया।

3. रितु प्रिया मेहरोत्रा ने 24 जनवरी 2003 को सेक्सचुअल रिसोर्स सेंटर डी.एफ.आई.डी. और आर्ग–मार्ग में "सोसाइटल कंसर्न्स ऐंड स्ट्रेटजीस फार एड्स कंट्रोल इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान व परिचर्चा की।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. अंजन मुखर्जी ने 2 अक्टूबर 2002 को सामाजिक और आर्थिक शोध संस्थान, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान में "आन द रोबस्टनेस ऐंड स्टेबिलिटी आफ साइक्लिकल बिहेवियर" विषयक व्याख्यान दिया।

2. अंजन मुखर्जी ने 9 दिसम्बर 2002 को कियो विश्वविद्यालय, टोकियो, जापान में "रोबस्ट साइक्लिकल बिहेवियर" विषयक व्याख्यान दिया।

3. अंजन मुखर्जी ने 28 जनवरी, 2003 को आर्थिक शोध संस्थान क्योटो विश्वविद्यालय, जापान में "पीरिओडिक बिहेवियर इन माइक्रो ऐंड मैक्रो" विषयक व्याख्यान दिया।

4. अरूण कुमार ने ने 1 से 5 जुलाई 2002 तक इंस्टीट्यूट आफ गवर्नमेंट एकाउन्ट्स ऐंड फाइनन्स, मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स, नई दिल्ली द्वारा आयोजित आई.सी.ए.एस. के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में "एन ओवरव्यू आफ इण्डियन पब्लिक फाइनेन्स" विषयक व्याख्यान दिया।

5. अरूण कुमार ने 20 सितम्बर 2002 को वसुधैव कुटुम्बकम द्वारा इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में "ग्रीन पर्सपेक्टिव आन डीपनिंग आफ डेमोक्रेसी ग्लोबली" विषयक व्याख्यान दिया।

6. अरूण कुमार ने 4 अक्टूबर 2002 को इण्डिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में "इनिशिएटिव आन द डिसेंट्रेलाइजेशन आफ रेलवे जोन्स : विल इट लिवरेज द इकोनामी आफ द कंट्री बैटर" विषयक व्याख्यान दिया।

7. अरूण कुमार ने 27 अक्टूबर 2002 को क्लाइमेट जस्टिस सम्मिट वी.पी. हाउस, नई दिल्ली के पूर्ण अधिवेशन में "ग्लोबलाइजेशन, एनवायरनमेंट ऐंड द पूअर" विषयक व्याख्यान दिया।

8. अरूण कुमार ने 7 नवम्बर 2002 को सुकी द्वारा जी.पी.एफ. में आयोजित अक्टूबर क्रांति की स्मृति में "द करंट क्राइसिस इन द ग्लोबल इकोनामिक आर्डर" विषयक व्याख्यान दिया।

9. अरूण कुमार ने 11 नवम्बर 2002 को इकोनामिक्स सोसायटी फेस्टिवल आफ श्रीराम कालेज आफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय में "द ब्लैक इकोनामी ऐंड इट्स कंसिक्वेंसिस" विषयक उद्घाटन व्याख्यान दिया।

10. अरूण कुमार ने 22 नवम्बर 2002 को आई.बी. प्रशिक्षण स्कूल, नई दिल्ली में "ग्लोबलाइजेशन आफ इकोनामी वाइट कालर क्राइम ऐंड इम्पैक्ट आफ अदर इकोनामिक ओफेंसिस आन नेशनल सिक्युरिटी" विषयक व्याख्यान दिया।

11. अरूण कुमार ने 11 और 13 दिसम्बर 2002 को प्रबन्धन विकास संस्थान गुड़गांव के राष्ट्रीय प्रबन्धन कार्यक्रम में "इंडियाज ब्लैक इकोनोमी, डेफीनेशंस, मेजरमेंट्स ऐंड द मैक्रोइकोनोमिक लिंकेजिज" विषयक 2 व्याख्यान दिए।

12. अरूण कुमार ने 30 दिसम्बर 2002 को भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली द्वारा इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित "अर्थयुग के अनर्थ" विषयक पैनल परिचर्चा में व्याख्यान दिया।

13. अरूण कुमार ने 25 जनवरी 2003 को एन.आर.ई.सी. कालेज, खुर्जा उ.प्र. में आयोजित "चैंजिंग वर्ल्ड सेनारियो ऐंड 'वी द पीपल आफ इण्डिया'" विषयक पैनल परिचर्चा में व्याख्यान दिया।

14. अरूण कुमार ने 6 मार्च 2003 को भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली में विकासशील देशों के पत्रकारों के लिए पाठ्यक्रम में "ग्लोबलाइजेशन ऐंड इट्स इम्पैक्ट आन द इकोनामीज आफ डिवलपिंग कंट्रीज" विषयक व्याख्यान दिया।

15. अरूण कुमार ने 12 मार्च 2003 को आई.बी. प्रशिक्षण कालेज में मध्य स्तर के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में "ब्लैक इकोनोमी ऐंड इकोनोमिक ओफेंसिस" विषयक व्याख्यान दिया।

16. अरूण कुमार ने 17 मार्च, 2003 को महिला दक्षता समिति, नई दिल्ली द्वारा कांस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित "यूनियन बजट 2003 04 ऐट वेट" विषयक व्याख्यान दिया।

17. रामप्रसाद सेनगुप्ता ने 26 से 27 सितम्बर 2002 को द पाप्यूलेशन रिसर्च सेंटर, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला में "एनवायरनमेंटल इकोनामिक्स फार मीडिया पर्सन्स ऐंड एन.जी.ओ. आफिशल्स अंडर द वर्ल्ड बैंक'स कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोजेक्ट इन एनवायरनमेंटल इकोनामिक्स ड्यूरिंग सितम्बर 23–28" विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 26 से 27 सितम्बर 2002 तक "इकोलाजी ऐंड इकोनामिक्स – ऐन अप्रोच टु सस्टेनेबल डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

18. रामप्रसाद सेनगुप्ता ने 27 से 31 जनवरी, 2003 तक भारतीय प्रबन्धन संस्थान, कलकत्ता में "एनवायरनमेंटल इकोनामिक्स फार सीनियर मैनेजर्स आफ द प्राइवेट इंडस्ट्रीज अंडर द वर्ल्ड बैंक'स कैपेसिटी प्रोग्राम इन एनवायरनमेंटल इकोनामिक्स" विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 29 से 30 जनवरी 2003 तक "एनवायरनमेंटल इकोनामिक्स : ए केस स्टडी आफ आटोमोबाइल पॉल्यूशन" विषयक व्याख्यान दिया।

19. प्रवीण झा ने 25 अप्रैल 2002 को एशियाई अध्ययन केंद्र आस्ट्रेडम, नीदरलैण्ड में "कंटीन्यूटी ऐंड चेंज – सम आब्जरवेशन आन द लैण्डस्केप आफ एग्रीकल्चरल लेबरर्स इन नार्थ बिहार, इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

20. प्रवीण झा ने 19 जून 2002 को दक्षिण एशिया संस्थान, हिडलबर्ग विश्वविद्यालय, हिडलबर्ग में "द चैंजिंग वर्ल्ड आफ रूरल वर्कर्स – सम रिफ्लेक्शंस बेस्ड आन फील्ड स्टडीज इन नार्थ बिहार इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

21. प्रवीण झा ने 4 जनवरी, 2003 को एशियन सोशल फोरम, हैदराबाद में "एन अजेन्डा फार लैण्ड रिफार्म्स" विषयक व्याख्यान दिया।

प्रवीण कुमार झा ने 14 और 16 जनवरी 2003 को राष्ट्रीय श्रम संस्थान नोयडा में "रिसर्च मेथड्स इन लेबर इकोनामिक्स" विषयक व्याख्यान दिया।

22. प्रवीण झा ने 23 जनवरी, 2003 को आई.एस.टी.एम. नई दिल्ली में "प्लानिंग इन इण्डिया – विच वे नाव" विषयक व्याख्यान दिया।

23. प्रवीण झा ने 7 फरवरी, 2003 को भारतीय सामाजिक संस्थान, नई दिल्ली में "बजट इन द कंटेक्स्ट आफ निओलिबरल मैक्रोइकोनामिक पालिसी" विषयक व्याख्यान दिया।

24. प्रवीण झा ने 10 फरवरी 2003 को आई.आई.पी.ए., नई दिल्ली में "कंटेम्पोरेरि डिवलपमेंट पैराडिग्म्स" विषयक व्याख्यान दिया।

25. प्रवीण झा ने 27 फरवरी, 2003 को नेशनल इंस्टीट्यूट आफ पर्शनल मैनेजमेंट, कलकत्ता में "सम रिस्पांसिस टु द रिपोर्ट आफ द सेकण्ड नेशनल कमीशन आन लेबर" विषयक व्याख्यान दिया।

26. पी. पटनायक ने 28 सितम्बर 2002 को अर्थशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय में "आन द नीड फार रेग्यूलेटिंग टेक्नोलाजिकल चेंज" विषयक जे.के. मेहता स्मारक व्याख्यान दिया।

27. पी. पटनायक ने 29 अक्टूबर से 23 नवम्बर 2002 तक कारनेल यूनिवर्सिटी लेक्चर सीरीज में "द हमबग आफ फाइनेन्स" विषयक व्याख्यान दिए।

28. पी. पटनायक ने 28 जनवरी, 2003 को इंस्टीट्यूट डे इकोनामिया यूनिवर्सिडीड फेडरल डे रिओडिजेनेरिओ ब्राजील में "ओपन इकोनामी मैक्रोइकोनामिक्स विद कैपिटल फ्लोज" विषयक व्याख्यान दिया।

29. पी. पटनायक ने 6 मार्च 2003 को सेंट जेवियर'स कालेज मुम्बई में "द यूनियन बजट फार 2003–04" विषयक सुधीर यर्दी स्मारक व्याख्यान दिया।

30. उत्सा पटनायक ने 18 से 19 अप्रैल 2002 तक भारतीदशन विश्वविद्यालय, त्रिरूचिरापल्ली में अर्थशास्त्र के शिक्षकों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "इकोनामिक डिवलपमेंट इन द लास्ट डिकेड" विषयक व्याख्यान दिया।

31. उत्सा पटनायक ने 11 मार्च 2003 को कलकत्ता विश्वविद्यालय में "द इकोनामिक कंसिक्वेंसिस आफ वार इन इराक" विषयक व्याख्यान दिया।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई शाह ने 15 नवम्बर 2002 को नीपा, नई दिल्ली में "एज्यूकेशनल प्लानिंग ऐंड एडमिनिस्ट्रेशन" विषयक राष्ट्रीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के लिए "एडमिनिस्ट्रेशन आफ एडल्ट एज्यूकेशन इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।
2. एस.वाई शाह ने 2 नवम्बर 2002 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली में रिसर्च मैथडोलाजी कोर्स में "रिसर्च ट्रेन्ड्स इन एडल्ट एज्यूकेशन" विषयक व्याख्यान दिया।
3. एस.वाई शाह ने 26 से 27 दिसम्बर 2002 तक मदुरई में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के वार्षिक सम्मेलन में "रोल आफ इन्फार्मेशन ऐंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलाजी इन एडल्ट एज्यूकेशन" विषयक व्याख्यान दिया।
4. एस.वाई शाह ने 13 फरवरी 2003 को नीपा, नई दिल्ली में एज्यूकेशनल प्लानिंग ऐंड एडमिनिस्ट्रेशन में अन्तर्राष्ट्रीय डिप्लोमा के प्रतिभागियों के लिए "लिट्रेसी ऐंड डिवलपमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।
5. शांता कृष्णन ने 29 सितम्बर 2002 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में एज्यूकेशन ऐंड सोसियोइकोनामिक डिवलपमेंट आफ एस.सी'स ऐंड एस टी'स विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन के शैक्षिक सत्र में "नान–फार्मल एज्यूकेशन फोकसड आन मार्किट – आर ओरियंटिड स्किल्स डिवलपमेंट इन वेरियस फील्ड्स" विषयक व्याख्यान दिया।

6. एम.सी. पाल ने 30 से 31 अगस्त 2002 तक राष्ट्रीय अपराध विज्ञान और न्यायिक विज्ञान संस्थान, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली में "इफेक्ट्स ऐंड कंसिक्वेंसिस आफ ड्रग एब्यूज अमंग यूथ ऐंड चिल्ड्रन" विषयक व्याख्यान दिया।

7. एम.सी. पाल ने 30 सितम्बर 2002 को फेमिली फेडरेशन फार वर्ल्ड पीस ऐंड यूनिफिकेशन द्वारा आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित "लीडर्स कमिटमेंट टु वर्ल्ड पीस" विषयक व्याख्यान दिया।

8. एम.सी. पाल ने 2 अक्टूबर 2002 को दिल्ली सत्संग सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "एज्यूकेशन ऐंड एथिक्स" विषयक व्याख्यान दिया।

9. एम.सी. पाल ने 31 अक्टूबर 2002 को राष्ट्रीय अपराध विज्ञान और न्यायिक विज्ञान संस्थान, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली में "रोल आफ यू.एन.डी.सी.पी. इन प्रिवेंटिंग ऐंड कंट्रोज आफ ड्रग ऐब्यूज" विषयक व्याख्यान दिया।

संस्थान में आए अतिथि

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की टीम 27 नवम्बर, 2002 को केंद्र में आई।

2. जनसांख्यिकी विभाग, केरल विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों सहित छात्रों का एक बैच दिसम्बर 2002 में केंद्र में आया।

3. सेल्जबर्ज विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया के संकाय सदस्यों और 25 छात्रों की एक टीम 28 से 30 जनवरी, 2003 तक केंद्र में आई।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. विलमेन्स जर्गनमेयर (आर्नोल्ड बर्जट्रेसर इंस्टीट्यूट, जर्मनी) केंद्र में आए।

2. प्रो. हर्टमट इल्सानहेन्स, लिपजिग विश्वविद्यालय, केंद्र में आए।

3. एम्स के निदेश प्रो. पी.के. दवे केंद्र में आए।

4. प्रो. जी तारावोउट, निदेशक, इण्डो–फ्रेंच प्रोग्राम मेशन डेस साइंसिस डे एल'होम केंद्र में आए।

5. प्रो. जे. डिमेर्थ, (प्राफेसर यूनिवर्सिटी आफ मसाचुसेट्स और सीनियर फुलब्राइट स्पेशिलस्ट) केंद्र में आए।

6. प्रो. अरी सितास, नेटाल विश्वविद्यालय, डर्बन, दक्षिण अफ्रीका केंद्र में आए।

7. सुश्री जुलिया सूर्याकुसुम स्कालर और पत्रकार, इंडोनेशिया केंद्र में आईं।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. डा. प्रणव बैनर्जी, फेलो, आई.आई.पी.ए. 17 अप्रैल 2002 को केंद्र में आए और "वैल्यूज ऐंड इंटीट्यूशंस इन इकोनामिक डिवलपमेंट : सम ट्रेन्ड्स" विषयक व्याख्यान दिया।

2. डा. बेंजामिन जकारिया, शेफील्ड विश्वविद्यालय, यू.के. 2 अगस्त 2002 को केंद्र में आए और "डिवलपमेंट ऐंड लेजिटमेशन सी 1930–50" विषयक व्याख्यान दिया।

3. प्रोफेसर अरविन्दो सामन्त, बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान 28 अगस्त, 2002 को केंद्र में आए और "साइक्लोन हैजर्ड्स ऐंड कम्यूनिटी रिस्पांस इन कोस्टल बंगाल" विषयक व्याख्यान दिया।

4. डा. सौमित्री बर्दराजन, डिपार्टमेंट आफ इंडस्ट्रियल डिजाइन, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी, नई दिल्ली 20 सितम्बर 2002 को केंद्र में आईं और "द प्रोजेक्ट आफ इंडस्ट्रियल डिजाइन एज्यूकेशन इन इण्डिया : ए प्रेक्टिशनर्स'स हिस्ट्री" विषयक व्याख्यान दिया।

5. मानद प्रोफेसर प्रो. योगेन्द्र सिंह, सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, जेएनयू 25 सितम्बर 2002 को केंद्र में आए और "इमर्जिंग आस्पेक्ट्स आफ एज्यूकेशन ऐंड सोशल चेंज इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

6. प्रोफेसर एच.के. चांग, सिटी विश्वविद्यालय, हांगकांग में अध्यक्ष और प्रोफेसर, 29 जनवरी 2003 को केंद्र में आए और "यूनिवर्सिटीज विद डाइवर्सिटी – हांगकांग'स हायर एज्यूकेशन" विषयक व्याख्यान दिया।

7. डा. गेवाल्डिन मैकडोनाल्ड, विक्टोरिया विश्वविद्यालय, विलिंग्टन 22 जनवरी 2003 को केंद्र में आए और "एज्यूकेशन ह्यूमन राइट्स ऐंड द ला" विषयक व्याख्यान दिया।

8. प्रोफेसर आई.एस. दुआ, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ 26 फरवरी, 2003 को केंद्र में आए और "डार्विन टु डॉली ऐंड बियान्ड" विषयक व्याख्यान दिया।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. प्रोफेसर विवेक मूर्ति, आई.आई.एम., बंगलौर फरवरी 2003 से मई 2003 के दौरान केंद्र में विजिटिंग प्रोफेसर रहे।
2. डा. एन. गारेब–अब, इथोपिया के प्रधानमंत्री के मुख्य आर्थिक सलाहकार 21 जनवरी, 2003 को केंद्र में आए।
3. डा. वरोनिका विलारेस्पे रेज, मैक्सिको नवम्बर 2002 में केंद्र में आए।
4. डा. पिनाकी चक्रवर्ती, बर्दवान विश्वविद्यालय अक्टूबर–नवम्बर 2002 के दौरान केंद्र में आए।
5. प्रो. फर्नांडो रेलो, नेशनल यूनिवर्सिटी, मैक्सिको दिसम्बर 2001 से अक्टूबर 2002 के दौरान विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में केंद्र में रहे।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. प्रो. एलन रोजर्स, नोटिंघम विश्वविद्यालय, यू.के. के विशेष प्रोफेसर केंद्र में आए।
2. प्रो. टी.के.वी. सुब्रामणियन, डीन, सामाजिक विज्ञान संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय केंद्र में आए।
3. प्रो. एस.के. भाटी, अध्यक्ष, विस्तार विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली केंद्र में आए।

संस्थान द्वारा आयोजित व्याख्यान/संगोष्ठी/सम्मेलन

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. हांगकांग यूनिवर्सिटी आफ साइंस ऐंड टेक्नोलाजी के प्रो. इरिक बार्क ने 10 जुलाई 2002 को "चाइनीज स्ट्रेटजीज टुवर्डस हाई टेक्नोलाजी" विषयक व्याख्यान दिया।
2. प्रबन्धन विकास संस्थान, गुड़गांव के डा. बरनार्ड डी. मेलो ने सितम्बर 2002 में "अचीविंग टेक्नोलाजिकल कैपेबिलिटी : केसिस आफ स्टील ऐंड बायोटेक्नालाजी" विषयक व्याख्यान दिया।
3. भारतीय प्रबन्धन संस्थान, बंगलौर के प्रोफेसर ऋषिकेश कृष्णन ने 27 सितम्बर, 2002 को "इण्डिया'स इमर्जिंग नेशनल इनोवेशन सिस्टम" विषयक व्याख्यान दिया।
4. साइंस ऐंड टेक्नोलाजी पालिसी रिसर्च यूनिट, यूनिवर्सिटी आफ ससेक्स, यू.के. के मानद प्रोफेसर डा. जिओफ्री ओल्डहैम ने 1 नवम्बर 2002 को "हाउ गवर्नमेंट्स एक्वायर साइंटिफिक ऐंड टेक्नोलाजिकल एडवाइस : रिसेंट ट्रेन्ड्स" विषयक व्याख्यान दिया।
5. विज्ञान नीति अध्ययन केंद्र के वरिष्ठ फैलो प्रो. नासिर तैयबजी ने 13 नवम्बर 2002 को "सम कंटेम्पोरेरि ट्रेन्ड्स इन द हिस्ट्री आफ टेक्नोलाजी" विषयक व्याख्यान दिया।
6. जीन कैम्पेन, नई दिल्ली के डा. सुमन सहाय ने 29 जनवरी 2003 को "बायोडाइवर्सिटी नेशनल लेजिसलेशन ऐंड द डब्ल्यू.टी.ओ." विषयक व्याख्यान दिया।
7. प्रोफेसर अशोक पार्थासारथी ने 5 से 7 दिसम्बर 2002 तक एसोसिएशन आफ कामनवेल्थ यूनिवर्सिटीज, लंदन के सहयोग से "इंटेलेक्चुअल प्रापर्टी मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलाजी कामर्शिलाइजेशन इन हायर एज्यूकेशन इंस्टीट्यूशंस" विषयक कार्यशाला आयोजित की।

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

1. राजनीति विज्ञान विभाग, सिनसिनाती विश्वविद्यालय के डा. लौरा जेनकिन्स ने 16 सितम्बर 2002 को "रिजर्वेशन पालिसी ऐंड अफरमेटिव एक्सशन : कम्पेरिंग इण्डिया ऐंड द यूनाइटिड स्टेट्स" विषयक व्याख्यान दिया।
2. मेसाचुसेट्स विश्वविद्यालय के प्रो. एन.जे. डेमार्थ ने 15 जनवरी 2003 को "रिलीजन, पालिटिक्स ऐंड द स्टेट" विषयक व्याख्यान दिया।
3. जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, अमेरिका के प्रो. डीन हैरी हार्डिंग ने 30 जनवरी, 2003 को "यू.एस. फारेन पालिसी टुवर्डस एशिया" विषयक व्याख्यान दिया।
4. जान हाफिन्स विश्वविद्यालय की प्रो. वीना दास ने 29 जनवरी 2003 को "एन्थ्रोपोलाजी ऐट द मार्जिन्स आफ द स्टेट" विषयक व्याख्यान दिया।

5. स्केग्प आफ साउथ एशिया इंस्टीट्यूट, यूनिवर्सिटी आफ हिडलबर्ग के डा. मारिन बेलविंकल ने 5 मार्च 2003 को "दलित एसर्टिवनेस, डिइंडस्ट्रिलाइजेशन ऐंड अर्बन गवर्नमेंट इन कानपुर" विषयक व्याख्यान दिया।

6. शिकागो विश्वविद्यालय के प्रो. सुसान रूडोल्फ और प्रो. लोइड रूडोल्फ ने "इंगेजिंग सब्जेक्टिव नालेज : इपिस्टेमोलाजिकल इंप्लिकेशंस आफ द अमर सिंह डायरी" विषयक व्याख्यान दिया।

7. राजनीतिक अध्ययन केंद्र के विजिटिंग प्रोफेसर प्रो. एजाज अहमद ने 9 अप्रैल 2003 को "द इराक वार ऐंड रिमैपिंग द वर्ल्ड" विषयक व्याख्यान दिया।

8. पेरिस विश्वविद्यालय के प्रो. राडा इवकोविक ने 26 फरवरी 2003 को "नेशनल ऐंड सुपरनेशनल कंस्ट्रक्शन आफ यूरोप" विषयक व्याख्यान दिया।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. विलमेन्स जर्गनमेयर, आर्नोल्ड बर्जस्ट्रेसर इंस्टीटयूट, जर्मनी ने 4.4.2002 को "वेस्टमिनिनिस्टर आफ डेमोक्रेसी ऐंड इण्डियन पालिटिक्स सिस्टम" विषयक व्याख्यान दिया।

2. केंद्र के शिक्षकों और शोधार्थियों के एक ग्रुप ने 15 अप्रैल 2002 को "सोसियोलाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक प्रो. सी.एन. वेणुगोपाल अभिनंदन संगोष्ठी आयोजित की।

3. प्रो. हार्टमट इल्सगहेन्स, यूनिवर्सिटी आफ लीपजिंग, ने 18 अप्रैल 2002 को "ग्लोबलाइजेशन ऐंड न्यू सोशल मूवमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

4. प्रो. पी.के. दवे, निदेशक, एम्स, ने 8 अगस्त 2002 को "द रोल आफ पब्लिक हास्पिटल्स इन इंडिया" विषयक व्याख्यान दिया।

5. प्रो. जोइल रूइट ने 22 अगस्त 2002 को "द आर्गेनाइजेशन ऐंड सोसियोलाजी आफ द पब्लिक सेक्टर इन इण्डिया ऐंड फ्रांस" विषयक व्याख्यान दिया।

6. डा. रामा बारू, जेएनयू ने 5 सितम्बर 2002 को "सोसियोलाजी आफ प्राइवेटाइजेशन इन हैल्थ" विषयक व्याख्यान दिया।

7. फ्रेंसन गंजली ने 12 सितम्बर 2002 को "डिस्कोर्स डिजायर : नालेज ऐंड पावर" विषयक व्याख्यान दिया।

8. डा. हरीश नारायण दास ने 19 सितम्बर 2002 को "क्राइसिस, करिश्मा ऐंड ट्रिएज : इरेडिकेशन द पोक्स" विषयक व्याख्यान दिया।

9. जानेत चावला ने 26 सितम्बर 2002 को "ट्रेडिशनल ऐंड माडर्निटी : कल्चरल कंस्ट्रक्शंस आफ बर्थ" विषयक व्याख्यान दिया।

10. अंजली इला मेनन ने 17 अक्टूबर 2002 को "कंटेम्पोरेरि आर्टस" विषयक व्याख्यान दिया।

11. केंद्र के शिक्षकों और शोधार्थियों के एक ग्रुप ने 21 से 23 अक्टूबर 2002 तक "रिथिंकिंग सोसियोलाजी : द इण्डियन कंटेक्स्ट" विषयक प्रो. टी.के. ऊमन अभिनंदन संगोष्ठी आयोजित की।

12. डा. जी. तारावोव, निदेशक, इण्डो–फ्रेंच प्रोग्राम मेसन डेस साइंसिस डे एल'होम, ने 31 अक्टूबर 2002 को "फार ऐन एन्थ्रोपोलोजी आफ डाइवर्सिटी : द केस आफ केरला" विषयक व्याख्यान दिया।

13. प्रो. एन.जे. डेमर्थ, मेसाचूसेटस यूनिवर्सिटी और सीनियर फुलब्राइट स्पेस्लिस्ट ने 16 जनवरी 2003 को "सिविल रिलीजन ऐंड सिविल सोसायटी इन ए सिविलाइज्ड वर्ल्ड" विषयक व्याख्यान दिया।

14. प्रो. आर. राजारमण, भौतिक विज्ञान संस्थान ने 23 जनवरी 2003 को "रिस्क इन प्रोसेसिंग ऐंड डिवलपिंग न्यूक्लियर वेपन्स" विषयक व्याख्यान दिया।

15. प्रो. ज्योतिन्द्र जैन, डीन, कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान ने "म्युजियम्स ऐज ए कंटेस्टिड स्पेस" विषयक व्याख्यान दिया।

16. प्रो. अरि सितास, नेटाल यूनिवर्सिटी, डर्बन, दक्षिण अफ्रीका, ने 6 फरवरी 2003 को "वायलेंस, सोशल मूवमेंट्स ऐंड नियो–गांधीयन इंपल्स इन क्वाजुलू नेटाल" विषयक व्याख्यान दिया।

17. गीता हरिहरन ने 13 फरवरी 2003 को "राइटिंग फिक्सन इन ट्रबल्ड टाइम्स" विषयक व्याख्यान दिया।

18. प्रो. सी.पी. भाम्बरी, प्रसिद्ध विद्वान, ने 20 फरवरी 2003 को "हिन्दुत्व : ए चैलेंज टु मल्टी–कल्चरल डेमोक्रेसी" विषयक व्याख्यान दिया।

19. डा. इशिता दुबे ने 27 फरवरी 2003 को "सोसियोलाजी आफ द जगन्नाथ टेम्पल" विषयक व्याख्यान दिया।

20. प्रो. रियाज पंजाबी ने 6 मार्च 2003 को "कल्चर आफ वायलन्स : रिस्पांसिस आफ स्टेट ऐंड सिविल सोसायटी (ए केस स्टडी आफ कश्मीर)" विषयक व्याख्यान दिया।

21. सुश्री जुलिया सूर्यकुसुम, विद्वान और पत्रकार, इण्डोनेशिया ने 26 मार्च 2003 को "मल्टिकल्चरिलिज्म इन इण्डोनेशिया" विषयक व्याख्यान दिया।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केंद्र, जेएनयू और पर्यावरणीय इतिहास केंद्र, ससेक्स विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से 4 से 7 दिसम्बर 2002 तक "एनवायरनमेंटल हिस्ट्री आफ एशिया" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. डा. इंदिवर कामतेकर ने 18 नवम्बर 2002 और 18 फरवरी 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में व्याख्यान दिए।

2. कुणाल चक्रवर्ती ने नवम्बर 2002 में ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र के संकाय सदस्यों द्वारा आयोजित "हिस्ट्री आफ रिलीजन संगोष्ठी श्रृंखला" में "लक्ष्मीज अदर : ब्राह्मेनिकल कंस्ट्रक्शन आफ ए निगेटिव गाडेस" विषयक पहली संगोष्ठी आयोजित की।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. प्रो. विवैक मूर्ति, आई.आई.एम., बंगलौर ने 25 मार्च 2003 को "सेटिंग स्माल सेविंग्स ऐंड पी.एफ. रेट्स" विषयक व्याख्यान दिया।

2. प्रो. सुभाशीष गंगोपाध्याय, इण्डिया डिवलपमेंट फाउण्डेशन ने 4 मार्च 2003 को "द रिलेवेन्स आफ कनसाइनिंग इन ए सिम्पल एसिमेट्रिक इंफार्मेशन माडल" विषयक व्याख्यान दिया।

3. डा. रिचार्ड पर्किन्स, पोस्ट डाक्टरल फेलो, लंदन स्कूल आफ इकोनोमिक्स ने 25 फरवरी 2003 को "एनवायरनमेंटल लीफफ्रोजिंग इन डिवलपिंग कंट्रीज : ए क्रिटिकल असेसमेंट ऐंड रिकंस्ट्रक्शन" विषयक व्याख्यान दिया।

4. प्रो. गुरवचन सिंह, अ.अ.सं. जेएनयू, ने 25 फरवरी 2003 को "फाइनेशनल इंटरमिडिएशन ऐंड इंप्लायमेंट" विषयक व्याख्यान दिया।

5. प्रो. प्रभात पटनायक, डीन, सामाजिक विज्ञान संस्थान ने 3 दिसम्बर 2002 को "प्राइस ऐंड इनकम फ्लेक्चुएशंस इन एग्रीकल्चर" विषयक व्याख्यान दिया।

6. प्रो. मनोरंजन दत्ता, रूटजर्स विश्वविद्यालय, अमेरिका ने 26 नवम्बर 2002 को "इण्डियन इकोनामिक रिफार्म्स : ए क्रिटिक" विषयक व्याख्यान दिया।

7. प्रो. गिलबर्ट इटिने, ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफ इंटरनेशनल स्टडीज, जिनेवा ने 21 नवम्बर 2002 को "सम रिसेंट ट्रेन्डस आफ चाइना'स इकोनामी विद रिफ्रेन्स टु इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

8. डा. पिनाकी चक्रवती, बर्दवान विश्वविद्यालय ने 7 नवम्बर 2002 को "सम कंफ्लेक्टिंग आस्पेक्ट्स आफ द इंप्लायमेंट मल्टिप्लायर" विषयक व्याख्यान दिया।

9. डा. वरोनिका विलारेस्पे रियेस, इंस्टीट्यूटो डे इंवेस्टिगेसियोंस इकोनोमिकास, मैक्सिको ने 5 नवम्बर 2002 को "पावर्टी, थीअरि ऐंड हिस्ट्री" विषयक व्याख्यान दिया।

10. डा. शेन कैया, विजिटिंग स्कालर, एशिया फेलो प्रोग्राम ने 29 अक्टूबर 2002 को "अचीवमेंट्स ऐंड प्राब्लम्स आफ चाइनीज इकोनामिक प्राब्लम्स" विषयक व्याख्यान दिया।

11. प्रो. फर्नान्डो रेलो, नेशनल यूनिवर्सिटी आफ मैक्सिको ने 3 अक्टूबर 2002 को "रूरल इंस्टीट्यूशंस ऐंड फैमिली स्ट्रेटजीस अगेंस्ट पावर्टी इन मैक्सिको" विषयक व्याख्यान दिया।

12. प्रो. प्रदीप दुबे, सनी (स्टोनीबूक) यू.एस.ए. ने 1 अक्टूबर 2002 को "स्ट्रटजिक कम्पलीमेंट्स ऐंड सब्सटीट्यूट्स ऐंड पोटेंशल गेम्स" विषयक व्याख्यान दिया।

13. डा. अमित एस. रे, अ.अ.सं. जेएनयू ने 2 सितम्बर 2002 को "एफ.डी.आई. इन इकोनामिक डिवलपमेंट आफ चाईना ऐंड इण्डिया : ए कम्पैरेटिव एनालिसिस" विषयक व्याख्यान दिया।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई. शाह ने 26 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2002 तक प्रौढ़ शिक्षा समूह, जेएनयू और भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "रिसर्च मेथडोलाजी ऐंड रिसेंट डिवलपमेंट इन एडल्ट एज्यूकेशन" विषयक अखिल भारतीय कोर्स को समन्वित किया।
2. एस.वाई. शाह ने 11 से 13 दिसम्बर 2002 तक द स्टेट रिसोर्स सेंटर, इण्डियन एडल्ट एज्यूकेशन एसोसिएशन, उपिंघम द्वारा संयुक्त रूप से आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित "अर्बन लिट्रेसी" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी को समन्वित किया तथा डिवलपमेंट ऐंड ग्रुप आफ एडल्ट एज्यूकेशन, जेएनयू की संगोष्ठी को भी समन्वित किया।
3. शांता कृष्णन ने हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश में "कल्टिवेशन आफ मेडिसिनल प्लांट्स, रूरल इंप्लायमेंट इनकम अपरच्युनिटीज ऐंड चैलेंजिस" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।
4. एम.सी. पाल ने 10 से 14 अप्रैल, 2002 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा जेएनयू में प्रायोजित "प्राब्लम्स आफ डिपेंडेंस प्रोड्यूसिंग सब्सटेन्स ऐंड रिसर्च मेथडोलाजी" विषयक 5दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार / सम्मान / अध्येतावृत्तियां

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. जी.के. चड्ढा, इण्डियन सोसायटी आफ एग्रीकल्चरल इकोनामिक्स के 62वें वार्षिक सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए।
2. जी.के. चड्ढा, इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनामिक्स के वार्षिक सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए।
3. जी.के. चड्ढा को ग्रामीण विकास के लिए शैक्षिक सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राष्ट्रीय एकता पुरस्कार प्राप्त हुआ।
4. सुदेश नांगिया, अध्यक्ष, आई.ए.एस.पी.
5. सुदेश नांगिया, संयोजक, पाप्यूलेशन एज्यूकेशन प्रोग्राम, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
6. सुदेश नांगिया, सदस्य, सम्पादकीय मण्डल डेमोग्राफी इण्डिया, इण्डियन जिओग्राफिकल जर्नल
7. हरजीत सिंह, अध्यक्ष, मकान आबंटन समिति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2000 से
8. हरजीत सिंह, सलाहकार, विश्वविद्यालय रोजगार कार्यालय, 2001 से
9. के.एस. सिवासामी, सदस्य, भारतीय नदियों की सिल्टिंग की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए गठित समिति, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. योगेन्द्र सिंह 2002–2003 के लिए आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम आन्ध्र प्रदेश द्वारा अवैतनिक विजिटिंग प्रोफेसर चुने गए।
2. योगेन्द्र सिंह को वर्ष 2003 के लिए सेंटर फार स्टडीज इन सिविलाइजेशंस, नई दिल्ली द्वारा सम्पादकीय अध्येतावृत्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. दीपक कुमार, विजिटिंग फैलो, वेलकम इंस्टीट्यूट फार हिस्ट्री आफ मेडिसिन, लन्दन, जून–जुलाई 2002

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. कुणाल चक्रवर्ती को राकफेलर रिसर्च सेंटर, बेलाजिओ, इटली में एक माह के लिए विजिटिंग फैलोशिप प्राप्त हुई।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. के.आर. नायर, गेस्ट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट आफ ट्रापिकल हाइजीन ऐंड पब्लिक हैल्थ, हिडलबर्ग यूनिवर्सिटी, जर्मनी।
2. के.आर. नायर, बाह्य परीक्षक, डिपार्टमेंट आफ ट्रापिकल हाइजीन ऐंड पब्लिक हैल्थ, हिडलबर्ग यूनिवर्सिटी, जर्मनी, 2002 से 2004 तक।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. अंजन मुखर्जी को इंस्टीट्यूट आफ सोशल ऐंड इकोनामिक रिसर्च, ओसाका यूनिवर्सिटी (1 अगस्त 2002 से 20 जुलाई 2003 तक) में कम्पीटिटिव इक्विलिब्रिआ : कनवर्जेन्स, साइकल्स आर केआस विषय पर कार्य करने के लिए विजिटिंग फारेन स्कालरशिप प्राप्त हुई।
2. अरूण कुमार को 22 जनवरी, 2003 को 26वीं इण्डियन सोशल साइंस कांग्रेस के उद्घाटन समारोह में "ग्लोबलाइजेशन" विषयक सर्वश्रेष्ठ आलेख के लिए इण्डियन अकादमी आफ सोशल साइंसिस का पी.वी. सुखात्मे स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एस.वाई. शाह को द कामनवेल्थ एसोसिएशन फार द एज्यूकेशन ऐंड ट्रेनिंग आफ एडल्ट (यू.के.), द ग्लोबल ओपन यूनिवर्सिटी (मिलान) और इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ एज्यूकेटर्स फार वर्ल्ड पीस (यू.एस.ए.) द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोजित सरदार पटेल अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

1. वी.वी. कृष्णा, सम्पादक, साइंस, टेक्नोलाजी ऐंड सोसायटी शीर्षक पत्रिका, सेज प्रकाशन; सदस्य, इंडस्ट्रियल क्लस्टर्स विषयक कार्यदल, यूनिडो क्लस्टर प्रोग्राम, नई दिल्ली; सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान नीति अध्ययन परिषद, (आई.सी.एस.यू.) यूनेस्को, पेरिस, फ्रांस।
2. ए. पार्थासारथी, सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय शासी मण्डल, दक्षिण केंद्र, जिनेवा; सदस्य, बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स, टवेन्टीफर्स्ट सेंचुरी बैटरी लिमिटेड, चण्डीगढ़; सदस्य, निदेशक मण्डल, टरबोटेक प्रिसिजन इंजीनियरिंग लिमिटेड, बंगलौर; सदस्य, सलाहकार समिति, एज्यूकेशनल ऐंड कल्चरल एक्टिविटीज आफ द इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली; सदस्य, प्रोग्राम प्लानिंग एडवाइजरी ग्रुप आन एस ऐंड टी आफ द इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली; सदस्य, शासी निकाय, स्ट्रेटिजिक मैनेजमेंट ग्रुप, नई दिल्ली; सदस्य, डा. मुरली मनोहर जोशी, केंद्रीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और प्रौद्योगिकी और समुद्र विकास मंत्रालय द्वारा प्रो. एम.जी.के. मेनन की अध्यक्षता में गठित द मिलेनियम एस ऐंड टी पालिसी स्टेटमेंट आफ गवर्नमेंट आफ इण्डिया की मसौदा समिति।
3. नासिर तैयबजी, सदस्य, स्थायी समिति महिला अध्ययन कार्यक्रम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सदस्य, सलाहकार समिति, द हिस्ट्री आफ माडर्न केमिस्ट्री, इंटरनेशनल यूनियन आफ हिस्ट्री ऐंड फिलास्फी आफ साइंस/डिवीजन आफ हिस्ट्री आफ साइंस पर गठित आयोग; सदस्य, वरिष्ठ सम्पादकीय मण्डल, नई अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका, कम्पैरेटिव टेक्नोलाजी ट्रांस्फर ऐंड सोसायटी पब्लिस्ड फार द कोलोराडा इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी ट्रांस्फर ऐंड इंप्लिमेंटेशन बाइ जान हापकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. के.जे. जोसफ, सदस्य, सोशल साइंस ऐंड ह्युमैनिटीज में इण्डो–जापान सहयोग पर गठित भारतीय समिति; उपाध्यक्ष, केरल विकास सोसायटी।

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

1. अनुराधा बैनर्जी, आजीवन सदस्य, द जिओग्राफिकल सोसाइटी आफ इण्डिया, कलकत्ता; आजीवन सदस्य, द इंस्टीट्यूट आफ इकोलाजी, इकिस्टिस्क्स ऐंड लैण्डस्केप, कलकत्ता; आजीवन सदस्य, इण्डियन एसोसिएशन फार द स्टडी आफ पाप्यूलेशन; आजीवन सदस्य, इण्डियन नेशनल कारटोग्राफिक एसोसिएशन
2. बी.एस. बुटोला, सदस्य, नेशनल एसोसिएशन आफ जिओग्राफर्स इण्डिया; सदस्य, नार्थ ईस्टर्न इण्डिया हिस्ट्री एसोसिएशन; सदस्य, नार्थ ईस्टर्न हिल जिओग्राफर्स एसोसिएशन; सदस्य, सेंटर फार इंटर डिसिप्लिनिरी स्टडीज आन नार्थ–ईस्ट।
3. जी.के. चड्ढा, सदस्य, भारतीय अर्थशास्त्र संघ; सदस्य, इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनामिक; सदस्य, इण्डियन सोसायटी आफ एग्रीकल्चरल इकोनामिक्स; सदस्य, इण्डियन इकोनोमेट्रिक्स एसोसिएशन; सदस्य, इण्डियन सोसायटी फार द स्टडी आफ पाप्यूलेशन; सदस्य, भारतीय सामाजिक विज्ञान संघ; सदस्य, 10वीं पंचवर्षीय योजन के दौरान इंप्लायमेंट विषयक योजना आयोग कार्यदल; सदस्य, भारतीय कृषि शोध परिषद के विशेष सलाहकार पैनल (इरिगेटिड क्रोप सिस्टम); सदस्य, भू–विज्ञान शोध फाउन्डेशन की भू–विज्ञान पुरस्कार समिति।

4. कुसुम चौपड़ा, सदस्य, आई.एस.आई.डी. में दिल्ली परिचर्चा ग्रुप; बाह्य विशेषज्ञ यू.जी.सी.डी.आर.एस. सलाहकार समिति; बाह्य विशेषज्ञ, अर्थशास्त्र संस्थान, मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई।

5. नारायण सी. जेना, आजीवन सदस्य, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ कलकत्ता; आजीवन सदस्य, भारतीय भौगोलिक सोसायटी, कलकत्ता; आजीवन सदस्य, इंस्टीट्यूट आफ लैण्डस्केप, इकोलाजी ऐंड इकिस्टिक्स, कलकत्ता; आजीवन सदस्य, क्षेत्रीय विज्ञान संघ, कलकत्ता; आजीवन सदस्य, भारतीय भूगोलवेत्ता परिषद, भुवनेश्वर; आजीवन सदस्य, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ जिओमार्फोलाजिस्ट्स, इलाहाबाद; आजीवन सदस्य, राष्ट्रीय भूगोलवेत्ता संस्थान, पुणे; आजीवन सदस्य, इण्डियन नेशनल कार्टोग्राफिक एसोसिएशन, हैदराबाद; आजीवन सदस्य, एशियाई पर्यावरणीय परिषद, जयपुर; आजीवन सदस्य, अखिल भारत भूविद्या ओ परिवेश समिति, शांति निकेतन; आजीवन सदस्य, भारत विद्या चर्चा केंद्र, बर्दवान; सह सदस्य, भू विकास फाउन्डेशन, नई दिल्ली

6. अतिया किदवई, सह फैलो, इंस्टीट्यूट आफ टाउन प्लानर्स, इण्डिया; आजीवन सदस्य, राष्ट्रीय भूगोलवेत्ता संघ; सदस्य, शैक्षिक स्थाई समिति, इंस्टीट्यूट आफ टाउन प्लानर्स, इण्डिया; सदस्य, डाक्टरल शोध समिति, योजना एवं वास्तुविद्या संस्थान, नई दिल्ली; सदस्य, कोर्स रिस्ट्रक्चरिंग कमेटी, क्षेत्रीय योजना विभाग, योजना एवं वास्तुविद्या संस्थान, नई दिल्ली; कार्यकारी सदस्य, अर्बन हिस्ट्री एसोसिएशन आफ इण्डिया; सदस्य, पाठ्यक्रम एवं परीक्षा के लिए गठित समिति, वास्तुविद्या परिषद, भारत; सदस्य, परियोजना सलाहकार समिति, इग्नू वर्ल्ड बैंक रिहैबिलिटेशन ऐंड रिसेटलमेंट प्रोजेक्ट; सदस्य, अध्ययन ग्रुप, रीजनल लैण्ड यूज, नेशनल कैपिटल रीजन प्लानिंग बोर्ड, नई दिल्ली; सदस्य, डाक्टरल कार्यक्रम के लिए गठित समिति, योजना एवं वास्तुविद्या संस्थान, नई दिल्ली।

7. पी.एम. कुलकर्णी,, सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विजिटिंग समिति, IXथ प्लान परफार्मेंस अप्रेजल ऐंड Xथ प्लान प्रमोजल्स, यूनिवर्सिटी आफ कल्याणी, सम्पादकीय मण्डल, डेमोग्राफी इण्डिया; तकनीकी सलाहकार समिति, सैम्पल रजिट्रेशन सिस्टम, भारत के महापंजीयक का कार्यालय; संचालन समिति, हैल्थ सिस्टम परफार्मेन्स अरोसमेंट फार द वर्ल्ड हैल्थ रिपोर्ट 2002 आई.आई.पी.एस., मुम्बई; इंटरनेशनल यूनियन फार द साइंटिफिक स्टडी आफ पाप्यूलेशन स्टडी आफ पाप्यूलेशन; इण्डियन एसोसिएशन फार द स्टडी आफ पाप्यूलेशन; इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ सर्वे स्टेटिस्टिसियशंस।

8. अमिताभ कुण्डु, सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनामिक्स; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल जर्नल आफ ऐप्लाइड मैनपावर रिसर्च; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, अर्बन इण्डिया; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, जर्नल आफ नेशनल इंस्टीट्यूट आफ एज्यूकेशनल प्लानिंग ऐंड एडमिनिस्ट्रेशन; सदस्य, शासी मण्डल, विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर; सदस्य, शोध सलाहकार समिति, आई.ए.एम.आर., नई दिल्ली।

9. अशोक माथुर, सदस्य, शासी मण्डल, सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र, कलकत्ता; आजीवन सदस्य, इण्डियन इकोनामिक्स एसोसिएशन; आजीवन सदस्य, इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनामिक्स; आजीवन सदस्य, इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनोमिक्स; आजीवन सदस्य, भारतीय क्षेत्रीय विज्ञान संघ।

10. एस.के. नांगिया, आजीवन सदस्य, राष्ट्रीय भूगोलवेत्ता संघ; आजीवन सदस्य, इण्डियन एसोसिएशन फार द स्टडी आफ पाप्यूलेश (अध्यक्ष 2002–04); आजीवन सदस्य, भारतीय क्षेत्रीय विज्ञान संघ; आजीवन सदस्य, इण्डियन सोसायटी आफ लेबर इकोनामिक्स; आजीवन सदस्य, इण्डियन लैण्ड–यूज ऐंड रिमोट सेंसिंग सोसायटी; आजीवन सदस्य, इण्डियन नेशनल कार्टोग्राफिक एसोसिएशन (सदस्य, कार्य परिषद); आजीवन सदस्य, एसोसिएशन आफ नार्थ–ईस्टर्न हिल जिओग्राफर्स; आजीवन सदस्य, भारतीय भौगोलिक सोसायटी; सदस्य, इंस्टीट्यूट'स सलेक्शन अस्सेसमेंट ऐंड प्रमोशन कमेटी, वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट आफ इण्डिया, देहरादून; सदस्य, पाप्यूलेशन आफ एनवायरनमेंट पर गठित अन्तर्राष्ट्रीय आयोग, इंटरनेशनल जिओग्राफिकल यूनियन; सदस्य, सोशल बिहेवियरल टास्क फोर्स, आई.सी.एम.आर., नई दिल्ली; सदस्य, इंटरनेशनल नेटवर्क आन पाप्यूलेशन ऐंड एनवायरनमेंट, आई.यू.एस.एस.पी., इंटरनेशनल यूनियन फार द साइंटिफिक स्टडी आफ पाप्यूलेशन, पेरिस, फ्रांस; सदस्य, अध्ययन मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू; वार्षिक सदस्य, इंटरनेशनल यूनियन फार द साइंटिफिक स्टडी आफ पाप्यूलेशन; सदस्य, सोसायटी फार एप्लायड रिसर्च इन ह्युमैनिटीज।

11. एम.एच. कुरेशी, आजीवन सदस्य, भारतीय भौगोलिक संघ; आजीवन सदस्य, भारतीय भौगोलिक सोसायटी, चेन्नई; आजीवन सदस्य, राजस्थान भौगोलिक संघ; सदस्य, भूगोल में स्नातकोत्तर अध्ययन पर गठित मण्डल, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र; सदस्य, भूगोल में स्नातकोत्तर अध्ययन पर गठित मण्डल, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक; सदस्य, भूगोल में गठित अध्ययन मण्डल, बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान, पश्चिम बंगाल; सदस्य, विज्ञान

संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़; सदस्य, भूगोल अध्ययन मण्डल, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ; आजीवन सदस्य, सर्वेंट्स आफ पीपल्स सोसायटी, दिल्ली; कार्यकारी सदस्य, अखिल भारत रचनात्मक समाज; संयोजक, एसोसिएशन आफ पीपल्स आफ एशिया, दिल्ली; सदस्य, विद्या परिषद, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली; सदस्य, विद्या समिति, सेना इंजीनियरी कालेज, पुणे; सदस्य, पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केंद्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जेएनयू; सदस्य, फारसी अध्ययन केंद्र भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, जेएनयू; सदस्य, संस्कृत अध्ययन केंद्र, जेएनयू; सदस्य, नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, रिहैबिलिटेशन ऐंड रिसेटलमेंट, गवर्नमेंट आफ इण्डिया पर गठित उप समिति; सदस्य, अध्ययन मण्डल, मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय, एम.एल.एस.यू. उदयपुर।

12. सरस्वती राजू, आजीवन सदस्य, राष्ट्रीय भूगोलवेत्ता संघ; आजीवन सदस्य, भारतीय समाजशास्त्रीय सोसायटी, भारत; आजीवन सदस्य, क्षेत्रीय विज्ञान संघ, भारत; आजीवन सदस्य, भारतीय जनसंख्या अध्ययन संघ, भारत; आजीवन सदस्य, भारतीय भूगोलवेत्ता संस्थान; संस्थापक सदस्य, जेंडर अध्ययन फोरम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सदस्य, विशेष सहायता विभाग सलाहकार समिति, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र 1997–2002; सदस्य, विद्या परिषद, 1999 से अब तक; सदस्य, शासी परिषद, ट्रांजेक्शंस इंस्टीट्यूट आफ इण्डिया जिओग्राफर; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल एन्टिपोड, यू.के.; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, एनल्स आफ एसोसिएशन आफ अमेरिकन जिओग्राफर्स, यू.एस.ए.।

13. आर.के. शर्मा, सदस्य, भारतीय श्रम अर्थशास्त्र सोसायटी; सदस्य, भारतीय जनसंख्या अध्ययन संघ, भारत; सदस्य, क्षेत्रीय विज्ञान संघ, भारत।

14. हरजीत सिंह, आजीवन सदस्य, राष्ट्रीय भूगोलवेत्ता संघ, भारत; फेलो, इण्डियन सोसायटी आफ ह्युमन इकोलाजी; सदस्य, अध्ययन मण्डल, पर्यावरण और मानव विज्ञान संस्थान, नार्थ–ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, शिलांग; सदस्य, सामाजिक विज्ञान अध्ययन मण्डल (स्नातकोत्तर), जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू; सदस्य, पी–एच.डी. मण्डल, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला; सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय समिति, अन्तर्राष्ट्रीय लद्दाख अध्ययन संघ, ब्रिस्टल, यू.के.; फेलो, इण्डियन सोसायटी फार ह्युमन इकोलाजी; सदस्य, स्नातकोत्तर अध्ययन मण्डल, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; सदस्य, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, क्षेत्रीय केन्द्र सलाहकार समिति।

15. के.एस. सिवासामी, आजीवन सदस्य, नागी; आजीवन सदस्य, भारत मौसम विज्ञान सोसायटी, दिल्ली; आजीवन सदस्य, भारत भौगोलिक सोसायटी मद्रास; सदस्य, भारतीय दूर संवेदन सोसायटी; सदस्य, भारतीय नदियों की सिल्टंग की समस्या पर अध्ययन करने के लिए गठित समिति, केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली, भारत सरकार; आजीवन सदस्य, भारतीय श्रम अर्थशास्त्र सोसायटी।

16. सच्चिदानन्द सिन्हा, सदस्य, नागी; सदस्य, सलाहकार मण्डल, लैंड ऐंड पीपल सीरीज, एन.बी.टी., नई दिल्ली; सदस्य, सलाहकार समिति, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

17. रवि श्रीवास्तव, सदस्य, नीति सलाहकार प्रकोष्ठ, योजना आयोग, उत्तर प्रदेश सरकार; सदस्य, राष्ट्रीय संचालन समिति, पार्टिसिपेट्री पावर्टी असेसमेंट्स, एशियन डिवलपमेंट बैंक, भारत सरकार; सदस्य, संचालन समिति, रूरल पावर्टी, वाटरशेड्स, डिसेंट्रलाइजेशन ऐंड रूरल डिवलपमेंट 10वीं योजना, योजना आयोग; सदस्य, कार्य दल, एन्टि पावर्टी प्रोग्राम्स, 10वीं योजना, योजना आयोग; सदस्य, कार्य दल, मानीटरिंग ऐंड इवैल्युएशन 10वीं योजना, योजना आयोग; सदस्य, कार्यदल, एग्रीकल्चर, डिमाण्ड ऐंड सप्लाई, 10वीं योजना, योजना आयोग; सदस्य, सम्पादकीय सलाहकार मण्डल, इण्डियन जर्नल आफ एग्रेरियन चेंज; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनामिक्स।

18. एस.के. थोरट, सदस्य, शासी निकाय, अम्बेडकर फाउन्डेशन, नई दिल्ली; सदस्य, विद्या परिषद, डा. बाबा साहेब अम्बेडकर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ; सदस्य, प्रोमिनेंट एकेडेमिसियन्स रिसर्चर यूजर्स ग्रुप, एन.एस.एस.ओ., सी.एस.ओ. दिल्ली; सदस्य, इण्डियन जर्नल आफ लेबर इकोनोमिक्स, दिल्ली; सदस्य, अमेरिकन जर्नल आफ इण्डियन स्टडीज, हैदराबाद; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, दलित इंटरनेशनल न्यूजलेटर, वालफोर्ड, यू.एस.ए.; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, फोर्थ वर्ल्ड जर्नल, निस्वास, भुवनेश्वर; अध्यक्ष, पोलिस अलुमिनी एसोसिएशन, दिल्ली; सदस्य, शासी निकाय, प्रबन्धन निकाय और विद्या परिषद, अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान, महू, इन्दौर; सदस्य, शोध सलाहकार समिति (अर्थशास्त्र) बम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई; सदस्य, रूरल पावर्टी फार 10th प्लान, योजना आयोग; सदस्य, प्रबन्धन मण्डल, ओरियन्टल इन्श्युरेन्स कारपोरेशन, दिल्ली।

19. एम.डी. विमूरी, सदस्य, भारतीय जनसंख्या अध्ययन संघ; सदस्य, मानविकी अनप्रयुक्त शोध सोसायटी; सदस्य, भारतीय श्रम अर्थशास्त्र सोसायटी।

दर्शनशास्त्र केन्द्र

1. पी.वी. मेहता, सदस्य, विद्या परिषद, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय; सदस्य, आई.सी.पी.आर. सम्मेलन आयोजन समिति साइंस, फिलास्फी ऐंड सिविलाइजेशन; बाह्य रेफ्री, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. सुसन विश्वनाथन, सदस्य, अध्ययन मण्डल, कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान, जेएनयू; सदस्य, अध्ययन मण्डल, भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केंद्र; प्रतिनिधि, स्थाई समिति, महिला अध्ययन कार्यक्रम।

2. विवेक कुमार, सदस्य, सम्पादकीय समिति, जर्नल आफ दलित स्टडीज, नई दिल्ली; सदस्य, एथनोग्राफिक ऐंड फाक कल्चर सोसायटी, लखनऊ; सदस्य, उत्तर प्रदेश समाजशास्त्र परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. करूणा चानना, आजीवन सदस्य, थर्ड वर्ल्ड सेंटर फार कम्पैरेटिव स्टडीज, नई दिल्ली; आजीवन सदस्य, आल इण्डिया फण्ड फार वुमन्स एज्यूकेशन, नई दिल्ली; सदस्य, शासी निकाय, लेडी इर्विन कालेज आफ होम साइंस, नई दिल्ली 2003–04; सदस्य, रीजनल साइंटिफिक कमेटी फार एशिया ऐंड द पेसिफिक, यूनेस्को, फोरम आन हायर एज्यूकेशन रिसर्च ऐंड नालेज, यूनेस्को, पेरिस, 2003–05; सदस्य, कार्यक्रम सलाहकार समिति, राज्य शैक्षिक शोध व प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली; सदस्य, शोध सलाहकार समिति, जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान, मोतीबाग, नई दिल्ली; सदस्य, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए सेवा पूर्व प्रशिक्षण के फाउन्डेशन कोर्स विकसित करने के लिए गठित विशेषज्ञ समूह; सदस्य, इग्नू, नई दिल्ली में समाजशास्त्र में एम.ए. कार्यक्रम विकसित करने के लिए गठित कोर ग्रुप; सदस्य, कमेटी टु आइडेंटिफाइ एरियाज/थीम्स फार द नेशनल वर्कशाप टु इवोल्व रिसर्च डिजाइन्स इन प्राइआर्टी एरियाज लीडिंग टु मल्टिसेंट्रिक स्टडीज, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली।

2. दीपक कुमार, सदस्य, सलाहकार मण्डल (पत्रिका) जान हाप्किन्स यूनिवर्सिटी प्रेस, कम्पैरेटिव टेक्नोलाजी ट्रांसफर ऐंड सोसायटी; सदस्य, अध्ययन मण्डल, इतिहास विभाग, कुमायुं विश्वविद्यालय, 2002–04; सदस्य, अध्ययन मण्डल, सी.आई.ई., दिल्ली विश्वविद्यालय, 2003–05।

3. बिनोद खादरिया, फीजी में 5वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "एशिया पेसिफिक माइग्रेशन रिसर्च नेटवर्क (दक्षिण एशिया)" के उपाध्यक्ष;, 2002; भारत के लिए क्षेत्रीय समन्वयक, सेक्रेटेरियट एट द यूनिवर्सिटी आफ बोलोगोम आस्ट्रेलिया के साथ यूनेस्को – मोस्ट प्रोग्राम के अन्तर्गत गठित एशिया पेसिफिक माइग्रेशन रिसर्च नेटवर्क; सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार पेनल, ब्रेन ड्रेन डोजियर, अन्तर्राष्ट्रीय शासी निकाय, www.scidev.net दो पत्रिकाओं की वेबसाइट : नेचर, और साइंस, ऐंड द थर्ड वर्ल्ड अकादमी आफ साइंसेज, 2002; सदस्य, इंटरनेशनल ग्रुप फार कलेक्टिव एक्सपर्ट रिव्यू आफ साइंटिफिक डायसपोरा, इंस्टीट्यूट आफ रिसर्च फार डिवलपमेंट, पेरिस, फ्रान्स, 2002 से; सदस्य, शैक्षणिक और संसाधन सलाहकार पैनल, शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, 1999–2002; सदस्य, निर्धारण और प्रत्यायन समिति, भारत पुनर्वास परिषद (सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत गठित सांविधिक निकाय 2001 से); सदस्य, शासी निकाय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भारत सरकार, 2001–04; सदस्य, पाठ्यचर्या समिति, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2001 से; संयोजक, अर्थशास्त्र में कोर्सो पर गठित समिति, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भारत सरकार, 2001–04; सदस्य, डब्ल्यू.टी.ओ. रिजीम के तहत मानव संसाधन विकास मंत्रालय की इण्डियाज रिस्पांस टु ट्रेड इन एज्यूकेशन सर्विसिस विषयक उच्च स्तरीय तकनीकी समिति 2001 से; सदस्य, अध्ययन मण्डल, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू 1999 से; सदस्य, सलाहकार समिति, एक्जिम बैंक पुस्तकालय, (अर्थशास्त्र) जेएनयू 1996 से; सदस्य, संघ राज्य क्षेत्र पांडिचेरी के निजी गैर मान्यता प्राप्त व्यावसायिक कालेजों में प्रवेश एवं शुल्क का निर्धारण करने के लिए गठित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की समिति 2002; सदस्य, सामान्य परिषद, राष्ट्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण और शोध संस्थान, ओलातपुर, उड़ीसा, 2002; सदस्य, स्किल्ड हैल्थ पर्शनल माइग्रेशन पालिसी इन द पेसिफिक रीजन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के अस्थाई सलाहकार, 2003.

4. गीता बी. नाम्बिसन, सदस्य, कार्य परिषद, अंकुर सोसायटी फार अल्टरनेटिव्स इन एज्यूकेशन, नई दिल्ली

5. ध्रुव रैना, सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, वेस्ट, सामाजिक विज्ञान अध्ययन की पत्रिका, गोटेबोर्ग विश्वविद्यालय, स्वीडन से प्रकाशित; सदस्य, हिस्ट्री आफ साइंस (माडर्न) विषयक इंसा की समिति।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. एस. भट्टाचार्य, सदस्य, शासी निकाय, सेफिस रिसर्च फाउन्डेशन, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ सोशल हिस्ट्री, एम्सटर्डम 2001–05; सदस्य, सम्पादकीय मण्डल, इण्डियन सोशल साइंस रिव्यू, आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली की पत्रिका 2000 से; कोमिट एडिटोरियल इंटरनेशनल एस्तुदियोज दे एशिया, अफ्रीका, मैक्सिको, डी.एफ. 1999–2004; प्रधान सम्पादक, (रिचार्ड इटन और बी.डी. चट्टोपाध्याय के साथ) डिबेट्स इन हिस्ट्री सीरीज, आक्सफोर्ट यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली 2001 से।

2. रणबीर चक्रवर्ती, सदस्य, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र में डी.एस.ए. प्रोग्राम के तहत शोध सहायक के चयन हेतु गठित समिति।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1. घनश्याम शाह, सदस्य, शासी निकाय, भारतीय दलित अध्ययन संस्थान।

2. रामा वी. बारू, साउथ एशिया ऐडिटर, ग्लोबल सोशल पालिसी, सेज प्रकशन; सदस्य, तकनीकी सलाहकार ग्रुप, लिम्फेटिक फिलेरियासिस, विश्व स्वास्थ्य संगठन, जिनेवा; सदस्य, सलाहकार ग्रुप, हैल्थ राजीव गांधी फाउन्डेशन।

3. के.आर. नायर, सदस्य, परियोजना संवीक्षा ग्रुप, सोशल ऐंड बिहेवियरल रिसर्च भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।

4. रितु प्रिया मेहरोत्रा, वी.वी. गिरी, राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा समन्वित राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, भारत सरकार के प्रिवेंशन आफ एच.आई.वी./एड्स इन द वर्कप्लेस विषयक तकनीकी विशेषज्ञ समूह की वर्तमान सलाहकार सदस्य।

5. एस.एस. आचार्य, सदस्य, अध्ययन मण्डल; समान अवसर, कार्यालय, छात्रों के केंद्र सलाहकार।

6. अल्पना सागर, सदस्य, सार्क देशों के लिए सामाजिक चार्टर तैयार करने के लिए गठित सामाजिक विकास सलाहकार परिषद।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. अंजन मुखर्जी भारत सरकार द्वारा स्थापित भारतीय सांख्यिकीय संस्थान के लिए गठित संवीक्षा समिति के सदस्य चुने गये। संवीक्षा कार्य पूरा हो चुका है और इसकी रिपोर्ट जुलाई–अगस्त 2002 में भारत सरकार को प्रस्तुत कर दी गई है।

2. अरूण कुमार, अर्थशास्त्र विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के लिए गठित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की समिति के सदस्य; सदस्य, शासी निकाय, लोकायन।

3. जयती घोष, सदस्य, शासी निकाय, मोती लाल नेहरू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय; (अवैतनिक) कार्यकारी सचिव, इंटरनेशनल डिवलपमेंट इकोनामिक्स एसोसिएट्स।

4. राम प्रसाद सेनगुप्ता, सदस्य, सिविल एविएशन पालिसी आफ द गवर्नमेंट आफ इण्डिया विषयक प्रधानमंत्री कार्यालय की ब्रेनस्टार्मिंग समिति; सदस्य, भारत सरकार द्वारा नामित सेल के निदेशक मण्डल।

प्रौढ़ शिक्षा समूह

1. एम.वाई. शाह, तीन वर्ष (2002–05) की अवधि के लिए इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ एडल्ट ऐंड लाइफलांग एज्यूकेशन, नई दिल्ली के अवैतनिक निदेशक नामित किए गए; सदस्य, राष्ट्रीय शोध समिति, एडल्ट एज्यूकेशन, नेशनल लिट्रेसी मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; सदस्य, कार्यकारी समिति, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली; सदस्य, स्टेट रिसोर्सिस सेंटर्स के अपग्रेडेशन के लिए गठित समिति, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; सदस्य, लक्षी एन. मेनन पुरस्कार समिति, अखिल भारतीय निरक्षरता उन्मूलन समिति, नई दिल्ली; सदस्य, शासी निकाय और प्रोग्राम सलाहकार समिति, स्टेट रिसोर्स सेंटर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सदस्य, सलाहकार समिति, प्रौढ़ शिक्षा विस्तार विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; सदस्य, पाठ्यक्रम समिति, प्रौढ़ अनुवर्ती शिक्षा विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली;

सदस्य, कार्यसमिति एवं आम सभा, भारत साक्षरता मण्डल, लखनऊ; सदस्य, भारत सलाहकार मण्डल, वर्ल्ड लिट्रेसी आफ कनाडा, वाराणसी; सदस्य, शासी निकाय, स्टेट रिसोर्स सेंटर (यू.पी), लखनऊ; सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ एडल्ट ऐंड लाइफलांग एज्यूकेशन, नई दिल्ली।

2. एम.सी. पाल, सदस्य, प्रबन्धन समिति, केंद्रीय विद्यालय स्कूल, केंद्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली; सचिव, नेताजी अकादमी, सब कांटिनेंटल स्टडीज, नई दिल्ली।

छात्रों की उपलब्धियां

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. श्री मृत्युंजय कुमार झा का "आइरन मेकिंग इन इण्डियन हिस्ट्री : एन इंट्रोडक्शन" विषयक शीर्षक आलेख प्रकाशित हुआ (सं.) जी. पाण्डे और जान गैजेरस्टेम, ट्रेडिशन एन इनोवेशन इन द हिस्ट्री आफ आइरन मेकिंग नेशनल, 2003. उन्होंने दिसम्बर 2003 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अमृतसर सत्र में आलेख प्रस्तुत किया।

सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

1 रामानन्द बंगखेरियाक्पम, "लेशंस फ्राम लोकटक" द इकोलाजिस्ट भाग 11, अंक–1, जनवरी–मार्च 2003.

2. अनन्त कुमार, "रिहैबिलिटेशन साइकोलाजी : कंसेप्ट आफ रिहैबिलिटेशन", इम्पैथी इण्डिया भाग–1, अगस्त–अक्टूबर, 2002.

3. राजीव ने 19 से 20 दिसम्बर 2002 तक इंस्टीट्यूट फार रिसर्च इन मेडिकल स्टेटिक्स, आई.सी.एम.आर. और डिपार्टमेंट आफ बायोस्टेटिक्स, ऐम्स, नई दिल्ली द्वारा आयोजित इण्डिया सोसायटी फार मेडिकल स्टेटिक्स के आई.आर.एम.एस. रजत जयंती और 20वें वार्षिक सम्मेलन में "एचआईवी/एड्स इन मणिपुर – कनसंर्स टुडे" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

4. के.एम. जियाउद्दीन ने 19 से 20 दिसम्बर 2002 तक इंस्टीट्यूट फार रिसर्च इन मेडिकल स्टेटिक्स, आई.सी.एम.आर. और डिपार्टमेंट आफ बायोस्टेटिक्स, ऐम्स, नई दिल्ली, द्वारा आयोजित इण्डिया सोसायटी फार मेडिकल स्टेटिक्स के आई.आर.एम.एस. के रजत जयंती और 20वें वार्षिक सम्मेलन में "अंडरस्टैंडिंग दलित्स – ए प्रोफाइल आफ वर्कर्स इनगेज्ड इन अनक्लीन जोब्स इन चास, डिस्ट्रिक्ट बोकारो, झारखण्ड शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

सोशल असेसमेंट आफ आर.सी.एच.आई. उत्तरांचल विषयक परियोजना पर कार्य किया तथा फील्डवर्क और रिपोर्ट राइटिंग में व्यस्त रहे।

5. मालविका ने 23 से 25 नवम्बर 2002 तक यूरोपीय आयोग, डी.जी. रिसर्च ब्रसेल्स द्वारा काठमाण्डू, नेपाल में आयोजित "मेथडोलाजी आफ हैल्थ सिस्टम रिसर्च" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "प्रोसिस आफ डिसेंट्रेलाइजेशन ऐंड हैल्थ सर्विसिस इन इण्डिया" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

केंद्र के छात्रों को निम्नलिखित पुरस्कार मिले –

1.	राष्ट्रपति स्वर्ण पदक	:	श्री ज्योतिरमय भट्टाचार्य
2.	थावराज छात्रवृत्ति	:	श्री अंकित सिंह और श्री रितविक चटर्जी
3.	भवानी भट्ट पुरस्कार	:	श्री तपोसिक बैनर्जी
4.	रंजन राय स्मारक पुरस्कार	:	श्री सोनल सिन्हा

अन्य कोई सूचना

विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र

विज्ञान नीति अध्ययन केंद्र को वर्ष 1993 में पुनः शुरू किया गया। केंद ने वर्ष 1998 में सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रम और वर्ष 2000 में एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रम शुरू किए। केंद्र को पुनः शुरू करने के बाद वर्ष 2002 में पहली पी–एच.डी. उपाधि प्रदान की गई और एम.फिल/पी–एच.डी. पाठ्यक्रम के प्रथम बैच के 6 एम.फिल. छात्रों ने वर्ष 2001–2002 में अपनी उपाधियां हासिल की। वर्तमान में केंद्र में 10 पी–एच.डी. छात्र और 14 एम.फिल छात्र पंजीकृत हैं और वे अपने अपने शोध कार्य में संलग्न हैं।

केंद्र के मुख्य उद्देश्यों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति अध्ययन के अन्तरविषयक क्षेत्रों में शिक्षण, शोध प्रशिक्षण एवं परामर्श कार्यक्रम चलाना है। सामाजिक विज्ञान के विषय के रूप में विज्ञान नीति अध्ययन का सम्बन्ध समाज और प्राकृतिक विज्ञान विषयक और अन्तरविषयक परिप्रेक्ष्य में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज के बीच होना अनिवार्य है। इसमें विज्ञान–प्रौद्योगिकी–समाज के परस्पर शैक्षिक प्रभावों तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीतियों की संगतता की विस्तृत समझ उत्पन्न करने वाले आनुभाविक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान का वर्धन करना शामिल है। इसमें राजनीतिक और आर्थिक वातावरण तथा सामाजिक, संस्थागत और सांस्कृतिक जैसे पहलू शामिल हैं जो कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति के मामलों को प्रभावित करने वाले प्रौद्योगिकीय परिवर्तन और नवीन प्रक्रिया से तथा विज्ञान और सार्वजनिक नीति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सूत्रित और लागू करने से सम्बन्धित है।

केन्द्र के विशिष्ट उद्देश्य

– छात्रों को विषयपरक वातावरण से अन्तर विषयक शोध वातावरण में लाना और उन्हें विज्ञान और प्रौद्योगिकी और सामाजिक मामलों तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की समग्र शिक्षा प्रदान करना।

– राष्ट्रीय वरियता के आधार पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी नीति निर्माण के क्षेत्रों में शोध कार्य चलाना। इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति निर्धारण के लिए वैचारिक और क्रमबद्ध रूपरेखा का मूल्यांकन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति निर्माण के लिए डाटाबेस, सरकारी संस्था और उद्यम स्तर पर नियोजन एवं प्रबन्धन आदि शामिल हैं।

– प्राकृतिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरी, चिकित्साशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, विधि एवं प्रबन्धन, शिक्षा जगत, सरकारी, सार्वजनिक और निजी उद्योगों, अन्य विकासशील देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं समाज के अन्तरविषयक क्षेत्रों से सम्बद्ध पेशेवरों को प्रशिक्षित करना।

– विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति निर्माण और कार्यान्वयन में क्षेत्रीय – 'सार्क' और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर शिक्षण, शोध प्रशिक्षण और परामर्श देना।

– शोध एवं विकास प्रबन्धन प्रौद्योगिकी नवीनता की उन्नति, सरकारी और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों सहित सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में ग्राहकों के लिए बौद्धिक संपत्ति अधिकारों की भूमिका जैसे विषयों सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति से संबंधित मामलों पर परामर्श देने से संबंधित कार्य योजनाएं शुरू करना।

विज्ञान नीति अध्ययन में एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले छात्र निम्नलिखित शोध क्षेत्रों में अध्ययन कर सकते हैं –

1. भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास
2. सरकार में विज्ञान और प्रौद्योगिकी
3. विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति – विशेषकर ऊर्जा और पर्यावरण के क्षेत्र में
4. प्रौद्योगिकी परिवर्तन और नवीकरण का प्रबन्धन
5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी का समाजशास्त्र
6. प्रौद्योगिकी मूल्यांकन तथा पूर्वानुमान
7. महिलाएं, विज्ञान और समाज
8. विज्ञान प्रौद्योगिकी और अन्तर्राष्ट्रीय मामले
9. विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सामाजिक इतिहास

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

वर्ष 2002 के दौरान क्षेत्रीय कार्य

क. अनिवार्य कोर्स आर.डी. 415 मैथड्स आफ फील्डवर्क फिजिकल के क्षेत्रीय कार्य के लिए 33 छात्रों ने 23 मई से 13 जून 2002 के दौरान अपर व्यास बेसिन, हि.प्र. का दौरा किया।

ख. अनिवार्य कोर्स – आर.डी. 413 – सोसिओ–इकोनामिक सर्वे के क्षेत्रीय कार्य के लिए 32 छात्रों ने 20 दिस. 2002 से 4 जनवरी 2003 के दौरान जैसलमेर और इसके आसपास के क्षेत्रों का दौरा किया।

सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र

1. के.एल. शर्मा, 2003 में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति नियुक्त हुए।

2. के.एल. शर्मा, विजिटिंग प्रोफेसर, कालेज डे, फ्रान्स, पेरिस, इण्डो–फ्रान्स सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत, जून 2002 से फरवरी 2003 तक।

3. के.एल. शर्मा, संयोजक, शोध समिति, सोशल स्ट्रेटिफिकेशन ऐंड मोबिलिटी (इण्डियन सोसिओलाजिकल सोसायटी), नई दिल्ली 2002.

4. के.एल. शर्मा, संयोजक, अध्ययन मण्डल (समाजशास्त्र) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 1987 से

5. एम.एन. पाणिनी, 1 फरवरी 2002 से 30 जुलाई 2002 तक अल्बर्ट लुडविग्स यूनिवर्सिटी, फ्रीबर्ग से सम्बद्ध डी. एफ.जी. – मर्केटर गेस्ट प्रोफेसर, इस अवधि के दौरान उन्होंने फ्रीबर्ग में दो कोर्स चलाए और फ्री यूनिवर्सिटी बर्लिन, साउथ एशिया इंस्टीट्यूट, हिडलबर्ग, जर्मनी में तथा डिपार्टमेंट आफ सोसियोलाजी, स्ट्रासबर्ग यूनिवर्सिटी, फ्रान्स में व्याख्यान दिए।

6. एम.एन. पाणिनी, सुकरात फेलो, बेसल विश्वविद्यालय, स्वीटजरलैण्ड में व्याख्यान दिया।

7. जे.एस. गांधी, सम्पादक, रिलेवेन्ट सोसिओलाजी : ए जर्नल आफ कंटेम्पोरेरि सोसियोलाजी (1984 से)

8. ऐहसानुल हक, "एज्यूकेशन ऐंड माडर्नाइजेशन" अकादमिक स्टाफ कालेज, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, 6 सितम्बर 2002

9. ऐहसानुल हक, "सोसियोलाजी आफ पाप्यूलेशन", अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, 12 नवम्बर 2002

10. ऐहसानुल हक, "इंटेलेक्चुअल जर्नी" अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू 1 अगस्त 2002

11. ऐहसानुल हक, "पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट", अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नवम्बर 2002

12. आनन्द कुमार, विजिटिंग प्रोफेसर, अल्बर्ट लुडविग विश्वविद्यालय, फ्रीबर्ग, सितम्बर–नवम्बर 2002

13. आनन्द कुमार, विजिटिंग प्रोफेसर, एम.एस.एच./सी.ई.आर.आई., पेरिस, दिसम्बर 2002

14. आनन्द कुमार ने एम.ए. के छात्रों के लिए "साउथ एशियन सोशल थाट ऐंड मीडिया" विषयक नया कोर्स तैयार किया।

15. आनन्द कुमार रीडर (भाग–IV) साउथ एशियन सोशल थाट ऐंड मीडिया

16. तिपलुत नोंगब्री ने नवम्बर 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज में "तिब्बत स्टडीज इन इण्डिया" विषयक व्याख्यान दिया।

17. मैत्रेयी चौधरी ने जुलाई 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "सोसियोलाजी ऐंड माई इंटेलेक्चुअल जर्नी" विषयक व्याख्यान दिया।

18. मैत्रेयी चौधरी ने 4 दिसम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "ग्लोबलाइजेशन ऐंड चैंजिंग इन द इण्डियन प्रिन्ट मीडिया" विषयक व्याख्यान दिया।

19. सुसन विश्वनाथन ने 4 दिसम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज द्वारा आयोजित "इंट्रोगेटिंग मेथडोलाजी" विषयक व्याख्यान दिया।

20. सुसन विश्वनाथन ने नवम्बर 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "क्रास कल्चरल मैरिज" विषयक व्याख्यान दिया।

21. सुसन विश्वनाथन ने अगस्त 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "जेंडर स्टडीज" विषयक व्याख्यान दिया।

22. रेणुका सिंह ने नवम्बर 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "क्रास कल्चरल मैरिज" विषयक व्याख्यान दिया।

23. रेणुका सिंह ने अगस्त 2002 में अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में "जेंडर स्टडीज" विषयक व्याख्यान दिया।

24. निलिका मेहरोत्रा, सह सम्पादक, इण्डियन एन्थ्रोपोलाजिस्ट

25. निलिका मेहरोत्रा ने नेशनल इंस्टीट्यूट आफ ओपन लर्निंग, दिल्ली के उच्च माध्यमिक कक्षा के छात्रों के लिए समाजशास्त्र की पाठ्य पुस्तक के दो अध्याय तैयार किए।

26. विवेक कुमार ने 18 जुलाई 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नई दिल्ली में दलित्स इन कंटेम्पोरेरि इण्डियन सोसायटी विषयक व्याख्यान दिया।

विशेष कार्यक्रम (विशेष सहायता विभाग कार्यक्रम परिचय)

केंद्र को 1987 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विशेष सहायता विभाग के रूप में मान्यता मिली, कार्यक्रम के तीसरे चरण की शुरूआत 1 अप्रैल, 2000 को हुई। कार्यक्रम के लिए 40 लाख रूपये की अनुदान राशि मंजूर की गई।

कार्यक्रम के तीसरे चरण के दौरान दूसरे चरण में शुरू की गईं गतिविधियों को समेकित करते हुए नये कार्यक्रम और गतिविधियां शुरू की गई। वर्तमान में केन्द्र के डी एस.ए. पुस्तकालय में 2415 पुस्तकों का संग्रह है। अब हम निम्नलिखित पत्रिकाएं मंगाने जा रहे हैं : इकोनोमिक ऐंड पालिटिकल वीकली, कन्ट्रीब्युशंस टु इण्डियन सोसियोलाजी, सोसियोलाजिकल बुलेटिन ऐंड बिबलिओ, बुक रिव्यु ऐंड सेमिनार्स।

विशेष सहायता विभाग ने 29 जनवरी 2003 से 10 फरवरी, 2003 तक विशेष सहायता विभाग कार्यक्रम के तहत नेटाल विश्वविद्यालय, डर्बन, दक्षिण अफ्रीका के प्रो. अरि सितास को विजिटिंग फेलो के रूप में आयोजित किया गया। विशेष सहायता विभाग ने 31 अक्टूबर 2002 को एम.एस.एच. पेरिस, फ्रांस के निदेशक प्रो. जी. तारबूट द्वारा आयोजित व्याख्यान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

विशेष सहायता विभाग की नयी सलाहकार समिति गठित की गई है। पुनर्गठित सलाहकार समिति में निम्नलिखित सदस्य हैं –

बाह्य सदस्य

डीन, सामाजिक विज्ञान संस्थान (अध्यक्ष)

डा. वी. जैक्सा, समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. यूबी. भोइटे, भारतीय विद्यापीठ, पुणे

आंतरिक सदस्य

प्रोफेसर आनन्द कुमार

डा. एस.एस. जोधका

डा. अविजित पाठक

केंद्र के अध्यक्ष (पदेन)

प्रो. एम.एन. पाणिनी (समन्वयक)

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विशेष सहायता विभाग ने 2 संगोष्ठियों का वित्तपोषण किया और 9 शिक्षकों को संगोष्ठियों/सम्मेलनों में भाग लेने, फील्ड वर्क करने और पुस्तकों एवं शोध आलेखों के प्रकाशन सहित उनकी शैक्षिक गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विशेष सहायता विभाग ने निम्नलिखित संगोष्ठियों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं को प्रायोजित किया –

1. सी.एन. वेणुगोपाल के अभिनन्दन में प्रो. जे.एस. गांधी ने 15 अप्रैल, 2002 को, "सोसियोलाजी आफ रिलीजन इन इण्डिया" विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
2. टी.के. ऊमन के अभिनन्दन में प्रो. एम.एन. पाणिनी ने 21 से 23 अक्टूबर, 2002 तक "रिथिंकिंग सोसियोलाजी : द इण्डियन कंटेक्स्ट" विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
3. जे.एस. गांधी के अभिनन्दन में प्रो. आनन्द कुमार ने 2 से 3 अप्रैल 2003 तक "सोशल डायनेमिक्स आफ इण्डियन सोसायटी" विषयक संगोष्ठी आयोजित की।

विशेष व्याख्यान

1. भारत–फ्रास विनिमय कार्यक्रम, एम.एस.एच., पेरिस, फ्रान्स के निदेशक प्रो. जी. तारबूत ने 31 अक्टूबर 2002 को "फार एन एन्थ्रोपोलाजी आफ डाइवर्सिटी : द केस आफ केरला" विषयक विशेष व्याख्यान दिया।
2. नेटाल विश्वविद्यालय, डर्बन के प्रो. अरी सितास ने 31 जनवरी, 2003 को "द मंडेला डिकेड : साउथ अफ्रीका'स कंटेस्टिड ट्रांस्फार्मेशन ऐंड इमर्जेन्ट सिविल सोसायटी" विषयक व्याख्यान दिया।

3. नेटाल विश्वविद्यालय, डर्बन के प्रो. अरी सितास ने 6 फरवरी, 2003 को "वायलन्स, सोशल मूवमेंट्स ऐंड द निओ–गांधीयन इम्पल्स इन क्वाजुल नेटाल" विषयक व्याख्यान दिया।

4. नेटाल विश्वविद्यालय, डर्बन के प्रो. अरी सितास ने 7 फरवरी, 2003 को "थिओरेटिकल पैराब्लेस, ओरिलिटी, पावर ऐंड सोसियोलाजीस आफ सिविल वर्च्यू" विषयक व्याख्यान दिया।

फील्ड वर्क / अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी / सम्मेलन और प्रकाशन हेतु वित्तीय सहायता

विशेष सहायता विभाग केंद्र के शिक्षकों और शोधार्थियों को अल्पकालीन अध्ययन तथा प्रकाशन हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है। विशेष सहायता विभाग केंद्र के संकाय सदस्यों की शोध पांडुलिपियों को प्रकाशन हेतु तैयार करने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है।

पुस्तकालय

वर्तमान में विशेष सहायता विभाग के पुस्तकालय में 2415 पुस्तकें हैं। समीक्षाधीन अवधि – 1 अप्रैल 2002 से 31 मार्च 2003 – के दौरान पुस्तकालय में 615 पुस्तकें शामिल की गई।

राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां

एम.ए. के निम्नलिखित छात्रों को मेधावी छात्रवृत्तियां प्राप्त हुई – (एम.ए. चौथा सत्र, 2001–03)

1. सुश्री शिल्पी मोहन्ती
2. श्री एम. सोमसुन्दरम
3. श्री अमित राहुल

(एम.ए. का द्वितीय सत्र 2002–2004)

1. सुश्री अनीता बारिक
2. सुश्री स्वेता
3. सुश्री प्रवती दलुआ

ख. डा. अम्बेडकर चेयर के अन्तर्गत गतिविधियां

समीक्षाधीन अवधि (अप्रैल 2002 से मार्च 2003 तक) के दौरान डा. अम्बेडकर चेयर द्वारा निम्नलिखित शैक्षिक गतिविधियां चलाई गई :

1. डा. अम्बेडकर स्मारक व्याख्यान

क. अम्बेडकर अध्ययन के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. इलिनोर जेलियट (यू.एस.ए.) ने 28 नवम्बर, 2002 को "अम्बेडकर एब्रोड" विषयक 6ठा डा. अम्बेडकर स्मारक व्याख्यान दिया।

2. संगोष्ठी / गोष्ठी / कार्यशाला

क. 28 अक्टूबर, 2002 को "मार्जिनल ग्रुप्स ऐंड सोशल चेंज" विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

ख. 3 से 5 सितम्बर 2002 तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली में "स्कूल टेक्सस्टबुक इन सोसिओलाजी" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

3. व्याख्यान

क. 1 अगस्त 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नई दिल्ली में "इंटेलेक्चुअल जर्नी विद स्पेशल रिफ्रेन्स टु इंटेलक्चुअल डिवलपमेंट आफ द शैड्यूल्ड कास्ट्स ऐंड शैड्यूल्ड ट्राइब्स" विषयक व्याख्यान।

ख. 30 से 31 अगस्त, 2002 तक भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, जेएनयू, नई दिल्ली में "प्राब्लम्स आफ माइनार्टीज इन बंगलादेश" विषयक संगोष्ठी में "एज्यूकेशन रिलीजन ऐंड ग्लोबल आर्डर" विषयक व्याख्यान।

ग. 6 सितम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नई दिल्ली में "एज्यूकेशन ऐंड माडर्नाइजेशन विद स्पेशल रिफ्रेन्स टु द प्राब्लम आफ एज्यूकेशन आफ द शैड्यूल्ड कास्ट्स" विषयक व्याख्यान।

घ. अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नई दिल्ली में "पाप्यूलेशन ऐंड डिवलपमेंट विद रिफ्रेन्स टु द ग्रोथ आफ पाप्यूलेशन अमंग द शैड्यूल्ड कास्ट्स" विषयक व्याख्यान।

4. पैनल परिचर्चा

22 अक्टूबर 2002 को "भोपाल डाक्यूमेंट" विषयक पैनल परिचर्चा आयोजित की गई।

5. प्रकाशित आलेख

क. "एज्यूकेशन रिलीजन ऐंड ग्लोबल आर्डर", डा. एस.के. सिंह (सं.) "माइनार्टीज ऐंड ह्युमन राइट्स इन बंगलादेश", आर्थस प्रेस, नई दिल्ली, फरवरी, 2003

6. पुस्तकालय और उपकरण

अनु. जाति/अनु.जन.जाति की समस्याओं के विभिन्न पहलुओं पर आधारित डा. अम्बेडकर चेयर के अधीन पुस्तकालय में लगभग 1000 पुस्तकें हैं। यह पुस्तकालय केंद्र के शिक्षकों एवं छात्रों तथा अन्य विभिन्न केंद्रो के शिक्षकों एवं छात्रों की शैक्षिक जरूरतों को पूरा करता है। इसके अतिरिक्त चेयर की गतिविधियों के प्रबन्धन के लिए डा. अम्बेडकर चेयर के कार्यालय में कंप्यूटर फैक्स मशीन और अन्य आधारभूत सुविधाएं हैं।

जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र

1. बिनोद खादरिया ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में कालेज एवं विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए "इकोनामिक्स प्रोग्राम" के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिए।
2. बिनोद खादरिया ने नवम्बर 2002 में बी.बी.सी. लन्दन रेडियो प्रोग्राम – कमेंट आन वर्ल्ड टुडे – में अमेरिका में बढ़ रही भारतीय छात्रों की संख्या (एशिया के देशों और विश्व से आ रहे छात्रों के संदर्भ में) पर रिपोर्टिंग की।
3. दीपक कुमार ने अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में कालेज एवं विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए "हिस्ट्री ऐंड साइंस प्रोग्राम" के तीन पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में व्याख्यान दिए।
4. गीता बी. नाम्बिसन, सदस्य, सलाहकार ग्रुप, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित और केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा सह–समन्वित ई.जी.एस. अल्टरनेटिव स्कूल्स के अध्ययन के लिए गठित रिसोर्स टीम।
5. मिनाती पंडा ने 29 नवम्बर 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में (सोसियोलाजी) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में "एज्यूकेशन इन क्राइसिस" विषयक व्याख्यान दिया।
6. एस. श्रीनिवास राव, शैक्षणिक अध्ययन में स्नातकोत्तर स्तर पर इग्नू की अध्ययन सामग्री के लिए "सोशल कंटेक्ट आफ एज्यूकेशन" विषयक एक यूनिट लिख रहे हैं। उन्होंने दो अन्य शिक्षकों के साथ भी इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की।
7. ध्रुव रैना ने 26 जुलाई, 2002 को अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू, नई दिल्ली में "इंटलेक्चुअल जर्नीज" विषयक व्याख्यान दिया।

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

1. इंदिवर काम्तेकर ने जून 2002 में जेएनयू प्रवेश परीक्षा के पेपर जाँचे।
2. इंदिवर काम्तेकर, सदस्य, आयोजन समिति, विशेष सहायता विभाग की "बायोग्राफी ऐंड हिस्ट्री" विषयक संगोष्ठी, 27 से 28 फरवरी, 2003
3. रणबीर चक्रवर्ती ने भारतीय इतिहास पर इग्नू के स्नातकोत्तर कोर्स के लिए "ट्रेड कम्यूनिकेशन ऐंड लिंकेज्स इन अर्ली इण्डिया" विषयक कोर्स सामग्री तैयार की।
4. रणबीर चक्रवर्ती ने 27 जनवरी से 21 फरवरी 2003 तक अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में इतिहास में 19वें पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के संयोजक रहे।

आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र

1. 11 मार्च, 2003 को सुश्री अरूणा राय ने "पीपल'स पावर इन एन इण्डियन डेमोक्रेटिक फ्रेमवर्क" विषयक 11वां कृष्णा भारद्वाज स्मारक व्याख्यान दिया। कुलपति ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

महिला अध्ययन कार्यक्रम

वर्ष 2002–2003 के दौरान महिला अध्ययन कार्यक्रम द्वारा निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित की गईं –

नियुक्तियां

1. महिला अध्ययन कार्यक्रम की निदेशक, प्रो. जोया हसन, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, ने सितम्बर, 2002 में निदेशक के रूप में 2 वर्ष पूरे किए और प्रो. जयति घोष, आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र ने निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
2. विश्वविद्यालय द्वारा महिला अध्ययन कार्यक्रम में डॉ. मैरी ई. जॉन, सह–प्रोफेसर और उप निदेशक की नियुक्ति को 1 अगस्त, 2002 को एक वर्ष की परिवीक्षा अवधि पूरी करने के बाद स्थायी किया गया।
3. सुश्री सोनाली मुखर्जी की रिसर्च एसोसिएट के पद पर नियुक्ति को 27 जुलाई, 2003 को एक और वर्ष के लिए बढ़ाया गया।

नए कोर्सों की शुरुआत

1. मैरी ई. जॉन ने शीतकालीन सत्र 2003 के दौरान "वुमन्स मूवमेंट्स ऐंड जेंडर स्टडीज" विषयक एम.ए. का एक ऐच्छिक कोर्स शुरू किया। विभिन्न केन्द्रों – सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र और ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र के 20 छात्रों ने इस कोर्स को क्रेडिट के लिए लिया। 10 छात्रों, विशेषकर शोध छात्रों ने इस कोर्स का अंकेक्षण किया।

प्रकाशन

पुस्तकें और संपादित पुस्तकें

मैरी ई. जॉन

1. फेमिनिज्म इन एशिया : स्पेशल इश्यू आफ इंटर–एशिया कल्चरल स्टडीज (सह संपादित), भाग–3, अंक–3, 2002
2. एंजुक्स कंटेम्पोरेंस ड्यू फेमिनिज्मे इंडियेन (सह–संपादित) पेरिस : मेसन डेज साइंसेज डे एल होम, दिसम्बर, 2002
3. फ्रेंच फेमिनिज्म : एन इंडियन एंथोलॉजी (सह–संपादित) नई दिल्ली : सेज, 2003.
4. द बुक रिव्यू साउथ एशिया ऐंड जेंडर स्पेशल (सह–संपादित), भाग–26, अंक–10, अक्तूबर–2002.

आलेख

1. "फेमिनिज्मे एट मूवमेंट डेज फेम्स एन इंडे" इंट्रोडक्शन टु एंजुक्स कंटेम्पोरेंस ड्यू फेमिनिज्मे इंडियेन (सं.) डेनियल हासे – ड्युबोस्क, पेरिस : एम.एस.एच., पृ. 1–8, 2002.
2. "स्पेशल सेक्शन : वुमन्स स्टडीज इन इंडिया : क्राइसिस आर रिन्युअल ?" इंट्रोडक्शन इन इंडियन जर्नल आफ जेंडर स्टडीज, भाग–9, अंक–2, जुलाई–दिसम्बर, 2002, पृ. 203–208.
3. "फेमिनिज्म, पावर्टी ऐंड ग्लोबलाइजेशन : एन इंडियन व्यू", इंटर एशिया कल्चरल स्टडीज, भाग–3, अंक–3, पृ. 351–367, 2002.
4. 'वुमन्स स्टडीज : लीगेसीज ऐंड फ्यूचर्स', बिटवीन ट्रेडिशन, काउंटर ट्रेडिशन ऐंड हिरेसी : कंट्रीब्यूशंस इन आनर आफ वीना मजूमदार, (सं.) लोतिका सरकार, कुमुद शर्मा और लीला कस्तूरी, नई दिल्ली : रेनबो, पृ. 47–62, 2002.

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

महिला अध्ययन कार्यक्रम ने यूनिफेम, नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से 'जेंडर ऐंड गवर्नेंस इन टु सिटीज' विषयक मुख्य शोध परियोजना शुरू की। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य 24वें संविधान संशोधन के लागू होने के बाद, जिसमें महिलाओं हेतु शहरी नगर निगमों में एक तिहाई सीटों के आरक्षण की व्यवस्था है, शहरों में स्थानीय विकेन्द्रीकरण के कार्यों को समझना है। वर्ष 2002–2003 के दौरान इस परियोजना का मुख्य भाग दिल्ली और बंगलौर शहरों में क्षेत्रीय कार्य के रूप में चलाया गया। क्षेत्रीय कार्य में दिल्ली में दिल्ली नगर निगम के पार्षदों और बंगलौर में बंगलौर नगर निगम के पार्षदों के गहन साक्षात्कार के साथ–साथ इन दोनों शहरों के चुने हुए वार्डों के मतदाताओं का सर्वेक्षण शामिल था। यह कार्य मार्च–2002 से अप्रैल 2003 तक चलाया गया। अप्रैल 2003 से आंकड़ों का विश्लेषण और रिपोर्ट तैयार की जाएगी। इस मुख्य शोध दल में मैरी ई. जॉन (प्रधान अन्वेषक), सोनाली मुखर्जी (रिसर्च एसोसिएट), जानकी नायर (बंगलौर में समन्वयक), के साथ दिल्ली में 5 और बंगलौर में 4 क्षेत्रीय अन्वेषक शामिल थे।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. मैरी जॉन ने 6 मार्च, 2003 को श्री वेंकटेश्वर कालेज, नई दिल्ली में आयोजित 'वुमन ऐंड वर्क' विषयक संगोष्ठी मे भाग लिया तथा "फेमिनिज्म, पॉवर्टी ऐंड ग्लोबलाइजेशन" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. मैरी जॉन ने 13 से 28 जनवरी, 2003 तक सेक्सुअल्टी ऐंड राइट्स इंस्टीट्यूट, टार्शी ऐंड क्रिया, टी.एम.टी.सी., पुणे में आयोजित "पोस्ट कॉलोनिएलिटी, जेंडर ऐंड सेक्सुअल्टी" विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
3. मैरी जॉन ने 16 अक्टूबर, 2002 को उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित "चैलेंजिज टु डेमोक्रेसी इन द न्यू मिलेनियम" विषयक सम्मेलन के 10वें आई.ए.डब्ल्यू.एस. सम्मेलन की 'चेंजिंग कांटेक्स्ट्स आफ द वुमन्स मूवमेंट' शीर्षक पूर्व सम्मेलन कार्यशाला में भाग लिया।
4. मैरी जॉन ने 17 से 20 अक्टूबर, 2002 तक उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित 'डेमोक्रेसी इन द न्यू मिलेनियम' विषयक 10वें आई.ए.डब्ल्यू.एस. सम्मेलन में भाग लिया तथा 'द फोरगोटन क्वेश्चन आफ एज्यूकेशन : वुमन्स स्टडीज ऐंड इंस्टीट्यूशन बिल्डिंग इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
5. मैरी जॉन ने 6–7 फरवरी, 2003 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में सेंटर डे साइंसेज ह्यूमैन्स ऐंड इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज द्वारा आयोजित 'वुमन्स कोटा इन अर्बन लोकल गवर्नेंस : ए क्रास नेशनल कंपेरीजन' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'जेंडर ऐंड द प्रॉब्लम आफ द "लोकल" इन "टु सिटीज" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
6. मैरी जॉन ने 8–9 अक्टूबर, 2002 को नेशनल काउंसिल आफ एप्लाइड इकोनामिक रिसर्च, नई दिल्ली में आयोजित "एडवर्स सेक्स रेशियो इन इंडिया" विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा "द डिक्लाइनिंग सेक्स रेशियो : एक्सप्लेनेशंस रि–एक्जामाइन्ड" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों के व्याख्यान (विश्वविद्यालय से बाहर)

1. मैरी जॉन ने 20 मार्च, 2003 को दिल्ली विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या कोर्स (राजनीति विज्ञान) की पैनल परिचर्चा में "सेक्युलरिज्म – थिंकिंग थ्रू द क्राइसिस" विषयक व्याख्यान दिया।

3. मैरी जॉन ने 12 मार्च को दिल्ली विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या कोर्स (महिला अध्ययन) में "कंसेप्ट्स इन फेमिनिस्ट थीअरि" विषयक व्याख्यान दिया।

3. मैरी जॉन ने 7 मार्च, 2003 को यूनिफेम, यू.एन.डी.पी. सम्मेलन कक्ष में 'जेंडर बायसिस ऐंड डिस्क्रिमीनेशन एगेंस्ट वुमन : वाट डु डिफरेंट इंटीकेटर्स से ?' विषयक रिपोर्ट पर परिचर्चा की।

4. मैरी जॉन ने 13 जनवरी, 2003 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर और सेज प्रकाशन, नई दिल्ली में (सं.) डेनियल हासे–ड्युबोस्क, मैरी ई. जॉन की 'फ्रेंच फेमिनिज्म : एन इंडियन एंथोलॉजी' विषयक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर 'फ्रेंच ऐंड इंडियन फेमिनिज्म : एनोदर इंटरनेशनलिज्म ?' व्याख्यान दिया।

5. मैरी जॉन ने 16 दिसम्बर, 2002 को गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली में 'ह्यूमन राइट्स' विषयक विशेष कोर्स में "जेंडर ऐंड ह्यूमन राइट्स" शीर्षक व्याख्यान दिया।

6. मैरी जॉन ने 11–12 दिसम्बर, 2002 को नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली में आयोजित "मुस्लिम वुमन्स सर्वे" विषयक परिचर्चा में भाग लिया।

7. मैरी जॉन ने 11 सितम्बर, 2002 को लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली में 'पैराडॉक्सिज आफ जेंडर अनालिसिस : कंपेरेटिव पर्सपेक्टिव्स' विषयक विशेष व्याख्यान दिया।

महिला अध्ययन कार्यक्रम में आए अतिथि

1. प्रो. गोपाल गुरू, दिल्ली विश्वविद्यालय ने 'कास्ट ऐंड पैट्रियार्की' विषयक व्याख्यान दिया।
2. प्रो. डायने एल्सन, एसेक्स विश्वविद्यालय ने 'लीगेसी आफ सोशलिस्ट फेमिनिज्म' विषयक व्याख्यान दिया।
3. रतना कपूर, निदेशक, फेमिनिस्ट सेंटर फार लीगल रिसर्च ने 'इश्यूज आफ ट्रेफिकिंग' विषयक व्याख्यान दिया।

संगोष्ठियां और कार्यशालाएं

1. महिला अध्ययन कार्यक्रम ने 21 नवम्बर, 2002 को "सेक्सुअल हरासमेंट ऐंड द यूनिवर्सिटी" विषयक एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला आयोजित करने के लिए प्रसिद्ध विधिवेत्ता इंदिरा जयसिंह और वृंदा ग्रोवर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय की शिक्षाविद डॉ. उमा चक्रवर्ती और जानकी अब्राहम को आमंत्रित किया गया। इस कार्यशाला में यौन उत्पीड़न से संबंधित मुख्य मुद्दों पर चर्चा की गई। इसमें लगभग 100 छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यशाला की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलदेशिक प्रो. बलवीर अरोड़ा ने की।
2. 21 फरवरी, 2003 को जेएनयू छात्र संघ के सहयोग से 'जेंडर, मीडिया ऐंड द पॉलिटिक्स आफ आइडेंटिटी' विषयक संगोष्ठी परिचर्चा आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता जन–संचार विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया की सुश्री रंजनी मजूमदार और सुश्री सबिना किदवई थीं।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1. महिला अध्ययन कार्यक्रम की स्थायी समिति की बैठक 13 मई, 2003, 24 अप्रैल, 2002 और 9 दिसम्बर 2002 को हुई।
2. महिला अध्ययन कार्यक्रम की सलाहकार समिति की बैठक 13 मई, 2003 को हुई।

अन्य कोई सूचना

पुस्तकालय द्वारा प्राप्त की गई पुस्तकें

महिला अध्ययन कार्यक्रम ने 100 से अधिक पुस्तकें यूनिफेम परियोजना के साथ–साथ वि.अ.आ. की सहायता से प्रलेखन शीर्ष के अन्तर्गत उदि्दष्ट निधि से प्राप्त की। ये पुस्तकें जेएनयू के मुख्य पुस्तकालय में रखी जा रही हैं।

उपकरण

महिला अध्ययन कार्यक्रम शोध कार्य हेतु एक लैपटॉप कंप्यूटर खरीद रहा है। यह कंप्यूटर खरीदने हेतु कुलपति से मंजूरी ले ली गई है।

शैक्षिक रिकार्ड शोध यूनिट

समीक्षाधीन अवधि के दौरान 'नेशनल एज्यूकेशन इन इंडिया विषयक एक परियोजना पूरी की गई। यूनिट ने विभिन्न अभिलेखागारों से द कंसेप्ट आफ नेशनल एज्यूकेशन इन द राइटिंग्स आफ नेशनलिस्ट लीडर्स, द क्रिटिक आफ ब्रिटिश एयूकेशनल पॉलिसीज इन द नेशनलिस्ट डिस्कोर्स, द रोल आफ साइंस ऐंड टेक्नीकल एज्यूकेशन, द एजेंडा आन प्राइमरी लेवल ऐंड मास एज्यूकेशन – विषयक 188 दस्तावेज प्राप्त किए। यह सामग्री प्रकाशन हेतु प्रकाशक के पास भेज दी गई है। इसका प्रकाशन विश्वविद्यालय से बिना कोई सहायता लिए व्यावसायिक आधार पर होगा, जबकि *विश्वविद्यालय* इन *पुस्तकों* की बिक्री पर *रॉयल्टी* प्राप्त करने का *हकदार* होगा। इन *प्रकाशनों* के *जुलाई*, 2003 में *प्रकाशित* होने की संभावना है।

'टेक्नीकल एयूकेशन इन *इंडिया*, 1847–1930' *विषयक परियोजना* के संबंध में दस्तावेज एकत्रित कर लिए गए हैं तथा चयनित दस्तावेजों के प्रकाशन के लिए कार्य चल रहा है।

सव्यसाची भट्टाचार्य द्वारा संपादित 'एज्यूकेशन ऐंड द डिसप्रिविलेज्ड : नाइनटींथ ऐंड ट्वेंटियथ सेंचुरी इंडिया (2002)' विषयक यूनिट की पिछली पुस्तक के संबंध में वर्ष 2002–2003 में अनुकूल समीक्षाएं प्राप्त हुई हैं।

संगोष्ठियों में प्रतिभागिता

– जोसफ बारा ने 1 मार्च, 2003 को भारतीय सामाजिक संस्थान, नई दिल्ली में जनजातीय अध्ययन सर्किल द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'राइज ऐंड ग्रोथ आफ एन एज्यूकेशनल पॉलिसी फार द ट्राइबल्स आफ सेन्ट्रल इंडिया' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

प्रकाशन

पुस्तकें

– जोसफ बारा, 'माडर्न एज्यूकेशन ऐंड द राइज आफ सेल्फ आइडेंटिटी अमंग द मुंडाज ऐंड औरावज आफ छोटा नागपुर 1839–1947',दिल्ली विश्वविद्यालय।

– चिन्नाराव यागाती ने 'दलित्स स्ट्रगल फार आइडेंटिटी : आन्ध्रा ऐंड हैदराबाद 1900–1950' विषयक पांडुलिपि तैयार की।

– चिन्नाराव यागाती ने 'बिब्लियोग्राफीकल हैंडबुक आन दलित्स' विषयक पुस्तक तैयार की।

अध्येतावृत्तियां

– चिन्नाराव मागाती 10 मार्च से 10 जून 2002 तक एडिनबर्ग विश्वविद्यालय स्टॉकलैंड में समकालीन इतिहास और राजनीति में चार्ल्स वालेस विजिटिंग फेलो के रूप में रहे।

समसामयिक भारतीय इतिहास पर अभिलेखागार

समसामयिक इतिहास पर अभिलेखागार की स्थापना जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी समिति के निर्णय के अनुसार 1 दिसम्बर 1970 को हुई थी। वर्ष 1974 में यह सामाजिक विज्ञान संस्थान के साथ सलाहकारी निकाय के रूप में जुड़ा। यह अभिलेखागार एक शोध सुविधा इकाई है। यह अभिलेखागार भारत में हुए वामपंथी एवं राष्ट्रीय आंदोलन तथा अन्य महत्वपूर्ण आंदोलनों से संबंधित सामग्री का एक भण्डार है। स्वर्गीय पी.सी. जोशी के व्यक्तिगत संग्रहों से शुरू किए गए इस अभिलेखागार में विभिन्न स्रोतों से अब तक पर्याप्त मात्रा में सामग्री एकत्रित की गई है।

अभिलेखागार ने 150 पुस्तकें और पेम्फलेट खरीद कर अपने वर्तमान संग्रह में वृद्धि की है। संबंधित विषयों पर अंग्रेजी अखबारों की कतरने एकत्रित की जाती हैं, फिर भी इन्हें शोधार्थियों के संदर्भ हेतु विषय–वार पुस्तकों के रूप में बाइंड कराके रखा जाता है।

'कंटेम्पोरेरि पॉलिटिक्स ऐंड हिस्ट्री' विषयक 10वाँ पी.सी. जोशी स्मारक व्याख्यान और कार्यशाला आयोजित की गई।

अभिलेखागार ने निम्नलिखित पत्रिकाएं मंगानी जारी रखी :

चिंता (मलयालम)	–	साप्ताहिक
कामरेड (मलयालम)	–	साप्ताहिक
देशाभिमानी (मलयालम)	–	साप्ताहिक
गणशक्ति (बंगाली)	–	दैनिक
प्रजाशक्ति (तेलुगु)	–	दैनिक
थीक्काथिर (तमिल)	–	दैनिक
नवां जमाना (पंजाबी)	–	दैनिक
न्यू ऐज	–	साप्ताहिक
पीपल्स डेमोक्रेसी	–	साप्ताहिक
रेड स्टार	–	मासिक
लिबरेशन	–	मासिक

समीक्षाधीन अवधि के दौरान जेएनयू और जेएनयू के बाहर के शोधार्थियों ने अपने शोध शीर्षकों पर अभिलेखागार में उपलब्ध सामग्री और माइक्रोफिल्म रीडर प्रिंटर का उपयोग किया।

वर्ष 2001–2002 में स्थापित मौखिक इतिहास परियोजना को आगे बढ़ाया गया। इसके लिए आवश्यक उपकरण और सामग्री खरीदी गई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास पर मौखिक इतिहास के संग्रह का एक भाग प्राप्त किया गया और इस पर कार्यवाई की गई। सी.डी. सहित पुस्तकें और शोध सामग्री खरीदी गई। मौखिक इतिहास अनुभाग में कुछ नई सामग्री भी जोड़ी गई।

10. जैव–प्रौद्योगिकी केन्द्र

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

जैव–प्रौद्योगिकी विशेष केंद्र ने जेएनयू में अपनी गतिविधियों की शुरूआत वर्ष 1985 में एम.एस–सी. (जैव–प्रौद्योगिकी) पाठ्यक्रम के साथ की। जैव–प्रौद्योगिकी में पी–एच.डी. पाठ्यक्रम वर्ष 1987 में शुरू हुआ था। केंद्र में इस समय 8 संकाय सदस्य हैं जिनकी शोध रूचि निम्नलिखित क्षेत्रों में है –

(क) संक्रामक रोगों का अणु जीव विज्ञान
(ख) प्रतिरक्षा विज्ञान
(ग) अणु जीव विज्ञान और आनुवांशिकी इंजीनियरी
(घ) *ट्रांसक्रिप्शन कंट्रोल* और जीन रेग्यूलेशन
(च) जीव भौतिकीय रसायन
(छ) पुनर्योगज प्रोटीन उत्पादन का इष्टतमीकरण
(ज) संरचनात्मक जीव विज्ञान और अणु जैव–सूचना–विज्ञान
(झ) जीव रसायनिक इंजीनियरी

प्रत्येक वर्ष एम.एस–सी. पाठ्यक्रम में 30 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। इस पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या बहुविषयक प्रकृति की है और छात्र को एम.एस–सी. उपाधि प्राप्त करने के लिए कुल 64 क्रेडिट अर्जित करने पड़ते हैं इन 64 क्रेडिटो में से 14 *क्रेडिट* एक शोध *परियोजना* के लिए *निर्धारित* होते हैं। छात्र को यह *परियोजना* किसी *संकाय सदस्य के मार्गदर्शन* में 2 सत्र की अवधि में पूरी करनी पड़ती है। पिछले कई वर्षों से एम.एस–सी. जैव–प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षा की वरियता सूची में से अधिकंश छात्र हमारे केंद्र में प्रवेश ले रहे हैं। केंद्र से यह पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद अधिकतर छात्र भारत में या विदेशों में पी–एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश लेते है और कुछ छात्र जैव–प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित उद्योगों में कार्य करते हैं या मैनेजमेंट कोर्स में प्रवेश लेते हैं। केंद्र के शिक्षक ऐसी शोध परियोजनाएं शुरू करते हैं जो सामाजिक रूप से लाभदायक हों। इससे शिक्षकों को कुछ उत्पाद विकसित करने में और उनका पैटेंट प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो रही है। केंद्र का पी–एच.डी. पाठ्यक्रम काफी महत्वपूर्ण है। केंद्र को शोध के लिए वर्तमान (2002–2007) में 350 लाख रुपये की बाहरी अनुदान राशि प्राप्त हो रही है।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

केन्द्र के शिक्षक देश–विदेश के अन्य शोध संस्थानों के शिक्षकों के साथ शोध कार्यों में सहयोग कर रहे हैं।

1. संतोष के. कार, "करेक्ट्राइजेशन आफ सेक्रेटिड एंजीजंस आफ इनफेक्टिव लार्वा ऐंड एडल्ट ब्रुजिया मैलेइ पेरासाइट्स विच इंड्युस्ड स्ट्रांग टी.एच.–I रेस्पोंस इन ट्रूली इनफेक्शन फ्री इंडिविजुअल्स इन ए बैंक्राफ्टियन फिलरिएसिस एंडेमिक एरिया" विषयक परियोजना कार्य में सी.डी.आर.आई. (डी.एस.टी. द्वारा वित्तपोषित) के डा. शैलजा भट्टाचार्य का सहयोग कर रहे हैं।
2. संतोष के. कार, "आइडेंटिफिकेशन आफ एन्टीजंस फ्राम क्लिनिकल आइसोलेट्स आफ माइकोबेक्टेरियम टुबरकुलोसिस विच इंडयूस्ड स्ट्रांग टी.एच.–I रेस्पोंस इन हैल्दी कांटेक्ट्स आफ टुबरकुलोसिस पेशेंट्स" विषयक शोध कार्य में 'जालमा' आगरा के डा. वी.एम. कटोच और भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर के प्रो. आर. नायक (सर दोरावजी टाटा सेंटर, बंगलौर द्वारा वित्त पोषित) के साथ सहयोग कर रहे हैं।
3. राकेश भटनागर (क) ट्रांसजेनिक प्लांटस ऐज ए सोर्स आफ इडिबल वैक्सिन एगेंस्ट एंथ्रेक्स" विषयक शोध परियोजना में डा. आनन्द कुमार, पादप जैव–प्रौद्योगिकी के लिए राष्ट्रीय शोध केंद्र के साथ सहयोग कर रहे हैं (एनएटीपी – विश्वबैंक द्वारा वित्तपोषित) और (ख) "सर्च फार नावेल बायोइनसेक्टिसाइडल जींस फ्राम जेनोरहाडस निमाटोफिला" विषयक शोध परियोजना में डा. निरूपम बैनर्जी भटनागर, आई.सी.जी.ई.बी., नई दिल्ली के साथ सहयोग कर रहे हैं (पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित)

4. राजीव भट्ट, "प्रोटीन फोल्डिंग ऐंड एग्रेगेशन यूजिंग साइट्रेट सिंथेस ऐंड टेलस्पाइक प्रोटीन फ्राम बैक्टिरियोफेज" विषयक शोध परियोजना में प्रो. राबर्ट सिकलर, यूनिवर्सिटी आफ पोट्सडम, जर्मनी के साथ सहयोग कर रहे हैं।

5. देवप्रिया चौधरी, "स्ट्रक्चर फंक्शन स्टडीज आन जेनोहाडस नेमाटोफिला फिम्ब्रेया ऐंड इट्स पोटेंशियल यूज एज ए बायोइनसेक्टिसाइड" विषयक शोध परियोजना में डा. निरूपमा बैनर्जी भटनागर, आई.सी.जी.ई.बी., नई दिल्ली के साथ सहयोग कर रहे हैं।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन, नए कोर्सों तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

केन्द्र के शिक्षकों ने एम.एस–सी. जैव–प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या में संशोधन किया है और इस पर विशेष समिति द्वारा चर्चा की जाएगी।

अ.जा./अ.ज.जा. और पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए विशेष उपचारात्मक कोर्स

केंद्र में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या के कारण अ.जा./अ.ज.जा. तथा पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए उपचारात्मक कोर्स उपलब्ध कराना सम्भव नहीं है। परन्तु हमने एक नया कोर्स – मैथमेटिक्स फार बायोलाजिस्ट शुरू किया है। यह कोर्स केवल जीवविज्ञान क्षेत्र के छात्रों को अंकगणित समझाने में सहायक होगा।

प्रकाशन

आलेख

1. एस.के. कार और नंदा, सरिता, के. मुरलीधर, "थर्मोस्टेबल अल्फा अमाइलेस कंजुगेटिड एन्टिबाडीज ऐज प्रोब्स फार इम्युनोडिटेक्शन इन एलिसा", जर्नल आफ इम्युनोएसे ऐंड इम्यूनोकेमिस्ट्री, 23, 327–345, 2002

2. आर. भटनागर और वी. चौहान, "आइडेंटिफिकेशन आफ अमिनो एसिड रेजिड्यूस आफ प्रोटेक्टिव एन्टिजीन इनवाल्वड इन बाइंडिंग टु लीथल फैक्टर इनफैक्ट ऐंड इम्यून", 70, 4477–4484, 2002

3. आर. भटनागर, एम.ए. अजीज, एस. सिंह और पी. आनन्द कुमार, "इक्सप्रेशन आफ प्रोटेक्टिव ऐन्टिजीन इन ट्रांस्जेनिक प्लांट्स : ए स्टेप टुवर्डस ऐडिबल वैक्सीन अगेंस्ट ऐंथ्रेक्स" बायोकेम. बायोफिज रिस. कम्यून 2999, 354–351, 2002.

4. आर. भटनागर, एस. सिंह, एन. अहुजा, वी. चौहान, इ. राजशेखरन, एस.एम. वहीद और आर. भट्ट जी.एल.एन. 277 ऐंड पी.एच.ई. 554 रेजिड्यूस आर इनवाल्वड इन थर्मल इनएक्टिवेशन आफ प्रोटेक्टिव ऐन्टिजीन आफ बैसिलस एन्थ्रेसिस" बायोकेम बायोफिज रेज कम्यून 296, 1058–1062, 2002

5. आर. भटनागर, पी. कुमार, और एन. आहुजा, "एन्थ्रेक्स लीथल टाक्सिन रिक्वायर्स इन फ्लक्स आफ कैल्सियम फार इनड्यूसिंग सी ए एम पी टॉक्सिसिटी इन टार्गेट सेल्स", इनफेक्ट, इम्यून, 70, 4997–5007, 2002

6. आर. भटनागर, एन. आहुजा, पी. कुमार, एस. आलम और एम. गुप्ता, "डिलिशन आफ प्रोटेक्टिव ऐन्टिजीन दैट इनहिबिट्स एन्थ्रेक्स टाक्सिन एक्टिविटी बोथ इन वाइवो ऐंड इन विट्रो" बायोकेम बायोफिज रिस. कम्यून 307, 446–450, 2003

7. उत्तम पति, वी. हाण्डा, महबूब उल हुसैन और एन. पति, "मल्टिपल लिवर स्पेसिफिक फैक्टर्स बाइन्ड टु ए 64 एलिमेंट ऐंड एक्टिवेट एपो (ए) जीन", बायोफिज बायोकेम रिस. काम 292, 243–249, 2002

8. अपर्णा दीक्षित, दीपाली शर्मा, और सुजाता ओहरी, "148 टु 124 रीजन आफ री. जुन जीन इंटरऐक्ट्स विद पाजिटिव रेग्यूलेटरी फैक्टर इन रैट लिवर ऐंड इनहैन्स ट्रांस्क्रिप्शन" युरो. ज. बायोकेम. 270, 181 189, 2003

9. अपर्णा दीक्षित, सुजाता ओहरी, दीपाली शर्मा, "माड्यूलेशन आफ सी. एन जी सी ऐंड सी- फोस जीन इक्सप्रेशन इन रिजनरेटिंग रैट लिवर वाई–2 मर्कापटोपरोपाइओनाइल ग्लाइसिन" सेल बायोल इंट 26, 187 192, 2002

10. आर. भट्ट, डब्ल्यु.जे. वेडिमेयर और एच.ए. स्कारजा, "प्रोलीन आइसोमेरिकेशन इन बोविनेपैनक्रेआटिक राइबोन्युक्लिएज ए–2" फोल्डिंग कंडीशंस, बायोकेमिस्ट्री, 42, 5722–5728, 2003

11. आर. भट्ट, एस. सिंह, एन. अहुजा, वी. चौहान, इ. राजशेखरन, एस.एम. वहीद, और आर. भट्नागर, "जीएलएन 277 ऐं पीएचइ 554 रेजिड्यूस आर इनवाल्वड इन थर्मल इनएक्टिवेशन आफ प्रोटेक्टिव ऐन्टीजीन आफ बैसिलस ऐंथ्रासिस" बायोकेम बायोफिज रेज कम्यून 296, 1058–1062, 2002

12. आर. भट्ट और जे.के. कौशिक, "वाई इज ट्रेहालूज ऐन एक्सेप्शनल प्रोटीन स्टेबिलाइजर ? एन एनालिसिस आफ द थर्मल स्टेबिलिटी आफ प्रोटीन्स इन द प्रिजेन्स आफ द कम्पेटिबल ओसोमोलाइट ट्रेहालोज", ज बायोल केम 278, 26458–65, 2003

13. के.जे. मुखर्जी, जे.सी. गुप्ता, "स्टेबिलिटी स्टडीज आफ रिकंम्बिनेंट सैकेरोमाइसीज सेरेबिसिअल इन द प्रिजेन्स आफ वैरिन्ग सलेक्शन प्रेशर" बायोटेक्नोल बायोइंजी, 79, 362, 2002

14. के.जे. मुखर्जी, एस.एस. याजदानी, "कंटिनुअस कल्चर स्टडीज आन द स्टेबिलिटी ऐंड एक्सप्रेशन आफ ए टाक्सिक प्रोटीन इन इ कोली : स्ट्रेप्टोकाइनेस ऐज ए माडल सिस्टम" बायोप्रेसिस ऐंड बायोसिस्टम्स इंजीनियरिंग, 24, 341–46, 2002

15. डी. चौधरी, एस.डी. नाइट, एस. हल्टग्रीन, जे. पिंकनर, वी. स्टोजानोफ और थाम्पसन, "ए. स्ट्रक्चर आफ द एस. पाइलस पेरिप्लाज्मिक कैपेरोन एस. एफएई ऐट 2.2एओ रिजोल्युशन ऐक्टा क्रिस्टेलोजर" सैक्शन डी. 58, 1016–1022, 2002

16. एस.एस. मैता और विनोद कुमार, "सेमि आप्शनल सबस्ट्रेट फीड– प्रोफाइल्स फार पेंसिलीन फर्मेंटेशन यूजिंग हाइब्रिड बबलसार्ट केमोटाक्सिस ऐल्गोरिथ" इण्डियन केमिकल इंजीनियर, भाग–44, अंक–2, अप्रैल–जून 2002

पूरी हो चुकी शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. राकेश भटनागर, जेपनरेशन आफ नान टाक्सिक प्रोटेक्टिव एंटीजन मोलिक्युलस फार डिवलपमेंट आफ रिकंम्बिनेंट एंथ्रेक्स वेक्सिन (1998–2002), जै.प्रौ.वि.
2. राकेश भटनागर (राजीव भट्ट के साथ), प्रोडक्शन आफ थर्मोस्टेबल प्रोटेक्टिव एंटीजन आफ बैसिलस एन्थ्रासिस : कंप्युटेशनल ऐंड जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रोच (1999–2002), जै.प्रौ.वि.

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. राकेश भटनागर ट्रांसजेनिक प्लांट्स ऐज ए सोर्स आफ इडिबल वेक्सिन अगेंस्ट एंथ्रेक्स, एनएटीपी – विश्व बैंक
2. राकेश भटनागर, जनरेशन आफ नान–टाक्सिक लिथाल फैक्टर ऐंड इडेमा फैक्टर फार द डिवलपमेंट आफ इमप्रूव्ड वैक्सीन अगेंस्ट एंथ्रेक्स, जै.प्रौ.वि.
3. राकेश भटनागर (डॉ. राजीव भट्ट केसाथ), थर्मोस्टेबिलाइजेशन आफ रिकम्बिनेंट प्रोटेक्टिव एंटीजन आफ बैसिलस एंथेसिस, एन.ए.टी.पी. विश्व बैंक
4. राकेश भटनागर, सर्च फार नावल बायोइनसेक्टिसाइड फ्राम जीनोरहेबडस निमैटोफाइलस,पर्यावरण और वन मंत्रालय
5. राकेश भटनागर, न्यू स्ट्रटजीस टु कंट्रोल एंथ्रेक्स मैपिंग आफ द लीथल फैक्टर बाइंडिंग डोमेन आफ प्रोटेक्टिव एन्टीजन आफ एंथ्रेक्स टाक्सिन, वि.अ.आ.
6. संतोष के. कार आइडेंटिफिकेशन आफ एन्टीजीन्स फ्राम क्लिनिकल आइसोलेट्स आफ माइकोबेक्टोरियम ट्युबरक्लोसिस विच ट्रापिकल डिसिजिस, इनड्युस स्ट्रांग टीएच1 रिस्पांस इन हैल्थी कंटैक्ट्स आफ ट्युबरक्लोसिस पेशन्ट्स (2002–05), सर दोराबजी टाटा सेंटर फार रिसर्च इन ट्रापिकल डिसीज
7. संतोष के. कार करेक्ट्राइजेशन आफ सेकरेटिड एन्टीजीन्स आफ इनफेक्टिव लारवा ऐंड एडल्ट ब्रूजिया मलाई पैरासाइट्स विच इनड्यूस्ड स्ट्रांग टीएच1 रिस्पांस इन ट्रूल इनफेक्शन फ्री इंडिविजुअल्स रिजाइडिंग इन ए बैंक्रोफ्टिअन फाइलेरिआसिस एन्डमिक एरिया (2002–05)
8. उत्तम के. पति, कोरिलेशन आफ पी53 लेवल्स ऐंड इट्स फंक्शनल डोमेन्स टु अपोपटोटिक रिस्पांस आफ ओरल कार्सिनोमा सेल्स (2002–2007), वि.अ.आ.
9. उत्तम के. पति, द रोल आफ पेंटान्यूक्लिओटाइड रिपीट (पीएनआर) ऐंड क्रिंग्ले–4 पॉलिमार्फिज्म इन एथेरोसायरोसिस (2000–03), आई.सी.एम.आर.
10. उत्तम के. पति, एन्टी पोल–2 ऐंड एन्टी टी.वी.पी. एन्टीबाडीज ऐज मार्कर्स फार स्केलेरोडर्मा ऐंड मिक्सड कनेक्टिव टिश्यू डिसीज (2000–03), आई.सी.एम.आर.
11. उत्तम के. पति, बोबिन इम्यूनोडिफिशियन्सी वायरस : आइसोलेशन, मोलिकुलर करेक्ट्राइजेशन ऐंड डिवलपमेंट आफ डायग्नोस्टिक (2001–04), एनएटीपी – विश्व बैंक
12. अपर्णा दीक्षित, इनवेस्टिगेशंस इनटु बाटेनिकल बेस्ड प्रोडक्टस ऐंड देअर स्टडीज ऐट मोलिकुलर लेवल्स इन आइडेंटिफाइड थेरेप्युटिक एरियाज (2001–03), डाबर
13. अपर्णा दीक्षित, क्लोनिंग ऐंड इक्सप्रेशन आफ एरोनोमेनास स्प्रे. आउटर मैम्ब्रेन पोरिन फार द डिवलपमेंट आफ रिकंबीनेंट डी.एन.ए. वेक्सिन (2001–04), जै.प्रौ.वि.
14. राजीव भट्ट, स्टडीज आन फोल्डिंग, स्टेबिलिटी, इनर्जेटिक्स ऐंड बायोमोलक्युलर इंटरएक्शंस इन प्रोटींस, वि.अ.आ.

15. राजीव भट्ट, इनहैंसिंग फोल्डिंग ऐंड स्टेबिलिटी आफ ग्लूकोज आक्सिडेस बाई सालवेंट इंजीनियरिंग (2002–04), वै.औ.अ.प.
16. राजीव भट्ट और राकेश भटनागर, थर्मोस्टेबलाइजेशन आफ प्रोटेक्टिव एंटीजन फ्राम बेसिलस एंथ्रेसिस बाई सालवेंट एडिटिव्स (2002–05), एनएटीपी
17. के.जे. मुखर्जी, प्रोसिस डिवलपमेंट आफ रिकम्बिनेंट इ कोली कल्चर (1999–2003), शांता बायोटेक्नोलाजी प्रा. लि., हैदराबाद
18. के.जे. मुखर्जी, प्रोसिस आप्टिमाइजेशन आफ रिकम्बिनेंट ऐसपेरेजीनेस प्रोडक्शन (2000–03), जै.प्रौ.वि.
19. के.जे. मुखर्जी, लार्ज–स्केल प्रोडक्शन आफ एन्टी–बाडी फ्रेगमेंट्स इन इ. कोली ऐंड मेथाइलोट्रोफिक यीस्ट (2002–07), वि.अ.आ.
20. के.जे. मुखर्जी, टेक्नालाजी फार अल्फा इंटरफेरान प्रोडक्शन (2003–04), चेन्नई शर्मा केमिकल ऐंड ड्रग्स प्रा.लि.
21. देवप्रिया चौधरी, कंप्यूटेशनल अप्रोचिस टुवर्डस एक्टिव साइट डिजाइन ऐंड फंक्शनल रिइंजीनियरिंग आफ प्रोटीन्स (2002–07), वि.अ.आ.
22. एस.एस. मैत्रा, केआटिक डायनेमिक्स इन फर्मेटेशन सिस्टम्स (2002–07), वि.अ.आ.
23. एस.एस. मैत्रा, सिमुलेशन फैसिलिटी फार स्केल अप ऐंड इकोनामिक इवैल्युएशन आफ बायोटेक्नोलाजी प्रोसेसिस (2000–03), जै.प्रौ.वि.

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

1. एस.के. कार की (1) इफैक्ट आफ रैम स्लीम डेप्रिवेशन आन द इम्यून सिस्टम आफ रैट और (2) वाउन्ड हीलिंग प्रापर्टीज आफ ट्रिडेक्स प्रोकम्बन लीव्स एक्स्ट्रेक्ट्स विषयक दो परियोजनाएं।
2. आर. भटनागर की डिवलपमेंट आफ माइकोबैक्टेरिअल एन्टीजीन डिलीवरी सिस्टम यूजिंग एन्थ्रेक्स टाक्सिन कम्पोनेन्ट्स विषयक परियोजना।
3. आर. भट्ट की *प्रोटीन फोल्डिंग एग्रीगेशन* ऐंड *डिसीजिस यूजिंग साइट्रेट* सिन्थेस ऐंड ह्यूमन लीन्स *क्रिस्टेलिन्स* ऐज माडल्स' विषयक परियोजना।
4. डी. चौधरी की मोलिकुलर डायनेमिक्स स्टडीज आन फिम्बरिआल प्रोटीन्स' विषयक परियोजना चल रही है।
5. एस.एस. मैत्रा की न्यूरोकंट्रोल' विषयक परियोजना।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1. राकेश भटनागर ने 30 से 31 अक्टूबर, 2003 तक निआइड, बिथेस्दा, यू.एस.ए. में आयोजित इण्डो–यू.एस. वैक्सीन एक्शन प्रोग्राम ज्वाइंट वर्किंग ग्रुप की 16वीं बैठक में भाग लिया।
2. राकेश भटनागर ने 30 मार्च से 3 अप्रैल 2003 तक फ्रांस में आयोजित एन्थ्रेक्स विषयक 5वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में और बैसिलस सेरियस बी एन्थ्रेसिस ऐंड बी थ्युरिनजिनसिस नाइस, विषयक तीसरी कार्यशाला में भाग लिया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. एस.के. कार ने 27 से 30 नवम्बर, 2002 तक भुवनेश्वर में आयोजित इण्डियन इम्यूनोलाजी सोसायटी की वार्षिक बैठक में भाग लिया।
2. एस.के. कार ने 31 जनवरी से 1 फरवरी 2003 तक सी.सी.एम.बी., हैदराबाद में आयोजित मोलिकुलर इम्यूनोलाजी फोरम बैठक में भाग लिया।
3. एस.के. कार ने 16 से 18 अगस्त, 2002 तक बंगलौर में आयोजित ट्रेन्डी की बैठक में भाग लिया।
4. राजीव भट्ट ने 18 से 20 अक्टूबर 2002 तक आई.आई.टी. मुम्बई में आयोजित 'द प्रोटीन सोसायटी' विषयक प्रथम संगोष्ठी में भाग लिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (विश्वविद्यालय से बाहर)

1. राकेश भटनागर ने 27 फरवरी 2003 को बी.सी.आई.एल., द्वारा ला मेरिडियन, नई दिल्ली में आयोजित, टेक्नोलाजी प्राइसिंग सेलर'स पर्सपेक्टिव' विषयक व्याख्यान दिया।
2. राकेश भटनागर ने 12 से 14 जनवरी, 2003 तक इण्डियन हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली में 'चेस्ट डिसीज ऐंड ऐलाइड साइंसिस' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर व्याख्यान दिया।
3. राकेश भटनागर ने 18 से 21 सितम्बर 2002 तक विज्ञान भवन और फेडरेशन हाउस, नई दिल्ली में 'केमिकल्स, पेट्रोकेमिकल्स, फार्मास्युटिकल्स ऐंड प्रोसिस प्लांट ऐंड मशिनरी' विषयक अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में व्याख्यान दिया।

केन्द्र में आए अतिथि

1. प्रो. वी.एस. चौहान, निदेशक, आई.सी.जी.ई.बी., नई दिल्ली।
2. डा. उत्पल भाद्र, वैज्ञानिक, सी.सी.एम.बी. हैदराबाद।
3. डा. दिनकर सालुंके, वैज्ञानिक, एम.आई.आई., नई दिल्ली।
4. प्रो. अजीत सोढी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
5. डा. उत्पल सेनगुप्ता, जालमा, आगरा।
6. प्रो. टी.पी. सिंह, अखिल भारतीय आयुर्विाान संस्थान, नई दिल्ली।
7. डा. रोज बर्नार्ड, यूनिवर्सिटी आफ क्वीन्सलैण्ड, ब्रिस्बन, आस्ट्रेलिया।

केन्द्र द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन

1. डा. टी. सुधाकर जानसन, डाबर रिसर्च फाउन्डेशन, नोएडा ने 22 जनवरी 2003 को 'बायोटेक्नोलाजिकल अप्रोचिस टु फाइटो–फार्मास्युटिकल्स प्रोडक्शन' विषयक व्याख्यान दिया।
2. डा. सुब्रता अदक, विज्ञानी, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ केमिकल बायोलाजी (आई.आई.सी.बी.) कोलकाता ने 7 फरवरी 2003 को 'नो वे बैक' विषयक व्याख्यान दिया।
3. डा. संजय कुमार, सेंटर फार बायोलाजीस इवैल्युशन ऐंड रिसर्च, एन.आई.एच. कैम्पस, बेथास्दा, एम.डी., यू.एस.ए. ने 17 फरवरी, 2003 को 'मलेरिया : इम्यून रिस्पांस ऐंड इम्यूनिटी' विषयक व्याख्यान दिया।

– केन्द्र ने 3 जनवरी, 2003 को प्रो. कुणाल बी. राय के सम्मान में 'मोलिकुलर इंटरएक्शंस इन बायोलाजी' विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान/अध्येतावृत्तियां

1. राकेश भटनागर को स्वास्थ्य के लिए जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जैव प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए आल इण्डिया बायोटेक एसोसिएशन पुरस्कार 2001–2002 प्राप्त हुआ।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1. एस.के. कार, आजीवन सदस्य, इण्डियन इम्यूनोलाजी सोसायटी सचिव, इण्डियन इम्यूनोलाजी सोसायटी; सदस्य, इम्यूनोलाजी फोरम;आजीवन सदस्य, सोसायटी आफ बायोलाजिकल केमिस्ट (इण्डिया); आजीवन सदस्य, इण्डियन सोसायटी फार सेल बायोलाजी; ट्रेन्डिस की स्थाई समिति।
2. राकेश भटनागर, सदस्य, अमेरिकन सोसयटी आफ सेल बायोलाजी; सदस्य, अमेरिकन सोसायटी फार माइक्रोबायोलाजी; आजीवन सदस्य, इण्डियन इम्यूनोलाजिकल सोसायटी; आजीवन सदस्य, बायोटेक्नोलाजिकल सोसायटी आफ इण्डिया; कार्यकारी सदस्य, आल इण्डिया बायोटेक एसोसिएशन; सदस्य, विद्या परिषद, जेएनयू; सदस्य, सलाहकार समिति, आई.आई.टी. रूड़की; सदस्य, विद्या परिषद, सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ फिशरीज, एज्यूकेशन, मुम्बई; सदस्य, सलाहकार समिति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय; सदस्य, विद्या परिषद, ग्वालियर विश्वविद्यालय; सदस्य, सलाहकार समिति, गोरखपुर विश्वविद्यालय; सदस्य, विद्या परिषद, केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; सदस्य, विद्या परिषद, सी.सी.एम.बी., हैदराबाद; सदस्य, नेशनल ब्यूरो आफ फिश जिनेटिक रिसोर्सिस, लखनऊ की शोध सलाहकार समिति।
3. एस.एस. मैत्रा, पूर्ण सदस्य, इंस्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स (एम आई ई)

11. विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विधि और अभिशासन से सम्बन्धित मामलों पर अन्तरविषयक अध्ययन के लिए वर्ष 2000 में विधि और अभिशासन अध्ययन केंद्र की स्थापना की गई। समाजशास्त्रियों, राजनीतिक विज्ञानियों, अर्थशास्त्रियों और अन्य विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के महत्त्वपूर्ण योगदान ने परम्परागत अभिशासन–पद्धति की समझ को समृद्ध और विस्तृत बनाया है। अभिशासन मामलों में संस्थानों और संरचनाओं का सुधार, उच्च दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही की ओर अग्रसर करने वाली प्रक्रिया और नियमों का सृजन तथा स्थापना; और लोकतंत्र एवं राज्य समाज को मजबूत बनाते हुए शासन को और अधिक समाविष्ट और सहभागी बनाने की प्रक्रिया के संदर्भ में नीति संबंधी उलझनें भी शामिल होती हैं। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी शोध संस्था विकसित जो शैक्षिक प्रकाशन जारी करे और वाद–विवादों के माध्यम से शासन–पद्धति में परिवर्तन हेतु एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करे।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

केन्द्र के चार निम्नलिखित चार शोध क्षेत्र हैं –

1. भूमंडलीकरण और अभिशासन
2. लोकतंत्र और सिविल समाज
3. विकास के लिए विधिक रूपरेखा
4. राज्य संस्थान और अभिशासन

केंद्र इन शोध क्षेत्रों में शिक्षकों और छात्रों द्वारा अपना शोध कार्य जारी रखने का प्रस्ताव करता है।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नये अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

केंद्र ने प्रस्तावित एम.फिल. पाठ्यक्रम के लिए 3 अनिवार्य कोर्स और 16 वैकल्पिक कोर्स तैयार किए हैं।

प्रकाशन

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

1. नीरजा गोपाल जयाल, 'ऐथिक्स, पालिटिक्स बायोडाइवर्सिटी : ए व्यू फ्राम द साउथ', (सं.) एन्ड्रेव लाइट और अवनर डे – शालित, मोरल ऐंड पालिटिकल रीजनिंग इन एनवायरनमेंटल प्रेक्टिस, केम्ब्रिज, मास, एम.आई.टी. प्रेस, 2003
2. प्रताप भानु मेहता, 'नायपुल ऐंड द बर्डन्स आफ हिस्ट्री' (सं.) पी. पवार, क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स आफ नायपुल, दिल्ली, 2003
3. प्रताप भानु मेहता, 'डेमोक्रेसी ऐंड सोशल कोआपरेशन' (स.) टी.सी. किम, द आइडिया आफ पब्लिक हैपीनैस, क्योटो, 2003
4. प्रताप भानु मेहता, 'द डाइलेमास आफ मुस्लिम पालिटिक्स', (सं.) के. चैतन्य, फासिज्म इन इण्डिया, दिल्ली, 2003
5. प्रताप भानु मेहता, 'द आइडिया आफ कलेक्टिव रिस्पांसिबिलिटी : सम फिलोसोफिकल कंसिडेशंस' (सं.) एस. मोतीलाल, रिस्पांसिबिलिटी ऐंड राइट्स, दिल्ली, 2003
6. अमित प्रकाश, 'सोसिओ–कल्चरल ऐंड इकोनामिक बैकग्राउन्ड आफ द पालिटिकल सिस्टम' (सं.) अजय मेहरा, डी.डी. खन्ना और जी. डब्ल्यू क्वेक, पालिटिकल पार्टीज ऐंड द पार्टी सिस्टम्स, सेज नई दिल्ली, 2003
7. अमिता सिंह, 'रिकंस्ट्रक्टिव पोस्ट–माडर्निज्म ऐंड एनवायरनमेंट सिक्युरिटी इन साउथ एशिया', (सं.) आर.बी. जैन, एनवायरनमेंटल सिक्युरिटी इन साउथ एशिया, एल. हरमातन, आई.आई.ई.एस.एस. पेरिस, 2002
8. अमिता सिंह, 'एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स, व्हेयर वेट आर वारन्ट ?' (सं.) एस.एन. मिश्रा, ए.डी. मिश्रा और एस. मिश्रा, पब्लिक गवर्नेन्स ऐंड डिसेंट्रेलाइजेशन, मित्तल, दिल्ली
9. नन्दिनी सुंदर, 'लाइसेन्स टु किल : पैटर्न्स आफ वायलन्स' (सं.) सिद्धार्थ वर्दराजन, ए ट्रेजडी काल्ड गुजरात, पेंगुइन, नई दिल्ली, 2002

10. नन्दिनी सुंदर, 'विलेज हिस्ट्रीज : कोलेसिंग द पास्ट ऐंड प्रिजेन्ट' (सं.) पार्था चटर्जी और अंजन घोष, हिस्ट्री ऐंड द प्रिजेन्ट, पर्मानेन्ट ब्लैक, दिल्ली, 2002

आलेख

1. नीरजा गोपाल जयाल, 'रिप्रजेंटिंग द डिसएडवांटेज्ड : वुमन माइनार्टीज ऐंड द दलित्स इन द इण्डियन पार्लियामेंट', नेपाली जर्नल आफ कंटेम्पोरेरि स्टडीज, भाग–2, अंक–2, सितम्बर, 2002
2. नीरजा गोपाल जयाल, 'डू द न्यू स्टेट्स टेल ए स्टोरी एबाउट इण्डियन फेडरलिज्म ? सम कमेंट्स आन माया चड्ढा'स इंटिग्रेशन थ्रू इंटरनल रिआर्गेनाइजेशन : कंटेनिंग ऐथनिक कंफ्लिक्ट इन इण्डिया', द ग्लोबल रिव्यू आफ एथनोपालिटिक्स, भाग–2, अंक–2, जनवरी, 2003
3. नीरजा गोपाल जयाल, 'सिविल सोसायटीज : रीयल ऐंड इमेजिंड', द इण्डियन जर्नल आफ पालिटिकल साइंस, भाग–63, अंक 2 और 3, जून–सितम्बर, 2002, (क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स आन सिविल सोसायटी विषयक विशेष अंक)
4. प्रताप भानु मेहता, 'पैशन ऐंड कंस्ट्रेन्ट', संगोष्ठी, जनवरी, 2003
5. प्रताप भानु मेहता, 'इज इलैक्टोरल ऐंड इंस्टीट्यूशनल रिफार्म द आन्सर', संगोष्ठी, जुलाई, 2002
6. प्रताप भानु मेहता, 'द एथिक्स आफ ह्युमैनिटेरियन इंटरवेंशन', नोमोस, मार्च 2003
7. प्रताप भानु मेहता, 'फिलन्थ्रोपी : फिलास्फिकल पर्सपेक्टिव्स', वर्किंग पेपर, सेंटर फार हिस्ट्री ऐंड इकोनोमिक्स, किंग्स कालेज, केम्ब्रिज

   इसके अतिरिक्त, लगभग 50 आलेख और पुस्तक समीक्षाएं – हिन्दू, द इण्डियन इक्सप्रेस, टेलीग्राफ, आउटलुक और अमेरिकन पालिटिकल साइंस रिव्यू में छपे।

8. अमित प्रकाश, 'हाउ गुड इज इण्डिया'स 'ओन' नेशनल ह्युमन डिवलपमेंट रिपोर्ट ?' फार द गवर्नेन्स ऐंड डिवलपमेंट रिव्यू वेबसाइट, इंस्टीट्यूट आफ डिवलपमेंट स्टडीज, ब्रिघटन, यू.के.
9. *अमित प्रकाश, 'पालिटिक्स* आफ *कल्चर'* रिव्यू आफ *कानूनगो*, प्राले, आर.एस.एस'स ट्रस्ट विद *पालिटिक्स* : फ्राम हेडगेवार टु सुदर्शन, मनोहर, नई दिल्ली, 2002, पृ. 314, टेलिग्राफ 13 सितम्बर, 2002
10. अमिता सिंह, 'क्वेश्चनिंग न्यू पब्लिक मैनेजमेंट', पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन रिव्यू : जर्नल आफ अमेरिकन सोसायटी आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, भाग–63, अंक–1, जनवरी–फरवरी, 2003
11. नन्दिनी सुन्दर, 'इंडिजिनाइज, नेशनलाइज ऐंड स्प्रिच्युएलाइज : एन एजेन्डा फार एज्यूकेशन', इंटरनेशनल सोशल साइंस जर्नल, 173, 2002

चल रही शोध परियाजेनाएं (प्रायोजित)

1. *नीरजा गोपाल जयाल, 'डेमोक्रेसी ऐंड प्लुरलिज्म इन साउथ एशिया' विषयक* वार्ता (फोर्ड फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित)
2. नीरजा गोपाल जयाल, 'ऐथनिक स्ट्रक्चर इनइक्वैलिटी ऐंड द गवर्नेंस आफ द पब्लिक सैक्टर (इण्डिया कंट्री स्टडी) यूनाइटिड नेशंस रिसर्च इंस्टीट्यूट फार सोशल डिवलपमेंट, जिनेवा, (जुलाई 2002 – दिसम्बर 2003)
3. अमित प्रकाश, 'ग्रुप डिस्क्रिमिनेशन ऐंड इलैक्शंस इन इण्डिया', फोर्ड फाउंडेशन का भाग, इलैक्टोरल प्रोसेसिस ऐंड गवर्नेंस इन साउथ एशिया' विषयक वित्त पोषित परियोजना, इंटरनेशनल सेंटर फार एथनिक स्टडीज, केन्डी, श्रीलंका
4. नन्दिनी सुन्दर, 'द लीगल फ्रेमवर्क फार डिवलपमेंट इन झारखण्ड (यू.एन.डी.पी. भारत सरकार)

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

1. प्रताप भानु मेहता, द बर्डन्स आफ डेमोक्रेसी
2. प्रताप भानु मेहता, ऐथिक्स इन एन इमपर्फेक्ट वर्ल्ड
3. प्रताप भानु मेहता, द आइडिया आफ *कंस्टिट्युशनलिज्म*
4. अमित प्रकाश, मैपिंग इंडिकेटर्स आफ गवर्नेन्स इन इंडिया
5. *अमित प्रकाश, गुड गवर्नेन्स ऐंड डिवलपमेंट पालिसी : ए कम्पैरटिव* स्टडी आफ उत्तर प्रदेश ऐंड *महाराष्ट्र*
6. अमिता सिंह, इम्पैक्ट आफ ट्रांसनेशनल बिजनेस आन लोकल गवर्नेंस/पब्लिक इंटरप्राइजिस मैनेजमेंट

7. नन्दिनी सुन्दर, वार ऐंड द कंस्ट्रक्शन आफ सिटीजनशिप इन साउथ एशिया

8. नन्दिनी सुन्दर, डिसिप्लिनरी बायोग्राफीज : एसेज इन द हिस्ट्री आफ इण्डियन एन्थ्रोपोलाजी ऐंड सोसिआलाजी

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1. नीरजा गोपाल जयाल ने 27 से 28 मई, 2002 तक यूनाइटिड नेशंस रिसर्च इंस्टीट्यूट फार सोशल डिवलपमेंट, जिनेवा में आयोजित एथनिक स्ट्रक्चर इनइक्वैलिटी ऐंड द गवर्नेंस आफ द पब्लिक सैक्टर : मेथडोलाजी, विषयक कार्यशाला में भाग लिया तथा, 'एथनिक स्ट्रक्चर इनइक्वैलिटी ऐंड गवर्नेंस इन इंडिया', शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. नीरजा गोपाल जयाल ने 1 से 3 जुलाई 2002 तक सेंटर फार साउथ एशियन स्टडीज, यूनिवर्सिटी आफ मिचिगन, ऐन आर्बर में (गुजरात विषयक गोलमेज में भाग लिया) आयोजित, नेटवर्क आन साउथ एशियन पालिटिक्स ऐंड पालिटिकल इकोनामी, की प्रथम वार्षिक बैठक में भाग लिया।
3. नीरजा गोपाल जयाल ने 11 से 13 जुलाई 2002 तक इंस्टीट्यूट आफ डिवलपमेंट स्टडीज, यूनिवर्सिटी आफ ससेक्स, यू.के. में आयोजित द सेंटर फार द स्टेट फ्युचर स्टेट की वार्षिक बैठक में (केन्द्र की सलाहकार संवीक्षा समूह में सदस्य के रूप में) भाग लिया।
4. नीरजा गोपाल जयाल ने 24 से 28 अक्टूबर, 2002 तक ईस्ट-वेस्ट सेंटर, हवाई नोम पेन्ह, कम्बोडिया द्वारा आयोजित, 'सिविल सोसायटी ऐंड पालिटिकल चेंज इन एशिया' विषयक कार्यशाला में भाग लिया (कंट्री स्टडीज आफ इण्डिया, पाकिस्तान ऐंड श्रीलंका' विषय पर वरिष्ठ विद्वान द्वारा समीक्षा; और कार्यशाला के समापन सत्र में परिचर्चाकर्ता थे)।
5. नीरजा गोपाल जयाल ने 5 से 9 फरवरी, 2003 तक इंटरनेशनल सेंटर फार एथनिक स्टडीज, कोलम्बो और फोर्ड फाउन्डेशन द्वारा प्रायोजित, कंदालामा, श्रीलंका में आयोजित 'डाइवर्सिटी ऐंड को एक्जिस्टेन्स इन एशिया' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
6. प्रताप भानु मेहता ने अप्रैल 2002 में क्योटो, जापान में आयोजित, 'वैराइटीज आफ लिबरलिज्म: फाउन्डेशन फार फ्युचर जेनरेशंस' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
7. प्रताप भानु मेहता ने जून 2002 में मिशीगन विश्वविद्यालय में आयोजित नेटसैप के सम्मेलन में भाग लिया।
8. प्रताप भानु मेहता ने सितम्बर 2002 में अमेरिकन पालिटिकल साइंस एसोसिएशन, बोस्टन में (अमेरिकन सोसायटी फार ऐप्लाइड ऐंड लीगल फिलास्फी के साथ संयुक्त रूप से) आयोजित 'ह्युमैनिटेरियन इंटरवेंशन रिकंसिडर्ड' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
9. प्रताप भानु मेहता ने नवम्बर 2002 में आयोजित क्रिस्टचर्च, न्यूजीलैण्ड में आयोजित, पोप्पर, हायक ऐंड द क्रिटिक आफ रैशनलिज्म' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
10. प्रताप भानु मेहता ने जनवरी, 2003 में कायरो में आयोजित, 'ग्लोबल डिवलपमेंट नेटवर्क' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
11. अमित प्रकाश ने 28 से 30 जून 2002 तक इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ एशियन स्टडीज, लीडन द्वारा आयोजित तथा लीडन विश्वविद्यालय, लीडन, नीदरलैण्ड की एन.डब्ल्यू.ओ., सी.एन.डब्ल्यू, एस., के.एन.ए.डब्ल्यू. जैसी' अन्य शैक्षिक निकायों, 'रिवाइजिंग द एशियन स्टेट' विषयक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा, 'पोस्ट-कलोनिअल इण्डियन स्टेट : डिस्कर्सिव स्ट्रक्चर्स ऐंड द न्यू हीगेमोनिक कनसेन्सस-केस आफ ट्राइबल आइडेंटिटी इन झारखण्ड' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
12. अमित प्रकाश ने 21 से 23 जून, 2002 तक इंटरनेशनल सेंटर फार एथनिक स्टडीज, केन्डी, कोलम्बो, श्रीलंका द्वारा आयोजित 'इलैक्टोरल प्रोसिस ऐंड गवर्नन्स इन साउथ एशिया' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा 'ग्रुप डिस्क्रिमिनेशन ऐंड इलैक्शंस इन इण्डिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
13. नन्दिनी सुन्दर ने 18 से 21 अप्रैल, 2002 तक ओहिओ स्टेट यूनिवर्सिटी में आयोजित 'रिवोल्युशन ऐंड पैडागागी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'टीचिंग टु हेट : द हिन्दू राइट्स पैडागागिकल प्रोग्राम, शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
14. नन्दिनी सुन्दर ने 17 से 20 सितम्बर, 2002 तक न्यूयार्क में आयोजित 'सफरिंग ऐंड रिकवरी' विषयक वीनर-ग्रेन कार्यशाला में भाग लिया तथा 'द एन्थ्रोपालाजी आफ कल्पेबिलिटी ऐंड सिटीजनशिप' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. नीरजा गोपाल जयाल (सह लेखक बी.एन. मोहपात्रा के साथ) ने 5 अक्टूबर, 2002 को द इंटरनेशनल सेंटर फार एथनिक स्टडीज, कोलम्बो द्वारा इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के साथ 'डाइवर्सिटी ऐंड प्लुरलिज्म ऐंड द रोल आफ नेशनल इंस्टीट्यूशंस इन द प्रोटेक्शन आफ माइनार्टी राइट्स, विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया तथा 'द नेशनल कमीशन फार शैडयूल्ड कास्ट्स ऐंड ट्राइब्स : ए रिपोर्ट' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
2. नीरजा गोपाल जयाल ने 30 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2002 तक मुम्बई विश्वविद्यालय में आयोजित 'स्टेट्स इन ट्रांजिशंस : गवर्नेंस ऐंड सिविल सोसायटी इन महाराष्ट्र' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'थिओराइजिंग गवर्नेंस ऐंड सिविल सोसायटी फार इण्डिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
3. नीरजा गोपाल जयाल ने 6 से 8 जनवरी, 2003 तक द इंस्टीट्यूट आफ चाइनीज स्टडीज, यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली और इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसिस, दिल्ली द्वारा कोलकता में आयोजित 'लोकल गवर्नेंस इन इण्डिया ऐंड चाइना', विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, 'डिवलपमेंट आर इमपावरमेंट ? वुमन'स पार्टिसिपेशन इन पंचायती राज इंस्टीट्यूशंस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
4. नीरजा गोपाल जयाल ने 13 फरवरी, 2003 को पार्टिसिपेट्री रिसर्च इन एशिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'सिटीजनशिप ऐंड गवर्नेंस : इश्यूज आफ आइडेंटिटीज, इनक्लुजन ऐंड वायस' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'सिटीजनशिप ऐंड गवर्नेंस : कंसेप्चुअल ऐंड थीअरिटिकल इश्यूज' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
5. प्रताप भानु मेहता ने सितम्बर 2002 में दिवा, नई दिल्ली में 'द आइडिया आफ कलेक्टिव रिस्पोसिबिलिटी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
6. प्रताप भानु मेहता ने नवम्बर 2002 में गार्गी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित 'एथिक्स ऐंड पालिटिक्स' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
7. प्रताप भानु मेहता ने नवम्बर 2002 में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित 'अगेंस्ट टालरेशन' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
8. प्रताप भानु मेहता ने दिसम्बर 2002 में सी एस डी एस दिल्ली में आयोजित 'कांट ऐंड थिओडिसी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
9. प्रताप भानु मेहता ने दिसम्बर 2002 में जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आयोजित 'लिविंग टुगेदर सैप्रेटली' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'अगेंस्ट कम्पोजिट कल्चर' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
10. प्रताप भानु मेहता ने दिसम्बर 2002 में पीएचआईएसपीसी, नई दिल्ली में आयोजित 'ट्रांस्लेटिंग डेमोक्रेसी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
11. प्रताप भानु मेहता ने फरवरी 2003 में दिल्ली में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा 'द डाइलेमा आफ मुस्लिम पालिटिक्स' विषयक जाकिर हुसैन स्मारक व्याख्यान दिया।
12. प्रताप भानु मेहता ने फरवरी 2003 में गोवा में आयोजित, 'सिटीजनशिप ऐंड द नेशन स्टेट' विषयक सी.एस.एस. सी. के सम्मेलन में भाग लिया।
13. प्रताप भानु मेहता ने 2003 में इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ जुरिस्ट्स में 'पोस्ट डेमोक्रेसी' विषयक समेलन में भाग लिया।
14. प्रताप भानु मेहता ने मार्च, 2003 में पुणे विश्वविद्यालय में आयोजित 'द एथिक्स आफ टालरेन्स' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
15. प्रताप भानु मेहता ने मार्च 2003 में पीएचआईएसपीसी, में आयोजित 'द ट्रम्फ आफ हिन्दुत्व' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।
16. प्रताप भानु मेहता ने मार्च, 2003 में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित 'एट्टीन्थ सेंचुरी' विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा 'ऐथिक्स ऐंड इविल' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।
17. प्रताप भानु मेहता ने मार्च 2003 में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित 'बर्के, फुरेट ऐंड द क्वेश्चन आफ टेरॅर' विषयक सम्मेलन में भाग लिया।

18. अमिता सिंह ने 11 से 12 अप्रैल, 2002 तक 'लोकल गवर्नेंस' विषयक सी.एस.एस.जी./यू.एन.डी.पी. के सम्मेलन में भाग लिया तथा 'एकाउन्टेबिलिटी इन इन्फ्रास्ट्रक्चर डिवलपमेंट आफ इंडस्ट्रिअल टाउनशिप्स आफ गुड़गाँव ऐंड फरीदाबाद इन हरियाणा' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

19 अमिता सिंह ने 9 मई 2002 को 'इण्डो–कनेडियन कोआपरेशन इमर्जिंग एरियाज' विषयक एस.आई.एस./कनेडियन हाई कमीशन के सम्मेलन में भाग लिया तथा 'इण्डो–कनेडियन एनवायरनमेंटल कोआपरेश'न शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

20. अमिता सिंह ने 5 से 9 नवम्बर, 2002 तक इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ एडमिनिस्ट्रेटिव साइंसिस (आई.आई.ए.एस.) ब्रुसेल्स और मिनिस्ट्री आफ पर्शनल, पब्लिक ग्रिवांसिस द्वारा प्रायोजित नई दिल्ली में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा 'ग्लोबल कारपोरेट गवर्नेंस ऐंड सस्टेनेबल एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

21. अमिता सिंह ने 25 नवम्बर, 2002 को आस्ट्रेलियाई उच्चायोग और इग्नू द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा 'इमर्जिंग इश्यूज इन इण्डो–आस्ट्रेलियन कोआपरेशन फार सस्टेनेबल डिवलपमेंट' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

22. अमिता सिंह ने 22 दिसम्बर, 2002 को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान संघ और राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा 'द फिफ्थ पे फ्रेमवर्क आफ रिफार्म्स इन इण्डिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

23 अमिता सिंह ने 24 से 25 फरवरी, 2003 तक 'डिपार्टमेंट आफ बायोटेक्नोलाजी (एम.एच.आर.डी.) और एनीमल वैलफेयर बोर्ड द्वारा आयोजित 'अल्टरनेटिव्स टु द यूज आफ एनीमल्स इन रिसर्च' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे मिनिस्ट्री आफ एनवायरनमेंटल इंस्टीट्यूशनल ऐथिक्स कमेटी में प्रतिभागी/परिचर्चा के रूप में भाग लिया।

24. नन्दिनी सुन्दर ने 29 से 31 अगस्त, 2002 तक नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग में आयोजित ऐल्विन जन्मशती संगोष्ठी में ऐल्विन ऐंड द मिशनरी परिचर्चा में भाग लिया तथा 'वैरियर ऐल्विन ऐंड द ट्राइब्स आफ नार्थ ईस्ट इंडिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

25. नन्दिनी सुन्दर ने 3 सितम्बर 2002 को 'फारेस्ट पालिसी इन इण्डिया' विषयक वर्ल्ड बैंक कंसल्टेशन में भाग लिया।

26. नन्दिनी सुन्दर ने 13 सितम्बर 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर में इंटरनेशनल कंटेक्स्ट रिसेटलमेंट ऐंड रिहेबिलिटेशन इन इण्डिया' विषयक सत्र में अध्यक्ष के रूप में भाग लिया तथा परिचर्चा की।

27. नन्दिनी सुन्दर ने 8 से 12 अक्टूबर, 2002 तक अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में रह रहे स्वदेशी भारतीयों की स्थिति जानने के लिए द आल इण्डिया कोआर्डिनेटिंग फोरम आफ द आदिवासी ऐंड इंडिजिनस पीपल'स की वस्तुस्थिति का पता लगाने के लिए गठित टीम के सदस्य के रूप में भाग लिया।

28 नन्दिनी सुन्दर ने 21 से 22 अक्टूबर, 2002 तक सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जेएनयू में आयोजित प्रो. टी.के. ऊमन अभिनंदन संगोष्ठी में 'द एन्थ्रोपोलाजी आफ सिटीजनशिप' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

29. नन्दिनी सुन्दर ने 24 से 25 अक्टूबर, 2002 तक यू.एन.डी.पी. झारखण्ड सरकार और मानव विकास संस्थान द्वारा आयोजित 'डिवलपमेंट विजन फार झारखण्ड' विषयक संगोष्ठी में परिचर्चा की।

30. नन्दिनी सुन्दर ने 16 से 18 जनवरी, 2003 तक हिन्दू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया तथा, 'वायलेन्स इन जेएफएम' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

शिक्षकों के व्याख्यान (विश्वविद्यालय से बाहर)

1 नीरजा गोपाल जयाल ने 24 जुलाई 2002 को यू.एन.डी.पी., नई दिल्ली में डीपनिंग डेमोक्रेसी इन ए फ्रेगमेंटेड वर्ल्ड' विषयक व्याख्यान दिया तथा ह्युमन डिवलपमेंट रिपोर्ट 2002 की पैनल परिचर्चा की।

2. नीरजा गोपाल जयाल ने 6 अगस्त, 2002 को नेशनल इंस्टीट्यूट आफ एज्यूकेशनल प्लानिंग ऐंड एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली में 'ए राइट–बेस्ड अप्रोच टु गवर्नेंस : द राइट टु एज्यूकेशन' विषयक व्याख्यान दिया।

3. नीरजा गोपाल जयाल ने सितम्बर 2002 में फोर्ड फाउंडेशन, नई दिल्ली में 'इश्यूज ऐंड चैलेंजिस फार पंचायती राज इंस्टीट्यूशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

4. नीरजा गोपाल जयाल ने 10 अक्टूबर 2002 को यू.एन.डी.पी., नई दिल्ली में 'जेंडर ऐंड गवर्नेंस इन इंडिया' विषयक व्याख्यान दिया।

5. नीरजा गोपाल जयाल ने 20 जनवरी, 2003 को लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में, 'वुमन इन पंचायती राज इंस्टीट्यूशंस' विषयक व्याख्यान दिया।

6. नीरजा गोपाल जयाल ने 29 जनवरी, 2003 को लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'इकोफेमिनिज्म' विषयक व्याख्यान दिया।

7. नीरजा गोपाल जयाल ने 12 फरवरी 2003 को फोर्ड फाउंडेशन, नई दिल्ली में 'सिटिजनशिप : इश्यूज ऐंड चैलेंजिस' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

8. नीरजा गोपाल जयाल ने 21 फरवरी, 2003 को लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'वुमन, फैमली ला ऐंड द यूनिफार्म सिविल कोड' विषयक व्याख्यान दिया।

9. प्रताप भानु मेहता ने फरवरी 2003 में जामिया हमदर्द में, 'रिलीजन ऐंड माडर्निटी' विषयक व्याख्या दिया।

10. प्रताप भानु मेहता ने फरवरी 2003 में लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'प्लेटो, रूसो ऐंड रावल्स' विषयक 6 व्याख्यान दिए।

11. अमित प्रकाश ने 11 मार्च 2003 को अकादमिक स्टाफ कालेज, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में निम्नलिखित व्याख्यान दिए:

- 'कंसेप्ट आफ गवर्नेन्स'
- 'पालिटिक्स आफ झारखण्ड'

12. अमित प्रकाश ने 10 नवम्बर, 2002 को काउंसिल फार द डिवलपमेंट आफ बिहार ऐंड झारखण्ड में, 'पालिटिक्स ऐंड डिवलपमेंट आफ झारखण्ड' विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

13. अमिता सिंह ने 30 जुलाई, 2002 को हरियाणा इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, गुड़गांव में 'स्ट्रेंथनिंग स्टेट एटीआई'स विषयक व्याख्यान दिया।

14. अमिता सिंह ने 5 अगस्त, 2002 को हिपा, गुड़गांव में 'डेमोक्रेसी गवर्नेन्स ऐंड एनवायरनमेंट' विषयक व्याख्यान दिया।

15. अमिता सिंह ने 2 सितम्बर, 2002 को 'रूरल गवर्नेन्स' विषयक सूर्या फाउन्डेशन थिंक टैंक की गोलमेज बैठक में 'पंचायत्स ऐंड गुड गवर्नेन्स आफ्टर सेवन्टी थर्ड अमेंडमेंट' विषयक व्याख्यान दिया।

16. अमिता सिंह ने 4 सितम्बर, 2002 को हिपा, में 'जेंडर डिफ्रेंसिअल्स इन इम्पावरमेंट ऐंड वेज स्ट्रक्चर' विषयक व्याख्यान दिया।

17. अमिता सिंह ने 14 सितम्बर, 2002 को हिपा, गुड़गांव में 'डिसेंट्रेलाइजेशन, एनवायरनमेंट : पीपल'स पार्टिसिपेशन' विषयक व्याख्यान दिया।

19. अमिता सिंह ने 16 जनवरी, 2003 को गार्गी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में, 'फ्राम पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन टु गवर्नेन्स' विषयक व्याख्यान दिया।

20. अमिता सिंह ने 26 फरवरी, 2003 को हिपा, गुड़गांव में, 'ब्यूरोक्रेसी, एनवायरनमेंट ऐंड सस्टेनेबल डिवलपमेंट प्रेक्टसीज' विषयक व्याख्यान दिया।

21. नन्दिनी सुन्दर ने 29 से 31 अगस्त, 2002 तक नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग में आयोजित ऐल्विन जन्मशती संगोष्ठी में ऐल्विन ऐंड द मिशनरी परिचर्चा में भाग लिया तथा 'वैरियर ऐल्विन ऐंड द ट्राइब्स आफ नार्थ ईस्ट इण्डिया' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

22. नन्दिनी सुन्दर ने 3 सितम्बर, 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल में, 'फारेस्ट पालिसी इन इण्डिया' विषयक वर्ल्ड बैंक कंसल्टेशन में भाग लिया।

23. नन्दिनी सुन्दर ने 13 सितम्बर, 2002 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर में 'इंटरनेशनल कंटेक्स्ट, रिसेटलमेंट ऐंड रिहैबिलिटेशन इन इण्डिया' विषयक सत्र में अध्यक्ष के रूप में भाग लिया तथा परिचर्चा की।

24. नन्दिनी सुन्दर ने 8 से 12 अक्टूबर 2002 तक अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में रह रहे स्वदेशी भारतीयों की स्थिति जानने के लिए द आल इण्डिया कोआर्डिनेटिंग फोरम आफ द आदिवासी ऐंड इंडिजिनस पीपल'स की वस्तुस्थिति का पता लगाने के लिए गठित टीम के सदस्य के रूप में भाग लिया।

25. नन्दिनी सुन्दर ने 24 से 25 अक्टूबर, 2002 तक यूएनडीपी झारखण्ड सरकार और मानव विकास संस्थान द्वारा आयोजित 'डिवलपमेंट विजन फार झारखण्ड' विषयक संगोष्ठी में परिचर्चा की।

27. नन्दिनी सुन्दर ने 16 से 18 जनवरी, 2003 तक हिन्दू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यशाला में 'वायलेन्स इन जे एफ एम' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

केन्द्र में आए अतिथि

1. अजय एस. मेहता, कार्यकारी निदेशक, नेशनल फाउंडेशन आफ इण्डिया, 6 सितम्बर, 2002 को केन्द्र में आए और 'रिथिंकिंग वालन्ट्री एक्शन, कम्युनिटी पार्टिसिपेशन ऐंड प्रापर्टी रिलेशंस' विषयक व्याख्यान दिया।
2. संजय बारू, सम्पादक, फाइनेन्शल एक्सप्रेस 13 सितम्बर, 2002 को केन्द्र में आए और 'गुड गवर्नेन्स ऐंड कम्प्रीहेंसिव नेशनल पावर' विषयक व्याख्यान दिया।
3. बी.जी. वर्गीस, मैग्सेसे पुरस्कार विजेता, स्टेट्समैन के पूर्व सम्पादक और विज्ञान नीति अनुसंधान केंद्र के विजिटिंग प्रोफेसर, 4 अक्टूबर, 2002 को केन्द्र में आए तथा 'वाटर इश्यूज ऐंड हाइड्रो–पालिटिक्स इन इण्डिया' विषयक व्याख्यान दिया।
4. राहुल रामागुन्दन, रिसर्च स्कालर, जेएनयू 27 सितम्बर, 2002 को केन्द्र में आए और 'लॉ, लाईज ऐंड लैण्ड : इम्पावरमेंट ऐंड अरोरशन ऐट ग्रासरुट्स लेवल' विषयक व्याख्यान दिया।
5. वसन्था मुत्थुस्वामी, उप महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, 18 अक्टूबर 2002 को केन्द्र में आए और 'जिनेटिक रिसर्च ऐंड एकाउन्टेबिलिटी आफ साइंस' विषयक व्याख्यान दिया।
6. गोपाल गुरु, दिल्ली विश्वविद्यालय, राजनीति विज्ञान केन्द्र में आए और 'इम्पैक्ट आफ ग्लोबलाइजेशन आन मार्जिनेलाइज्ड ग्रुप्स इन कंटेम्पोरेरि बाम्बे' विषयक व्याख्यान दिया।
7. एम.के. वेणु (वरिष्ठ सम्पादक, इकोनामिक्स टाइम्स), 7 फरवरी, 2003 को केन्द्र में आए और 'मार्किट्स ऐंड गवर्नेंस' विषयक व्याख्यान दिया।
8. घनश्याम शाह (सी एस एम) 14 फरवरी, 2003 को केन्द्र में आए और 'पब्लिक हैल्थ ऐंड द अर्बन गवर्नेंस : सूरत रिविजटिड' विषयक व्याख्यान दिया।
9. केन्द्र ने (जीवन विज्ञान संस्थान और जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र के साथ) 20 फरवरी, 2003 को 'बायोथिक्स' विषयक संगोष्ठी आयोजित की।
10. नन्दिता हक्सर 10 फरवरी, 2003 को केन्द्र में आए और 'इंटरनेशनल ला ऐंड द वार आन टेरॅरिज्म' विषयक व्याख्यान दिया।
11. नीला मुखर्जी (विजिटिंग फेलो, विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र) ने 7 मार्च, 2003 को 'सस्टेनेबल लिविलीहुड्स एनालिसिस' विषयक व्याख्यान दिया।
12. राधिका सिंह (सी.एस.एस.एच.) 28 मार्च, 2003 को केन्द्र में आई और 'पालिसिंग द बैडमाश इन कलोनिअल इण्डिया' विषयक व्याख्यान दिया।

केन्द्र द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन

1. केन्द्र ने 11 से 12 अप्रैल, 2002 तक यूनाइटिड नेशंस डिवलपमेंट प्रोग्राम और द यूनाइटिड नेशंस कमीशन आन ह्यूमन सेटलमेंट्स के सहयोग से 'लोकल गवर्नेन्स' विषयक कार्यशाला आयोजित की।
2. श्री सोली सोराबजी, महान्यायवादी, भारत सरकार ने 15 नवम्बर, 2002 को 'इसेंसल्स आफ गुड गवर्नेन्स' विषयक व्याख्यान दिया।
3. केन्द्र ने जीवन विज्ञान संस्थान और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान के सहयोग से 'बायोथिक्स' विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की।
4. केन्द्र ने 24 से 28 फरवरी, 2003 तक 'द राइट टु सेल्फ–डिटर्मिनेशन, गुड गवर्नेन्स ऐंड द लॉ' विषयक कार्यशाला आयोजित की।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान/अध्येतावृत्तियाँ

1. नन्दिनी सुन्दर को 2002 में 'कास्ट ऐंड द सेंसस : इनइक्वैलिटी ऐंड आइडेंटिटी' के लिए एम.एन. श्रीनिवास स्मारक पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1. नीरजा गोपाल जयाल, सदस्य, सेंटर एडवाइजरी रिव्यू ग्रूप, सेंटर फार फ्युचर स्टेट, इंस्टीट्यूट आफ डिवलपमेंट स्टडीज, यूनिवर्सिटी आफ ससेक्स, ब्रिघटन, यू.के.।
2. प्रताप भानु मेहता, सदस्य, विद्या परिषद, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय; सदस्य, आई.सी.पी.आर. सम्मेलन, साइंस फिलास्फी ऐंड सिविलाइजेशन' विषयक आयोजन समिति; बाह्य रेफरी, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. अमित प्रकाश, सदस्य, विद्या परिषद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय; सदस्य, ओ आर एफ इंस्टीट्यूट आफ पालिटिक्स ऐंड गवर्नेन्स, नई दिल्ली की स्थापना के लिए गठित सलाहकार मण्डल; इंस्टीट्यूट फार कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, नई दिल्ली में प्लानिंग फार डिवलपमेंट ऐंड सिक्यूरिटी इन इण्डिया'स नार्थईस्ट' विषयक उनकी परियोजना के अवैतनिक सलाहकार।
4. अमिता सिंह, सदस्य, इंटरनेशनल सेंटर फार जिनेटिक इंजीनियरिंग ऐंड बायोटेक्नोलाजी, दिल्ली की इंस्टीट्यूशनल ऐथिक्स कमेटी; सदस्य, इग्नू की सस्टेनेबल डिवलपमेंट इश्यूज ऐंड चैलेंजिस' विषयक पाठ्यक्रम के विशेषज्ञ समिति; कार्यकारी सदस्य, 'फोरम फार ऐथिकल राइंसिस' एन जी ओ नेटवर्क्स फार रेग्युलेट्री रिफार्म्स इन बायोथिक्स ऐंड नोर्म्स फार लैबोरेट्री इक्सपेरिमेंटेशन, दिल्ली।

11. नन्दिनी सुन्दर, सदस्य, शासी निकाय, सेंटर फार सोशल कम्युनिकेशन ऐंड चेंज, नई दिली, 2002–03; सदस्य, इंटरनेशनल साइंटिफिक एडवाइजरी बोर्ड, नेशनल सेंटर आफ कम्पीटेंस इन रिसर्च नार्थ–साउथ, यूनिवर्सिटी आफ बर्न, 2003–05

अन्य कोई सूचना

केन्द्र ने फोर्ड फाउंडेशन से प्राप्त अपनी परियोजना से दो विजिटिंग फेलोशिप पुरस्कार प्रदान किए। इन दो विजिटिंग फेलोज में से श्री विदेह उपाध्याय एनवायरनमेंटल लॉ में विशेषज्ञ हैं। उनकी केन्द्र में, 'डिसेंट्रेलाइज्ड गवर्नेस इन नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट : इक्सप्लोरिंग लीगल स्पेसिस फार इंटर–रिलेशनशिप्स बिटवीन पंचायती राज इंस्टीट्यूशंस ऐंड फार्मल यूजर ग्रुप्स इन फारेस्ट ऐंड वाटर रिसोर्सिस' विषयक शोध परियोजना चह रही है।

द्वितीय विजिटिंग फेलोशिप विकास अर्थशास्त्री डा. नीला मुखर्जी को प्रदान को प्रदान की गई। केन्द्र में उनकी, 'इश्यूज इन ग्लोबल गवर्नेन्स फ्राम द पर्सपेक्टिव आफ द साउथ : ए स्टडी आफ जर्नल एग्रीमेंट इन ट्रेड ऐंड सर्विसिस (गैट्स) अंडर डब्ल्यू.टी.ओ.' विषयक शोध परियोजना चल रही है।

12. संस्कृत अध्ययन केंद्र

संस्कृत अध्ययन केंद्र की स्थापना वर्ष 2001 में हुई थी। वर्तमान में केंद्र में 6 शिक्षक हैं। केंद्र ने जुलाई 2002 में सीधे पी–एच.डी. पाठ्यक्रम की शुरुआत की और जुलाई 2003 से एम.ए. पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाए :

- पारम्परिक विद्वानों और विश्वविधालय की मुख्यधारा के विद्वानों के बीच अंतःक्रियात्मक परियोजनाओं के माध्यम से संवाद स्थापित करना और उन्हें एक दूसरे के समीप लाना।
- दुर्लभ पारम्परिक ग्रन्थों और पाण्डुलिपियों का रखरखाव और उनका अनुरक्षण करना।
- संस्कृत परम्परा के मौलिक ग्रन्थों के आधार पर सैद्धान्तिक संरचना तैयार करना एवं प्रतिपादित करना,
- समकालीन भारतीय यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में (आधुनिक भारतीय भाषा एवं साहित्य) तथा समकालीन यूरोपीय भाषा साहित्य के सन्दर्भ में संस्कृत के शास्त्रीय सिद्धान्तों का विस्तार एवं मूल्यांकन।
- भाषा का दर्शनशास्त्र, छंदशास्त्र, समाजशास्त्रीय विचारधारा, राजनीति, लिंग तथा जातीय अध्ययन और संस्कृति सहित भाषाविज्ञान, साहित्य और सांस्कृतिक सिद्धांत, दर्शनशास्त्र आदि की भारतीय और पाश्चात्य विचारधाराओं की परंपरा में तुलनात्मक शोध कार्य।

सहयोगात्मक प्रबन्ध

- केंद्र ने एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए जेएनयू के अन्य संकाय सदस्यों का सहयोग प्राप्त किया।
- केंद्र ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को 'नव्य न्याय लैंग्वेज ऐंड मैथडालाजी' विषयक 12 दिवसीय कार्यशाला आयोजित करने में सहयोग किया।

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नये कोर्सों तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरुआत

- एम.ए./एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों के नये कोर्स तैयार किए गए।

प्रकाशन

पुस्तकें

1. शशिप्रभा कुमार, 'भारतीय दार्शनिक चिंतन : जनमानस पर इसका प्रभाव' (मोनोग्राफ), के.के. बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली, 2002
2. रजनीश कुमार मिश्र, शैव फिलासफी ऐंड लिट्रेरी थीअरि
3. रामनाथ झा, व्याकरणसौरभम (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित कक्षा 11 और 12 के लिए संस्कृत व्याकरण की पाठ्य पुस्तकों की पाण्डुलिपि समीक्षा संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य और सम्पादक, दिल्ली, नवम्बर 2002
4. संतोष कुमार शुक्ल, बाल संस्कृतम–1, द संस्कृत सोसायटी आफ इण्डिया, दिल्ली, 2003
5. संतोष कुमार शुक्ल, बाल, बाल संस्कृतम 2, द संस्कृत सोसायटी आफ इण्डिया, दिल्ली, 2003

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

1. शशि प्रभा कुमार, "वैदिक व्यू आफ सेल्फ इन द कनसेप्चुअल वाल्यूम – 'सेल्फ सोसायटी ऐंड साइंस' : थिअरिटीकल ऐंड हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स" हिस्ट्री आफ इंडियन साइंस, फिलास्फी ऐंड कल्चर की परियोजना, नई दिल्ली
2. शशिप्रभा, "द आर्य समाज मूवमेंट", सिस्टम्स आफ रिलिजन इन इण्डिया, सेंटर फार स्टडीज इन सिविलाइजेशन, नई दिल्ली

3. रजनीश कुमार मिश्र, "धम्मपद ऐंड वेल्यू एज्यूकेशन"

4. रजनीश कुमार मिश्र, 'रामचरितमानस ऐंड द वेल्यू एज्यूकेशन'

5. गिरीश नाथ झा, "व्यावहारिक हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोश" में सुधार कार्य चल रहा है, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रकाशित

6. गिरीश नाथ झा, 'भारतीय भाषा कोष' के संस्कृत भाग पर कार्य चल रहा है, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किया जाना है।

7. रामनाथ झा, श्रीमद्‌भागवत गीता में नैतिक कर्तव्य एवं भावनात्मक संघर्ष (मोरल ड्यूटी ऐंड इनर कनफ्लिक्ट इन श्रीमदभगवत गीता), प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार के सम्मान में प्रकाशित अभिनन्दन भाग – शीर्षक फेसिट्स आफ इण्डियन हेरिटेज, न्यू भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2003

8. हरिराम मिश्र, पाणिनी'स ग्रामर

9. हरिराम मिश्र, "संस्कृत लैंग्वेज" – ट्रेडिशनल ग्रामेरियन ऐंड माडर्न फिलोलोजिस्ट्स

10. हरिराम मिश्र, हिस्ट्री आफ साइंस, फिलास्फी ऐंड कल्चर – शीर्षक – ए गोल्डन चैन आफ सिविलाइजेशन, इण्डिक, इरानिक, सिमिटिक ऐंड हेलेनिक सिविलाइजेशंस अपटु ए.डी. 600

आलेख

1. शशिप्रभा कुमार, पुस्तक की समीक्षा – फेसिट्स आफ इण्डियन फिलास्फीकल थाट, संधान, जर्नल आफ द सेंटर फार स्टडीज इन सिविलाइजेशन, नई दिल्ली, भाग–2, अंक–2.

2. रजनीश कुमार मिश्र, "प्रतिभा ऐज क्रिएटिव ऐंड रिसेप्टिव प्रिंसिपल", इण्डियन संस्कृत पोइटिक्स पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही, "रिसेंट ट्रेंडस ऐंड फ्यूचर डायरेक्शंस" अंग्रेजी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

3. संतोष कुमार शुक्ल, "नेसेदियासुक्त वरनितानाम कामः, मानसरिताः रिजोधाह शब्दनाम इवेचमा शोधप्रभा", लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

4. हरिराम मिश्र, सभ्यता अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "हिंदी भाषा की बौद्धिक परम्परा" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही में 'हिंदी भाषा में वक्रोक्ति सिद्धान्त' पर आलेख प्रकाशित हुआ।

5. हरिराम मिश्र, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित 'थाट ऐंड वर्क आफ प्रोफेसर जी.सी. पाण्डे' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही में 'आर्यों की खोज : भाषाशास्त्रीय एवम् पुरातत्विक' शीर्षक आलेख प्रकाशित हुआ।

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. शशिप्रभा कुमार, 'थीअरिज आफ मैटर ऐंड मोशन इन एंशिएंट इण्डिया' फार द वाल्यूम ए गोल्डन चेन आफ सिविलाइजेशन : इण्डिक, इरानिक, सिमिटिक ऐंड हेलेनिक अपटू ए.डी. 600, सम्पादक – जी.सी. पाण्डे, सभ्यता अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली।

2. शशिप्रभा कुमार, 'वुमन इन वैदिक पीरियड' फार द वाल्यूम 'आइडेन्टिटी ऐंड स्टेटस आफ इण्डियन वूमन एशिएंट पीरियड' फार द प्रोजेक्ट आफ हिस्ट्री आफ इण्डियन साइंस, फिलास्फी ऐंड कल्चर, नई दिल्ली।

3. शशिप्रभा कुमार, 'योग ऐंड वैशेसिका, फार द वाल्यूम 'योग ऐंड अदर सिस्टम्स' सी.ओ.एन.एस.ए.वी.वी.वाई. परियोजना के अन्तर्गत सी.एस.सी., नई दिल्ली।

4. गिरीश नाथ झा, 'डाटाबेस ऐंड डायलेक्ट मैपिंग आफ हिन्दी' महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित परियोजना।

5. हरिराम मिश्र, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, के लिए भारतीय सभ्यता से सम्बन्धित महत्वपूर्ण स्रोत सामग्री के विश्लेषणात्मक संस्करण, अनुवाद, टीका तैयार करने के लिए एक परियोजना के अन्तर्गत सिद्धान्त कौमुदी (16वीं शताब्दी) का अनुवाद किया।

6. रामनाथ झा, 1 जुलाई, 2003 से आरम्भ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित 'टु प्रीपेयर ए रीडर इन इण्डियन फिलास्फी' विषयक एक 3–वर्षीय शोध परियोजना

चल रही शोध परियोजनाएं (अप्रायोजित)

1. शशिप्रभा कुमार, फाउंडेशंस आफ इण्डियन फिलास्फीकल थाट
2. शशिप्रभा कुमार, वैशेसिक मेटाफिजिक्स ऐंड एपिस्टेमोलाजी
3. रजनीश कुमार मिश्र, इण्डियन इस्थेटिक्स : द क्लासिक रीडिंग्स
4. गिरीश नाथ झा, आन लाइन मल्टीलिंग्युअल अमरकोश
5. रामनाथ झा, शोध परियोजना शीर्षक फिलास्फिकल ऐंड टेक्नीकल टर्म्स आफ आदि शंकराचार्य
6. संतोष कुमार शुक्ल – मीमांसा लेक्सिकन
7. संतोष कुमार शुक्ल – पद ऐंड वर्ड इंडेक्स ऑफ श्लोकवर्तिकम
8. हरिराम मिश्र, ए स्टडी आफ पणिणीयन सिस्टम आफ ग्रामर ऐंड इट्स रिलिवंस इन मार्डन टाइम्स

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (विदेशों में)

1. गिरीश नाथ झा ने मई–जुलाई 2002 में अर्बना–कैंमपेन, इलिनायस, यू.एस.ए. में आयोजित "ह्यूमन काइनोटिक्स" पब्लिसर्स की ए.एल.ई.डी. शैक्षिक परियोजना के लिए साफ्टवेयर डिवलपमेंट विशेषज्ञ के रूप में योगदान किया।

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. शशिप्रभा कुमार ने 23 से 27 अक्टूबर, 2002 तक उदयपुर में आयोजित इण्डियन फिलास्फीकल कांग्रेस के 'हिस्ट्री आफ फिलास्फी' शीर्षक सत्र की अध्यक्षता की।
2. शशिप्रभा कुमार ने अक्टूबर के दौरान आई.सी.पी.आर. द्वारा प्रायोजित "योग" विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "योग ऐंड वैशेसिक' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।
3. शशिप्रभा कुमार ने 1 नवम्बर 2002 को 'फाउंडेशन डे' के अवसर पर निश्रेयसा के तत्वावधान में जेएनयू कुलाधिपति डा. कर्ण सिंह का 'वेदान्त ऐंड इट्स यूनिवर्सल मैसेज' विषयक व्याख्यान आयोजित किया।
4. शशिप्रभा कुमार ने वाराणसी में 18 से 22 दिसम्बर 2002 के दौरान आयोजित टी.आर.वी. मूर्ति स्मारक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "वैदिक फिलास्फी : फ्राम रिच्युअल टु स्प्रिच्युअल" विषयक व्याख्यान दिया।
5. शशिप्रभा कुमार ने 3 से 5 मार्च 2003 तक आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित 'द थॉट ऐंड वर्क्स आफ प्रो. सी.सी. पाण्डेय' विषयक आई.सी.पी.आर. द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा 'वैदिक संस्कृति : एक अनुशीलन' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।
6. शशिप्रभा कुमार ने 29 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक आई.आई.सी., नई दिल्ली में आयोजित "इण्डियन फिलास्फी, साइंस ऐंड कल्चर" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की आयोजन समिति के सदस्य के रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया।
7. रजनीश कुमार मिश्र ने 6 से 31 अगस्त 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित "डिवलपमेंट आफ टेक्स्टबुक आन हिस्ट्री आफ साइंटिफिक राइटिंग्स इन संस्कृत" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।
8. रजनीश कुमार मिश्र ने 15 से 16 सितम्बर 2002 तक केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा और महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आगरा में आयोजित 'उर्दू का देवनागरीकरण' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।
9. रजनीश कुमार मिश्र ने 21 से 23 मार्च 2003 तक अंग्रेजी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, द्वारा आयोजित "इण्डियन संस्कृत पोइटिक्स : रिसेंट ट्रेंड्स ऐंड फ्यूचर डायरेक्शंस" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और 'प्रतिभा ऐज क्रिएटिव ऐंड रिसेप्टिव प्रिंसिपल' शीर्षक शोध आलेख प्रस्तुत किया।
10. रजनीश कुमार मिश्र ने 29 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक आई.सी.पी.आर. द्वारा इण्डिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित 'हिस्ट्री आफ फिलास्फी साइंस ऐंड कल्चर' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
11. गिरीश नाथ झा ने 19 जनवरी 2003 को आई.आई.टी., हैदराबाद और दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा दिल्ली में आयोजित 'एनोटेटिड कोरपोरा फार इण्डियन लेंग्वेजिस' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।
12. गिरीश नाथ झा ने 13 से 16 जनवरी 2003 तक सी.आई.आई.एल., मैसूर में (सी.आई.आई.एल. मैसूर द्वारा प्रायोजित) आयोजित 'ग्लोबल वर्डनेट' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

13. गिरीश नाथ झा ने 15 से 25 दिसम्बर, 2002 तक एम.जी.ए.एच.यू., नई दिल्ली में हिंदी संग्रह परियोजना में परयोजना सहायकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'इंट्रोडक्टरी कंप्यूटर एप्लिकेशंस ऐंड कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स' शीर्षक व्याख्यान दिया।

14. गिरीश नाथ झा ने 12 दिसम्बर, 2002 को आई.आई.सी., नई दिल्ली में एम.जी.ए.एच.यू., नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'हिंदी संग्रह (डाटाबेस ऐंड डायलेक्ट मैपिंग आफ हिंदी)' विषयक कार्यशाला में 'हिंदी संग्रह – द टेक्नोलॉजी आफ इट' विषयक व्याख्यान दिया।

15. गिरीश नाथ झा ने 1 से 12 अक्टूबर, 2002 तक जेएनयू में आयोजित 'नव्य–न्याय लैंग्वेज ऐंड मेथडोलॉजी' विषयक 12 दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

16. गिरीश नाथ झा ने 25 जुलाई को इलेक्ट्रोनिक्स निकेतन, दिल्ली में आयोजित 'द यूनिकोड स्टेंडर्ड फार इंडियन लैंग्वेजिज' विषयक बैठक में भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

17. रामनाथ झा ने 29 अप्रैल 2002 से 3 मई 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्राचीन शिक्षा प्रणाली में प्रयोग में आने वाली शैक्षिक शब्दावली का शब्दकोश तैयार करने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

18. रामनाथ झा ने 24 से 28 मई, 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा XI और XII के लिए शिक्षण सामग्री (संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास) तैयार करने हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

19. रामनाथ झा ने 26 से 31 अगस्त, 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा–XI और XII हेतु शिक्षण सामग्री (संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास) तैयार करने हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

20. रामनाथ झा ने 16 से 18 सितम्बर, 2002 तक राष्ट्रीय ओपन स्कूल, नई दिल्ली द्वारा माध्यमिक स्तर के पाठ लेखन हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

21. रामनाथ झा ने 19 से 23 सितम्बर, 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा XI और XII हेतु शिक्षण सामग्री (संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास) तैयार करने हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

22. रामनाथ झा ने 11–12 नवम्बर, 2002 को राष्ट्रीय ओपन स्कूल, नई दिल्ली द्वारा माध्यमिक स्तर पाठ लेखन हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

23. रामनाथ झा ने 18 नवम्बर से 23 दिसम्बर, 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा X कक्षा के लिए संस्कृत विषय में शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

24. रामनाथ झा ने 25 नवम्बर और 27 से 30 नवम्बर, 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा VII हेतु संस्कृत में शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

25. रामनाथ झा ने राष्ट्रीय ओपन स्कूल, नई दिल्ली द्वारा संस्कृत में पाठ पुनरीक्षा हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

26. रामनाथ झा ने 23 से 25 दिसम्बर, 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा IX और X हेतु संस्कृत व्याकरण की पाण्डुलिपि की पुनरीक्षा करने और उसे अंतिम रूप देने हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

27. रामनाथ झा ने 26 दिसम्बर 2002 से 3 जनवरी, 2003 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन के इतिहास की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

28. रामनाथ झा ने 6 से 13 जनवरी, 2003 तक एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली द्वारा संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

29. रामनाथ झा ने 15 से 17 जनवरी, 2003 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

30. रामनाथ झा ने 20 से 22 जनवरी, 2003 तक राष्ट्रीय ओपन स्कूल, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'रिव्यू ओ.डी.ई.एस. (आन डिमाण्ड एक्जामीनेशन सिस्टम) क्वेश्चन आइटम्स एनालिसिस इन संस्कृत' विषायक कार्यशाला में भाग लिया।

31. रामनाथ झा ने 29 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक इंडिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित 'फिलॉस्फी, साइंस ऐंड कल्चर' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

32. संतोष कुमार शुक्ल ने 1 से 12 अक्टूबर 2002 तक सी.एस.एस./जेएनयू में आयोजित 'नव्य न्याय लैंगवेज ऐंड मेथडोलाजी' विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

33. संतोष कुमार शुक्ल ने 27–28 दिसम्बर, 2002 तक वेव्स, दिल्ली में आयोजित 'वेदिक इंटलेक्चुअल ट्रेडिशन माडर्न कांटेक्स्ट' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया।

34. संतोष कुमार शुक्ल ने 29 से 31 मार्च, 2003 तक आई.सी.पी.आर., दिल्ली में आयोजित 'इंडिया फिलॉस्फी साइंस ऐंड कल्चर' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

35. हरि राम मिश्र ने 26 से 31 अगस्त 2003 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास विषयक पुस्तक तैयार करने हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

36. हरि राम मिश्र ने 23 से 25 दिसम्बर 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा कक्षा IX और X हेतु संस्कृत व्याकरण की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

37. हरि राम मिश्र ने 8 से 10 नवम्बर 2002 तक सभ्यता अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "हिंदी भाषा की बौद्धिक परंपरा" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा आलेख प्रस्तुत किया।

38. हरि राम मिश्र ने 12 नवम्बर, 2002 को वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वैदिक बैठक में भाग लिया।

39. हरि राम मिश्र ने 3 से 5 मार्च, 2003 तक आई.सी.पी.आर., नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'द थोट्स ऐंड वर्क्स आफ प्रो. जी.सी. पाण्डेय' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

40. हरि राम मिश्र ने 29 मार्च से 1 अप्रैल 2003 तक आई.सी.पी.आर., नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'हिस्ट्री आफ फिलास्फी, साइंस ऐंड कल्चर' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (विश्वविद्यालय से बाहर)

1. शशिप्रभा कुमार ने 14 फरवरी, 2003 को शैक्षणिक केन्द्र, बटलर पैलेस, लखनऊ में आयोजित 'वेदान्त–सूत्र–भाष्य' विषयक आई.सी.पी.आर. प्रायोजित कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में दो व्याख्यान दिए।

2. गिरीश नाथ झा ने फरवरी, 2003 में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में सी.आई.आई.एल. मैसूर द्वारा आयोजित 'इंडियन ग्रामेटिकल ट्रेडिशन' विषयक कोर्स के दौरान 'इंडियन ग्रामेटिकल ट्रेडिशन ऐंड कंप्यूटेशनल लिंग्वेस्टिक्स' विषयक पांच व्याख्यान दिए।

3. संतोष कुमार शुक्ल ने 1 मार्च, 2003 को सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी में 'धर्मशास्त्र की परम्परा' विषयक दो व्याख्यान दिए।

4. संतोष कुमार शुक्ल ने 14 से 16 मार्च, 2003 तक सेठ एम.आर. जयपुरिया स्कूल, लखनऊ में 'संस्कृत लैंगवेज टीचिंग मैथडोलॉजी' विषयक 6 व्याख्यान दिए।

केन्द्र में आए अतिथि

1. डा. करण सिंह, कुलाधिपति, जेएनयू
2. प्रो. जी.के. चड्ढा, कुलपति, जेएनयू
3. प्रो. बलवीर अरोड़ा, कुलदेशिक–I, जेएनयू
4. प्रो. आर.के. सक्सेना, कुलदेशिक–II, जेएनयू
5. प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
6. प्रो. एन. वीझिनाथन, मद्रास विश्वविद्यालय
7. प्रो. अशोक अकलुजकार, कनाडा
8. प्रो. के.के. चतुर्वेदी, उज्जैन
9. प्रो. टी.एस. रूकमणी, कनाडा
10. प्रो. लक्ष्मी थाटेचर, मैसूर
11. प्रो. सेसागिरी राव, मैसूर
12. प्रो. युगल किशोर मिश्र, एस.एस.वी.वी., वाराणसी
13. प्रो. श्रीनारायण मिश्र, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
14. प्रो. जॉर्ज एंका, रोमानिया विश्वविद्यालय

केन्द्र द्वारा आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / व्याख्यान

1. केन्द्र ने 26 से 31 अगस्त 2002 तक केन्द्र में एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से कक्षा XI और XII हेतु 'संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक लेखन का इतिहास' विषय पर शिक्षण सामग्री तैयार करने हेतु कार्यशाला आयोजित की।
2. केन्द्र ने 20 फरवरी 2003 को 'संस्कृत पोइटिक्स' विषय पर प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी के विशेष व्याख्यान का आयोजन किया।
3. केन्द्र ने 27.2.2003 को 'अद्वैत वेदान्त' विषय पर प्रो. एन. वीझीनाथन के विशेष व्याख्यान का आयोजन किया।
4. केन्द्र ने 28 मार्च, 2003 को 'इंडोलॉजीकल स्टडीज इन रोमानिया' विषय पर प्रो. जार्ज एंका के विशेष व्याख्यान का आयोजन किया।

मण्डलों / समितियों की सदस्यता

1. शशिप्रभा कुमार, सदस्य, विद्या परिषद, जेएनयू, सदस्य, जेएनयू कोर्ट; सदस्य, विषय विशेषज्ञ, आर.डी.सी., जी.के.यू., हरिद्वार; संस्थापक और प्रबन्ध न्यासी, निहश्रेयासा, भारतीय दर्शन और संस्कृति के उत्थान हेतु समर्पित एक निजी न्यास।
2. रजनीश कुमार मिश्र, सदस्य, जेएनयू द्वारा संस्कृत अध्ययन विशेष केन्द्र हेतु गठित विशेष समिति; सदस्य, विद्या परिषद, जेएनयू; सदस्य, जेएनयू कोर्ट।
3. रामनाथ झा, जेएनयू द्वारा संस्कृत अध्ययन विशेष केन्द्र हेतु गठित विशेष समिति में विशेष आमंत्रित सदस्य
4. संतोष कुमार शुक्ल, सदस्य, जेएनयू द्वारा संस्कृत अध्ययन विशेष केन्द्र हेतु गठित विशेष समिति; संस्थापक, द संस्कृत सोसाइटी आफ इंडिया, नई दिल्ली।
5. हरि राम मिश्र, सदस्य, जेएनयू द्वारा संस्कृत अध्ययन विशेष केन्द्र हेतु गठित विशेष समिति।

छात्रों की उपलब्धियां

1. केन्द्र के पी–एच.डी. छात्र श्री सुधीर कुमार मिश्र को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की छात्रवृति प्राप्त हुई।

कोई अन्य सूचना

1. शशिप्रभा कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के पी–एच.डी. छात्र श्री जयप्रकाश तिवारी की सह–मार्गदर्शक।
2. शशिप्रभा कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग की पी–एच.डी. छात्र श्री फराह मोहम्मद की सह–मार्गदर्शक।
3. शशिप्रभा कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पी–एच.डी. छात्रा कु. राज किरेश की सह–मार्गदर्शक।
4. शशिप्रभा कुमार, आई.सी.एस.एस.आर. के पोस्ट डाक्टरल फेलो श्री कमल किशोर मिश्र की सह–मार्गदर्शक।
5. रजनीश कुमार मिश्र, श्री अमिताभ त्रेहन, गणित विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत 'ए फोनेटिक बेस्ड इनकोडिंग फार इंडिक स्क्रिप्ट्स ? विषयक एम.टेक. शोध प्रबन्ध (कंप्यूटर में) के परीक्षक।
6. रजनीश कुमार मिश्र, भाषा साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के इस्पानी अध्ययन केन्द्र के पी–एच.डी. छात्र श्री वसंत कुमार सिंह के सह–मार्गदर्शक।
7. गिरीश नाथ झा, भा.सा. और सं.अ.सं. के भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र के पी–एच.डी. छात्र एनुरा असामिदीनोवा के 'मशीन ट्रांसलेशन रिसर्च' विषयक शोध कार्य के लिए सह–मार्गदर्शक।
8. गिरीश नाथ झा, आई.आई.टी. दिल्ली की पी–एच.डी. शोध छात्रा दीपा गुप्ता की 'मशीन ट्रांसलेशन' विषयक शोध कार्य में सहायता कर रहे हैं।
9. गिरीश नाथ झा, संस्कृत अध्ययन केन्द्र के पी–एच.डी. छात्र सुधीर मिश्रा की 'संस्कृत कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स' विषयक पी–एच.डी. शोध सार के लिए शोध निर्देशक।
10. गिरीश नाथ झा, संस्कृत अध्ययन केन्द्र के पी–एच.डी. छात्र चन्द्रशेखर की 'संस्कृत कंप्यूटेशनल लिंग्स्टिक' विषयक पी–एच.डी. शोध सार के लिए शोध निर्देशक।
11. गिरीश नाथ झा को आई.आई.टी., हैदराबाद में अपना शोध कार्य प्रस्तुत करने और साथ–साथ शोध कार्य करने की संभावना का पता लगाने के लिए आमंत्रित किया।
12. संतोष कुमार शुक्ल, सहायक संपादक, 'समकालीन अभिव्यक्ति' दिल्ली।
13. हरि राम मिश्र ने 12 नवम्बर, 2002 को वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा अयोजित राष्ट्रीय वैदिक बैठक में 'वेदोखिलोधर्मामुलम' विषयक विशेष व्याख्यान दिया।

13. आणविक चिकित्साशास्त्र केन्द्र

विश्वविद्यालय अनुदान ने अपनी 9वीं योजना की सिफारिशों में आणविक चिकित्साशास्त्र का एक विशेष केंद्र स्थापित करने के लिए अपनी सहमति प्रकट की है। इस केंद्र का उद्देश्य मानव रोग के अध्ययन में सीधे अनुप्रयोग के साथ आणविक और कोशिकीय जीवविज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य को प्रोत्साहन देना है। इस केंद्र की स्थापना एक नई संकल्पना पर आधारित है। अपने देश में इस तरह का प्रयास पहले कभी नहीं हुआ।

आणविक और कोशिकीय जीवविज्ञान के क्षेत्र में हो रही वर्तमान प्रगति आयुर्विज्ञान अनुसंधान और प्रैक्टिस के लिए काफी सार्थक है। अभी तक इनका सफल उपयोग अनुवांशिक रोगों के कारणों की पहचान करने और उन पर काबू पाने के लिए किया गया है। हालांकि, यह स्पष्ट है कि रिकम्बीनेंट डी.एन.ए. टेक्नोलॉजी का अनुप्रयोग आयुर्विज्ञान चिकित्सा के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में हो सकेगा। इससे कैंसर सम्बन्धी शोध में क्रान्ति आ गई है और एक ऐसा जैव–प्रौद्योगिकी उद्योग विकसित किया है जोकि पहले से ही विभिन्न क्षेत्रों के नैदानिक और चिकित्सीय एजेंट के रूप में कार्य कर रहा है। भावी समय में यह उद्योग हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मुख्य मानसिक रोगों, गठिया जैसे असाध्य रोगों की आधुनिक चिकित्सा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। यह विकास, वयोवृद्धि और उत्पत्ति सहित मानव जीव विज्ञान के विस्तृत पहलुओं पर गहन अध्ययन में भी हमारा सहयोग करेगा।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पिछले कुछ दशकों से जैव–प्रौद्योगिकी और सम्बद्ध क्षेत्रों जैसे मूलविज्ञानों के शोध और प्रशिक्षण के लिए एक अग्रणी केंद्र के रूप में उभरा है। विश्वविद्यालय में कई शोध ग्रुप हैं जिन्होंने जैव–सूचनाविज्ञान और कंप्यूटर विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान और भौतिक विज्ञान जैसे अन्तरविषयक क्षेत्रों के साथ अणु कोशिका जीवविज्ञान के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। आधुनिक चिकित्सा को इन सभी क्षेत्रों के अन्तर–विषयक अनुप्रयोग से काफी लाभ पहुंचा है और अधिकतर वर्तमान प्रगति का श्रेय सीधे तौर पर परम्परागत गैर चिकित्सीय क्षेत्रों से प्राप्त जानकारी को जाता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, आणविक चिकित्सा के क्षेत्र में नये शोध कार्यक्रम और शिक्षण का लक्ष्य लेकर एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करने और उसे कार्यान्वित करने में नेतृत्वपरक भूमिका निभाना चाहता है। आधारभूत खोजों को नैदानिक नव परिवर्तनों में रूपान्तरित करने की दृष्टि से प्रयोगशाला, क्षेत्र और नैदानिक कार्य क्षेत्र के बीच सूचना के बहु आयामी प्रवाह के क्षेत्र पर विशेष बल दिया जाएगा। हमारा विश्वास है कि इससे हमारे समाज में रोगों के प्रभाव में परिवर्तन होगा।

थ्रस्ट एरिया और संदर्श योजनाएं

केंद्र किसी विशेष क्षेत्र पर बल नहीं देता, अपितु निम्नलिखित क्षेत्रों में उच्चस्तरीय विज्ञान के प्रोत्साहन पर ध्यान देगा : संक्रामक रोग, एड्स और गौण संक्रमण, उपापचयी विकार, आणविक अंतःस्राविकी, निदानशास्त्र, हृदयवाहिका रोग, पुनः प्राप्त स्वास्थ्य

सहयोगात्मक प्रबन्ध

आल इंडिया इंस्टिच्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, जी.वी. पंत, सफदरजंग अस्पताल, इंस्टीटयूट आफ पैथोलाजी के साथ

वर्तमान कोर्सों में संशोधन और नये कोर्सों तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

एम.फिल./पी–एच.डी. पाठ्यक्रम

प्रकाशन

आलेख

1. सी.के. मुखोपाध्याय, वी. सेसाद्री और पी.एल. फोक्स, "ड्युअल रोल आफ इंसुलिन इन ट्रांस्क्रिप्शनल रेग्युलेशन आफ द ऐक्यूट फेज रिऐक्टेन्ट सेरूलोपलाजियन" बायोलाजिकल केमिस्ट्री की पत्रिका, 2002
2. एस.के. धर, एन. मण्डल, आर.के. सोनी और जी.ए. मुखोपाध्याय, "35 केडीए पालिपेप्टाइड फ्राम बैकुलोवाइरस इनफेक्टिड इनसेक्ट सेल्स बाइन्ड टू यीस्ट ए सी एस लाइक ऐलिमेन्ट्स इन द प्रिजेन्स आफ ए टी पी बी एम सी" बायोकेमिस्ट्री, 2002

3. एस.के. धर, आर.के. सोनी, बी.के. दास और जी. मुखोपाध्याय, "मोलिकुलर मकेनिज्म आफ ऐक्शन आफ मेजर हेलिकोबैक्टर पाइलोरी विरूलेन्स फैक्टर्स", मोलिकुलर ऐंड सेलुलर बायोकेमिस्ट्री

4. एस.के. धर, जे.ए. होलस्लेगल और ए. दत्ता, "आरिजिन रिकोग्निशन कम्पलेक्स ऐंड द इनिसिएशन आफ डी.एन.ए. रिप्लिकेशन", केम्टरैक्ट्स : बायोकेमिस्ट्री ऐंड मालिकुलर बायोलाजी, 2002

5. कस्तूरी दत्ता, अर्चना भारद्वाज, इलोरा घोष, अनुरूद्ध सेनगुप्ता, ट्रेवर जी. कूपर, जी.एफ. वेनबौर, मार्टिन एच. ब्रिन्कवर्थ और इबरहार्ड निस्लाग, "स्टेज स्पेस्फिक इक्सप्रेशन आफ प्रोप्रोटीन फार्म आफ हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन–1 (एच ए बी पी–1) ड्युरिंग स्परमेटोजेनसिस" इन रैट, मोल रिपरोड डेप 2002

6. कस्तूरी दत्ता, बी.के. झा, और डी.एम. सालुंकी, "स्ट्रक्चरल फ्लेक्सिबिलिटी आफ मल्टिफंक्शनल एच.ए.बी. 1 में बी इम्पोर्टेन्ट फार इट्स बाइंडिंग टु डिफ्रेन्ट लिजेन्ड", जे. बायोल. केम. इ.यू.पी.बी., मेसर्स न. एम2 : 06696, 2003.

8. कस्तूरी दत्ता, जे. मीनाक्षी, अनुपमा और एस.के. गोस्वामी, "कांस्टिट्युटिव इक्सप्रेशन आफ हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन 1 (एच ए बी पी–1/पी32/जीसी 1 क्यूआर) इन नार्मल फाइबरोब्लास्ट सेल्स पर्टर्ब्स इट्स ग्रोथ करेक्टेरिटिलस ऐंड इंडयूसिस अपोपटोसिस", बायोकेम. बायो फिज रेस. कम्यून 300(3), 2003

9. कस्तूरी दत्ता और आई. घोष, "स्परम सर्फेस हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन (एच ए बी पी–11) इंटरएक्ट्स विद जोना पिलुसिडा आफ वाटर बुफेलो (बुबालस बुबालिस) थ्रू इट्स क्लस्टर्ड मैनोज रेजिड्यूस" मोल रेप डेव 64(2), 2003

10. आर.के. त्यागी, "डायनेमिक्स आफ सबसेलुलर कम्पार्टमेंटलाइजेशन आफ स्टेरोइड रिसेप्टर्स इन लिविंग सेल्स ऐज ए स्ट्रेटजिक स्क्रीनिंग मेथड टु डिटरमाइन द बायोलाजिकल इम्पैक्ट आफ सस्पेक्टिड इन्डोक्रिम डिसरप्टर्स", मेडिकल हाइपोथेसिस, 2003

शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. आर.के. त्यागी, इनवेस्टिगेशन इनटु एन्ड्रोजन–इनडिपेडेंट एक्टिवेशन आफ एंड्रोजन रिसेप्टर इन प्रोस्टेट कैंसर मुख्य अनुदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित।

2. सी.के. मुखोपाध्याय, "ए स्टडी आन द मोलिकुलर मकेनज्म आफ इंसुलिन–इंडयूस्ड एक्टिवेशन आफ हाइपोक्सिया – इंडयुसिबल फैक्टर–1, द मास्टर रेग्युलेटर आफ आक्सिजन होम्योस्टेसिस, मुख्य अन्वेशक, जैव–प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित।

3. सी.के. मुखोपाध्याय, "स्टडीज आन द फंक्शनल आस्पेक्ट आफ ह्यूमन हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन (एच ए बी पी 1) बाइ मैनिपुलेटिंग इट्स इक्सप्रेशन इन सेल–लाइन्स ऐंड माइस", जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित।

चल रही शोध परियोजनाएं (प्रायोजित)

1. प्रो. आशिष दत्ता, प्रो. आर. प्रसाद और प्रो. ए. भट्टाचार्य, आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र के सह संकाय सदस्य, न्युक्लियर प्रोग्राम टु डिवलप इनफेक्सस डिसीज कम्पोनेंट आफ मोलिकुलर मेडिसिन, जेएनयू जैव–प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित।

2. प्रो. आर. प्रसाद, जीवन विज्ञान संस्थान – आणविक चिकित्सशास्त्र विशेष केन्द्र, डा. जी. मुखोपाध्याय, आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र और डा. उमा बनर्जी, एम्स, नई दिल्ली, मोलिकुलर बायोटाइपिंग इपिडेमिओलाजी ऐंड फंगल सस्पेक्टिबिलिटीज आफ अपरच्युनिस्टिक ह्युमन पैथोजेनिक फंगी, आई.सी.एम.आर., नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित।

3. डा. एस.के. धर, आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र, फंक्शनल करेक्ट्राइजेशन आफ रिप्लिकेशन प्रोटीन्स ऐंड रिप्लिकेशन ओरिजिन (ओरिक) आफ हेलीकोबेक्टर पाइलोरी : पोटेन्शल टार्गेट्स फार थेरपी, यूनिवर्सिटी पोटेन्शल फार एक्सिलेन्स स्कीम, जेएनयू द्वारा प्रायोजित।

4. डा. एस.के. धर, "फंक्शनल करेक्ट्राइजेशन आफ रिप्लिकेशन ओरिजिन (आरिक) ऐंड रिप्लिकेशन प्रोटीन्स आफ हेलीकोबैक्टर पाइलोरी", वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित

शिक्षकों की सम्मेलनों में प्रतिभागिता (भारत में)

1. राकेश के. त्यागी ने 22 से 23 अक्टूबर, 2002 तक आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र, जेएनयू में आयोजित "ट्रांस्क्रिप्शनल असेम्बली", विषयक 6ठी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इनहिबिशन आफ ट्रांस्क्रिप्शनल एक्टिविटी आफ एन्ड्रोजन रिसेप्टर बाई इण्डोक्रिन डिसरप्टर्स" विषयक व्याख्यान दिया।

2. सी.के. मुखोपाध्याय ने 22 से 23 अक्टूबर 2002 तक आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र, जेएनयू में आयोजित "ट्रांस्क्रिप्शनल असेम्बली" विषयक 6ठी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "डयुअल रेग्युलेशन आफ एक्यूट फेज रिएक्टेन्ट सेरूलोप्लाज्मिन ट्रांस्क्रिप्शन बाई इंसुलिन इन हिपेटिक सेल्स", विषयक व्याख्यान दिया।

3. राजेन्द्र प्रसाद ने 22 से 23 अक्टूबर 2002 तक आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र, जेएनयू नई दिल्ली में आयोजित "ट्रांस्क्रिप्शनल असेम्बली" विषयक 6ठी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "इमर्जिंग रेग्युलेट्री सरकिट्स आफ एम डी आर जीन्स आफ ए ह्युमन पैथोजेनिक यीस्ट : अप्स ऐंड डाउन्स आफ सीडीआर1," विषयक व्याख्यान दिया।

4. राजेन्द्र प्रसाद ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक इंस्टीट्यूट आफ माइक्रोबायल टेक्नोलाजी, चण्डीगढ में आयोजित, "लिपिड ऐज माड्यूलेटर्स आफ ड्रग रसिस्टेन्स इन यीस्ट्स", विषयक सम्मेलन में भाग लिया तथा, "यीस्ट 2003" विषयक व्याख्यान दिया।

5. राजेन्द्र प्रसाद ने मार्च 2003 में जेएनयू नई दिल्ली में आयोजित "मोलिकुलर बायोलाजी ऐंड बायोटेक्नोलाजीकल सिम्बायोसिस", विषयक इण्डो–यू.एस. कार्यशाला और राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया तथा "मोलिकुलर बेसिस आफ ऐन्टिफंगल रेसिसटेन्स", विषयक व्याख्यान दिया।

6. कस्तूरी दत्ता ने 22 से 23 अक्टूबर 2002 तक आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र, जेएनयू नई दिल्ली में आयोजित "ट्रांस्क्रिप्शनल असेम्बली" विषयक 6ठी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "ट्रांस्क्रिप्शनल एक्टिवेशन आन एच ए बी पी–1 प्रमोटर बाइ एस.पी.–1 ऐंड सी ए एम पी", विषयक व्याख्यान दिया।

7. कस्तूरी दत्ता ने इण्डियन एसोसिएशन आफ साइंस कांग्रेस बंगलौर में आयोजित "एनवायरनमेंटल स्टिम्युली ऐंड सेल – सिग्नेलिंग : ए पर्सपेक्टिव आफ द ह्युमन जीन इनकोडिंग हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन1" विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

8. कस्तूरी दत्ता ने 7 से 12 जनवरी, 2003 तक बंगलौर में आयोजित सम्मेलन में "एसाइनिंग बायोलाजिकल फंक्शन टु हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन1 (एच ए बी पी–1) ए मल्टिलिजेन्ड प्रोटीन लोकेटिड आन ह्युमन क्रोमोसोम 17", विषयक व्याख्यान दिया।

9. कस्तूरी दत्ता ने इण्डियन एसोसिएशन आफ साइंस कांग्रेस, बंगलौर में आयोजित "एनवायरनमेंटल स्टिमुली ऐंड सेल – सिग्नेलिंग : ए पर्सपेक्टिव आफ द ह्युमन जीन इनकोडिंग हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन 1", विषयक अध्यक्षीय व्याख्यान दिया।

10. एस.के. गोस्वामी ने 22 से 23 अक्टूबर 2002 तक आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित "ट्रांस्क्रिप्शनल असेम्बली" विषयक 6ठी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "द एपी–1 फैमिली ए पैराडोक्सिकल पैराडिग्म", विषयक व्याख्यान दिया।

शिक्षकों के व्याख्यान (विश्वविद्यालय से बाहर)

1. राजेन्द्र प्रसाद ने 7 सितम्बर, 2002 को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में, "ट्रेन्ड्स इन मोलिकुलर मेडिसिन", विषयक युवा विज्ञानियों की 28वीं वार्षिक बैठक और संगोष्ठी में समापन व्याख्यान दिया।

2. राजेन्द्र प्रसाद ने 4 दिसम्बर 2002 को पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में, "रिसेंट डिवेलपमेंट्स इन फगल डिसीज्स ऐसपेरजिलोसिस" संगोष्ठी में "ड्रग रसिसटेंन्स जीन्स इन सी अल्बिकेन्स" विषयक व्याख्यान दिया।

3. राजेन्द्र प्रसाद ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक इंस्टीट्यूट आफ माइक्रोबायल टेक्नोलाजी, चण्डीगढ़ में, "लिपिड ऐज माड्युलेटर्स आफ ड्रग रसिसटेंन्स इन यीस्ट" शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया तथा "यीस्ट 2003" विषयक व्याख्यान दिया।

4. राजेन्द्र प्रसाद ने 10 मार्च, 2003 को डिपार्टमेंट आफ बायोसाइंसिस, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में, "मल्टिपल ड्रग रसिसटेन्स : फ्राम माइक्रोब्स टु मैन" विषयक व्याख्यान दिया।

5. सी.के. मुखोपाध्याय ने 2003 में जी.बी. पंत अस्पताल, नई दिल्ली में "रोल आफ सेरुलोप्लाज्मिन इन आयरन होमिओस्टेसिस : इन आइरोनी आफ ए कापर प्रोटीन" विषयक व्याख्यान दिया।

6. कस्तूरी दत्ता ने इंसा पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में "हाइल्युरोनन बाइंडिंग प्रोटीन (एच ए बी पी 1) : ए टूल इन अंडरस्टैंडिंग स्पेरमेटोजेनसिस ऐंड मेल इनफर्टिलिटी", विषयक प्रो. एम.आर.एन. प्रसाद पुरस्कार व्याख्यान दिया।

केन्द्र में आये विशेष अतिथि

1. डा. नीति सिन्हा, नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट फ्रेडरिक, यू.एस.ए. 27 नवम्बर 2002 को केन्द्र में आईं और "प्रोटीन फ्लेक्जिबिलिटीज : इम्प्लिकेशंस फार फोल्डिंग बाइंडिंग ऐंड फंक्शन" विषयक व्याख्यान दिया।

2. डा. दीपांकर घोष, डिपार्टमेंट आफ इम्यूनोलाजी, द क्लिमेंट क्लिनिक फाउन्डेशन, ओहिओ, यू.एस.ए., 3 दिसम्बर 2002 को केन्द्र में आए और "द फर्स्ट लाइन आफ डिफेंस : द क्रिटिकल रोल आफ डिफेंसिन्स इन मैमेलियन इननेट इम्युनिटी", विषयक व्याख्यान दिया।

3. डा. सुमन मुखोपाध्याय, सेंटर फार बायोसिस्टम रिसर्च, यूनिवर्सिटी आफ मैरीलैण्ड ऐंड वर्जिनिया टेक यू.एस.ए. 2 जनवरी, 2003 को केन्द्र में आये और "ए फंक्शनल जिनोमिक अप्रोच टु अंडरस्टेंड बैक्टेरियल अडेप्टिव रिस्पांस" विषयक व्याख्यान दिया।

4. डा. वी.सी. हसकाल, अध्यक्ष, सैक्शन आफ मस्कुलो स्केल्टल बायोलाजी, डिपार्टमेंट आफ बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, लर्नर रिसर्च इंस्टीटयूट, क्लीवलैण्ड, यू.एस.ए., 9 जनवरी, 2003 को केन्द्र में आए और "ग्लाइकोसैमिनो–ग्लाइकेन्स फेस द फ्युचर" विषयक व्याख्यान दिया।

5. प्रो. एस.सी. लखोटिया की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की टीम केन्द्र में आई।

6. प्रो. एन.के. गांगुली, जी. पद्मनाभन, अशोक शाह, वी.पी. चेस्ट, 10 से 11 फरवरी 2003 तक, फ्रंटियर्स इन मोलिकुलर मेडिसन विषयक द्वितीय संगोष्ठी के दौरान केन्द्र में आए।

केन्द्र द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन

1. जीवन विज्ञान संस्थान और आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र, जेएनयू नई दिल्ली द्वारा आयोजित नई दिल्ली में सिक्स्थ ट्रांस्क्रिप्शनल असेम्बली, विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की।

2. केंद्र ने 10–11 फरवरी 2003 को "फ्रंटियर्स इन मोलक्यूलर मेडिसन" विषयक द्वितीय संगोष्ठी आयोजित की।

शिक्षकों को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान/अध्येतावृत्तियां

1. कस्तूरी दत्ता, फेलो, थर्ड वर्ल्ड अकादमी आफ साइंसिस, ट्रिस्टे, इटली।

2. कस्तूरी दत्ता, डा. दर्शनरंगनाथन स्मारक व्याख्यान (2003) इंसा।

मण्डलों/समितियों की सदस्यता

1. जी. मुखोपाध्याय, सदस्य, विद्या परिषद, जेएनयू, नई दिल्ली; सदस्य, विश्वविद्यालय कोर्ट, जेएनयू, नई दिल्ली

2. आर.के. त्यागी, सदस्य, विद्या परिषद, जेएनयू,सदस्य, विश्वविद्यालय कोर्ट, जेएनयू, नई दिल्ली; सदस्य, पी–एच.डी. साक्षात्कार मण्डल, राष्ट्रीय पादप और जिनोम अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

छात्रों की उपलब्धियां

1. निवेदिता गुप्ता को आई.सी.एम.आर की एस.आर.एफ. अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।
2. निवेदिता गुप्ता ने 20 से 22 फरवरी, 2003 तक चण्डीगढ़ में आयोजित यीस्ट मीटिंग 2003 में भाग लिया।
3. मनवीन कौर गुप्ता को सी.एस.आई.आर. की एस.आर.एफ. अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।
4. राजेश के. सोनी को सी.एस.आई.आर. की एस.आर.एफ. अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।
5. वन्दना कुमारी सिंह को सी.एस.आई.आर. की जे.आर.एफ. प्राप्त हुई।

अन्य कोई सूचना

छात्रों को ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण

1. श्री संजय कुमार ने "नेविगेटिंग कम्पोनेंट्स आफ द न्यूक्लियर इम्पोर्ट मशीनरी इनवाल्वड इन न्यूक्लियर ट्रांस्लोकेशन आफ स्टेराइड रिसेप्टर्स इक्जिस्ट द न्यूक्लियस वाया इक्सपोर्टिन/सी.आर.एम–1 इंडिपेंडेंट पथवे" विषयक प्रशिक्षण प्राप्त किया (आर.के. त्यागी)।

2. श्री आलोक मालवीय ने "फंक्शनल करेक्ट्राइजेशन आफ हेलिकोबेक्टर पाइलोरी रिप्लिकेशन प्रोटीन डीएनएबी" विषयक प्रशिक्षण प्राप्त किया (जी. मुखोपाध्याय)।

3. सुश्री कल्पना सिंह ने "प्रिपेरेशन आफ ए सेल लाइन स्टेबली इक्सप्रेशन ग्रीन फ्लोरेसेंट प्रोटीन टेग्ड ऐन्ड्रोजन रिसेप्टर : इट्स एप्लिकेशन इन स्क्रिनिंग आफ एगोनिस्ट्स ऐंड एन्टाएगोनिस्ट्स" विषयक प्रशिक्षण प्राप्त किया (आर.के. त्यागी)।

4. श्री अरविन्द सिंह और श्री डिक्टो जोश ने "ए स्टडी आन द मोलिकुलर मेकेनिज्म आफ इंसुलिन – इंडयूस्ड एक्टिवेशन आफ हाइपोक्सिया – इंडयूसिबल फैक्टर–1, द मास्टर रेग्युलेटर आफ आक्सीजन होमिओस्टेसिस", विषयक पोस्ट एम–एस.सी. ट्रेनिंग प्राप्त की (सी.के. मुखोपाध्याय)।

अध्याय–5
अकादमिक स्टाफ कालेज

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अकादमिक स्टाफ कालेज की स्थापना वर्ष 1989 में हुई थी। कालेज निम्नलिखित विषयों में पुनश्चर्या कोर्स का आयोजन करता है : राजनीति विज्ञान, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, अर्थशास्त्र, इतिहास, कंप्यूटर विज्ञान, समाज–शास्त्र, जीवन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, भौतिक विज्ञान और जैव–प्रौद्योगिकी; तथा सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों में अनुशीलन कोर्सों का आयोजन करता है।

अकादमिक स्टाफ कालेज का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय और कालेज–शिक्षकों को उनके सम्पूर्ण बौद्धिक विकास के अतिरिक्त विषयात्मक वाद–विवाद और भाषण की कला से परिचित कराना है। इससे उन्हें विषयात्मक बिन्दुओं तथा समसामयिक संगत सामाजिक सरोकारों पर सोचने और उनको प्रतिबिम्बित करने की क्षमता अर्जित करने की प्रेरणा भी मिलती है।

पुनश्चर्या कोर्सों का आयोजन उन शिक्षकों के लिए होता है, जिन्होंने कम से कम 2 वर्ष का शिक्षण अनुभव प्राप्त कर लिया है अथवा जो अनुशीलन कोर्स कर चुके हैं और अच्छे शिक्षण तथा शोध हेतु अपने ज्ञान को अद्यतन करना चाहते हैं।

अनुशीलन कोर्सों का आयोजन उन शिक्षकों के लिए किया जाता है, जिनके पास 6 वर्ष से कम का शिक्षण अनुभव है। इन कोर्सों का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को उन सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों वाली चुनौतियों के बारे में जानकारी देना है, जिनका आज की भारतीय उच्च शिक्षा सामना कर रही है। प्रतिभागियों को अच्छे शिक्षक बनाने हेतु उनकी समझ और दक्षता को बढ़ाया जाता है। बहुविषयात्मक दृष्टिकोण पर बल दिया जाता है तथा शिक्षण संस्थाओं और भारतीय समाज के बीच के संबंधों को बढ़ाने पर बल दिया जाता है।

सभी कोर्सों के प्रतिभागियों को कंप्यूटर और इंटरनेट के प्रयोग के बारे में जानकारी दी जाती है। कालेज में एक वेब पेज भी बनाया गया है जो – http///members.tripod.com/ascjnu - है।

प्रतिभागियों को निःशुल्क खाने और रहने की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

जेएनयू के शिक्षकों के अतिरिक्त, दिल्ली और दिल्ली से बाहर के संस्थानों और संगठनों के विशेषज्ञों को इन कार्यक्रमों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमों के अनुसार विशेषज्ञ विद्वानों को कुछ मानदेय और वाहन भत्ता दिया जाता है।

कालेज में एक सलाहकार समिति है। इसके सदस्य हैं – विश्वविद्यालय के संस्थानों के डीन, केन्द्रों के अध्यक्ष, कुलदेशिक और कुलपति तथा दो बाह्य सदस्य।

वर्ष 2002–2003 के दौरान, कालेज ने 18 (14 पुनश्चर्या और 4 अनुशीलन कोर्स) कोर्सों का आयोजन किया तथा सभी पाठ्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रतिभागी देश भर के सभी स्थानों से बुलाए गए।

कार्यक्रमों का विवरण निम्न प्रकार से है :

अनुशीलन कोर्स

1. 42वाँ अनुशीलन कोर्स (सामाजिक विज्ञान) – 8 अप्रैल से 3 मई 2002 तक
2. 43वाँ अनुशीलन कोर्स (प्राकृतिक विज्ञान) 15 जुलाई से 9 अगस्त 2002 तक
3. 44वाँ अनुशीलन कोर्स (सामाजिक विज्ञान) 14 अक्तूबर से 8 नवम्बर 2002 तक
4. 45वाँ अनुशीलन कोर्स (प्राकृतिक विज्ञान) 18 नवम्बर से 13 दिसम्बर 2002 तक

पुनश्चर्या कोर्स

1. छठा पुनश्चर्या कोर्स (जैव–प्रौद्योगिकी) – 8 अप्रैल से 3 मई, 2002 तक
2. 23वाँ पुनश्चर्या कोर्स (समाजशास्त्र) – 15 जुलाई से 9 अगस्त, 2002 तक
3. 27वां पुनश्चर्या कोर्स (अर्थशास्त्र) – 12 अगस्त से 6 सितम्बर, 2002 तक
4. 9वाँ पुनश्चर्या कोर्स (कंप्यूटर विज्ञान) – 12 अगस्त से 6 सितम्बर, 2002 तक

5. 18वाँ पुनश्चर्या कोर्स (इतिहास) – 16 सितम्बर से 11 अक्टूबर, 2002 तक
6. 5वाँ पुनश्चर्या कोर्स (अन्तर्राष्ट्रीय संबंध) – 16 सितम्बर से 11 अक्टूबर, 2002 तक
7. 27वाँ पुनश्चर्या कोर्स (राजनीति विज्ञान) – 14 अक्टूबर से 8 नवम्बर, 2002 तक
8. 24वाँ पुनश्चर्या कोर्स (समाजशास्त्र) – 18 नवम्बर से 13 दिसम्बर, 2002 तक
9. 28वाँ पुनश्चर्या कोर्स (अर्थशास्त्र) – 30 दिसम्बर 2002 से 24 जनवरी 2003 तक
10. 8वाँ पुनश्चर्या कोर्स (जीवन विज्ञान) – 30 दिसम्बर, 2002 से 24 जनवरी, 2003 तक
11. 19वाँ पुनश्चर्या कोर्स (इतिहास) – 27 जनवरी से 21 फरवरी, 2003 तक
12. चौथा पुनश्चर्या कोर्स (भौतिक विज्ञान) – 27 जनवरी से 21 फरवरी, 2003 तक
13. 28वाँ पुनश्चर्या कोर्स (राजनीति विज्ञान) – 4 मार्च से 29 मार्च, 2003 तक
14. 8वाँ पुनश्चर्या कोर्स (पर्यावरण विज्ञान) – 4 मार्च से 29 मार्च, 2003 तक

वरिष्ठ शिक्षक अकादमिक स्टाफ कालेज द्वारा आयोजित कोर्सों के कोर्स समन्वयक के रूप में कार्य करते हैं। जेएनयू के शिक्षकों के अतिरिक्त दिल्ली और दिल्ली के बाहर के संस्थानों और संगठनों के विशेषज्ञों को भी कार्यक्रमों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अध्याय–6
छात्र गतिविधियाँ

I. छात्रों की संख्या

विश्वविद्यालय में वर्ष 2002–2003 के दौरान दाखिल और 1.9.2002 को पंजीकृत छात्रों की संख्या निम्न प्रकार से थी –

शैक्षिक वर्ष 2002–2003 के दौरान दाखिल छात्रों की संख्या का (स्थान/केंद्र–वार) विवरण

क. एम.फिल./पी–एच.डी., एम.टेक./पी एच.डी., एम.सी.एच./सीधे पी–एच.डी.

संस्थान/केन्द्र	सामान्य	अ.जा.	अ.ज.जा.	शारी. रूप से विक.	कुल
अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान	79	18	14	01	112
सामाजिक विज्ञान संस्थान	139	32	21	05	197
भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान	91	09	07	01	108
जीवन विज्ञान संस्थान	20	06	---	01	27
कम्प्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान	14	02	03	01	20
पर्यावरण विज्ञान संस्थान	15		03	01	19
भौतिक विज्ञान संस्थान	09		01	---	10
जैव प्रोद्योगिकी केंद्र	04	02	–	·	06
कुल	**371**	**69**	**49**	**10**	**499**

ख. एम.ए./एम.एस सी./एम.सी.ए.

संस्थान/केन्द्र	सामान्य	अ.जा.	अ.ज.जा.	शारी. रूप से विक.	कुल
अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान	62	07	10	01	80
सामाजिक विज्ञान संस्थान	166	47	33	08	254
भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान	77	09	05	04	95
जीवन विज्ञान संस्थान	17	04	01	01	23
कम्प्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान	23	05	01	03	32
पर्यावरण विज्ञान संस्थान	11	02		·	13
भौतिक विज्ञान संस्थान	14	01	·	---	15
कुल	**370**	**75**	**50**	**17**	**512**

ग. बी.ए. (आनर्स)

संस्थान/केन्द्र	सामान्य	अ.जा.	अ.ज.जा.	शारी. रूप से विक.	कुल
भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान	168	30	13	07	218

घ. छात्रों की कुल संख्या एक नजर में

अध्ययन पाठ्यक्रम	सामान्य	अ.जा./ अ.ज.जा.	शारीरिक रूप से विकलांग	विदेशी	कुल
एम.फिल./पी–एच.डी., एम.टेक./पी–एच.डी., एम.सी.एच./सीधे पी–एच.डी.	1994	485	46	86	2611
एम.ए./एम.एस–सी./एम.सी.ए.	1029	280	42	45	1396
बी.ए.	448	83	11	22	564
जैव-सूचना-विज्ञान में स्नातकोत्तर	10	01	01	--	12
कुल	**3481**	**849**	**100**	**153**	**4583**

च. पूर्णकालिक अध्ययन पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विदेशी छात्रों का देश–वार विवरण –

बंगला देश	07	तजाकिस्तान	02
जापान	02	त्रिनिदाद	01
जाम्बिया	01	थाईलैंड	04
वियतनाम	04	बेल्जियम	01
यमन	02	फिलिपीन	01
किरगिस्तान	01	लाओस	01
ईरान	06	अफगानिस्तान	01
कोरिया	16	फ्रांस	02
यू.एस.ए.	01	कनाडा	01
नेपाल	09	रोमानिया	02
आरमीनिया	01	इंडोनेशिया	01
श्रीलंका	01		

कुल = 68

छ. अंशकालिक पाठ्यक्रम (भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान)

पाठ्यक्रम	सामान्य	अ.जा.	अ.ज.जा.	शारी. रूप से विक.	कुल
प्रवीणता प्रमाण-पत्र	117	23	08	04	153
प्रवीणता डिप्लोमा	15	04	02	--	21
उच्च प्रवीणता डिप्लोमा	37	01	–	01	39
कुल	**169**	**28**	**10**	**05**	**213**

II. आवासीय हाल

समीक्षधीन अवधि के दौरान, विश्वविद्यालय के 13 छात्रावासों तथा एक विवाहित शोध छात्रावास में छात्रों की संख्या 3699 थी। इनमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, शारीरिक रूप से विकलांग और विदेशी छात्र भी शामिल हैं। छात्रावासों में रह रहे छात्र विश्वविद्यालय की कार्य परिषद् द्वारा अनुमोदित छात्रावास नियमावली में उल्लिखित प्रावधानों के अनुसार छात्रावास मेसों के प्रबंधन कार्यों में भाग लेते रहे। विश्वविद्यालय नियमों के अनुसार छात्रावासों में रहने वाले छात्रों से छात्रावास शुल्क और मैस बकाया की राशि वसूल की जाती रही।

1.4.2002 से 31.3.2003 की अवधि के दौरान छात्र सहायता निधि में से जरूरतमंद छात्रों में 2,22,766 रूपये की राशि वितरित की गई।

छात्रावास–वार छात्रों की संख्या और समीक्षाधीन अवधि के दौरान छात्रावास पाने वाले छात्रों की संख्या :

छात्रावास का नाम	सीटों की संख्या	1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान छात्रावास पाने वाले छात्रों की संख्या
कावेरी	294	074
पेरियार	306	102
सतलज	294	092
झेलम	280	078
नर्मदा	202	079
गंगा	300	108
गोदावरी	317	089
साबरमती (छात्र)	126	054
साबरमती (छात्राएं)	138	053
ताप्ती (छात्राएं)	168	072
ताप्ती (छात्र)	226	075
ब्रह्मपुत्र	384	050
माही	200	108
मांडवी	200	078
विवाहित शोध छात्र छात्रावास	065	010
यमुना*	199	103
कुल योग	3699	1225

* कामकाजी महिला छात्रावास

III. खेलकूद गतिविधियां

खेलकूद स्टेडियम न केवल खेल प्रेमियों बल्कि घूमने और जोगिंग करने वाले लोगों का भी प्रिय स्थान रहा। खेलकूद कार्यालय ने बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए विशेष ध्यान रखा। छात्र खेलों का आनंद उठाते हैं, चाहे ये खेल आफिशियल हों या फ्रेंडली। वर्ष भर प्रतियोगिताएं चलती रहती हैं।

वर्ष 2002–2003 की खेलकूद गतिविधियां मार्च–अप्रैल 2002 में शुरू हुई। अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान की छात्रा सुश्री कमला कुमारी जो वर्ष 2001–2002 में पर्वतारोहण और पदयात्रा क्लब की संयोजक थी, ने 12 से 20 मई तक नेहरू पर्वतारोहण संस्थान, उत्तरकाशी द्वारा आयोजित 20 दिवसीय सत्र और रेसक्यू कोर्स में भाग लिया और उसे सफलतापूर्वक पूरा किया। पर्वतारोहण और पदयात्रा क्लब ने अपना ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम कल्पेश्वर–रूद्रनाथ में आयोजित किया। यह स्थान उत्तरांचल के गढ़वाल क्षेत्र में स्थित है। इस कार्यक्रम को 13 छात्रों ने सफलतापूर्वक पूरा किया।

15 मई से 30 जून 2002 तक द्वितीय 6 सप्ताह के सर्टिफिकेट कोर्स (योग) का आयोजन किया गया। योग केन्द्र वि.अ.आ. की विशेष योजना के अन्तर्गत चलाया जा रहा है। इस कोर्स की पाठ्यचर्या एस.वाई.एम.एस., कैवल्यधाम, लोनवाल के सुप्रसिद्ध योग संस्थान द्वारा निर्धारित पैटर्न के अनुसार तैयार की गई। इस कोर्स के लिए कुल 26 छात्रों ने आवेदन किया। सीमित सुविधाओं के कारण 22 छात्रों को इसमें प्रवेश दिया गया। इस कोर्स को 20 छात्रों ने सफलतापूर्वक पूरा किया। इन छात्रों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गोपाल कृष्ण चड्ढा द्वारा सर्टिफिकेट वितरित किए गए।

योग केन्द्र की सदस्यता 500 से अधिक थी। इसने अपनी वार्षिक प्रतियोगिता 26 अगस्त, 2002 को आयोजित की। इसमें 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें 40 वर्ष से कम और 40 से अधिक के चार श्रेणियों के स्त्री और पुरुष शामिल थे। पर्वतारोहण क्लब ने भी अगस्त–सितम्बर माह में हिमाचल प्रदेश की अपनी 13 दिवसीय शरत्कालीन पदयात्रा की। इसमें 15 छात्रों ने भाग लिया।

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान ने अगस्त–सितम्बर में अपने वार्षिक समारोह – कल्लोल – का आयोजन किया। इसमें केन्द्रों द्वारा सभी इनडोर और आउट डोर प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। ये प्रतियोगिताएं – क्रिकेट, फुटबाल, वालीवाल, कबड्डी, शतरंज, कैरम, टेबल–टेनिस और बैडमिंटन की थीं।

योग केंद्र ने 25 से 27 सितम्बर तक एक तीन दिवसीय प्राणायाम कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें योग के 67 छात्रों ने भाग लिया। इसके बाद 23 से 28 अक्टूबर तक 5 दिवसीय ध्यान के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 66 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वालीवाल क्लब ने उत्तरी क्षेत्र अन्तर–विश्वविद्यालय वालीवाल प्रतियोगिता – 2002–2003 में भाग लिया। यह प्रतियोगिता अक्टूबर 2002 के अंतिम सप्ताह में श्रीनगर, गढ़वाल में आयोजित हुई थी। महमूद हाफिज मिर्जा, संयोजक के नेतृत्व में 12 सदस्यीय दल ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के विरुद्ध अच्छा प्रदर्शन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान की सुश्री कमला कुमारी ने 20 नवम्बर से 9 दिसम्बर 2002 तक नेहरू पर्वतारोहण, संस्थान उत्तरकाशी से 'मेथड आफ इंसट्रक्शन' विषयक एक 20 दिवसीय कोर्स 'ए' ग्रेड के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया।

बैडमिंटन क्लब ने उत्तरी क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय बैडमिंटन प्रतियोगिता 2002–2003 में भाग लिया। श्री प्रवीण कुमार, संयोजक के नेतृत्व में 4–सदस्यीय छात्र दल ने दिसम्बर, 2002 में जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा आयोजित चैम्पियनशिप में भाग लिया।

वर्ष 2002–2003 के दौरान विभिन्न खेल वार्षिक प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। क्रिकेट क्लब ने 12 जनवरी से 6 फरवरी 2003 तक छात्र और छात्राओं के अन्तर छात्रावास खेलों तथा छात्रों के अन्तर–संस्थान खेलों का आयोजन किया। इसी दौरान योग केन्द्र ने भी 28 से 30 जनवरी तक 'ध्यान शिविर' का आयोजन किया।

बैडमिंटन क्लब ने फरवरी, 2003 में विभिन्न प्रतियोगिताएं – अन्तर छात्रावास, अन्तर–संस्थान और व्यक्तिगत खेल आयोजित की। ये खेल छात्र गतिविधि केन्द्र के इन्डोर कोर्ट पर खेले गए। वालीवाल क्लब ने क्रमशः 27 से 31 जनवरी और 1 से 4 फरवरी के बीच अपने अन्तर–छात्रावास और अन्तर संस्थान खेल आयोजित किए।

एथलेटिक क्लब ने 15 से 16 फरवरी, 2003 तक आयोजित 29वीं वार्षिक एथलेटिक मीट से पहले 12 जनवरी को महिलाओं हेतु विंटर रन और 9 फरवरी को लघु मैराथन का आयोजन किया। यह सफल बने, इसके लिए उसी समय कई खेलों के लिए नाम लिखे गए। अन्तर–संस्थान रिले के अतिरिक्त लड़कियों के लिए 9 और लड़कों के लिए 13 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हमेशा की तरह, ये प्रतियोगिताएं अन्य संस्थानों से आमंत्रित एथलेटिक्स विशेषज्ञों द्वारा आयोजित की गईं।

वेट और पावर लिफ्टिंग क्लब ने अपनी वार्षिक प्रतियोगिताएं फरवरी–मार्च में आयोजित की। वेट लिफ्टिंग प्रतियोगिता 8 फरवरी, 2003 को आयोजित हुई इसके बाद 22 फरवरी, 2003 को पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। बेंच प्रेस और बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता का आयोजन 1 मार्च, 2003 को हुआ। छात्राओं सहित प्रतिभागिता अच्छी रही। भौतिक विज्ञान संस्थान के श्री खुर्रम हाफिज ने सभी प्रतियोगिताओं के लिए 'सर्वोत्तम लिफ्टर' का पुरस्कार जीता।

अत्यधिक मांग पर कामकाजी महिलाओं के लिए योग केन्द्र द्वारा एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। 24 फरवरी से 7 मार्च, 2003 तक खेल–कूद परिसर में आयोजित इस दो सप्ताह के कार्यक्रम को महिलाओं की सुविधानुसार भोजनावकाश (लंच) के समय रखा गया। योग केन्द्र ने अप्रैल में 'स्ट्रेस लिविंग' शिविर और इसके बाद मई–जून में वार्षिक 6 सप्ताह के सर्टिफिकेट कोर्स का भी प्रस्ताव किया है।

3 से 14 फरवरी, 2003 तक शाम को 3 से 5 बजे तक एक दो सप्ताह के टेनिस प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 12 से 14 छात्राओं और 15 से 18 छात्रों ने भाग लिया। इसके बाद 3 से 8 मार्च तक वार्षिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस वर्ष अन्तर–संस्थान टीम प्रतियोगिता भी जोड़ी गई।

इस वर्ष की अंतिम प्रतियोगिता अन्तर–छात्रावास और अन्तर–संस्थान फुटबाल प्रतियोगिता थी। ये क्रमशः 21 से 27 फरवरी और 3 से 10 मार्च, 2003 तक आयोजित की गईं। विदेशी छात्र संघ के सदस्यों द्वारा कुछ फ्रेंडली फुटबाल खेलों का भी आयोजन किया गया। इनमें अन्य संस्थानों के इनके साथी भी शामिल थे।

IV. विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केन्द्र

स्वास्थ्य केन्द्र बीमार व्यक्ति को बड़े अस्पताल में विशेष चिकित्सा हेतु जाने से पहले प्रारंभिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। छात्रों की चिकित्सा संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए वर्ष 1973 में स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की गई थी। तभी से यह एक ही स्थान पर रोगों की रोकथाम, उपचार, शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य संबंधी सुविधा मुहैया करा रहा है।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. एस.बी. अग्रवाल 30.11.02 को सेवानिवृत्त हुए। उन्हें कुलपति, डीन (छात्र) और स्वास्थ्य केन्द्र के स्टाफ द्वारा विदाई दी गई। डॉ. गौतम पात्रा एम.डी. ने 9.12.2002 से नए मुख्य चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान स्वास्थ्य केन्द्र के बाह्य रोगी विभाग में चिकित्सा सेवाएं पूर्णकालिक और अंश--कालिक चिकित्सा अधिकारियों, पैरामेडिकल और अन्य सहयोगी स्टाफ द्वारा प्रातः 8.00 बजे से दोपहर 2.00 और सायं 4 बजे से 9 बजे (सोमवार से शनिवार तक) तक उपलब्ध कराई गई। स्वास्थ्य सेवाएं राजपत्रित अवकाशों में भी सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक उपलब्ध कराई गई।

वर्ष 2002–2003 के दौरान स्वास्थ्य केन्द्र में प्रातःकालीन/सायंकालीन बा.रो.वि. और होमियो क्लिनिक में आए सभी 44,393 रोगियों का विस्तृत ब्योरा निम्न प्रकार है :

2002–2003 में आए कुल रोगी

	प्रातःकालीन बा.रो.वि.	सायंकालीन बा.रो.वि.	होमियो क्लिनिक
छात्र	15,512	5,687	3,447
गैर–छात्र	14,054	2,351	1,488
सेवानिवृत्त कर्मचारी	1,854	—	—

वर्ष 1992 से विश्वविद्यालय की सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सा संबंधी सुविधा मुहैया कराई गई। अभी तक 283 सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने अपना पंजीकरण करवाया है तथा लगभग 566 ने स्वास्थ्य केन्द्र की सुविधाओं का लाभ उठाया है। वे 1854 बार फार्मेसी गए और सुविधाओं का फायदा उठाया।

विश्वविद्यालय के छात्रों को अधिकतर दवाइयां स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा पूर्ण भण्डारित एलोपैथिक और होमियोपैथिक फार्मेसी से दी गई। जो दवाइयां यहाँ उपलब्ध नहीं थीं वे स्थानीय केमिस्ट से खरीदकर छात्रों को दी गई।

एम्बुलेंस की व्यवस्था बीमार व्यक्तियों (सभी परिसरवासी, छात्र और जेएनयू के स्टाफ) को अस्पताल छोड़ने के लिए निःशुल्क उपलब्ध है।

पहले की प्रयोगशाला के अतिरिक्त वर्ष 2002–2003 के दौरान स्वास्थ्य केन्द्र में अधिक विशेषीकृत जाँच उपलब्ध कराने के लिए माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला स्थापित की गई। समीक्षाधीन अवधि के दौरान 3374 छात्रों, 3205 स्टाफ सदस्यों और 187 सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने प्रयोगशाला में अपने परीक्षण कराए।

प्रयोगशाला जाँच का विवरण :

	बायोकेमेस्ट्री	माइक्रोबायोलॉजी	कुल
छात्र	3166	208	3374
गैर–छात्र	2065	140	3205
सेवानिवृत्त कर्मचारी	169	18	187

स्वास्थ्य केन्द्र में मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा शारीरिक रूप से विकलांग 40 छात्रों के मामलों की समीक्षा की गई। विश्वविद्यालय में नियुक्त 7 स्टाफ सदस्यों और 5 शिक्षकों को स्वस्थता प्रमाण–पत्र जारी किए गए।

बीमारियों की रोकथाम–विशेषकर मलेरिया की रोकथाम करना केन्द्र का मुख्य उद्देश्य रहा है। मलेरिया नियन्त्रण स्टाफ द्वारा समय--समय पर बेगोन छिड़का गया, लारवा पर नियन्त्रण किया गया और डेजर्ट कूलरों में मच्छरों की उत्पत्ति पर नियन्त्रण किया गया।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान परिसर में चेचक के 15, कनफेड़ा 4 खसरे के 3, और मलेरिया के 2 मामलों को छोड़कर वृहत्तर स्तर पर कोई बीमारी नहीं फैली।

स्वास्थ्य केन्द्र भारत सरकार द्वारा चलाए गए पल्स पोलियो कार्यक्रम में भाग लिया। 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलिया की दवा की खुराक पिलाई गई। कार्यक्रम को पूर्ण सफल बनाने के लिए घर–घर 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने के लिए टीमें भेजी गईं ताकि परिसर में कोई भी बच्चा बिना दवाई पीए न रहे।

स्वास्थ्य केन्द्र के पैरामेडिकल स्टाफ ने 1000 रोगियों को इंजेक्शन लगाए और 3046 रोगियों की मरहम–पट्टी की।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान स्वास्थ्य केन्द्र ने 1,11,115.00/– रू. की राशि प्राप्त की। इसका विवरण निम्न प्रकार से है :

रोगियों के पंजीकरण (लेखन सामग्री) से	रू.	40,245.00
होमियोपैथिक दवाइयों से	रू.	08,895.00
प्रयोगशाला जाँच,	रू.	52,825.00
इंजेक्शन, मरहम–पट्टी, मेडिकल,		
ई.सी.जी. मेडिकल बुकलेट (डुप्लिकेट) आदि से	रू.	09,150.00
कुल		~~रू.1,11,115.00~~

स्वास्थ्य केंद्र में कार्यरत एड्स जागरूकता ग्रुप ने 3 कार्यशालाएं आयोजित की और स्वासथ्य केन्द्र में आए 479 व्यक्तियों को एड्स से संबंधित जानकारी दी। एच.आई.वी./एड्स से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों के लिए छात्रावासों और विश्वविद्यालय परिसर में प्रश्न बाक्स लगाए गए।

विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु 30 विदेशी छात्रों की स्वास्थ्य केन्द्र में डाक्टरी जॉच की गई। एच.आई.वी. के लिए उनके रक्त की जाँच की गई। ऐसे सभी मामले नेगेटिव पाए गए। मनोवैज्ञानिक समस्या रखने वाले व्यक्तियों को 'सार्थक' में स्वास्थ्य केन्द्र में अपने 'होप' नामक केन्द्र के माध्यम से सामान्य परामर्श सेवाएं उपलब्ध करायी। कुछ व्यक्तियों को मनोचिकित्सक के पास भेजा गया। स्वास्थ्य केन्द्र ने दिल्ली एड्स नियन्त्रण सोसाइटी और स्टुडेंटस फार हारमनी के सहयोग से क्रमश: अक्टूबर, 2002 और जनवरी, 2003 में परिसर में रक्त दान शिविर का आयोजन किया।

स्वास्थ्य केन्द्र ने बायो–मेडिकल कचरे के सही निपटान के लिए मैसर्स सिनर्जी से अनुबंध किया है। यह दिल्ली प्रदूषण नियन्त्रण समिति (दिल्ली सरकार) द्वारा अनुमोदित और संस्तुत एजेंसी है। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य केन्द्र ने दिल्ली प्रदूषण नियन्त्रण समिति में भी अपना पंजीकरण करवाया है क्योंकि यह आवश्यक था।

डॉ. नवीन गुप्ता, नेत्र चिकित्सक ने निजी कारणों से त्याग–पत्र दिया।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉ. एस.पी. गर्ग ने तभी से स्वास्थ्य केन्द्र में नए नेत्र चिकित्सक के रूप में ज्वाइन किया है।

स्वास्थ्य केन्द्र विश्वविद्यालय समुदाय की वर्ष 1973 से स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं मुहैया करा रहा है। स्वास्थ्य केन्द्र के पास अधिक स्टाफ हो तो यह बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करा सकता है।

V. सांस्कृतिक गतिविधियां

समन्वयक की अध्यक्षता में सांस्कृतिक गतिविधि समिति द्वारा परिसर में छात्रों की विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया।

ये गतिविधियां विभिन्न सांस्कृतिक क्लबों – फिल्म, फोटो, ड्रामा, संगीत, यूनेस्को, वाद–विवाद, साहित्यिक, प्रकृति और वन्य जीवन तथा ललित कला – के माध्यम से आयोजित की जाती है। ये क्लब छात्रों को साहित्य जगत, ललित कलाओं के निष्पादन, प्रकृति और वन्य जीवन के बारे में जानकारी हासिल कराते हैं। 1.4.2002 से 31.3.2003 की अवधि के दौरान विभिन्न क्लबों द्वारा निम्नलिखित सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की गईं :

1. संगीत क्लब

संगीत क्लब ने 'स्पिक मैके, जेएनयू' के सहयोग से समय–समय पर भारतीय शास्त्रीय संगीत/नृत्य के प्रकाण्ड विद्वानों को परिसर में आमंत्रित किया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित की गई :

– स्पिक मैके, जेएनयू ने 15 अगस्त, 2002 को सामाजिक विज्ञान संस्थान सभागार में गुरूजी अम्मानुर माधव चकयार और मण्डली का संगीत कार्यक्रम आयोजित किया।

– छात्रों और शिक्षकों द्वारा गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2003 को सामाजिक विज्ञान संस्थान सभागार में लोकनृत्य/समारोह 2003 का आयोजन किया गया।

– स्पिक मैके, जेएनयू के सहयोग से 3 अक्टूबर, 2002 को शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

– संगीत क्लब ने साहित्यिक के साथ मिलकर 19 अगस्त, 2002 को सामाजिक विज्ञान संस्थान सभागार में "कैफी की याद' में सूरत बदलने की एक कशिश' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया।

– क्लब द्वारा अगस्त, 2002 में 'डाइ वेले वाज' नामक जर्मन नाटक का आयोजन किया गया।

2. फिल्म क्लब

– फिल्म क्लब ने 6 मई, 2002 को सामाजिक विज्ञान संस्थान सभागार में एक फिल्म शो आयोजित किया।

– फिल्म क्लब ने 15 सितम्बर, 2002 को कुछ 'डाक्यूमेंट्री' दिखाने का अन्य कार्यक्रम आयोजित किया।

3. फोटोग्राफी क्लब

फोटोग्राफी क्लब ने 27 सितम्बर, 2002 को श्री वी. अशोक के "एन ओडोसी विद केनरोश' विषयक स्लाइड शो का आयोजन किया।

4. नाट्य क्लब

– नाट्य क्लब ने 14 अगस्त, 2002 को 'तुर्क का सपना' विषयक नाटक का आयोजन किया। इस क्लब ने 19 अगस्त, 2002 से एक दो दिवसीय थीएटर कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें रंगमंच से जुड़ी ख्याति प्राप्त हस्तियों जैसे – मुस्ताक डाक, निदेशक, एस.आर.सी. आदि ने भाग लिया।

– नाट्य क्लब ने 31 अगस्त, 2002 को टी.वी. हाल, टेफला में हबीब तनवीर के साथ वार्तालाप सत्र का आयोजन किया। क्लब ने 29 अगस्त, 2002 को सामाजिक विज्ञान संस्थान सभागार में बादल सरकार द्वारा रचित 'तीसवीं शताब्दी' विषयक एक अन्य नाटक का आयोजन किया।

नाट्य क्लब ने 28 फरवरी, 2003 को जसबीर भुल्लर द्वारा रचित और मुस्ताक काक द्वारा निर्देशित 'रीच गान' विषयक नए नाटक का आयोजन किया।

5. यूनेस्को क्लब

– इस क्लब ने 1 मार्च, 2003 को विश्व विज्ञान दिवस के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया।

– यूनेस्को तथा प्रकृति और वन्य–जीव क्लब ने मिलकर 9 मार्च से 11 मार्च, 2003 तक 'कलरव–2003'विषयक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन किया।

6. साहित्यिक क्लब

इस क्लब ने 19 अगस्त, 2002 को साहित्यिक प्रतियोगिता/कैफी अजूरी द्वारा साहित्यिक वार्ता का आयोजन किया।

– क्लब ने 27 सितम्बर, 2002 को प्रसिद्ध हिंदी कवि डॉ. रांगेय राघव की स्मृति में कवि सम्मेलन/मुशायरा का एक अन्य कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें प्रसिद्ध हिंदी और उर्दू कवियों को भी आमंत्रित किया गया।

क्लब ने अक्टूबर, 2002 के तीसरे सप्ताह में प्रसिद्ध मराठी साहित्यिक रचना 'अक्करमाशी' के रूप में जयन्त लोकेश द्वारा माइम शो का आयोजन किया गया।

इस क्लब द्वारा दिसम्बर 2002 और जनवरी 2003 में नाट्य लेखन प्रतियोगिता के एक अन्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

7. प्रकृति एवं वन्य–जीव क्लब

– इस क्लब ने 19 अगस्त, 2002 को अन्तर महाविद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया।

क्लब ने 31 जनवरी, 2003 को निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया।

– इस क्लब ने मार्च, 2003 के प्रथम सप्ताह में एक फिल्म–शो दिखाया।

8. ललित कला क्लब

क्लब ने 24 अगस्त, 2002 को 'कार्टून रचना प्रतियोगिता का आयोजन किया। 'कार्पस निधि' का उपयोग करते हुए विश्वविद्यालय में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

1. उड़ीसा सांस्कृतिक परिषद्, जेएनयू ने उत्कल दिवस के अवसर सांस्कृतिक गतिविधियों (संगीत, नृत्य और नाटक) का आयोजन किया।
2. एस.एफ.एच. ने 28 सितम्बर, 2002 को 'मधुरिना' विषयक अखिल भारतीय लोक संगीत एवं नृत्य महोत्सव का आयोजन किया।
3. एस.एफ.एच. ने 18 अक्टूबर, 2002 को छठे अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया।
4. एस.एफ.एच. ने 4 नवम्बर, 2002 को छठे अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य समारोह का आयोजन किया। इसमें 20 देशों से छात्रों ने भाग लिया।
5. जर्मन अध्ययन केन्द्र द्वारा 23 और 24 जनवरी, 2003 को 'इंडियन ऐंड वेस्टर्न, क्लासीकल म्यूजिक' विषयक कार्यशाला/संगोष्ठी आयोजित की।
6. एस.एफ.एच. द्वारा 30 जनवरी, 2003 को महात्मा गाँधी की पुण्य तिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।
7. पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार द्वारा गणतन्त्र दिवस पर विश्वविद्यालय में लोक नृत्य समारोह–2003 का आयोजन किया गया।
8. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान द्वारा 10 फरवरी से 17 फरवरी, 2003 तक एक सांस्कृतिक और खेल समारोह 'सम्मिट' 2003 का आयोजन किया गया।
9. एफ.एस.ए. द्वारा 2 नवम्बर, 2002 को आगरा भ्रमण का आयोजन किया गया।
10. जर्मन केन्द्र के छात्रों द्वारा मार्च, 2003 में 'डाइ फिजिकर' विषयक नाटक का आयोजन किया गया।

अध्याय–7

कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएं

भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी मार्गदर्शी सिद्धांतों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय ने 'अ.जा./अ.ज.जा. प्रकोष्ठ' नाम से एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना की है। इस प्रकोष्ठ की स्थापना मार्च, 1984 में हुई थी। यह प्रकोष्ठ मार्गदर्शी सिद्धांतों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए निगरानी रखता है, मूल्यांकन करता है और इसके अतिरिक्त, भारत सरकार द्वारा जारी उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपाय सुझाता है।

विश्वविद्यालय में अ.जा./अ.ज.जा. के लिए ग्रुप–'सी' और 'डी' पदों पर भर्ती में आरक्षण की शुरूआत 1975 में और ग्रुप–'ए' और 'बी' पदों में 1978 में हुई थी। विश्वविद्यालय ने अ.पि.जा. के लिए भी गैर शैक्षणिक पदों में आरक्षण नीति का कार्यान्वयन शुरू किया है। ग्रुप–सी और डी पदों में आरक्षण की शुरूआत 8.9.1993 से और ग्रुप–ए और बी पदों में 2.7.1997 से हुई थी। अ.जा./अ.ज.जा. और शारीरिक रूप से विकलांग के लिए आरक्षण केवल सहायक प्रोफेसर स्तर तक लागू है। शैक्षणिक पदों में अ.पि.वर्ग. को सहायक प्रोफेसर स्तर तक आरक्षण की शुरूआत वि.अ.आ./मा.सं.वि. मंत्रालय द्वारा अंतिम निर्णय लेने के बाद की जाएगी।

भारत सरकार की नीति के अनुसार अ.जा./अ.ज.जा. के लिए मकानों के आवंटन में भी आरक्षण का प्रावधान है। टाइप–I और II के मकानों में 10% मकान अ.जा./अ.ज.जा. के लिए आरक्षित हैं तथा टाइप–III और IV में 5% मकान। टाइप–V और VI के मकानों में अ.जा./अ.ज.जा. को कोई आरक्षण उपलब्ध नहीं है।

प्रत्येक अध्ययन पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु 22.5% सीट आरक्षित हैं। इनमें 15% सीट अ.जा. के लिए और 7.5% सीट अ.ज.जा. के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित हैं। अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीदवार अर्हक परीक्षा में प्राप्त अंकों की प्रतिशतता को ध्यान में रखे बिना ही विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में बैठने के पात्र हैं। जे.ने.वि. शैक्षणिक सत्र–2002–2003 में विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में 23.27% अ.जा./अ.ज.जा. के छात्रों ने प्रवेश लिया।

छात्रावासों में भी 15% सीट अ.जा. और 7.5% सीट अ.ज.जा. के छात्रों के लिए आरक्षित हैं। यदि किसी एक वर्ग के उम्मीदवार उपलब्ध नहीं होते हैं तो अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीदवारों में दूसरे वर्ग के उपलब्ध उम्मीदवारों को वह सीट दे दी जाती है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के केन्द्रीय प्रायोजित कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय ने 100–100 कमरों के छात्रावास अ.जा. की छात्राओं और अ.जा. के छात्रों के लिए बनाए हैं। इससे अ.जा. की सभी छात्राओं और छात्रों को छात्रावास सुविधा उपलब्ध हो जाएगी।

विश्वविद्यालय ने प्रत्येक संस्थान/केन्द्र में अ.जा./अ.ज.जा. सहित समाज के कमजोर वर्गों से आने वाले छात्रों की प्रारंभिक स्कूली शिक्षा की कमी को पूरा करने के लिए अंग्रेजी और कोर कोर्सों में विशेष उपचारात्मक कोर्स चलाना जारी रखा है। प्रत्येक संस्थान/केन्द्र के समन्वयक इस प्रकार के छात्रों का पता लगाते हैं जिन्हें विशेष उपचारात्मक सहायता की जरूरत होती है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्याल ने जेएनयू के विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रवेश–परीक्षा में बैठने वाले अ.जा./अ.ज.जा. और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के छात्रों के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी में सहायता करने हेतु एक विशेष योजना शुरू की है। इस योजना के अन्तर्गत अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीदवारों को जेएनयू की प्रवेश परीक्षा हेतु वित्तीय सहायता सहित मार्गदर्शन, सूचना और सहायता उपलब्ध कराने हेतु एक केन्द्र की स्थापना की गई है। इसके लिए एक शिक्षक सलाहकार भी नियुक्त किया गया है। इस दिशा में विश्वविद्यालय ने अपने निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप कमजोर वर्गों के छात्रों को प्रवेश देने संबंधी अपनी वचनबद्धता लगभग पूरी की है।

समान अवसर कार्यालय

विश्वविद्यालय ने 'समान अवसर कार्यालय' नामक एक कार्यालय की स्थापना की है। इस प्रकार का कार्यालय भारतीय विश्वविद्यालयों में शायद पहला है। इस कार्यालय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

– अ.जा./अ.ज.जा./शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों के स्नातक, स्नातकोत्तर, एम.फिल./पी–एच.डी. स्तर पर उनके शैक्षणिक स्तर में सुधार के लिए उपचारात्मक कोर्सों सहित उपयुक्त कार्यक्रम/योजनाएं तैयार करना और इन कार्यक्रमों/योजनाओं के कार्यान्वयन पर निगरानी रखना;

- विश्वविद्यालय में दलित छात्रों को सहायता उपलब्ध कराने के लिए वित्तीय और अन्य शैक्षणिक सामग्री हेतु सरकार और अन्य वित्तीय एजेंसियों के साथ सम्पर्क स्थापित करना;
- शैक्षणिक, वित्तीय और अन्य मामलों में जानकारी प्रदान करना और एक सलाह केन्द्र के रूप में कार्य करना;
- विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्रों के बीच स्वस्थ और अन्तर्वैयक्तिक संबंध बढ़ाने हेतु अनुकूल सामाजिक वातावरण तैयार करना;
- शैक्षणिक क्रियाकलापों हेतु शिक्षकों और दलित छात्रों के बीच सहायक अर्न्वैयक्तिक संबंध विकसित करने में सहायता करना;
- यदि कोई भेदभाव की समस्या आती है तो उसको देखना और दलित छात्रों की सहायता करना।

उपचारात्मक शिक्षण : कार्यालय ने समीक्षाधीन सत्र में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की। यह उपचारात्मक शिक्षण अंग्रेजी और कोर विषयों में अलग–अलग दिया गया। कार्यालय ने प्रत्येक केन्द्र और संस्थान से एक समन्वयक नामित करने का अनुरोध किया है। समन्वयक इस प्रकार के छात्रों की पहचान करेंगे जिन्हें उपचारात्मक सहायता की आवश्यकता है और उनके लिए व्यक्तिगत उपचारात्मक सहायता के माध्यम से अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता की व्यवस्था करेंगे। इस योजना में शिक्षण सहायता के अन्तर्गत टी.वी., बी.सी.आर., कंप्यूटर, फोटोकापी मशीन और रिकार्डर उपलब्ध कराना भी शामिल है।

इस कार्यालय ने 'जरूरतमंद व्यक्तियों (विकलांग) के लिए उच्च शिक्षा विषयक वि.अ.आ. द्वारा प्रायोजित परियोजना का कार्य भी अपने हाथ में लिया है। इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

- उच्च शिक्षा से जुड़े अधिकारियों को विकलांग लोगों की विशेष शैक्षणिक जरूरतों के बारे में अवगत कराना;
- विकलांग व्यक्तियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए संस्थान में सुविधाएं विकसित करना,
- विकलांग लोगों की उच्च शिक्षा में सततता बनाए रखने में सहायता करना;
- विकलांग स्नातकों के लिए उपयुक्त नौकरियों की तलाश करना।

ढलानदार रास्तों का निर्माण – वि.वि. परिसर में विकलांग लोग आसानी से आ–जा सके इसके लिए विश्वविद्यालय ने अपने भवनों में 20 ढलानदार रास्तों का निर्माण किया है। विश्वविद्यालय ने कुछ और ढलानदार रास्ते बनाने की योजना बनाई है ताकि विकलांग लोग परिसर में कहीं भी आसानी से आ–जा सके।

गैर–शैक्षणिक पदों में अ.जा./अ.ज.जा. और शा.वि. का प्रतिनिधित्व (31.3.2003 के अनुसार)

ग्रुप	कुल पद	अ.जा.	अ.ज.जा.	शा.वि.	अ.पि.वर्ग.
ए	65	14	01	–	01
बी	175	21	03	01	–
सी	503	87	12	01	–
डी	441	116	14	04	14
सफाई कर्मचारी	123	123	–	–	–

शैक्षणिक पदों में अ.जा./अ.ज.जा. और शा.वि. का प्रतिनिधित्व (31.3.2003 के अनुसार)

	कुल पद	अ.जा.	अ.ज.जा.	शा.वि.
प्रोफेसर	194	04	01	
सह प्रोफेसर	120	02	02	
सहायक प्रोफेसर	73	10	03	02

अध्याय–8

विश्वविद्यालय प्रशासन

विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राधिकरण जे.एन.यू. कोर्ट की बैठक 5 फरवरी, 2003 को कुलाधिपति डॉ. करण सिंह की अध्यक्षता में हुई। उसमें विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर रिपोर्ट और विश्वविद्यालय का वर्ष 2002–2003 का लेखा परीक्षित प्राप्ति व व्यय का विवरण तथा तुलन पत्र प्रस्तुत किया गया। विश्वविद्यालय का योजनेत्तर अनुरक्षण बजट भी प्रस्तुत किया गया।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय की कार्य परिषद् की 3 बैठकें हुईं। ये बैठकें 3.6.2002, 25.7.2002 और 22.1.2003 को हुईं। इसकी बैठकों में कार्यसूची की अनेक मदों पर विचार–विमर्श किया गया और प्रशासनिक मामलों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

विद्या परिषद की बैठकें 11.9.2002 और 8.1.2003 को हुईं। इसमें कार्य परिषद के समक्ष पेश की जाने वाली मदों सहित अन्य महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। वित्त समिति की 17.2.2003 को बैठकें हुईं। इसमें वर्ष 2002–2003 के संशोधित अनुमानों और वर्ष 2003–2004 के विश्वविद्यालय के बजट अनुमानों को अनुमोदित किया गया और कुछ महत्वपूर्ण वित्तीय मामलों पर निर्णय लिए गए।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान शिक्षण और गैर-शिक्षण स्टाफ की नियुक्तियों के लिए चयन समितियों की कई बैठकें आयोजित हुई। समीक्षाधीन अवधि के दौरान 07 शिक्षक नियुक्त हुए। इनमें 01 प्रोफेसर, 02 सह–प्रोफेसर और 04 सहायक प्रोफेसर शामिल हैं।

41 शिक्षकों को आवधिक/असाधारण अवकाश/अध्ययन अवकाश मंजूर किया गया या उनके अवकाश में वृद्धि की गई। शिक्षकों ने अपना शोध कार्य पूरा करने/अन्य संस्थानों में नियुक्तियाँ/अध्येतावृत्तियाँ प्राप्त करने जैसे प्रयोजनों के लिए अवकाश लिया था। समीक्षाधीन अवधि के दौरान 03 शिक्षकों को पुनः नियुक्त किया गया या उनकी पुनः नियुक्ति की अवधि में वृद्धि की गई।

इस अवधि के दौरान, कुल 11 शिक्षक विश्वविद्यालय की सेवा से सेवा–निवृत्त हुए।

सम्पदा शाखा

समीक्षाधीन अवधि के दौरान मकान आबंटन समिति की 06 और परिसर विकास समिति की 10 बैठकें हुईं।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान नए मकान नहीं बनाए गए तथा मकान आबंटन समिति द्वारा खाली पड़े कई मकान शिक्षकों और अन्य स्टाफ सदस्यों को आबंटित किए गए।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान सम्पदा शाखा द्वारा निम्नलिखित भवनों/शोध छात्र छात्रावास का कब्जा लिया गया :

1. विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र
2. कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान
3. शोध छात्र छात्रावास (18 कमरे)

समीक्षाधीन अवधि के दौरान निम्नलिखित कैंटीन/दूकानें नए उम्मीदवारों को आबंटित की गई :

1. सामाजिक विज्ञान संस्थान–II भवन कैंटीन
2. भौतिक विज्ञान संस्थान भवन कैंटीन
3. दूकान नं. 14/15 शॉपिंग कंप्लेक्स
4. दूकान नं. 2, शॉपिंग कंप्लेक्स, पूर्वांचल

जन सम्पर्क कार्यालय

विश्वविद्यालय के जन–सम्पर्क कार्यालय ने विभिन्न गतिविधियों से संबंधित अनेक प्रेस विज्ञप्तियाँ जारी कीं। समाचारों में जे.एन.यू. से संबंधित प्रकाशित रिपोर्ट और शिकायतों से संबंधित प्रेस कतरने प्रशासन की जानकारी हेतु भेजीं तथा आवश्यकतानुसार उचित स्पष्टीकरण/उत्तर–प्रत्युत्तर जारी किए। जन–सम्पर्क कार्यालय ने जन–साधारण को शैक्षिक तथा प्रशासनिक मामलों से संबंधित जानकारी उपलब्ध करायी तथा विश्वविद्यालय में आए महत्वपूर्ण अतिथियों तथा शिष्ट मण्डलों का स्वागत किया। विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली से संबंधित विभिन्न प्रकार की जानकारी के लिए लिखित रूप से पूछताछ करने वालों को भी उत्तर भेजे।

जन–सम्पर्क अधिकारी ने विश्वविद्यालय की द्विमाषिक पत्रिका 'जे.एन.यू. न्यूज' का प्रकाशन भी जारी रखा। इन्होंने इसका सम्पादन और प्रकाशन विश्वविद्यालय की ओर से किया। यह पत्रिका सूचनाओं की कमी को पूरा करती है तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न घटकों एवं शेष शैक्षिक विश्व समुदाय के मध्य सीधा संवाद स्थापित करती है। जन–सम्पर्क अधिकारी कार्यालय द्वारा विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट को भी हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार करके प्रकाशित किया गया।

अतिथि गृह

जे.एन.यू. के तीन अतिथि गृहों – अरावली, अरावली इंटरनेशनल और गोमती में समीक्षाधीन वर्ष के दौरान 4200 से अधिक अतिथियों को कमरे उपलब्ध कराए गए। इन अतिथियों में शोध सामग्री या अन्य शैक्षिक उद्देश्यों के लिए देश–विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/शिक्षा संस्थानों से दिल्ली आए शिक्षक तथा शोध छात्र शामिल हैं। विश्वविद्यालय के सरकारी अतिथियों, शिक्षकों तथा स्टाफ के अतिथियों, छात्रों के माता–पिताओं और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अतिथियों को भी अल्पकालिक अवधि के लिए आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराई गई थी।

हिन्दी एकक

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान हिंदी एकक ने विश्वविद्यालय के लिपिक वर्गीय विभिन्न श्रेणियों के कर्मियों को हिंदी में नोटिंग–ड्राफ्टिंग का प्रशिक्षण देने के लिए 5–दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित यह कार्यशाला 2 से 6 सितम्बर, 2002 तक चली। इसमें 10 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों के लिए एक लिखित परीक्षा आयोजित की गई। हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गोपाल कृष्ण चड्ढा ने परीक्षा में पहले तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र दिए गए।

विश्वविद्यालय के अधिकारी वर्ग के लिए भी इसी तरह की एक कार्यशाला आयोजित की गई, ताकि वे अपने अधीनस्थ कार्य करने वाले कर्मियों का हिंदी में कार्य करने के लिए मार्गदर्शन कर सकें। इसमें चार अधिकारियों ने भाग लिया। कुलपति महोदय ने अधिकारियों को भी नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए।

एकक ने 17 सितम्बर, 2002 को हिंदी दिवस का आयोजन किया। इसमें विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. करण सिंह मुख्य अतिथि थे। हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. नामवर सिंह ने इस समारोह की अध्यक्षता की। कुलपति, प्रो. गोपाल कृष्ण चड्ढा, कुलदेशिक – प्रो. राजीव कृष्ण सक्सेना, प्रो. केदारनाथ सिंह और प्रो. गंगा प्रसाद विमल ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया।

यूनिट ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान, वार्षिक रिपोर्ट, वार्षिक लेखे, लेखा–परीक्षा रिपोर्ट, प्रवेश सूचनाओं, भर्ती के लिए विज्ञापनों, अधिसूचनाओं/परिपत्रों, प्रेस विज्ञप्तियों आदि से संबंधित अनुवाद का कार्य भी किया।

मुख्य कुलानुशासक कार्यालय

विश्वविद्यालय के छात्रों में अनुशासन बनाए रखने से संबंधित विश्वविद्यालय के परिनियम–32 में उल्लेख है कि छात्रों से संबंधित अनुशासन और अनुशासनिक कार्रवाई संबंधी शक्तियाँ कुलपति में निहित होंगी। परिनियम–10 (3) (क) में उल्लिखित है कि कार्यपरिषद् द्वारा मुख्य कुलानुशासक की नियुक्त की जाएगी।

विश्वविद्यालय में मुख्य कुलानुशासक कार्यालय की स्थापना वर्ष 1986 में हुई थी। इस समय एक मुख्य कुलानुशासक और दो कुलानुशासक (इनमें से एक महिला कुलानुशासक है) हैं। यह कार्यालय विश्वविद्यालय के छात्रों में अनुशासन बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है। यह कार्यालय परिसर में शांति और सौहार्द्र बनाए रखने का कार्य करता है तथा यह दण्डात्मक उपायों की बजाय सुधारात्मक उपायों में अधिक विश्वास रखता है। फिर भी, अनुशासनात्मक नियमों का उल्लंघन करने वाले छात्रों के विरुद्ध उचित अनुशासनिक कार्रवाई की जाती है।

अध्याय–9
विश्वविद्यालय वित्त

I. लेखा और लेखा–परीक्षा पद्धति

विश्वविद्यालय के लेखे पांच भागों में रखे जाते हैं :

1. अनुरक्षण (योजनेतर) खाता : यह खाता विश्वविद्यालय के राजस्व, प्राप्तियों और अनुरक्षण खर्च से सम्बन्धित है।
2. विकास (योजना) खाता : इस खाते में विश्वविद्यालय के विकास से संबंधित लेन–देन का खाता रखा जाता है, जिसकी पूर्ति पंच–वर्षीय योजना के आबंटन से की जाती है।
3. उद्दिष्ट (विशेष) निधि खाता : इस खाते में विभिन्न केन्द्रीय सरकार के विभागों, यू.जी.सी., आई.सी.एस.एस.आर., सी.एस.आई.आर. आदि द्वारा वित्त–पोषित विशेष शोध परियोजनाओं, सम्मेलनों और अन्य प्रयोजनों आदि से संबंधित लेखा जोखा रखा जाता है।
4. ऋण, जमा आदि खाता : इस खाते में भविष्य निधि और अन्य जमाओं से संबंधित प्राप्तियों और अदायगियों का हिसाब रखा जाता है।
5. अध्येतावृत्ति खाता : इस खाते में "एट एनी वन गिविन टाइम बेसिस" योजना के अन्तर्गत शोध अध्येतावृत्तियों से संबंधित प्राप्तियों और अदायगियों का लेखा–जोखा रखा जाता है।

विश्वविद्यालय का वित्तीय वर्ष भारत सरकार के अनुरूप यानी 1 अप्रैल से अगले वर्ष की 31 मार्च तक होता है। विश्वविद्यालय के लेखों की वार्षिक लेखा–परीक्षा भारत के नियन्त्रक और महालेखा–परीक्षक की ओर से लेखा–परीक्षा निदेशक, केन्द्रीय राजस्व द्वारा की जाती है। भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय के परीक्षित लेखे अगले वर्ष की 31 दिसम्बर तक सदन के पटल पर रखे जाने अपेक्षित होते हैं। विश्वविद्यालय के वर्ष 2001–2002 के परीक्षित लेखे (हिन्दी और अंग्रेजी में) संसद के पटल पर रखने के लिए पहले ही मानव संसाधन विकास मन्त्रालय को 22 जुलाई 2003 को भेज दिए गए।

II. बजट

विश्वविद्यालय के वर्ष 2003–2004 के बजट आकलन और 2002–2003 के संशोधित आकलन 17 फरवरी, 2003 को वित्त समिति द्वारा अनुमोदित किए गए थे।

वर्ष 2002–2003 के संक्षिप्त बजट आकलन, संशोधित आकलन और प्राप्ति तथा व्यय के वास्तविक आंकड़े तालिका- 1 और 2 में दिए गए हैं :

तालिका–1 (प्राप्तियाँ)

लेखा शीर्ष	बजट आकलन 2002–2003	संशोधित आकलन 2002–2003	वास्तविक 2002–2003
	(रू. लाखों में)		
1. अनुरक्षण (योजनेतर) खाता			
i) भाग–1 (क)	6373.35	7018.83*	6535.69
ii) भाग–1 (ख)	138.04	104.43*	
2. विकास (योजना) खाता	242.16	520.12	975.00
3. उद्दिष्ट (विशेष) निधि खाता	983.87	1083.39	1797.86
4. ऋण, जमा आदि खाता	2225.70	2281.70	3398.08
5. अध्येतावृत्ति खाता	499.39	499.39	415.67

तालिका–2 (व्यय)

लेखा शीर्ष	बजट आकलन 2002–2003	संशोधित आकलन 2002–2003	वास्तविक 2002–2003
		(रूपये लाखों में)	
1. अनुरक्षण (योजनेतर) खाता			
i) भाग–1 (क)	6373.35	7018.93	5987.87
ii) भाग–1 (ख)	138.04	104.43	
2. विकास (योजना) खाता	242.16	520.12	854.65
3. उद्दिष्ट (विशेष) निधि खाता	767.35	907.00	1363.49
4. ऋण, जमा आदि खाता	2126.36	2330.41	3436.41
5. अध्येतावृत्ति खाता	499.39	499.39	286.58

- 17.2.2003 को हुई अपनी बैठक में वित्त समिति ने वर्ष 2002–2003 के लिए संशोधित आकलन योजनेतर के लिए 7018.83 लाख और प्लान स्किम मिलाने के कारण 104.43 रूपये अनुमोदित किए।

II. भाग–I–क अनुरक्षण (योजनेतर) व्यय/बजट/संशोधित आकलन/वास्तविक वर्ष 2002–2003 के लिए अनुरक्षण, व्यय और बजट का संक्षिप्त विवरण :

वास्तविक 2001–2002	लेखा शीर्ष	बजट आकलन 2002–2003	संशोधित आकलन 2002–2003	वास्तविक 2002–2003
		(रूपये लाखों में)		
433.36	प्रशासन	523.69	564.38	460.40
844.05	सामान्य सेवाएं और सामान्य प्रभार	1013.10	1130.75	923.75
1612.76	शैक्षिक कार्यक्रम	2289.13	1942.18	1884.03
12.75	परीक्षाएं	20.90	23.30	14.66
349.15	पुस्तकालय	414.31	414.03	357.55
79.63	छात्र सुविधाएं	100.54	95.76	90.81
25.56	छात्रवृत्तियाँ	34.00	30.00	30.32
196.37	छात्रों के छात्रावास	226.36	223.03	231.21
7.97	प्रकाशन	20.02	17.81	13.91
648.81	अन्य विभाग	705.88	831.89	704.85
283.72	विविध	294.53	319.26	359.54
652.30	भविष्य निधि और पेंशन	730.89	730.89	728.23
133.17	गैर शिक्षण स्टाफ को पांचवे वेतन आयोग के एरियर का भुगतान	615.55		188.61
*	मंहगाई भत्ते की घोषणा	–	80.00	*
5279.60	**कुल**	**6373.35**	**7018.83**	**5987.87**

* वर्ष 2001–2002 और 2002–2003 के वास्तविक सम्बन्धित लेखा–शीर्ष में शामिल हैं।

III. विकास (योजना) व्यय

वर्ष 2002–2003 के विकास खर्च की मुख्य मदें नीचे दी गई हैं :

			(रूपये लाखों में)
(क)	राजस्व (आवर्ती व्यय)		260.73
(ख)	विश्वविद्यालय कैम्पस का निर्माण –		
	1) संस्थान भवन	71.64	
	2) आवासीय भवन	120.19	
	3) विविध भवन	2.85	
	4) बाह्य सेवाएँ	1.74	196.42
(ग)	अन्य पूंजीगत व्यय		
	1) उपकरण	288.19	
	2) पुस्तकालय पुस्तकें और पत्रिकाएं	109.11	
	3) फर्नीचर	0.20	397.50
	कुल व्यय		854.65

परियोजनाएं

विभिन्न भारतीय और विदेशी एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं के सम्बन्ध में प्राप्तियां और अदायगियां (2002- 2003)

	वित्त–पोषक एजेंसी का नाम	परियोजनाओं की संख्या	प्राप्तियाँ	व्यय (रूपयों में)
1	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	19	1,309,272.00	2,535,212.00
2	अनिर्धारित अनुदान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	09	1,083,406.00	206,643.50
3	विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग	51	34,206,350.00	25,697,280.05
4	जैव–प्रौद्योगिकी विभाग	33	19,237,548.00	9,966,513.80
5	हिन्दुस्तान लीवर लि.	01		11,024.00
6	भारतीय पुनर्वास परिषद्	01	35,000.00	35,000.00
7	महासागर विकास विभाग	01		15,285.00
8	सांख्यिकी और कार्यक्रम मंत्रालय	01	197,900.00	243,291.00
9	परमाणु ऊर्जा विभाग	02		243,934.00
10	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय	02	148,787.00	179,979.00
11	गृह मंत्रालय			34,600.00
12	राष्ट्रीय उर्दू भाषा उन्नयन परिषद्	01	16,250.00	16,188.00
13	पांडिचेरी सरकार		128,800.00	14,730.00
14	सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय	02	2,957,500.00	840,824.00
15	ग्रामीण विकास मन्त्रालय	01		2,650.00
16	विदेश मंत्रालय			11,911.00
17	अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्	01	1,550,000.00	

18	विनरॉक/नेटकाम		782,304.00	649,626.00
19	भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	02	15,000.00	20,214.40
20	भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्		45,000.00	36,000.00
21	अन्तर–विश्वविद्यालय संकाय	02	58,256.00	79,783.00
22	प्रशासनिक ऊपरीशीर्ष प्रभार		5,417,105.00	12,454,848.00
23	सोसायटी फार इनोवेशन आफ डिवि. सेंटर		250,000.00	152,385.00
24	ऊर्जा वित्त निगम	01	39,084.00	37,000.00
25	कोशिकीय आणविक जीवविज्ञान पर सम्मेलन		27,000.00	
26.	टाटा शिक्षा ट्रस्ट		2,600,000.00	
27	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, दिल्ली (पर्यावरण विभाग)	01	203,470.00	294,972.00
28	श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय	01	60,000.00	25,000.00
29	केंद्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड		24,000.00	185,030.00
30	राजस्थान राज्य खनन एवं खनिज लि.	01	67,000.00	7,160.00
31	डी.ओ.ई.एन. पर्यावरण विभाग	08	3,163,564.00	3,962,070.00
32	आई.ए.आर.आई. (15वीं जैनेटिक्स कांग्रेस)	01	50,000.00	
33	राष्ट्रीय कृषि तकनीकी परियोजना	01	262,780.00	438,719.00
34	मद्रास अर्थशास्त्र संस्थान	01	213,605.57	210,051.00
35	रक्षा मंत्रालय	01	25,000.00	440,564.80
36	इंस्टीच्युट आन इमर्जिंग ट्रेंड्स ऑन कैंसर रिसर्च	01	302,427.00	506,071.00
37	भारतीय अनुसंधान परिषद – अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध		1,023,257.00	710,458.00
38	विकास अध्ययन संस्थान			28,830.00
39	ग्लेशियर रिसर्च ग्रुप		5,000.00	
40	अन्तरिक्ष विभाग	01	200,000.00	193,942.00
41	वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद्	20	2,146,199.00	2,823,396.10
42	भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्	04	11,386,986.00	7,269,594.50
43	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्		906,393.00	916,522.90
44	यू.एन.डी.पी. (टी.आई.एफ.ए.सी.)	01	57,500.00	39,072.00
45	ससेक्स विश्वविद्यालय (यू.के.)	02	147,138.00	147,138.00
46	वाशिंग्टन विश्वविद्यालय	01		36,803.00
47	इण्डो–शास्त्री कनाडियन संस्थान	01	245,000.00	241,799.00
48	फ्रांसीसी दूतावास			71,978.00
49	इटली दूतावास	01	180,684.00	199,354.00
50	फोर्ड फाउन्डेशन		19,638,085.00	2,649,838.00
51	यूरोपीय आयोग	03	1,286,736.86	2,470,667.00
52	यूनेस्को	07	4,213,335.90	512,832.00
53	कनाडा ग्लोबल			327,317.00

54	इण्डो–फ्रेंच (आई.एफ.सी.पी.ए.आर.)	01	471,000.00	
55	इण्डो–यू.एस. परियोजना (यू.एस.डी.ए.)	01	109,768.00	
56	रोग नियन्त्रण केंद्र	01		439,827.00
57	चाइल्ड लेबर सोशल इंक्लुजन			33,433.00
58	अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान		35,000.00	145,000.00
59	वेलकम ट्रस्ट	01	2,588,403.00	2,866,247.00
60	यूनिफेम	01		540,555.00
61	पोट्स मेमोरियल फाउंडेशन	01	2,043.00	
62	स्विस एजेंसी फार डिवलपमेंट ऐंड कार्पोरेशन	01	429,000.00	266,357.00
63	वर्ल्ड टेलीविजन ब्राडकास्टिंग			272,429.00
64	सेंटर फार इकोलाजी ऐंड हाइड्रोलाजी	01	318,335.00	208,044.00
65	ओमान दूतावास	01	949,352.00	
66	इंस्ट. आफ न्यूक्लियर वॅपन्स	01	48,038.00	36,180.00
67	वॉक्स वेगन	01	663,837.00	802,619.00
68	आस्ट्रेलियाई उच्चायोग	01		30,109.00
69	कोरियाई फाउंडेशन	03	100,240.00	283,398.00
70	कनाडा उच्चायोग	01		342,551.00
71	भारतीय रिजर्व बैंक चेयर	01	206,250.00	235,917.00
72	पर्यावरणीय विधि पर चेयर	01		77,945.00
73	राजीव गांधी फाउंडेशन चेयर	01		184,666.00
74	अम्बेडकर चेयर	01	366,134.00	330,043.00
75	सेठ श्री गर्दोजी (पंकज कोआप. हाउसिंग सोसायटी)		600,000.00	
76	डॉ. टी.के. ऊमन (समाजशास्त्र में एम.ए. छात्र हेतु पुरस्कार)		100,000.00	
77	रमण पोनी स्मारक निधि			8,000.00
78	एम.जे.के. थावराज स्मारक निधि			17,331.00
79	संस्कृत अध्ययन			14,661.00
80	बिंदु अग्रवाल			4,000.00
81	एच.एल. परवाना वृत्तिदान			12,013.00
82	ए.एन. भट्ट स्मारक निधि			4,100.00
83	डॉ. रेफेल इरुजुबिता			36,000.00
84	जूही प्रसाद			2,000.00
85	सज्जाद जहीर और रजिया जहीर			12,000.00
86	डॉ. शीला जुर्बिग			2,000.00

अध्याय– 10

परिसर विकास

समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय ने अन्य विकास कार्यों के साथ–साथ छात्रावासों, ट्रांजिट हाउस और पोस्ट डॉक्टरल फेलो छात्रावास का निर्माण कार्य किया।

विश्वविद्यालय ने कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान, विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र, पोस्ट–डॉक्टरल फेलो छात्रावास (चरण– I और –II), संस्कृत अध्ययन केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र का विस्तार, माही और मांडवी छात्रावास का कब्जा ले लिया है तथा इन भवनों को प्रयोग में लाया जा रहा है।

अ.जा. के छात्रों और अ.ज.जा. की छात्राओं हेतु छात्रावासों का निर्माण कार्य चल रहा है।

अकादमिक स्टाफ कालेज के भवन का निर्माण कार्य चल रहा है। इस भवन का कब्जा 30 जून 2003 तक मिल जाने की संभावना है। आने वाले सत्र से इस भवन को प्रयोग में लाने के लिए इसे तैयार किया जाएगा।

विश्वविद्यालय में आवासीय और गैर–आवासीय परिसरों में बिजली की आपूर्ति हेतु अलग–अलग मीटर लगाने कार्य शुरू किया गया है। इसके जुलाई 2003 तक पूरा हो जाने की संभावना है।

अध्याय – 11

यौन उत्पीड़न के विरुद्ध जेंडर संवेदनशीलन समिति

सर्वोच्च न्यायालय ने अगस्त 1997 में कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न के मामलों का पता लगाने और उनके निवारण हेतु संस्थाओं के उत्तरदायित्वों की पुष्टि करते हुए विशाखा बनाम राजस्थान राज्य की याचिका पर महत्वपूर्ण निर्णय पारित किया। एक माह बाद इस बारे में एक रिपोर्ट तैयार करने के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने प्रो. करुणा चानना की अध्यक्षता में एक चार सदस्यीय कार्यदल का गठन किया। इस कार्यदल को, इन मामलों की जांच करने के लिए किस तरह से एक समिति का गठन किया जाए; इस समिति के क्या–क्या कार्य होने चाहिएं और किस तरह की कार्य पद्धति अपनाई जाए, जिससे कार्यस्थलो पर यौन–उत्पीडन के मामलों को रोका जा सके आदि से संबंधित मामलों पर एक रिपोर्ट तैयार करने का कार्य सौंपा गया था। विश्वविद्यालय समुदाय के विभिन्न वर्गों से कई महिनों के विचार–विमर्श के बाद सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि एक ऐसी समिति का गठन किया जाए जो न केवल शिकायतों को सुने और उनका निवारण करे, अपितु जेंडर संवेदनशीलन का कार्य भी करे। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की 16 अप्रैल 1999 की अधिसूचना के अनुसार यौन उत्पीड़न के विरुद्ध जेंडर संवेदनशीलन समिति की स्थापना की गई। समिति के नियमों एवं कार्यप्रणाली को सिद्धान्त रूप से सितम्बर 2001 में स्वीकृति प्रदान की गई। फरवरी 2002 में डॉ. रूप मंजरी घोष की अध्यक्षता में गठित समिति ने विश्वविद्यालय को जीएसकैश के नियमों एवं कार्यप्रणाली से सम्बन्धित एक ड्राफ्ट रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रो. अशोक माथुर की अध्यक्षता में एक 2 सदस्यीय समिति ने जीएसकैश के नियमों एवं कार्यप्रणाली को अन्तिम रूप देने के बाद इन्हें 30 मई 2003 को विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद को प्रस्तुत कर दिया। कार्यपरिषद् के सदस्यों के कुछ सुझावों को शामिल करते हुए इसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया।

वर्ष 2002–2003 के लिए इस समिति के सदस्य हैं – सुश्री आर. महालक्ष्मी, डॉ. सोनझरिया मिंज और डॉ. हेमंत अधलखा, सुश्री [illegible] जमिल मैथ्यू और महेश गोपालन, डॉ. मालविका चौहान और डॉ. के.एम. इकरामुद्दीन, श्री पी.एस. चाहर श्री [illegible] खान और सुश्री ऐन्ना पंडा। हमारे थर्ड–पार्टी सदस्यों में शामिल हैं [illegible] महिला विकास केंद्र और जागोरी ([illegible] क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी संगठन) और प्रो. पेट्रीसिया [illegible] और सुश्री उर्वशी भूटालिया (सुप्रसिद्ध महिला [illegible])। इस समिति का कार्यकाल पहले एक वर्ष था, जिसे [illegible] कर दिया गया। इसमें प्रति वर्ष चुनाव के जरिए शिक्षकों और छात्र समुदाय से एक–एक प्रतिनिधि होगा, ताकि समिति की कार्यप्रणाली में दक्षता को बनाए रखा जा सके

अप्रैल 2002 से नवम्बर 2002 तक समिति की गतिविधियां

1. जुलाई 2002 में एक न्यूजलेटर जारी किया गया।
2. समिति स्वयंसेवकों का एक फोरम गठित किया गया, जिनमें जेएनयू समुदाय के विभिन्न वर्गों के सदस्य शामिल किए गए।
3. यौन उत्पीड़न पर जेएनयू की नीतियों पर जुलाई और अगस्त 2002 में एक पोस्टर कार्यशाला और नवम्बर 2002 में एक कार्टून प्रदर्शनी आयोजित की गई।
4. सभी केन्द्रों और प्रशासनिक कार्यालयों को यौन उत्पीड़न से सम्बन्धित सामग्री भेजी गई।
5. अक्तूबर 2002 में स्त्री अधिकार संगठन द्वारा एक नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया।
6. नौ मामले प्राप्त हुए; 2 मामले बिना किसी पक्षपात के बंद कर दिए गए; 2 मामलों पर अनुशासनिक कार्यवाही की गई; 3 मामलों पर अनुशासनिक कार्यवाही लम्बित पड़ी है; एक मामले में जांच चल रही है।

संवेदनशीलन गतिविधियां

वर्तमान समिति दिसम्बर 2002 में कार्यभार संभालने के बाद से विभिन्न गतिविधियों में संलग्न है। नवम्बर 2002 के अन्त में मौलाना आजाद मेडिकल कालेज की छात्रा के साथ हुई बलात्कार की घटना से दिल्लीवासियों को बहुत आघात पहुंचा। इस घटना के परिणाम स्वरूप परिसरवासियों विशेषकर महिलाओं में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हुई है। जीएसकैश

ने सुरक्षा सलाहकार समिति को नोटिस भेज कर उनसे इस तरह की घटनाओं की रोकथाम के लिए शैक्षिक परिसर में पर्याप्त रोशनी, निरन्तर गश्त और सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध करने का सुझाव दिया, ताकि जेएनयू समुदाय के लोग अपने शैक्षिक एवं अन्य कार्यो के लिए परिसर में बिना किस भय के आ जा सके।

समिति ने 30 मार्च 2003 तक अपने संवेदनशीलन कार्यक्रमों के तहत दो कार्यशालाएं आयोजित की। पहली कार्यशाला 14 फरवरी 2003 को हुई। इसमें शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारी और छात्र संघों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। इसमें समिति के पूर्व सदस्यों को अपने अनुभव प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया। मुख्य मुद्दा यह था कि 'यौन उत्पीड़न' के मामलों को कैसे स्पष्ट करे तथा झूठी शिकायत के संबंध में क्या किया जाना चाहिए। इन सब विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।

दूसरी कार्यशाला 20 फरवरी 2003 को हुई। इसमें छात्रावासों के अध्यक्षों तथा वरिष्ठ वार्डनों ने भाग लिया। जेएनयू में फरवरी के अन्त और अप्रैल के दौरान सभी छात्रावासों द्वारा 'हॉस्टल नाइट्स' आयोजित करने की परम्परा है। इसमें आयोजक छात्रावास के छात्रों को अन्य छात्रावासों के छात्र मित्रों तथा विश्वविद्यालय से बाहर के मित्रों को आमंत्रित करने की अनुमति होती है। इसमें कुछ अवसरों पर ऐसी अशोभनीय स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जो कि आयोजकों को हतोत्साहित कर देती हैं। समिति ने आमंत्रित सदस्यों से 'हॉस्टल नाइट्स' के दौरान उठने वाली समस्याओं और इनके निवारण के संबंध में विचार–विमर्श किया। यह निर्णय लिया गया कि छात्रावास समिति के सदस्य बैज लगाएं ताकि छात्र एवं उनके अतिथि इनकी पहचान आसानी से कर सकें, और जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क कर सकें। समिति के छात्र सदस्य के रूप में सभी छात्रावासों के एक–एक छात्र को भी इस अवसर पर तैनात किया जाएगा।

शिकायत निवारण एवं संकट प्रबन्धन

जनवरी–मार्च 2003 के दौरान समिति को जनवरी 2003 में एक छात्रा से विश्वविद्यालय के एक अधिकारी के विरुद्ध शिकायत का केवल एक नया केस प्राप्त हुआ। इस दौरान यह समिति पूर्व समिति द्वारा रिपोर्ट किए गए 2 मामलों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाही करने के संबंध में कुलपति से सम्पर्क करती रही। हमें यह रिपोर्ट करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि विश्वविद्यालय के अधिकारी से संबंधित एक मामले में विश्वविद्यालय ने इस समिति की सिफारिशों का अनुसरण करते हुए उस अधिकारी को दण्ड दिया। विश्वविद्यालय के एक संकाय सदस्य से सम्बन्धित मामले को विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद् द्वारा समिति को इस आधार पर वापस भेज दिया गया कि इस मामले में दोषी एवं विश्वविद्यालय वकील के द्वारा उठाए गए कुछ प्रश्नों का जवाब समिति द्वारा दिया जाए। समिति ने सुप्रसिद्ध वकील सुश्री इंद्रा जयसिंह से विचार–विमर्श किया और अपने मत के आधार पर उठाए गए मुद्दों में से कुछ को स्पष्ट किया। एक माह में समिति की रिपोर्ट में 14 मार्च 2003 को कुलपति प्रो. जी. के चड्ढा को प्रस्तुत कर दी गई।

वर्ष के लिए निर्धारित गतिविधियां

इस वर्ष के दौरान समिति, विशेषकर जुलाई 2003 से शुरू हो रहे मानसून सत्र में कुछ और संवेदनशीलन कार्यशालाएं आयोजित करने का विचार रखती है। परम्परानुसार नवम्बर 2003 में समिति अपनी अवधि के अन्त में एक वार्षिक रिपोर्ट तैयार करेगी और इसे विश्वविद्यालय समुदाय की एक आम सभा में प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्याय – 12

केन्द्रीय सुविधाएं

1. विश्वविद्यालय पुस्तकालय

जेएनयू पुस्तकालय एक अति आधुनिक और सुसज्जित विश्वविद्यालय पुस्तकालय है। देश के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में इसका सर्वोच्च स्थान है। यह 9 मंजिला टावर भवन में स्थित है तथा इसका कारपेट एरिया लगभग 1 लाख वर्ग फुट है। यह विश्वविद्यालय के शैक्षिक परिसर के मध्य में स्थित है तथा विश्वविद्यालय की सभी शैक्षिक गतिविधियों का केन्द्र है। इसके सभी अध्ययन कक्ष वातानुकूलित हैं और बिजली की आपूर्ति हमेशा रहती है। पुस्तकालय के अधिकतर कार्यों का कंप्यूटरीकरण हो गया है तथा बचे हुए कार्यों का कंप्यूटरीकरण हो रहा है। पुस्तकालय वर्ष भर प्रातः 9.00 बजे से शाम 8.00 बजे तक खुला रहता है तथा परीक्षा के दिनों में यह प्रत्येक सत्र में 45 दिन के लिए मध्य रात्रि के 12.00 बजे तक खुला रहता है। तथापि, पठन कक्ष की सुविधाएं वर्ष भर मध्य रात्रि के 12.00 बजे तक उपलब्ध रहती हैं। पुस्तकालय वर्ष में तीन राष्ट्रीय अवकाशों और होली के त्योहार के दिन बंद रहता है।

विश्वविद्यालय के नेत्रहीन छात्रों की विशेष जरूरतों को देखते हुए पुस्तकालय के प्रवेशद्वार के निकट हेलन केलर के नाम पर एक विशेष इकाई स्थापित की गई है। पुस्तकालय के भू–तल में ओपेक और इंटरनेट पर पढ़ने हेतु छात्रों के प्रयोग के लिए आठ कंप्यूटर लगाए गए हैं।

पाठकों के लिए सेवाएं

कुल मिलाकर 8622 छात्र, संकाय सदस्य और देश–विदेश के विश्वविद्यालयों/संस्थानों के विद्वानों ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान पुस्तकालय सुविधाओं का लाभ उठाया :

सदस्यता

	कुल सदस्यता	8622
1.	अन्य विश्वविद्यालयों/संस्थानों के छात्र	789
2.	संकाय सदस्य	423
3.	गैर -शिक्षण स्टाफ (प्रोजेक्ट स्टाफ सहित)	699
4.	अकादमिक स्टाफ कालेज के संकाय प्रशिक्षणार्थी	729
5.	छात्र	
	(क) स्नातक व स्नातकोत्तर छात्र	2614
	(ख) शोध छात्र	3083
	(ग) अंशकालिक छात्र	120
	(घ) विशेष सदस्यता	165
	कुल	8622

स्रोत सामग्री का आदान प्रदान

निधि की कमी और सूचना क्रांति के परिणामस्वरूप विश्व के समृद्ध पुस्तकालय भी सभी प्रकाशन खरीदने में असमर्थ हैं, इसलिए पुस्तकालयों ने एक दूसरे के संसाधनों का उपयोग करने की परिपाटी शुरू की है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारा पुस्तकालय भी 'डेलनेट', इनफिलिब नेट आदि का सदस्य बन गया है।

(क) **अन्तर–पुस्तकालय उधार व्यवस्था** : समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इस व्यवस्था के अन्तर्गत पुस्तकालय ने अन्य पुस्तकालयों से 124 प्रकाशन उधार मंगाए तथा उन्हें 163 प्रकाशन उधार दिए। अनुरोध पर पुस्तकों और पत्रिकाओं के आलेखों की फोटोकापियां भी भेजी हैं।

(ख) **पुस्तकालय सहयोग** : जेएनयू पुस्तकालय ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पुस्तकालय, नई दिल्ली के साथ एक सहयोगात्मक प्रबन्ध किया है। इसके अन्तर्गत दोनों संस्थानों के पुस्तकालय एक दूसरे की पुस्तकों/पत्रिकाओं आदि का लाभ उठा सकेंगे। समीक्षाधीन अवधि के दौरान दोनों संस्थानों के बीच इस तरह का सहयोग जारी रहा।

पुस्तकालय में प्राप्ति कार्यक्रम

(क) **पुस्तकें/पत्रिकाएं/सरकारी प्रकाशन** : समीक्षाधीन वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने लगभग 4545 पुस्तकें प्राप्त कीं। इनमें ख्यातिलब्ध विद्वानों तथा संगठनों से उपहार के तौर पर प्राप्त हुई 2267 पुस्तकें भी शामिल हैं। कुलपति, कुलदेशिक, कुलसचिव और केन्द्राध्यक्षों को उपहारस्वरूप भेंट की गई पुस्तकें तथा अन्य सामग्री भी पुस्तकालय ने प्राप्त की। इनमें मुख्य रूप से -- प्रो. ए. पार्थासारथी (जी. पार्थासारथी संग्रह) और जर्मन दूतावास से प्राप्त पुस्तकें और अन्य सामग्री शामिल हैं। समीक्षाधीन वर्ष के अन्त तक पुस्तकालय में कुल संग्रह 5,05,164 था।

(ख) **पत्रिकाएं** : पुस्तकालय ने 674 पत्रिकाएं यू.एन. डाक्यूमेंट्स और सीरियल मंगाए और 140 पत्रिकाएं उपहार स्वरूप प्राप्त की। वर्ष के दौरान पत्रिकाओं की खरीद पर कुल रू. 1,38,52,011.89 खर्च हुए। इसके अतिरिक्त 79 पत्रिकाएं (बायो मेडि. नेट रिव्यूज आनलाइन सहित) के लिए उत्कृष्टता अनुदान में से रू. 51,51,576 खर्च किए गए। 7 पत्रिकाओं के लिए पर्यावरण प्रबन्धन क्षमता विकास परियोजना विशेष अनुदान में से 2.10 लाख रूपये की राशि खर्च हुई।

(ग) ***प्रकाशनों का विनिमय*** : *पुस्तकालय ने अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन* संस्थान की *त्रैमासिक* पत्रिका -- "इंटरनेशनल स्टडीज" के बदले 48 शैक्षणिक पत्रिकाएं प्राप्त की।

पुस्तकालय कुछ प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों और विश्व संगठनों -- जैसे खाद्य एवं कृषि संगठन, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय और अन्तर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन को सूचनाएं भेजने का कार्य करता है। यह यूरोपीय आर्थिक आयोग के लिए रेफरल केन्द्र के रूप में भी काम करता है।

जेएनयू बुकशॉप

वर्ष 1986 में स्थापित जेएनयू बुकशॉप ने पुस्तकालय के लिए सभी पुस्तकों की खरीद की तथा समीक्षाधीन अवधि के दौरान उन पर 15 से 25 प्रतिशत छूट प्राप्त की। इस तरह पुस्तकों की खरीद पर पुस्तकालय ने 18,28,966.43 रू. खर्च किए और 3,49,042.00 रू. अतिरिक्त छूट के रूप में बचाए। इसके अतिरिक्त एजेंटों और पुस्तक वितरकों द्वारा भी सामान्य छूट दी गई।

तकनीकी सेवाएं

पुस्तकालय ने अक्टूबर 1989 से ए.ए.सी.आर.--II सूचीकरण नियम अपनाएं हैं और इसके बाद प्राप्त पुस्तकों का सूचीकरण कंप्यूटर से किया जा रहा है। इस तरह मानविकी और सामाजिक विज्ञान प्रभागों में "कालन क्लासिफिकेशन" पद्धति और विज्ञान प्रभागों में "यू.डी.सी." पद्धति का प्रयोग किया जाता है। पुस्तकालय का कैटलॉग 'ओपेक' और 'परम्परागत' कार्ड फॉर्म दोनों में उपलब्ध है। पुस्तकालय नियमित रूप से 'सूचिका' शीर्षक प्रलेखन सूची का प्रकाशन करता है। इसमें सामाजिक विज्ञान और क्षेत्रीय अध्ययनों से सम्बद्ध विषयों के चुने हुए लगभग 485 आलेखों की सूची होती है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान लगभग 10,974 आलेखों को सूचीबद्ध किया गया।

अखबारी कतरने

40 अंग्रेजी भाषा के भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों से अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन से संबंधित लगभग 23,569 अखबारी कतरने एकत्रित की गईं। समीक्षाधीन अवधि के दौरान इस संग्रह में 11.60 लाख अखबारी कतरने थी। सामाजिक विज्ञान, क्षेत्रीय अध्ययन और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्रों में देश भर में यह एक अद्वितीय संग्रह है।

नेत्रहीन छात्रों के लिए हेलन केलर इकाई

पुस्तकालय ने नेत्रहीन छात्रों के लिए हेलन केलर नाम से एक अलग इकाई स्थापित की है। इस इकाई में कुर्जवेल, जॉज, एम.एस. होम पेज रीडर और डक्सबरी ब्रेल ट्रांसलेटर आदि जैसे विशेष साफ्टवेयर प्रयोग में लाए जा रहे हैं। इस इकाई को स्पीच साफ्टवेयर, इंटरनेट, स्केनर और ओपेक सुविधाओं सहित चार कंप्यूटर उपलब्ध कराए गए हैं। पुस्तकालय ने नेत्रहीन छात्रों के उपयोग हेतु टेप रिकार्डर और खाली कैसेट भी उपलब्ध कराना जारी रखा।

जिल्दसाजी

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान पुस्तकालय की जिल्दसाजी यूनिट ने निम्नलिखित कार्य किए :

1.	कागज जिल्द	401
2.	गत्ते की जिल्द	600
3.	रजिस्टरों की जिल्द	84
	कुल	1085

रिप्रोग्राफी

समीक्षाधीन अवधि के दौरान पुस्तकालय के रिप्रोग्राफी अनुभाग ने निम्नलिखित कार्य किए :

पुस्तकों से अध्याय	72
पत्रिकाओं के आलेख	153

मानविकी प्रभाग (अफ्रो–एशियाई और यूरोपीय भाषाएं)

पुस्तकालय में फ्रेंच, जर्मन, पुर्तगाली, रूसी और इस्पानी भाषाओं की दुर्लभ और अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त पुस्तकालय में उर्दू, अरबी, फारसी और अन्य भारतीय भाषाओं जैसी प्राच्य भाषाओं का संग्रह भी काफी समृद्ध है। इन पुस्तकों की हमेशा मांग रहती है। भारतीय और विदेशी विद्वान इन पुस्तकों का लाभ उठाते हैं।

एक्जिम बैंक

ज.ने.वि. का अर्थशास्त्र पुस्तकालय – एक्जिम बैंक - ज.ने.वि. के अर्थशास्त्र पुस्तकालय की स्थापना जुलाई, 2000 में ज.ने.वि. पुस्तकालय के भाग के रूप में हुई थी। यह पुस्तकालय पश्चिमाबाद मोड़ के पास लघु शैक्षिक परिसर में स्थित है। इसके चारों ओर काफी हरे–भरे पेड़–पौधे हैं। इस पुस्तकालय में सामाजिक विज्ञान संस्थान और अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के शोध छात्रों और शिक्षकों के उपयोग के लिए अर्थशास्त्र क्षेत्र की 7500 से अधिक पुस्तकें और 52 पत्रिकाओं के 1500 पिछले भाग हैं। छात्रों और शिक्षकों को ओपेक, उधार सुविधा, संदर्भ और फोटो काफी की सुविधाएं मुहैया करवाई गई।

आटोमेशन और नेवटवर्किंग

पुस्तकालय में एक नए साफ्टवेयर – लिबसिस – की स्थापना की गई है। सभी कार्य इस पर किया जा रहा है। साफ्टवेयर में पुस्तकों, पत्रिकाओं और चयनित पत्रिकाओं के आलेख भी उपलब्ध हैं। बहुत से पत्रिका प्रकाशक इंटरनेट पर अपनी पत्रिका के नाम के साथ अनुक्रमणिका भी प्रकाशित करते हैं, जिससे पत्रिका की विषय सामग्री का पता चल जाता है। पत्रिका अनुभाग ने इन पत्रिकाओं तक अपनी पहुंच सुनिश्चित करने के लिए साइट लाइसेंस प्राप्त कर लिया है और आई.पी. स्थापित कर लिया है। पुस्तकालय का पूरा भवन लेन के माध्यम से जुड़ा है। यह विश्वविद्यालय वाइड एरिया नेटवर्क का एक भाग है। विश्वविद्यालय के सभी संस्थान, केन्द्र और महत्वपूर्ण कार्यालय नेटवर्क के माध्यम से पुस्तकालय सर्वर से जुड़े हैं। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी को छोड़कर कई यूरोपीय भाषाओं की पुस्तकों एवं विज्ञान की पुस्तकों के कुछ डाटाबेस पी.सी. पर उपलब्ध हैं।

डाटाबेसों की वर्तमान स्थिति

(i)	समीक्षाधीन अवधि के दौरान पुस्तकालय डाटाबेस में जोड़े गए ग्रंथ-सूची रिकार्ड		–	25,608
(ii)	31.3.2003 के अनुसार पुस्तकालय डाटा बेस की वर्तमान स्थिति –			
	(i)	पुस्तक और शोध ग्रंथ	–	2,00,327
	(ii)	सीरियल / पत्रिकाएं (भाग)	–	48,307
	(iii)	पत्रिकाओं के आलेख	–	66,986
	(iv)	सदस्यता	–	6,072

प्रोसेसिंग अनुभाग, पत्रिका अनुभाग, प्रलेखन अनुभाग, पाठक सेवा अनुभाग, मानविकी प्रभाग तथा विज्ञान प्रभाग को कम्प्यूटर उलब्ध कराए गए। यहां प्रोसस के साथ–साथ एक्सस कर सकते हैं। पुस्तकों, सामान्य पुस्तकों, पत्रिकाओं के

साथ–साथ आलेखों के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु संदर्भ अनुभाग में पाठकों हेतु दस टर्मिनल लगाए गए हैं। पुस्तकालय को फुल स्केल आटोमेशन के लिए तैयार किया है। इसमें पुस्तकालय में अर्जन, वितरण और संदर्भ सेवाओं की प्रक्रिया के लिए योजना बनाई गई है। पुस्तकालय में पत्रिकाओं और पुस्तकों के रिट्रोकंवर्शन और प्रलेखनों की बार कोडिंग तथा सदस्यों की संख्या जैसी फुल स्केल आटोमेशन प्रणाली पहले ही शुरू हो चुकी है। हालांकि, पुस्तकालय ने कंप्यूटरीकृत डाटाबेस में प्रलेखों को जारी करने/वापस करने के लिए आन लाइन पद्धति शुरू की है।

डेलनेट और इनफिलिबनेट

जेएनयू पुस्तकालय ने दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क और इनफिलिबनेट में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसने यूनियन केटलॉग के लिए अपने डाटाओं का योगदान दिया। डेलनेट से 'ओपेक' और इनफिलिबनेट के आनलाइन केटलॉग का प्रचालन शुरू हो गया है।

2. विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्रीकरण केन्द्र

समीक्षाधीन अवधि के दौरान केन्द्र ने वैज्ञानिक और शोध उपकरणों से संबंधित डिजाइन और विकास/निर्माण/मरम्मत संबंधी 322 कार्य पूरे किए। इन कार्यों में शामिल हैं – लेमिनार फ्लो बेंचिज, पर्यावरण विज्ञान संस्थान प्रयोगशाला हेतु फ्यूम हूड्स, इलेक्ट्रोफोरेसिस पॉवर सप्लाई, इलेक्ट्रोफोरेसिस अपरेटस, एसिड डाइजेशंस चॉम्बरा, प्लांट ग्रोथ चेम्बर। इसके अतिरिक्त, केन्द्र ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान सी.पी.टी. की मरम्मत, होमोजिनाइजर्स, आटोक्लेव्स, गामा चेम्बर, एस.एम.पी.एस., शेकर्स, पावर सप्लाइज, ओवरहेड प्रोजेक्टर्स, ट्रांस–इल्यूमीनेटर, कंप्यूटर्स, माइक्रोस्कोप्स, पी.एच. मीटर्स, वैक्यूम पम्प्स, डी.एन.ए. जेल कास्टिंग अपरेटस आदि से संबंधित मरम्मत कार्य किए।

I. उपकरणों की डिजाइन और विकास

जेएनयू की शोध प्रयोगशालाओं और जेएनयू के बाहर की प्रयोगशालाओं के लिए बिक्री हेतु एक मोराफेट आधारित रेग्यूलेटिड इलेक्ट्रोफोरेसिस पावर सप्लाई विकसित की गई। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इस प्रकार की दो यूनिटों की बिक्री की गई।

II. संसाधनों का सृजन

समीक्षाधीन अवधि के दौरान केन्द्र ने जेएनयू के बाहर के कार्य करने के लिए 12,000/–रु. की राशि अर्जित की।

III. कोर्स आयोजित किए

मानसून सत्र के दौरान जीवन विज्ञान संस्थान के एम–एस.सी. (प्रथम वर्ष) के छात्रों को प्रो. एस.के. शर्मा ने रेमेडियल फिजिक्स विषयक तीन क्रेडिट का एक कोर्स पढ़ाया।

IV. व्याख्यान

समीक्षाधीन अवधि के दौरान प्रो. शतेन्द्र कुमार शर्मा ने निम्नलिखित व्याख्यान दिए :

- 14 जून, 2002 को जेएनयू खेल–कूद विभाग में 'साइंस आफ योगा' विषयक व्याख्यान दिया।
- संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलाजी, लोंगोवाल (पंजाब) में 'न्यूक्लियर वेस्ट मैनेजमेंट–एनवायरमेंट इश्यूज' विषयक व्याख्यान दिया।
- अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में 'आप्टिकल स्पेक्ट्रोस्कॉपी इंस्ट्रूमेंटेशन' विषयक व्याख्यान दिया।
- अकादमिक स्टाफ कालेज, जेएनयू में 'इलेक्ट्रान ऐंड एटोमिक कोर्स माइक्रोस्कॉप्स' विषयक व्याख्यान दिया।
- 4 फरवरी, 2003 को सी.एस.आई.ओ. कांप्लेक्स, पूसा, नई दिल्ली में आयोजित सी.एस.आई.आर. की अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'रिसेंट ट्रेंड्स इन इंस्ट्रूमेंटेशन–पार्ट–I' विषयक व्याख्यान दिया।
- 4 फरवरी, 2003 को सी.एस.आई.ओ. कांप्लेक्स, पूसा, नई दिल्ली में आयोजित सी.एस.आई.आर. की अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'रिसेंट ट्रेंडस इन इंस्ट्रूमेंटेशन–पार्ट –II' विषयक व्याख्यान दिया।

V. शोध गतिविधियां

- "डिजाइन ऐंड डिवलपमेंट आफ लो कॉस्ट वीडियोस्कोप फार क्लिनीकल एक्जामीनेशन" विषयक शोध परियोजना सी.एस.आई.आर. को प्रस्तुत की गई।
- प्रो. शतेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा प्रस्तुत परियोजना के लिए सी.एस.आई.आर. ने 6.80 लाख रु. का अनुदान मंजूर किया।
- 'डिजाइन ऐंड डिवलपमेंट आफ गैस फील्ड पॉजीशन सेंसिटिव रेडिएशन डिटेक्टर' विषयक शोध आलेख इंस्ट्रूमेंट सोसाइटी आफ इंडिया की पत्रिका को प्रकाशन हेतु प्रस्तुत किया। यह आलेख प्रकाशन हेतु स्वीकार कर लिया गया है तथा जून, 2003 की पत्रिका के अंक में इसके प्रकाशित होने की संभावना है।

– स्टाकहॉम, स्वीडन में आयोजित 'फोटोनिक इलेक्ट्रोनिक ऐंड एटोमिक कोलिशंस 2003' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'इनवेस्टीगेशन आफ इफेक्ट आफ सिंगल ऐंड मल्टिपल आयोनीजेशन आन कोस्टर–क्रोनिंग ट्रांजीशंस इन हाई जैड एलिमेंट्स' विषयक शोध आलेख पोस्टर प्रजेंटेशन के लिए स्वीकार किया गया।

VI. समितियों की सदस्यता

– प्रो. शतेन्द्र कुमार शर्मा, रेफ्री, द जर्नल आफ फिजिक्स : बी एटोमिक ऐंड मोलक्यूलर फिजिक्स, यू.के.

– प्रो. शतेन्द्र कुमार शर्मा, सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय की 'डोयेक' सोसाइटी की कई प्रत्यायन समितियों में विशेषज्ञ रहे।

– प्रो. शतेन्द्र कुमार शर्मा, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला और लखनऊ विश्वविद्यालय के एम–एस.सी., एम.फिल. और पी–एच.डी. शोध ग्रंथों का मूल्यांकन करने के लिए परीक्षक रहे।

VII. अन्य गतिविधियां

– 17 दिसम्बर, 2002 को जेएनयू में कवि सम्मेलन का आयोजन किया।

– 17 मार्च, 2003 को छात्रों द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में भाग लिया।

3. विश्वविद्यालय रोजगार सूचना और मार्गदर्शन ब्यूरो

विश्वविद्यालय रोजगार सूचना और मार्गदर्शन ब्यूरो, जेएनयू का गठन विश्वविद्यालय रोजगार ब्यूरो हेतु राष्ट्रीय सेवा के वर्किंग ग्रुप की सिफारिशों के आधार पर किया गया है। इन सिफारिशों का अनुमोदन श्रम मंत्रालय द्वारा वर्ष 1962 में किया गया था। ब्यूरो ने विश्वविद्यालय में अपना कामकाज मई 1976 में दिल्ली प्रशासन और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के बीच समन्वय के साथ शुरू किया। दिल्ली प्रशासन ने निम्नलिखित स्टाफ को मंजूरी दी :

1.	रोजगार अधिकारी	–	एक
2.	तकनीकी सहायक	–	एक
3.	वरिष्ठ लिपिक	–	एक
4.	कनिष्ठ लिपिक	–	एक
5.	दफ्तरी	–	एक
6.	सफाईवाला (अंशकालिक)	–	एक

इस ब्यूरो को अप्रैल 1980 में चिकित्सा कार्मिकों के लिए "वैकेंसी एक्सचेंज" के रूप में घोषित किया गया। लेकिन जून, 1999 से इसे वापस ले लिया गया। अब यह ब्यूरो जून, 1999 से 'वैकेंसी एक्सचेंज' के रूप में कार्य नहीं करता।

वर्ष 2003–2004 के लिए दिल्ली प्रशासन द्वारा 6 लाख रुपए के बजट की व्यवस्था की गई। विश्वविद्यालय का एक वरिष्ठ शिक्षक प्रोफेसर-इन्चार्ज होता है और वह ब्यूरो के अध्यक्ष के रूप में कार्य करता है। ब्यूरो को जगह उपलब्ध कराने के अतिरिक्त, विश्वविद्यालय लेखन-सामग्री, फर्नीचर आदि भी उपलब्ध कराता है।

ब्यूरो के उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. विश्वविद्यालय के छात्रों और पूर्व छात्रों को पूर्णकालिक और अंशकालिक नौकरियों के लिए पंजीकृत करना;
2. विश्वविद्यालय के छात्रों और पूर्व छात्रों को स्व–रोजगार और अन्य जगहों पर उच्च/समान्तर अध्ययनों सहित रोजगार के बारे में व्यक्तिगत सूचना, मार्ग–दर्शन और सलाह उपलब्ध कराना;
3. व्यवसाय सूचना कक्ष में अन्य विश्वविद्यालयों, व्यवसायिक कोर्सों और स्व–रोजगार योजनाओं से संबंधित सामग्री रखना;
4. इस ब्यूरो में पहले से पंजीकृत रिकार्डों में नवीकरण करना, संशोधन करना और बदलना।
5. दिल्ली में पंजीकरण चाहने वाले जेएनयू के छात्रों का मार्गदर्शन करना और उनकी सहायता करना।

यह आशा की जाती है कि ब्यूरो इस विश्वविद्यालय के छात्रों के हित में वृहत् स्तर पर सेवा करेगा। समीक्षाधीन अवधि के दौरान (1.4.2002 से 31.3.2003 तक) ब्यूरो की उपलब्धियाँ निम्नलिखित थीं :

रोजगार सूचना, पंजीकरण एवं मार्ग–दर्शन

1. समीक्षाधीन अवधि के दौरान 15 उम्मीदवारों को पूर्णकालिक नौकरियों के लिए पंजीकृत किया गया।
2. ब्यूरो के लाइव रजिस्टर में कोई भी उम्मीदवार उपलब्ध नहीं था (क्योंकि ब्यूरो जून, 1999 से 'वैकेंसी एक्सचेंज' के रूप में कार्य नहीं कर रहा है और तदनुसार, पंजीकृत छात्रों के रिकार्ड वैकेंसी एक्सचेंज में स्थानांतरित कर दिए गए)।
3. समीक्षाधीन अवधि के दौरान ब्यूरो के पास किसी भी रिक्ति की सूचना नहीं आई, अतः ब्यूरो ने किसी भी उम्मीदवार का नाम नहीं भेजा।
4. इस ब्यूरो ने केन्द्रीय रोजगार कार्यालय से विज्ञापित रिक्तियों के लिए 4 उम्मीदवारों के आवेदन पत्र केन्द्रीय रोजगार कार्यालय को भेजे।
5. समीक्षाधीन अवधि के दौरान कैरियर से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए 253 उम्मीदवार ब्यूरो में आए। इसमें 113 उम्मीदवारों ने व्यक्तिगत मार्ग–दर्शन प्राप्त किया। 140 उम्मीदवारो ने भी स्व रोजगार, उच्च अध्ययन, छात्रवृत्तियों आदि के बारे में व्यक्तिगत सूचना आदि प्राप्त की।
6. ब्यूरो द्वारा 6 समूह परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। इन परिचर्चाओं से अनेक उम्मीदवारों को लाभ पहुंचा।
7. ब्यूरो के व्यवसाय सूचना कक्ष में पहले से ही अन्य विश्वविद्यालयों/संस्थानों की विवरण–पुस्तिकाएं तथा अन्य संबंधित सूचनाएं उपलब्ध हैं।

व्यक्तिगत सलाह और मार्ग–दर्शन

जरूरतमंद छात्रों को व्यक्तिगत सलाह और मार्ग–दर्शन भी उपलब्ध कराया गया।

क. विश्वविद्यालय कोर्ट के सदस्य

(1.4.2002 से 31.3.2003 तक)

1	डॉ. कर्ण सिंह, कुलाधिपति और अध्यक्ष	
2	प्रो. आशिष दत्ता, कुलपति	30.4.2002 तक
3	प्रो. गोपाल कृष्ण चड्ढा, कुलपति	30.4.2002 (दोपहर बाद) से
4	प्रो. हरबंस मुखिया, कुलदेशिक	30.4.2002 तक
5	प्रो. के.एल. शर्मा, कुलदेशिक	30.4.2002 तक
6	प्रो. कपिल कपूर, कुलदेशिक	30.4.2002 तक
7	प्रो. बलवीर अरोड़ा, कुलदेशिक	10.6.2002 से
8	प्रो. राजीव कृष्ण सक्सेना, कुलदेशिक (जीवन विज्ञान संस्थान के डीन होने के नाते 31.7.2002 तक विद्या परिषद् के पदेन सदस्य और कुलदेशिक के नाते 1.8.2002 से)	
9	डा. आर.एस. परोदा	
10	प्रो. अशोक झुनझुनवाला	
11	डॉ. अरुण निगवेकर	
12	डॉ. पी.जे. फिलिप	
13	प्रो. सुषमा जैन	19.6.2002 से
14	डॉ. मिलाप चन्द शर्मा	19.6.2002 से
13	श्री रमेश कुमार, कुलसचिव और सदस्य–सचिव	
16	श्री एस. नन्दक्योलयार, वित्त अधिकारी	
17	प्रो. आलोक भट्टाचार्य	
18	प्रो. आई.एन. मुखर्जी	
19	प्रो. आर.आर. शर्मा	1.2.2003 से
20	प्रो. प्रभात पटनायक	
21	प्रो. वसन्त जी. गद्रे	
22	प्रो. एच.सी. पाण्डे	1.2.2003 से
23	प्रो. डी.के. बैनर्जी	2.7.2002 तक और पुनः 16.8.2002 से 31.10.2002 तक
24	प्रो. कस्तूरी दत्ता	3.7.2002 से
25	प्रो. के.के. भारद्वाज	
26	प्रो. ए.के. रस्तोगी	
27	प्रो. ज्योतिंद्र जैन	
28	प्रो. आर. रामास्वामी	
29	प्रो. एम.एच. कुरेशी	31.8.2002 तक
30	प्रो. राजेन्द्र डेंगले	
31	प्रो. आर. कुमार	
32	प्रो. आर.के. काले	17.2.2003 से

33	श्री एस.के. खुल्लर	30.7.2002 से
34	प्रो. आर.के. जैन	8.11.2002 तक
35	प्रो. अब्दुल नफे	
36	प्रो. अलोकेश बरुआ	
37	डा. लालिमा वर्मा	
38	प्रो. वरुण साहनी	8.12.2002 तक
39	प्रो. के.पी. बाजपेई	9.12.2002 से
40	प्रो. शशिकांत झा,	8.1.2003 तक
41	प्रो. अनुराधा मित्र चिनॉय	9.1.2003 से
42	प्रो. कुलभूषण वारिकू	22.12.2002 तक
43	प्रो. डी.टी. नोरबू	23.12.2002 से 23.1.2003 तक
44	प्रो. उमा सिंह	24.1.2003 से
45	डा. अजय कुमार दुबे	
46	प्रो. सी.पी. चन्द्रशेखर	9.8.2002 तक
47	प्रो. अरुण कुमार	10.8.2002 से
48	प्रो. एम.एच. सिद्दिकी,	
49	प्रो. राकेश कुमार गुप्ता	29.8.2002 तक
50	प्रो. ज़ोया हसन	30.8.2002 से
51	प्रो. अशोक पार्थसारथी	31.7.2002 तक
52	प्रो. वी.वी. कृष्णा	1.8.2002 से
53	डा. रामा वी. बारू	
54	प्रो. एहसानुल हक़	
55	प्रो. दीपक कुमार	
56	प्रो. एस.के. थोरट	6.1.2003 तक
57	प्रो. असलम महमूद	7.1.2003 से
58	प्रो. पी.बी. मेहता	
59	प्रो. एस.ए. रहमान	30.6.2002 तक
60	प्रो. मो. असलम इस्लाही	1.7.2002 से
61	प्रो. एम. आलम	
62	प्रो. एस.जे. हवेवाला	28.2.2003 तक
63	प्रो. अनिल भट्टी	2.9.2002 से
64	प्रो. कल्पना खोसला	26.12.2002 तक
65	प्रो. एस.पी. गांगुली	31.1.2003 तक
66	प्रो. शान्ता रामाकृष्णा	
67	प्रो. मैनेजर पाण्डेय	
68	प्रो. वैश्ना नारंग	
69	प्रो. आर. तोमर	31.10.2002 तक
70	प्रो. पी.के. मोटवानी	1.11.2002 से

71 डॉ. प्रियदर्शी मुखर्जी 31.8.2002 तक
72 डॉ. माणिक लाल भट्टाचार्य 1.9.2002 से
73 प्रो. निरजा गोपाल जयाल
74 प्रो. राकेश भटनागर
75 प्रो. राजेन्द्र प्रसाद
76 प्रो. वी.एन. झा 11.3.2003 तक
77 डॉ. शशि प्रभा कुमार
78 प्रो. एस.के. दास 31.1.2003 तक
79 प्रो. उत्सा पटनायक
80 प्रो. ए.के. बारु 1.3.2003 से
81 प्रो. सुधा एम. कौशिक 1.8.2002 से
82 प्रो. जे. बिहारी 15.8.2002 तक
83 प्रो. जी.पी. मलिक 1.11.2002 से
84 प्रो. कमेषु 24.1.2003 तक
85 प्रो. सी.पी. कट्टी 25.1.2003 से
86 प्रो. एच.बी. बोहिदार
87 प्रो. सन्तोष के. कार
88 प्रो. कमल ए. मित्रा चिनॉय 15.1.2003 तक
89 डॉ. तुलसी राम 16.1.2003 से
90 डॉ. के.के. त्रिवेदी
91 डॉ. जेड.एस. कासमी 6.10.2002 तक
92 डॉ. चरनजीत सिंह 7.10.2002 से
93 डॉ. एस.के. गोस्वामी
94 डॉ. सुभ्रा भट्टाचार्य 30.10.2002 तक
95 डॉ. अरुण के. अत्री 31.10.2002 से
96 डॉ. सोन झरिया मिंज 15.8.2002 तक
97 डॉ. आर.सी. कोहा 16.8.2002 से
98 डॉ. एस.एस.एन. मूर्ति 14.9.2002 तक
99 डॉ. प्रसनजीत सेन 15.9.2002 से
100 डॉ. कविता सिंह
101 डॉ. अपर्णा दीक्षित 3.1.2003 तक
102 डॉ. के.जे. मुखर्जी 4.1.2003 से
103 डॉ. अनित प्रकाश
104 प्रो. जी. मुखोपाध्याय
105 डॉ. ए.के. महापात्रा
106 डॉ. अर्चना अग्रवाल
107 डॉ. चित्रा हर्षवर्धन
108 डॉ. दीपक शर्मा
109 डॉ. डी.के. लोबियाल
110 डॉ. पी.एस. खिलारे
111 डॉ. सत्यब्रत पटनायक 1.7.2002 से
112 डॉ. ए.एम. लिन
113 श्री एस.एस. मैत्रा
114 डॉ. आर.के. त्यागी
115 श्री रजनीश कुमार मिश्र
116 निदेशक, रमण अनुसंधान संस्थान, बंगलौर
117 निदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय आनुवंशिक इंजीनियरी और जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र, नई दिल्ली,
118 कमांडर, सेना कैडेट महाविद्यालय, देहरादून
119 कमांडेंट, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, पुणे.
120 निदेशक, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम
121 निदेशक, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई
122 कमांडेंट, सेना इलेक्ट्रानिक्स और मैकेनिकल इंजीनियरी महाविद्यालय, सिकन्दराबाद
123 कमांडेंट, सेना दूरसंचार इंजीनियरी महाविद्याविद्यालय,, महू
124 निदेशक, कोशिकीय और अणु जीव विज्ञान केन्द्र, हैदराबाद
125 कमांडेंट, सेना इंजीनियरी महाविद्यालय, पुणे
126 प्राचार्य, नौसेना इंजीनियरी महाविद्यालय, लोनावाला
127 निदेशक, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
128 निदेशक, भाभिकीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली.
129 निदेशक, सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ मेडिसिनल ऐंड एरोमेटिक प्लान्ट्स, लखनऊ.
130 निदेशक, केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
131 निदेशक, नेशनल सेन्टर फार प्लांट जीनोम रिसर्च, नई दिल्ली 4.2.2003 से
132 निदेशक, सूक्ष्म जैविक प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़
133 श्री मणि शंकर अय्यर, संसद सदस्य 9.2.2003 तक और पुनः 26.2.2003 से
134 श्री सुरेश चन्देल, संसद सदस्य 9.2.2003 तक और पुनः 26.2.2003 से
135 श्री त्रिलोचन कानूनगो, संसद सदस्य 9.2.2003 तक
136 श्री टी.एम. सेल्वागणपती, संसद सदस्य 26.2.2003 से
137 श्री सांमिक लहरी, संसद सदस्य 9.2.2003 तक और पुनः 26.2.2003 से
138 श्री पी.एच. पांडियन, संसद सदस्य 9.2.2003 तक
139 श्री पी.के. पटसानी, संसद सदस्य 26.2.2003 से
140 श्री प्रहलाद सिंह पटेल, संसद सदस्य 9.2.2003 तक और पुनः 26.2.2003 से
141 डॉ. एम.एन. दास, संसद सदस्य 21.2.2003 तक
142 श्री वी.जे. पण्डा, संसद सदस्य 6.3.2003 से
143 डॉ. महेश चन्द्र शर्मा संसद सदस्य 9.4.2002 तक
144 श्री वी.पी. आप्टे संसद सदस्य 29.8.2002 से 21.2.2003 तक और पुनः 6.3.2003 से
145 श्री एस. विदुथलाई विरुम्बी,, संसद सदस्य 21.2.2003 तक

146	डॉ. वी. मैत्रेयन, संसद सदस्य	6.3.2003 से	158	श्री सोमपाल	21.12.2002 तक
147	डॉ. बिप्लब दासगुप्ता, संसद सदस्य	21.2.2003 तक	159	प्रो. वी.ए. पई पनन्दीकर	21.12.2002 तक
148	प्रो. हरभजन सिंह सोच	21.12.2002 तक	160	श्री के. धर्मराजन	21.12.2002 तक
149	डॉ. लक्ष्मण सिंह कोठारी	21.12.2002 तक	161	श्री जी.एच. अमीन	21.12.2002 तक
150	श्री निर्मल वर्मा	21.12.2002 तक	162	श्री जे.सी. पन्त	21.12.2002 तक
151	प्रो. आर.एस. निगम	21.12.2002 तक	163	डॉ. स्नेह भार्गव	21.12.2002 तक
152	प्रो. यू.आर. राव	21.12.2002 तक	164	श्री आर.पी. बिल्लीमोरिया	21.12.2002 तक
153	श्री एम.सी. मेहता	21.12.2002 तक	165	श्री पी. परमेश्वरन	21.12.2002 तक
154	डॉ. एस. पदमावती	21.12.2002 तक	166	श्री एम.पी. मथाई	21.12.2002 तक
155	श्री एस.आर. फारूकी	21.12.2002 तक	167	श्री हिरण्यमय कार्लेकर	21.12.2002 तक
156	डॉ. एल.एम. सिंघवी	21.12.2002 तक	168	डॉ. अमित घोष	
157	श्री सी.के. बिड़ला	21.12.2002 तक	169	डॉ. सुशील कुमार	

ख. कार्य परिषद् के सदस्य

(1.4.2002 से 31.3.2003 तक)

1	प्रो. आशिष दत्ता,	कुलपति,	— अध्यक्ष	30.4.2002 तक
2	प्रो. जी.के. चड्ढा	कुलपति	-- अध्यक्ष	30.4.2002 (दोपहर बाद) से
3	प्रो. हरबंस मुखिया,	कुलदेशिक		30.4.2002 तक
4	प्रो. बलवीर अरोड़ा	कुलदेशिक		10.6.2002 से
5	प्रो. एम.एच. कुरैशी			31.8.2002 तक
6	प्रो. राजेन्द्र भोंसले			1.9.2002 से
7	प्रो. प्रभात पटनायक			
8	प्रो. आई.एन. मुखर्जी			31.1.2003 तक
9	प्रो. ज्योतिन्द्र जैन			1.2.2003 से
10	प्रो. राजीव कृष्ण सक्सेना			31.7.2002 तक
11	प्रो. ए.के. रस्तोगी			1.8.2002 से
12	प्रो. [illegible]			31.1.2003 तक
13	प्रो. [illegible]			1.2.2003 से
14	प्रो. [illegible]			2.7.2002 तक
15	प्रो. के.के. भारद्वाज			3.7.2002 से
16	प्रो. अशोक झुनझुनवाला			
17	डा. आर.एस. अरोड़ा			
18	डॉ. अरुणा [illegible]			
19	डा. [illegible]			
20	प्रो. सुषमा जैन			19.6.2002 से
21	डॉ. एस.के. गोस्वामी			19.6.2002 से
22	डॉ. मिलाप चन्द शर्मा			19.6.2002 से
19	निदेशक, नाभिकीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली			16.4.2002 तक
20	निदेशक, सूक्ष्म जैविक प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़			16.4.2002 तक

....

ग. विद्या परिषद के सदस्य
(1.4.2002 से 31.3.2003 तक)

1 प्रो. आशिष दत्ता, कुलपति – अध्यक्ष 30.4.2002 तक
2 प्रो. जी.के. चड्ढा, कुलपति – अध्यक्ष 30.4.2002 (दोपहर बाद) से
3 प्रो. हरबंस मुखिया, कुलदेशिक 30.4.2002 तक
4 प्रो. के.एल. शर्मा, कुलदेशिक 30.4.2002 तक
5 प्रो. कपिल कपूर, कुलदेशिक 30.4.2002 तक
6 प्रो. बलवीर अरोड़ा, कुलदेशिक 10.6.2002 से
7 प्रो. राजीव कृष्ण सक्सेना, कुलदेशिक (जीवन विज्ञान संस्थान के डीन होने के नाते 31.7.2002 तक विद्या परिषद् के पदेन सदस्य और कुलदेशिक के नाते 1.8.2002 से)
8 प्रो. आलोक भट्टाचार्य
9 प्रो. आई.एन. मुखर्जी
10 प्रो. आर.आर. शर्मा 1.2.2003 से
11 प्रो. प्रभात पटनायक
12 प्रो. वसन्त जी. गद्रे
13 प्रो. एच.सी. पाण्डे 1.2.2003 से
14 प्रो. डी.के. बैनर्जी 2.7.2002 तक और पुनः 16.8.2002 से 31.10.2002 तक
15 प्रो. कस्तूरी दत्ता 3.7.2002 से
16 प्रो. के.के. भारद्वाज
17 प्रो. ए.के. रस्तोगी
18 प्रो. ज्योतिन्द्र जैन
19 प्रो. आर. रामास्वामी
20 प्रो. एम.एच. कुरेशी 31.8.2002 तक
21 प्रो. राजेन्द्र डेंगले
22 प्रो. आर. कुमार
23 प्रो. आर.के. काले 17.2.2003 से
24 प्रो. वी.के. जैन 27.9.2002 तक
25 प्रो. सुषमा जैन 12.11.2002 से
26 श्री एस.के. खुल्लर 30.7.2002 से
27 प्रो. आर.के. जैन 8.11.2002 तक
28 प्रो. अब्दुल नफे 9.11.2002 से
29 प्रो. अलोकेश बरुआ
30 डॉ. लालिमा वर्मा
31 प्रो. वरूण साहनी 8.12.2002 तक
32 प्रो. के.पी. बाजपेई 9.12.2002 से
33 प्रो. शशि कांत झा 8.1.2003 तक
34 प्रो. अनुराधा मित्र चिनॉय 9.12.2002 से
35 प्रो. कुलभूषण वारिकू 22.12.2002 तक
36 प्रो. डी.टी. गोरबू (23.12.2002 से 23.1.2003 तक)
37 प्रो. उमा सिंह 24.1.2003 से
38 डॉ. अजय कुमार दुबे
39 प्रो. सी.पी. चन्द्रशेखर 9.8.2002 तक
40 प्रो. अरुण कुमार 10.8.2002 से
41 प्रो. एम.एच. सिद्दीकी
42 प्रो. राकेश कुमार गुप्ता 29.8.2002 तक
43 प्रो. जोया हसन 30.8.2002 से
44 प्रो. अशोक पार्थासारथी 31.7.2002 तक
45 प्रो. वी.वी. कृष्णा 1.8.2002 से
46 डॉ. रामा वी. बारू
47 प्रो. एहसानुल हक
48 प्रो. दीपक कुमार
49 प्रो. एस.के. थोरट 6.1.2003 तक
50 प्रो. असलम महमूद 7.1.2003 से
51 प्रो. पी.बी. मेहता
52 प्रो. एस.ए. रहमान 30.6.2002 तक
53 प्रो. मो. असलम इस्लाही 1.7.2002 से
54 प्रो. एम. आलम
55 प्रो. एस.जे. हवेवाला 28.2.2003 तक
56 प्रो. अनिल भट्टी 2.9.2002 से
57 प्रो. कल्पना खोसला 26.12.2002 तक
58 प्रो. एस.पी. गांगुली 31.1.2003 तक
59 प्रो. शान्ता रामाकृष्णा
60 प्रो. मैनेजर पाण्डेय
61 प्रो. वैश्ना नारंग
62 प्रो. आर. तोमर 31.10.2002 तक
63 प्रो. पी.के. मोटवानी 1.11.2002 से
64 डॉ. प्रियदर्शी मुखर्जी 31.8.2002 तक
65 डॉ. माणिक लाल भट्टाचार्य 1.9.2002 से
66 प्रो. निरजा गोपाल जयाल
67 प्रो. राकेश भटनागर
68 प्रो. राजेन्द्र प्रसाद
69 प्रो. वी.एन. झा 11.3.2003 तक
70 डॉ. शशि प्रभा कुमार
71 प्रो. एस.के. दास 31.1.2003 तक

72	प्रो. उत्सा पटनायक	
73	प्रो. ए.के. बासु	1.3.2003 से
74	प्रो. सुधा एम. कौशिक	1.8.2002 से
75	प्रो. जे. बिहारी	15.8.2002 तक
76	प्रो. जी.पी. मलिक	1.11.2002 से
77	प्रो. कर्मेषु	24.1.2003 तक
78	प्रो. सी.पी. कट्टी	25.1.2003 से
79	प्रो. एच.बी. बोहिदार	
80	प्रो. सन्तोष के. कार	
81	प्रो. कमल ए. मित्र चिनॉय	15.1.2003 तक
82	डॉ. तुलसी राम	16.1.2003 से
83	डॉ. के.के. त्रिवेदी	
84	डॉ. जेड.एस. कासमी	6.10.2002 तक
85	डॉ. चरणजीत सिंह	7.10.2002 से
86	डॉ. एस.के. गोस्वामी	
87	डॉ. सुधा भट्टाचार्य	30.10.2002 तक
88	डॉ. अरुण के. अत्री	31.10.2002 से
89	डॉ. सोन झारिया मिंज	15.8.2002 तक
90	डॉ. आर.सी. फोहा	16.8.2002 से
91	डॉ. एस.एस.एन. मूर्ति	14.9.2002 तक
92	डॉ. प्रसनजीत सेन	15.9.2002 से
93	डॉ. कविता सिंह	
94	डॉ. अपर्णा दीक्षित	3.1.2003 तक
95	डॉ. के.जे. मुखर्जी	4.1.2003 से
96	डॉ. अमित प्रकाश	
97	प्रो. जी. मुखोपाध्याय	
98	डॉ. ए.के. महापात्रा	
99	डॉ. अर्चना अग्रवाल	
100	डॉ. चित्रा हर्षवर्द्धन	
101	डॉ. दीपक शर्मा	
102	डॉ. डी.के. लोबियाल	
103	डॉ. पी.एस. खिलारे	
104	डॉ. सत्यब्रत पटनायक	1.7.2002 से
105	डॉ. ए.एम. लिन	
106	श्री एस.एस. मैत्रा	

107	डॉ. आर.के. त्यागी	
108	श्री रजनीश कुमार मिश्र	
109	डॉ. नवीन खन्ना	11.9.2002 से
110	डॉ. तपन चक्रबर्ती	11.9.2002 से
111	डॉ. एस.सी. जोशी	23.12.2002 तक और पुनः 8.1.2003 से
112	डॉ. जी.डी. गोयल	11.9.2002 से
113	प्रो. चंदन मुखर्जी	13.7.2002 तक
114	डॉ. अचिन चक्रबर्ती	11.9.2002 से
115	डॉ. वी.सी. साहनी	
116	डॉ. देबाशीष मोहन्ती	11.9.2002 से
117	डॉ. एस. शिवाजी	19.11.2002 तक
118	प्रो. सी.एम. राव	13.3.2003 से
119	ब्रिगेडियर इवान डेविड	11.9.2002 से
120	ब्रिगेडियर आर.एस. छटवाल	12.3.2003 तक
121	डॉ. वी.पी. सिंह	11.9.2002 से
122	डॉ. सी.एम. गुप्ता	19.11.2002 तक और पुनः 8.1.2003 से
123	मेजर जनरल विजय आगा	11.9.2002 से 7.1.2003 तक
124	मेजर जनरल राणा एस.के. कपूर	8.1.2003 से
125	डॉ. दीपांकर भट्टाचार्य	15.8.2002 तक
126	प्रो. के.ए. सुरेश	11.9.2002 से
127	डॉ. सुशील कुमार	27.7.2002 तक
128	डॉ. एस.पी.एस. खनूजा	11.9.2002 से
129	डॉ. अरुणा सितेश	11.9.2002 से
130	प्रो. सुब्रत सिन्हा	11.9.2002 से
131	प्रो. ए.एल. नागर	28.4.2002 तक
132	प्रो. सुमित सरकार	11.9.2002 से
133	सुश्री अरुन्धती घोष	
134	प्रो. शान्तनु चौधरी	11.9.2002 से
135	डॉ. सुनीता नारायण	11.9.2002 से
136	प्रो. के.पी. जैन	
137	प्रो. सोमनाथ बिस्वास	11.9.2002 से
138	प्रो. बी.एन. गोस्वामी	11.9.2002 से

घ. वित्त समिति के सदस्य
(1.4.2002 से 31.3.2003 तक)

1	प्रो. आशिष दत्ता, कुलपति	–	अध्यक्ष (30.4.2002 तक)
2	प्रो. गोपाल कृष्ण चड्ढा, कुलपति	–	अध्यक्ष (30.4.2002, दोपहर बाद से)
3	श्री रवि माथुर संयुक्त सचिव, मा.सं.वि.मं.	--	सदस्य
4	श्री वी.वी. पिपरसेनिया वित्त सलाहकार, मा.सं.वि.मं.	–	सदस्य
5	वित्त सलाहकार, वि.अ.आ.	–	सदस्य
6	डा. अमरेश बागची मानद प्रोफेसर राष्ट्रीय लोक वित्त और नीति संस्थान	-	सदस्य
6	श्री बी.एस. बासवान, आई.ए.एस. सचिव, भारत सरकार जनजातीय मामलों का मंत्रालय	--	सदस्य
7	श्री टी.एन. ठाकुर, आई.ए. ऐण्ड ए.एस. अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक ऊर्जा व्यापार निगम	–	सदस्य
9	श्री एस. नन्दक्योलयार वित्त अधिकारी, जे.एन.यू.	–	सदस्य

....

शिक्षक

क. विश्वविद्यालय के शिक्षक (31.3.2003 के अनुसार)

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
1. कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान		
1. आर.जी. गुप्ता	1. आर.सी. फोहा	1. डी.के. लोबियाल
2. कर्मेषु	2. सुश्री सोन झारिया मिंज	
3. के.के. भारद्वाज		
4. जी.वी. सिंह		
5. पी.सी. सक्सेना		
6. सी.पी. कट्टी		
7. एस बालासुन्दरम		
8. सुश्री एन. परिमाला		
2. पर्यावरण विज्ञान संस्थान		
1. सी.के. वार्ष्णेय	1. सुश्री जे.डी. शर्मा	1. पंडित सुदम खिलारे
2. वी. सुब्रमणियन	2. सुश्री सुधा भट्टाचार्य	
3. वी. राजमणि	3. अरुण के. अत्री	
4. जे. सुब्बा राव	4. एस. मुखर्जी	
5. सुश्री कस्तूरी दत्ता	5. ए.एल. रामानाथन	
6. डी.के. बैनर्जी		
7. जितेन्द्र बिहारी		
8. जी.पी. मलिक		
9. वी.के. जैन		
10. ए.के. भट्टाचार्य		
11. बृज गोपाल		
12. एस.आई. हसनैन		
13. कृष्ण गोपाल सक्सेना		
3. अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान		
अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र		
1. वी. विवेकानन्दन	1. चिन्तामणि महापात्रा	
2. सी.एस. राज	2. आर.एल. चावला	
3. आर.के. जैन	3. सुश्री के.पी. विजय लक्ष्मी	
4. अब्दुल नाफे		
राजनय, अंतर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र		
1. एस.के. दास	1. अमित एस. रे	
2. वी.एस. मणि	2. वी.के.एच. जम्भोलकर	
3. मनमोहन अग्रवाल	3. पी.आर. चौधरी	

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
4. पी.के. पन्त	4. भरत देसाई	
5. वाई के. त्यागी	5. गुरबचन सिंह	
6. बी.एस. चिमनी		
7. मनोज पन्त		
8. आलोकेश बरुआ		
पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र		
1. के.वी. केसवन	1. सुश्री लालिमा वर्मा	1. सुश्री मधु भल्ला
2. जी.पी. देशपाण्डेय	2. एच.एस. प्रभाकर	2. सुश्री अल्का आचार्य
3. आर.आर. कृष्णन		3. डी.वी. शेखर
अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र		
1. के.पी. बाजपेई	1. वरुण साहनी	
2. अमिताभ मट्टू	2. सी.एस.आर. मूर्ति	
	3. एस.एस. देवड़ा	
	4. एस.एस. जायसवाल	
रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र		
1. आर.आर. शर्मा	1. तुलसी राम	1. ताहिर असगर
2. अरविन्द व्यास	2. गुलशन सचदेवा	2. फूल बदन
3. सुश्री निर्मला एम. जोशी		3. एस.के. पाण्डेय
4. शमस–उद्–दीन		4. सुश्री भास्वती सरकार
5. ए.के. पटनायक		
6. शशिकांत झा		
7. सुश्री अनुराधा मित्र चिनॉय		
दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केन्द्र		
1. आई.एन. मुखर्जी	1. गंगनाथ झा	
2. एस.डी. मुनि	2. पी. सहदेवन	
3. बालादास घोषाल	3. सुश्री मनमोहिनी कौल	
4. सुश्री नेन्सी जेटली	4. सुश्री सविता पाण्डेय	
5. कुलभूषण वारिकू		
6. दावा टी. नोरबू		
7. सुश्री उमा सिंह		
8. एम.पी. लामा		
पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र		
1. सुश्री गुलशन डायटल	1. ए.के. पाशा	1. अश्विनी कुमार महापात्रा
2. जी.सी. पन्त	2. एस.एन. मालाकार	2. अनवार आलम
	3. पी.आर. कुमारस्वामी	
	4. पी.सी. जैन	
	5. अजय कुमार दुबे	

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध में एम.ए. पाठ्यक्रम

1. ओ.पी. बख्शी	1. कमल मित्र चिनॉय	

4. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान

अरबी और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र

1. एस.ए. रहमान	1. जहूरूल बारी आजमी	1. रिज़वानुर रहमान
2. मोहम्मद असलम इस्लाही	2. ए. बशीर अहमद	2. मुजीबुर रहमान
3. फैजुल्लाह फारुकी		

फारसी और मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. सुश्री एस.जे. हवेवाला	1. सुश्री जे.एस. कामरानी	1. एस.ए. हसनैन
2. एम. आलम	2. सैय्यद ऐनुल हसन	2. ए.एच. अंसारी
	3. अख्तर मेंहदी	

जापानी और उत्तर पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

1. पी.के. मोटवानी	1. सुश्री अनीता खन्ना	1. सुश्री नीरा कोंगरी
2. आर. तोमर	2. सुश्री मंजुश्री चौहान	2. डी.के. तिवारी
3. सुश्री सुषमा जैन	3. पी.ए. जॉर्ज	3. सुश्री वी. राघवन
		4. रविकेश
		5 सुश्री एम.वी. लक्ष्मी
		6. सुश्री जनश्रुति चन्द्रा

चीनी और दक्षिण पूर्वी एशियाई अध्ययन केन्द्र

	1. प्रियदर्शी मुखर्जी	1. हेमन्त अदलखा
	2. माणिक लाल भट्टाचार्य	2. देवेन्द्र रावत
		3. सुश्री सबरी मित्रा
		4. बी.आर. दीपक

भाषा विज्ञान और अंग्रेजी केन्द्र

1. कपिल कपूर	1. जी.वी. प्रसाद	1. ए. किदवई
2. एच.सी. नारंग	2. फ्रेंसन डी. मंजली	2. सुश्री नवनीत सेठी
3 सुश्री अन्विता अब्बी		
4. रघुवीर शरण गुप्ता		
5. सुश्री वैश्ना नारंग		
6 एस.के. सरीन		
7. एम.आर. प्रांजपे		
8 जी.के. पाण्डेय		

फ्रेंच और फ्रेंकाफोन अध्ययन केन्द्र

1. ए.एम. कुन्ते	1. प्रताप सेन गुप्ता	1. अभिजीत कारकून
2 सी. कृष्णा मूर्ति	2. सुश्री एन. कमला	2. एस. शोभा
3. के. माधवन	3. सुश्री किरन चौधरी	3. आशिष अग्निहोत्री
4. जी.डी. सिवम	4. सुश्री विजयलक्ष्मी राव	
5. सुश्री शान्ता रामाकृष्णा		

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
जर्मन अध्ययन केन्द्र		
1. प्रमोद तलगेरि	1. बी.जी. चक्रवर्ती	1. सुश्री चित्रा हर्षवर्धन
2. अनिल भट्टी	2. आर.सी. गुप्ता	2. सुश्री एस. नैथानी
3. सुश्री रेखा वैद्याराजन	3. सुश्री मधु साहनी	
4. एस.बी. ससालती		
5. राजेन्द्र डेंगले		
भारतीय भाषा केन्द्र		
1. मैनेजर पाण्डेय	1. मोहम्मद शाहिद हुसैन	1. गोविन्द प्रसाद
2. नसीर अहमद खान	2. पुरुषोत्तम अग्रवाल	2. सैय्यद मोहम्मद ए. आलम
3. गंगाप्रसाद विमल	3. वीर भारत तलवार	3. मज़हर हुसैन
		4. डी.के. चौबे
		5. के.एम. इकरामुद्दीन
रूसी अध्ययन केन्द्र		
1. आर.एस. बग्गा	1. चरणजीत सिंह	1. सुश्री मीता नारायण
2. के.एस. धींगरा	2. सुश्री मनु मित्तल	
3. के.पी.एस. उन्नी	3. नासर शकील रूमी	
4. एच.सी. पाण्डे	4. सुश्री रितु मालती जैरथ	
5. वाई.सी. भटनागर		
6. ए.के. बासु		
7. वरयाम सिंह		
8. सुश्री कल्पना खोसला		
9. रामाधिकारी कुमार		
10. शंकर बासु		
11. आर.एन. मेनन		
12. एस.सी. मित्तल		
इस्पेनी अध्ययन केन्द्र		
1. वसंत जी. गद्रे	1. अपराजित चट्टोपाध्याय	1. सुश्री नासरीन चक्रवर्ती
2. एस.पी. गांगुली	2. ए.के. धींगरा	2. सुश्री मीनू बख्शी
	3. सुश्री इंद्रानी मुखर्जी	3. एस.के. सन्याल
		4. राजीव सक्सेना
दर्शनशास्त्र ग्रुप		
	1. आर.पी. सिंह	
5. जीवन विज्ञान संस्थान		
1. आशिष दत्ता	1. एस.के. गोस्वामी	1. पी.सी. रथ
2. सुश्री सिप्रा गुहा मुखर्जी	2. के. नटराजन	2. दीपक शर्मा
3. राजेन्द्र प्रसाद		
4. सुश्री नजमा ज़हीर बाकर		

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
5. ए.के. वर्मा		
6. के.सी. उपाध्याय		
7. सगर चटर्जी		
8. राजीव के. सक्सेना		
9. आलोक भट्टाचार्य		
10. सुश्री सुधा महाजन कौशिक		
11. आर.एन.के. बामजेई		
12. आर.के. काले		
13. सुश्री आर. मधुबाला		
14. पी.के. यादव		
15. सुश्री नीरा बी. सरीन		
16. डी.एन. मलिक		
17. वी.सी. त्रिपाठी		
6. आणविक चिकित्साशास्त्र विशेष केन्द्र		
	1. जी. मुखोपाध्याय	1. आर.के. त्यागी
	2. सी.के. मुखोपाध्याय	2. एस.के. धर
		3. बालाजी प्रकाश
7. भौतिक विज्ञान संस्थान		
1. दीपक कुमार	1. संजय पुरी	
2. आर. रामास्वामी	2. सुधीर कुमार सरकार	
3. आर. राजारमन	3. सुश्री रूपमंजरी घोष	
4. अखिलेश पाण्डेय	4. एस.एस.एन. मूर्ति	
5. ए.के. रस्तोगी	5. प्रसनजीत सेन	
6. एच.बी. बोहिदार	6. शंकर प्रसाद दास	
	7. सुभाशीष घोष	
8. सामाजिक विज्ञान संस्थान		
आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र		
1. अंजन मुखर्जी	1. पी.के. चौधरी	1. सुश्री अर्चना अग्रवाल
2. सुश्री उत्सा पटनायक	2. के.जी. दस्तीदार	2. विकास रावल
3. प्रभात पटनायक	3. सुगातो दासगुप्ता	
4. रामप्रसाद सेन गुप्ता	4. पी.के. झा	
5. दीपक नैय्यर	5. अरिजीत सेन	
6. एस.के. जैन		
7. अभिजीत सेन		
8. डी.एन. राव		
9. सी.पी. चन्द्रशेखर		
10. अरुण कुमार		
11. सुश्री जयती घोष		

ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
1. एस. भट्टाचार्य	1. के.के. त्रिवेदी	1. सुश्री जोय एल.के. पचाऊ
2. हरबंस मुखिया	2. योगेश शर्मा	2. सुश्री आर. महालक्ष्मी
3. नीलाद्री भट्टाचार्य	3. सुश्री एच.पी. रे	3. हीरामन तिवारी
4. सुश्री तनिका सरकार	4. सुश्री कुम कुम राय	4. ज्योति अटवाल
5. बी.डी. चट्टोपाध्याय	5. इंदीवर काम्तेकर	5. सुश्री मीनाक्षी खन्ना (अवकाश रिक्ति)
6. एम.के. पलाट	6. सुश्री विजय रामास्वामी	
7. मुज़फ्फर आलम	7. सुश्री राधिका सिंह	
8. दिलबाग सिंह		
9. एम.एच. सिद्दीकी		
10. सुश्री मृदुला मुखर्जी		
11. आदित्य मुखर्जी		
12. रजत दत्ता		
13. कुणाल चक्रवर्ती		
14. भगवान सिंह जोश		
15. रणबीर चक्रवर्ती		

क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
1. जी.के. चड्ढा	1. सच्चिदानन्द सिन्हा	1. सुश्री सुचरिता सेन
2. सुश्री ए.एच. किदवई	2. बी.एस. बुटोला	2. मिलाप चन्द शर्मा
3. सुश्री एस.के. नांगिया	3. एम. सतीश कुमार	3. सुश्री ए. बन्धोपाध्याय
4. एम.एच. कुरेशी	4. अतुल सूद	
5. हरजीत सिंह		
6. एस.के. थोरट		
7. असलम महमूद		
8. आर.एस. श्रीवास्तव		
9. ए. कुन्डू		
10. के.एस. सिवासामी		
11. सुश्री सरस्वती राजू		
12. आर.के. शर्मा		
13. एम.डी. विमूरी		
14. पी.एम. कुलकर्णी		

राजनीतिक अध्ययन केन्द्र

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
1. कुलदीप माथुर	1. बी.एन. महापात्रा	1. ए. गजेन्द्रन
2. बलबीर अरोड़ा		
3. सुश्री किरण सक्सेना		
4. सुश्री सुधा पई		
5. राजीव भार्गव		
6. सुश्री जोया हसन		
7. आर.के. गुप्ता		
8. सुश्री गुरप्रीत महाजन		

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
विज्ञान नीति अध्ययन केन्द्र		
1. ए. पार्थसारथी	1. पी.एन. देसाई	
2. वी.वी. कृष्णा		
सामाजिक चिकित्सा–शास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र		
1. सुश्री इमराना क़ादिर	1. मोहन राव	1. सुश्री संघमित्रा शील आचार्य
2. जी.एस. शाह	2. के.आर. नायर	2. सुश्री अल्पना दया सागर
	3. सुश्री रामा वी. बारू	
	4. सुश्री रितु प्रिया मेहरोत्रा	
सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र		
1. के.एल. शर्मा	1. सुश्री तिपलुत नोंगब्री	1. अमित के. शर्मा
2. एम.एन. पाणिनी	2. सुश्री मैत्रेय चौधरी	2. सुश्री नीलिका मेहरोत्रा
3. दीपांकर गुप्ता	3. सुश्री एस. विश्वनाथन	3. विवेक कुमार
4. जे.एस. गाँधी	4. अविजित पाठक	
5. नन्दू राम	5. सुश्री रेणुका सिंह	
6. एहसानुल हक	6. एस.एस. जोधका	
7. आनन्द कुमार		
ज़ाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र		
1. सुश्री करुणा चानना	1. सुश्री गीता बी. नाम्बिसन	1. एस.एस. राव
2. बी.के. कादरिया	2. ध्रुव रैना	2. सुश्री मिनाती पाण्डा
3. दीपक कुमार		
दर्शनशास्त्र केन्द्र		
1. पी.बी. मेहता		
महिला अध्ययन कार्यक्रम		
	1. सुश्री मेरी ई. जॉन	
8. जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र		
1. राकेश भटनागर	1. उत्तम के. पति	1. एस.एस. मैत्रा
2. संतोष कार	2. सुश्री अपर्णा दीक्षित	
	3. के.जे. मुखर्जी	
	4. राजीव भट्ट	
	5. डी. चौधरी	
9. विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्रीकरण केन्द्र		
1. एस.के. शर्मा, निदेशक		
10. प्रौढ़, अनुवर्ती शिक्षा और विस्तार यूनिट		
1. एस.वाई. शाह	1. सुश्री शांता कृष्णन	
	2. एम.सी. पॉल	

प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सहायक प्रोफेसर
11. विधि और अभिशासन अध्ययन केन्द्र		
1. सुश्री नीरजा गोपाल जयाल	1. अमित प्रकाश 2. सुश्री अमिता सिंह 3. सुश्री नन्दनी सुन्दर	1. राम सिंह 2. जयवीर सिंह
12. सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान **प्रोफेसर / निदेशक**		
1. जे.आर. अरोड़ा		1. ए.एम. लिन
13. संस्कृत अध्ययन केन्द्र		
	1. सुश्री शशि प्रभा कुमार	1. रजनीश कुमार मिश्र 2. सन्तोष कुमार शुक्ल 3. हरी राम मिश्र 4. राम नाथ झा 5. गिरीश नाथ झा
14. कला और सौन्दर्यशास्त्र संस्थान		
1. ज्योतिन्द्र जैन	1. सुश्री कविता सिंह 2. सुश्री विष्णुप्रिया दत्त 3. सुश्री शुक्ला सावन्त 4. एच.एस. शिव प्रकाश	

ख. मानद प्रोफेसर

(31.3.2003 के अनुसार)

I. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान

1. प्रोफेसर एम.एस. राजन
2. प्रोफेसर आर.पी. आनन्द
3. प्रोफेसर एम.एस. वेंकटरमानी

II. भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान

1. प्रोफेसर के.जे. महाले
2. प्रोफेसर नामवर सिंह
3. प्रोफेसर मो. हसन
4. प्रोफेसर एस. डे
5. प्रोफेसर एस.डी. वर्मा
6. प्रोफेसर एच.एस. गिल
7. प्रोफेसर के.एन. सिंह

III. जीवन विज्ञान संस्थान

1. प्रोफेसर पी.एन. श्रीवास्तव

IV. सामाजिक विज्ञान संस्थान

1. प्रोफेसर रोमिला थापर
2. प्रोफेसर डी. बैनर्जी
3. प्रोफेसर बिपिन चन्द्रा
4. प्रोफेसर जी.एस. भल्ला
5. प्रोफेसर तपस मजूमदार
6. प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह

ऑनरेरी प्रोफेसर

क्र.सं.	नाम	केन्द्र / संस्थान
1.	प्रो. जे.एन. कपूर	कं. और पद्धति विज्ञान संस्थान
2.	डा. मनमोहन सिंह	क्षे.वि.अ.कें. / सा.वि.सं.
3.	प्रो. एस.के. खन्ना	क्षे.वि.अ.कें. / सा.वि.सं.
4.	प्रो. वाई.के. अलघ	क्षे.वि.अ.कें. / सा.वि.सं.
5.	श्री के.आर. नारायणन (भारत पूर्व राष्ट्रपति)	सा.वि.सं.

ग. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान नियुक्त शिक्षकों की सूची

क्र.सं.	नाम/पदनाम	केन्द्र/संस्थान	नियुक्ति तिथि
	प्रोफेसर		
1	प्रो. रणबीर चक्रवर्ती	ऐ.अ.कें./सा.वि.सं.	1.8.2002
	सह प्रोफेसर		
1	डॉ. गुरबचन सिंह	अ.अ.सं.	26.6.2002
2	डॉ. अरिजीत सेन	सा.वि.सं.	1.4.2002
	सहायक प्रोफेसर		
1	मीनाक्षी खन्ना (अवकाश रिक्ति)	ऐ.अ.कें./सा.वि.सं.	3.5.2002
2	श्री राम सिंह	वि. और अ.अ. के.	31.1.2002
3	गिरीश नाथ झा	सं.अ.के.	29.4.2002
4	जयवीर सिंह	वि. और अ.अ. के.	28.2.2003

घ. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान सेवानिवृत्त/अंतिम रूप से सेवानिवृत्त शिक्षकों की सूची

1	प्रो. एल.के. पाण्डे	प.वि.सं.	14.10.2002
2	प्रो. ए. सेनगुप्ता	अ.अ.सं.	9.6.2002
3	प्रो. सुरजीत मानसिंह	अ.अ.सं.	9.4.2002
4	प्रो. ए. रमेश राव	जी.वि.सं.	21.7.2002
5	प्रो. ए.के. रे	सा.वि.सं.	20.2.2003
6	प्रो. इम्तियाज़ अहमद	सा.वि.सं.	30.4.2002
7	प्रो. ए.के. माथुर	सा.वि.सं.	14.5.2002
8	प्रो. कुसुम चोपड़ा	सा.वि.सं.	25.8.2002
9	प्रो. टी.के. ऊमन	सा.वि.सं.	22.10.2002
10	प्रो. एस.सी. घोष	सा.वि.सं.	26.7.2002

ङ. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान त्याग–पत्र देने वाले शिक्षकों की सूची

1	डॉ. बालाजी प्रकाश सहायक प्रोफेसर	आ.चि.शा.वि.के.	18.10.2002
2	प्रो. वी.एन. झा	सं.अ.के.	11.3.2003

च. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान पुनर्नियुक्त शिक्षकों की सूची

क्र.सं.	शिक्षक का नाम	केन्द्र/संस्थान	तिथि तक
1	प्रो. नज़मा जहीर बाकर	जी.वि.सं.	10.8.2005
2	प्रो. ए. पार्थसारथी	सा.वि.सं.	10.7.2005
3	प्रो. करुणा चानना	सा.वि.सं.	12.8.2005

छ. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान स्थायी हुए शिक्षकों की सूची

क्र.सं.	शिक्षक का नाम	पदनाम	केन्द्र/संस्थान	स्थायी होने की तिथि
1	डॉ. स्वर्ण सिंह जसवाल	सह प्रोफेसर	अं.अ.सं.	16.1.2001
2	डॉ. जी. मुखोपाध्याय	सह प्रोफेसर	आ.चि.शा.वि.के.	23.1.2001
3	डॉ. सी.के. मुखोपाध्याय	सह प्रोफेसर	आ.चि.शा.वि.के.	9.4.2001
4	डॉ. आर.के. त्यागी	सहायक प्रोफेसर	आ.चि.शा.वि.के.	20.4.2001
5	डॉ. के. नटराजन	सह प्रोफेसर	जी.वि.सं.	31.5.2001
6	प्रो. पी.बी. मेहता	प्रोफेसर	सा.वि.सं.	14.5.2001
7	डॉ. मेरी ई. जॉन	सह प्रोफेसर	म.अ./सा.वि.सं.	1.8.2001
8	डॉ. भास्वती सरकार	सहायक प्रोफेसर	अ.अ.सं	20.7.2001
9	डॉ. फूल बदन	सहायक प्रोफेसर	अ.अ.सं	20.7.2001
10	डॉ. गुलशन सचदेवा	सह प्रोफेसर	अ.अ.सं	20.7.2001
11	डॉ. एस.के. धर	सहायक प्रोफेसर	आ.चि.शा.वि.के.	17.7.2001
12	प्रो. के.पी. बाजपेई	प्रोफेसर	अ.अ.सं.	4.10.2001
13	प्रो. बी.एन. मलिक	प्रोफेसर	जी.वि.सं.	28.9.2001 दोपहर बाद
14	प्रो. अमिताभ मट्टू	प्रोफेसर	अ.अ.सं.	12.11.2001
15	डॉ. हरी राम मिश्र	सहायक प्रोफेसर	सं.अ.के.	1.10.2001
16	डॉ. राम नाथ मिश्र	सहायक प्रोफेसर	सं.अ.के	1.10.2001
17	प्रो. नीरा भल्ला सरीन	प्रोफेसर	जी.वि.सं.	28.9.2001 दोपहर बाद
18	प्रो. आर.एस. श्रीवास्तव	प्रोफेसर	सा.वि.सं.	1.10.1999
19	प्रो. नीरजा गोपाल जयाल	प्रोफेसर	वि. और अ.अ.के	1.10.2001
20	डॉ. अमित प्रकाश	सह प्रोफेसर	वि. और अ.अ.के.	3.10.2001
21	डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल	सहायक प्रोफेसर	सं.अ.के.	1.10.2001
22	सुश्री ज्योति अटवाल	सहायक प्रोफेसर	सा.वि.सं.	5.11.2001
23	डॉ. अमिता सिंह	सह प्रोफेसर	वि. और अ.अ.के.	1.11.2001
24	प्रो. गुरप्रीत महाजन	प्रोफेसर	सा.वि.सं.	1.10.2001
25	डॉ. रजनीश कुमार मिश्र	सहायक प्रोफेसर	सं.अ.के.	1.10.2001
26	श्री रविकेश	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	13.11.2001
27	डॉ. विवेक कुमार	सहायक प्रोफेसर	सा.वि.सं.	13.11.2001
28	डॉ. प्रवीण कुमार झा	सह प्रोफेसर	सा.वि.सं.	1.10.2001
29	डॉ. राजीव सक्सेना	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	13.11.2001
30	डॉ. राईद अख़्तर हुसैन	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	1.10.2001
31	डॉ. अखलाक़ अहमद अंसारी	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	1.10.2001
32	डॉ. शशि प्रभा कुमार	सह प्रोफेसर	सं.अ.के.	27.11.2001
33	डॉ. नंदनी सुन्दर	सह प्रोफेसर	वि. और अ.अ.के.	1.1.2002

34	डॉ. रितु प्रिया मेहरोत्रा	सह प्रोफेसर	सा.वि.सं.	16.11.2001
35	डॉ. अतुल सूद	सह प्रोफेसर	सा.वि.सं.	29.11.2001
36	प्रो. पी.एम. कुलकर्णी	प्रोफेसर	सा.वि.सं.	20.11.2001
37	प्रो. ज्योतिन्द्र जैन	प्रोफेसर	क. और सौ.शा.सं.	1.11.2001
38	डॉ. रिज़वानुर रहमान	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	1.10.2001
39	सुश्री सिवसंकरन शोबा	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	13.11.2001
40	डॉ. अशिष अग्निहोत्री	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	13.11.2001
41	श्री मुजीबुर रहमान	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	5.12.2001
42	सुश्री जनश्रुती चन्द्रा	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	28.1.2002
43	सुश्री एम.वी. लक्ष्मी	सहायक प्रोफेसर	भा.सा. और सं.अ.सं.	7.1.2002
44	डॉ. संजय कुमार पाण्डेय	सहायक प्रोफेसर	अं.अ.सं.	6.8.2001
45	डॉ. एच.एस. शिव प्रकाश	सह प्रोफेसर	क. और सौ.शा.सं.	11.12.2001

ज. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान स्वैच्छिक सेवानिवृत्त शिक्षक

क्र.सं.	नाम व पदनाम	केन्द्र/संस्थान	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	प्रो. अरविन्द व्यास	रूसी, मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र/अ.अ.सं.	1.10.2002

झ. 1.4.2002 से 31.3.2003 के दौरान संकाय सदस्यों को मंजूर किया गया अध्ययन अवकाश/आवधिक अवकाश और असाधारण अवकाश

1. प्रो. नन्दू राम, सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसिस, महू, मध्य प्रदेश में महानिदेशक का पद स्वीकार करने के लिए 1.10.2001 से 30.9.05 (4 वर्ष) तक की अवधि की प्रतिनियुक्ति मंजूर की गई।

2. प्रो. बलबीर अरोड़ा, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को हारवर्ड युनिवर्सिटी, एशिया सेंटर, केम्ब्रिज, यू.के. में, 'इण्डिया'स न्यू फेडरल पालिटी' विषयक पुस्तक लिखने के लिए 6.12.2002 से 5.1.2003 तक के शीतकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 7.1.2002 से 5.12.2002 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

3. प्रो. डी.टी. नोरबू, दक्षिण, मध्य, एशिया–पूर्व एशियाई और दक्षिण, पश्चिम महासागरीय अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को हारवर्ड युनिवर्सिटी, एशिया सेंटर, केम्ब्रिज, यू.के. में अपनी शोध परियोजना पूरी करने के लिए 6.12.2002 से 5.1.2003 तक के शीतकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 6.1.2002 से 5.12.2002 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

4. श्री जोसफ बारा, सम्पादक, सामाजिक विज्ञान संस्थान, का दिल्ली विश्वविद्यालय की पी–एच.डी. उपाधि के लिए शोध कार्य करने के लिए 3.10.2001 से 2.4.2002 (6 माह) तक की अवधि का अध्ययन अवकाश बढ़ाया गया।

5. प्रो. मनमोहन अग्रवाल, राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को 'ट्रेड ऐंड एनवायरनमेंट इन दिल्ली' विषयक शोध कार्य करने के लिए 6.12.2002 से 5.1.2003 तक के शीतकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 7.1.2002 से 5.12.2002 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

6. डॉ. स्वर्ण सिंह जसवाल, सह प्रोफेसर, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को पीकिंग विश्वविद्यालय, बीजिंग, चीन में एशिया फेलोशिप प्रोग्राम के तहत अनुदान स्वीकार करने के लिए 25.4.2001 से 21.7.2001 तक और 16.11.2001 से 15.2.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

7. डॉ. फरिदा ए. खान, सहायक प्रोफेसर, जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर नियुक्ति स्वीकार करने के लिए 28.1.2002 से 27.1.2004 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

8. प्रो. ए.के. वर्मा, जीवन विज्ञान संस्थान, को इण्डो–जर्मन बाइलेटरल कोआपरेशन परियोजना के तहत जर्मनी का दौरा करने के लिए 29.1.2002 से 15.2.2002 तक ड्यूटी छुट्टी, 16.2.2002 से 24.2.2002 तक अर्जित छुट्टी, 25.2.2002 से 11.3.2002 तक अर्धवेतन छुट्टी और 12.3.2002 से 20.3.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

9. प्रो. बालादास घोषाल, दक्षिण, मध्य, दक्षिण–पूर्व एशियाई और दक्षिण पश्चिम महासागरीय अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को ग्रेजुएट स्कूल, युनिवर्सिटी उतरा, मलेशिया में प्रोफेसर का पद स्वीकार करने के लिए 2.1.2002 से 1.1.2004 तक के स्थान पर 4.2.2002 से 4.1.2004 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

10. डॉ. डी. भट्टाचार्य, सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसिस, कलकत्ता द्वारा प्रदान की गई फेलोशिप स्वीकार करने के लिए 7.1.2002 से 6.7.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

11. सुश्री नारारीन चक्रवर्ती, सहायक प्रोफेसर, इस्पेनी अध्ययन केन्द्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, को अमेरिका में अपनी पुत्री सुश्री रोरिना को कुछ और अधिक समय के लिए तार्किक और नैतिक सहयोग करने के लिए 17.10.2001 से 13.12.2001 तक की अवधि का अर्धवेतन अवकाश मंजूर किया गया।

12. डॉ. चिन्ना राव यागती, शोध अधिकारी, शैक्षिक रिकार्ड शोध यूनिट, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को द चार्ल्स वालेक इण्डिया ट्रस्ट, यू.के. द्वारा प्रदान की गई विजिटिंग फेलोशिप स्वीकार करने के लिए 1.3.2002 से 10.6.2002 तक की अवधि का अध्ययन अवकाश मंजूर किया गया।

13. प्रो. एस.ए. रहमान, अरबी और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, को अपनी दो पुस्तकें पूरा करने के लिए 13.5.2003 से 21.7.2003 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2002 से 12.5.2003 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

14. डॉ. मोहन राव, सह प्रोफेसर, सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को 'क्रिटिकली इग्जामिनिंग इण्डिया'स फैमिली प्लानिंग प्रोग्राम' विषयक पुस्तक पर कार्य करने और मेलबोर्न विश्वविद्यालय की सर गुस्ताव नोशल इंटरनेशनल फेलोशिप फार लीडरशिप इन हैल्थ रिफार्म में भाग लेने के लिए 13.5.2003 से 21.7.2003 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2002 से 12.5.2003 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

15. प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को 'टेररिज्म इन इण्डिया', विषयक पुस्तक पूरी करने के लिए 13.5.2004 से 21.7.2004 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2003 से 12.5.2004 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

16. डॉ. फरीदा ए. खान, सहायक प्रोफेसर, जाकिर हुसैन शैक्षिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर का पद स्वीकार करने के लिए 28.1.2002 से 27.1.2004 तक के अवकाश के स्थान पर 28.1.2002 से 27.1.2003 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

17. डॉ. रूपमंजरी घोष, सह प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान संस्थान, को लैबोरेट्रिक दे फोटोनिक एट नैनोस्ट्रक्चर्स, मर्कोसिस में विजिटिंग साइंटिस्ट का पद स्वीकार करने के लिए 13.5.2002 से 21.7.2002 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को प्रारम्भ में जोड़ने की अनुमति के साथ 22.7.2002 से 9.5.2003 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

18. प्रो. के.सी. उपाध्याय, जीवन विज्ञान संस्थान, को एम.एस. बड़ौदा विश्वविद्यालय, वडोदरा, गुजरात, के कुलपति का पद स्वीकार करने के लिए 18.4.2002 से 17.4.2005 (तीन वर्ष) तक की अवधि की प्रतिनियुक्ति मंजूर की गई।

19. प्रो. आशिष दत्ता, जीवन विज्ञान संस्थान, को राष्ट्रीय पादप जिनोम अनुसंधान केन्द्र, में निदेशक का पद स्वीकार करने के लिए 1.5.2002 से 28.2.2006 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

20. प्रो. डी.एन. राव, आर्थिक अध्ययन और नियोजन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को पर्यावरणीय अर्थशास्त्र के क्षेत्र में पुस्तक लिखने के लिए देश एवं विदेश के कई पुस्तकालयों एवं शिक्षा संस्थानों से सामग्री एकत्रित करने हेतु 13.5.2002 से 21.7.2002 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को प्रारम्भ में जोड़ने की अनुमति के साथ 22.7.2002 से 9.5.2003 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

21. डॉ. एस. घोष, सह प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान संस्थान, को अस्थाई शोध विज्ञानी के पद पर बने रहने के लिए 3.5.2002 का एक दिन का असाधारण अवकाश बढ़ाया गया।

22. डॉ. के.आर. नायर, सह प्रोफेसर, सामाजिक चिकित्साशास्त्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, का हिडलबर्ग विश्वविद्यालय में गेस्ट फैकल्टी के पद पर बने रहने के लिए 31.8.2002 से 15.9.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश बढ़ाया गया।

23. प्रो. अनिल भट्टी, जर्मन अध्ययन केन्द्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, को वियना विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर का पद स्वीकार करने के लिए 13.5.2002 से 21.7.2002 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 8.4.2002 से 12.5.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

24. प्रो. वी.एस. मणि, राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और अर्थशास्त्र अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को हेग अकादमी आफ इंटरनेशनल लॉ में, 'ह्युमैनिटेरियन इंटरवेंशन टुडे', विषयक व्याख्यान देने के लिए 6.12.2003 से 5.1.2004 तक के शीतकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2003 से 5.12.2003 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

25. प्रो. एस.बी. ससालती, जर्मन अध्ययन केन्द्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, का गेरहार्ड मरकास्टर युनिवर्सिटी, डुइसबर्ग, जर्मनी में विजिटिंग प्रोफेसरशिप स्वीकार करने के लिए 6.7.2002 से 19.7.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश बढ़ाया गया।

26. अनिल कुमार धींगरा, सह प्रोफेसर, इस्पेनी अध्ययन केन्द्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, को इस्लास बालिरेस विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसरशिप स्वीकार करने के लिए 5.12.2002 तक के शीतकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 1.10.2002 से 5.12.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

27. प्रो. ए. सेनगुप्ता, अन्तर्राष्ट्रीय , राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में आयोजित मानवाधिकार आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए 25.2.2002 से 1.3.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

28. डॉ. एच.पी. रे, सह प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को हिस्ट्री आफ द आर्किओलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया (1861–1948) : विषय पर शोध कार्य जारी रखने के लिए 13.5.2004 से 21.7.2004 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2002 से 12.5.2004 तक (2 वर्ष) की अवधि का अध्ययन अवकाश मंजूर किया गया।

29. डॉ. एस. पटनायक, सहायक प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान संस्थान, को होस्टन में, 'द ऐप्लाइड सुपरकंडक्टिविटी शीर्षक सम्मेलन के एक सत्र की सह अध्यक्षता स्वीकार करने तथा लॉस अलामोस नेशनल लैबोरेट्री और द युनिवर्सिटी आफ विस्कोनसिन--मैडिसन में कुछ शोध कार्यों को पूरा करने के लिए 29.7.2002 से 5.9.2002 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

30. श्री ए. गजेन्द्रन, सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को कोलम्बिया विश्वविद्यालय से डॉक्टरल रिसर्च (पी–एच.डी.) के लिए तमिलनाडु में गहन और विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन कार्य करने के लिए 13.5.2004 से 21.7.2004 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2002 से 12.5.2004 तक (2 वर्ष) की अवधि का अध्ययन अवकाश मंजूर किया गया।

31. प्रो. आनन्द कुमार, सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को (1) पालिटिकल सोसिओलाजी आफ इण्डियन डेमोक्रेसी' (2) ग्लोबलाइजेशन ऐंड इण्डिया' विषयक पुस्तकें पूरी करने के लिए 6.12.2002 से 5.1.2003 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 23.7.2002 से 5.12.2002 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

32. प्रो. एम.एच. कुरेशी, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को प्रकाशन हेतु अपनी तीन पुस्तकों की पांडुलिपियां पूरी करने के लिए 3.5.2003 से 21.7.2003 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 9.1.2003 से 12.5.2003 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

33. डॉ. पी.आर. कुमारस्वामी, सह प्रोफेसर, पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को 'मिडिल ईस्ट', विषयक पुस्तकें पूरी करने के लिए 13.1.2003 से 12.5.2003 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

34. प्रो. डी.टी. नोर्बू, दक्षिण, मध्य, दक्षिण पूर्व एशियाई और दक्षिण–पश्चिम महासागरीय अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को हारवर्ड विश्वविद्यालय में अपनी शोध परियोजना पूरी करने के लिए शीतकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 6.1.2002 से 5.12.2002 तक के अवकाश के स्थान पर 6.1.2002 से 5.11.2002 तक की अवधि का आवधिक अवकाश मंजूर किया गया।

35. प्रो. बी. विवेकानन्दन, अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को यूरोप में, ई.यू.एस.पी. द्वारा प्रायोजित 'यूरोपीयन यूनियन इन द इमर्जिंग ग्लोबल सिसटम' विषयक शोध परियोजना पर क्षेत्रीय कार्य (फील्ड वर्क) करने के लिए 6.12.2002 से 5.1.2003 तक के शीतकालीन अवकाश को प्रारम्भ में जोड़ने की अनुमति के साथ 6.1.2003 से 5.2.2003 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

36. प्रो. आर.के. जैन, अमरीकी और पश्चिमी यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को जे.एन.यू.इ.यू.एस.पी. द्वारा प्रायोजित, 'रीजनल कोआपरेशन इन द यूरोपीयन यूनियन ऐंड साउथ एशिया : लेसन्स ऐंड रिलेशंस', विषयक शोध परियोजना पर क्षेत्रीय कार्य करने के लिए 6.12.2002 से शीतकालीन अवकाश को प्रारम्भ में जोड़ने की अनुमति के साथ 6.1.2003 से 17.1.2003 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

37. प्रो. दीपांकर गुप्ता, सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को लंदन स्कूल आफ इकोनामिक्स में लिवबरहुलम विजिटिंग प्रोफेसरशिप स्वीकार करने के लिए 13.5.2003 से 21.7.2003 तक के ग्रीष्मकालीन अवकाश को अन्त में जोड़ने की अनुमति के साथ 1.2.2003 से 12.5.2003 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

38. प्रो. गिरिजेश पंत, पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में कुलपति का पद स्वीकार करने के लिए 5.6.2002 (दोपहर बाद) से 4 वर्ष तक की अवधि की प्रतिनियुक्ति मंजूर की गई।

39. प्रो. एस.के. थोरट, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को भारतीय दलित अध्ययन संस्थान, अहमदाबाद में निदेशक का पद स्वीकार करने के लिए 7.1.2003 से 5 वर्ष तक की अवधि की प्रतिनियुक्ति मंजूर की गई।

40. प्रो. अमिताभ मट्टू, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन और निरस्त्रीकरण केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, को जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति का पद स्वीकार करने के लिए 18.11.2002 से 3 वर्ष तक की अवधि की प्रतिनियुक्ति मंजूरी की गई।

41. डॉ. बी.एन. महापात्रा, सह प्रोफेसर, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, को फोर्ड फाउन्डेशन के प्रोग्राम डिविजन में प्रोग्राम अधिकारी, ग्रेड–22 ए. का पद स्वीकार करने के लिए 1.12.2002 से 31.5.2003 तक की अवधि का असाधारण अवकाश मंजूर किया गया।

शोध छात्रों को प्रदान की गई उपाधियां

(1.4.2002 से 31.3.2003 तक)

पी-एच.डी.

कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान

1. श्री जहीरूद्दीन, "ए साफ्ट कंप्यूटिंग मॉडल फार नाइज पॉल्यूशन", प्रो. जी.वी. सिंह, (2.7.2002)
2. श्री इंदरजीत अरोड़ा, "परफार्मेंस इवेल्युशन आफ एक्सस मैथड्स फार ब्राडकास्ट डाटा इन वायरलेस मोबाइल कंप्यूटिंग" प्रो. पी.सी. सक्सेना तथा प्रो. सी.पी. कट्टी, (28.10.2002)
3. श्री जगमोहन राय, "कोटरि–बेस्ड डिस्ट्रीब्युटिड म्युचुअल एक्सक्लुजन ऐलगोरिथम्स ऐंड देयर परफार्मेंस इवेल्युएशन", प्रो. पी.सी. सक्सेना (12.11.2002)

जीवन विज्ञान संस्थान

4. श्री अखिलेश कुमार, "माडयूलेशन आफ एडेनिलेट साइक्लेस एक्टिविटी ऐंड डिवलपमेंट चैंजिस इन डिक्टियोस्टेलियम डिस्काइडियम", प्रो. समर चटर्जी, (19.7.2002)
5. श्री शमिक घोष, "माड्यूलेशन आफ माइक्रोफेज फंक्शंस डयू टु माइकोबेक्टिरियम टुबरकुलोसिस इनफेक्शन", प्रो. राजीव के. सक्सेना (8.11.2002)
6. सुश्री नीरजा करनानी, "रेग्यूलेशन आफ मल्टीड्रग रेसिस्टेंस जीन(स) एक्सप्रेशन इन केनडिडा अल्बिकेंस", प्रो. राजेंद्र प्रसाद, (14.12.2002)
7. सुश्री नीति पुरी, "रेग्यूलेशन आफ मल्टीड्रग रेसिस्टेंस जींस आफ केनडिडा अल्बिकेंस, ए पेथोजेनिक यीस्ट", प्रो. राजेन्द्र प्रसाद तथा डा. एस.के. गोस्वामी (11.12.2002)
8. श्रीमती मोनीदीपा राय, "स्टडी आफ एन ऐसीटिग्लुकोसमाइन इंडयूसिबल जींस इन केनडिडा अल्बिकेंस", प्रो. आशिष दत्ता (23.12.2002)
9. सुश्री सोमा घोष, स्टडीज आन द नेचर आफ रिप्लीकेशन इन द राइबोसोमल डी.एन.ए. प्लैजमिड आफ एन्टामोइबा हिस्टोलिटिका", प्रो. आलोक भट्टाचार्य (2.1.2003)
10. सुश्री बीनुजा वर्मा, "द जैनेटिक ऐंड इम्यूनोकेमिकल स्टडी आफ डिस्ट्रोफिन ऐंड डिस्ट्रोफिन एसोसिएटिड प्रोटींस इन ह्यूमन मसक्यूलर डिस्ट्रोफी", प्रो. के.सी. उपाध्याय तथा प्रो. शोभा गोयल (8.1.2003)
11. सुश्री गगन दीप बजाज, "मोलिक्यूलर क्लोनिंग ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ ह्यूमन सी.डी.एन.ए. बाई ए सिम्पल रिपीट डी.एन.ए. प्रोब : आइडेंटिफिकेशन आफ नावेल कंडीडेट जींस", डा. पी.सी. रथ (23.1.2003)
12. श्री एस. सतीश, "जीनोम एनालिसिस ऐंड सेल साइकिल आफ एन्टामोइबा", प्रो. आलोक भट्टाचार्य (11.2.2003)

पर्यावरण विज्ञान संस्थान

13. श्री मनोरंजन नायक, "स्टोकेस्टिक ऐंड आर्टिफिशल न्यूरल नेटवर्क एप्रोचिस टु वाटर क्वालिटी माडलिंग आफ रीवर महानदी", प्रो. डी.के. बैनर्जी (3.4.2002)
14. सुश्री जे. मीनाक्षी, "फंक्शनल करेक्ट्राइजेशन आफ 34 के.डी.ए.हयालुरोनन बाइंडिंग प्रोटीन (एच.ए.बी.पी.I) इन सेल ग्रोथ ऐंड डिफ्रेंसिएशन", प्रो. कस्तूरी दत्ता (17.4.2002)
15. सुश्री अनुराधा वर्मा, "बायोजिओकैमिकल स्टडीज इन माण्डवी, जुआरी ऐंड कालिन्दी रिवर्स आन द वेस्ट कोस्ट आफ इण्डिया", प्रो. वी. सुब्रामणियन (3.2.2003)
16. श्री राजीव कुमार आजाद, "सिम्बोलिक सिक्वेंसिस ऐज रिप्रेजेंटेशंस आफ काम्प्लेक्स सिस्टम्स", प्रो. जे. सुब्बा राव (21.5.2002)
17. सुश्री परमिता चक्रवर्ती, "मोलिक्यूलर करैक्ट्राइजेशन आफ एन्टामोइबा हिस्टोलिटिका कैल्शियम बाइंडिंग प्रोटीन", डा. सुधा भट्टाचार्य (3.02.2003)

18. श्री सुजीत कुमार श्रीवास्तव, "स्पेसिएशन आफ मेटल्स इन वेस्टवाटर स्लज ऐंड स्लज – अमेंडिड सायल्स", प्रो. डी.के. बैनर्जी (19.8.2002)

19. अनिल कुमार, 'स्पेक्ट्रल फिंगर प्रिंटिंग एनालिसिस आफ लेक बडखल (हरियाणा)', डा. अरुण कुमार अत्री (7.10.2002)

20. श्री अरुण प्रकाश श्रीवास्तव, "करेक्ट्राइजेशन आफ इनडोर एयर इन दिल्ली : इनडोर/आउटडोर रिलेशनशिप्स" प्रो. वी.के. जैन तथा प्रो. सी.के. वार्ष्णेय (29.10.2002)

21. श्री मदन कोइराला, "एनवायरनमेंटल डिटर्मिनेंट्स आफ द लिवलीहुड रिलेटिड फूड प्रोडक्शन सिस्टम इन ए मिड–हिमालयन लेण्डस्केप (तिंजोर मिलके रीजन) ईस्ट नेपाल" प्रो. पी.एस. रामकृष्णन तथा प्रो. के.जी. सक्सेना (8.11.2002)

22. श्री अब्दुल वकील, "लैण्ड यूज ऐंड लैण्ड कवर चैंजिस ऐंड देअर इकोलोजिकल इम्पलिकेशंस : ए केस स्टडी आफ कुछगाद वाटरशेड इन सेंट्रल हिमालयन", प्रो. के.जी. सक्सेना और डा. के.एस. राव (सह–निर्देशक), (8.11.2002)

23. श्री अजय कुमार गिरी, "फिजिकोकेमिकल आस्पेक्ट्स आफ लैण्ड डिस्पोजल आफ सालिड वेस्ट जेनरेटिड फ्राम वजीरपुर इण्डस्ट्रियल एरिया आफ दिल्ली', प्रो. ए.के. भट्टाचार्य (27.11.2002)

24. श्री भास्कर सिन्हा, "इकोलाजिकल एनालिसिस आफ ए सेक्रिड लैण्डस्केप इन गढ़वाल हिमालय" प्रो. पी.एस. रामकृष्णन, प्रो. के.जी. सक्सेना और डा. आर.के. मैखुरी (16.01.2003)

25. श्री सुजीत कुमार वाजपेयी, "डिस्ट्रब्युशन ऐंड ट्रांसपोर्ट आफ ट्रसेन मैटल्स ऐंड रेअर अर्थ एलिमेंट्स इन स्माल रिवर्स आफ केरल, इण्डिया", प्रो. वी. सुब्रामणियन (16.1.2003)

26. सुश्री कृतिका सिंह, "इकोलाजिकल डाइवर्सिटी इन रिलेशन टु एग्रीकल्चरल लैण्ड यूज इनटेंसिटी इन ए मिड–आल्टीटयूड विलेज इन सेंट्रल हिमालया", प्रो. के.जी. सक्सेना (30.01.2003)

जैव–प्रौद्योगिकी केंद्र

27. श्री प्रवीण कुमार, "क्लोनिंग एक्सप्रेशन, प्यूरिफिकेशन ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ एंथ्रेक्स इडिमा फैक्टर", राकेश भटनागर (13.3.2003)

28. श्री राजेश मिश्र, "कोसाल्वेंट असिस्टिड फोल्डिंग आफ प्रोटींस : स्टडीज आन, साइट्रेट सिंथेज ऐंड पी22 टाइस्पाइक प्रोटीन', डा. राजीव भट्ट (3.6.2002)

29. सुश्री निधि अहूजा, "स्टडीज आन द रोल आफ हाइड्रोफोबिक रेसिडयूज पी.एच.ई. 552, पी.एच.ई 554 आई.आई.ई 562, एल.ई.यू. 556 ऐंड आई.आई.ई. 574 आफ एथ्रेंक्स प्रोटेक्टिव एन्टीजन", प्रो. राकेश भटनागर (15.7.2002)

30 श्री शारिक राहिल खान, 'स्टडीज आन द रेग्यूलेशन आफ क्राई 4ए टाक्सिन जीन आफ बेसिलस थ्यूरिनजीनेसिस इसरालेंसिस", प्रो. राकेश भटनागर तथा डा. एन.बी. भटनागर (5.12.2002)

31. श्रीमती बबिता शर्मा, "क्लोनिंग ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ ऐन एस.ओ.एस. रिस्पोंसिव जीन फ्राम बैसिलस एन्यूरिनोलाइटिक्स आई.ए.एम. 1077", प्रो. कुणाल बी. राय (7.01.2003)

32. श्री सैयद मोहसिन वहीद, "स्टडीज आन द प्रोडक्शन आफ रिकम्बिनेंट प्रोटेक्टिव एन्टीजन आफ बैसिलस एंथ्रेसिस", प्रो. राकेश भटनागर (6.01.2003)

33. श्री पलाश भट्टाचार्य, "कम्पेरिटिव स्टडीज आन रिकम्बिनेंट ह्यूमन ग्रेन्यूलोसाइट मेक्रोफेज कालोनी स्टिम्यूलेटिंग फेक्टर एक्सप्रेशन इन ई. कोली ऐंड मैथिलोट्रोपिक यीस्ट", डा. के.जे. मुखर्जी (28.02.2003)

अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान

34. श्री प्रिय नाथ पट्टायत, "सोवियत पालिसी टुवर्डस युगोस्लाविया : ब्रिजनेव ऐंड गोर्बाचेव पीरियड" प्रो. निर्मला जोशी (31.3.2003)

35. श्री निहार रंजन दास, "ड्रग ट्रेफिकिंग ऐंड पालिटिक्स इन साउथ एशिया : ए केस स्टडी आफ पाकिस्तान", प्रो. कलीम बहादुर (8.4.2002)

36. सुश्री जरीन अहमद, "एथनिक कनफ्लिक्ट ऐंड रिफ्युजीस : ए केस स्टडी आफ श्रीलंका", डा. पी. सहदेवन (8.4.2002)

37. श्री बिनय कुमार मोहन्ती, "पब्लिक पॉलिसी फार्मुलेशन", डा. मधु भल्ला (15.4.2002)

38. श्री रूचिरा जोशी, "पाप्यूलेशन डायनेमिक्स ऐंड डिवलपमेंट इन बंगलादेश" प्रो. आई.एन. मुखर्जी (17.4.2002)

39. सुश्री बीरेन्द्र कुमार चौधरी, प्रो. कांति पी. बाजपेई (15.4.2002)

40. श्री एस.के. मोजीब आलम, "द रोल आफ टर्की ऐज ऐन इमर्जिंग रीजनल पावर इन द पोस्ट कोल्ड वार पालिटिक्स", प्रो. मोहम्मद सादिक (24.4.2002)

41. श्री अबुजर खैरी, "सैंट्रल एशिया ऐंड वेस्ट एशिया : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ सैंट्रल एशिया'स रिलेशंस विद साउदी अरबिया ऐंड टर्की सिंस 1991", प्रो. अजय कुमार पटनायक (26.4.2002)

42. श्री जितेन्द्र प्रसाद सिंह, "द पालिटिकल ऐंड सिक्युरिटी एनवायरनमेंट इन साउथीस्ट एशिया : ए केस स्टडी आफ द आसियान रीजनल फोरम", डा. गंगनाथ झा (26.4.2002)

43. श्री सुबुद्धि नारायण दुबे, "नेशन बिल्डिंग इन इजराइल, 1948–77", डा. पी.सी. जैन (9.5.2002)

44. श्रीमती कदलुर सावित्री, "द यूनाइटिड नेशंस रोल इन कंफिलक्ट रिजोल्यूशन : ए केस स्टडी आफ द कम्बोडियन क्राइसिस", प्रो. सुमित्रा चिश्ती और डा. सी.एस.आर. मूर्ति (21.5.2002)

45. श्रीमती श्वेता बक्शी, "यूनाइटिड स्टेट्स स्ट्रेटिजिक–कम–कमर्शियल इंगेजमेंटस ऐंड डिसइंगेजमेंट्स इन साउथ एशिया विद स्पेशल रिफ्रेंस टु इण्डिया 1990–1998", प्रो. आर.पी. कौशिक (28.5.2002)

46. सुश्री राजश्री कानूनगो, "साइनो – यू.एस. डिप्लोमेसी इन ट्रेड ऐंड इनवेस्टमेंट सिंस 1979", प्रो. के.डी. कपूर (27.5.2002)

47. श्री दिदला वेंकटेश्वरा राव, "द राइट्स आफ द चाइल्ड अंडर इंटरनेशनल ला ऐंड इण्डियन ला", प्रो. वी.एस. मणि (29.5.2002)

48. श्री मनीष सौरव, "द हाइड्रोकार्बन एनर्जी सैक्टर आफ रिपब्लिक आफ कजाकिस्तान चैलेंजिस ऐंड अपरचुनिटीज" प्रो. के. वारिकु (10.6.2002)

49. श्री नंद किशोर, "टर्की ऐंड ईरान : क्वेस्ट फार सुपरमेसी इन सैंट्रल एशियन रिपब्लिक्स", प्रो. मोहम्मद सादिक (10.6.2002)

50. श्री शैलजा गुल्लापल्ली, "रीजनल ट्रेडिंग ग्रुप्स ऐंड मल्टीलेटरल ट्रेड डिप्लोमेसी : ए केस स्टडी आफ अपेक" प्रो. के.डी. कपूर (18.7.2002)

51. श्री कौशिक सेन, "फारेन इकोनोमिक पालिसी आफ बंगलादेश', प्रो. आई.एन. मुखर्जी (15.7.2002)

52. श्री रमाकान्त द्विवेदी, "रिलिजस रिवाइवलीज्म इन सैंट्रल एशिया : द केस स्टडी आफ ताजिकिस्तान ऐंड उजबेकिस्तान", प्रो. दावा टी. नोरबू (1.8.2002)

53. सुश्री सुजाता अशवार्या, "कम्प्रिहेंसिंग द स्ट्रक्चर्स आफ पालिटिकल वायलेंस इन पलेस्तेनियन – इजरायली कनफ्लिक्ट" प्रो. गुलशन डायटल (5.8.2002)

54. सुश्री सुपर्णा भट्टाचार्जी, डवलपिंग कंट्रीज ऐंड द जनरल एग्रीमेंट आन टेरिफ्स ऐंड ट्रेड : इवोल्विंग एप्रोचिस ऐंड शिफ्टिंग कोएलिसन्स", प्रो. अर्जुन सेनगुप्ता (28.8.2002)

55. श्री प्रदीप टंडन, "रिलिजन ऐंड पालिटिक्स इन इंदोनेशिया", डा. गंगनाथ झा (4.9.2002)

56. श्री *निर्भय* नाथ मिश्र, *"रीजनल प्रब्लम्स* इन *सैंट्रल एशिया* : ए केस स्टडी आफ *ताजिकिस्तान* ऐंड *उजबेकिस्तान*", प्रो. शम्सुद्दीन (23.9.2002)

57. श्री रवेला भानु कृष्ण किरण, "लाइबिलिटीज फार एक्सिडेंट्स इन इंटरनेशनल मेरीटाइम ट्रांसपोर्ट : एन इग्जामिनेशन आफ आई.एम.ओ. कनवेंशंस", प्रो. वी.एस. मणि (26.9.2002)

58. श्री अनूप कुमार गुप्ता, "द सोवियत यूनियन'स पालिसी टुवर्डस अरब–इजराइल कनफ्लिक्ट" डा. तुलसीराम (1.10.2002)

59. श्रीमती प्रोमिता मुखोपाध्याय, "इवोल्युशन आफ जापान'स पालिसिज ऐंड एटिट्यूड्स टुवर्ड्स इकोनोमिक कोआप्रेशन इन द एशिया पेसिफिक", प्रो. के.वी. केसवन (11.10.2002)

60. श्री कंचन एल., "द यूनाइटिड नेशंस सेक्रेटरी जनरल : डिप्लोमेसी इन कनफिलक्ट रिजोल्यूशन इन द पोस्ट–कोल्ड वार इरा", श्री वी.के.एच. जम्भोलकर (24.1.2002)

61. श्रीमती वाह वाह मायूंग, "द रोल आफ फारेन डायरेक्ट इनवेस्टमेंट : केस स्टडीज आफ म्यानमार ऐंड वियतनाम", प्रो. मनोज पंत (5.11.2002)

62. श्री हरिन्द्र मिश्र, "एज्यूकेशन ऐज ऐन इंस्ट्रुमेंट आफ सोशॅल पॉलिसी इन इजराइल", डा. पी.सी. जैन (8.11.2002)

63. श्रीमती सुसन मथाई, "नेशनल इंट्रेस्ट ऐंड कम्युनिटी बिल्डिंग : ए स्टडी आफ द यूरोपीयन कम्युनिटी 1963–1995" प्रो. बी. विवेकानन्दन (5.12.2002)

64. श्री अब्दुल मोनेइम ओसमान मोहम्मद ताहा, "गैट./डब्ल्यू.टी.ओ. डिसप्यूट सेटलमेंट सिस्टम : ए थर्ड वर्ल्ड पर्सपेक्टिव", प्रो. बी.एस. चिमनी (3.12.2002)

65. मोहम्मद मुख्तार आलम, "रीजनल इकानोमिक डिवलपमेंट ऐंड पालिटिकल इंटिग्रेशन इन द इण्डियन ओशन रिम : ए जिओपालिटिकल स्टडी", डा. एस.एस. देवरा (29.11.2002)

66. सुश्री संगीता, "इकोटुरिज्म ऐंड सस्टेनेबल डिवलपमेंट आफ आइलैण्ड इकोनोमीज : ए केस स्टडी आफ मालदीव्स ऐंड फिजी", डा. एस.एस. देवरा (4.12.2002)

67. श्री नलिन कुमार महापात्रा, "उजबेकिस्तान'स क्वेस्ट फार डेमोक्रेसी : प्राब्लम्स ऐंड प्रोस्पेक्ट्स", प्रो. अजय कुमार पटनायक (4.12.2002)

68. श्री राजेश कुमार सिन्हा, "द यू.एस. इंट्रेस्ट इन तिब्बत1989–1997", प्रो. दावा टी. नोरबू (9.12.2002)

69. श्री मनमथ नारायण सिंह, "रिलिजन ऐंड पालिटिक्स इन अफगानिस्तान : मुजाहिदीन टु द तालिबान (1979–1999)" प्रो. के. वारिकु (13.12.2002)

70. सुश्री भारती पुरी, "इंगेज्ड बुद्धिज्म इन द माडर्न वर्ल्ड : ए स्टडी आफ द दलाई लामा'स वर्ल्ड व्यू", प्रो. दावा टी. नोरबू (13.12.2002)

71. श्री विकास झा, "डेमोक्रेसी इन रशिया : ए स्टडी आफ 1991 ऐंड 1996 प्रेजिडेंशियल इलेक्शंस", प्रो. जफर इमाम (1.1.2003)

72. श्री कृष्णन सिंह, "टेक्नोलाजी ट्रांसफर फार ड्राई लैण्ड फार्मिंग : ए स्टडी आफ इण्डिया ऐंड इजराइल", डा. एस.एस. देवरा (9.1.2003)

73. श्री राहुल त्रिपाठी, "मोनेटरि ऐंड पेमैंट्स कोआप्रेशन इन साउथ एशिया – ए केस स्टडी आफ द एशियन क्लियरिंग यूनियन", प्रो. महेन्द्र पी. लामा (10.1.2003)

74. श्रीमती आलोक कुमार दास, "ए स्टडी आफ लैंग्यूवेजिज इन रशियन फेडरेशन", प्रो. जफर इमाम (20.1.2003)

75. श्री सरफराज आलम, "एनवायरनमेंटल सिक्युरिटी आफ बंगलादेश : ए पोलिटिको – जियोग्राफिकल पर्सपेक्टिव", डा. एस.एस. देवरा (23.1.2003)

76. श्री चितरंजन मिश्र, "इवोल्युशन आफ पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी इन थाइलैण्ड (1988–1998)", डा. गंगनाथ झा (4.2.2003)

77. श्री विजय कुमार दास, "रशिया'ज सिक्युरिटी इंट्रेस्ट इन पोस्ट सोवियत सेंट्रल एशिया", प्रो. अजय कुमार पटनायक (17.2.2003)

78. श्री जतिन कुमार मोहन्ती, "सेंट्रल एशियन रिस्पोंस टु मिलिटेंसी ऐंड क्रास–बार्डर टेररीज्म इन द रीजन", प्रो. अजय कुमार पटनायक (17.2.2003)

79. श्री पंकज कुमार झा, "द रोल आफ द न्यूली इण्डस्ट्रियलाइज्ड इकोनोमीज (एन आई ई ज) इन द डिवलपमेंट आफ द एसोसिएशन आफ साउथ ईस्ट नेशंस (आसियान) : इम्प्लिकेशंस फार इण्डिया", डा. मनमोहिनी कौल (3.3.2003)

80. श्री मोती राम, "द इम्पेक्ट आफ इंटरनेशनल टुरिज्म इन थाइलैण्ड : ए स्पेशियल एनालिसिस", डा. एस.एस. देवरा (13.02.2003)

81. श्री सतीश कुमार नेगी, "जिओग्राफी आफ माउंटेन टुरिज्म इन द आल्पस ऐंड हिमालयाज : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ स्विटजरलैण्ड ऐंड इंडिया", डा. एस.एस. देवरा (13.2.2003)

82. सुश्री स्वयं प्रभा दास, "एनवायरनमेंटल डिप्लोमेसी ऐंड इंटरनेशनल कोआप्रेशन : केस स्टडी आफ अंटार्कटिका ट्रीटी सिस्टम", श्री वी.के.एच. जम्भोलकर (18.3.2003)

83. श्रीमती अर्पिता माथुर, "जापान'स रिलेशन विद चाइना डयूरिंग द पोस्ट--कोल्ड वार पीरियड", प्रो. के.वी. केसवन (21.3.2003)

84. श्री बुररा श्रीनिवास, "इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स लॉ : ए स्टडी आफ रिजर्वेशन्स टु मल्टीलेट्रल ह्यूमन राइट्स ट्रीटीज", प्रो. वी.एस. मणि (24.3.2003)

85. श्री आनन्द मलिक, "इंटिग्रेटिड कोस्टल जोन मैनेजमेंट : ए स्पेशियल एनालिसिस आफ एडमिनिस्ट्रेटिव एक्शंस ऐंड प्राब्लम्स इन गोवा (इण्डिया) ऐंड क्वींसलैण्ड (आस्ट्रेलिया)", डा. एस.एस. देवरा (26.3.2003)

86. सुश्री स्वाति सुचरिता नंदा, "जेंडर द स्टेट ऐंड द इंटरनेशनल रिलेशंस : ए स्टडी आफ इण्डिया ऐंड बंगलादेश", प्रो. सुशील कुमार (26.03.2003)

87. श्री निहार रंजन नायक, "नान--गवर्नमेंटल आरगेनाइजेशंस ऐंड मल्टीनेशनल कोआप्रेशंस : ए स्टडी आफ सिविल सोसायटी रिस्पोंसिस टु फारेन डायलेक्ट इनवेस्टमेंट इन इण्डिया इन द 1990स", प्रो. सुशील कुमार (28.3.2003)

88. श्री सुरेश सिंह नेगी, "निगोसियेटिंग विद फॉरेन टी.वी. नेटवर्क्स : चैलेंजिस टु इण्डियन डिप्लोमेसी इन द इरा आफ इकोनोमिक लिबरलाइजेशन", प्रो. पुष्पेश पंत (31.3.2003)

89. श्रीमती परामा सिन्हा, "द बुश एडमिनिस्ट्रेशन ऐंड इण्डो यू.एस. रिलेशंस 1989--1992" डा. चिंतामणि महापात्रा (31.3.2003)

90. श्री ओम प्रकाश मलिक, "मैनेजमेंट आफ एनवायरनमेंटल प्रोब्लम्स इन कजाकिस्तान ऐंड उजबेकिस्तान : द पर्सपेक्टिव आफ कम्प्रीहेंसिव ऐंड सिक्युरिटी", प्रो. शमसुद्दीन (31.3.2003)

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान

91. श्री एच. शिमरिंगम, "डिबाइसिस आफ सिमिलिट्यूड इन टी.एस. इलियट'स मेजर पोइम्स (द वेस्ट लैण्ड ऐंड क्वार्टेट्स) जैनेसिस ऐंड कास्टिट्यूशन आफ मीनिंग", प्रो. कपिल कपूर (25.3.2003)

92. मो. अजीजुर रहमान, "जहांआरा बेगम'स कन्ट्रीब्युशन टु इण्डो–पर्शियन लिट्रेचर विद स्पेशल रेफ्रेंस टु मोनेसुल अरवाह" प्रो. एम. आलम (17.4.2002)

93. श्री शकील अहमद, "ए डिस्क्रिप्टिव डिकश्नरी आफ क्लासिकल क्रिटिकल टर्म्स इन उर्दू 1800–1930", प्रो. एस.आर. किदवई (17.4.2002)

94. श्री मजहर आसिफ, "पर्शियन लैंग्यूवेज ऐंड लिट्रेचर इन इण्डिया ड्यूरिंग द फर्स्ट हाफ आफ ट्वंटिएथ सेंचुरी", डा. अख्तर मेंहदी (10.6.2002)

95. श्री शाहबाज आमिल, "इवोल्यूशन ऐंड डिवलपमेंट आफ ड्रामा इन ईरान विद स्पेशल रेफ्रेंस टु द कंट्रीब्युशन आफ मिर्जा फतेह अली अखुंदजादेह ऐंड मिर्जा अका तबरिजी", डा. एस.ए. हसन (4.6.2002)

96. श्रीमती सविता सक्सेना, "शरत और प्रेमचन्द के कथासाहित्य में सामंतवाद विरोधी पहलू : स्त्री जीवन के विशेष संदर्भ में" प्रो. मैनेजर पाण्डेय (10.6.2002)

97. श्री चंद्रशेखर राम, "समकालीन हिन्दी लेखन में दलित प्रश्न", डा. ज्योतिसर शर्मा (10.6.2002)

98. श्री एम. रामकृष्णन, कनसेपचुलाइजेशन ऐंड कंफिग्रेशन आफ बाडी, इमोशन ऐंड नालेज इन नैरेटिव डिसकोर्सिस विद स्पेशल रेफ्रेंस टु तमिल बैलाड्स" डा. फ्रेंसन डी. मजली (7.6.2002)

99. श्रीमती प्रीति दास, "Motiv I Struktura Volshebnoi Skazki' (Sopostavitelnoe Izuchenie Russkikh I Aziatskikh Volshebnikh Skazok)' प्रो. ए.के. बासु (28.6.2002)

100. श्रीमती स्वाति आचार्य, "Film als Text : Untersuchung der Kolonialthenatik Alteritatsfrage in ausgewahlten Filmen von Werner Herzog", प्रो. अनिल भट्टी (12.8.2002)

101. सुश्री अनिता मिंज, "प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं – नवजागरण के विशेष संदर्भ में", श्रीमती ज्योतिसर शर्मा (13.8.2002)

102. श्री उमर गजाली, "उर्दू में तफहीमियात और उसकी रिवायत : एक तनकीदी मुताला" (हर्मेन्यूटिक्स ऐंड इट्स ट्रेडिशन इन उर्दू : ए क्रिटिकल स्टडी), प्रो. नसीर अहमद खान (26.8.2002)

103. मो. शहजाद शम्स, 'ए क्रिटिकल एनालिसिस आफ वुमन्स प्राब्लम्स इन द नॉवल्स रिटिन बाई वुमन उर्दू राइटर्स', प्रो. नसीर अहमद खान (10.9.2002)

104. सुश्री विजय वेंकटरमण, 'Tradicion Y Ruptura En La Representaction Del Dictador En La Literatura Latinoanericana : Estrategias Narratives En La Obra De', प्रो. एस.पी. गांगुली (10.9.2002)

105. सुश्री एंजेली मुलतानी, 'सैटिंग द स्टेज – ए स्टडी आफ द परफार्मेंसिस आफ एडाप्टिड वेस्टर्न ऐंड ओरिजिनल इंडियन इंगलिश ड्रामेटिक टेक्स्ट्स इन इंडिया', डा. जी.जे.वी. प्रसाद और प्रो. आर.एस. गुप्ता (9.9.2002)

106. सुश्री राम्या श्रीनिवासन, "जैंडर लिट्रेचर, हिस्ट्री : द ट्रांसफार्मेशन आफ द पदमिनी स्टोरी", डा. जी.जे.वी. प्रसाद, प्रो. हरबंस मुखिया और प्रो. मीनाक्षी मुखर्जी (9.9.2002)

107. श्री रशीद अहमद, "डिवलपमेंट आफ उर्दू नान फिक्शन प्रोज आफ्टर इंडिपेंडेंस", प्रो. नसीर अहमद खान (24.9.2002)

108. श्री लाल चंद राम, "नयी कविता आंदोलन और मुक्तिबोध की काव्य–दृष्टि", डा. गोविंद प्रसाद (28.11.2002)

109. श्री परितोष कुमार मणि, "अज्ञेय की काव्य–दृष्टि", प्रो. केदारनाथ सिंह (28.11.2002)

110. श्री शाहीन परवेज अंसारी, "सोशिओ–कल्चरल लाइफ आफ द सल्तनत पीरियड विद स्पेशल रेफ्रेंस टु डिफ्रेंट रिलिजस मूवमेंट्स : ए स्टडी बेस्ड आन पर्शियन मलफुजत", डा. अख्तर मेंहदी (10.12.2002)

111. श्री तारिक अता, "इण्डियन सोसायटी ऐंड कल्चर ऐज रिफ्लेक्टिड इन तुजुक–ए–बाबरी ऐंड तुजुक–ए–जहाँगीरी : ए कम्पेरिटिव स्टडी", डा. अख्तर मेंहदी (10.12.2002)

112 मोहम्मद इम्तियाज अहमद, "ए कम्पेरेटिव, क्रिटिकल ऐंड लिंग्विस्टिक अप्रेजल आफ कम्युनल ट्रेंडस इन उर्दू ऐंड हिन्दी न्यूजपेपर्स फ्राम 1980–1995", डा. के.एम. इकरामुद्दीन (10.12.2002)

113. श्री गौस मशकूर खान, "कन्ट्रीब्युशन आफ मोहम्मद अली जमाल जादेह टु पर्शियन लैंग्यूवेज ऐंड लिट्रेचर" डा. अख्तर मेंहदी (10.12.2002)

114. सुश्री अनुभा शुक्ल, 'स्टडी आफ द वोकेबलरी आफ संस्कृत ऐंड रशियन आफ कामन इण्डो–यूरोपियन ओरिजन', प्रो. हेमचन्द्र पाण्डेय (16.12.2002)

115. श्री संजय गौतम, "हिन्दी आलोचना तथा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया", डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल (16.1.2003)

116. श्री सलाहुद्दीन, द ओरिजन ऐंड डिवलपमेंट आफ पर्शियन हिस्टोरिकल नावेल राइटिंग विद स्पेशल रिफ्रेंस टु सानातिजादेह किरमानी", डा. एस.ए. हसन (16.01.2003)

117. श्री नसीम अख्तर, "अरेबिक ऐंड इस्लामिक एज्यूकेशन सिस्टम फार वुमन इन इण्डिया ड्यूरिंग 20थ सेंचुरी : एन एनालिटिकल स्टडी", प्रो. एफ.यू. फारुकी (17.01.2003)

118. श्री अहमद खान, "द पालिटिकल ऐंड सोशॅल मोटिव्स बिहाइंड द उर्दू हिस्टोरिकल नावेल्स", प्रो. नसीर अहमद खान (21.1.2003)

119. श्री सुधांशु भूषण नाथ तिवारी, "गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता और उनकी काव्य–दृष्टि", प्रो. केदारनाथ सिंह (6.1.2003)

120. श्री अश्फाक अहमद, "मुसाहामत–उल–हिन्द फिल नस्र–अल–अराबी खिलाल–अल–कार्न–अल–इशरीन" (इण्डियनस कन्ट्रीब्युशन टु अरेबिक प्रोज डयूरिंग 20थ सेंचुरी), प्रो. एम. असलम इस्लाही (21.1.2003)

121. श्री मुश्ताक अहमद, "जैनेसिस ऐंड इवोल्युशन आफ जर्नलिस्टिक लैंग्यूवेज इन उर्दू : एन एनालिटिकल स्टडी", प्रो. नसीर अहमद खान (27.1.2003)

122. श्रीमती ज्योति सिंह, "मृदुलागर्ग के लेखन में नारी अस्मिता का प्रश्न", डा. ज्योतिसर शर्मा, (6.2.2003)

123. श्री सूरज देव सिंह, "ए कम्पेरेटिव स्टडी आफ पालिटिकल नावेल्स आफ उर्दू ऐंड हिन्दी इन पोस्ट इंडिपेंडेंस इरा (आजादी के बाद उर्दू और हिन्दी के सियासी नावेलों का तकाबुली मुतायला) प्रो. नसीर अहमद खान (18.2.2003)

124. सुश्री संगीता के.एस. "ए कम्पेरेटिव ऐंड क्रिटिकल स्टडी आफ ओनटोलाजी ऐंड एपिस्टेमोलाजी आफ डेविड ह्यूम ऐंड बरट्रांड रसेल", डा. आर.पी. सिंह (26.02.2003)

125. श्री तैय्यब अली खान, "बलवंत सिंह की तखलिकात में पंजाबी मुशायरे की अक्कासी : एक तनकीदी जायजा" डा. एस.एम. अनवार आलम (7.3.2003)

126. मोहम्मद अबुल कलाम आजाद, "द इम्पेक्ट आफ मिर्जा अब्दुल कादिर बेदिल ऑन कंटेम्पोरेरि पर्शियन लिट्रेचर" डॉ. एस.ए. हसन, (5.3.2003)

127. श्री स्वतंत्र कुमार जैन, "हिन्दी पत्रकारिता में साहित्य : जनसत्ता, दिल्ली संस्करण (1990–1999)", प्रो. गंगा प्रसाद विमल (5.3.2003)

128. श्री फिरोज आलम, "इवोल्यूशन आफ करेक्टर्स एण्ड करेक्ट्राइजेशन इन उर्दू नावल्स", प्रो. नसीर अहमद खान (25.2.2003)

129. श्रीमती मृदुला माथुर, "Esthetique De La Destruction Dans La Tentation De Saint-Antoine De Gustave Flaubert", डा. विजयलक्ष्मी राव (20.3.2003)

130. श्री उदय कुमार, "हिन्दी इन इण्डिया : ए सोशिओ हिस्टोरिकल इनवेस्टिगेशन", प्रो. आर.एस. गुप्ता और प्रो. एच.सी. नारंग (25.3.2003)

131. श्री राम मूरत, "बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यास : सामाजिक परिवर्तन और रचनात्मक चुनौतियां (स्त्री, अल्पसंख्यक और हाशिए के लोगों के विशेष संदर्भ में)", डॉ. ओमप्रकाश सिंह (26.3.2003)

सामाजिक विज्ञान संस्थान

132. सुश्री प्रियदर्शनी विजयश्री के, "पैटर्नस आफ सेक्रिड प्रोस्टिट्युशन इन क्लोनिअल साउथ इण्डिया : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ आंध्रा ऐंड कर्नाटका" प्रो. के.एन. पणिक्कर और प्रो. एस. भट्टाचार्य (24.3.2003)

133. श्री देबदत रे, "डिवलपिंग टेक्नो–मैनेजेरियल ह्यूमन रिर्सोसिस फार रिस्ट्रक्चरिंग द इण्डियन पावर सेक्टर : ए पालिसी फ्रेमवर्क फार ट्रांसफार्मेशन", प्रो. ए. वसंथा (22.03.2002)

134. श्री नरेन्द्र कुमार, "पालिसी फार्मेशन इन पार्लियामेंट फार दलित्स : एनालिसिस आफ लोकसभा डिबेट्स ऐंड क्वेश्चन्स ड्यूरिंग 1985–95", प्रो. कुलदीप माथुर (23.04.2002)

135. श्री सुब्रत कुमार मण्डल, "टेक्नोलाजी, लैण्ड यूज ऐंड इकोसिस्टम : इकोनोमिक केस स्टडी फार इण्डिया", प्रो. राम प्रसाद सेनगुप्ता (30.04.2002)

136. श्री जेमिन रेज मासासाबी मसिंदे, "द सोशल डायमेंशंस आफ ऐजिंग ऐंड ओल्ड ऐज : ए स्टडी आफ बन्गोमा डिस्ट्रिक्ट इन केन्या", डा. (श्रीमती) टिपलुत नोंगब्री (13.5.2002)

137. श्री अविनाश कुमार, "मेकिंग आफ द हिन्दी लिट्रेरि फील्ड : जर्नल्स, इंस्टीट्यूशंस, पर्सनेलिटीज (1900–1940)", प्रो. के.एन. पाणिकर और प्रो. माजिद एच. सिद्दीकी (30.4.2002)

138. श्री मयंक कुमार, "एनवायरनमेंट ऐंड सोसायटी इन मिडिवल राजस्थान", प्रो. दिलवाग सिंह (23.4.2002)

139. श्री राजेश कुमार मिश्र, "यूटिलाइजेशन आफ मैटर्नल चाइल्ड हैल्थ ऐंड फैमिली प्लानिंग सर्विसिज थ्रू प्राइमरी हैल्थ सेंटर्स इन रूरल राजस्थान" प्रो. असलम महमूद (10.5.2002)

140. श्री बुद्धदेव बिस्वास, "पावर्टी ऐंड डिक्लाइनिंग फर्टिलिटी : ए स्टडी आफ लक्ष्मीपुर डिस्ट्रिक्ट, बंगलादेश", प्रो. दीपांकर गुप्ता (1.5.2002)

141. श्रीमती गोपी देवदत्त त्रिपाठी, "केमिमोरेशन आफ द मार्टडम आफ हुसैन : ए सोसियोलाजिकल एक्सप्लोरेशन आफ शिया वर्ल्ड व्यू", प्रो. रविन्द्र कुमार जैन (7.5.2002)

142. श्री कनकनिगे करूणातिलके, "चैंजिस इन द रूरल सोसायटी इन श्रीलंका : ए सोशल एंथ्रोपालोजिकल स्टडी आफ द विलेज 'टेरिपाहे' डा. मैत्रेयी चौधरी (22.5.2002)

143. श्रीमती शालिनी आडवानी, "आइडिओलाजी, पैडागोगी ऐंड कल्चरल आइडेंटिटी : एन एनालिसिस आफ स्कूल लेवल इंग्लिश टेक्स्ट बुक्स", प्रो. करूणा चानना (29.5.2002)

144. सुश्री देबोराह सुत्तन, "अदर लैण्डस्केप्स : हिल कम्युनिटीज सैटलर्स ऐंड स्टेट आन द क्लोनिअल नीलगिरीज, 1820–1900" प्रो. एस. भट्टाचार्य (24.6.2002)

145. श्री देवेन्द्र कुमार पाणिग्रही, "कनफ्लिक्ट ऐंड कोआप्रेशन इन स्माल स्केल इण्डस्ट्री : ए केस स्टडी आफ इण्डस्ट्रीयल रिलेशंस इन सम सलेक्टिड स्माल स्केल यूनिट्स आफ दिल्ली", प्रो. जे.एस. गांधी (3.7.2002)

146. श्री सोमेन चट्टोपाध्याय, "माइक्रोइकोनोमिक डिस्इक्विलिब्रियम ऐंड द ब्लैक इकोनोमी इन द कनटेक्स्ट आफ स्टेबिलाइजेशन पालिसी इन इण्डिया", प्रो. अरूण कुमार (11.7.2002)

147. श्रीमती देबोलिना कुण्डु, "प्रोविजन आफ बेसिक सर्विस इन अर्बन इण्डिया इन द कंटेक्स्ट आफ द चैंजिंग पर्सपेक्टिव आफ गवर्नेंस : ए रीजनल एनालिसिस", प्रो. असलम महमूद (11.7.2002)

148. श्री बिश्वरंजन मोहन्ती, "प्राब्लम्स आफ डिस्प्लेसमेंट ऐंड रिहेबिलिटेशन आफ ट्राइब्लस : ए केस स्टडी आफ अपर कोलाब रीवर डेम प्रोजेक्ट आफ उड़ीसा", प्रो. अश्विनी के. रे (30.7.2002)

149. श्री एस.ए.एम. पाशा, "इस्लाम ऐज ए फैक्टर इन पाकिस्तान'स फारेन पालिसी ऐंड इंटरनेशनल रिलेशंस", प्रो. अश्विनी के. रे (30.7.2002)

150. श्रीमती आभा रंजन, "आइडियोलाजी ऐंड मीडिया : प्रोर्टरेयल आफ वुमन इन दूरदर्शन प्रोग्राम्स : पीरियड 1985–1992", प्रो. किरण सक्सेना (30.7.2002)

151. श्रीमती नमिता आनन्द, "जैंडर इन इक्वेलिटी ऐंड फीमेल चाइल्ड मोर्टेलिटी : ए स्टडी आफ हरदोई डिस्ट्रिक्ट", प्रो. के.एल. शर्मा (24.7.2002)

152. सुश्री मीनाक्षी खन्ना, "ड्रीम्स ऐंड विजंस इन नार्थ इण्डियन सूफिक ट्रेडियंश सीए (1500–1800) ए.डी.", प्रो. मुजफ्फर आलम (16.8.2002)

153. सुश्री बासोबी सरकार, "वूमन'स वर्क स्टेट्स, फैमिली करेक्टिरिस्टिक्स ऐंड साइक्लोजिकल वेल–बींग : ए स्टडी आफ एडोलेसेंट्स ऐंड मदर्स इन दिल्ली", प्रो. सुशीला सिंघल (19.8.2002)

154. श्री आदित्य निगम, "सेक्युलरीज्म ऐंड द इण्डियन नेशन : ए स्टडी आफ द राइज आफ फ्रेगमेंटिड आइडेटिटीज सिंस द 1980'स", प्रो. राजीव भार्गव (19.8.2002)

155. सुश्री खगेन्द्रनाथ सेठी, "मर्चेंट्स ऐड कमार्शियल आरगेनाइजेशन इन कोस्टल उड़ीसा इन द सेवटींथ ऐंड एटींथ सेंचुरीज", डा. योगेश शर्मा (13.9.2002)

156. सुश्री प्रोमिला यादव, "टोटल लिट्रेसी कम्पेन ऐंड सोशॅल चैंज : ए स्टडी आफ सिक्स सलेक्टिड लोकेल्टीज इन भोपाल डिस्ट्रिक्ट", प्रो. के.एल. शर्मा (13.9.2002)

157. श्रीमती शेरनाज आर. सिंह, "पर्सीव्ड लीडर–सबोर्डिनेट बिहेवियर : जैंडर स्टिरिओ टाइप्स ऐंड ग्लास सीलिंग अमंग एज्यूकेशन एडमिनिस्ट्रेटर्स ऐंड टीचर्स", प्रो. सुशीला सिंघल और डा. मीनाती पांडा (13.9.2002)

158. श्री हिरोयूकी ओबा, "इण्डस्ट्रियल डिवलपमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी एब्जार्प्शन इन द इण्डियन स्टील इण्डस्ट्री : विद स्पेशल रेफ्रेंस टु ए जेपनीज एक्सपिरियंस", प्रो. रामप्रसाद सेनगुप्ता और प्रो. अमित भादुरी (13.9.2002)

159. श्री अनिकेत आलम, "ब्रिटिश रूल इन द वेस्टर्न हिमालयाज : एनवायरनमेंट, इकोनोमी, सोसायटी", प्रो. के.एन. पाणिकर और प्रो. तनिका सरकार (20.9.2002)

160. श्री मुनेश्वर यादव, "इण्डियन नेशनलिज्म : द पोस्ट– इंदिरा गांधी इरा", प्रो. जोया हसन (4.10.2002)

161. श्रीमती विजयलक्ष्मी सिंह, "मथुरा : द सेटलमेंट पैटर्न ऐंड कल्चरल प्रोफाइल आफ एन अर्ली हिस्टोरिकल सिटी", प्रो. बी.डी. चट्टोपाध्याय, (8.10.2002)

162. श्रीमती सुहरिता साहा, "रिसर्जेंट हिन्दू नेशनलीज्म इन द ऐज आफ ग्लोबलाइजेशन : द केस आफ वेस्ट बंगाल", प्रो. टी.के. ऊमन (22.10.2002)

163. श्री सुब्रत कुमार नंदा, "नेशनलीज्म ऐंड रीजनलीज्म इन उड़ीसा : ए सोशिओलाजिकल एनालिसिस", प्रो. टी.के. ऊमन (29.10.2002)

164. श्री उज्जयन भट्टाचार्य, "मेकिंग आफ अर्ली क्लोनिअल बेंगाल : एग्रेरियन इकानोमी, इंस्टीट्यूशंस ऐंड ऐजेंसी सीआर 1750–1800", प्रो. रजत दत्ता (30.10.2002)

165. सुश्री कुमारी अंजना, "धर्म इन द महाभारत (कंसेप्ट्स ऐंड प्रेक्टिसिस)", प्रो. कुणाल चक्रवर्ती (30.10.2002)

166. श्री नोरिमिची नरिता, "लेबर ऐंड लेजिसलेशन इन इण्डिया 1937–39 : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ बम्बई ऐंड बंगाल", प्रो. एस. भट्टाचार्य (20.11.2002)

167. सुश्री शोभा कुसुमा, "नान–गवर्नमेंटल आरगेनाइजेशंस ऐंड चाइल्ड लेबर (केस स्टडीज इन टु सिटीज आफ आंध्र प्रदेश)", प्रो0. आर.के. जैन (20.11.2002)

168. श्री मनीष कुमार वर्मा, "डिवलपमेंट, इकोलाजिकल चैंजिस ऐंड इनवालंट्री डिस्प्लेसमेंट : ए सोशिलाजिकल एनालिसिस आफ सलेक्टिड प्रोजेक्ट्स", प्रो. के.एल. शर्मा और प्रो. योगेन्द्र सिंह (सह निर्देशक) (28.11.2002)

169. श्री राघवेंद्र एस. "इफेक्टिव डिमाण्ड इम्प्लायमेंट ऐंड इंकम डिस्ट्रब्युशंस", प्रो. अमित भादुरी और प्रो. आर.पी. सेनगुप्ता (2.12.2002)

170. सुश्री सुकन्या बोस, "मनी ऐंड फाइनेंस इन डीरेग्यूलेटिड इकोनोमीस : द इण्डियन एक्सपिरियंस", प्रो. सुनन्दा सेन और प्रो. प्रभात पटनायक (13.12.2002)

171. सुश्री फोजिया मननान, "जेंडर ऐंड डिवलपमेंट : एन एनालिसिस आफ सलेक्टिड एन.जी.ओ. इंटरवेंशंस इन बंगलादेश ऐंड इण्डिया", डा. मैत्रेयी चौधरी (23.12.2002)

172. सुश्री शीबा के.एम., "कास्ट, सेक्सुअलिटी ऐंड द स्टेट : द चैंजिग लाइव्स आफ द नम्बूदिरी वुमन इन कारालम इन द टवंटिअथ सेंचुरी", डा. भागवान जोश (31.12.2002)

173. श्री विजय कुमार यादवेंदु, "मैथडालाजिकल इंडिविजुअलिज्म इन पब्लिक हैल्थ : मैपिंग द कनटूर्स आफ ए डिस्कोर्स", डा. मोहन राव और प्रो. राजीव भार्गव (31.12.2002)

174. श्री अल्बर्ट एन्तोनीराजन, "डिस्पेरिटीज इन सोशिओ–इकोनोमिक डिवलपमेंट इन श्रीलंका : ए स्पेशियो टेम्पोरल *एनालिसिस*", प्रो. सुदेश *नांगिया* (4.2.2003)

175. श्री राजशी मजूमदार "इंफ्रास्ट्रक्चर ऐंड इकोनोमिक डिवलपमेंट : ए रीजनल एनालिसिस", प्रो. अशोक माथुर (28.01.2003)

176. सुश्री शीतल शर्मा, "वुमन लायर्स प्रैक्टिसिंग ऐट दिल्ली कोर्ट्स : ए सोशिओलाजिकल स्टडी", प्रो. जे.एस. गांधी (21.01.2003)

177. सुश्री दीपा मुखर्जी, "इम्प्लायमेंट ऐंड प्रोडक्टिविटी इन द इनफार्मल मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर : ए रीजनल एनालिसिस", प्रो. अशोक माथुर (31.01.2003)

178. श्री हबीबुला अंसारी, "सिग्निफिकेंस आफ ट्रेडिशनल सोशॅल इंस्टीट्यूशंस फार द एल्डर्ली इन द चैंजिंग कंटेक्स्ट आफ रूरल गोपालगंज, बिहार", डा. रितु प्रिया मेहरोत्रा (11.2.2003)

179. अनुभा मेहता, "स्टेट ऐंड कल्चर : ए केस स्टडी आफ ललित कला अकादमी : द नेशनल अकादमी आफ विजुअल आर्ट्स, नई दिल्ली (1954–1999)" प्रो. राजीव भार्गव (20.2.2003)

180. श्री राजीव नंदी, "डिप्लिशन आफ नेचुरल फारेस्ट इन ए मल्टी–एथनिक सैटिंग : एन एनालिसिस आफ इकोलाजी ऐंड सोशॅल स्ट्रक्चर इन द डुअर्स रीजन आफ वेस्ट बंगाल", डा. सुसान विश्वनाथन और प्रो. आर.के. जैन (17.2.2003)

181. सुश्री सेबती मलिक, "रिलिजन ऐंड सोशिओ इकोनोमिक प्रोफाइल आफ द भूमिज इन क्योंझार डिस्ट्रिक्ट आफ उड़ीसा", प्रो. के.एल. शर्मा (17.2.2003)

182 श्री जी. अजय, "फ्रेगमेंटेशन ऐंड सालिडेरिटी : ए स्टडी आफ कास्ट, क्लास ऐंड जैंडर मूवमेंट्स इन आंध्र प्रदेश : 1985–1995" प्रो. गुरप्रीत महाजन (17.2.2003)

183. श्री नागदसारी सिद्दोजी राव, "इकोनामिक रिस्ट्रक्चरिंग प्रोग्राम : नायडु'स डिवलपमेंट एक्सपेरिमेंट इन आंध्र प्रदेश 1995–2001", प्रो. अश्विनी कुमार रे (26.2.2003)

184. सुश्री सुष्मिता दास गुप्ता, "सोशियोलाजी आफ द हिन्दी कामर्शियल सिनेमा : ए स्टडी आफ अमिताभ बच्चन", प्रो. आर.के. जैन और डा. अविजित पाठक (4.03.2003)

185. श्री माधो गोविंद, "नार्मेटिव डायमेंशंस कम्युनिटी लाइफ ऐंड कल्चरल ओरिएंटेशन आफ साइंटिस्ट्स इन नेशनल फिजिकल लेबोरेट्री, दिल्ली ऐंड इण्डियन इंस्टिट्युट आफ साइंस, बंगलौर", सी.एन. वेणुगोपाल (24.3.2003)

सूक्ष्म जैविक प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़

186. श्रीमती ज्योति सरीन, "मोलक्यूलर ऐंड बायोकैमिकल करेक्ट्राइजेशन आफ ए.टी.पी.–बाइंडिंग सबयूनिट आफ माइक्रोबेक्टिरियल फासफेट स्पेसिफिक ट्रांसपोर्टर", डा. पी.के. चक्रवर्ती (7.2.2003)

187. श्री विश्वजीत कुंडु, "टुवर्डस अंडरस्टेंडिंग ऐंड मेनिपुलेटिंग द अग्रीगेशन आफ ग्लोबुलर प्रोटींस, डा. पूर्णानंद गुप्ता शर्मा (10.04.2002)

188. श्री सुष्मित सुवास, "डिस्टिंक्ट रोल आफ कोस्टिम्युलेट्री मोलक्यूलस इन डिफ्रेंशिएशंस आफ बी सेटस ऐंड नर्व टी सेल्स", डा. जावेद एन अग्रेवाला (24.4.2002)

189. कृष्ण कुमार पाण्डेय, "मोलिकुलर करेक्ट्राइजेशन आफ ए सुडोमोनस एस.पी. ऐंड जीस इनवाल्वड इन हाइड्रोकार्बन यूटिलाइजेशन", डा. तपन चक्रवर्ती (14.06.2002)

190. श्री विशाल सोनी, "स्टडी आफ बायोलाजी आफ द फेज पी.आई.एस.आई. 136 ऐंड इट्स यूज ऐज ए टूल इन माड्यूलेटिंग एन्टीबायटिक बायोसिंथेटिक पाथवेज", डा. पुष्पा अग्रवाल (30.7.2002)

191. श्री मनीष जैन, "एन्टीजैनिक टार्गेट्स इन लिश्मानिया डोनोवानी पैरासाइट ऐंड इनफेक्टिड मैक्रोफेजिस", डा. गिरीश सी. वार्ष्णेय (8.10.2002)

192. सुश्री एस. वासुधा, "स्ट्रक्चर–फंक्शन स्टडीज आफ स्ट्रेप्टोकाइनेस", डा. गिरीश साहनी (21.10.2002)

193. श्रीमती दीप्ती सरीन, "माइक्रोबायल ट्रांसफार्मेशन आफ एन कार्बामोयल अमिनो कम्पाउंड्स", डा. राकेश एम. वोहरा (5.12.2002)

194. श्रीमती ज्योति मित्तल, "एन्टी इनफ्लेमेट्री एजेंट्स रेग्यूलेटिड नाइट्रिक ओक्साइड प्रोडक्शन इन म्युरीन मेक्रोफेजिस" डा. शेखर मजुमदार (5.12.2002)

195. सुश्री रमनदीप, "विट्रोसिला हिमोग्लोबिन : इंजीनियरिंग आफ आक्सीजन एफिनिटी ऐंड स्टडीज आन इट्स रोल इन सेल्युलर फिजिओलाजी", डा. कनक एल. दीक्षित (23.1.2002)

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

196. सुश्री दीपाली रूहेला, "केमिकल सिंथेसिस ऐंड बायोसिंथेसिस आफ एन्टीजेनिक सेल सर्फेस लिपोफास्फोग्लोकेन आफ लीश्मैनिया डोनोवानी पैरासाइट", डा. आर.ए. विश्वकर्मा (28.3.2003)

197. श्री अनवाल होशांग जे., "इफिकेसी आफ हेमरहैड ऐंड डी.एन.ए. – एनजाइम्स अगेंस्ट टेट/रेव ऐंड एनविलप जीन्स आफ एच.आई.वी. I" डा. ए.सी. बैनर्जी (22.4.2002)

198. सुश्री मनीषा सैनी, "स्टडीज आन द यूज आफ सेल्फ असेम्बलिंग कोट प्रोटीन आफ जानसन ग्रास मोसेक वायरस टु प्रजेंट एन्टीजेनिक पेपटाइड्स फ्राम जेपनीज एनसिफालिटिस वायरस", डा. सुधांशु व्राती (02.07.2002)

199. सुश्री रूपिंदरजीत कौर, "स्टडीज आन द प्लैजमिड डी.एन.ए. – बेस्ड इम्युनाइजेशंस अगेंस्ट जेपनीज एंसिफालिटिस वायरस" डा. सुधाशु व्राती (16.9.2002)

200. श्रीमती प्रिया विश्वनाथन, "मोलिक्यूलर एनालिसिस आफ द बेकुलोवायरस एन्हांसर सिक्वेंस" डा. सैयद इ. हसनैन (18.12.2002)

201. श्री तुम्माला हेमचंद, "स्पर्म ग्लुटाथिओन एस – ट्रासफिरेसिस ऐज बायोरिफॉगनिशन मोलिक्यूलस : स्ट्रक्चरल ऐंड फंक्शन अस्पेक्ट्स", डा. चंद्रिमा शाह (23.12.2002)

202 सुश्री वनिता एस. रमण, "एनालिसिस आफ द रेग्यूलेशन आफ बी. सेल डिफ्रेंसिएशन", डा. अन्ना जार्ज (5.2.2003)

203. सुश्री आर. सुधा, "इंटरएक्शंस आफ सलेक्टिडचैन कनटेक्ट साइट्स इन द पोलिमेरिजेशन आफ सिकल हीमोग्लोबिन", डा. आर.पी. राय (3.2.2003)

204. श्रीमती श्वेता, "राइबोसोम – इनएक्टिवेटिंग प्रोटीन सेपोरिन : इन साइट्स इन टु द मैकेनिज्म आफ एक्शन", डा. जैनेन्द्र के. बत्रा (7.2.2003)

205. श्रीमती अर्चना रथ, "करेक्ट्राइजेशन आफ इम्युन रेस्पॉस टु प्लैज्मीड एनकोडिंग जोना पेलुसिदा ग्लाइको प्रोटीन्स ऐंड रेबीज वायरस ग्लाइको प्रोटीन", डा. सतीश कुमार गुप्ता (7.3.2003)

206. सुश्री मोनिका विज, "रेग्युलेट्री पथवेज फार टी. सेल रेस्पोंसिस", डा. विनीता बल (28.3.2003)

विकास अध्ययन केंद्र

207. श्री एम. विजय भास्कर, "इण्डस्ट्रियल फार्मेशन अंडर कंडीशंस आफ फ्लैक्सिबल एक्युमुलेशन : द केस आफ ए ग्लोबल निटवियर नोड इन साउदर्न इण्डिया", डा. पी. मोहनन पिल्लई (30.4.2002)

208. सुश्री दीपा शंकर, "एक्सेस टु ऐंड यूटिलाइजेशन आफ हैल्थ केयर सर्विसिस इन केरल : पैटर्नस ऐंड डिटर्मिनेंट्स", डा. डी. नारायण और डा. पी. आर. गोपीनाथन नायर (16.10.2002)

209. सुश्री दीपिता चक्रवर्ती, "टेक्नोलाजिकल चैंज आरगेनाइजेशन आफ वर्क ऐंड इम्प्लायमेंट कांटेक्ट्स : इमरजैंस आफ डीसैंट्राइज्ड बार्गेनिंग इन द इण्डियन टेक्स्टाइल्स", प्रो. एन. कृष्णाजी और डा. अचिन चक्रवर्ती (14.02.2003)

कोशिकीय और अणु जीवविज्ञान केंद्र, हैदराबाद

210. श्री अजय कुमार, "जैनेटिक एनालिसिस आफ फिगमेंटेशन फंक्शंस इन जैन्थोमोनस ओरिजी पी.वी. ओरिजी", डा. रमेश वी. सोंटी (4.2.2003)

211. श्री कुलानंद झा, "द मोलक्यूलर बेसिस आफ मैमेलियन स्पर्म केपिसिटेशन", डा. एस. शिवाजी (16.4.2002)

212. श्री सुवेन्द्र कुमार रे, "आइडेंटिफाइंग विरूलेंस फंक्शंस आफ जैथोमोनस ओरिजी पाथोवर ओरिजे यूजिंग ट्रांसपोसंस", डा. रमेश वी. सोंटी (19.4.2002)

213. श्री संजीव कुमार गुप्ता, "रेग्यूलेशन आफ जीन एक्सप्रेशन बाई ए न्यूक्लियर टायरोसिन फास्फोटेस", डा. घनश्याम स्वरूप (20.5.2002)

214. श्रीमती श्रद्धा गोयनका, "स्टेबिलिटी ऐंड कनफर्मेशनल आस्पेक्ट्स आफ जेता क्रिस्टालिन ऐंड इट्स इंटरएक्शन विद एल्फा क्रिस्टालिन", डा. चौ. मोहन राव (19.6.2002)

215. श्री विष्णु एम. धोपले, "स्ट्रक्चर–फंक्शन कोरिलेशंस इनो–टाक्सिन : स्टडीज इनवाल्विंग सिन्थेटिक पेप्टाइड्स कोरिस्पोंडिंग टु द टाक्सिन ऐंड इट्स वेरियंट्स", डा. आर. नागराज (26.7.2002)

216. श्री एल.वी. शिवा कुमार, "स्ट्रक्चर–फंक्शन रिलेशनशिप आफ ह्यूमन रिकम्बिनेंट–क्रिस्टालिन : इफेक्ट आफ साइट–डायरेक्टिड म्युटेशंस आन आलिगोमेरिजेशन ऐंड केपरोनलाइक एक्टिविटी", डा. चौ. मोहन राव (4.9.2002)

217. सुश्री चेतना, "आइडेंटिफिकेशनल ऐंड आइसोलेशन आफ मोलकुलर मार्कर्स आफ ग्रोथ माइओब्लास्ट्स", डा. ज्योत्सना धवन (17.10.2002)

218. सुश्री राना अंजुम, "मैकेनिज्म्स आफ एपोप्टोसिस इन ए.के.–5 टयुमर सेल्स : मोलक्यूलर कम्पोनेंट्स आफ द डेथ पाथवे", डा. अशोक खार (18.12.2002)

219. श्रीमती मंजुला रेड्डी, "स्टडीज आफ म्युटेशनल मैकेनिज्म्स इन एशरिकिया कोली इन वेरियस फेजिस आफ ग्रोथ : रिवर्जन एनालिसिस आफ म्युटेशंस इन लेक जैड जीन", डा. जे. गौरीशंकर (14.12.2002)

220. श्रीमती राजकुमारी केवती, "मैकेनिज्म आफ ओस्मोटिक रेग्यूलेशन आफ ट्रांसक्रिप्शन आफ द प्रो. यू. आपरेन इन एथरिकिया कोली", डा. जे. गौरीशंकर (1.2.2003)

221. श्री आर. हरिनारायणन, "स्टडीज आन द आर.पी.ओ. बी 364 म्युटेशन इन एशरिकिया कोली : जेनेटिक ऐंड मोलक्यूलर एनालिसिस आफ सप्रेसर्स आफ प्लैज्मीड–मिडिएटिड लेथालिटी फिनोटाइप", डा. जे. गौरीशंकर (4.2.2003)

अन्तर्राष्ट्रीय आनुवांशिकी और जैव प्रौद्योगिकी केंद्र, नई दिल्ली

222. सुश्री नीमा अग्रवाल, "क्लोनिंग ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ क्राई I सी टाक्सिन बाइंडिंग अमिनोपेप्टीडेस एन. आइसोलेटिड फ्राम द मिडगट आफ लेपिडोप्टीरेन पेस्ट, स्पोडोप्तेरा लितुरा", डा. राज भटनागर (14.10.2002)

223. श्री मोहई एल–दिन सुलिमान, "आइसोलेशन ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ प्लांट प्रमोटर्स फार हाई लेवल ऐंड टिशु स्पेसिफिक एक्सप्रेशन आफ फारेन जींस इन ट्रांसजेनिक प्लांट्स", डा. वी. सिवा रेड्डी (28.10.2002)

224. श्री यूलियांग वु, "क्लोनिंग ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ हिट्रोट्रिमरिक जी–प्रोटींस फ्राम पी (पीजम सेतिवम) ऐंड स्टडी आन देयर रेग्यूलेटरि रोल इन सिग्नल ट्रांसडक्शन", डा. नरेंद्र टुटेजा (4.12.2002)

225. सुश्री हिमानी बिष्ट, "एक्सप्रेशन ऐंड प्यूरिफिकेशन आफ डेंगू वायरस टाइप 2 एनविलप प्रोटीन ऐज ए काइमिरा विद हेपेटाइटिस बी सर्फेस एंटीजन इन पीचिया पेस्टोरिस", डा. नवीन खन्ना (4.12.2002)

226. सुश्री आकांक्षा चतुर्वेदी, "बी सेल एक्टिवेशन रेग्यूलेशन बाई एन्टीजन", डा. कनुरी बी.एस. राव (10.2.2003)

227. सुश्री श्वेता त्यागी, "आइसोलेशन ऐंड करेक्ट्राइजेशन आफ प्रोटींस देट इंटरएक्ट विद ओ.आर.एफ.3 प्रोटीन आफ हेपेटाइटिस ई. वायरस", डा. सुनील के. लाल (13.2.2003)

नाभिकीय विज्ञान केंद्र, नई दिल्ली

228. श्री संजीव कुमार श्रीवास्तव, "सिंथेसिस आफ कम्पाउंड्स ऐंड नेनोफेजिस बाई स्विफ्ट हैवी आयंस", डा. डी.के. अवस्थी (16.10.2002)

रमण अनुसंधान संस्थान, बंगलौर

229. श्री सुशील मजूमदार, "सम इनवेस्टिगेशन आफ लाइट स्कैटरिंग इन एक्टिव ऐंड पैसिव रेनडम मीडिया", डा. हेमा रामचन्द्रन (23.4.2002)

एम.फिल उपाधियां

पर्यावरण विज्ञान संस्थान

1. श्री विजय सिंह, "जिओफिजिकल अप्रोच फार द स्टडी आफ ग्राउंडवाटर : पोल्युशन इन ए पार्ट आफ दिल्ली", प्रो. एस. मुखर्जी (9.4.2002)
2. श्री नरेन्द्र कुमार साहू, "इकोलाजिकल स्टेटस आफ लेक खजिआर, हिमाचल प्रदेश", प्रो. बृजगोपाल (14.5.2002)
3. श्री मनोज कुमार सिंह, "लो फ्रीक्वेंसी अल्ट्रासोनिक इरेडिएशन आफ एक्टिवेटिड स्लज", प्रो. जे. बिहारी (12.11.2002)
4. श्री जगदम्बा प्रसाद, "पैटर्न ऐंड इम्पलिकेशंस आफ लैण्डकवर–लैण्ड यूज चैंजिस इन ए क्लस्टर आफ हिमालयन विलेजिस", प्रो. के.जी. सक्सेना (12.12.2002)
5. श्री विजय श्रीधर, "एलिमेंटल कम्पोजिशन आफ साइज डिफ्रेशिएटिड एरोसोल्स इन दिल्ली", डा. पी.एस. खिलारे (12.12.2002)
6. श्री दीपक सिंह, "डिसइंटिग्रेशन आफ पोल्युटेंट्स इन वेस्टवाटर यूजिंग अल्ट्रावायलट इरेडिएशन", प्रो. जे. बिहारी (19.12.2002)
7. श्री पांधरी रंगनाथ कदम, "पोलिसाइक्लिक एरोमेटिक हाइड्रोकार्बस इन यमुना रीवर वाटर", डा. पी.एस. खिलारे (17.12.2002)
8. श्री कुमार सरनजीत प्रसाद, "स्टडी आफ माइक्रोबायल ग्रोथ इन आरसेनिक रिच एनवायरनमेंट", प्रो. वी. सुब्रामणियन और डा. जयश्री पाल (27.12.2002)
9. मोहम्मद हाफीज फरीदी, "ओवरएक्सप्रेशन आफ एचएबीपी 1 मुटेंट ऐंड इट्स फंक्शनल एनालिसिस", प्रो. कस्तूरी दत्ता (30.12.2002)
10. श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव, "सेडिमेंट करेक्ट्रेस्टिक्स आफ द अचनकोविल रीवर बेसिन, केरला", डा. ए.एल. रामानाथन (30.12.2002)
11. सुश्री सीमा गुजराल, "पोलिसाइक्लिक एरोमेटिक हाइड्रोकार्बस इन रोड डस्ट", डा. पी.एस. खिलारे (13.1.2003)
12. भावना शर्मा, "ए स्टडी आफ साइज फ्रेक्शनेटिड एरोसोल्स इन द विसिनिटी आफ बदरपुर थर्मल पावर स्टेशन (बी.टी.पी.एस.) इन दिल्ली", प्रो. वी.के. जैन (23.1.2003)
13. श्री विनय त्रिपाठी, "इन–विट्रो हिमोलिसिस ऐंड ऐसीटिलकोलिनेस्टेरस इन हिबिशन विद पेस्टिसाइड : ए काइनेटिक स्टडी इन ह्यूमन एरिथ्रोसाइट्स (ब्लड)", डा. (श्रीमती) जे.डी. शर्मा (24.1.2003)
14. सुश्री मीनाक्षी यादव, "आइडेंटिफिकेशन आफ क्लेसिअल फीचर्स बाई यूजिंग सेटेलाइट रिमोट सेंसिंग डाटा इन गंगा हेडवाटर", प्रो. एस.आई. हसनैन (3.2.2003)
15. श्री परमानंद शर्मा, "केमिकल करेक्ट्रेस्टिक्स आफ स्नो, आइस ऐंड मेल्टवाटर फ्राम छोटा शिंगरी ग्लेशियर, हिमाचल प्रदेश", प्रो. एस.आई. हसनैन (3.2.2003)
16. सुश्री सुदर्शना चन्द्रायन, "स्टेटस आफ अवेलेबल फासफोरस इन सायल ट्रीटिड विद इण्डस्ट्रियल वेस्ट आफ वजीरपुर", दिल्ली, प्रो. ए.के. भट्टाचार्य (11.2.2003)
17. श्री शशी शंकर, "मेजरमेंट आफ डायलेक्ट्रिक कांसटेंट आफ सायल ऐट माइक्रोवेव फ्रीक्वेंसिज", प्रो. जे. बिहारी (17.3.2002)

अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान

18. सुश्री मनीषा दहिया, "द सोशल पालिसी आफ द यूरोपियन यूनियन", प्रो. बी. विवेकानंदन (28.3.2002)
19. श्री पीनाकी राउट्रे, "इण्डिया, यूरोपियन यूनियन ऐंड द सीटल मिनिस्ट्रियल कानफ्रेंस 1999", प्रो. आर.के. जैन (28.3.2002)
20. सुश्री नमग्या सी. खम्पा, "डिफेंस ऐंड मिलिट्री मार्डनाइजेशन इन साउथ ईस्ट एशिया : इम्प्लिकेशन फार रीजनल सिक्युरिटी", डा. गंगनाथ झा (4.4.2002)

21. श्री विनय श्रीकांत प्रधान, "द इश्यू आफ न्यूक्लियर डिसार्मामेंट इन द फारेन पालिसी आफ आस्ट्रेलिया ऐंड न्यूजीलैण्ड : ए कम्पेरिटिव एनालिसिस", डा. मनमोहिनी कौल (17.4.2002)

22. श्री रतिकान्त पात्रा, "मिलिट्री इंटरवेंशन इन पाकिस्तानी पालिटिक्स : द फोर्थ मिलिट्री कू", प्रो. कलीम बहादुर (17.4.2002)

23. श्री शर्मदीप बसु, "द वियतनाम वार ऐंड द अमेरिकन यूथ प्रोटेस्ट मूवमेंट्स आफ द सिक्सटीज", डा. के.पी. विजयलक्ष्मी (17.4.2002)

24. श्री सुभंत रागला, "क्यूबन–अमेरिकंस इन द पालिटिकल प्रोसेस आफ यूनाइटिड स्टेट्स", डा. के.पी. विजयलक्ष्मी (17.4.2002)

25. श्री दिलीप गोगई, "एनवायरनमेंटल चैंज ऐंड एक्यूट कनफ्लिक्ट : ए स्टडी आफ द रीजंस ऐंड इम्पेक्ट आफ बंगलादेशी माइग्रेशन इनटु असम", डा. वरूण साहनी (17.4.2002)

26. श्री अजय कुमार पाण्डेय, "इंटरनेशनल लीगल रेस्पोंस टु द यूज आफ टोबाको फार ह्यूमन कंजप्शन", प्रो. वी.एस. मणि (19.4.2002)

27. श्री कृष्ण देव, "आस्ट्रेलिया–आसियान इकोनोमिक रिलेशंस : ए स्टडी आफ द मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर, 1990–2000", डा. मनमोहिनी कौल (19.4.2002)

28. श्री सपोंती बरूवा, "यूरोपियन सिक्युरिटी ऐंड डिफेंस आइडेंटिटी : प्राब्लम्स ऐंड प्रोस्पेक्ट्स", प्रो. आर.के. जैन (19.4.2002)

29. श्री नीरज गौतम, "एड–हाक इंटरनेशनल क्रिमिनल ट्रिब्युनल्स : ए केस स्टडी आफ इंटरनेशनल क्रिमिनल ट्रिब्युनल्स फार फार्मर युगोस्लाविया ऐंड रवांडा", प्रो. वी.एस. मणि (26.4.2002)

30. सुश्री जुपका माधवी, "जिओस्ट्रेटिजिक इम्परिटिव्स इन इण्डिया'ज नार्दन सेक्टर : ए क्रिटिकल असेसमेंट आफ ट्रांसपोर्ट ऐंड कम्युनिकेशंस", डा. एस.एस. देवरा (5.6.2002)

31. श्री सुदीप रंजन बसु, "द डिवलपमेंट प्रोसेस इन इण्डियन स्टेट्स", प्रो. मनमोहन अग्रवाल (5.6.2002)

32. श्री संदीप कुमार महापात्रा, "इंटरनेट ऐंड कापीराइट प्रोटेक्शन : इमर्जिंग ट्रेंड्स इन इंटरनेशनल ला", प्रो. वी.एस. चिमनी (5.6.2002)

33. श्री फैज्जुर रहमान सिद्दीकी, "प्रेजिडेंट सादत'स पालिसी टुवर्डस इजराइल, 'फ्राम वार टु पीस", डा. पी.आर. कुमारस्वामी (4.6.2002)

34. सुश्री गरिमा सिंह, "न्यूक्लियर टेस्ट्स आफ इण्डिया ऐंड पाकिस्तान – 1998 : द यू.एस. रिस्पोंस", प्रो. नैंसी जेटली (5.6.2002)

35. श्री ओमप्रकाश दास, "प्राब्लम्स आफ कम्प्लाइंस : इंटरनेशनल कोवनेंट आन इकोनोमिक, सोशल ऐंड कल्चरल राइट्स : ए केस स्टडी आफ इण्डिया", प्रो. अर्जुन के. सेनगुप्ता (24.6.2002)

36. श्री विपिन कुमार नीरज, "रशिया'स पालिसी टुवर्ड्स द वेस्ट, 1991–95", डा. तुलसी राम (18.7.2002)

37. सुश्री जया सिंह, "पालिटिकल डिवलपमेंट्स इन आर्मेनिया, 1991–95", डा. तुलसी राम (18.7.2002)

38. श्री रहमान मुजाम्मिल खलील, "काउ–प्रोटेक्शन मूवमेंट ऐंड द कम्युनल रायटस इन इण्डिया : ए केस स्टडी आफ आजमगढ़ ऐंड शाहबाद रायट्स", डा. इंदिवर कामतेकर (12.8.2002)

39. श्री शेखर विद्यार्थी, "इंटर इंडिपेंडेंसीज बिटवीन इकोनोमिक, सोशल ऐंड ह्यूमन डिवलपमेंट : एन इंटर–स्टेट ऐंड इंट्रा–स्टेट एनालिसिस", प्रो. अमिताभ कुण्डु (12.8.2002)

40. सुश्री इप्सिता चटर्जी, "स्पेस ऐज कनटेनर, स्पेस ऐज कनटेंड : एन एक्सप्लोरेशन विद स्पेशल रिफ्रेंस टु इण्डियन नेशन स्पेस", डा. सच्चिदानंद सिन्हा (12.8.2002)

41. श्री अर्यामा, "टालरेंस : कनसेप्चुअल ऐंड थीअरिटिकल प्राब्लम्स", प्रो. राजीव भार्गव (12.8.2002)

42. श्री दीपक कुमार, "थिएटर मिसाइल डिफेंस (टी.एम.डी.) ऐंड इण्डिया'ज सिक्युरिटी", डा. स्वर्ण सिंह (2.9.2002)

43. सुश्री जारानी रूबिना एस. "ह्यूमन राइट्स वायलेशंस आफ वुमन इन कनफ्लिक्ट सिचुएशन : ए केस स्टडी आफ अफगान रिफ्यूजी वुमन", प्रो. महेन्द्र पी. लामा (2.9.2002)

44. श्री संजीव सिंह एम.के., "द ब्रेक–अप आफ द सोवियत यूनियन : ए हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव", प्रो. निर्मला जोशी (28.8.2002)

45. श्री परितोष कुमार, "इलेक्ट्रानिक्स बैंकिंग : इमर्जिंग इंटरनेशनल ला", प्रो. बी.एस. चिमनी (7.5.2002)

46. श्री तारा शंकर शा, "स्ट्रक्चरल कानस्ट्रेंट्स इन डिवलपिंग इकोनोमीज : ए थ्री–गेप एनालिसिस", प्रो. एम.एल. अग्रवाल (26.9.2002)

47. श्री संजीव सिंह, "इजिप्ट : एन एनालिसिस आफ पार्लियामेंटरि इलेक्शंस सिंस 1984", डा. अनवर आलम (27.9.2002)

48. श्री हीरालाल नाग, "द पालिटिकल इनस्टेबिलिटी इन सोमालिया (1991–2001)", डा. ए.के. दुबे (17.10.2002)

49. सुश्री जानकी श्रीनिवासन, "टर्कीज एक्सेसन टु द यूरोपियन यूनियन : प्राब्लम्स ऐंड प्रोस्पेक्ट्स", प्रो. बी. विवेकानंदन (24.10.2002)

50. तेबोरलांग के. खारसयांतियु, "एनवायरनमेंटल पालिसी इन द यूरोपियन यूनियन आफ्टर 1992", प्रो. बी. विवेकानंदन (24.10.2002)

51. श्री रण विजय, "एनवायरनमेंटल चैंज ऐंड लैण्ड प्रेशर : बंगलादेशी माइग्रेशन ऐंड कंफ्लिक्ट इन इण्डिया", डा. वरूण साहनी (22.10.2002)

52. सुश्री सुमन, "द कामनवेल्थ रिएक्शन टुवर्ड्स द सस्पेंशन आफ डेमोक्रेसी इन पाकिस्तान ऐण्ड फिजी", प्रो. कान्ती बाजपेई (22.10.2002)

53. श्री सालोंग यादेन, "लांचिंग आफ यूरो ऐंड इट्स इम्पेक्ट आन वर्ल्ड ट्रेड ऐंड फाइनेंस 1999–2001", प्रो. बी. विवेकानंदन (29.10.2002)

54. श्री जेम्स आर. राउलंगुल, "रीजनलीज्म अमंग थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज : ए कम्पैरिटिव स्टडी आफ द मरकासर ऐंड आसियान", डा. वरूण साहनी (29.10.2002)

55. श्री अभिषेक श्रीवास्तव, "क्राइम ऐंड ड्रग एब्युज इन ट्रांजिशनल सोसायटीज – ए सोशियोलाजिकल पर्सपेक्टिव (केस स्टडी आफ द पोस्ट सोवियत सेंट्रल एशिया)", प्रो. दावा नोरबू और प्रो. गंगनाथ झा (5.11.2002)

56. सुश्री रंजुमोनी बोराह, "डेमोग्राफिक चैंज इन वेस्टर्न यूरोप ऐंड इट्स इंप्लिकेशंस", प्रो. बी. विवेकानंदन (8.11.2002)

57. श्री संदीप सिंह, "यूनाइटिड नेशंस ऐंड 'स्मार्ट' सेक्शंस", प्रो. सी.एस.आर. मूर्ति (8.11.2002)

58. श्री रूबुल पतगिरी, "द एथनिक ऐंड पालिटिकल बेसिस आफ सेल्फ डिटरमिनेशन इन पोस्टकलोनियल स्टेट्स", डा. वरूण साहनी (8.11.2002)

59. सुश्री ऋचा सिंघल, "तंजानिया–चाइना रिलेशंस : 1960–2000", डा. अजय कुमार दुबे (18.11.2002)

60. श्री प्रणव कुमार, "पाप्यूलेशन ग्रोथ ऐंड इट्स रिलेशन विद डिवलपमेंट इन नाइजिरिया (1960–2000)" डा. एस. एन. मालाकार (18.11.2002)

61. श्री सुधाकर एम. बदिगर, "इस्लामिक फंडामेंटलीज्म इन अल्जिरिया : ए सोशियोलाजिकल एनालिसिस", डा. अनवार आलम (18.11.2002)

62. श्री केतकर प्रफुल्ल प्रदीप, "द इम्पेक्ट आफ न्यू रीजनलीज्म आन द प्रोसेस आफ ग्लोबलाइजेशन", डा. वरूण साहनी (18.11.2002)

63. सुश्री प्रीति सिंह, "ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ यूरोपियन ऐंड एशियन कानफिडेंस–बिल्डिंग मेजर्स (सी.बी.एम'स) : लेसंस फार इण्डिया–पाकिस्तान कानफिडेंस–बिल्डिंग", डा. स्वर्ण सिंह (18.12.2002)

64. श्री पार्थासारथी बहेरा, "इण्डिया–भूटान इकोनोमिक रिलेशंस इन द 1990'स", प्रो. महेन्द्र पी. लामा (18.11.2002)

65. श्री राबिन मजुमदार, "इंटरनेशनल ला ऐंड पालिसी विद रिस्पेक्ट टु बिजनेस मैथड पेटेंट्स : ओपनिंग आफ पंडोरा'स बाक्स", प्रो. भूपिंदर एस. चिमनी (18.11.2002)

66. श्री रमन कुमार, "शंघाई–फाइव : ए प्रोफाइल", प्रो. शमसुद्दीन (18.11.2002)

67. सुश्री रेशमी काजी, "द रेशनेल आफ इण्डिया'स न्यूक्लियर डिटेरेंट", डा. स्वर्ण सिंह (25.11.2002)

68. श्री पुत्ता वी.वी. सत्यनारायण, "पाप्यूलेशन डेंसिटी एनवायरनमेंट स्केअरसिटी ऐंड डोमेस्टिक आर्म्ड कंफ्लिक्ट्स 1989–1995", डा. वरूण साहनी (25.11.2002)

69. सुश्री लालथन पुई पचुआउ, "यू.एस. एप्रोच टु नार्थ कोरिया'स न्यूक्लियर प्रोग्राम : फ्राम मिसट्रस्ट टु कानफिडेंस बिल्डिंग", डा. चिंतामणि महापात्रा (27.11.2002)

70. श्री प्रशांत कुमार प्रसाद, "प्राब्लम्स आफ फारेन वर्कर्स इन जापान : पोस्ट वर्ल्ड वार II" डा. लालिमा वर्मा (27.11.2002)

71. श्री के.एन. टेनिसन, "इण्डिया पाकिस्तान रिलेशंस : फ्राम लाहोर टु आगरा", डा. सविता पाण्डे (27.11.2002)

72. श्री विवेक कुमार मिश्र, "मदरसा ऐंड मिलिटेंसी इन पाकिस्तान", डा. सविता पाण्डे (27.11.2002)

73. सुश्री सरला जैन, "खमेर रूज स्ट्रेटिजीस (1970–1978) : एन इवेल्युशन आफ इट्स इंप्लिकेशंस आन कम्बोडिया", डा. गंगनाथ झा (27.11.2002)

74. श्री सुरजीत सिंह पंवार, "डायनेमिक्स आफ पालिटिकल रिफार्म इन ईरान : पोस्ट खुमैनी पीरियड", डा. अनवार आलम (27.11.2002)

श्री के. लैकंकियाम्लाउ गुइटे, "द रिस्ट्रक्चरिंग आफ सोशल सियुरिटी सिस्टम इन चिली : ए केस स्टडी आफ पेंशन सिस्टम रिफार्म ड्यूरिंग 1973–1990", डा. आर.एल. चावला (3.12.2002)

75. श्री अरविंद बालाजी येलेरि, "द इम्पेक्ट आफ इकोनोमिक रिफार्म्स आन पोस्ट–1978 अर्बन चाइना : ए केस स्टडी आफ द रिस्ट्रक्चरिंग प्रोसेस आफ द स्टेट ओन्ड इंटरप्राइजिस", डा. डी. वाराप्रसाद शेखर (29.11.2002)

76. श्री सचिन कुमार सक्सेना, "आस्ट्रेलिया'स एनवायरनमेंटल पालिसी ऐंड सिक्युरिटी इन द रिसेंट सिनेरिओ (1994–2000)", डा. गंगनाथ झा (2.12.2002)

77. श्री मनोरंजन पट्टनायक, "एग्रीकल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर इनपुट यूज ऐंड प्रोडक्टिविटी : ए स्पेशिओ–टेम्पोरल एनालिसिस आफ उड़ीसा", प्रो. मनोज पंत (29.11.2002)

78. सुश्री सुष्मिता बैनर्जी, "एज्यूकेशनल इनवेस्टमेंट डिसीजन आफ रूरल हाउसहोल्ड्स : थिओरेटिकल एक्सलोरेशंस ऐंड इकोनोमीट्रिक इविडेंस फ्राम वेस्ट बंगाल", डा. ए.एस. रे (4.12.2002)

79. श्री बिनु वर्गीस, "लीगल रेग्यूलेशन आफ कमर्शियल अस्पेक्ट्स आफ सेटेलाइट कम्युनिकेशन : ए सर्वे", डा. वी.एस. मणि (5.12.2002)

80. श्री मोहम्मद हुसैन के.एस., "द डब्ल्यू.टी.ओ. रिजीम : ए ह्यूमन राइट्स पर्सपेक्टिव", प्रो. योगेश के. त्यागी (3.12.2002)

81. श्री जबिन थोमस जैकब, "स्टुडेंट मूवमेंट ऐंड स्टेट रिस्पोंस : द इम्पेक्ट आफ चाइनीज गर्वनमेंट पालिसीज इन एज्यूकेशन सिंस द 'टरमायल' आफ 1989", डा. अल्का आचार्य (29.11.2002)

82. श्री दिलीप कुमार महाराणा, "ससटेनेबल डिवलपमेंट इन सैंट्रल एशिया : प्राब्लम्स ऐंड प्रोस्पेक्ट्स", डा. ताहिर असगर (4.12.2002)

83. श्री रमेश चंद बहेरा, "प्राब्लम्स आफ सिक्युरिटी ऐंड को–आप्रेशन इन सैंट्रल एशिया : रोल आफ रशिया ऐंड चाइना", डा. ताहिर असगर (4.12.2002)

84. सुश्री मधुस्मिता बहेरा, "डेमोक्रेसी ऐंड द पोजिशन आफ वुमन इन सैंट्रल एशिया", डा. ताहिर असगर (4.12.2002)

85. श्री अमित कुमार, "ऐन असेसमेंट आफ कारगिल : सम पर्सपेक्टिव्स", प्रो. उमा सिंह (29.11.2002)

86. सुश्री मालेमपती सामथा, "द पीस प्रोसेस इन श्रीलंका 1994–2001" डा. पी. सहदेवन (3.12.2002)

87. सुश्री अपराजिता मुखर्जी, "द इम्पेक्ट आफ कंफ्लिक्ट आन वुमन : द केस स्टडी आफ असेह ऐंड ईस्ट तिमोर" डा. गंगनाथ झा (29.11.2002)

88. श्री रफीउल आलम लसकर, "बाहाइज्म : ए सोशियोलाजिकल स्टडी", डा. प्रकाश सी. जैन (2.12.2002)

89. श्री संदीप कुमार पंकज, "यू.एस. पालिसी टुवर्डस इराक सिंस द गल्फ क्राइसिस : ए स्टडी आफ यू.एस. सेक्शंस पालिसी", डा. चिंतामणि महापात्रा (9.12.2002)

90. सुश्री बिदिशा रे, "चैंजिंग पैटर्नस इन द साइनो–यू.एस. इकोनोमिक रिलेशंस : ट्रेंड्स ऐंड पालिसिलीटीज", डा. अल्का आचार्य (9.12.2002)

91. श्री रवि भगत, "जिओपोलिटिक्स आफ इंटिग्रेशन : ए स्पेशियल एनालिसिस आफ को–आप्रेशन इन द नार्डिक रीजन", डा. एस.एस. देवरा (9.12.2002)

92. सुश्री तनुश्री सेनगुप्ता, "ए पालिटिको–जिओग्राफिकल एनालिसिस आफ ग्लोबल वार्मिंग", डा. एस.एस. देवरा (9.12.2002)

93. श्री भास्कर कातामनेनी, "द जिओग्राफिकल एनालिसिस आफ एथनोनेशनलीज्म : ए केस स्टडी आफ श्रीलंका", डा. एस.एस. देवरा (9.12.2002)

94. सुश्री रानु बिस्वास, "जिओस्ट्रेटिजिक फैक्टर्स इन द इवोल्युशन आफ इजराइल'स इंटरनेशनल बाउंड्रीज", डा. एस.एस. देवरा (9.12.2002)

95. श्री प्रशांता कुमार प्रधान, "द फर्स्ट मजलिस इन साउदी अरबिया (1993–97) : ऐन असेसमेंट", प्रो. गुलशन डायटल (9.12.2002)

96. श्री अखिलेश बंसल, "द क्योटो प्रोटोकाल को–आप्रेटिव मैकेनिज्मस : ए लीगल स्टडी", डा. भरत एच. देसाई (13.12.2002)

97. श्री जे.सी. जोमुआनथांग, "इवोल्युशन आफ रशिया'स सिक्युरिटी डाक्ट्रान", प्रो. शशिकांत झा (13.12.2002)

98. श्री पंकज कुमार सिन्हा, "इम्पेक्ट आफ इण्डियन कल्चर आन साउथीस्ट एशिया : ए केस स्टडी आफ इंडो–चाइना", डा. मन मोहिनी कौल (13.12.2002)

99. सुश्री अपर्णा मल्होत्रा (नी खन्ना) "एविऐशन इंश्युरेंस : ए सर्वे आफ पैसेंजर ऐंड थर्ड पार्टी लायबिलिटीज", प्रो. वी.एस. मणि (16.12.2002)

100. श्री नवीन कुमार, "कल्चर ऐज ऐन इंस्ट्रुमेंट आफ फारेन पालिसी : ए केस स्टडी आफ इण्डियन कल्चरल डिप्लोमेसी इन द 1980'स", प्रो. सुरजीत मानसिंह (16.12.2002)

101. श्री अमित कुमार, "इण्डो–पाक न्यूक्लियर टेस्ट्स (1998) : इंप्लिकेशंस फार रीजनल सिक्यूरिटी इन साउथ एशिया", प्रो. उमा सिंह (16.12.2002)

102. श्री पाल सोरेन, "माओइस्ट मूवमेंट इन नेपाल", प्रो. एस.डी. मुनि (16.12.2002)

103. श्री मुकेश कुमार मिश्र, "कनसेप्ट ऐंड प्रैक्टिस आफ आटोनॉमी इन सोवियत कल्चरल एशिया", प्रो. के. वारिकु (16.12.2002)

104. सुश्री दिशोंग नगौनिला मारम, "ए कंपेरिटिव स्टडी आन पालिटिकल मोबिलाइजेशन आफ तिब्बतन (इन एक्साइल) ऐंड नागा वुमन", प्रो. दावा टी. नोरबू (16.12.2002)

105. सुश्री सुकन्या चौधरी, "स्ट्रक्चर आफ इण्डस्ट्रियलाइजेशन एनर्जी यूज ऐंड पाप्यूलेशन : ए डीकम्पोजिशन एनालिसिस", प्रो. मनोज पंत (24.12.2002)

106. सुश्री रूपा के.एन., "यू.एन.एच.सी.आर. ऐंड द प्राब्लम्स आफ इंटर्नली डिस्प्लेस्ड पर्संस", प्रो. अमिताभ मट्टू (24.12.2002)

107. श्री तेमजेनमेरेन जमीर, "कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट इन एशिया पैसिफिक : द ताइवान इश्यू इन साइनो–यू.एस. रिलेशंस 1995–97" प्रो. सुरजीत मानसिंह (24.12.2002)

108. श्री ब्यासदेब बेहरा, "गुजराल डाक्ट्राइन : इवोल्यूशन, थ्रस्ट ऐंड असेसमेंट", प्रो. एस.डी. मुनि (24.12.2002)

109. श्री नारायण महापात्रा, "रशियन पालिसी टुवर्ड्स इण्डिया–पाकिस्तान रिलेशंस", प्रो. निर्मला जोशी (24.12.2002)

110. श्री राजेश कुमार, "आर.टी.ए'स : ए केस स्टडी आफ ब्राजील'स पार्टिसिपेशन इन मर्कोसुर", डा. आर.एल. चावला (3.1.2003)

111. श्री राजू के.डी., "डब्ल्यू.टी.ओ. एप्पीलेट बाडी रिर्पोट्स आन एन्टी–डम्पिंग : ए क्रिटिकल रिव्यु", प्रो. बी.एस. चिमनी (3.1.2003)

112. श्री ज्ञानरंजन पण्डा, "टेरर ऐंड डिप्लोमेसी : इण्डिया'ज रिस्पांस टु तालिबान रिजीम इन अफगानिस्तान", प्रो. पुष्पेश पंत (3.1.2003)

113. श्री नवीन चंदर, "डिसइंटिग्रेशन आफ द सोशलिस्ट ब्लाक : ए क्रिटिकल स्टडी आफ द कम्युनिस्ट पार्टी आफ चाइना'स रिस्पांस ऐंड इंटरप्रिटेशन", डा. अलका आचार्य और प्रो. जी.पी. देशपाण्डे (3.1.2003)

114. श्री प्रमोद देव एम., "एनवायरनमेंटल स्टन्डर्ड्स इन टेक्सटाइल्स ऐंड क्लोथिंग : चैलेंजिस टु इण्डिया'ज एक्सपोर्ट", प्रो. आई.एन. मुखर्जी (3.1.2003)

115. श्री सुधीर पुलेला, "द कपतेई ऐंड नर्मदा डेम्स : रिसेटलमेंट ऐंड रिहेबिलिटेशन इश्यूज", प्रो. महेन्द्र पी. लामा (6.1.2003)

116. श्री सैम्युल जैकब कुरूविला, "यू.एस. मेडिएशन इन वेस्ट एशिया : कैम्प डेविड–II सम्मिट" श्री वी.के.एच. जम्बोलकर (17.1.2003)

117. श्री परिमल माया सुधाकर, "चाइना'स न्यूक्लियर पालिसी अंडर डेंग जियाओपिंग : 1978–1992", डा. डी. वारा प्रसाद शेखर (17.1.2003)

118. श्री अधिकारी मायूम ब्रोजेनकुमार शर्मा, "सिविल मिलिट्री रिलेशन्स इन पाकिस्तान ड्यूरिंग डेमोक्रेटिक रिजीम्स आफ बेनजीर भुट्टो ऐंड नवाज शरीफ (1988–1999)", प्रो. उमा सिंह (17.1.2003)

119. सुश्री रूजिकोर्न राएंगचंत्र., "इण्डिया'ज लुक ईस्ट पालिसी : स्ट्रेटिजिक ऐंड इकोनोमिक इम्पेरिटिव्स फार को–आप्रेशन विद आसियान", प्रो. नेंसी जेटली (17.1.2003)

120. श्री वाल्टे, "साइनो–पाक रिलेशंस इन द पोस्ट–कोल्ड वार इरा", प्रो. एस.डी. मुनि (17.1.2003)

121. श्री विनोद जे., "माडर्नाइजेशन आफ इण्डियन आर्मड फोर्सिस इन द 1990'स", प्रो. नेंसी जेटली (17.1.2003)

122. श्री अजिताभ, "तालिबान रिलिजियस एक्सट्रीमीज्म ऐंड टेररीज्म : इंप्लिकेशंस फार सेंट्रल एशिया", प्रो. के. वारिकु (17.1.2003)

123. श्री सबेस्तियन एन., "इस्लामिक मूवमेंट्स इन अल्जीरिया : एन एनालिसिस आफ पालिटिकल प्रोग्राम आफ फ्रंट इस्लामिक डु सलुत (एफ.आई.एस.), डा. अनवार आलम (17.1.2003)

124. श्री अजित कुमार श्रीवास्तव, "न्यूक्लियर पालिसी आफ पाकिस्तान 1989–1999", डा. सविता पाण्डे (21.01.2003)

125. सुश्री टीना वर्मा, "रशियन फाइनेंशिअल क्राइसिस आफ अगस्त 1998", डा. गुलशन सचदेवा, (21.1.2003)

126. श्री सुमंत कुमार स्वैन, "आइडेंटिटी ऐंड नेशन बिल्डिंग इन ताजिकिस्तान", प्रो. ए.के. पटनायक (21.1.2003)

127. सुश्री दोलिना खारवानलांग, "यूरोपीयन यूनियन ऐंड जापान रिलेशन सिंस 1990 : ए सर्वे", प्रो. राजेंद्र के. जैन (21.1.2003)

128. श्री कोवेला कुंतला रघु, "ग्लोबल कोलिशन अगेंस्ट टेररीज्म : अमेरीका'स डिप्लोमेटिक रिस्पांस", श्री वी.के.एच. जम्बोलकर (21.1.2003)

129. सुश्री ताशी कटोच, "जापान'स पार्टिसिपेशन इन यू.एन. पीसकीपिंग आप्रेशंस – डोमेस्टिक कांस्ट्रेंट्स", प्रो. के.वी. केसवन (20.1.2003)

130. श्री महेंद्र कुमार सिंह, "रशियन रिस्पांस टु द यूनाइटिड स्टेट्स मिसाइल डिफेंस प्लान", प्रो. निर्मला जोशी (21.1.2003)

131. श्री मुकेश कटारिया, "द इण्डियन नेवी इन 1990'स" डा. सविता पाण्डे (23.1.2003)

132. श्री गौरव त्रिवेदी, "द यू.एस.–पाकिस्तान रिलेशनशिप : ए स्टडी आफ प्रेसलर अमेंडमेंट", डा. चिंतामणि महापात्रा (21.01.2003)

133. श्री सुभ्रजीत कंवर, "फ्रेंच–जर्मन रिलेशंस इन द पोस्ट कोल्ड वार ईरा", प्रो. आर.के. जैन (4.2.2003)

134. सुश्री तरूणा बंसल, "इमर्जिंग डिवलपमेंट कोरिडोर्स इन इण्डिया : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ कानपुर–लखनऊ ऐंड गाजियाबाद–मेरठ एक्सस (1971–1991)", प्रो. अतिया हबीब किदवई (31.1.2003)

135. सुश्री अंजलि गर्ग, "स्ट्रीट चिल्ड्रन आफ संगम विहार, साउथ दिल्ली : ऐन एक्सप्लोरेटरि स्टडी", प्रो. इमराना कादिर और डा. संघमित्रा एस. आचार्य (5.2.2003)

136. सुश्री सारस्वती शर्मा, "द यूरोपियन यूनियन ऐंड चाइना इन द पोस्ट कोल्ड वार इरा", प्रो. आर.के. जैन (10.2.2003)

137. श्री पंकज कुमार, "यू.एस. नेशनल मिसाइल डिफेंस प्लान : ओरिजन इवोल्युशन ऐंड इंप्लिकेशंस", प्रो. क्रिस्टोफर एस. राज (10.2.2003)

138. श्री प्रकाश चन्द्र झा, "फिस्कल फेड्रलिज्म इन ब्राजील", प्रो. अब्दुल नफे (10.2.2003)

139. सुश्री बैसाखी मंडल, "द ट्रेड लिबरलाईजेशन ऐंड वाइडनिंग वेज गेप इन लेबर मार्किट", प्रो. एस.के. दास (7.2.2003)

140. श्री देबाशीष चक्रवर्ती, "इण्डिया'ज इंटरा–इण्डस्ट्री ट्रेड : ऐन एनालिसिस आफ द प्री–रिफार्म ऐंड पोस्ट रिफार्म ट्रेंड्स", प्रो. अलोकेश बरूआ (7.2.2003)

141. श्री जी. ओमप्रसाद, "वर्ल्ड बैंक लोन्स टु इण्डिया : 1980–1995", प्रो. महेन्द्र पी. लामा (13.2.2003)

142. श्री वर्गिस के. जार्ज, "निओलिबरल रिफार्म्स ऐंड द इमर्जिंग डायमेंशंस आफ गवर्नेंस इन वेस्ट एशिया", प्रो. गिरिजेश पंत (13.2.2003)

143. श्री विनय कुमार सिंह, "इनसाइडर ट्रेडिंग : ए कम्पेरिटिव ला एनालिसिस", प्रो. बी.एस. चिमनी (20.2.2003)

144. श्री राजेश बाबू रविंद्रन, "कंप्लायंस ऐंड इनफोर्समेंट अंडर डब्ल्यू.टी.ओ. डिस्प्यूट सेटलमेंट सिस्टम : ए क्रिटिकल अप्रैजल", प्रो. बी.एस. चिमनी (20.2.2003)

145. श्री स्वागत साहू, "एनर्जी रिसोर्सिज इन सेंट्रल एशिया : ए जिओपालिटिकल स्टडी", प्रो. ताहिर असगर (24.2.2003)

146. श्री चन्द्रभान यादव, इण्डिया'स डिप्लोमैटिक स्ट्रेटिजी इन क्लाइमेट चैंज निगोसिएशंस", प्रो. पुष्पेश पंत (18.2.2003)

147. सुश्री अनिता पासी, "जापान'स क्लाइमेट चैंज पालिसी : ए स्टडी आफ क्योटो प्रोटोकाल", प्रो. के.वी. केसवन (19.2.2003)

148. श्री हमिस नेगी, "इण्डियन बार्डर ट्रेड अक्रास द वेस्टर्न हिमालयाज : केस स्टडी आफ द हिमाचल प्रदेश बशाहर (किन्नौरी)" प्रो. के. वारिकु (28.2.2003)

149. श्री अरविंद कुमार, "एज्यूकेशनल पालिसी आफ द यू.एस.एस.आर. अंडर पैरेस्त्रोइका", डा. ताहिर असगर (28.2.2003)

150. श्री अजीत कुमार, "जूट–इण्डस्ट्री इन बंगलादेश ऐंड इंडिया : चैलेंजिस ऐंड प्रोस्पेक्ट्स", प्रो. महेन्द्र. पी. लामा (3.3.2003)

151. सुश्री निबेदिता राउत, "पालिटिकल डिवलपमेंट्स इन एस्टोनिया (1991–1995)", डा. तुलसी राम (12.3.2003)

152. सुश्री एस.बी. आरती, "द स्ट्रगल फार इंडिपेंडेंट लिथुआनिया 1989–1991", डा. तुलसी राम (12.3.2003)

153. श्री लीलाधर भण्डारी एम., "ए स्टडी आफ द इवोल्युशन ऐंड जुरिसप्रुडेंस आफ नेशनल ह्यूमन राइट्स कमिशन", प्रो. वी.एस. मणि (4.2.2003)

154. श्री विशाल दुबे, "इकोनोमिक ट्रांजिशन इन सेंट्रल एशिया : ए कम्पेरिटिव एनालिसिस आफ कजाकिस्तान ऐंड उज्बेकिस्तान", डा. गुलशन सचदेवा (18.3.2003)

155. श्री सानु एम.के., "लीगल रीजीम फार जैनेटिकली मोडिफाइड फूड", प्रो. वाई.के. त्यागी (18.3.2003)

156. श्री भूपेंद्र कुमार सिंह, "इलेक्टोरल रिफार्म इन इजराइल : ए केस स्टडी आफ डायरेक्ट इलेक्शन आफ प्राइम मिनिस्टर", डा. पी.पी. कुमारस्वामी (18.3.2003)

157. श्री अमित कुमार, "ट्रांजिशन टु डेमोक्रेसी इन रिपब्लिक आफ कोरिया : प्रोसेस ऐंड पैटर्न सिंस 1987", प्रो. आर.आर. कृष्णन (23.3.2003)

158. श्री प्रकाश कुमार पांडा, "अमरीका ऐज ए वेलफेयर स्टेट : ए स्टडी आफ सोशल सिक्युरिटी", डा. के.पी. विजयलक्ष्मी (27.3.2003)

159. श्री दिलीप कुमार मोहन्ती, "ई.यू.–यू.एस. इकोनोमिक रिलेशंस इन द पोस्ट कोल्ड वार इरा", प्रो. राजेन्द्र के. जैन (25.3.2003)

160. सुश्री नीतू राय, "वूमन'स मूवमेंट इन यू.एस. : ए स्टडी आन द रोल आफ द सलेक्टिड एन.जी.ओ.", डा. के.पी. विजयलक्ष्मी (28.3.2003)

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान

161. सुश्री जसप्रीत कौर, "कल्चरल डायमेंशन आफ टुरिज्म इन इण्डिया ऐंड ट्यूनीशिया : केस स्टडीज आफ गोवा ऐंड ट्यूनीस", डा. बशीर अहमद (17.4.2002)

162. श्री प्रोवाकर पलाका, "द वायस आफ द ओप्रेस्ड : ट्रांसलेशन आफ समीर रंजन'स उइहुंका पलाती जाउथिबा मानिशामेन (ए कलेक्शन आफ उड़िया शार्ट स्टोरीज इन टु इंग्लिश)", प्रो. आर.एस. गुप्ता (17.4.2002)

163. श्री रेनिस जोसफ, "द नेशन ऐंड इट्स घोस्ट्स : ट्रेसिंग इण्डिया इन द वर्कस आफ विक्रम चंद्रा ऐंड ऐलन सीली", डा. जी.जे.वी. प्रसाद (17.4.2002)

164. श्री सैयद राशिद हसन, "मिखाइल नुआयामाह : हिज वर्कस स्पेशल रेफ्रेंस टु हिल शार्ट स्टोरिज ऐंड पोइट्री", डा. ए. बशीर अहमद (17.4.2002)

165. श्री धीरेन्द्र बहादुर सिंह, "सांस्कृतिक वर्चस्व बनाम साहित्यिक आलोचना संदर्भ कामायनी : एक पुनर्विचार" डा. पुरूषोत्तम अग्रवाल (17.4.2002)

166. मो. महमूद अख्तर, "आबरू हयात और करमानेय (मासिर तनकीद की रौशनी में) डा. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन (17.4.2002)

167. सुश्री स्रावनी रे, "L'Humanisme A Travers Les Poemes De Victor Hugo et Rabindranath Tagore" श्री अभिजीत कारकुन (4.6.2002)

168. सुश्री चंद्राणी चैटर्जी, "Le Conflit Civlisationnel au Cameroun a Travers Le Pauvre Christ de Bomba de Mongo Beti" श्री अभिजीत कारकुन (4.6.2002)

169. श्री सिद्धार्थ एन. कनौजिया, "हिस्ट्री ऐंड लिट्रेचर : ए स्टडी आफ एम.डी. वासनजी'स द बुक आफ सीक्रेट्स", प्रो. हरीश नारंग (10.6.2002)

170. सुश्री रीना राजगोपाल, "द क्वेश्चन आफ नालेज इन राबर्ट ब्राउनिंग : ए स्टडी आफ हिज ड्रामाटिस पर्सोने पोइम्स", प्रो. कपिल कपूर (10.6.2002)

171. श्री मलिक राशिद फैजल, "हाली के सवानेह निगारी का तनकीदी जायजा : हयात–ए जावेद की रौशनी में", डा. मोहम्मद शाहिद हुसैन (7.6.2002)

172. सुश्री मोहिता कौशिक, "L'Approche Interculturelle Et L'Enseignement Du FLE Dans Les Cours a Temps Partiel a Delhi" डा. किरण चौधरी, (13.8.2002)

173. श्री विनय कुमार गुप्ता, "La Traduction Commentee D'un Texte Canadien Francophone En Hindi (Etude De Cas : De Quoi T'Ennuies - Tu,Eveline ? De Gabrielle Roy)" डा. किरण चौधरी (13.8.2002)

174. श्री एम. अश्विनी कुमार गौड़, "Canciones De Compromiso Y Protesta Un Estudio Comparativo De Dos Cantautores : Gaddar Y Victor Jara" प्रो. एस.पी. गांगुली और डा. इन्द्राणी मुखर्जी (6.8.2002)

175. सुश्री अन्दिता शर्मा, "Eine Kritische Analyse Der themen in Den Literarischan Werken Von Josef Winkler" प्रो. रेखा वी. राजन (9.9.2002)

176. मो. अफ्फान, "अल अक्लानिआ–फी–अफ्कार मोहम्मद अल–गजाली (मोहम्मद अल गजाली, हिज रेशनल एप्रोच टु इस्लाम ऐज डिपिक्टिड इन हिज वर्क्स)", प्रो. एस.ए. रहमान (16.9.2002)

177. श्री अजय कुमार प्रसाद, "Erros E Dificuldades dos Alunos Indianos na Aprendizagem do Portugues Lingua Estrangeira - Um Estudo do Caso de Delhi" डा. डेलफिम कोरिया द सिल्वा और प्रो. कपिल कपूर (4.6.2002)

178. सुश्री रूचिता सहाय, "कहानी से फिल्म तक : रूपान्तरण और आस्वादन की समस्याएं संदर्भ : शतरंज के खिलाड़ी और सद्गति", डा. पुरुषोत्तम अग्रवाल (24.9.2002)

179. सुश्री शाहाना प्रवीण, "सेंट जोन'स कालेज आगरा की अदबी खिद्मत", प्रो. नसीर अहमद खान (24.9.2002)

180. श्री चंदन कुमार श्रीवास्तव, "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की सांस्कृतिक चेतना और वैष्णवता की अवधारणा", डा. पुरुषोत्तम अग्रवाल (8.10.2002)

181. सुश्री इस्मत, "शेख अली बख्श बिमार के दीवान की तदवीन", प्रो. नसीर अहमद खान (8.10.2002)

182. श्री पंकज पाराशर (उपनाम पंकज कुमार झा) "रघुवीर सहाय की कविता और लोकतंत्र", प्रो. गंगा प्रसाद विमल (18.102002)

183. सुश्री सुधा वसंथा कुमार, "La Peinture Et Le Cinema - Une Etude De Van Gogh De Maurice Pialat", प्रो. के. माधवन (8.11.2002)

184. श्री कविता नंदन, "दिनकर के काव्य में राष्ट्रवाद का स्वरूप" डा. वीरभारत तलवार (22.11.2002)

185. श्री नवलेंद्र कुमार सिंह, "जयशंकर प्रसाद का साहित्य चिन्तन" प्रो. मैनेजर पाण्डेय (22.11.2002)

186. मो. असगर अली, "कुरतुल–एन हैदर बहैसियात सवानिही नावेल निगार : कर–ए–जहान दराज है के हवाले से", डा. मजहर हुसैन (22.11.2002)

187. मो. अथर, "अल–अल्लाना मोहम्मद बिन युसफ अल सुराती हायातोहु वा अमालो हु", प्रो. एस.आर. रहमान (22.11.2002)

188. श्री अभिषेक रोशन, "बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिन्दी आलोचना का आरम्भ", प्रो. मैनेजर पाण्डेय (22.11.2002)

189. श्री फकीर शाहरी अब्बासी, "अहमद फराज की शायरी में एहताजी की नौइयात", डा. मजहर हुसैन (22.11.2002)

190. मोहम्मद जहीदुल हक, "इनामुल्लाह खान यकीन की शायरी और मासीर तनकीदी", डा. के.एम. इकरामुद्दीन (22.11.2002)

191. सुश्री शैली, "Sopostavitel'ny Analiz Qpritsatel'nykh Affiksov Sushchestvitel'nykh I Prilagatel'nykh Russkovo Yazyka I Yazyka Hindi" प्रो. एच.सी. पाण्डेय (22.11.2002)

192. श्री देब दुलाल हलदर, "मधुसूदन'स (एम.आई.एस.) एडवेंचर्स : कलोनिअलीज्म माडर्नइज्म ऐंड नेटिवीज्म इन मेघनादबध काव्य", प्रो. मकरंद प्रांजपे (22.11.2002)

193. श्री रामचरण मीणा "विस्रामपुर का सन्त और भूदान आंदोलन", डा. ओमप्रकाश सिंह (3.12.2002)

194. मोहम्मद अथर, "कंट्रीब्यूशन आफ अरेबिक मद्रासस इन द डिस्ट्रिक्ट आफ आजमगढ़ टु द अरेबिक स्टडीज इन इण्डिया", प्रो. जोहुरूल बारी आजमी (3.12.2002)

195. श्री राजीव रंजन सिन्हा, "मुखड़ा क्या देखें में अभिव्यक्त भारतीय जन–जीवन की समस्याएं", डा. ओमप्रकाश सिंह (3.12.2002)

196. श्री इरफान अहमद, "किशवर नाहीद की शायरी में महबूब का तसव्वुर (सयाह हाशिए में गुलाबी रंग के हवाले से)", डा. के.एम. इकारामुद्दीन (4.12.2002)

197. श्री वासीम अख्तर, "इकबाल मजीद के अफसानों में आसरी हिसियात", डा. के.एम. इकरामुद्दीन (4.12.2002)

198. मोहम्मद आरिफ फारूकी, "रतन सिंह के अफसानों में नोस्तालजिया : एक तजजियाती मोताला (पनाह की रोशनी में)", डा. एस.एम. अनवार आलम (3.12.2002)

199 श्री तुषार चौधरी, "Das Interkulturelle Lernen im Anfangerunperricht Deutsch als Fremdsprache", डा. मधु साहनी (17.12.2002)

200. मो. जैनुल अबेदिन अंसारी, "प्रेमचंद के ड्रामों का मुताला (तकनीक के नुक्ता–ए–नजर से) डा. मोहम्मद शाहिद हुसैन (18.12.2002)

201. श्री कैसर अहमद, "जेबुनिसा, ऐन आउटस्टेंडिंग पोइट्स आफ मुगल हरम : ए क्रिटिकल स्टडी आफ हर दीवान–ए–मखफी", डा. एस.ए. हसन (24.12.2002)

202. श्री नीरज कुमार, "अल्मा कबूतरी में अभिव्यक्त नारी पीड़ा और संघर्ष", डा. ओमप्रकाश सिंह (18.12.2002)

203. श्री श्रीश चंद्र, "गीतिका : भाव चित्रों का वैभव" डा. गोविंद प्रसाद (18.12.2002)

204. श्री विवेकानंद उपाध्याय, "प्रेमचन्द के उपन्यासों की कथा भाषा (सेवासदन, कर्मभूमि और गोदान के संदर्भ में)", डा. ओमप्रकाश सिंह (18.12.2002)

205. श्री अकील अहमद, "हयातुल्लाह अंसारी की सहाफत : एक तनकीदी मुताला", प्रो. नसीर अहमद खान (18.12.2002)

206. सुश्री अंजेला जोथानपुई, "द ट्रांसलेशन आफ इंग्लिश लिट्रेचर इनटु मिजो" प्रो. मकरंद प्रांजपे (18.12.2002)

207. श्री अली असगर, "मुनीर नियाजी बहेसियात गजलगो : नई गजल के पास मंजर में", डा. मजहर हुसैन (30.12.2002)

208. श्री अरविंद कुमार अवस्थी, "कविता का समाजशास्त्र और मुक्तिबोध", प्रो. मैनेजर पाण्डेय (16.01.2003)

209. श्री दिलीप कुमार शाक्य, "दो पंक्तियों के बीच में अभिव्यक्त बाजारवाद", डा. गोविंद प्रसाद (16.1.2003)

210. मोहम्मद जुबैर, "जुरत शख्शियत और फन मासिर तनकीद की रोशनी में", प्रो. नसीर अहमद खान (16.1.2003)

211. श्री ब्रजेश प्रियदर्शी, "स्पीच ऐंड लैंग्यूवेज मेटिरियल फार स्लो लर्नर्स (ए स्टडी इन स्पीच ऐंड लैंग्यूवेज डिले) प्रो. वेश्ना नारंग (16.1.2003)

212. मोहम्मद अलीम, "कंट्रीब्यूशन आफ अब्द–अल–काहिर'–अल–जोरजनी इन अरेबिक लिट्रेरी क्रिटिसीज्म ऐंड रेटोरिक विद स्पेशल रेफ्रेंस टु असरार–अल–बलाघा", प्रो. एफ.यू. फारूकी (21.01.2003)

213. श्री राजी अहमद, "सोसियो–पालिटिकल कंडीशन आफ ईरान ड्यूरिंग पहलवी रिजीम ऐज रिफ्लेक्टिड इन पर्शियन ड्रामा", डा. अख्तर मेहदी (21.1.2003)

214. सैयद मुस्तफा अथर, "प्रो. सैयद अमीर हसन आबिदी'स कंट्रीब्युशन टु द प्रमोशन आफ पर्शियन स्टडीज इन इण्डिया : ए क्रिटिकल स्टडीज", डा. अख्तर मेहदी (21.1.2003)

215. सुश्री हुमा खान, "मुशायरों की अदबी और लिसानी अहमियत", प्रो. नसीर अहमद खान (21.1.2003)

216. श्री ताहिर हेलाल अहमद लारी, "मोसाहामत सैयद मुर्तुजा अल–बलगरामी अल–जाविदी फी अल–देरासत अल–अरबिआ (कंट्रीब्यूशन आफ सैयद मुर्तुजा अल–बलगरामी अल–जाबिदी टु अरेबिक स्टडीज)", प्रो. एम.ए. इस्लाही (21.1.2003)

217. मोहम्मद हयातुद्दीन, "वामीक जौनपुरी के फिकर–ओ–फन का इरतिका (जार्स और शब चिराग की रौशनी में) डा. मोहम्मद शाहिद हुसैन (6.2.2003)

218. श्री शमशाद अहमद, "उर्दू तंज–ओ–मजाह में कोलेनल मोहम्द खान का मुकाम (बाजंग आमद की रोशनी में)", डा. मोहम्मद शाहिद हुसैन (6.2.2003)

219. सुश्री शबाना अफरीन जावेद, "खादिजा मस्तूर के अफसानों में औरतों के मसाइल की अक्कारी 'ठण्डा–मीठा पानी' की रोशनी में", डा. ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन (6.2.2003)

220. श्री बलेंद्र सिंह यादव, "ऐतिहासिक कल्पना और मृगनयनी", डा. पुरुषोत्तम अग्रवाल (6.2.2003)

221. श्री भारत भूषण, "चरनदास चोर में लोक तत्त्व", प्रो. गंगा प्रसाद विमल (13.2.2003)

222. सुश्री कंचन भारद्वाज, "मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में स्त्री चेतना", प्रो. मैनेजर पाण्डेय (10.2.2003)

223. श्री विभु मौली कुमार, "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का काव्यभाषा संबंधी चिंतन", प्रो. मैनेजर पाण्डेय (6.2.2003)

224. श्री अब्दुल हालिम, "एलिमेंट्स आफ फैमिनिज्म ऐज इविडेंट इन द पोइट्री आफ फोरूग ई. फारोखजाद", डा. एस.ए. हसन (6.2.2003)

225. सुश्री किम ग्रेस हाओकिप, "लिंग्विस्टिक प्रोफाइल आफ डिसलेक्सिक चिल्ड्रन : विद रेफ्रेंस टु वर्ड रिकोगनिशन ऐंड वर्ड रिट्राइवल एबिलिटीज", प्रो. वैश्ना नारंग (6.2.2003)

226. सुश्री गीतांजली पुरी "Leksicheskii Analis Russkoi 'Voennoi 'Leksiki i Nekotorie Provlemi eyo Perevoda Na Anglii 'skii 'Yazik", प्रो. आर. कुमार (10.2.2003)

227. श्री मुबाशीर आलम, "ए क्रिटिकल स्टडी आफ द आइडिआस ऐंड लिट्रेरी स्टाइल आफ अल–अमीर शाकीब अर्सालान", डा. जैड.बी. आजमी (10.2.2003)

228. श्री नुरूल हक सिवानी, स्टडीज आन 'ओल्ड' ऐंड 'न्यू' वेल्युज इन माडर्न पर्शियन प्रोज : ए केस स्टडी आफ चैंजिंग सोसियोकल्चरल पैटर्न्स", डा. सैयद ऐनुल हसन (6.2.2003)

229. श्री रामजीलाल मीणा, "गुरू ग्रन्थ साहिब में संकलित कबीर वाणी का समाजशास्त्रीय अध्ययन", डा. ज्योतिसर शर्मा (6.2.2003)

230. श्री मेहफुजुर रहमान, "मौलाना मसूद आलम नदवी : हिज कंट्रीब्यूशन टु अरेबिक लैंग्यूवेज ऐंड लिट्रेचर इन इण्डिया", प्रो. एफ.यू. फारूकी (6.2.2003)

231. श्री अमित कुमार राय, "निर्गुण भक्ति संवेदना और रैदास की कविता", डा. पुरूषोत्तम अग्रवाल (10.2.2003)

232. श्री अरशाद इकबाल, "नून मीम राशिद का तसव्वुर–ए–इंसान (ला मसावी इंसान की रोशनी में) डा. एस.एम. अनवार आलम (10.2.2003)

233. सुश्री तेजाश्री चिंधाडे "Arthur Schnitzlers Traumnovelle and Stanley Kubricks Eyes Wide Shut Ein Literarischer Text und Seine Verfilmung : Eine Untersuchung", प्रो. राजेंद्र डेंगले (29.01.2003)

234. श्री नसीम अहसान, "अल–तबादुल–अल–लुघवी बेन–अल–हिंद–वाल–यमन (द लिंग्विस्टिक एक्सचैंज बिटवीन इण्डिया ऐंड यमन)", प्रो. एफ.यू. फारूकी (26.2.2003)

235. सुश्री मीनू सिंह, "अल्का सरावगी के उपन्यास कलिकथा वाया बाइपास का समाजशास्त्रीय अध्ययन", प्रो. गंगा प्रसाद विमल (25.2.2003)

236. श्री मोहम्मद उमर रजा, "अली सरदार जाफरी : ए लिट्रेरी बायोग्राफी (अली सरदार जाफरी : एक अदबी स्वानेह) डा. मजहर हुसैन (10.2.2003)

237. श्री कुंदन यादव, "समकालीन दलित विमर्श के संदर्भ में : धरती ना अपना धन", डा. पुरुषोत्तम अग्रवाल (25.2.2003)

238. श्री मोहम्मद कमरूद्दीन, "दारूल मुसानीफीन ऐंड इट्स रोल इन द प्रमोशन आफ अरेबिक / इस्लामिक स्टडीज इन इण्डिया", डा. जैड.बी. आजमी (11.2.2003)

239. श्री आदित्य प्रकाश, "लैंग्यूवेज मेंटेनेस ऐंड लैंग्यूवेज शिफ्ट : ए सोसियो–लिंग्विस्टिक स्टडी आफ कुमाउनी", प्रो. आर.एस. गुप्ता (27.3.2003)

240. सुश्री चेरी ब्रह्मा, "कोर लेक्सिकन आफ बोडो : ए बाइलिंगुअल डिक्शनरी आफ बोडो–इंग्लिश", प्रो. वैश्ना नारंग (27.3.2003)

सामाजिक विज्ञान संस्थान

241. श्री आशुतोष कुमार, "कम्पनीज, मर्चेट्स ऐंड मुगल ओफिशिएल्स ऐट सूरत इन द सेवंटींथ सेंचुरी", डा. योगेश शर्मा (1.4.2002)

242. सुश्री सोनाली मिश्र, "कमर्शियल सिस्टम ऐंड पालिटिकल चैंजिस इन द नादर्न कोरोमंडल इन द सेंवटीथ सेंचुरी", डा. योगेश शर्मा (1.4.2002)

243. श्री जयप्रकाश प्रधान, "फारेन डायरेक्ट इंवेस्टमेंट ऐंड इकानोमिक ग्रोथ : द केस आफ डिवलपिंग कंट्रीज", प्रो. अशोक माथुर (23.4.2002)

244. सुश्री अतिया खान, "द ओरियंटलिस्ट इमफेसिस इन एज्यूकेशन इन नाइंटींथ सेंचुरी पंजाब 1850–1900" प्रो. माजिद सिद्दिकी (1.4.2002)

245. श्री सूर्य भूषण, "आर ऐंड डी बिहेवियर आफ इण्डियन कार्पोरेट फर्म्स इन द नाइटीज", प्रो. कुणाल सेन गुप्ता और प्रो. सी.पी. चन्द्रशेखर (2.4.2002)

246. श्री बिवेक राय चौधरी, "क्रेडिट ऐंड रीजनल डिस्पेरिटीज इन इण्डिया – ए स्टेट लेवल एनालिसिस", प्रो. डी.एन. राव (1.5.2002)

247. सुश्री रीना सहरावत, "एडमिनिस्ट्रेटिव करप्शन इन इण्डिया सिंस इंडिपेंडेंस – काजिस ऐंड रिफार्म्स", प्रो. कुलदीप माथुर (23.4.2002)

248. सुश्री वर्तिका शुक्ला, "जेंडर ऐंड सबजेक्ट बेस्ड एक्सपेक्टेशन आफ टीचर ऐंड इट्स रिलेशनशिप विद स्टुडेंट्स अकेडमिक सेल्फ–कनसेप्ट" डा. फरीदा ए. खान (23.4.2002)

249. श्री गणपति एम., "सिद्धा सिस्टम आफ मेडिसन : ए सोसियोलाजिकल एक्सप्लोरेशन", डा. रामा वी. बारू (23.4.2002)

250. श्री अमरदीप सिंह, "टेम्पोरल ऐंड स्पेशिएल एनालिसिस आफ फीमेल एम्प्लायमेंट इन रूरल इण्डिया", प्रो. कुसुम चोपड़ा (30.4.2002)

251. श्री बीरेन्द्र कुमार, "द ग्रोथ ऐंड मोबिलिटी आफ मारवाड़ीज ऐज ए बिजनेस कम्युनिटी इन एटींथ सेंचुरी राजस्थान, प्रो. दिलबाग सिंह (23.4.2002)

252. सुश्री तमन्ना खोसला, "फेमिनिस्ट रिस्पोंसिस टु मल्टीकल्चरलिज्म : ऐन इग्जामिनेशन", डा. गुरप्रीत महाजन (3.4.2002)

253. श्री रजत बंदोपाध्याय, "सुपरपावर गेमिंग इन आर्म्स कंट्रोल निगोसिएशंस : ए स्टडी आफ न्यूक्लियर नान–प्रोलिफ्रेशन ट्रीटी (एन.पी.टी.)", प्रो. अश्विनी कुमार रे (10.5.2002)

254. सुश्री प्रीति विश्वनाथ, "रोल आफ एन.जी.ओ.'ज इन वुमन'स एज्यूकेशन इन साउथ एशिया", प्रो. आनन्द कुमार (27.5.2002)

255. सुश्री गरिमा, "ट्रेसिंग इवोल्युशनरी ट्रेंड्स इन अर्ली बुद्धिस्ट स्कल्पचर्स : एलिमेंट आफ म्यूजिक ऐंड डांस", डा. एच.पी. रे (27.5.2002)

256. सुश्री इति त्रिपाठी, "रीजनल डिस्पेरिटीज इन इण्डिया : रोल आफ फाइनेंस कमीशन", प्रो. अशोक माथुर और प्रो. आर.के. शर्मा (27.5.2002)

257. श्री अभिषेक सिंह अमर, "रिचुअल ऐंड पिलग्रिमेज इन अर्ली बुद्धिज्म : सेक्रिड जिओग्राफी आफ द मिडल गंगा जोन", डा. एच.पी. रे (27.5.2002)

258. श्री त्रिपुरेश धर द्विवेदी, "अर्ली टेम्पल्स आफ विदर्भ", प्रो. एच.पी. रे (27.5.2002)

259. सुश्री रेशमी बैनर्जी, "द क्रिएशन आफ न्यू स्टेट्स : झारखंड", प्रो. बलबीर अरोड़ा (21.5.2002)

260. सुश्री चित्रलेखा धमीजा, "नक्सलिज्म इन बिहार ऐंड झारखंड : इमर्जिंग कंट्राडिक्शन इन आइडियोलाजी ऐंड प्रैक्टिस", प्रो. दीपांकर गुप्ता (27.5.2002)

261. श्री हा यांग जय, "द भारतीय जनता पार्टी'स ग्रोथ फेक्टर्स इन 1990'स : ए स्टडी आन इट्स इलेक्टोरल प्रोसेस", प्रो. इम्तियाज अहमद (27.5.2002)

262. श्री संतोष कुमार, "द इफेक्टिवनेस आफ कैपिटल कंट्रोल्स इन प्रिवेंशन आफ फाइनेंशिएल क्राइसिस : केस स्टडीज आफ चिली ऐंड मैक्सिको", प्रो. सी.पी. चन्द्रशेखर (24.6.2002)

263. श्री बोनोमाली खोसला, "रूरल पावर्टी इन कोरापुट, बोलांगिर ऐंड कालाहाण्डी (अनडिवाइडिड) डिस्ट्रिक्ट्स आफ उड़ीसा", प्रो. नंदूराम (4.7.2002)

264. सुश्री अर्चना राय, "राइट्स, प्रापर्टी ऐंड जस्टिस इन कम्युनिटी मैनेजमेंट आफ फारेस्ट्स",प्रो. कुलदीप माथुर (11.7.2002)

265. सुश्री पी. अनिता, "द कावेरी रीवर वाटर डिस्प्यूट इन द कनटेक्ट आफ इण्डिया'स एक्सपेरिमेंट विद फेडरल कोलिशंस", प्रो. सुधा पई (23.7.2002)

266. सुश्री सुजाता मोहराना, "गवर्नमेंटस इंटरवेंशन इन द प्राइमरी एज्यूकेशन आफ उड़ीसा विद रिफ्रेंस टु डिस्ट्रिक्ट प्राइमरी एज्यूकेश प्रोग्राम ऐंड आपरेशन ब्लैकबोर्ड", प्रो. कुलदीप माथुर (23.7.2002)

267. श्री बाबी मैथ्यू, "पीपल'स प्लानिंग प्रोग्राम इन केरल : ऐन इवेल्युएशन", डा. ए. गजेंद्रन (27.8.2002)

268. श्री विजय भारती, "आस्पेक्ट्स आफ इण्डस्ट्रियल रिस्ट्रक्चरिंग इन द प्री ऐंड पोस्ट रिफार्म पीरियड – ए केस स्टडी आफ आंध्र प्रदेश (1985–98)", प्रो. अतिया हबीब किदवई (23.8.2002)

269. सुश्री शिल्पा रंगनाथन, "कार्पोरेट कल्चर ऐंड प्रोडक्टिविटी : ए कम्पेरिटिव एनालिसिस आफ पब्लिक ऐंड प्राइवेट सेक्टर्स इन इण्डिया", प्रो. एम.एन. पाणिनी (19.8.2002)

270. श्री नितेश सहाय, "सेविंग्स इनवेस्टमेंट ऐंड कैपिटल फ्लोज : ऐन इम्पिरिकल स्टडी आफ पैटर्नस इन 1980'स ऐंड 1990'स", डा. जयती घोष (23.8.2002)

271. श्री हिमांशु, "चैंजिस इन इण्डियन वर्कफोर्स स्ट्रक्चर : ए स्टडी यूजिंग एन.एस.एस. डाटा", प्रो. अभिजीत सेन (27.8.2002)

272. श्री प्रशांत के. किदाम्बी, "इकोलाजी ट्रेड ऐंड पालिटिक्स : नादर्न सिरकार्स अंडर ब्रिटिश कम्पनी रूल", प्रो. नीलाद्री भट्टाचार्य (18.9.2002)

273. श्री रविकांत मिश्र, "कंटेंडिंग विजंस आफ हिन्दुइज्म : दयानंद, गाँधी, सावरकर", डा. भगवान एस. जोश (20.9.2002)

274. श्री संदीप भौमिक, "इश्यूज ऐंड इम्पेक्ट आफ इंटरनेशनल टेक्नोलाजी ट्रांसफर : ए स्टडी आफ इंडियन आटोमोबाइल ऐंड आटो एनसिलरी इण्डस्ट्री", प्रो. अशोक कुमार माथुर (23.9.2002)

275. श्री समबित त्रिपाठी, "गांधियन एप्रोच टु डिवलपमेंट : ए सोसियोलाजिकल एनालिसिस", डा. आनन्द कुमार (19.9.2002)

276. श्री बोद्धिस्तव सेनगुप्ता, "ग्रोथ आफ सर्विस सेक्टर ऐंड डिवलपमेंट : ए सजेस्टिड लिंकेज फ्राम इण्डियन पर्सपेक्टिव", प्रो. प्रभात पटनायक (20.9.2002)

277. श्री ए. रामबाबू, "टीचिंग ऐज सोशल इंटरवेंशन : ऐन एनालिसिस आफ स्लेक्टिड टेक्स्ट्स आफ इमाइल दुर्खिम, पावलो फरेरे ऐंड श्री अरबिंदो", डा. अभिजीत पाठक (23.8.2002)

278. सुश्री सुसन वर्मा, "द अर्ली टेम्पल्स आफ सौराष्ट्र : ए हिस्टोरिकल स्टडी", डा. एच.पी. रे (1.10.2002)

279. श्री कृष्णास्वामी दारा, "गांधी आन द रिलेशनशिप बिटवीन रिलीजन ऐंड पालिटिक्स", प्रो. राजीव भार्गव (8.10.2002)

280. श्री अनिल भट्टा राय, "फ्राम पाप्यूलेशन कंट्रोल टु रिप्रोडक्टिव राइट्स : द केस आफ नेपाल", डा. मोहन राव (1.10.2002)

281. श्री अबुबेकर सिद्दिकी पी., "डेमोक्रेटिक डिसेंट्रलाइजेशन ऐंड इम्पावरमेंट आफ वुमन इन इण्डिया", प्रो. टी.के. ऊमन (22.10.2002)

282. सुश्री मैसनम धनेश्वरी, "पालिटिकल इकोनोमी आफ अंडरडिवलपमेंट : एन इनक्वेरी अबाउट द सोसियो–पालिटिकल कंडीशंस इन द स्टेट आफ मणिपुर", प्रो. टी.के. ऊमन (22.10.2002)

283. सुश्री शरीना बानु, सी.पी., "सिविल सोसायटी ऐंड रूरल डिवलपमेंट : एन एनालिसिस आफ टु एन.जी.ओ.'स इन कर्नाटका", प्रो. टी.के. ऊमन (22.10.2002)

284. श्री वकार अहमद, "सोसायटी नेचर रिलेशंस ऐंड ट्रेडिशेनल नालेज आफ इंडिजिनस कम्युनिटीज : ए केस स्टडी आफ उत्तरांचल", प्रो. हरजीत सिंह (29.10.2002)

285. सुश्री मनु चतुर्वेदी, "रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर ऐंड एग्रीकल्चरल डिवलपमेंट इन इण्डिया : ए स्पेशिओ–टेम्पोरल एनालिसिस", प्रो. एम.एच. कुरेशी (14.11.2002)

286. श्री निरंजन सारंगी, "माइक्रोफाइनेंसिंग एक्सपिरियंस इन इण्डिया : स्ट्रक्चर, ग्रोथ ऐंड परफार्मेंस", प्रो. रवि एस. श्रीवास्तव (14.11.2002)

287. सुश्री स्वागता बासु, "ए स्पेशियल एनालिसिस आफ अर्बन क्राइम्स इन इण्डिया 1998", डा. बी.एस. बुटाला (14.11.2002)

288. श्री मैथ्यु जार्ज, "सोसियो–इकोनोमिक डायमेंशंस ऐंड हैल्थ सीकिंग बिहेवियर फार लेप्टोसिफिरोसिस : ए केस स्टडी आफ कुमाराकोम पंचायत, केरला", डा. अल्पना दया सागर, (20.11.2002)

289. सुश्री सुचेतना घोष, "इंटरप्रेटिंग प्रोस्टिच्युशन वायलेंस कामोडिफाइड", डा. रितु प्रिया मेहरोत्रा (14.11.2002)

290. श्री क्षेत्रीमयुम इमोकांता सिंह, "द इम्पेक्ट आफ क्राफ्ट आफ थिएटर आन द अस्थेटिक कल्चर आफ सोसायटी : ए स्टडी आफ शुभांग लीला इन मणिपुर", डा. सुसन विश्वनाथन (20.11.2002)

291. श्री मैनक मजुमदार, "स्टेट ऐंड सर्विलेंस : ए हिस्ट्री आफ इंटेलिजेंस गेदरिंग इन बंगाल 1900–1925", प्रो. नीलाद्री भट्टाचार्य (1.12.2002)

292. सुश्री नताशा नोंगबरी, "आस्पेक्ट्स आफ एनवायरनमेंट टुल कंसर्स इन कलोनिअल इण्डिया : पालिसी ऐंड प्रैक्टिस", प्रो. माजिद एच. सिद्दिकी (28.11.2002)

293. श्री सत्यजीत फुहान, "स्टेट्स आफ हैल्थ ऐंड एक्सेस टु हैल्थ केयर : ऐन इंटर–स्टेट एनालिसिस", प्रो. अमिताभ कुण्डु (3.12.2002)

294. श्री वीरेन्द्र कुमार, "इंफ्रास्ट्रक्चर ऐंड लेवल आफ एग्रीकल्चरल डिवलपमेंट इन बिहार : फ्राम 1980–81 टु 1990–91", डा. बी.एस. बुटोला (4.12.2002)

295. श्री रितीश बाब जी., "डेमोक्रेटिक डिसेंट्रलाइजेशन ऐंड पीपल्स पर्टिसिपेशन इन हैल्थ प्रोजेक्ट्स : ए स्टडी आफ थ्री पंचायत्स इन कन्नुर डिस्ट्रिक्ट", प्रो. घनश्याम शाह (1.12.2002)

296. श्री संतोष एम.आर. "द पालिटिकल इकोनामी आफ द इण्डियन ड्रग्स ऐंड फार्मेस्युटिकल सेक्टर : ए प्रिलिमिनरी इनक्वेरी", डा. मोहन राव (1.12.2002)

297. श्री शिव कुमार, "सोसियो–इकोनोमिक स्टेट्स ऐंड हैल्थ : ए स्टडी आफ ए विलेज इन यू.पी.", प्रो. घनश्याम शाह (1.12.2002)

298. श्री शश्वता घोष, "डेमोग्राफिक ऐंड सोशियो–इकोनोमिक कोरिलेट्स आफ अंडर–फाइव मोर्टेलिटी इन रूरल उत्तर प्रदेश : ए रीजनल माडलिंग पर्सपेक्टिव", डा. सच्चिदानंद सिन्हा (11.12.2002)

299. श्री इरेंगबम राजीव, "डेमोग्राफी ऐंड सोसियो–इकोनोमिक सिनेरिओ आफ एच.आई.वी. / एड्स इनफेक्टिड पर्संस इन इम्फाल डिस्ट्रिक्ट", डा. संघमित्रा एस. आचार्य (13.12.2002)

300. श्री शेख महबूब बाशा, पर्सपेक्टिव्स आन वुमन'स लिब्रेशन इन क्लोनिअल आंध्रा : ए स्टडी आफ द वुमन'स जर्नल गृहलक्ष्मी (1928–42)", डा. आई. कामेतकर और सुश्री महालक्ष्मी आर. (16.12.2002)

301. सुश्री हर्षिता शंकर, "द पालिटिक्स आफ डिसइनवेस्टमेंट", प्रो. कुलदीप माथुर (23.12.2002)

302. श्री राकेश मोहन चतुर्वेदी, "फेडरलीज्म ऐंड मल्टीकल्चरलिज्म : इश्युज आफ सेल्फ गवर्नमेंट ऐंड माइनरिटी पार्टिसिपेशन", प्रो. गुरप्रीत महाजन (23.12.2002)

303. श्री मुरलीधर, "आइडेंटिटी फार्मेशन ऐंड पालिटिकल कनसेसनेस अमंग दलित्स आफ़ हरियाणा", प्रो. सुधा पई (23.12.2002)

304. सुश्री वाही सैकिया, "पालिटिक्स आफ माइग्रेशन इन पोस्ट–एकार्ड आसाम", प्रो. राकेश गुप्ता (23.12.2002)

305. सुश्री शशी रानी, "हैल्थ सर्विसिज फार पब्लिक सेक्टर इण्डस्ट्रियल इम्प्लाइज एन एक्सप्लोरेटरि केस स्टडी आफ बी.एच.ई.एल., हरिद्वार, उत्तरांचल", डा. अल्पना डी. सागर (20.12.2002)

306. श्री जी. संतोष कुमार, "आइडेंटिटी पालिटिक्स इन कर्नाटका : ए स्टडी आफ दलित संघर्ष समिति", प्रो. सुधा पई (23.12.2002)

307. सुश्री शतरूपा भट्टाचार्य, "कंस्ट्रक्शन आफ जेंडर आइडेंटिटीज इन अर्ली मिडिवल इण्डिया : ए केस स्टडी आफ द वाकाटाकास ऐंड कलचुरीस", डा. कुमकुम राय (31.12.2002)

308. श्री ए.जी. सेम्युल, "पालिटिक्स आफ द ट्राइवल्स आफ मणिपुर : लेयर्स आफ एक्सप्लायटेशन ऐंड डिवलपमेंट", प्रो. राकेश गुप्ता (27.12.2002)

309. श्री जतींद्र सिंह, "द पालिटिक्स आफ अकाली दल इन पंजाब : फ्राम 1980–2002", डा. विष्णु एन. महापात्रा (27.12.2002)

310. सुश्री सुजा थकाराज, "द न्यू इकोनोमिक पालिसी ऐंड द चैंजिंग अर्बन स्ट्रक्चर : ए केस स्टडी आफ दिल्ली", डा. बी.एस. बुटोला (23..12.2002)

311. श्री के.एम. जियाउद्दीन, "हैल्थ इन ए दलित कम्युनिटी : ए प्रिलिमिनरी एक्सप्लोरेशन आफ कम्युनिटी इन पोल्यूटिड आक्युपेशन", डा. एस.एस. आचार्य और डा. मोहन राव (23.12.2002)

312. श्री राजन सिंह, "ट्रेडिशनल हीलर्स अमंग ट्राइवल्स आफ उदयपुर डिस्ट्रिक्ट, राजस्थान : ए सोसियोलाजिकल एक्सप्लोरेशन", डा. रामा वी. बारू (23.12.2002)

313. श्री बैकुण्ठ नाथ महापात्रा, "कनसेप्ट आफ ट्रेडिशन इन इण्डियन सोसियोलाजी : ए सोसियोलाजिकल अंडरस्टेंडिंग", डा. अमित कुमार शर्मा (31.12.2002)

314. श्री राहुल शर्मा, "प्रोफेसन्स, थीअरि ऐंड सोसायटी : ए सोसियोलाजिकल फोकस आन सम सलेक्टिड स्टडीज आफ लीगल प्रोफेशन इन वेस्टर्न ऐंड इण्डियन कनटेक्स्ट", प्रो. जे.एस. गांधी (21.12.2002)

315. श्री संदीप शेखर प्रियदर्शी, "ग्लोबलाइजेशन एज्यूकेशन ऐंड इनइक्वेलिटी : ए रिव्यु आफ स्ट्रक्चरल एडजेस्टमेंट प्रोग्राम", प्रो. एहसानुल हक (23.12.2002)

316. सुश्री सुदीपा टोपदार, "नालेज ऐंड गवर्नेंस : स्कूल टेक्स्टबुक्स ऐंड क्लोनिअल पालिसिज इन लेट नाइंटींथ सेंचुरी इण्डिया", प्रो. माजिद एच. सिद्दिकी (15.1.2003)

317. सुश्री श्रुति शर्मा, "इरेडिकेशन आफ करप्शन : ए स्टडी आफ सेंट्रल विजिलेंस कमीशन", प्रो. कुलदीप माथुर (15.1.2003)

318. श्री अजीत प्रताप सिंह, "रीजनल वेरिएशंस इन चाइल्ड वर्कर्स इन उत्तर प्रदेश ड्यूरिंग 1981–91", प्रो. सुदेश नांगिया (17.1.2002)

319. सुश्री श्वेता गौड़, "डिवलपमेंट आफ टयूरिस्ट इण्डस्ट्री इन वेस्टर्न राजस्थान : ए स्टडी इन इट्स प्रोस्पेक्टस ऐंड प्राब्लम्स", प्रो. एम.एच. कुरेशी (17.1.2003)

320. श्री अभय कुमार, "डेमोग्राफिक, सोशल ऐंड इकोनोमिक प्रोफाइल आफ एजिंग पाप्यूलेशन : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ बिहार ऐंड तमिलनाडु", प्रो. सुदेश नांगिया (21.01.2003)

321. सुश्री सोना मंडल, "द बिहेवियर आफ द ग्रोथ रेट आफ द इण्डियन इकोनोमी इन द 1990'स : द रोल आफ केपिटल एक्युमुलेशन", प्रो. पी. पटनायक (21.1.2002)

322. श्री अविनाश दास, "ग्रोथ ऐंड प्रोक्टिविटी इन द इण्डियन मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर", प्रो. अशोक माथुर (28.01.2003)

323. सुश्री सुमिता खानीजोव, "सैक्स–टाइपिंग आफ स्पेशिएलिटीज इन मैडिसन", डा. संघमित्रा एस. आचार्य (29.1.2003)

324. सुश्री निधि श्रीवास्तव, "सैक्स–डिटर्मिनेशन तकनीक्स ऐंड जेंडर डिस्क्रिमिनेशन इन इण्डिया : ए सोसियोलाजिकल स्टडी", डा. नीलिका मेहरोत्रा (21.1.2003)

325. सुश्री पूनम मेहरा, "एज्यूकेशन ऐंड सोशल मोबिलिटी अमंग शैड्यूल्ड कास्ट्स इन इण्डिया : ए सोसियोलाजिकल एक्सप्लोरेशन", डा. एस. श्रीनिवास राव (28.1.2003)

326. सुश्री वंदना बारिक, "ए सोसियोलाजिकल स्टडी आफ फीमेल लिट्रेसी ऐंड फर्टिलिटी अमंग ट्राइबल वुमन इन उड़ीसा", प्रो. करूणा चानना (28.1.2003)

327. श्री प्रभास कुमार रथ, "आई.एस.–एल.एम. एनालिसिस विद मार्किट्स फार मनी ऐंड इक्विटी – ए मोर जनरल एनालिसिस", प्रो. अमित भादुरी (28.1.2003)

328. सुश्री मरूना मुरमु, "अनशेक्लिंग बामालेखनी : द इमरजैंस आफ बंगाली वुमन राइटर्स इन द सैकिंड हाफ आफ नाइंटींथ सेंचुरी बेंगाल", प्रो. तनिका सरकार (27.1.2003)

329. सुश्री लक्ष्मी आर्य, "वाइफ ऑर प्रास्टिट्यूट : रेप, रेप लॉस ऐंड रेप ट्रायल्स इन क्लोनियल टाइम्स : (ब्रिटिश इण्डिया ऐंड मैसूर 1860–1929)", प्रो. तनिका सरकार (29.1.2003)

330. श्री सैफुदीन अहमद, "अपोजिशन ऐंड डिसेंट इन द एग्रेरियन सेक्टर इन द अपर गंगेटिक बेसिन, सेवनटींथ ऐंड अर्ली ऐटींथ सेंचुरी", डा. के.के. त्रिवेदी (29.1.2003)

331. सुश्री पूनम नारा, "न्यू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन ऐंड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स इन इण्डिया", प्रो. कुलदीप माथुर (29.1.2003)

332. सुश्री तुंगशांग निंगरीचोन, "एक्सप्लोरिंग द 'तांगखुल नागा' वुमन'स लाइफ सिच्युएशन : इम्प्लिकेशंस फार हैल्थ", प्रो. इमराना कादिर (29.1.2003)

333. सुश्री संध्या चन्द्रशेखरन, "डिवलपमेंट ऐंड स्कूलिंग : पर्सपेक्टिव्स ऐंड प्रैक्टिसिस आफ सिविल सोसाइटी एक्टर्स इन इण्डिया", डा. गीता बी. नाम्बिसन (28.1.2003)

334. सुश्री मनीषा त्रिपाठी, "एनवायरनमेंटल कंसिडिरेशन आफ लैण्डस्केप इवोलुशन इन द हिमालयाज", प्रो. मिलाप चंद शर्मा (31.1.2003)

335. श्री डेविड वुमलालियन जोउ, "क्लोनिअल डिस्कोर्स ऐंड लोकल नालेज रिप्रजेंटिंग नार्थीस्ट इण्डिया (1824–1947)", प्रो. माजिद एच. सिद्दिकी (29.1.2003)

336. सुश्री ललिता घेरा, "वालटिलिटी आफ शार्ट टर्म केपिटल फ्लोज ऐंड मलेशिया", डा. जयती घोष (31.1.2003)

337. सुश्री तरूणा बंसल, "स्ट्रीट चिल्ड्रन आफ संगम विहार साउथ दिल्ली : ऐन एक्सप्लोरेट्री स्टडी", प्रो. अतिया हबीब किदवई (31.1.2003)

338. सुश्री अंजलि गर्ग, "स्ट्रीट चिल्ड्रन आफ संगम विहार साउथ दिल्ली : ऐन एक्सप्लोरेट्री स्टडी", प्रो. इमराना कादिर और डा. संघमित्रा एस. आचार्य, (5.2.2003)

339. श्री विक्रमादित्य कुमार चौधरी, "सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट – ए केस स्टडी आफ वेस्ट पिकर्स इन दिल्ली", प्रो. अतिया हबीब किदवई (5.2.2003)

340. सुश्री विजया राय, "इवोल्युशन, सोशल डायनेमिक्स ऐंड पैटर्नस आफ प्राइवेट मेडिकल केयर इन कलकत्ता : एन एक्सप्लोरेट्री स्टडी", प्रो. इमराना कादिर (31.1.2003)

341. सुश्री ग्रेस डन नेमचिंग, "मैरिज, फेमिली ऐंड किनशिप अमंग द पेइते ट्राइबल आफ मणिपुर", डा. अमित कुमार शर्मा (17.2.2003)

342. सुश्री रंजिता डॉन, "सेल्फ एस्टीम आफ ब्लाइंड स्टुडेंट्स इन इंटिग्रेटिड ऐंड नान–इंटिग्रेटिड एज्यूकेशनल सैटिंग्स", डा. फरीदा खान (17.2.2003)

343. श्री अनूप सेम निनान, "स्टेट पालिसीज आन टेक्नालाजिकल माडर्नाइजेशन ऐंड द रिस्पोंस आफ फिशिंग कम्युनिटी इन केरला", प्रो. वी.वी. कृष्णा, डा. प्रणव देसाई (19.2.2003)

344. श्री संतोष कुमार पाणिग्रही, "रोल आफ एनजीओ'स इन द एमपावरमेंट आफ द डिसेबल्ड : द इण्डियन कनटेक्स्ट", प्रो. के.एल. शर्मा (17.2.2003)

345. सुश्री एकता राय, "दलित्स इन हायर एज्यूकेशन इन उत्तर प्रदेश : ए सोशियोलाजिकल स्टडी", डा. निलिका मेहरोत्रा (17.2.2003)

346. श्री विवेक कुमार राजेक, "टुरिज्म इन इण्डिया : इट्स इकोनोमिक कनटेक्स्ट ऐंड प्रोसपेक्ट्स", डा. प्रवीण कुमार झा (11.2.2003)

347. सुश्री भारती, "पार्टिसिपेटरी एप्रोच ऐंड रूरल डिवलपमेंट : ए सोसियोलाजिकल एनालिसिस", प्रो. के.एल. शर्मा (17.2.2003)

348. श्री शिजु सेम वर्गिस, "पीपल्स साइंस मूवमेंट्स : ए स्टडी आन द आइडियोलाजिकल आरिएंटेशंस आफ केरल शास्त्र साहित्य परिषद", प्रो. वी.वी. कृष्णा (19.2.2003)

349. सुश्री मलिका, "एज्यूकेशन आफ रिफ्यूजी चिल्ड्रन : ए सोसियोलाजिकल पर्सपेक्टिव", डा. गीता बी. नाम्बिसन (17.2.2003)

350. सुश्री सीमा मलिक, "वैष्णव सेंटर्स ऐंड फार्म्स आफ विष्णु इन मध्य प्रदेश ऐंड छतीसगढ़ (सी.ए.डी. 300–1000)", प्रो. बी.डी. चट्टोपाध्याय (20.2.03)

351. सुश्री जानकी श्रीनिवासन, "द आइडिआ आफ प्रोग्रेस इन द माडर्न इरा : ए क्रिटिकल असेसमेंट", प्रो. गुरप्रीत महाजन (20.2.2003)

352. सुश्री जया केरल, "वुमन इन पंचायती राज इंस्टिट्यूशंस इन इण्डिया (विद स्पेशल रेफ्रेंस टु उत्तर प्रदेश)", प्रो. जोया हसन (20.2.2003)

353. श्री सूर्याप्रतिम सरकार, "आन सम आस्पेक्ट्स आफ रिजर्वेशन पालिसी आफ इण्डिया : ए गेम थीअरेटिक एप्रोच", डा. कृष्णेंदु घोष दस्तीदार (11.2.2003)

354. श्री ज्योति चौहान, "द प्राब्लम्स आफ वाटरलाजिंग सायल सालिनिसेशन ऐंड वाटर मैनेजमेंट इन इंदिरा गांधी नहर प्रोजेक्ट (आई.जी.एन.पी.) एरिया : ए केस स्टडी आफ रावतसर तहसील, हनुमानगढ़ डिस्ट्रिक्ट, राजस्थान", डा. मिलाप चंद शर्मा (17.2.2003)

355. श्री डोमिनिक खांगचैन, "क्रिश्चियन कम्युनिटी ऐंड चैंज : दिल्ली 1850–1950", प्रो. तनिका सरकार और इंदिवर कामतेकर (11.2.2003)

356. श्री गुरशमिंदर सिंह बाजवा, "इनफार्मेशन ऐंड कम्युनिकेशन टेक्नोलाजी (आई.सी.टी.) पालिसीज फार डिवलपमेंट : एक्सप्लोरिंग द रिसेंट पालिसी इनिशिएटिव्स (1985–2002)", प्रो. वी.वी. कृष्णा और प्रो. अशोक पार्थासारथी (19.2.2003)

357. श्री विश्वनाथ दास, "वार्निंग ऐंड रिस्पोंस : ए केस स्टडी आफ उड़ीसा सुपर साइक्लोन 1999", प्रो. अशोक पार्थासारथी और डा. नसीर तैयब्बजी (19.2.2003)

356. डा. दीपक सरदाना, "ट्रीपल हेलिक्स, यूनिवर्सिटी, इण्डस्ट्री ऐंड गवर्नमेंट पार्टनरशिप्स : ए केस स्टडी आफ बायोटेक्नालाजिकल सेक्टर इन दिल्ली रीजन", प्रो. वी.वी. कृष्णा (19.2.2003)

357. सुश्री कनचार्ला वेलिनटिना, "फेमिनिज्म इन इण्डिया : ए दलित पर्सपेक्टिव", डा. विवेक कुमार (17.2.2003)

358. श्री मार्टिन कमोडंग, "कार्ल मैनहीम'स व्यूज आन एज्यूकेशनल ऐंड सोशल चैंज : ए क्रिटिकल एनालिसिस", प्रो. एहसानुल हक (17.2.2003)

359. सुश्री नाजनीन भसीन, "ह्यूमन केपिटल ऐज ए डिटर्मिनेंट आफ प्रोडक्टिविटी : इविडेंस फ्राम इण्डियन स्टेट्स", प्रो. रवि एस. श्रीवास्तव (17.2.2003)

360. सुश्री सुदीपा टोपदार, "नालेज ऐंड गवर्नेस : स्कूल टेक्स्ट बुक्स ऐंड क्लोनिअल पालिसीज इन लेट नाइनटींथ सेंचुरी इण्डिया", प्रो. माजिद एच. सिद्दिकी (15.1.2003)

361. सुश्री श्रुति शर्मा, "इरेडिकेशन आफ करप्शन : ए स्टडी आफ सेंट्रल विजिलेंस कमीशन", प्रो. कुलदीप माथुर (15.1.2003)

362. श्री अप्पु जोसफ जोस, "माडर्निटी ऐंड नेशनलीज्म : द कास्ट क्वेश्चन", प्रो. जोया हसन (28.2.2003)

363. श्री आर. ब्राविन, "रीडिफाइनिंग आइडेंटिटी : चैंजिग कनटुअर्स आफ लैंग्यूवेज ऐंड रिलिजन इन तमिलनाडु पालिटिक्स", प्रो. जोया हसन (28.2.2003)

364. श्री अमरेन्द्र आचार्य, "ट्रेंड्स ऐंड पैटर्नस आफ इण्डस्ट्रियल ग्रोथ इन आरगेनाइज्ड ऐंड अन आरगेनाइज्ड सेक्टर – ए रीजनल एनालिसिस", प्रो. अमिताभ कुण्डु (28.2.2003)

365. श्री ललित कुमार, "इकोनोमिक, सोशल ऐंड डेमोग्राफिक डिवलपमेंट आफ सलेक्टिड इंडिकेटर्स इन हरियाणा ऐंड पंजाब : ए डिस्ट्रिक्ट लेवल एनालिसिस, 1981–1991", डा. अनुराधा बैनर्जी (28.2.2003)

366. सुश्री नाजनीन भसीन, "ह्यूमन केपिटल ऐज ए डिटर्मिनेंट आफ प्रोडक्टिविटी : इविडेंस फ्राम इण्डियन स्टेट्स", प्रो. रवि एस. श्रीवास्तव (17.2.2003)

367. श्री पंकज दीप, "स्टेट इंटरवेंशन ऐंड ट्राइबल डिवलपमेंट : स्पेशल रिफ्रेंस टु उड़ीसा", प्रो. कुलदीप माथुर (20.2.2003)

368. सुश्री मीरा मोहन्ती, मल्टी कल्चरलिज्म ऐंड इण्डियन'स इन ब्रिटेन", प्रो. रेणुका सिंह (4.2.2003)

369. सुश्री क्रिस मेरी कुरियन, "द स्टेट पर्सेप्शन आफ वर्कर्स हैल्थ इन इण्डिया : द केस आफ आक्युपेशनल हैल्थ रिसर्च", डा. रितु प्रिया मेहरोत्रा और प्रो. घनश्याम शाह (26.2.2003)

370. सुश्री प्रियंका कोरडोर मोंगकिनरीह, "कोआपरेशन आफ कम्पीटिशन इन इण्डिया फेडरलिज्म (1989–1999)", प्रो. बलवीर अरोड़ा (28.2.2003)

371. श्री पवित्र मोहन नायक, "एज्यूकेशन ऐंड सोशल चैंज अमंग द रिलिजियस माइनरिटीज इन इण्डिया : थीअरि ऐंड प्रैक्टिस", डा. एस. श्रीनिवास राव (6.3.2003)

372. सुश्री दीपिका गुप्ता, "इम्पेक्ट आफ एज्यूकेशन ऐंड कल्चर आन कागनिटिव प्लानिंग : ए कम्पेरिटिव स्टडी आन ट्राइबल ऐंड नान–ट्राइबल चिल्ड्रन आफ देवास डिस्ट्रिक्ट, मध्य प्रदेश", डा. मिनाती पाण्डा (6.3.2003)

373. श्री अरनब मित्रा, "मेक्रोइकोनोमी ऐंड एनवारनमेंट : ए पैनल डाटा एनालिसिस", प्रो. आर. सेन गुप्ता (6.3.2003)

374. श्री सुरजीत दास, "ए स्टडी आफ द इफेक्ट आफ फिसकल डेफिसिट आन रिअल इंट्रेस्ट रेट्स", प्रो. आर. सेनगुप्ता (6.3.2003)

375. संजय कुमार साहा, "द चैंज इन द ऐटिच्यूड टुवर्डस इंडिपेंडेंस पावर प्रोडयूर्स ड्यूरिंग द 1990'स : ए केस स्टडी आफ द बाभोल पावर प्रोजेक्ट", प्रो. प्रभात पटनायक (11.3.2003)

376. श्री राजीव कुमार, "केपिटल शिफ्ट एक्रास इण्डस्ट्री ग्रुप्स ऐंड स्टेट्स इन द फैक्ट्री सेक्टर", प्रो. अशोक माथुर (11.3.2003)

377. श्री नगेंद्र एफ. होनाली, "पालिटिकल इकोनोमी आफ अनइवन डिवलपमेंट : ए केस स्टडी आफ कर्नाटका", प्रो. सुधा पई (11.3.2003)

378. श्री राजेश करकेता, "सरदार सरोवर प्रोजेक्ट : एन असेसमेंट आफ एनवायरनमेंटल ऐंड रिहेबिलिटिशन इश्यूज", प्रो. हरजीत सिंह (13.3.2003)

379. श्री विशाल वार्पा, "लाहोल स्पिति एनालिसिस आफ इट्स रीजनल स्ट्रक्चर", प्रो. हरजीत सिंह (11.3.2003)

380. श्री खालिद अख्तर, "स्टडी आफ रूहेलखण्ड इन द बार्डर आफ पर्सपेक्टिव आफ 18थ सेंचुरी पालिटी", प्रो. के.के. त्रिवेदी (13.3.2003)

381. श्री मोहम्मद अली हाश्मी राद, "पालिटिकल इकोनोमी आफ ईरान 1800–1979 : ऐन इंक्वेरी इन टु द नेचर आफ द रिलेशनशिप बिटवीन द स्टेट ऐंड द सोशल क्लासिस इन द प्रोसेस आफ सोशियो–इकोनोमिक डिवलपमेंट", प्रो. प्रभात पटनायक (24.3.2003)

382. सुश्री शैली मिश्रा, "रिलेशनशिप बिटवीन सोशल आइडेंटिटीज ऐंड इगो स्ट्रेंथ्स : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ हिन्दू ऐंड मुस्लिम स्टुडेंड्स आफ लखनऊ यूनिवर्सिटी", डा. (श्रीमती) मिनाती पाण्डा (13.3.2003)

383. श्री संजय कुमार, "रीजनल पैटर्नस ऐंड ट्रेंड्स इन सैक्स रेशिओ इन स्लेक्टिड स्टेट्स आफ इण्डिया : ए डिस्ट्रिक्ट लेवल एनालिसिस", प्रो. हरजीत सिंह और डा. अनुराधा बैनर्जी (13.3.2003)

384. श्री क्षेत्री राजीव सिंह, "पालिटिकल अलायंस : ए स्टडी आफ पार्टीज ऐंड पार्टी सिस्टम इन द नार्थ–ईस्टर्न स्टेट्स आफ मणिपुर ऐंड मेघालय", डा. विष्णु एन. महापात्रा (24.3.2003)

385. श्री अरविंद ई., "कम्युनिटेरियन क्रिटिक आफ द नोशन आफ सेल्फ इन जोन रावल्स : ए क्रिटिकल रिव्यू आफ द राइसिंग्स आफ माइकल संदल ऐंड चार्ल्स टेलर", प्रो. राजीव भार्गव (25.3.2003)

विकास अध्ययन केंद्र

386. सुश्री सर्मिशथा सेन, "इकोनोमिक ग्रोथ ऐंड सोशल अपरचुनिटीज अंडर रेडिकल पालिटिकल रीजीम्स : ए कम्पेरिटिव स्टडी आफ केरल ऐंड वेस्ट बंगाल", डा. के.पी. कानन और डा. अचिन चक्रवर्ती (8.5.2002)

387. श्री सुब्रत मुखर्जी, "एक्सेस टु ऐंड यूटिलाइजेशन आफ हैल्थ केयर सर्विसिज इन वेस्ट बंगाल : ए कम्पेरिटिव स्टडी विद उड़ीसा ऐंड केरल", डा. डी. नारायण और डा. अचिन चक्रवर्ती (8.5.2002)

388. सुश्री कामना लाल, "डिसर्निंग द सोलिड वेस्ट इकोनोमी : ए केस स्टडी आफ जबलपुर अर्बन एग्लोमिरेशन", डा. जोन कुरियन और डा. के.पी. कानन (1.7.2002)

389. श्री साजी एम., "एक्सेस कंस्ट्रेंट्स ऐंड यूज आफ नेचुरल रिर्सोसिज : स्टडी आन पावर्टी–एनवायरनमेंटल लिंकेजिस आफ फारेस्ट फ्रिन्जस इन सेंट्रल केरल", डा. पी.के. माइकल थाराकन (8.10.2002)

390. श्री टी.के. सुब्रामणियन, "परफार्मेंस आफ इण्डियन पोर्टस : ए केस स्टडी आफ तुतिकोरिन पोर्ट", डा. जी. औंकारनाथ (3.10.2002)

391. सुश्री सोवजन्य आर. पेड्डी, "एक्साप्लोरिंग द लिंकेजिस बिटवीन अबर्नाइजेशन ऐंड ट्रांसपोर्टेशन : ए स्टडी आफ मेट्रोपालिटन सिटीज इन इण्डिया विद स्पेशल रेफ्रेंस टु पुणे", डा. जोन कुरियन (29.10.2002)

392. सुश्री इंदु के., "इम्पेक्ट आफ द यूरोपियन यूनियन स्टैण्डर्ड आन सीफूड एक्सपोर्टिंग यूनिट्स फ्राम केरल", डा. वी. शान्ताकुमार और डा. एम. सुरेश बाबू (15.11.2002)

393. श्री जी.आर. किरण, "साफ्टवेयर ऐंड आई.टी. एनेबल्ड सर्विसिज इण्डस्ट्री इन केरल – ऐन एनालिसिस आफ प्राब्लम्स ऐंड प्रासपेक्ट्स", डा. के.पी. कानन और डा. के.के. सुब्रामणियन (13.11.2002)

394. सुश्री पूर्णिमा वर्मा, "एग्रीकल्चर अंडर इकोनोमिक लिबरलाइजेशन : ए स्टडी आफ रबर ऐंड कोकोनट प्राइसिस इन केरल", डा. विकास रावल और डा. के.एन. हरिलाल (13.12.2002)

395. श्री रेजी के. जोसफ, "मल्टी नेशनल कम्पनीज इन इण्डियन फारमेस्युटिकल इण्डस्ट्री : ऐन एनालिसिस आफ परफार्मेंस ड्यूरिंग द लिबरालाइज्ड रीजीम", डा. इंद्राणी चक्रवर्ती (20.1.2003)

396. सुश्री राखी पी.बी., "टेक्स क्लेक्शन इन एफिशिऐंसी ऐंड फिसकल क्राइसिस : एविडेंसिस फ्राम केरल", डा. के.पी. कानन (30.1.2003)

397. श्री रंजन कुमार दास, "गवर्नमेंट सिक्युरिटीज मार्किट इन इण्डिया : ए स्टडी इन द कनटेक्स्ट आफ फाइनेंशियल लिबरलाइजेशन", डा. जी. औंकारनाथ (28.2.2003)

398. श्री शबीर के.पी., "ट्रेड ऐंड हैल्थ केयर : ऐन एनालिसिस आफ इण्डिया'ज फारेन ट्रेड इन फारमेस्युटिकल प्रोडक्ट्स", डा. डी. नारायण और डा. अचिन चक्रवर्ती (28.2.2003)

399. श्री अजय कुमार गिरी, "फिजीकोकेमिकल आस्पेक्ट्स आफ लैण्ड डिस्पोजल आफ सालिड वेस्ट जनरेटिड फ्राम वजीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया आफ दिल्ली", प्रो. ए.के. भट्टाचार्य, (27.11.2002)

400. श्री भास्कर सिन्हा, "इकोलाजिकल एनालिसिस आफ ए सेकर्ड लैंड स्कैप इन गढ़वाल हिमालय", प्रो. पी.एस. रामकृष्णन, प्रो. के.जी. सक्सेना और डा. आर.के. मैखुरी (16.1.2003)

401. श्री सुजीत कुमार बाजपेई, "डिस्ट्रीब्यूशन ऐंड ट्रांसपोर्ट आफ ट्रेशन मेटल्स ऐंड रेयर अर्थ एलिमेंट्स इन स्माल रिवर्स आफ केरल, इण्डिया", प्रो. वी. सुब्रामणियन (16.1.2003)

402. सुश्री कृतिका सिंह, "इकोलाजिकल डाइवर्सिटी इन रिलेशन टु एग्रीकल्चरल लैंड यूज इनटेंनसिटी इन ए मिड–एल्टीट्यूड विलेज इन सेंट्रल हिमालय", प्रो. के.जी. सक्सेना (30.1.2003)

मास्टर आफ टेक्नोलाजी (एम.टेक.)

कंप्यूटर और पद्धति विज्ञान संस्थान

1. श्री सोमित्र कुमार सानध्य, "फाल्ट टालरेंस आफ कोटरीज", प्रो. पी.सी. सक्सेना और प्रो. सी.पी. कट्टी (24.4.2002)
2. श्री राकेश मोहन्ती, "आर्किटेक्चरल आस्पेक्ट्स, कम्पेरिटिव परफार्मेंस एनालिसिस ऐंड नेटवर्क मैनेजमेंट आफ नेक्स्ट जनरेशन आप्टिकल नेटवर्कस", प्रो. पी.सी. सक्सेना और प्रो. सी.पी. कट्टी (23.5.2002)
3. श्री पंकज कुमार, "डिवलपमेंट आफ म्युच्युअल एक्सक्लुजन एलगोरिथम इन डिस्ट्रीब्युटिड सिस्टम्स", प्रो. पी.सी. सक्सेना और प्रो. सी.पी. कट्टी (23.05.2002)
4. श्री प्रवीण कुमार त्रिपाठी, "स्पोर्टिंग टेम्पोरल क्वालिटी आफ सर्विस इन डब्ल्यू.डी.एम.ए. – बेस्ड स्टार कपल्ड आप्टिकल नेटवर्कस", प्रो. पी.सी. सक्सेना और प्रो. सी.पी. कट्टी (23.5.2002)
5. श्री सृजन दीप देवरा, "प्रोसेस मानिटरिंग इन यूनिक्स", प्रो. आर.जी. गुप्ता और डा. आर.सी. फोहा (29.5.2002)
6. श्री *श्रीकांथ गोतेति, "ए यूजर फ्रैंडली इंटरफेस फार आब्जेक्ट ओरिएंटिड डाटाबेसिस"*, प्रो. *परिमाला* एन. (10.6.2002)
7. कुमारी नीता गुप्ता, "परफार्मेंस आफ टी.सी.पी. ओवर वायरलेस", प्रो. पी.सी. सक्सेना और प्रो. सी.पी. कट्टी (10.6.2002)
8. श्री दीपक निगम, "एनालिसिस ऐंड इम्प्रूवमेंट आफ सिक्युरिटी फीचर्स आफ डब्ल्यू.टी.एल.एस. प्रोटोकोल इन डब्ल्यू.ए.पी. एनवायरनमेंट", प्रो. पी.सी. सक्सेना और प्रो. सी.पी. कट्टी (10.6.2002)
9. श्री एस. रामनारायण रेड्डी, "रीवर्स इंजीनियरिंग आफ सी ++ कोड", प्रो. परिमाला एन. (10.6.2002)
10. श्री नरेंद्र प्रताप सिंह, "यूजर प्रोफाइल बेस्ड ट्रेकिंग स्ट्रेटिजि फार वायरलेस पी.सी.एस. नेटवर्क्स", प्रो. कर्मेषु (1.7.2002)
11. श्री वी.एस.एच.ए. दीपक नारायणम, "परफार्मेंस माडलिंग आफ वायरलेस सेल्युलर कम्युनिकेशन नेटवर्कस : इफेक्ट आफ हिट्रोजेनिटी ऐंड सेल रेसिडेंस टाइम", प्रो. कर्मेषु (1.7.2002)
12. श्री किरण सुरेश पाटिल, "स्युडो–बेसियन एप्रोच फार स्टेबिलिटी आफ हिट्रोजिनियस नेटवर्क्स", प्रो. कर्मेषु (1.7.2002)
13. श्री नागदासु प्रवीण कुमार, "डाक्युमेंट एक्सप्लोरेशन यूजिंग सेल्फ आरगेनाइजिंग मैप्स", प्रो. एस. बालासुंदरम (19.7.2002)
14. श्री रेपुदी रमेश, "कोहोनन'स सेल्फ आरगेनाइजिंग मैप (एस.ओ.एम.) क्लासिफायर फार रिकोग्नाइजिंग हेण्ड रिटन न्यूमरल्स", प्रो. एस. बाला सुंदरम (19.7.2002)
15. श्री एम.आर.एल.एन. पंचानन, "एस्टिमेशन आफ ब्लाकिंग ऐंड ड्रापिंग प्रोबेबिलिटीज यूजिंग डिफ्यूजन एप्रोक्सिमेशन परफार्मेंस, माडलिंग आफ सेल्युलर नेटवर्क्स", प्रो. कर्मेषु (1.8.2002)
16. श्री बेजम प्रशांत कुमार, "रूटिंग मिसबिहेवियर ऐंड परफार्मेंस एनालिसिस आफ टेम्पोरली आडर्ड रूटिंग एल्गोरिदम (टी.ओ.आर.ए.) इन मोबाइल एड–हाक नेटवर्क्स", प्रो. जी.वी. सिंह और डा. डी.के. लोबियाल (20.8.2002)
17. श्री प्रशांत सिंह, "रूटिंग मिसबिहेवियर ऐंड परफार्मेंस एनालिसिस आफ डी.एस.डी.वी. एल्गोरिदम इन मोबाइल एड–हाक नेटवर्क (एम.ए.एन.ई.टी.) प्रो. जी.वी. सिंह और डा. डी.के. लोबियाल (20.8.2002)
18. श्री अनंत कुमार जयसवाल, "कनवर्टर प्लेसमेंट सपोर्टिंग ब्राडकास्ट इन डब्ल्यू.डी.एम. आप्टिकल नेटवर्क्स", प्रो. सी.पी. कट्टी और प्रो. पी.सी. सक्सेना (27.9.2002)
19. श्री श्रीनिवास थानीरू, "इंप्लिमेंटेशन ऐंड इवेल्युऐशन आफ आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क मैथड्स फार प्रीडिक्टिंग प्रमोटर साइट'स इन जिनोमिक सिक्वेंसिस", प्रो. एस. बालासुंदरम (27.9.2002)
20. श्री *परिमल कुमार कुछल, "रूटिंग मिसबिहेवियर* ऐंड *परफार्मेंस एनालिसिस* आफ ए.ओ.डी.वी. इन एम.ए.एन.ई.टी.", प्रो. जी.वी. सिंह और डी.के. लोबियाल (8.10.2002)